Kadambini Jan-April 1983 G.K.U.

1613

14/6/86

10 AM 16/6/86

5033

14/6/86

10 AM 17.6.86

5039

16.6.86

18/6/86

16

19/6/86

19/6/86

5057

…सिक प्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशि…
जनवरी '८३

…ब तक जलेंगी
…ण फसलें

हिन्दुस्तान सैनिटरीवेअर

SAA/HSI/10 A4 HIN

बाथरूम पूरा सजे-सजाये इतनी चीजें कहीं न पायें

२ रेड क्रास प्लेस कलकत्ता ७०० ००१ भारत

मसूड़ों को मज़बूत बनाइये दाँतों की ज़िन्दगी बढ़ाइये

सिर्फ़ फोरहॅन्स में ही मसूड़ों को मज़बूत बनाने वाला विशेष ऐस्ट्रिंजेंट है

इसका अनोखा स्वाद ही इसके असर का सबूत है!

फोरहॅन्स का ऐस्ट्रिंजेंट मसूड़ों की विशेष तौर से देखभाल करता है. सूजन रोक कर ऐस्ट्रिंजेंट कमजोर और मुलायम मसूड़ों को संकुचित करके उन्हें स्वस्थ बनाता है. आपके दाँतों को लम्बी जिन्दगी और मजबूत आधार स्वस्थ मसूड़े ही दे सकते हैं. यहाँ तक कि मजबूत दाँतों को भी स्वस्थ मसूड़ों की जरूरत होती है. इसी लिये आपको चाहिये फोरहॅन्स-ऐस्ट्रिंजेंट वाला अनोखा टूथपेस्ट.

फोरहॅन्स खरीदिये दंत-सुरक्षा घर ले आइये

फोरहॅन्स पर भरोसा रखिये

ये दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है

288 F 172 HIN

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **एकोन्मुख**––क. एक मुंहवाला, ख. अकेला, ग. अलग, घ. एक दिशा में बढ़नेवाला।

२. **अध्येता**––क. विचारक, ख. पढ़नेवाला, ग. खोजी, घ. परिश्रमी।

३. **संख्यातीत**––क. बहुत से, ख. गिनने लायक, ग. अनगिनत, घ. बिखरे हुए।

४. **समरस**––क. स्वादिष्ट, ख. विनम्र, ग. एक-सा, घ. प्रसिद्ध।

५. **अकर्मण्य**––क. आलसी, ख. कायर, ग. धोखेबाज, घ. लापरवाह।

६. **फलद**––क. फिजूल, ख. फूला हुआ, ग. विस्तृत, घ. फल देनेवाला।

७. **ईति**––क. अंत, ख. आभास, ग. संकट, घ. मंत्र।

८. **भीति**––क. दीवार, ख. डर, ग. ग्रंदरूनी, घ. जादू।

९. **नवोढा**––क. नवयुवती, ख. नया, ग. नव-विवाहिता, घ. कमअक्ल।

१०. **एकैकशः**––क. अकेला, ख. एक-एक करके, ग. न्यून, घ. अनोखा।

११. **अकस्मात**––क. तेजी से, ख. दुर्भाग्य से, ग. अचानक, घ. धीरे-धीरे।

१२. **इंद्रजाल**––क. धोखा, ख. जादूगरी, ग. गोपनीयता, घ. अनिश्चय।

१३. **औद्धत्य**––क. ऊंचाई, ख. नीचता, ग. ढीठपन, घ. टेढ़ापन।

उत्तर

१. घ. एक दिशा में बढ़नेवाला। मानव-प्रवृत्तियां **एकोन्मुख** नहीं वरन सर्वतोन्मुखी हैं।

२. ख. पढ़नेवाला, अध्ययन करनेवाला। वेद-वेदांग के **अध्येता** कम ही मिलते हैं।

३. ग. अनगिनत। सृष्टि में **संख्यातीत** जीव-जंतु हैं।

४. ग. एक-सा, घुलामिला, समान भाववाला। राष्ट्र के सभी अंगों का **समरस** होना जरूरी है। (संज्ञा––**समरसता**)

५. क. आलसी, निष्क्रिय। संसार में **अकर्मण्य** होकर मत बैठो। (संज्ञा––**अकर्मण्यता**)

६. घ. फल देनेवाला। **फलद** वृक्षों को देखकर प्रसन्नता होती है। उसका परिश्रम **फलद** सिद्ध होगा। (**फलदायी** का भी प्रयोग)

७. ग. संकट, आपदा (जैसे-अतिवृष्टि,

अनावृष्टि, फसल को जीव-जंतुओं से नुकसान, बाहरी आक्रमण आदि)
८. ख. डर, भय। मानव **ईति-भीति** से अपनी रक्षा के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है।
९. ग. नव-विवाहिता। कितनी **नवोढाएं** आज दहेज की बलि चढ़ रही हैं।
१०. ख. एक-एक करके। सभी छात्र एकैकशः मौखिक परीक्षा के लिए बुलाये जा रहे हैं।
११. ग. अचानक, एकाएक। तुमने अकस्मात अपना दृष्टिकोण क्यों बदल दिया? (वि.—आकस्मिक)
१२. ख. जादूगरी, बाजीगरी, भ्रांति। उसने यहां इंद्रजाल फैला रखा है। (वि.—ऐंद्रजालिक)
१३. ग. ढीठपन, उजड्डता। यह **औद्धत्य** सहन नहीं होगा। (वि.—उद्धत)

पारिभाषिक-शब्द

फालो अप एक्शन=अनुवर्ती कार्यवाही
बेग टु स्टेट=निवेदन है
डीम्ड टु बी=समझा जाएगा
डेमी आफीशल=अर्ध-सरकारी
सर्कुलेट=परिचालित करें
कम इंटू फोर्स=लागू होना
एज प्रोपोज्ड=यथाप्रस्तावित
इयर टु इयर=वर्षानुवर्ष

समस्या-पूर्ति—४३

चक्र

प्रथम पुरस्कार

मूल-'चक्र' से सहस्रार तक
रहस्यपूर्ण ताना-बाना है
अमृत रहता नाभि-मूल में
ब्रह्म-रंध्र से जो पाना है
'योग' यही है षटचक्रों का
साधक ने ही पहचाना है

—डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण'
रीडर एवं अध्यक्ष : हिंदी विभाग,
बी. एस. एम. कालेज, रुड़की

द्वितीय पुरस्कार

नियति 'चक्र' तो चलता है
सांसों का क्रम छलता है
इस दुनिया में सिर्फ कर्म का
दीप निरंतर जलता है

—देवऋषि लौवंश
पल्लवी कुंज, रेलवे स्टेशन मथेला,
सिहाड़ा, पूर्व निमाड़, खंडवा

आस्था के आयाम

अनोखा रेस्तरां

टोक्यो के योयोगी स्टेशन के निकट स्थित दो रेस्तरां। इनमें एक तरह से कर्मचारियों का 'राज्य' है । वे ही रेस्तरां खोलते हैं और वे ही बंद करते हैं। ये रेस्तरां भी अजीब हैं । इनमें कुछ कर्मचारी ऐसे हैं, जो दिनभर कोई काम नहीं करते । फिर भी, रेस्तरां के मालिक उनसे कुछ नहीं कहते। उन्हें इस बात से ही संतोष है कि ये कर्मचारी कभी-कभी प्रसन्न होकर गीत तो गाते हैं ।

इन रेस्तरांओं को हयाशी नामक एक सज्जन अपनी पत्नी के साथ चलाते हैं । उनके इन रेस्तरांओं की यह खूबी है कि उनमें काम करनेवाले सारे कर्मचारी मंदबुद्धि के हैं—ऐसे लोग, जो समाज में ही नहीं, अपने परिवार में भी उपेक्षित हैं । वास्तविकता तो यह है कि हयाशी-दंपत्ति मंदबुद्धि लोगों को ही अपने इन रेस्तरांओं में नौकर रखते हैं। कारण, पैसों की बचत नहीं, वरन इन उपेक्षित मंदबुद्धि लोगों में आत्मविश्वास ही उत्पन्न करना है । हयाशी-दंपत्ति दोपहर में दो बजे से चार बजे तक, जब ग्राहकों की भीड़ कम होती है, अपने इन कर्मचारियों को पढ़ना-लिखना भी सिखाते हैं। हालांकि, कुछ कर्मचारियों के बारे में उन्हें विश्वास है कि वे कभी पढ़-लिख नहीं पाएंगे । फिर भी, यदि वे समाज में घुल-मिल जाते हैं, आत्महीनता अनुभव नहीं करते हैं, तो वे अपने लक्ष्य को प्राप्त हुआ मानते हैं ।

हयाशी कहते हैं, 'हम अपने कर्मचारियों से किसी चीज की मांग नहीं करते । हम उन्हें प्यार करते हैं । उन्हें स्वीकार करते हैं और सबसे बड़ी बात तो यह, हम उनके विकसित होने की प्रतीक्षा करने को तैयार हैं ।'

हयाशी-दंपत्ति के इन रेस्तरांओं की चर्चा पूना के एक उस होटल की याद दिलाती है, जहां काम करनेवाले लोग होस्टलों में रहनेवाले अच्छे-भले घरों के छात्र हैं। ये छात्र इस होटल में भोजन-सामग्री परोसने से लेकर बरतन साफ करने तक का काम करते हैं। इस होटल में हमेशा भारी भीड़ रहती है। कारण ये कि छात्र-कर्मचारी ग्राहकों की घर-आये मेहमानों-सी अपनत्वभरी खातिरदारी करते हैं।

वृद्धावस्था बाधक नहीं

सेइगो कोंदो—जापान की एक सफल कंपनी के संस्थापक और अध्यक्ष, आजकल मिट्टी के बरतन बना रहे हैं। इसलिए नहीं कि उनकी कंपनी बंद हो गयी, या घाटे में आ गयी, बल्कि इसलिए कि सत्तर वर्षीय सेइगो कोंदो ने वृद्धावस्था के

खालीपन को दूर करने के लिए 'कुम्हार' के पेशे को शौक के रूप में चुना है।

आज से १२-१३ वर्ष पूर्व सेवा-निवृत्ति का समय निकट देख सेइगो कोंदो ने सोचा कि सेवा-निवृत्ति के बाद के समय के सदुपयोग के लिए कुछ न कुछ सीखना चाहिए। उन्होंने अपनी पत्नी को यह बात बतायी, तो वह कुछ व्यंग्य से बोली, "आप कुछ नहीं कर पाएंगे। आप ठहरे एक नंबर के भुलक्कड़।"

सेइगो कोंदो को पत्नी की बात चुभ गयी। उनकी पत्नी ने समय काटने के लिए जापान के प्रख्यात 'चाय-समारोह' की रीतियों का प्रशिक्षण देने के लिए एक स्कूल खोल लिया था। सेइगो कोंदो उस रास्ते पर नहीं चलना चाहते थे। अंततः उन्हें एक विचार सूझा कि क्यों न वह चाय-समारोहों के लिए आवश्यक मिट्टी के पात्र बनायें ?

बस, उन्होंने इस विषय की दो-तीन पुस्तकें पढ़ीं, और कुम्हार का काम शुरू कर दिया। उन्हीं के शब्दों में, 'जब मैंने चाक पर चीनी मिट्टी के बरतन बनाने शुरू किये, तब मारे उत्साह के मुझे रात-रात-भर नींद नहीं आयी। दिन में केवल दो घंटे कंपनी का काम देखता और शेष समय अपने नये शौक में लगाता। अंततः एक दिन कंपनी की जिम्मेदारी बेटे को सौंप अपने शौक को पूरा समय देने लगा।'

एक दिन सेइगो कोंदो ने अपने बनाये पात्रों की प्रदर्शनी आयोजित की और उनकी कीमत जान-बूझकर ज्यादा रखी, ताकि यदि वे न बिकें, तो उनके स्वाभिमान को ठेस न पहुंचे। लेकिन आश्चर्य ! उनके आधे से ज्यादा पात्र मुंहमांगी कीमत पर बिक गये। लेकिन सच्चा संतोष तब मिला, जब उनकी कटु आलोचक उनकी पत्नी ने ही ये बरतन बड़े उत्साह से खरीदे। ●

वचनवीथी

धड़ पर सिर तो कोई जादूगर ही लगा सकता है, किंतु उसे धड़ से अलग कोई मूर्ख भी कर सकता है।

—अलैक्जैंडर सोल्जेनित्सन

विश्व में दीर्घ अनुभव के बाद, मैं प्रभु के समक्ष, दावे के साथ कहता हूं कि मेरी जानकारी में कोई ऐसा धूर्त नहीं आया, जोकि दुःखी न हो। —जुनियल

धैर्य कटु है; किंतु उसका फल मधुर है। —रूसो

वह जो जान-बूझकर अपने मित्र को धोखा देता है, अपने भगवान को धोखा देता है। —लेवेटर

न्याय-परायण रहो और डरो मत; तुम्हारे सब ध्येय अपने देश, अपने ईश्वर और सत्य के लिए हैं। —शेक्सपीयर
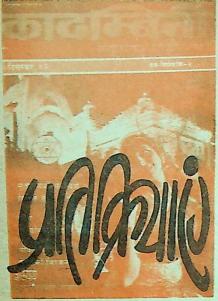
तंत्र-विशेषांक के रूप में 'कादम्बिनी' को आपने उन सभी हाथों में पहुंचा दिया, जो केवल साहित्य पढ़ते-पढ़ते ऊसर हो रहे थे। खूब चीजें जुटायी हैं, कुछ अपवादों के साथ। आशा-विश्वास है कि 'कादम्बिनी' इसी भांति अपने पाठकों की रुचि का ध्यान रखते हुए अन्य सामग्रियां भी प्रस्तुत करती रहेगी। **—शंकर दयाल सिंह, पटना**

तंत्र-विशेषांक की रूप-सज्जा पर्याप्त आकर्षक है। तंत्र की विधा से संबंधित दो निबंध तथा एक जनोपयोगी मंत्र-संकलन, तीनों रचनाएं अच्छी लगीं।

आचार्य श्रीराम शर्मा का निबंध, तंत्र-योग की समन्वित चर्चा के साथ त्रि-लोक तथा त्रि-शरीर की अवधारणा में रूपात्मक साम्य निरूपित करते हुए एक समष्टिगत व्यवस्था का दर्शन कराता है, जो भारतीय दर्शन में पिंड-ब्रह्मांड के व्यष्टि-समष्टि ऐक्य पर आधारित है, डॉ. ठाकुर का निबंध, तंत्र-शास्त्र को वेदत्रयी से पृथक, अथर्व-जन्य तथा 'स्थूलतः . . . प्रवृत्ति मार्ग' गामिनी विधा निरूपित करते हुए भ्रांति का सृजन करता है, जहां से एक प्रश्न / जिज्ञासा का उदय होता है : क्या ऋक्, यजुस् तथा सामन् में तांत्रिक अवधारणाओं के बीज-रूप में दर्शन नहीं होते? आचार्य डेग्वेकर ने जिन प्रयोगों का उल्लेख किया है, वे न केवल जनास्था को दृढ़ीभूत करेंगे, वरन जन-कल्याण में सहायक भी होंगे। **—समरेंद्र सराफ,**
रीडर, सागर विश्वविद्यालय, सागर

सूक्ष्म शरीर की यात्रा

तंत्र-विशेषांक का मुखपृष्ठ देखकर लगा कि भारतीय भाषाओं की यह विशिष्ट पत्रिका अन्य पत्रिकाओं की तरह हवा में बहने लगी है। खरीदने का मोह फिर भी संवरण न कर सका। 'समय के हस्ताक्षर' से पढ़ना प्रारंभ किया। बस, फिर क्या था? सोलह घंटे तक 'कादम्बिनी' हाथ से अलग नहीं हुई। 'सूक्ष्म शरीर की यात्रा' के अलौकिक अनुभव में एक बात अस्पष्ट है कि लेखिका हड्डियां चटकने की आवाज पलंग पर स्वयं सुन रही थीं या शून्य से? डॉ. रेमांड मुंडी की प्रसिद्ध पुस्तक 'लाइफ आफ्टर लाइफ' में भी इसी प्रकार के कई उदाहरण हैं।

—किशनलाल शर्मा, प्रवक्ता,
बि. मे. इंटर कॉलेज, चिरायल, अलीगढ़

आज के इस वैज्ञानिक माहौल में 'कादम्बिनी' संभवतः देश की पहली स्तरीय पत्रिका है, जो तंत्र से संबंधित विधा पर विशेषांक दर विशेषांक निकालकर सराहनीय उपलब्धि का नायाब नमूना पेश कर रही है। —सुमनकुमार सिंह, सहरसा

हमारे निम्नलिखित पाठकों ने भी तंत्र-विशेषांक को पसंद किया है, और सद्भावनापूर्ण-पत्र भेजे हैं—

नरेशकुमार बंका, रांची; सुनीलकुमार, नयी दिल्ली; राजनकुमार सिंह, भागलपुर; चंद्रशेखर सुखवाल, उदयपुर; सुभाष छाबड़ा, खीरी; विनीता सक्सेना, बरेली; रूपनारायण वर्मा, रायपुर; शैलेंद्रकुमार चतुर्वेदी, सक्ती; रमानाथ तिवारी, भोजपुर; ओमप्रकाश पाराशर, गंगापुर; अजयकुमार जैन, नजीबाबाद; निशिकांत भारद्वाज, सहारनपुर; वसंतकुमार अम्बेश, जबलपुर; डॉ. अरविंद संघवी, पिपलिया मंडी; राहुल शर्मा, चूरू; रमेश, वाराणसी।

दार्शनिक विचारों की व्युत्पत्ति

'काल-चिंतन' दार्शनिक विचारों की मौलिक व्युत्पति एवं जीवन के शाश्वत अर्थों को व्यावहारिक आयाम देने की दिशा में सराहनीय प्रयास है। 'कादम्बिनी' का सूक्ष्म व विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से मूल्यांकन कर मैंने यह पाया है कि 'कादम्बिनी' भारतीय संस्कृति, सभ्यता, कला और ऐतिहासिकता का प्रतिनिधित्व कर रही है।

—कमलकुमार रांवका, व्यावर

सम्मान

अलीगढ़ की प्रमुख साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'संकल्प' ने एक भव्य समारोह आयोजित कर 'कादम्बिनी' के संपादक एवं प्रख्यात साहित्यकार श्री राजेन्द्र अवस्थी का सम्मान किया। सरस्वती की एक कांस्य-प्रतिमा और एक शाल भेंट कर 'संकल्प' के अध्यक्ष श्री रामगोपाल वार्ष्णेय और संयोजक श्री लवकुमार प्रणय ने श्री अवस्थी का अभिनंदन किया। इस अवसर पर एक विराट कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। श्री अवस्थी के सम्मान में 'उद्‌गार' नामक एक पत्रिका भी प्रकाशित की गयी।

चित्र में : श्री राजेन्द्र अवस्थी का सम्मान करते हुए 'संकल्प' के अध्यक्ष श्री रामगोपाल वार्ष्णेय व संयोजक श्री लवकुमार प्रणय

बगलामुखी मंत्र : एक स्पष्टीकरण

बगलामुखी मंत्र के संबंध में अनेक पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं कि कौन-सा मंत्र सही है। इस संदर्भ में मैं यह कहना चाहूंगा कि 'मंत्र महाणर्व' एक प्रामाणिक ग्रंथ है। 'मंत्र महार्णव' में प्रकाशित मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं। स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

कुछ विद्वानों ने ॐ ह्लीं के स्थान पर ॐ ह्रीं का प्रयोग किया है। ह्लीं के स्थान पर ह्रीं का प्रयोग मिलता है, लेकिन प्रामाणिक मंत्र वही है, जो 'कादम्बिनी' के तंत्र-विशेषांक में छपा है।

शाबर मंत्रों के प्रचलन में मंत्रों के रूप में अनेक परिवर्तन हुए। उन्हीं परिवर्तनों का शिकार बगलामुखी वैदिक मंत्र भी हुआ। पाठक इसे ही प्रामाणिक मंत्र समझें, क्योंकि इसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में किया गया है।

—पं. कृष्ण अवतार, कानपुर-२२

हिंदी के 'कानन डायल'

इसी अंक में पृष्ठ ९० पर प्रकाशित लेख 'वे हिंदी के कानन डायल थे' के लेखक डॉ. राजेश कुमार उपाध्याय हैं, पाठक नाम को सुधारकर पढ़ें। —संपादक

अद्भुत अलौकिक दो अनुभव

डाकिनियों से बच्चा छुड़ाया

'तंत्र-विशेषांक' (नवम्बर '८२ अंक) में प्रकाशित श्री श्याममनोहर व्यास द्वारा लिखित 'डाकिनियों के चमत्कार' में जिस घटना का जिक्र किया गया है, बिलकुल उसी तरह की घटना बिहार के गया जिले में नुवारी ग्राम में ७०–७५ वर्ष पहले घटित हो चुकी है, जिसकी साक्षी स्वयं मेरी परदादी थीं। एक राजपूत परिवार का तीन महीने का बच्चा तंत्र-मंत्र द्वारा मार दिया गया। फलतः उसे परंपरानुसार श्मशान में दफन कर दिया गया था।

करीब तीन महीने बाद एक रात गश्त करते हुए चौकीदार ने श्मशान में देखा कि दो महिलाएं पूर्णतः नग्न और सर के बाल खोले हुए एक साल के एक शिशु को तेल-मालिश कर रहीं हैं। तेल-मालिश करने के बाद औरतों ने बच्चे को दूध पिलाया, काजल लगाया और फिर चुटकियां बजाकर उसके साथ खेलने लगीं। कुछ देर बाद उन्होंने अस्पष्ट स्वर में कुछ मंत्र पढ़े, जिससे वह बच्चा अचानक मृत हो गया और उसे पहले की तरह कब्र में दबाकर वे महिलाएं गायब हो गयीं।

सुबह चौकीदार ने इस घटना की चर्चा बच्चे के पिता से की। दूसरी रात पिता ने भी चार अन्य आदमियों के साथ यह दृश्य अपनी आंखों से देखा। उसी रात एक योजना बनायी कि अगली रात

बच्चा जब जीवित रूप में आये, तब उसे औरतों से बलात छीन लिया जाए।

अगली रात जब नित्य की तरह बालक को जीवित कर वे दोनों उसके साथ खेलने लगीं, तभी दो व्यक्तियों ने बच्चे को छीन लिया और दो ने औरतों के कपड़े उठा लिये। अप्रत्याशित हमले से हड़बड़ाकर दोनों औरतें भाग गयीं। लोग बच्चे सहित घर लौट आये।

वह बच्चा बाद में काफी दिनों तक जिंदा रहा। उक्त गांव में जाकर बड़े-बूढ़ों से, जिन्होंने इस घटना को देखा है, इन तथ्यों की संपुष्टि की जा सकती है।

—नीलम पाण्डेय, संपादक : बिहार समाचार, सूचना एवं जन-संपर्क विभाग, पटना

गायत्री मंत्र से ब्रह्मराक्षस भागा

पीतांबर-पीठाधीश्वर स्वामीजी के आदेशानुसार उनके एक शिष्य हरिदत्त ब्रह्मचारी एक बार तारापीठ, दतिया में साधना कर रहे थे। मैं भी साधना हेतु रात्रि में वहीं उन्हीं के समीप रहता था।

एक रात लगभग दो बजे मैंने एक कराह सुनी और हड़बड़ाकर उठ बैठा। देखा, ब्रह्मचारीजी लेटे हुए घी-घी कर रहे हैं। बाद में उन्होंने बताया कि 'सोते में अचानक ही कोई ब्रह्मराक्षस मेरा गला दबाने लगा। मैंने गायत्री मंत्र का स्मरण किया, तब कहीं वह भागा।'

—जगदीश शरण बिलगइयां 'मधुप', तंत्र-शास्त्री, चामुंडा तंत्र संस्थान, दतिया

आगामी अंक में

अलकनंदा का अघोरी वैज्ञानिक था !

प्रख्यात समालोचक आचार्य विनय मोहन शर्मा द्वारा अलकनंदा के अघोरी के संबंध में आश्चर्यचकित करनेवाली नयी जानकारी

कैसे बनाये जाते हैं कूट-संदेश

कूट-संदेशों का आज हर जगह उपयोग होता है—व्यापार से लेकर सरकारी कामकाज तक में। कैसे बनाये जाते हैं—ये दुरूह कूट-संदेश !

सीमा : जहां करोड़ों का खजाना गड़ा है !

आज लोग पेशवाओं के करोड़ों के खजाने को भूल-से गये हैं। लेकिन एक व्यक्ति उसे बिलकुल नहीं भूला है—कौन है वह ? कहां है यह खजाना ?

संसार की पहली सुबह

समुद्र से घिरा एक द्वीप, जिसे स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने 'संसार की पहली सुबह' कहा था—जानकारी से भरा एक बेहद दिलचस्प लेख

वर्ष २३ : अंक ३
जनवरी, १९८३

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

स्थायी स्तंभ

छाया-आवरण : सूरज एम. शर्मा

कहानी

कविताएं

सार-संक्षेप

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष :
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स, प्रकाशन समूह

सह-संपादक
दुर्गाप्रसाद शुक्ल

उप-संपादक
प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये

—अलस सुबह वह आया, ओस-सा ताजा उसका चेहरा था। वह दोपहर को आया तो पसीने की बदबू आवृत्त किये थी उसे। शाम को वह दुबका हुआ था और शुतुरमुर्ग बन जाना चाहता था। अपनी ही गरदन दबा लेना चाहता था वह !

●●

—एक ही दिन में तीन आयाम, तीन प्रतिद्वंद्वी और प्रतिगामी स्थितियां ! किसी नाटक की तरह पटाक्षेप और नेपथ्य के स्वर ! नेपथ्य के बिना नाटक अधूरा है; शायद, इसीलिए यह होना एक नियति है !

—हम सब एक नाटक के पात्र ही तो हैं, तब नेपथ्य की ध्वनियां भी जरूरी हैं !

—परेशान हैं हम इसलिए कि ये ध्वनियां एक नये कीड़े को जन्म देने लगी हैं ! वह कीड़ा काई उगलता है और पानी पर तैरता है।

—पारदर्शी झील का विश्वासी मन अविश्वास में बदल रहा है !

—इस कीड़े ने मकड़ी-सा जाल बिछाया है और सारे विश्वासों को उलझाकर उन्हें प्राणहीन कर रखा है !

—एक दूसरे से हमारा विश्वास उठता जा रहा है। हमारी चेतनामयी गरुड़-दृष्टि दिन का चमगादड़ बन रही है। इसीलिए तो सुबह-दोपहर और शाम के बीच इतना कुछ बदल रहा है एक ही आदमी के साथ !

●●

—विश्वास उड़ता हुआ हवा का झोंका नहीं है। विश्वास हमारी शिराओं का रक्त है ! रक्त दूषित होते ही परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है।

—बाहरी छलों में उलझकर हमने 'शब्द' को सार्थक मान लिया है !

—शब्द भोजन नहीं है !

—शब्द शरीर नहीं है !

—शब्द प्यास की तृप्ति नहीं है !

—शब्द भूख का उत्तर भी नहीं बन सका !

—हमने शब्दों की छाया में विश्वास के पौधे बो दिये और आशा कर रहे हैं फूलों की !

—छाया में अंधकार ही पलता और पनपता है; रोशनी के द्वार बंद हों तो विश्वास की आत्मा को घुन लग जाता है !

—अविश्वासी मन सबसे बड़ा धोखा है !

—धोखा अपने आयाम खोजने में कमी नहीं करता—वह अंधेरे कोनों से लेकर खुले दरवाजों तक कफन की तरह पसरा होता है !

●●

—आदमी का आदमी से रिश्ता है, क्योंकि वह एक ही संज्ञा का प्रतिबोध है। आदमी न जानवरों से जुड़ सकता है और न कीड़ों के साथ पल सकता !

—वह जानवरों को अपने हित के लिए पालतू बना सकता है और कीड़ों को अपनी रक्षा के लिए औषधियों से मार सकता है !

—इसी क्षमता के कारण उसे श्रेष्ठता प्राप्त है !

—मनुष्य विशाल क्षितिजों के बीच घिरा हुआ सबसे संपन्न, श्रेष्ठ और शक्तिशाली जीव है !

—उसकी अपार बौद्धिक क्षमता सृष्टि को बांध सकती है।

—मनुष्य दैत्यों को सीधे पानी की तरह पी सकता है और देवत्व को स्वयं धारण कर उसका प्रतिवेशी बन सकता है !

—बनता है वह, तभी तो इस सृष्टि को 'मानव-सृष्टि' कहा गया है ! अर्थ यह हुआ कि जो कुछ यहां है, सब मनुष्य का है।

—मनुष्य को विशेषता इसी से मिलती है और 'मनुष्य-धर्म' बनता है !

—'मनुष्य-धर्म' एक संविधान है !

—सहजता और स्वरूपता के लिए आवश्यकता है कि हम उस संविधान का पालन करें।

—समय हमारे साथ चलनेवाला पहरुआ है।

—समय-पहरुए के संकेत पर संविधान में संशोधन भी संभव है।

—हमारी उदार क्षमाशीलता आश्वस्त करती है तब कि संशोधन भी एक प्रतिबद्ध क्षमता के भीतर होना चाहिए।

—इन सचाइयों को झेलते रहें तो आत्मा के अनहद नाद में हमें निर्वाण के स्वर मिलेंगे।

—यही स्वर धरती को स्वर्ग और मनुष्य को देवत्व देकर अमरत्व प्रदान करते हैं !

●●

—यह समझ बनी रहे तो प्रश्नों को जन्म न मिले। काई उगलनेवाला कीड़ा बहुत कुछ बदलने के लिए संघर्षरत है !

—हमारा विश्वासी मन कपास से मिटते हुए बादलों का घेरा बन जाता है। तब एक-दूसरे के प्रति की दृष्टि बदल जाती है।

—हमारे अपार और अदम्य साहस के बीच लालची कीड़े ने अपनी घुसपैठ कर ली है !

—यह बढ़ती जा रही है। तभी तो आदमी आदमी का हत्यारा है। वह अपने ही जाति-बोध को तिलांजलि देकर नफरत के बीज बोने लगा है।

—श्रेष्ठता के अनर्गल प्रलाप में समूची मानविक श्रेष्ठता खुले आम बिक रही है।

—यह द्रौपदी का चीर-हरण है ! . . . चीर-हरण हो सकता है, लेकिन क्या हम कौरवों की नस्ल से ऊपर नहीं उठ सकते ? हम विवश पांडवों की तरह पत्थर की मूर्ति बने खड़े रहेंगे ! हमारे भीतर का लक्ष्यभेदी अर्जुन हमेशा के लिए शिखंडी बन जाएगा !

●●

—नहीं, नहीं होना चाहिए यह सब !

—विश्वास के बीज बोने हैं तो ऐसी खाद डालिए और पौधों को ऐसे संभालिए कि वे अपनी नस्ल न बदल सकें !

—हमारे जन्म का मूल केंद्र विश्वास है, उसे अविश्वास में बदलने न दीजिए—यही मनुष्य-धर्म है। इसी धर्म-रक्षा के लिए कृष्ण-जैसे अवतार होते हैं !

—क्या हम सब कृष्ण नहीं बन सकते ?
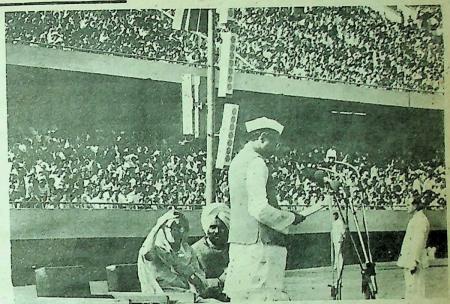
दिल्ली अब 'खेल-तीर्थ' बन गयी है

• विशेष प्रतिनिधि

नयी दिल्ली में सन १९५१ में आयोजित प्रथम 'एशियाड' के इकतीस वर्षों बाद नवम 'एशियाड' अनेक सुमधुर स्मृतियां पीछे छोड़, समाप्त हो गया है। नवम 'एशियाड' के दौरान पिछले कई 'रिकार्ड' तोड़े गये, नये कीर्तिमान स्थापित हुए। पिछले दिनों इनकी काफी चर्चा रही। 'एशियाड' तो समाप्त हो गया, लेकिन वह एक नया अध्याय छोड़ गया है। यह वस्तुतः कई लोगों की दृष्टि से उपेक्षित है, किंतु जिस पर इस देश को गर्व होना चाहिए।

यह अध्याय है, उन नव-निर्माणों का, जिनके बिना शायद, नवम 'एशियाड'

ऊपर : नेहरू स्टेडियम के उद्घाटन-अवसर पर भाषण करते हुए श्री भीष्मनारायण सिंह, साथ में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी एवं खेलमंत्री श्री बूटासिंह

का इतना सफल आयोजन हो ही नहीं सकता था। दो वर्ष पहले लोदी रोड परिसर का क्षेत्र वीरान था। पिछले दो वर्षों में इस सौ एकड़ जगह में इक्कीस करोड़ रुपये की लागत से एक भव्य स्टेडियम—जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम—समूचे देश के लिए गौरव ही नहीं, प्रेरणा का स्थायी स्रोत बना खड़ा है। इस स्टेडियम में ७५, ००० दर्शक बैठ सकते हैं। एथलेटिक प्रतियोगिताओं के लिए इस स्टेडियम में, देश में पहली बार, 'ओलंप्राइन कृत्रिम सतह' बिछायी गयी है। विद्युत-चालित उपकरण, मैट्रिक्स टाइप का विशाल स्कोर बोर्ड, अद्वितीय चार प्रदीप्त प्रकाश (फ्लड लाइट) टॉवर, इस स्टेडियम की मुख्य विशेषताएं हैं। आमतौर पर इस तरह का स्टेडियम बनने में चार-पांच वर्ष से कम समय नहीं लगता है। कुछ समय पहले बैंकाक के गवर्नर से हम मिले थे। उनका कहना था कि 'इतना सुंदर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर का स्टेडियम इतने कम समय में, इतनी कम लागत में—मात्र इक्कीस करोड़ रुपये में—तैयार किया जा सकता है, मैं तो इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।' स्मरण रहे, बैंकाक तीन बार 'एशियाड' का आयोजन कर चुका है। यों तो इसका मूल श्रेय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को है, जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन से ही ये सारे नव-निर्माण संभव हो सके, लेकिन इस ऐतिहासिक सफलता में केंद्रीय संसदीय कार्य तथा निर्माण और आवास मंत्री श्री भीष्मनारायण सिंह और उनके मंत्रालय के अधिकारियों व कर्मचारियों, इंजीनियरों एवं श्रमिकों का भी योगदान कम नहीं है। श्री भीष्मनारायण सिंह को 'मूक साधक' कहा जा सकता है। बिना किसी प्रचार के, उनके योग्य नेतृत्व में निर्माण एवं आवास मंत्रालय ने 'एशियाड' के लिए जरूरी विविध निर्माण-कार्यों को जिस सफलता व योग्यता से निष्पादित किया है, उसकी जितनी सराहना की जाए, कम है।

१४ नवंबर, सन १९८२, जवाहरलाल नेहरू का ९३वां जन्म-दिवस। इसी दिन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस भव्य स्टेडियम का उद्‍घाटन किया। इस अवसर पर हमारे साथ एक अधिकारी-मित्र और विरोधी-पक्ष के एक नेता भी उपस्थित थे। पिछले दो वर्षों की अवधि में, देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण वे बार-बार आशंका व्यक्त कर चुके थे कि ये सारे नव-निर्माण अधूरे ही रह जाएंगे, पर उस दिन हमने उनकी आंखों में खुशी के आंसू देखे। भरे कंठ से दोनों ने बारी-बारी से हमसे जो कहा, उसका आशय था—'वस्तुतः भारत में भी यह सब हो सकता है, विश्वास नहीं होता।'

उनकी भर्रायी वाणी ने हमें लंदन के मेयर की यह बात याद दिला दी, उन्होंने कहा था, 'इतना सुंदर, भव्य, इंजीनियरिंग-वर्क बहुत कम देखने में आता है। [illegible] पूछिए, यदि मेरी सरकार मुझसे

अठारह मास में इतना विशाल, आधुनिक उपकरणों से युक्त स्टेडियम तैयार करने के लिए कहती, तो दो दिन विचार करने के बाद मैं स्पष्ट शब्दों में कह देता, ऐसा कर पाना संभव नहीं है ।'

और भी अनेक विदेशी अतिथियों, खेल-प्रेमियों, खेल-समीक्षकों ने इसी तरह के स्वयं-स्फूर्त उद्‌गार व्यक्त किये हैं । निश्चयतः आवास-निर्माण मंत्रालय के मंत्री श्री भीष्मनारायण सिंह के नेतृत्व में, हमारे यहां आधुनिक 'विश्वकर्मा' की भूमिका निभायी गयी है। जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के उद्‌घाटन के अवसर पर श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी इस मंत्रालय और उसके मंत्री श्री भीष्म-नारायण सिंह का नाम लेकर प्रशंसा की थी । श्री भीष्मनारायण सिंह ने भी अपने भाषण में कहा था—'लगभग एक वर्ष पहले वन-महोत्सव के अवसर पर मैंने कहा था कि इस स्थान पर स्टेडियम नियत समय के भीतर बनकर तैयार हो जाएगा। तब से समय तेजी से बीत गया, लेकिन केंद्रीय लोक-निर्माण विभाग को धन्यवाद, जिसके लोगों ने चीफ इंजीनियर इंचार्ज श्री एन. सी. जयरामन के योग्य नेतृत्व में निर्धारित समय में इस स्टेडियम के निर्माण की चुनौती स्वीकार की और आज यह स्टेडियम हमारे सामने है—हर तरह से पूरी तरह तैयार ।'

जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के अलावा केंद्रीय लोक-निर्माण विभाग ने

विभिन्न मॉडलों का निरीक्षण करते हुए श्री भीष्मनारायण सिंह । साथ में हैं (बायें से तीसरे) केंद्रीय लोक-निर्माण विभाग के महा-निदेशक श्री एन. एस. एल. राव

निर्माण तथा आवास मंत्रालय के सार्वजनिक क्षेत्र के एक निगम—नेशनल बिल्डिंग कारपोरेशन के—माध्यम से प्रगति मैदान में एक 'हाल ग्रॉव स्टेट्स' एवं चार उपरि पुल (फ्लाय ग्रोवर) बनाये हैं—ये हैं—मूलचंद चौराहे पर, इंद्रप्रस्थ एस्टेट चौराहे पर, ग्रोबेराय इंटर कांटीनेंटल चौराहे पर ग्रौर लोदी रोड होटल चौराहे पर। स्कूल लेन के चौराहे पर, जेल रोड पर रेलवे लाइन के ऊपर ग्रौर सेवानगर के पास बने अन्य तीन उपरि पुल विभिन्न संस्थानों द्वारा बनाये गये हैं। ये सभी निर्माण-कार्य रिकार्ड अवधि में पूरे किये गये। 'हॉल ग्रॉव स्टेट्स' तो ग्यारह महीने में ही तैयार कर दिया गया।

इसी तरह इंद्रप्रस्थ स्टेडियम भी आधुनिक 'आर्किटेक्चोरियल इंजिनियरिंग' का चमत्कार कहा जा सकता है। दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा एक सौ दस एकड़ भूमि पर निर्मित वातानुकूलित इस स्टेडियम में पच्चीस हजार दर्शक खेल देख सकते हैं। आज यह स्टेडियम 'परी-लोक'-जैसा लगता है, लेकिन दो वर्ष पूर्व यह एक वीरान जगह थी। यमुना के कारण नरम भूमि पर इतने विशालकाय स्टेडियम की रचना अपने-आप में कठिन थी। स्थल को संभावित बाढ़ से बचाने के लिए लाखों घन मीटर मिट्टी वहां डालनी पड़ी। पांच हजार ट्रक ग्रौर सैकड़ों मजदूर इस काम में जुटे रहे। इंद्रप्रस्थ स्टेडियम में भारत के

पदक-तालिका

एशियाई खेलों की स्पर्धाओं में प्राप्त पदकों की तालिका इस प्रकार रही:

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
चीन	६१	५१	४१	१५३
जापान	५७	५२	४४	१५३
द. कोरिया	२८	२८	३७	९३
उ. कोरिया	१७	१९	२०	५६
भारत	१३	१९	२५	५७
इंडोनेशिया	४	४	७	१५
ईरान	४	४	४	१२
मंगोलिया	३	३	१	७
पाकिस्तान	३	२	५	१०
फिलीप्पाईंस	२	३	९	१४
थाईलैंड	१	५	४	१०
इराक	२	३	४	९
कुवैत	१	२	१	४
मलयेशिया	१	०	३	४
सिंगापुर	१	०	२	३
सीरिया	१	१	०	२
लेबनान	०	१	१	२
अफगानिस्तान	०	१	०	१
हांगकांग	०	०	१	१
विएतनाम	०	०	१	१
बहरीन	०	०	१	१
कातार	०	०	१	१
सऊदी अरब	०	०	१	१

तीन अतिरिक्त स्वर्ण पदक और तीन अतिरिक्त रजत पदक जिमनास्टिक में दिये गये। एक अतिरिक्त रजत पदक तैराकी में दिया गया। मुक्केबाजी, बैडमिंटन और टेबल टेनिस में सेमीफाइनल में हारनेवाले दोनों स्पर्धियों व टीमों को कांस्य पदक दिया गया।

प्रदेश के मजदूरों का श्रम लगा है—भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न संस्कृति, भिन्न-भिन्न खान-पान और रीति-रिवाज-वाले इन मजदूरों में ताल-मेल बैठाना दुष्कर-कार्य था। 'एशियाड' के लिए किये जानेवाले नव-निर्माणों में इन मजदूरों की भी कम भूमिका नहीं है। योग्य निर्देशन में उन्हीं के हाथों ने ये कागजी सपने साकार कर दिखाये हैं। चाहे, नेहरू स्टेडियम हो या टेनिस स्टेडियम (हौज खास), एशियाई खेलगांव हो या शूटिंग रेंज (तुगलकाबाद)।

सभी निर्माणों या अन्य परियोजनाओं के अंतर्गत किये जानेवाले पुनर्निर्माणों में आवास तथा निर्माण मंत्रालय की किसी न किसी स्तर पर अहम भूमिका रही है। इसी तरह दिल्ली विकास प्राधिकरण भी 'एशियाड' की निर्माण-संबंधी चुनौतियों में खरा उतरा है। नेहरूजी ने एक बार भाखड़ा बांध, भिलाई इस्पात कारखाने-जैसे नव-निर्माणों को भारत का 'आधुनिक तीर्थ' निरूपित किया था। हम राजधानी में बने इन स्टेडियमों को 'खेल-तीर्थ' की संज्ञा देंगे।

नवम एशियाई खेलों के लिए स्टेडियम आदि बनाने के कार्य के निरीक्षण आदि में श्री राजीव गांधी ने भी प्रमुख भूमिका निभायी है। श्री भीष्मनारायण सिंह ने तो अचानक निरीक्षण की कार्य-पद्धति ही अपना ली थी। आयोजन समिति के अध्यक्ष सरदार श्री बूटासिंह, और दिल्ली के उपराज्यपाल समेत अन्य लोगों का भी इस आयोजन की सफलता में योग रहा है।

नवम एशियाई खेलों की सफलता और इन खेलों को संभव बनानेवाले स्टेडियमों के निर्माण ने निश्चित ही एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। एक तरह से 'एशियाड' ने भारत की क्षमता की विश्व को प्रतीति करा दी है। यदि अब हम ओलंपिक-आयोजन का हौसला कर रहे हैं, तो गलत नहीं है। सच पूछा जाए तो अब भारत में कोई भी बड़ा अंतर्राष्ट्रीय आयोजन आसानी से हो सकता है। ●

और एक नया स्तंभ

मेरे अद्भुत अलौकिक अनुभव

तंत्र-विशेषांक के सिलसिले में हमें अनेक पाठकों से अलौकिक शक्तियों से साक्षात्कार के अद्भुत एवं प्रामाणिक प्रसंग प्राप्त हुए हैं। इस नये स्तंभ के अंतर्गत हम डेढ़-दो सौ शब्दों में ऐसे प्रसंग प्रकाशित करेंगे। पाठकों से अद्भुत, अलौकिक, किंतु प्रामाणिक अनुभव आमंत्रित हैं। ऐसी रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी, अतः उसके साथ डाक-टिकट न भेजें। —सं.

● शशि रामचन्द्र

करुणा खोसला, विमला देवी, चुन्नी, सलमा...और ऐसे ही न जाने कितने नाम ! हर नाम से जुड़ी एक ही कहानी, हर नाम का एक ही अंत—एक ही नियति—जीवित ही जला दिये जाने की। पहले इस अंत को आत्महत्या का नाम दिया जाता है। यदि मृतक के माता-पिता या भाई इस 'आत्महत्या' की जांच करवाने में सफल होते हैं, तो पता चलता है—यह आत्महत्या नहीं, हत्या थी।

समाचार-पत्रों में ऐसी खबरें, जैसे 'स्थायी स्तंभ' बनती जा रही हैं। आंसू बहाये जाते हैं, आक्रोश व्यक्त किया जाता है, प्रदर्शन होते हैं, पुलिस-जांच होती है, मुकदमे चलते हैं, फिर भी, ऐसी घटनाएं रुकती नहीं, बल्कि बढ़ती ही जा रही हैं। चाहे दिल्ली का सुसभ्य परिवार हो या कलकत्ता का वैभव-संपन्न परिवार या फिर कानपुर, लखनऊ का मध्यम या निम्न वर्गीय परिवार— हर वर्ग के परिवारों में ऐसी घटनाएं घटी हैं। यहां तक कि अब ग्रामीण समाज भी अछूता नहीं बचा। नांगलोई: दिल्ली का ग्रामीण इलाका, जो अब औद्योगिक नगर बनता जा रहा है। बीस वर्षीया मुन्नी इसी नांगलोई की रहनेवाली है। एक दिन उसे उसके माता-पिता जली हुई स्थिति में अस्पताल लाये। मुन्नी ने मजिस्ट्रेट के सामने जो बयान दिया, उसका सार यह था कि उसके पति एवं सास ने उसे जला दिया। सास ने उस पर मिट्टी का तेल छिड़का और पति ने माचिस की तीली लगा दी।

जलना शायद, सदा से भारतीय नारी की नियति है—**इमानारीर विधवा सपत्नीरां जनेन सर्पिणा संविशंतु। अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना अरोहंतु जनयो योनिमग्रे॥** ऋग्वेद की इस ऋचा को सती-प्रथा के प्रमाण-स्वरूप प्रस्तुत कर कहा जाता है कि वैदिक काल में सती-प्रथा का प्रचलन था, पर हिंदू सभ्यता में नारी की स्थिति पर शोध करनेवाले डॉ. आल्टेकर का मत है कि इसमें प्रत्यक्ष रूप से नारी के जलकर मरने का उल्लेख नहीं है। इस ऋचा का संकेतार्थ यही है कि सधवा स्त्रियां शव-संस्कार के लिए जाती थीं। अथर्ववेद में उल्लिखित एक प्रथा के

जलना शायद, सदा से भारतीय नारी की नियति है। नारी के जलने की एक प्रथा को सती-प्रथा भी माना गया है, जिसके प्रमाण-स्वरूप कुछ लोग ऋग्वेद की ऋचा का उल्लेख भी करते हैं, लेकिन इस ऋचा का संकेतार्थ कुछ और ही है . . .।

अनुसार विधवा को पति की चिता पर चढ़ाकर, उससे धन-धान्य से पूर्ण जीवन बिताने के लिए चिता से उतर आने की कुटंबी जन द्वारा सामूहिक प्रार्थना की जाती है। यों, महाभारत में राजा पांडु की पत्नी माद्री और रामायण में मेघनाद की पत्नी सुलोचना के सती होने का उल्लेख अवश्य मिलता है। बाद में, मुस्लिम काल में कई कारणों से सती-प्रथा को प्रश्रय मिला। उन्नीसवीं शती में इस प्रथा के खिलाफ बंगाल में राजा राममोहन राय ने एक जबर्दस्त अभियान छेड़ा। फलतः सन १८२८ में लार्ड बेंटिक ने एक अधिनियम द्वारा इस प्रथा को समाप्त करा दिया, लेकिन किसी न किसी रूप में यह प्रथा आज भी जीवित है।

सती-प्रथा निश्चयतः एक क्रूरतम परंपरा बन गयी थी, लेकिन पति के रहते, पति एवं उसके संबंधियों द्वारा पत्नी को जीवित जलाने को क्या कहा जाए?

विवाहित तरुणियां क्यों जलायी या मार दी जाती हैं? समाचारों का विश्लेषण, पति सहित ससुरालवालों की धन-लोलुप मनोवृत्ति को ही इसका अपराधी घोषित करता है। यदि पिछले दो-तीन वर्षों के अखबारों को देखा जाए, तब पता चलेगा कि इधर वधुओं की हत्याओं की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। कभी नवविवाहित वधू को जलाकर मार दिया जाता है और कभी गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी जाती है। पत्नी की हत्या में पति भी अहम भूमिका निभाता है।

भूख दहेज की

नवविवाहिताओं को जीवित जलाने के पीछे कौन-सा लालच, कौन-सी भावना काम करती है? समाचारों के अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश हत्याओं के पीछे दहेज की भूख ही है। अखबारों में अकसर इस तरह के समाचार छपते रहते हैं कि किस तरह अधिक धन के लालच में किसी वधू की हत्या कर दी गयी। कभी पिता का विस्तारपूर्वक बयान छपता है कि किस तरह ससुरालवाले दहेज की बकाया राशि या दहेज के बाद भी और अधिक की कामना से उसकी बेटी को यातना देते रहे। कभी भाई की यह अंतर्वेदना जाहिर होती है कि किस तरह स्कूटर या फ्रिज न लाने के कारण उसकी बहन मार दी गयी। कभी वधू का स्वतंत्र व्यक्तित्व भी ससुरालवालों को कांटे-सा चुभता है, और कांटा तो निकाल ही फेंका जाता है! कभी-कभी दूसरे विवाह द्वारा धन-प्राप्ति का लालच भी वधू की मौत का कारण बन जाता है। पत्नी के चरित्र पर संदेह भी कभी-कभी पत्नी के लिए मौत का कारण बन जाता है।

कभी-कभी बहू स्वयं भी जलकर, विष पीकर या गले में फंदा लगाकर आत्महत्या कर लेती है, पर इसके लिए भी दोषी वह नहीं, ससुराल की वे परिस्थितियां हैं, जिनके कारण उसे यह भयानक निर्णय करना पड़ता है। कभी-कभी नये घर में वह स्वयं को 'एडजस्ट' नहीं कर पाती।

पिता के घर यदि वह मुक्त गौरैया-सी चहचहाती रहती है, तो ससुराल में उसे पिंजरे में बंद पंछी की जिंदगी बितानी पड़ती है। बात-बात पर ताने, नौकरानियों से भी बदतर व्यवहार, हर तरह से अपमानित करने की चेष्टा। बहू चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, इस सतत अपमान को नहीं झेल पाती और अंततः उसे आत्महत्या ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग प्रतीत होती है।

हमने स्वयं इन्हीं कारणों से कभी बहू को जलकर मरते देखा है और कभी पति-गृह त्यागते। दिक्कत यह है कि ऐसे परिवार इन हादसों से सबक भी नहीं लेते और दूसरी, नयी बहू के प्रति भी उनका व्यवहार नहीं सुधरता। एक और शोचनीय और दुःखद तथ्य है—किसी बहू के जल मरने पर, अन्य अविवाहित

कन्या का पिता, उस अभिशापपूर्ण स्थिति को अपने लिए वरदान समझ बैठता है और मुंहमांगी कीमत चुकाकर 'विधुर वर' को हथियाने की यथासंभव चेष्टा करता है।

इस विषय में अनेक अभिभावकों, लेखकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं से बात करने पर पता चला कि वधुओं को जलाये जाने का एक मुख्य कारण दहेज, प्रकारांतर से धन-लोलुपता ही है।

सर्वोच्च न्यायालय के प्रख्यात न्यायाधीश जस्टिस एस. मुरतजा फजल अली ने एक बार अपने भाषण में कहा था कि दहेज के कारण की जानेवाली हत्याओं को 'स्पेशल मर्डर' माना जाए।

लेकिन दिक्कत यह है कि पुलिस ऐसी हत्याओं के प्रति लापरवाही का रुख अख्त्यार करती है। तीस प्रतिशत से अधिक मामले तो दर्ज ही नहीं किये जाते। जो मामले दर्ज किये भी जाते हैं, उनके प्रति भी आवश्यक सतर्कता नहीं बरती जाती।

इन्हीं समस्याओं की चर्चा करते हुए जस्टिस एस. मुरतजा फजल अली ने सुझाव दिया है कि यदि विवाह के दो वर्ष बाद बहू जलकर या अस्वाभाविक मौत मरती है, तब पुलिस उसके पति-पक्ष को पकड़े और स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने का दायित्व उन्हीं पर डाला जाए अर्थात वे सिद्ध करें कि वे निर्दोष हैं। उन्हें दोषी सिद्ध करने के लिए पुलिस को जांच-पड़ताल न करनी पड़े।

संभव है कि पुलिस और कानून के भय से विवाह के तुरंत या दो-तीन वर्षों में बहुओं के जलाये जाने की घटनाएं न हों। लेकिन, इससे बहुओं को दी जानेवाली यातनाएं तो कम नहीं होंगी। वे तो मौत से भी बदतर सिद्ध होंगी।

जरूरत है आंदोलन की

दहेज को लेकर पिछले कुछ समय से देश में राष्ट्रव्यापी बहस छिड़ी हुई है। हम कहना चाहेंगे कि मात्र कानून से न तो दहेज पर प्रतिबंध लग सकेगा और न 'आत्महत्या' के नाम पर हत्याएं बंद होंगी। उसके लिए एक सामाजिक आंदोलन छेड़ने की जरूरत है। लेकिन यह सामाजिक आंदोलन छेड़ेगा कौन ?

राजनीतिक दलों से इसकी कोई

दहेज में चर्च का हिस्सा

केरल के चर्चों पर दहेज-प्रथा के प्रभाव की चर्चा करते हुए सुश्री लीला अय्यर ने अनेक चौंकानेवाले तथ्य दिये हैं। केरल के ईसाई-परिवारों में विवाह के समय दहेज लेने या देने की प्रथा देश के अन्य हिस्सों की तरह व्याप्त है। इस प्रथा के अनुसार दहेज लेने या देनेवाले को चर्च को दहेज का कुछ प्रतिशत देना पड़ता है। यदि ऐसा नहीं किया जाता है, तब चर्च द्वारा विवाह कराने से इनकार कर दिया जाता है। आमतौर पर यह राशि कुल दहेज का एक प्रतिशत से छह प्रतिशत तक की होती है। अतः अकसर लोग चर्च को कम दहेज लेने या देने की सूचना देते हैं, ताकि उन्हें चर्च को कम राशि देनी पड़े।

उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

देश में सामाजिक संस्थाएं प्रायः प्रभावहीन हो चुकी हैं।

युवा वर्ग तो दिशाहीनता का शिकार है ही।

कभी-कभी स्वाधीनता पूर्व की तरुणाई याद आती है। कितने सामाजिक आंदोलन छेड़े उस पीढ़ी ने। वर्तमान युवा पीढ़ी बजाय दहेज-जैसी कुरीतियों के खिलाफ ईमानदारी से संघर्ष छेड़ने के, जैसे उनके मोहपाश में ही बंधती जा रही है। अविवाहित युवक के मन में ससुराल से बहुत-कुछ मिलने की आशा पहले ही भर दी जाती है। वह तरह-तरह की इच्छाएं-कामनाएं संजो बैठता है। और जब उसकी अपेक्षाएं पूरी नहीं होतीं, तब उसका फल उसकी तथाकथित जीवन-संगिनी को भोगना पड़ता है। यह किसी एक वर्ग की नहीं, किसी एक घर की नहीं, हर वर्ग और हर घर की बात है। हां, अपवाद तो हर जगह होते हैं।

समस्या असमानता की

ये सारी समस्याएं प्रकारांतर से एक बहुत बड़ी समस्या से जुड़ जाती हैं। यह समस्या है--समाज में असमानता की। यदि एक बहु प्रचलित वाक्य को दोहरायें, तो 'आजादी के बाद देश में अमीर और अमीर हुए हैं व गरीब और गरीब।' यों, इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि आमतौर पर जीवन-स्तर सुधरा है, फिर भी असमानता पहले से बढ़ी है। कुछ वर्षों पहले यदि रेडियो विशेष उपहार था, तब आज टी.वी. आम और वीडियो रिकार्डर विशेष। आज निम्न या मध्यम-परिवार में, विशेषकर महानगरों में, वधू के साथ टी. वी., फ्रिज भेजा जाना तो जैसे अनिवार्य और सहज हो गया है। और, जब कोई परिवार अपनी बेटी को यह सब, या इनमें से आंशिक रूप से ही कुछ दे पाता है, तो फिर उसका जीवन कष्टमय होने की आशंका उन्हें सालती रहती है।

हमारी राय में इस समस्या का एकमात्र कारगर उपाय है कि देश की जनता में चेतना उत्पन्न की जाए। लोग भय या सामाजिक भय से नहीं, स्वेच्छा से दहेज के लेन-देन से घृणा करने लगें। दहेज के प्रति वही नफरत और विरक्ति पैदा करने की जरूरत है, जैसी गांधी ने विदेशी वस्त्रों के प्रति पैदा की थी। क्या कोई नया गांधी इस मामले में हमारा नेतृत्व करेगा? ●

तेल अवीव की मारिया ट्रोस्टर सुबह ही सुबह नहाने के लिए दौड़ी, तो बाथरूम को नोटों से भरा पाकर भौंचक रह गयी। नल ठीक करनेवाला कारीगर पाइपों को खोल रहा था और पाइपों से नोटों की बरसात हो रही थी, लेकिन सभी नोट नकली थे। पुलिस आयी, तब पता चल पाया कि इसी फ्लैट से एक गिरोह पकड़ा गया था, लेकिन उससे नोट नहीं मिल पाये थे--काश ये नोट असली होते . . . ?

● कृष्णा साही
संसद-सदस्या

पिछले तीन दशकों में भारत में हुए आधुनिकीकरण व शहरीकरण से दहेज की समस्या ने, जो अब तक सम्भ्रांत परिवारों तक सीमित थी, अपने कुप्रभाव मध्यम एवं निम्न आय वर्गों पर भी दिखाने शुरू कर दिये हैं।

यह सच है कि समाज में मानस-परिवर्तन शिक्षा से आएगा, फिर भी, कानून किसी सामाजिक समस्या के मामले में अंकित बाध्य मूल्यों के अतिरिक्त समाज-शिक्षण का साधन भी है। भारत में सन १९३९ से दहेज विरोधी कानून पारित करने की प्रक्रिया में गलती रही है। सन १९३९ में सिंध में, सन १९५० में बिहार में, सन १९५८ में आंध्र प्रदेश में दहेज प्रतिषेध अधिनियम पारित किया गया। समस्या की गंभीरता को समझ संसद ने सन १९६१ में अखिल भारतीय स्तर पर दहेज प्रतिषेध अधिनियम पारित किया, जिसमें राज्य स्तर पर विशिष्ट समस्याओं के परिवेश में बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व पंजाब राज्यों ने कुछ संशोधन किये।

पिछले दशक के उत्तरार्ध में यह महसूस किया जाने लगा कि इस अधिनियम के बावजूद दहेज की समस्या पर कोई अंकुश नहीं लगाया जा सका है। अतः दिसंबर, सन १९८० में संसद के दोनों सदनों की एक संयुक्त समिति का गठन किया गया, जिसने ११ अगस्त, १९८२ को अपना प्रतिवेदन संसद में प्रस्तुत किया।

अधिनियम की धारा-२ में प्रदत्त दहेज की परिभाषा के संबंध में परस्पर काफी मतभेद रहा। समिति इस निष्कर्ष पर पहुंची कि शब्द 'प्रतिफल' को परिभाषा से हटाकर दहेज में दी जानेवाली वस्तुओं के मूल्य की सीमा निश्चित कर दी जाए, जिनका मूल्य वधू के माता-पिता की पिछले वर्ष की आय का २० प्रतिशत से कम या पंद्रह हजार रुपये से कम होना चाहिए। वधू के विवाह के समय या इससे पहले या बाद में दी जानेवाली वस्तुओं का पंजीकरण अनिवार्य कर दिया जाए। विवाहों में तड़क-भड़क कम किये जाने के उद्देश्य से विवाह खर्चों की भी एक सीमा निर्धारित की जाए। अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन करने पर दिये जानेवाले दंड की सीमा बढ़ा दी जाए। दहेज देनेवाले व्यक्ति

को दंडित नहीं किया जाए।

समिति का यह भी विचार है कि अधिनियम के अंतर्गत आनेवाले अपराधों को संज्ञेय (कागनीजेबल) बना दिया जाए, लेकिन शर्त यह हो कि गिरफ्तारी मजिस्ट्रेट के वारंट के बिना न हो।

वधू-उत्पीड़न : दंडनीय अपराध

हाल में दहेज न मिलने अथवा दहेज कम मिलने के आधार पर पति या उसके परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा वधू को दांपत्य-जीवन से वंचित कर उत्पीड़ित करने के मामले प्रकाश में आये हैं। जैसाकि, वधू को उसके मैंके से लंबे अरसे तक न लाना या उसे मैंके न जाने देना या मैंकेवालों से न मिलने देना या पति के अन्य स्थान पर सेवारत होने की स्थिति में उसे पति के पास न रहने देना आदि। इस प्रकार के उत्पीड़नों के लिए संभवतः भारतीय दंड संहिता में कोई उपचार नहीं है। समिति ने सिफारिश की है कि दहेज प्रतिषेध अधिनियम में यथोचित प्रावधान कर इस प्रकार के उत्पीड़नों को दंडनीय अपराध घोषित किया जाए।

अभी तक अधिनियम के अंतर्गत नियम बनाने की क्षमता केवल केंद्रीय सरकार में निहित है। सिफारिश की गयी है कि इस मामले में राज्य सरकारों को भी अपने-अपने अधिकार-क्षेत्र में नियम बनाने के अधिकार दिये जाएं।

अभी तक इस अधिनियम के अंतर्गत मामलों की सुनवाई सामान्य फौजदारी न्यायालयों में ही होती रही है। लेकिन, इस प्रकार के नाजुक पारिवारिक संबंधों के मामले में क्षेत्राधिकार विशिष्ट पारिवारिक न्यायालयों को दिया जाए, जैसा कि पाश्चात्य व अन्य विकसित देशों में दिया गया है, क्योंकि पारिवारिक न्यायालय अपने गठन के प्रारूप व अन्य मामलों में परंपरावादी न्यायालयों से भिन्न होते हैं। इन न्यायालयों को स्वयं छानबीन करने का अधिकार होता है तथा ये न्यायालय साधारण प्रक्रियाओं से भी प्रतिवद्ध नहीं होते।

पंजीकरण अनिवार्य हो

इसके अतिरिक्त समिति ने बहुत से अन्य पारिवारिक संबंधों के मामलों में, जिनका परोक्ष व अपरोक्ष रूप में दहेज की समस्या से संबंध होता है, सिफारिश की है, जैसा कि पुत्र-पुत्री को माता-पिता की जायदाद में समान अधिकार, समान सिविल संहिता, विवाहों का अनिवार्य पंजीकरण इत्यादि-इत्यादि।

वैसे दहेज-जैसी घिनौनी सामाजिक समस्या का निराकरण मुख्यतः जनमानस के परिवर्तन से ही संभव है, और इसके लिए युवा पीढ़ी को मुख्य भूमिका अदा करनी है। लेकिन, युवा वर्ग पर घर की प्रतिष्ठा के स्थान पर अपना अहम, स्वार्थ, भोग-विलास, सैद्धांतिक नैतिकता का अभाव और धनसंग्रह का मूल्य हावी हो गया है। रहन-सहन की बेहतर स्थिति की होड़, सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन, अपनी संस्कृति, सभ्यता की अज्ञानता भी युवा-वर्ग को दिग्भ्रमित कर रही है।

—५७, नार्थ एवेन्यू, नयी दिल्ली-१

विज्ञापन अब व्यापार की प्रमुख आवश्यकता हैं

• एम. हिदायतुल्ला
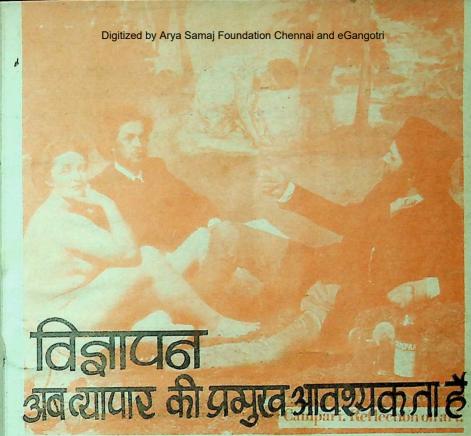
विज्ञापन के क्षेत्र में मेरा पहला कदम तब पड़ा था, जब मैं लंदन के वस्त्र-निर्माता 'होप ब्रदर्स' के यहां गया था और मैंने उन्हें 'होप फॉर द बेस्ट'-जैसा शीर्षक प्रदान किया था, परंतु कल्पनाशून्य व्यापारिक अधिकारी इस पंक्ति का सिर्फ परंपरागत अर्थ ही ग्रहण कर पाया और उसने विज्ञापन के लिए इसका इस्तेमाल नहीं किया। फिर भी उसने मुझे इसका मुआवजा पांच ब्रितानी सिक्कों में दिया। मुझे पूरा यकीन है कि अगर वह व्यक्ति महान कंपनी रौल्स का व्यवस्था-निदेशक होता, तब वह मेरा आभार जरूर मानता।

विज्ञापन के दो महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। कभी-कभी प्रचार ऐसा होता है, जिसका कोई व्यावसायिक लक्ष्य नहीं होता। यानी, ऐसा प्रचार, जिसका कि उपयोग हम जनता को शिक्षित करने और राष्ट्रीय व कल्याण-कारी योजनाओं के प्रति प्रेरित करने

ऊपर : 'कंपारी' शराब के विज्ञापन के लिए प्रख्यात चित्रकार माने की कलाकृति का उपयोग

के लिए करते हैं। इसके लिए सरकार को प्रचार के तमाम रास्तों को अपनाना चाहिए तथा इस प्रचार पर व्यावसायिक विज्ञापन-कर्म की प्रतिभा, की लीक पर काम करने की बात पर ज्यादा विचार करना चाहिए।

व्यापार की प्रमुख आवश्यकता

विज्ञापन-क्षेत्र के लोग शायद, सरकारी विज्ञापन के बारे में उतने चिंतित नहीं हैं, जितने कि व्यावसायिक विज्ञापन के बारे में। विज्ञापन आज व्यापार की प्रमुख आवश्यकता है। जैसा कि व्यंग्यकार ब्रिट ने कहा है, 'बिना विज्ञापन व्यापार करना किसी खूबसूरत लड़की को अंधेरे में आंख मारना है। तुम तो जानते हो कि उस समय तुम क्या कर रहे हो, पर दूसरा कोई नहीं जानता।' अतः तुम्हें अपने उत्पादन की तारीफ करनी ही है, खरीदार को यकीन दिलाना ही है कि तुम्हारा साबुन दूसरों के साबुन से ज्यादा सफेदी निखारता है, और तुम्हारे ब्लेड से एक बार दाढ़ी बनाने का मतलब शतकों की विजय प्राप्त करना है। फारसी में इसे 'जंगे जरगारी' कहते हैं। यह सुनारों के बीच का झगड़ा है। एक सुनार का दावा है कि उसका सोना दूसरों के शुद्ध सोने से ज्यादा शुद्ध है।

आज तो बिना विज्ञापन किये कुछ भी नहीं बेचा जा सकता। साड़ियां पहने मॉडल लड़कियों के फोटो, हर जगह दीखते हैं। ये साड़ियां मॉडल लड़कियों पर या उदारतापूर्वक प्रकृति ने जिन्हें सौंदर्य दिया है, उन्हीं पर अच्छी लगती हैं, लेकिन दूसरों पर नहीं। पोशाकें मरदाना मॉडल पर अच्छी जंचती है, किंतु कौन परवाह करता है कि बनावट में कोई कमी रह गयी है—जैसे कि कोट का आखिरी बटन ढीला है या बंदूक के घोड़े पर अंगुलियां गलत रखी गयी हैं। विज्ञापन अखबारों, पत्रिकाओं, स्मारिकाओं और लैंप-पोस्टों तथा बड़ी-बड़ी दीवालों पर अंकित होते रहते हैं। हमें गलियों या हवाई अड्डे के रास्ते या अस्पतालों के नाम याद नहीं रहते। हम तो कपड़ा मिलों, सिनेमाघरों, फिल्मों से नाम इकट्ठे करते हैं। स्पष्ट है कि पेंसिल से लेकर जेट हवाई जहाज तक, बिना विज्ञापन के नहीं बेचे जा सकते। जो लोग जेट हवाई जहाज खरीदते हैं, वे अपने लिए पूरी छानबीन करते होंगे, पर हम बेचारे पाठक सिर्फ विज्ञापन ही

पढ़ते हैं। अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों पर खिदमत के लिए स्वर्ग की हूरों का धरती पर आकर सेवा करने का भाव विज्ञापित किया जाता है। एक उच्चकोटि के विज्ञापन में खाना ले जानेवाली हाथगाड़ी दिखायी गयी थी, जिस पर शीर्षक था—'अपनी पेटियां खोल डालिए।' कंपारी पेय अपनी ओर खींचता है, पर मुकाबला चित्रकार माने की महान कलाकृति से हो जाता है।

क्षेत्र असीमित है

विज्ञापन की कला की कोई सीमा नहीं है। इसे राजनीति और सरकार में भी लागू किया जा सकता है। हरबर्ट जेनकिंस ने अपनी किताब में एक कहानी शामिल की थी, जिसका शीर्षक था, 'प्रधानमंत्री विज्ञापन का निर्णय लेते हैं।' ठीक है, यह किसी खास तरह के प्रधानमंत्री के बारे में नहीं था क्योंकि, प्रधानमंत्री भी भिन्न तरह के होते हैं—जैसे मार्ग्रेट थेचर और मोरारजी देसाई में भिन्नता है। इससे पहले कि मैं यह कहूं कि प्रधान-मंत्री इस सिलसिले में कैसे आगे बढ़े, मेहरबानी कर मुझे यह बताने दें कि हरबर्ट जेनकिंस लंदन का एक महान व्यंग्यकार था। पी. जी. वुडहाउस ने उसकी किताब की भूमिका लिखी थी, जिसमें उसने अपने बारे में बात करते हुए लिखा था—

'अकसर मैं एक पुस्तक-विक्रेता के यहां जाता, अपनी किताब उठाता और उबासी लेते हुए लापरवाही से पूछता, 'क्या यह किताब अच्छी बिक रही है?' और पुस्तक-विक्रेता उत्तर देता, 'नहीं, नहीं साहब।' मैं बताता, 'यह किताब मेरे एक दोस्त ने लिखी है।' और पुस्तक-

आज बिना विज्ञापन किये कुछ भी नहीं बेचा जा सकता, पेंसिल से लेकर जेट हवाई जहाज तक। विज्ञापन की कला दरअसल, सुनारों के बीच का झगड़ा है, जिसमें हरेक का यही दावा है कि उसका सोना दूसरे के सोने से ज्यादा शुद्ध है। विज्ञापन की कला पर प्रस्तुत है, उपराष्ट्रपति श्री एम. हिदायतुल्ला का रोचक लेख।

विक्रेता नाक सिकोड़ता, मानो जताता कि अच्छा हो, मैं ऐसे लोगों से दोस्ती न करूं।'

विज्ञापन : सफलता की कुंजी

वुडहाउस की इस अभिशंषा के बाद आप मुझे एक लंबा उद्धरण देने की अनुमति दें। इस उद्धरण में प्रधानमंत्री एक विज्ञापन कंपनी के मुखिया से बात कर रहे हैं। वह कहते हैं, देखिए, तुम्हें एकाधिकार चलाना है—'जैसे दवाई के नुस्खे का एकाधिकार, तो नब्बे फीसदी पैसा विज्ञापन पर खर्च कर दो, बाकी दस फीसदी उत्पादन पर, जब ठीक ढंग से विज्ञापन करोगे, तब तुम अपने क्रेता पा लोगे। . . . उदाहरण के लिए स्वर्गीय रनजे आधुनिक तरीके समझते थे। किसी पुरातनपंथी मंत्री के बयान की तरह कि राजा की ख्वाहिश है कि ३,००,००० बारूदी खोल राष्ट्र के लिए जरूरी रहेंगे, तब सही आदमी कहेगा कि 'श्रीमान रनजे, ३,००,००० बारूदी खोल चाह रहे हैं।'

संपदा का भी विज्ञापन

सवाल है कि विज्ञापन हमें जीवन के हर क्षेत्र में कितना बांधता है। गॉलब्रेथ महोदय ने अपनी किताब 'समृद्ध समाज़' में कहा है कि 'संपदा कभी भी अपने आप में पर्याप्त सम्मान का स्त्रोत नहीं रही, उसका विज्ञापन होना चाहिए।'

हमारे देश में विशेष विवाह-विज्ञापन छपते हैं। दूल्हे, विदेशों से लौटे या विदेशों में बसे, ऊंची तनख्वाहोंवाले बताये जाते हैं। और लड़कियों के बारे में तो तरह-तरह के ब्यौरे छापे जाते हैं। मेरी जिज्ञासा रही है कि तथाकथित दहेज से संबंधित हत्याओं के पीछे इन शर्तों और आश्वासनों को तोड़ने को कहां तक जिम्मेदार ठहराया जा सकता है?

सबसे ज्यादा होशियारीभरा विज्ञापन, जिसकी जानकारी मुझे है, वह अमरीकी सरहद पर स्थित एक पेट्रोल-विक्रेता का था। उसने एक विशाल विज्ञापन बोर्ड लगा रखा था, जिस पर लिखा था, '४० सेंट में एक लीटर पेट्रोल खरीदने का आपका आखिरी मौका।' तमाम मोटरवाले वहां अपनी टंकी भरवाते और तेल के दो-चार डिब्बे भी खरीदकर ले जाते। जब वे सरहद पार कर दूसरे प्रांत में पहुंचते, तब वहां उन्हें पता चलता कि तेल की कीमत तो २५ सेंट प्रति लीटर थी। **नयी दिल्ली-१**

कायरता से हिंसा अच्छी है!

● डॉ. रामजी सिंह

बापू ने ११ अगस्त, १९२० के 'यंग इंडिया' में लिखा था, 'जहां केवल कायरता और हिंसा के बीच ही चुनाव करना हो, तो मैं हिंसा को पसंद करूंगा।' उन्होंने स्पष्ट कहा था, 'अपने आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए मैं चाहूंगा कि हमारा राष्ट्र उसका सशस्त्र प्रतिकार करे, न कि अपनी बेइज्जती का मूक द्रष्टा बनकर कायरतापूर्ण ढंग से देखता रहे।'

इसी प्रकार बिहार के बेतिया नामक छोटे शहर में कुछ लोगों ने यह बताया कि जब पुलिस उन लोगों का घर लूटने लगी और उनकी स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करने लगी, तब वे लोग भागकर उनके पास गये थे, क्योंकि बापू ने उन्हें अहिंसक रहने को कहा था। इस बात को सुनकर बापू ने शर्म से अपना सिर झुका लिया। फिर उन्होंने दर्दभरे शब्दों में कहा कि उनकी अहिंसा का यह अर्थ नहीं था! उन्होंने तो आशा की थी कि यदि अहिंसक सत्याग्रही के आश्रितों एवं स्त्रियों के ऊपर कोई बुरी निगाह डालता हो, या उसको दुःख देने की धृष्टता करता हो, तब चाहे वह कितना ही बड़ा शक्तिशाली क्यों न हो, प्रतिहिंसा की भावना रखे बिना, उसके अन्यायपूर्ण व्यवहार का प्रतिकार करने के लिए वह अपने प्राणों की बाजी लगा देगा, लेकिन उससे बचने के लिए भागेगा नहीं।

कायरता से हिंसा भली

चमचमाती तलवार की नोक पर भी अपनी संपत्ति, इज्जत और धर्म की रक्षा करना ही पुरुषार्थ है। यह ठीक है कि यदि हम अहिंसा द्वारा ही इन सब की रक्षा कर सकें, तब और भी उत्तम है। लेकिन मात्र अपने को बचाने के लिए अपनी संपत्ति, इज्जत और धर्म को आततायियों की मरजी पर छोड़ना कापुरुषता, शर्मनाक और सम्मान-विरुद्ध है। जो सिर पर कफन बांधकर अपने कर्त्तव्य का पालन करना नहीं सीख सके हैं, अहिंसा के उपदेश उनके लिए हैं ही नहीं। जिसमें प्रतिहिंसा के बिना, शांत भाव से, मौत का भी मुकाबला करने का साहस नहीं है, उसके लिए तो यही ठीक होगा कि दूसरों को भी मारते हुए मर जाए, लेकिन खतरे से भागकर अपना मुंह न छिपाये। आत्म-दाह के द्वारा जहां अपना अंत कर देने की तैयारी न हो, वहां आत्म-रक्षा के लिए हिंसा स्वाभाविक है। इसीलिए गांधीजी ने लिखा था, 'संपूर्ण राष्ट्र के क्लीव होने की अपेक्षा मैं हिंसात्मक उपाय ग्रहण करना हजारों गुना अच्छा मानता हूं।' ('यंग इंडिया,' ४-८-१९२०)

इसी प्रकार 'हरिजन' (१-३-१९४२) में उन्होंने स्त्रियों के शील-हरण के विषय में स्पष्ट लिखा था, 'जब उसका शील-हरण होने का भय हो, तब उसे हिंसा-अहिंसा के संबंध में मीन-मेख करने की जरूरत नहीं। शील-रक्षा के लिए उसे उस समय जो भी साधन सूझे, उसका उपयोग करे। भगवान ने उसे नाखून और दांत दिये हैं। इन सभी का वह पूरी ताकत से उपयोग करे और जरूरत पड़े तो जान भी दे दे।'

कमजोर व कायर की अहिंसा नहीं

इन सभी उदाहरणों के मूल में एक ही बात है, 'अहिंसा और कायरता का कहीं मेल नहीं है।' ('हरिजन', १५-७-१९३९)। एक पूर्णरूप से हथियारबंद आदमी भी भीतर से कायर हो सकता है। इसलिए हथियार रखने से ही आदमी बहादुर नहीं हो जाता। हथियार तो वही रखता है, जिसके दिल में डर होता है, लेकिन अहिंसा के लिए तो विशुद्ध निर्भयता जरूरी है। सच्ची और झूठी अहिंसा में इसीलिए बापू ने भेद किया था, 'जब विचार में अहिंसा प्रतिष्ठित न हो और हम केवल मजबूरी से कर्म और व्यवहार में अहिंसा दिखायें, तब वह कमजोरों एवं कायरों की अहिंसा होगी और उससे कोई शक्ति नहीं निकलती। इसलिए अहिंसक संग्राम में द्वेष एवं घृणा के लिए कोई स्थान नहीं है।' ('यंग इंडिया', २-४-१९३१)। अहिंसा तो क्षमा की पराकाष्ठा है और क्षमा वही कर सकता है, जो शक्तिमान है—'क्षमा सोहती उस भुजंग को जिसके पास गरल है।' आत्म-रक्षा में असमर्थ एवं अशक्त व्यक्ति क्या क्षमा करेगा? इसीलिए जो व्यक्ति अपनी, अपने स्त्री-बच्चों, अपने धर्म-स्थानों की रक्षा अहिंसात्मक बहादुरी से करने में असमर्थ है, उसे बापू की तरफ

जो सिर पर कफन बांधकर अपने कर्त्तव्य का पालन करना नहीं सीख सके हैं, अहिंसा का उपदेश उनके लिए है ही नहीं।

से किसी भी प्रकार से आत्म-रक्षा की खुली छूट है। केवल एक ही छूट बापू ने हमें नहीं दी है—वह है कायरता की। आत्म-रक्षा के लिए किसी की जान लेना ही जरूरी नहीं है, अपितु स्वयं मर-मिटने की तैयारी भी अवश्य होनी चाहिए। इतिहास साक्षी है कि मरकर स्वत्व-रक्षा की ताकत दिखाने-वाले व्यक्ति ने बड़े-से-बड़े आततायियों को प्रभावित किया है।

संघर्ष का मानवीयकरण

अहिंसा द्वारा जो अन्याय का प्रतिकार करते हैं, वे संघर्ष का भी मानवीयकरण करते हुए मानव-जाति को गरिमा प्रदान करते हैं। हिंसा में नृशंसता होती है, उससे मानवता कलंकित होती है। दंगे के समय भी अहिंसा ही अपना चमत्कार दिखाकर, सच्ची शांति स्थापित करने में मदद देती है। गुंडे शून्य में से नहीं आते, वे भी समाज में ही पलते हैं। उन पर भी सच्चे अहिंसक एवं शांति-सैनिकों का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता, जबकि हथियार-बंद पुलिस पर दंगों के समय भी हमला होता है। क्रांतिकारियों की बहादुरी और उनके बलिदान से बापू कभी इनकार नहीं करते थे, लेकिन वे मानते थे कि इसमें तो उनकी अपूर्व शक्ति का दुरुपयोग ही होता है, क्योंकि उनकी वीरता भी अनेक निर्दोष व्यक्तियों के खून से कलंकित होती है। इसके विपरीत एक निर्दोष और सच्चे अहिंसक व्यक्ति का विशुद्ध आत्म-बलिदान दूसरे की जान लेने के क्रम में मरनेवाले लाखों आदमियों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। स्वेच्छा से किया गया बलिदान और वह भी बिना किसी विद्वेष या स्वार्थ की भावना से, अपनी एक हस्ती रखता है, जबकि परस्पर विद्वेष और प्रतिहिंसा की भावना से प्रेरित बलिदान का वह महत्व नहीं होता।

अहिंसा का रास्ता

अतः अहिंसा का रास्ता वीरता की दृष्टि से भी आगे का रास्ता है, साथ ही इसमें मानवीयता भी है। लेकिन लोगों को यह भ्रम है कि अहिंसा का रास्ता काफी लंबा एवं विलंब का होगा। असल में अहिंसा अदृश्य एवं सूक्ष्म रूप से अपना प्रभाव डालती है। लेकिन इससे सीधा रास्ता दूसरा नहीं है। हिंसा तो प्रतिहिंसा को जन्म देती है, जिसका कहीं अंत नहीं है। अतः उसमें संशय एवं जोखिम भी है कि कहीं किया-कराया सब उलट न जाए। किंतु अहिंसा के द्वारा किया गया काम अधिक प्रभावशाली और अधिक स्थायी होता है। अतः 'अहिंसा का रास्ता सबसे जल्दी का रास्ता है, क्योंकि यह सबसे सुनिश्चित

है।' ('यंग इंडिया', ३०-४-१९२५)

बापू ने तो अहिंसा के प्रति अपने अटूट विश्वास के कारण ही समाज-परिवर्तन के लिए सत्याग्रहरूपी अहिंसा-त्मक उपकरण चुना था। इतिहास साक्षी है कि हिंसा के द्वारा जब और जहां सत्ता-परिवर्तन हुए, वहां किसी न किसी प्रकार की तानाशाही आयी। फ्रांस में १६वें लुई की हत्या हुई, लेकिन उससे नेपोलियन का उद्भव हुआ। ब्रिटेन में चार्ल्स प्रथम का क़त्ल हुआ, लेकिन क्रॉमवेल-जैसा व्यक्ति आया और रूस में जार के बाल-बच्चों का खात्मा तो हुआ, लेकिन उससे स्टालिन का उदय हुआ, जो ट्राटस्की के साथ सारे मेनशेविकों को निगल गया। अभी हाल में बंगलादेश में मुजीब की हत्या का बदला जिया उर रहमान के कत्ल और मुल्क पर तानाशाही की स्थापना से हुआ। आज हिंसक क्रांति पोलैंड के अहिंसक असहयोग के सामने फीकी है। अगर हम अखंड असहयोग की शक्ति संगठित कर सकें, तब हिटलर-जैसे आततायी के भी छक्के छुड़ा सकते हैं। यदि लाखों लोग बिना आक्रमण किये एक साथ मरने के लिए तैयार हो जाएं, तब इसका प्रभाव हाइड्रोजन बम से कहीं अधिक होगा। जब एक सोखोरोव का अनशन तानाशाही व्यवस्था को हिला सकता है, तब लाखों अहिंसक वीरों के महाबलिदान की घोषणा और तैयारी बेकार नहीं जा सकती। फिर हिटलर का नाश हिटलरवाद से नहीं हो सकता। हिटलर ने विश्व के नैतिक भविष्य को रंचमात्र भी विकसित नहीं किया, यद्यपि उसने लाखों लोगों का खून बहाया।

ऐसा संयोग हुआ है कि विज्ञान ने हिंसा के पैर ही हिला दिये। युद्ध का गति-तत्व ही परमाणुवाद ने छीन लिया। अब तो युद्ध में वीरता है ही नहीं। ऐसी परि-स्थिति में युद्ध का हमें नैतिक विकल्प खोजना होगा और वह हमें गांधी से ही मिलेगा। गांधी के सत्याग्रह-संग्राम में वीरता भी है और मानवीयता भी। हिटलर का विकल्प गांधी ही हो सकता है, दूसरा हिटलर नहीं। अणु का विकल्प अहिंसा ही होगी। दूसरा कोई रास्ता नहीं—न अन्यः पंथः।

—भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर-८१२००१

एक नेताजी पागलखाने के दौरे पर गये। डॉक्टरों ने सब पागलों को सिखाया कि नेताजी आयें तो उनकी जय-जयकार और नमस्ते करना। चुनांचे ऐसा ही हुआ। सब पागलों ने उनकी जय-जयकार करते हुए नमस्ते की, लेकिन एक आदमी ने ऐसा नहीं किया। नेताजी ने उससे पूछा, "तुमने हमारी जय क्यों नहीं बोली?"

वह बोला, "मैं पागल नहीं हूं, बल्कि अस्पताल का वार्ड बॉय हूं।"

तमिल कहानी

● वासंती

पोन्नुच्मी ने अपनी मुट्ठियां इतनी जोर से भींचीं कि उसके नाखून हथेली में गहरे घुस गये। ऐसा लगा, जैसे वह भीतर उबल रहे गुस्से को दबा रहा हो। पसीने से चुहचुहाये माथे पर उसकी भौंहें गुस्से से तनी हुई दिखायी दे रही थीं।

"तो तुम ध्वंसकारी शिव बन रहे हो न? अपनी क्रोधभरी आंखों से तुम मुझे फूंक डालना चाहते हो। है न?" मणिक्कम मखौल उड़ाता हुआ हंसा।

पोन्नुच्मी ने मुंह मोड़ा, तौलिया गले में लपेटा और बिना कुछ कहे चल पड़ा। मणिक्कम की गूंजती हंसी पीछे से सुनायी दी, "तो तुम कल के छोकरे, मेरे विरोध में बोलना चाहते हो। यह नहीं जानते कि मैं कैसा आदमी हूं!"

तेज कदमों से वह नदी की ओर लपका। लहलहाते खेत, जहां तक दृष्टि जाती थी, पसरे हुए थे। वे सब मणिक्कम के थे, फिर भी वह ज्यादा जमीन के लिए भूखा था। लेकिन राक्षस की भूख कब मिट सकती है?

पैसे की ताकत आदमी को खूंख्वार बना डालती है, पोन्नु ने तिक्त होकर सोचा। पैसा ही तो था, जिसने मणिक्कम को यह हक दिया था कि उसने नदी का सारा पानी अपने खेतों की तरफ मोड़ लिया था। और बाकी लोग मानसून की मेहरबानी पर आश्रित थे। और जब बारिश न होती, तब वे मणिक्कम

की दया के दास बन जाते, अपनी जमीन गिरवी रख देते, मणिक्कम से कर्जा ले लेते ।

धीरे-धीरे मणिक्कम गांव हड़पता रहा था . . . कब रुकेगा यह ? बस, कुछ ही बरसों में, और तब सारे किसान मणिक्कम की कुलीगिरी करते फिरेंगे . . . !

पोन्नु की छाती में गुस्सा फिर भड़क उठा,और उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। 'जानता हूं मणिक्कम तुम्हें ! बखूबी। यही तो मुझमें गुस्सा भड़काता है। तुम पर नहीं, खुद पर, अपनी असहायता पर . . .' उसके तपे चेहरे पर शाम की हवा की ठंडक पड़ी। '. . . कुछ करना ही पड़ेगा। कुछ, जिससे हमारे भूखे पेट भरें और हम मणिक्कम की अतृप्ति से मुक्त हों।

'पर तब, यहां कुछ भी करना कहां संगत है ? लोग तो बस झुकना जानते हैं। ताकत के आगे झुकना उनका स्वभाव है। खुद अपनी चमड़ी उधेड़े जाने के लिए तत्पर वे हैं। थू . . . बिना आत्मा के कीड़े !'

'. . . ये कल के छोकरे . . . मेरा विरोध करने चले हैं !'

'हां, कल पैदा हुए थे। ठीक। पर काफी बड़ा हूं मैं सोचने के लिए। अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने के लिए पर्याप्त बड़ा हूं।'

"कौन . . . पोन्नु तुम ? किसलिए आये ?" बूढ़े मारिसामी ने खेत से बाहर आकर कहा।

"नदी-तट तक घूमने आया था। फसल कैसी है ?"

"फसल अच्छी कैसे हो सकती है ? हमारे खेत तो आसमान पर निर्भर रहते हैं, जब बारिश न हो, तब हम क्या उम्मीद रखें ?"

"तुम यहीं खड़े रहोगे और आसमान ताकते रहोगे। ठीक है, देखते रहो, पर आखिर में तुम्हारे पास आसमान ताकने के लिए भी जमीन न बचेगी। सब मणिक्कम की जायदाद में शामिल हो जाएगी।"

मारिसामी चुप खड़ा रहा।

"क्या हम किसी तरह गांव के बीच कूल नहीं बहा सकते, दादा? क्योंकि हम उस पानी का इस्तेमाल नहीं कर सकते, जबकि मणिक्कम कर सकता है।"

"...न...न...भाई! अपने नये विचारों के साथ हमारे लिए दिक्कतें न पैदा करो। मणिक्कम के वंश का यह वर्षों का अधिकार है।"

"पर क्यों? क्या नदी उसकी बपौती है?"

"और क्या, आखिर नदी उसके खेतों से बहती है।"

"दादा, मेरी बात सुनो। हम सब मिलकर उसके पास चलते हैं। उसे समझाते हैं कि वह अपनी उदारता से हमें कूल लाने दे।"

बूढ़े के चेहरे पर भय उतर आया, बोला, "न...न...चुप रहो बस।"

पोन्नु सीधे घर गया। मारिसामी की कायरता पर वह बुड़बुड़ाता रहा। वह थका था। घर पहुंचते ही उसे भूख लग आयी। उसकी पत्नी वादिव्यु मांड रिसाने के बाद चावल का पतीला उठा ही रही थी कि वह हाथ-पांव धोकर पत्नी के सामने बैठ गया। वादिव्यु का चेहरा भावहीन था।

"पहले भात दो न, बाद में तुम्हारी नाराजगी पर बात करूंगा।"

वह किसी बात पर नाराज थी। खाते वक्त वह कुछ न बोला। बाहर आकर वह चारपाई पर लेट गया और अपने ख्यालों में डूब गया।

"पोन्नुच्मी", जब उसने पड़ोसी को पुकारते सुना, तब सहसा उसका गुस्सा उभर आया, "तो तुम अब आये हो? तुम मुझ-जैसे मूर्ख को आगे भेजकर पीछे से तमाशा देखते हो?"

"नहीं पोन्नु! जब तुमने बुलाया था, तब मैं काम में फंसा था।"

"छि: ! बिना रीढ़ के लोग...तुमने तो कभी साहस नहीं दिखाया। सारे लोग जाते तो मणिक्कम से न्याय मांगते। अकेला ही देख उसने भी मुझे अपमानित किया।"

"क्यों, क्या हुआ?"

वारदात की याद आते ही उसका गुस्सा फिर उभरा, बोला, "मैं तो शांत भाव से गया था। मैंने कहा, 'श्रीमान, हमें भी मुसीबतों से बचाइए। अगर हम समृद्ध होंगे, तो आप भी समृद्ध होंगे। हमारी जमीनें सूख रही हैं। पानी का स्रोत, बस, नदी ही है। हमें नदी का थोड़ा पानी दे दो।' यह सुनते ही वह गुस्से से भड़क उठा और बोला, 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे ऐसी

वासंती—तमिल की प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार एवं पत्रकार। बंगलौर में जन्मी वासंती ने मैसूर विश्वविद्यालय से अंगरेजी और इतिहास में शिक्षा ग्रहण करने के बाद आकाशवाणी में उद्घोषिका के रूप में कार्य शुरू किया। वे अभी तक इक्कीस उपन्यास और दो सौ कहानियां लिख चुकी हैं। प्रस्तुत कहानी के अनुवादक डॉ. गंगाप्रसाद विमल

बात कहने की ? तीन पीढ़ियों से किसी की भी ऐसी हिम्मत नहीं हुई !'

"जब वह हमारे दुःखों पर नहीं पिघला और गुस्से में जलने लगा, तब मैं भी गुस्सा खा गया, 'श्रीमान, मुझे तो बस अपनी पीढ़ी का ही पता है। मैं जानता हूं कि लोग अपने बच्चों के लिए चिंतित हैं।' तब जानते हो क्या हुआ। वह मुझ पर हंसा, बोला, 'अरे बे-औलाद मूर्ख, तू क्यों आया ? भेज उन बापों को उनके बच्चों के समेत।' "

"पोन्नु, मेहरबानी करके सब-कुछ भूल जाओ," पड़ोसी ने कहा।

"कहना आसान है। मैं वहीं गला घोट देता। वह तो मुझ पर कुत्ते छोड़ने को तैयार था। मैं तो बस वहां से किसी तरह लौट आया।"

"कल सुबह सबसे पहले इसी मामले पर बात करेंगे। तब तक शांत रहो।"

पोन्नु ने आंखें बंद कर लीं, बोला, "तुम किसी काम के नहीं हो। बस, बच्चे पैदा किये जाओ। ओ ! मणिक्कम ! चाहे मेरी कोई औलाद नहीं है, पर मैं ही एक मर्द हूं, इस गांव में।" वह अपने में बुड़-बुड़ाता रहा।

खटपट सुन पोन्नु ने आंखें खोलीं। वादिव्यु थी। वह चुपचाप जमीन पर बैठ गयी। उसका कुछ न बोलना ही पोन्नु को परेशान किये जा रहा था। आज शायद महीने का वही दिन था, जब उसकी तमाम आशाओं पर पानी फिर जाता था। वैसे, वह पत्नी का सुबकना सहता रहता था, पर आज उसे यह बात चिढ़ा रही थी।

वह बोला, "चुप रहो। सिसकने से कोई फायदा नहीं।"

वह और जोरों से रोने लगी।

"बताओ, इसमें ग्लानि किस बात की? हम डॉक्टर के पास भी गये। उसने भी बताया कि हममें कोई कमी नहीं। वक्त आने दो। जल्दी क्या है ?" पोन्नु ने गुस्से में कहा।

"पर मुझे लगता है कि हमने कहीं देवताओं के साथ बुरा किया है, या पिछले जन्म में किसी का बच्चा छीन लिया होगा . . . क्या पता, अब कभी मेरी कोख से बच्चा न हो . . .।"

वह इन फालतू अंध-विश्वासों से तंग आ गया था। पर उसे पत्नी के दुःख का भी पता था। वह शांत हो बोला, "यह सब बेकार की बातें हैं। असली पाप तो तब होगा, जब हम बच्चा पैदा करें

श्रौर उसकी ठीक परवरिश न कर सकें।"

"पर मैं कितना चाहती हूं! मैं उसे अपना हिस्सा खिलाकर पाल लूंगी।"

"तुम नहीं जानतीं कि मेरी भी ऐसी इच्छा है। पर अच्छा होगा कि हम उसे सम्मानित-सा जीवन दे सकें। जाश्रो, सो जाश्रो। सुबह बहुत काम करने हैं।"

उसने रात अधजागे काटी। उसने सपना देखा। श्रंधेरे में जैसे शिशु-बिंब झांक रहा हो। वह उसे लेने जाता है...दौड़ता है। फिर पकड़कर उसे ऊंचे उठा, उसका हंसता चेहरा जमीन पर पटकता है...पर तभी नींद खुल जाती है।

सपने के बारे में वह पत्नी को कुछ नहीं बताता।

सुबह ही सुबह पालानी आया, बोला, "पोन्नु, मैंने लोग इकट्ठे कर लिये हैं।"

"क्यों? सहसा तुम्हें क्या हुआ?"

"मारिसामी ने अपने खेत बेच दिये।"

"गरीब बेचारा!"

"चलो, मणिक्कम के घर तत्काल। न्याय मांगें।" आध घंटे में वे मणिक्कम के घर के रास्ते पर थे। मणिक्कम अपने बागीचे में अकेला था, बोला, "क्या बात है? इतनी भीड़ क्यों?"

प्रौढ़ गोविंदन ने कहना शुरू किया, "श्रीमान, हमारी एक-सी समस्या है। हम समझते हैं कि पानी का इंतजाम ठीक नहीं है।"

"तो तुम ताकत दिखाने आये हो?"

"नहीं! बस, इतना कि यह व्यक्तिगत

मामला नहीं। कृपा कर हमारी दिक्कतें समझें। एक छोटी नहर श्रौर वह भी बारी-बारी से—पर्याप्त रहेगा," पालानी ने बात को संक्षिप्त किया।

गोविंदन ने उसका कंधा पकड़ा, तो मणिक्कम हंस पड़ा, बोला, "कोई बात नहीं। बोलने दो इसे। यह जवान खून है, पोन्नुच्मी की तरह।"

तभी पोन्नुच्मी हड़बड़ाहट में बोला, "अगर आप इजाजत दें, तब हम एक नहर खोद लें। वैसे भी सारा गांव हमारी तरफ है।"

थोड़ी देर सघन चुप्पी रही, फिर मणिक्कम सहसा ठहाके मारकर हंसा, "तुम क्यों इतने उत्तेजित हो? मैं तुम्हारी विपदा जानता हूं। कल पोन्नुच्मी भी आया था। जाश्रो, मैं देखूंगा कि तुम्हारी फसल बच जाए श्रौर तुम भूखे न मरो।"

"तब क्या हम नहर खोद लें?" पालानी संदेह में बोला।

"मैं खुद एक-दो दिनों में यह काम

करूंगा।"

गोविंदन ने उसे दंडवत प्रणाम किया, "आप समृद्ध हों, श्रीमान।"

पोन्नु हंसा, "हम तो लड़ने के लिए तैयार थे और यहां हम शांति से लौट रहे हैं। देखो क्या होता है, पालानी !"

"मैं तो अभी भी यकीन नहीं कर पा रहा," पालानी बोला।

जब वे घर पहुंचे, तब वादिव्यु ने कहा, "इचुमी कहती है कि वह मुझे अस्पताल ले जाएगी, एक तजुर्बेकार डॉक्टर आयी है। उसके हाथों में जादू है। उसने कई बांझ औरतों को बच्चे दिये हैं।"

पोन्नु हंसा, "ठीक है, जाओ। वक्त अच्छा आ रहा है। एक बच्चे को क्यों रोकें? तुम्हारी इच्छा हो, तो आधे दर्जन पैदा करो। पर तीन मील पैदल जा सकोगी?"

"हम नदी को पार कर छोटे रास्ते से चले जाएंगे, दो बजे तक लौट आएंगे, इचुमी कहती है।"

"ठीक है।"

●●

जब वह खेतों से दोपहर में लौटा, तब तक वादिव्यु नहीं लौटी थी। उसने खाना खाया और सो गया।

"पोन्नु . . . पोन्नुच्मी ?"

वह लपककर बाहर आया। घर के बाहर भीड़ जमा थी। सबके चेहरों पर डर था—जैसे भूत देख आये हों।

"क्या हुआ ?"

"उस बदमाश ने बदला ले लिया।"

"क्या हुआ ?"
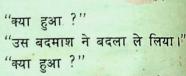
"उसने वादिव्यु और इचुमी को मार डाला।"

पोन्नु की आंखें आग बरसाने लगीं। भर्राये गले से वह बोला, "क्या ? फिर से कहो तो।"

पालानी ने उत्तर नहीं दिया। वह जोरों से रोने लगा। गोविंदन पास आया। पोन्नु को छूकर बोला, "मणिक्कम के आदमी अस्पताल से लौटती दोनों औरतों का इंतजार कर रहे थे। वे उन पर झपटे और जान से मार दिया।"

"तुम्हें कैसे मालूम कि वे मणिक्कम के आदमी थे?"

"हमारे आदमियों ने भागते देख उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया। उन्होंने सारी बातें कबूल कर ली हैं।"

गुस्से का ज्वालामुखी पोन्नु के अंदर

असह्य गरमी और हिंसा के साथ भड़क उठा, "क्या यह सच है, पालानी ? चलो, बदला लें। उसे अब जिंदा नहीं छोड़ा जा सकता। चलो, सिद्ध करें कि हमारे खून में सम्मान है, जो धमनियों में बह रहा है।"

गुस्से में वे दोनों, जो भी हथियार मिला, उसे उठाकर चल पड़े।

मणिक्कम के घर जब वे पहुंचे, तब वहां मणिक्कम के आदमी नहीं थे।

"ओ मणिक्कम, बाहर आ।"

घर में कोई हलचल नहीं हुई।

"तोड़ो दरवाजे।"

दरवाजे टूट गये। मणिक्कम और उसकी बीवी एक कोने में डर से सन्न थे। मणिक्कम कुरसी पर था। बीवी नीचे थी। जब पोन्नु अंदर घुसा था, तब उसने बीवी को नहीं देखा था। वह सिर्फ मणिक्कम की ही खोज में था। जब वह चीखते हुए आगे बढ़ा, तभी मणिक्कम की बीवी उन दोनों के बीच में आ खड़ी हुई। "भय्या ! छोड़ दो इन्हें। मैं हाथ जोड़ती हूं। इन्हें माफ कर दो। मैं सारे गांव को पानी दूंगी। मैं कसम खाती हूं।"

पोन्नु ने एक भी लफ्ज नहीं सुना। उसने औरत को ताका। वह गर्भवती थी। आज या कल वह बच्चा जन्मेगी। इस ख्याल ने कि 'शायद हमने देवताओं को नाराज किया है। कौन जानता है, क्या किया होगा ? मेरी कोख में बच्चा नहीं आएगा। शायद हमने पिछले जन्म में किसी का बच्चा चुराया हो।' उसे जड़ कर दिया।

●●

आक्रमण करने से पहले ही वह पीछे हट गया। उसने धीरे से कहा, "वापस चलो,सब लोग। हम मनुष्य हैं, पागल कुत्ते नहीं।" वह कमरे से बाहर आया। उसने दरवाजा बंद किया और जल्दी-जल्दी घर की ओर लपका। भीड़ उसके पीछे संभ्रमित-सी लौट पड़ी।

पालानी गुस्से में चिल्लाया, "क्यों किया तुमने ऐसा ? क्या अब तुम्हारे खून में सम्मान नहीं ?"

पोन्नु ने कुछ नहीं कहा। वह आकर अपनी चारपाई पर बैठ गया और दोनों हाथों से उसने अपना चेहरा छिपा लिया।

"तुम कायर हो।"

"पालानी, क्या तुम यकीन करते हो कि अगर भला करोगे, तब भला होगा।"

"बिलकुल नहीं।"

"पर मेरी वादिव्यु ने ऐसा ही किया।" और अब वह वादिव्यु की स्मृति में डूब गया। कुछ भी कह पाने में असमर्थ, वह सुबकने लगा।

—डी-१/१७२, सत्यमार्ग, चाणक्यपुरी,
नयी दिल्ली-११००२१

दूसरे तुम्हारे विषय में क्या सोचते हैं, इसकी अपेक्षा 'अपने विषय में तुम्हारा विचार' बहुत अधिक महत्त्व की वस्तु है।

—सेनेका

स्वास्थ्य का राजमार्ग

• प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

स्वस्थ शरीर प्रकृति का अमूल्य वरदान है। दुर्भाग्य तो यह है कि अनेक वैद्य-डॉक्टर भी जीवन का सही मूल्यांकन नहीं कर पाते और तब तक सतर्क नहीं होते, जब तक मौत के शिकंजे रोगी को जकड़ नहीं लेते।

हम सबको चीन के लोगों से सबक सीखना चाहिए। हर चीनी अपने डॉक्टर को पैसा तब तक ही देता है, जब तक वह नीरोग रहता है। जरा भी अस्वस्थ होने पर उसे पैसा देना बंद कर देता है। डॉक्टर का अपने रोगी के स्वास्थ्य से बड़ा घनिष्ठ संबंध होता है। आदमी जब बीमार होता है, तब वह कमाने लायक नहीं रहता। अगर वह स्वास्थ्य-संबंधी नियमों का ठीक से पालन करे, तब उसे कभी भयंकर बीमारी-जैसी चीज नहीं हो सकती। डॉक्टर का काम है कि वह व्यक्ति को रोगी होने से बचाये, स्वास्थ्य-संबंधी नियमों का पालन करना सिखाये।

हर रोग का कारण एक ही

प्रत्येक रोग का कारण एक ही होता है और उसका ही प्रकाशन नाना प्रकार से होता है। वह कारण है, शरीर के विभिन्न संस्थानों में निरर्थक पदार्थों का इकट्ठा रह जाना, जो भोजन में से उसके पोषक तत्वों को निकालने के बाद बचे रह जाते

अमरीका के प्रख्यात प्राकृतिक चिकित्सक डॉक्टर चास. ए. टाइरेल की पुस्तक 'रॉयल रोड टू हेल्थ' चर्चा का विषय रही है। उसी का स्वतंत्र रूपांतर 'स्वास्थ्य का राजमार्ग' किया है भूतपूर्व संसद-सदस्य श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका ने। नब्बे वर्ष की आयु में भी स्वस्थ श्री हिम्मतसिंहका प्राकृतिक जीवन, व्यायाम, योगासन एवं मुक्त आहार में अटूट श्रद्धा रखते हैं। यहां प्रस्तुत हैं उनकी इसी पुस्तक के कुछ अंश।

हैं। इसके कारण शरीर की स्वाभाविक क्रिया अव्यवस्थित हो जाती है और शरीर में रोग का जन्म होता है।

विजातीय पदार्थ शरीर की लघु-पेशियों (टिश्यूज) को नष्ट करते हैं। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि विजातीय पदार्थों को शरीर से शीघ्र ही हटाया जाए। प्रकृति ने अनावश्यक पदार्थों को शरीर से निकालने के अनेक रास्ते दिये हैं। प्रमुख रास्ते हैं फेफड़े, त्वचा और आंतें। इन तीनों में सबसे मुख्य हैं आंतें, क्योंकि भोजन को ठीक से पचाकर उसमें से पोषक तत्त्व को ग्रहण कर, निरर्थक शेष को बाहर फेंक देने की महत्त्वपूर्ण क्रिया आंतों द्वारा ही होती है।

पेट की सफाई

साधारणतः स्वास्थ्य को सुरक्षित रखना आंतों की सफाई पर ही निर्भर करता है। इस सफाई के लिए गरम पानी से उत्तम कोई चीज नहीं है। वाशिंगटन के डॉ. एच. टी. टर्नर का कहना है कि रोग बड़ी आंतों में ही पैदा होते हैं।
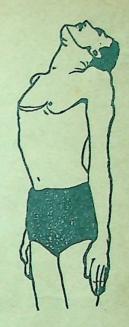
बुद्धि तथा धृति-शक्ति-विकासक क्रिया।

आंतों में से गंदगी को हटाने का कार्य मांसपेशियों के गोलाकार रेशों के सिकुड़ने से होता है। लेकिन कब्ज पुराना होने पर गंदगी बड़ी आंत की दीवारों पर जम जाती है। इस कारण मांसपेशियां सिकुड़ नहीं पातीं। अतः बड़ी आंत का साफ होना कठिन हो जाता है। परिणाम-स्वरूप मांसपेशियां कुछ सीमा तक अपना कार्य करना बंद कर देती हैं। इन्हें फिर से क्रियाशील बनाने के लिए एनिमा की आवश्यकता होती है। इसके उपयोग से ही पुराने कब्ज को दूर करने में सफलता मिलती है और आंतें फिर से अधिक शक्ति से काम करने लगती हैं।

महत्त्वपूर्ण सलाह

कब्जियत से सब अंग शिथिल हो जाते हैं। ६० प्रतिशत दूसरे रोगों का मौलिक कारण कब्ज ही है। इसके उपचार में पानी पीने की बहुत महत्ता है। प्रायः खाने के एक दो घंटे बाद पानी पीना चाहिए। सवेरे के जलपान के आधा घंटा पहले पानी पीना चाहिए।

डॉ. जेम्स सी. मीनार ने अपनी किताब 'द प्लान ऑव द हाउस ऑव मैन, सर' में एक सलाह दी है कि कुछ मिनट बायीं करवट लेटकर आराम करके बिस्तर से उठना चाहिए, जिससे ऊर्ध्वगामी बृहदांत्र में खाना जाकर पार्श्ववर्ती बड़ी आंत से अधोगामी बृहदांत्र में पहुंच जाएगा। यदि इन बातों पर ध्यान दिया जाए, तब

उदर-शक्ति-विकासक क्रिया

काफी मात्रा में तकलीफ दूर हो सकती है।

हमें क्या खाना चाहिए ?

फल कई कारणों से आदर्श भोजन हैं। फल का स्टार्च सूर्य की क्रियाशीलता से ग्लूकोज में बदल जाता है और पचाने में सुगम हो जाता है। पौष्टिक दृष्टि से फलों को हम इस प्रकार से क्रम में रख सकते हैं—खजूर, अंजीर, केला, जामुन, सेव, और अंगूर।

मूंगफली एवं बादाम भोजन की बहुत अच्छी वस्तुएं हैं। इनमें बहुत मात्रा में प्रोटीन होता है और वसा भी अधिक मात्रा में होती है। दोनों ही चीजें एकदम पवित्र और स्वच्छ अवस्था में होती हैं। लेकिन स्टार्च की कमी होती है। जो यह सोचते हैं कि मांस के बिना नहीं रहा जा सकता, उनके लिए भी घी, मूंगफली एवं बादाम बहुत अच्छे हैं। हम बाजार में बिकनेवाली सभी प्रकार की तैयार भोजन-सार-सामग्री के पक्ष में नहीं हैं, क्योंकि वे पाचन-क्रियाओं को पूरी तरह व्यायाम नहीं करने देतीं।

भोजन के पोषक तत्त्वों को मुख्यतः सात भागों में विभाजित किया जा सकता है, वे हैं: १. प्रोटीन, २. वसा या चरबी, ३. कार्बोहाइड्रेट या स्टार्च, ४. फोक, ५. जल, ६. खनिज-लवण, ७. विटामिन और कैरोटीन।

कैसे खाना चाहिए ?

इस प्रश्न का मूल सिद्धांत अच्छी तरह चबाकर खाने पर निर्भर करता, किंतु

हम इस पर प्रायः ध्यान नहीं देते। श्री ग्लैडस्टन का कहना है कि हमें हरेक गस्से (ग्रास) को ३२ बार चबाकर खाने की आदत डालनी चाहिए। अच्छी तरह चबाने के लिए यह क्रिया बहुत धीमी हो, ऐसा जरूरी नहीं है। शीघ्रता से चबाने पर लार-ग्रंथियां अधिक स्फूर्ति से काम करने को उत्तेजित करती हैं।

जहां तक संभव हो, खाने के समय पानी नहीं पीना चाहिए। जब कभी भी पेट में किसी प्रकार की तकलीफ हो, तब कोई भी द्रव खाने के साथ नहीं लेना चाहिए, और खाने के आधा घंटे पहले तक या बाद में भी आधा घंटे तक नहीं लेना चाहिए। इसका कारण स्पष्ट है। जब पाचन की गड़बड़ी हो, तब जठर-रस ठीक प्रकार से क्रिया नहीं कर पाते और फिर पानी वगैरह के मिलने से और अधिक तरल हो जाते हैं, तब उनकी कार्य-शक्ति क्षीण हो जाती है।

सबसे हानिकारक आदत खाते समय बर्फ का पानी पीना है। ऊपर बताये हुए कारणों के साथ आमाशय पर बर्फ का पानी कुछ देर के लिए पक्षाघात की तरह असर करता है। रक्त को उस स्थान से हटा देता है, जबकि उस समय आमाशय को बहुत रक्त की जरूरत होती है।

अन्य हानिकारक पदार्थ

अब हम उन पदार्थों के विषय में चर्चा करेंगे, जो स्वास्थ्य के परम शत्रु हैं। विशेषकर पाचन-क्रिया पर उनका बड़ा दूषित प्रभाव पड़ता है। इनमें सबसे पहली वस्तु शराब है, जो केवल तीव्र ईंधन का ही काम करती है, पर नये ऊतकों की रचना नहीं करती। डॉक्टरी औषधियों में इसका काम सिर्फ उत्तेजना पैदा करना है।

कुंडलिनी-शक्ति-विकासक क्रिया

मान लिया जाए कि मनुष्य की औसत आयु ३८ वर्ष है और एक स्वस्थ मनुष्य में हृदय की धड़कनें ७६,५३,६-७,४०,००० हैं। शराब पीने से १० धड़कनें प्रति मिनट बढ़ जाती हैं। इस प्रकार ६०० धड़कनें प्रति घंटा बढ़ती हैं। १४,४०० प्रति दिन, ४,८२,००० प्रति महीने, ६७,८४,००० प्रति वर्ष, १६,५-५,६८,००० बीस साल में और ३७,३७-६३,००० धड़कनें औसत आयु के ३८ सालों

में बढ़ जाती हैं। अगर मान लें कि एक व्यक्ति ५० साल जीता है, तब साधारणतः धड़कनें ६१,७ २३६,६८० होनी चाहिएं। अब यदि जीवन के अंतिम २५ साल में १० धड़कनें प्रति मिनट बढ़ा दी जाएं, तब ६१,८४,०००० अधिक धड़कनें होंगी। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि नाजुक किंतु जटिल मानव-हृदय को कितना अधिक काम करना पड़ता हैं।

चाय और कॉफी न तो ऊतकों की रचना करती हैं और न ईंधन का काम करती हैं। उन्हें भी एकदम ही त्याग देना चाहिए।

व्यायाम

गति ही जीवन है। अच्छा स्वास्थ्य, शरीर और मस्तिष्क दोनों पर निर्भर करता है। निष्क्रियता का अर्थ जड़ता या गतिहीनता है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक है। अतः शरीर को व्यायाम की आवश्यकता है।

किसी भी प्रकार के व्यायाम से शरीर के विकास के लिए, सबसे पहले एवं सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात है, फेफड़ों का विकास। अच्छे फेफड़े और अच्छी पाचन-क्रिया साथ-साथ चलते हैं। भोजन के पहले इसका ऑक्सी-करण होना चाहिए, जो रसायन-दहन की क्रिया के तुल्य हो। इसके लिए ऑक्सीजन बहुत जरूरी है, वह भोजन के कार्बन से मिलकर ऑक्सीकरण में परिणत हो जाता है। ऑक्सीजन की मात्रा फेफड़ों की श्वास लेने की क्षमता पर निर्भर करती है। हम बहुत ज्यादा ऑक्सीजन नहीं ले सकते, जब कि हम बहुत ज्यादा भोजन कर सकते हैं, इसलिए फेफड़ों की क्षमता अधिक हो, तभी पाचन अच्छा होगा।

बुद्धि तथा धृति-शक्ति-विकासक

स्थिति——पैर परस्पर मिले हुए हों, पैरों से स्कंध तक का भाग सरलता से सीधा रखते हुए मुख बंद करके सिर को पीछे की ओर पूर्ण रूप से झुकायें। नेत्रों को पूर्ण रूप से खोलकर आकाश की ओर देखते हुए खड़े रहें।

क्रिया——शिखा-मंडल में ध्यान रखते हुए, दोनों नासिकारंध्रों से लोहार की धौंकनी की भांति, यथाशक्ति बल-वेग प्रदान करते हुए श्वास-प्रश्वास करें। आरंभिक क्रम २५ बार।

लाभ——शिखा-स्थान के नीचे बुद्धि-स्थान साधारण गाय के खुर के परिमाणवाला है। इस बुद्धि-मंडल के अंदर घड़ी की सूई के समान एक नाड़ी निरंतर घूमती रहती है, जो सभी इंद्रियों और अंग-प्रत्यंगों को ज्ञान-संज्ञा प्रदान करती है। उसमें कफ आदि की विषमता होने पर नाड़ी की गति अवरुद्ध हो जाती है, जिसके परिणाम-स्वरूप बुद्धि-मांद्य, विस्मृति, विक्षेप, संशय आदि दोष उत्पन्न होते हैं। इस क्रिया के अभ्यास से समस्त दोष दूर हो जाते हैं और बुधित्त्व की विशुद्धि, धृति-शक्ति की वृद्धि तथा सद्बुद्धि प्रदान करने-वाले ज्ञान-तंतुओं की जागृति होती है।

नेत्र-शक्ति-विकासक

स्थिति––पैर परस्पर मिले हुए हों, पैरों से स्कंध तक का भाग सरलता से सीधा रखते हुए ग्रीवा को पूर्णरूप से पीछे झुकाकर खड़े रहें।

क्रिया––दोनों नेत्रों से पूर्णतया आंतरिक बल प्रदान करते हुए भूमध्य में निर्निमेष, याने बिना पलकें झपके हुए, देखते रहें। जब नेत्रों में थकावट प्रतीत हो, तब आंसू आने के पहले ही, नेत्रों को बंद कर लें। पुनः नेत्रों को खोलकर पहले की भांति ही करें। आरंभिक क्रम पांच मिनट का होना चाहिए।

लाभ––इस क्रिया के अभ्यास से नेत्रों में होनेवाले समस्त दोषों की निवृत्ति होती है। नेत्रों की ज्योति बढ़ती है तथा गिद्ध-दृष्टि प्राप्त होती है।

उदर-शक्ति-विकासक

स्थिति––दोनों पैर आपस में सटे रहें और पैरों से कंधे तक का भाग सीधा रखें तथा ग्रीवा को समावस्था में आधा अंगुल ऊपर की ओर उठाकर खड़े रहें।

क्रिया––दोनों नासारंध्रों से जोर से वायु खींचें और बाहर निकालकर पेट पिचकायें।

कुंडलिनी-शक्ति-विकासक

स्थिति––दोनों पैरों के बीच में चार अंगुल का अंतर देकर एकदम सीधे खड़े हो जाएं।

क्रिया––दोनों पैरों को क्रम से नितंब-पृष्ठ पर जोर से मारें। नीचे आते समय पैर अपने स्थान पर ही पड़ें।

लाभ––इससे कुंडलिनी जागृत होती है।

––६, ओल्ड पोस्ट ऑफिस स्ट्रीट, कलकत्ता

इनके भी बयां हैं जुदा जुदा

तुम्हारे प्यार को मैं जिंदगी बना लूंगा
ये और बात मेरी जिंदगी वफा न करे

––कतील शफाई

हम जिस पे मर रहे हैं वो है बात ही कुछ और
आलम में तुझ-से लाख सही तू मगर कहां

––हाली

हर दोस्ती का हाथ नहीं दोस्ती का साथ
मैं जानता हूं मेरा तरफदार कौन है

––अयाज झांसवी

दरवाजे पर आहट सुनकर उसकी तरफ क्यों ध्यान गया
आनेवाली सिर्फ हवा हो ऐसा भी हो सकता है

––मलिकजादा मंजूर अहमद

रोज उठते हैं यहां झूमके बादल लेकिन
सबके-सब गांव के बाहर ही बरस जाते हैं

––हबीब हाशिमी

उतर भी आओ कभी आसमां के जीनों से
तुम्हें खुदा ने हमारे लिए बनाया है

––बशीर बदर

तारीख के सफहों पे जो इंसान बड़े हैं
उनमें बहुत ऐसे हैं जो लाशों पे खड़े हैं

––नाजिश प्रतापगढ़ी

इजहार का दबाव बड़ा ही शदीद था
अलफाज रोकते ही मेरे होंठ फट गये

––तनवीर

दो वन-भैंसों का करुण अंत

• कुंवर प्रेमिल

इटारसी-भोपाल रेलवे लाइन पर बसा है बुदनी रेलवे स्टेशन और उससे लगा हुआ ही है बुदनी गांव। एक तरफ से होशंगाबाद शहर को छूकर कल-कल निनाद करती हुई नर्मदा नदी, तीन तरफ लंबे-लंबे दरख्तों से हरी-भरी वादियां और आसमान की ओर सिर ऊंचा किये सिर-फिरे पहाड़ हैं, तो अगाध जल-राशि को सीने से चिपकाये बुदनी के नदी-नाले और स्वादिष्ट जल के अनगिनत चश्मे।

विंध्याचल की ऊंची पहाड़ी से लेकर नीचे बुदनी स्टेशन तक, सांप की कुंडली-सी गोल-गोल घूमी हैं रेल की पटरियां। पतझड़ में नीचे से ऊपर की ओर, अजगर-सी सरकती रेलगाड़ी बुदनी स्टेशन से साफ-साफ नजर आती है। लाल-लाल टेसुओं, झाड़ी-झुरमुटों के बीच से गुजरती हुई पटरियां आज भी जहां की तहां पड़ी हैं—बिलकुल आज से पचास साल पहले की जगह।

भय के जबड़े में बसी बस्ती

बुदनी की हालत तब ऐसी थी, जैसे बत्तीसी के बीच दुबकी बेचारी अकेली जीभ! शाम होते ही ग्रामवासी घरों के अंदर दुबक जाते। कुत्ते भी घर से बाहर निकलने में घबराते।

ऐसे सन्नाटेभरे माहौल में जंगलों से ताक-झांक करता हुआ, इंजन दौड़ाते बड़ा खुश होता था रेलवे-ड्राइवर मिस्टर स्मिथ। बुदनी की सुनसान वादियों में उसकी गाड़ी प्रवेश करती, तब खुशी के मारे मुंह से सीटियां बजाने लग जाता, वह!

खिलखिलाती शाम

एक ऐसी ही रंगीन शाम थी, जब स्मिथ का इंजन ढलान पर से उतरकर बुदनी

स्टेशन पर सुस्ता रहा था। फायरमैन कोयला झोंक-कर वाष्प बनाने की तैयारी में था और स्मिथ आकाश में शकलें बदलते रंगीन बादलों को देख-देख मुंह बना रहा था। उसने व्हिस्की का एक पैग बनाकर अपनी तबीयत रंगीन कर ली थी। वह गुनगुनाते हुए कभी अस्त होते भगवान भास्कर के निस्तेज चेहरे को निहारता, तो कभी इंजन से पानी भरती हुई गांव की गोरियों को। वे हंसमुख स्मिथ के इंजन को देखते ही पानी भरने के लिए टूट पड़ी थीं। स्मिथ भी उन्हें प्यार से घड़े भरते देख टूटी-फूटी हिंदी में चिढ़ाकर बीच में जोर से 'हो-हो' कर हंस पड़ता था। अभी-अभी उसने इतनी तेजी से हॉर्न बजाया था कि वे सबकी सब चौंक पड़ीं। किसी की मटकी हाथ से छूटी तो किसी का घूंघट खुल गया।

"ह: ह: ह:" . . . स्मिथ हंसे जा रहा था। औरतें हंसते हुए स्मिथ को कुछ कहें कि अपनी तरफ दौड़कर आते हुए जंगली भैंसे को देखकर सहम गयीं।

"अरे बाप रे, जंगली भैंसा"—कहती हुई एक औरत घबराकर भागी, तब सब की सब चीखती, गिरती-पड़ती गांव की तरफ भागने लगीं।

"सचमुच भयानक है यह" —स्मिथ बुदबुदाया। उसकी हंसी का दौर थम गया था और वह गुमसुम-सा कभी दीर्घ-काय भैंसे को, और कभी गांव की तरफ बेतहाशा भागती औरतों को टुकुर-टुकुर देखे जा रहा था।

इंजन के समीप आकर भैंसे ने एक के बाद एक सभी मटकियां फोड़ डालीं। फिर इंजन के अग्र भाग पर सींगों से टक्करें मारने लगा। भैंसा क्रुद्ध जान पड़ता था।

"वैल"—स्मिथ मुसकराया। उसने कैमरा क्लिक किया, फिर लाइन पर से भैंसे को भगाने के लिए हॉर्न दे दिया।

आतंक की समाप्ति

भैंसा था कि हटने का नाम नहीं लेता था। उधर सिगनल होने पर फायरमैन बेचैनी से पहलू बदल रहा था। दोबारा फिर एक लंबा हॉर्न बजाकर भैंसे को खतरे से आगाह किया गया।

"यह भैंसा खतरनाक है, स्मिथ साहेब"—स्टेशन की तरफ से एक पोर्टर चिल्लाया। वह खुद भी दौड़कर स्टेशन

की इमारत में घुस गया एवं दरवाजे बंद कर खिड़की के जरिये बाहर का दृश्य देखने लगा।

भैंसा जब किसी तरह लाइन से अलग नहीं हुआ, तब ड्राइवर ने इंजन खोल दिया। ड्राइवर स्मिथ इंजन को धीरे-धीरे चलाकर भैंसे को डराना चाहता था। इंजन के नजदीक पहुंचने पर भी भैंसे के ऊपर कोई प्रभाव पड़ते न देख स्मिथ चौंका। वह अभी भी इंजन को धकियाते हुए उसे पीछे ठेलने के प्रयास में मोर्चा बांधकर खड़ा था। गति बढ़ाने पर भी वह वहां से हटने का नाम नहीं ले रहा था। स्मिथ लाचार था—मजबूरन उसने इंजन को धक्का देकर आगे बढ़ाया। भैंसा घिसट गया। फिर इंजन की एक जोरदार टक्कर लगने से वह पटरी पर आ गिरा। गाढ़े खून का फव्वारा छूटा और उसकी इह-लीला समाप्त हो गयी।

यह अड़ियल भैंसा कौन था? वह बार-बार इंजन पर क्यों झपट रहा था, इस जानकारी के लिए हमें थोड़ा धैर्य रखना होगा।

बाल-बाल बचे मौत से

बुदनी-जंगल की देन थे, काले और भूरे रंग के दो जल्लादी भैंसे। आदतन क्रोधी और खूंख्वार तबीयत के। आक्रामकता एवं बदनीयती इनमें कूट-कूटकर भरी थी। चारों तरफ इनकी क्रूरता का हल्ला था। गांव से लेकर जंगल तक इनका साम्राज्य था।

सबसे पहले इनके जुल्म का शिकार हुए दो रेलवे-कर्मचारी। रात्रि में ड्यूटी पर तैनात एक कर्मचारी हरी बत्ती दिखाने के लिए ज्योंही बाहर निकला, तब दरवाजे के बाहर सटकर एक जंगली भैंसे को मक्कारी से अपनी तरफ घूरते पाया। भैंसे की शरारती, चमकती आंखों को देखकर बेचारे की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। हिम्मत बांधकर वह कुछ कदम चला ही था कि भैंसे को अपनी तरफ लपकते देखकर वह तेजी से पीछे पलटा और कमरे में घुसकर उसने भीतर से सांकल चढ़ा ली।

दूसरा आदमी पहले से वापसी का सबब पूछे, इसके पहले ही दरवाजे पर एक जोरदार टक्कर हुई। लगने लगा कि दरवाजा टूटा, अब टूटा। दरवाजा हिलने लगा, तब वे दोनों मिलकर 'बचाओ-बचाओ' की आवाजें निकालने लगे। भाग्य ने साथ दिया। लाइन क्लीअर नहीं मिलने से ट्रेन-ड्राइवर ने मजबूरन गाड़ी खड़ी कर दी थी। जब उसे पूरा माजरा समझ में आ गया, तब उसने जोर-जोर से हॉर्न बजाना आरंभ कर दिया। बहुत देर के बाद कहीं वह जिद्दी भैंसा वहां से हटा

ग्रौर बेचारे उन दोनों कर्मचारियों की प्राण-रक्षा हो पायी।

यम के प्रतिनिधि

दोनों भैंसे अत्यधिक अक्खड़ ग्रौर जिद्दी स्वभाव के थे। उनके कदम सधे हुए थे ग्रौर अचानक सामने प्रगट हो जाने की कला में वे पारंगत थे। कुछ लोग उन्हें 'शैतानी रूह का चमत्कार' कहते थे।

उस समय बुदनी स्टेशन विकसित नहीं हुआ था। फिर भी स्टेशन की सुरक्षा के लिए एक ग्रंगरेज शिकारी विलियम हीट्स को बुदनी स्टेशन पर तैनात किया गया था। पहले तो भैंसों को मारने में हीट्स ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी, परंतु बाद में उसने दल-बल सहित भैंसों को जंगल में ढूंढ़ना आरंभ कर दिया।

कुछ दिनों तक हीट्स की टुकड़ी इन धोखेबाज भैंसों को जंगलों में ढूंढ़ती रही, बाद में ऊबकर हीट्स वापस अपने हेडक्वार्टर चला गया।

संगठित मुकाबला

मरते क्या नहीं करते! ग्रामवासियों ने तंग आकर भैंसों के खिलाफ एक जेहाद छेड़ दिया। संगठित होकर उन्होंने इनका मुकाबला करना शुरू कर दिया। रात में पाली बांधकर पहरेदारी की गयी, तब दोनों ही जंगल में कैद होने के लिए बाध्य हो गये। तिस पर मजा यह कि वे आपस में ही जूझने लगे।

एक दिन नाले से पानी पीकर लौटे, तब आमना-सामना हो गया। फिर सींगों

से सींग मिलाकर गले-मिलायी का रस्म अदायगी हुई। भूरा कन्नी काटकर जाने लगा तो कालिया आड़े आ गया। मजबूरन पहले को झटका दिखाना पड़ा ग्रौर एक ही धक्के में कालिया नाले में जा पहुंचा।

कान फैला, चौकन्ना होकर भूरा मस्ती-भरी चाल में चलता हुआ कुछ एक कदम चला होगा कि कालिये ने पीछे से एक जोर का धक्का दे दिया।

खुरों को धूल में झटककर ग्रंगड़ाई लेते हुए दोनों ही आक्रामक मुद्रा में थे। भूरे ने कालिये की मंशा को समझकर अपनी तैयारी आरंभ कर दी थी।

"आ ऽ-आ ऽऽ"—कालिया डकरा, मानो पहाड़ी दरक गयी हो।

"आ-ऽ-आ ऽऽ"—अपने पौरुष को ललकारने वाले कालिये को भूरे ने भी चुनौती दी। धूल का एक बड़ा-सा गुब्बारा उड़ाकर दोनों ही एक दूसरे से भिड़ गये।

पहले तो प्रकृति मूक बनकर इन मतियल भैंसों का युद्ध देखती रही, फिर जंगल से बाहर आने पर गांववाले भी सिमट आये दर्शक बनकर।

आतंक की निर्णायक लड़ाई

इस समय लड़ाकुग्रों की हालत देखने

लायक थी। मुंह से फेन निकलकर थूथन पर जमा हो रहा था। पेट में सांस समाती ही नहीं थी। पूंछ नब्बे अंश में तनकर जमीन के समानांतर खड़ी थी।

अकस्मात उसी लाइन पर ढलान पर से आते हुये इंजन को देख दर्शक चिल्लाये—"होय-होय बचके भैया!" कालिये ने झुकाई देकर पटरियों के बीच ही अपना मोर्चा मजबूती से संभाल लिया। उसने पूरी ताकत समेटकर भूरे को हवा में लगभग उछाल दिया और खुद भी पलक झपकते पटरियों से बाहर आ गया।

"शाबाश!"–एकत्रित भीड़ ने कालिये का जोरदार स्वागत किया। उधर भूरे को पीछे की तरफ से बल दिलाया गया। भूरे ने उत्साहित होकर एक जोरदार आक्रमण कर दिया। कालिया अभी संभल ही नहीं पाया था कि भूरा सिर पर आ गया। फिर न जाने क्या चमत्कार हुआ कि कालिया संभलते-संभलते पुनः पटरियों पर आ गिरा।

इंजन की एक जोरदार टक्कर लगी कालिये को। गरदन कुचल जाने से गाढ़े खून के डबरे पटरियों पर उभर आये।

प्रेम के बाद सहानुभूति मानव-हृदय की पवित्रतम भावना है। —बर्क

यदि तुम अपने रहस्य को किसी शत्रु से छिपाये रखना चाहते हो, तो किसी मित्र तक से उसका उल्लेख मत करो।
—फ्रैंकलिन

दर्शक खोये-खोये से खड़े रह गये और कालिया जमीन पर तड़पकर ठंडा हो गया। अब भूरे का जुनून देखने लायक था। वह कालिये को सामने न पाकर पीपल के पेड़ से सिर टकराने लगा। बहुत देर बाद उसका क्रोध शांत हुआ।

इंजन पर गुस्सा

ड्राइवर स्मिथ जब-जब बुदनी होकर निकलता, तब-तब उसके मन में एक उदासी पनपने लगती। उसके इंजन से कटकर मरे दोनों भैंसे उसकी आंखों में सजीव हो उठते। वह अक्सर इन भैंसों की याद करके बेचैन हो उठता था। मात्र संयोग ही था या और कुछ, भूरे और काले दोनों ही भैंसें एक जगह, एक-जैसे तथा एक ही ड्राइवर मिस्टर स्मिथ के इंजन से कटकर मरे थे।

'कितना करुण अंत था उनका!'—स्मिथ अफसोस किया करता।

सच पूछा जाए तो भूरा, कालिये के मरने पर पगला गया था। उसका मन कहीं भी नहीं लगता था। वह जंगल से मैदानों में आता, तब घंटों उसी जगह खड़ा रहता, जहां कालिया लड़ते-लड़ते स्मिथ के इंजन से कट गया था। यही वजह थी कि जब उसने स्मिथ के इंजन को उसी जगह खड़े पाया, तब अपना गुस्सा काबू में नहीं रख सका। बिछोह की जिंदगी जीने से उसे स्मिथ के इंजन से कट मरना कहीं ज्यादा रास आया।

—४५८, मोतीभवन, आमनपुर, जबलपुर

संस्कृत काव्य में कुररी

प्रवासी पक्षी कुररी

• मुकुटधर पाण्डेय

'कुररी के प्रति' शीर्षक मेरी कविता 'सरस्वती' में छपी थी, किस सन में ठीक याद नहीं। सन १९२० के लगभग होगा। कई सज्जनों ने पत्र लिखकर कुररी के संबंध में जिज्ञासा प्रकट की। तब मैंने 'कुररी' पर एक लेख लिखकर 'माधुरी' में प्रकाशित करा दिया था। आज मेरे पास न 'सरस्वती' का वह अंक लभ्य है, न 'माधुरी' का।

वह कविता सर्वप्रथम पं. रामनरेश त्रिपाठी की 'कविता-कौमुदी' में संगृहीत हुई। उसके बाद साहित्य-सदन, चिरगांव (झांसी) की 'कवि भारती' तथा दिल्ली की साहित्य अकादमी के संग्रह-ग्रंथ में प्रकाशित हुई। महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक शिक्षण मंडल, पूना ने उसके कुछ पदों को अपने यहां की पाठ्य-पुस्तक में रखा।

सन १९७३ में स्व. श्री प्यारेलाल गुप्तजी ने एक दिन मुझे सूचित किया कि 'कादम्बिनी' के दिसंबर के अंक में कुररी पर एक लेख निकला है, जिसमें तद्विषयक आपकी कविता का उल्लेख हुआ है। तब मैंने वह अंक मंगवाकर श्री राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह का 'नदी-तट पर पाया जानेवाला कुररी या टेहरी' शीर्षक लेख पढ़ा था। वे लिखते हैं, "प्राचीन संस्कृत साहित्य में एक पक्षी का जिक्र आता है, जिसके संबंध में आज तक यह निश्चित नहीं हो पाया है कि वह अर्वाचीन पक्षियों में कौन-सा पक्षी है। पक्षी है कुरर (स्त्री-कुररी), जिसका सर्वप्रथम उल्लेख श्रीमद्भागवत में आता है। 'अमरकोष' में कुरर को उत्क्रोष के समान कहा गया है, **'उत्क्रोषकुररौ समौ।'**

सुश्रुत संहिता में इसे 'प्रसहपक्षी' कहा गया है। सुश्रुत के टीकाकार लिखते हैं—**उत्क्रोषः कुरर भेदः मत्स्याशी'।"**

इन कारणों से वे लिखते हैं कि उसे आमिष (मत्स्य) भोजन सर्वाधिक प्रिय है। 'कुररी' के संबंध में उनकी यह धारणा गलत है। यह भ्रम उन्हें इसलिए हुआ कि उन्होंने श्रीमद्भागवत के अवधूतोपाख्यान में उल्लिखित 'कुरर' को ही 'कुररी' मान लिया।

कुरर तथा कुररी में भेद है

अवधूतोपाख्यान में कथित कुरर एक हिंसक पक्षी है, श्येन अथवा बाज के वर्ग का है, जबकि कुररी बिलकुल अहिंसक है; न तो मत्स्यभोजी है, न मांसाहारी।

छायावाद के प्रवर्तक कवियों में अग्रगण्य ८८ वर्षीय श्री मुकुटधर पाण्डेय की एक प्रसिद्ध कविता है, 'कुररी के प्रति।' 'कादम्बिनी' दिसंबर १९७३ के अंक में कुररी पक्षी से संबंधित एक लेख श्री राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह का छपा था, जिसमें अवधूतोपाख्यान में वर्णित कुरर को ही कुररी बताया गया था। प्रस्तुत लेख में श्री पाण्डेय ने कुररी को कुरर से पृथक मानकर इस पक्षी के संबंध में नयी जानकारी दी है।

वह खेतों में गिरे हुए अनाज के दानें चुगती है। वह जलचर पक्षी नहीं है। जल में प्रवेश तक नहीं करती। नदी-गर्भ की विस्तीर्ण बालुका-राशि में एकांत पाकर विश्रामभर करती है। श्री सिंह ने अपने लेख में एक बात बहुत मार्के की कही है, "कुररी कौन-सा पक्षी है, उसका निश्चय करते हुए उसकी बोली या ध्वनि को भी ध्यान में रखना होगा। उसे करुणोत्पादक होना चाहिए।" संस्कृत के काव्य-साहित्य में जहां-जहां कुररी का उल्लेख हुआ है, उसकी करुण ध्वनि को लेकर ही हुआ है। कालिदास 'रघुवंश' में सीता-निर्वासन के प्रसंग में कहते हैं :

'चक्रन्द विग्ना कुररीव भूयः।'

'विक्रमोर्वशी' में वे कहते हैं :

'आर्त्तानं कुररीणामिव आकाशे शब्दः श्रूयते'

सैकड़ों की संख्या में पंक्तिबद्ध अनवरत करुण ध्वनि करती, उड़ती हुई कुररियों को देखा जा सकता है।

टिटहरी, कुररी नहीं

श्री सिंह ने जिन टिटहरी या टेहरी पक्षियों का जिक्र किया है, वे कुररी नहीं हो सकते। जो चित्र उनके लेख में दिया गया है, वह कुररी का नहीं है। उसी प्रकार महाराष्ट्र शिक्षण-मंडल की पाठ्य-पुस्तक में प्रकाशित चित्र भी किसी अन्य पक्षी का है। मैंने मंडल को इसकी सूचना दे दी थी।

कुररी लंबी गरदन और लंबी टांगों-वाला स्लेट-रंग का, बड़े आकार का पक्षी है। 'माधुरी' में मैंने उसका असली चित्र भी छपवा दिया था।

'कुररी' विदेशी पक्षी—प्रवासी पक्षी—(माइग्रेटरी बर्ड) है, जो संभवतः हिमपात के भय से शरद-ऋतु के आरंभ में कुंवार-कार्तिक में छत्तीसगढ़ के मैदानी भाग में चली आती है और लगभग चार माह बिताकर, शिशिर के अवसान पर लौट जाती है। लोग उन्हें देवचिराई कहते हैं। कहा जाता है कि होली की आग देखने के बाद एक स्थान पर वे ठहरती नहीं हैं।

दिन को वे सुदूर खेतों में धान के दाने चुगने चली जाती हैं। रात्रि को झुंड के झुंड आवाज करती हुई लौटती हैं। महानदी के गर्भ देश में, एकांत-शांत बालुका-प्रांत में, विश्राम करती हैं। आजकल हीराकुंड बांध के कारण जाड़े के दिनों में महानदी में पानी भरा रहता है, कल-कल-मयी धारा स्तिमित गंभीर बन जाती है। रेती नहीं निकल पाती।

कुररियों को अवश्य असुविधा होती होगी।

भागवत में वर्णित कुररी

अभी हाल में मैं श्रीमद्भागवत का पाठ कर रहा था। दशम स्कंध के अंतिमांश में एक श्लोक आया। भगवान कृष्ण की रानियां द्वारका में प्रेमोन्माद की अवस्था में काल्पनिक विरह का अनुभव करती हुई कुररी से पूछती हैं:

'कुररि, विलपसि त्वं वीतनिद्रा न शेषे स्वपिति जगति रात्र्यां ईश्वरो गुप्त बोधः वयमिव सखि कच्चिद् गाढ़ निर्विण्णचेता नलिन नयनहासोदार लीलेक्षितेन (१०।९०।१५)

—अरी कुररी, अब तो बड़ी रात हो गयी है, संसार में सब ओर सन्नाटा छा गया है। देख, इस समय स्वयं भगवान अपना अखंड बोध छिपाकर सो रहे हैं, और तुझे नींद ही नहीं आती। तू इस तरह रात-रातभर जागकर विलाप क्यों कर रही है? सखी, कहीं कमल-नयन भगवान के मधुर हास्य और लीलाभरी उदार (स्वीकृतिसूचक) चितवन से तेरा हृदय भी हमारी ही तरह बिंध तो नहीं गया है? (अनुवाद : गीता प्रेस, गोरखपुर) बड़ा ही मार्मिक श्लोक है!

संस्कृत में कुररी को संबोधित कर लिखी हुई कोई रचना इसके पहले मेरे देखने में नहीं आयी थी। श्लोक की प्रथम दो पंक्तियों में अपनी कविता का कुछ भाव-साम्य पाकर मैं चौंक-सा पड़ा था। यह वही कुररी जान पड़ती है, जो मेरी कविता में संबोधित हुई है। इससे यह भी पता चलता है कि भागवत में कुररी पक्षी का अलग से उल्लेख हुआ है, वह अवधूतोपाख्यान के कुरर से भिन्न है। आशा है, इससे 'कादम्बिनी' के लेखक महोदय श्री सिंह के भ्रम का निवारण होगा।

—वैकुंठपुर, रायगढ़ (म. प्र.)

सिर्फ बिजली गिरने से, हर वर्ष, धरती पर दस लाख टन नाइट्रोजन खाद की उत्पत्ति होती है।

★

सिपाही चार्ली हावेल को सभी पागल समझते थे। उसने खुद ही अपने को छह बार पदक दिया और बाजार में बिकते सभी पदकों को खरीदता रहा। उसकी मृत्यु के बाद जब तमाम पदकों की नीलामी हुई तो घरवालों को ८३ हजार पौंड मिले।

साहित्य तो अनासक्त करुणा की वाणी है
— विनोबाजी

● रतनलाल जोशी

"अनासक्त करुणा में से जो वाणी कोंपल की भांति अनायास फूट निकले, मैं तो उसे ही साहित्य कहता हूं। भवभूति करुण रस को ही चरम रस मानते हैं, पर मैं तो कवि नहीं हूं और न साहित्यकार। रस-मीमांसा में पड़ना मेरा अधिकार नहीं, परंतु मेरी गणना में 'रामायण' से बड़ा कोई काव्य नहीं लिखा गया, उससे श्रेष्ठ और सनातन और कोई साहित्य नहीं रचा गया और उसकी जननी वाल्मीकि की करुणा है।"

बेनीपुरीजी (स्व. रामवृक्ष बेनीपुरी) और सात-आठ गुजराती-मराठी साहित्यकारों के साथ जब हम महाराष्ट्र-दर्शन-यात्रा पर थे, तब धुलिया में विनोबाजी के दर्शनों का लाभ प्राप्त हुआ। बात सन ४६ के उत्तरार्द्ध की है। एक प्रश्न के उत्तर में विनोबाजी ने साहित्य की उपर्युक्त परिभाषा इसी भेंट में निरूपित की थी। साहित्य की यह परिभाषा जितनी मौलिक है, उतनी ही क्रांतिमूलक। एक कवि ने प्रश्न

किया, "विनोबाजी ! अनासक्त करुणा में दो विरोधी मन:स्थितियां हैं, अनासक्त को तो कोई भावना स्पर्श नहीं कर सकती, वहां करुणा की पैठ कैसे ?"

विनोबाजी अपने को स्पष्ट करते हुए बोले, "विरोधाभास बिलकुल नहीं है। अनासक्ति हमारे विकास का पड़ाव है। पशु और मनुष्य का सबसे बड़ा अंतर यही है। निस्संग बुद्धि मनुष्य की कठिन तपस्या की कमाई है। निस्संगता के बिना साहित्य-सर्जन का खेत ही नहीं तैयार हो सकता। अपने से, 'मैं' से, हटकर जब हम जगत को देखेंगे, तभी तो जगत हमारी मन-बुद्धि में उतरेगा। सब ओर से अपने को समेटकर जब हम संपूर्ण, संपन्न, एकाकी, 'पूर्णमिदं' हो जाते हैं, तब भरे बादलों की तरह बरस पड़ते हैं—प्रेम और करुणा का तकाजा ही हमें घट-घट में बसाता है—

पंडितों-विद्वानों के बीच बौद्धिक दांव-पेंचों की कड़वी-मीठी परंपरा हमारे यहां है, पर बुद्धि के उन्मेष के लिए यह जरूरी भी है; नहीं तो साहित्य-निर्माण का बोध कैसे जागेगा ? साहित्य तो सारस्वत है... जो बिके या मोहांध हो जाए, वह क्या सरस्वती !

आचार्य भावे

मन से, कर्म से और वाणी से। यह वाणी ही साहित्य है।"

गुजरात के यशस्वी साहित्याचार्य रामनारायण पाठक ने विनोबाजी को टोका, "मगर अनासक्ति तो अद्वैत है। जहां 'ब्रह्मोऽस्मि' सारे रसों को सोखकर भावना के नाम पर हृदय को मरुथल कर देता है, वहां बीज स्वयं भुन जाएंगे, उगेंगे नहीं। करुणा वहां नर्मदा की भांति नहीं बहेगी, मारवाड़ की 'सरस्वती' की भांति बालू में खो जाएगी।"

विनोबाजी थोड़े विचलित-से लगे, बोले, "यह न तो अनासक्ति है और न अद्वैत। शंकराचार्य से बड़ा अनासक्त कौन होगा ? किंतु भक्ति-रस में डूबे उनके

-जैसे स्तोत्र और किसने रचे हैं? गांधीजी को आप-हम सबने नजदीक से देखा है—बुद्ध-महावीर की तरह अनासक्ति के अवतार थे, किंतु मानवमात्र के दुःख-हरणार्थ करुणा का कैसा असीम सागर उनके हृदय में हिलोरें भरता था। अनासक्ति का मतलब भावशून्यता नहीं। मनोभावों को एक तागे में बटोरकर आत्मा के खूंटे से बांध देना है। अनासक्ति साध्य नहीं है, साधन है। साध्य है, प्राणिमात्र में ईश्वर का साक्षात्कार। यह प्रेम से ही संभव है, चाहे इसे आप भक्ति कह लीजिए या करुणा नाम दे दीजिए। अनासक्ति में ही ऐसा प्रेम पनपता है। अनासक्ति के बिना प्रेम स्वार्थ की सड़ांध बनकर रह जाएगा। अनासक्ति का प्रेम मनुष्य को 'मैं', 'मेरे' के घरौंदे से निकालकर निस्सीम मानवता के हृदय का निवासी बना देता है। 'सीयराममय सब जग जानी' तुलसीदास के अनासक्त प्रेम की ही रसानुभूति है।"

प्रश्नोत्तर कई पगडंडियों से चौराहे पर आता और फिर गली-कूचों में बंट जाता। कभी-कभी विनयभाव के साथ व्यंग्यभाव भी अपनी घात लगा लेता था। उधर विनोबाजी अपने 'साहित्य-दर्शन' को कई रूपों-रूपकों में स्पष्ट कर रहे थे और इधर हमारे साथी उसे 'लोकोत्तर' कहकर प्रकारांतर से अस्वीकार ही कर रहे थे। आचार्य अत्रे ने अध्यात्म और साहित्य को भिन्न कोटियों में रखते हुए कालिदास के कृतित्व का हवाला दिया। 'रघुवंश' के साथ-साथ 'कुमारसम्भव' को भी एक ही पलड़े पर रखा। विस्तृत तर्क-वितर्क के अनंतर, 'कुमारसम्भव' पर टिप्पणी करते हुए विनोबाजी ने कहा कि कालिदास ने वासनाओं के दलदल से मुक्त होने के लिए ही वाणी का सहारा लिया था। 'कुमारसम्भव' में कालिदास पर वासनाएं सबसे अधिक हावी हो रही ज्ञात होती हैं, किंतु इसके साथ ही वह अपने मूल लक्ष्य को नहीं भूला है। काम को तपस्या द्वारा पराजित बताते हुए अपने परित्राण के लिए तपोपूता पार्वती और काम के सनातन शत्रु शिव का वह बड़े वक्र प्रकारांतर से स्मरण करता है।

अत्रेजी तो कालिदास के रसिक पाठक ठहरे, वह कहां चूकनेवाले थे! गजब की स्मरण-शक्ति थी उनकी। 'कुमारसम्भव' से इसी आशय का उद्धरण तत्काल उनकी जबान पर आ गया—

अद्य भृत्यवनतांगि तवास्मि दासः
क्रीतस्तपोभिरिति वादिनि चन्द्रमौलौ।

—आज से हे पार्वती, तुम्हारे तप से मोल लिया हुआ मैं तुम्हारा दास हूं।

उपनिषद लंबा होता जा रहा था—पन्ने-पर-पन्ने जुड़ते जा रहे थे। जिज्ञासा का स्थान श्रद्धा ले रही थी। ऋषिवाणी की तेजस्विता और फिर विनोबाजी के व्यक्तित्व का सम्मोहन! तप की महिमा पढ़ी थी, खूब सुनी थी; मगर इससे पहले उसका अनुभव तन-मन ने नहीं किया था।

श्रद्धांजलि

विनोबाजी बोल रहे थे और हम लोग पतंगों की तरह विमोहित-से उस दीपक को देख रहे थे। मनुष्य अपने को देकर जो देता है, उसे वाणी कहां से देगी! स्नेह और श्रद्धा जब एकरूप हो जाते हैं, तब वाणी विघ्न लगने लगती है। फिर तो मौन ही 'महावाक्य' बन जाता है।

अंत में विनोबाजी ने हमें कर्त्तव्य-दीक्षा के साथ आशीर्वाद देते हुए अपने विनोदी स्वभाव के अनुसार चुटकी ली, "भेद-प्रभेद, तर्क-वितर्क ऋषियों की चिंतन-प्रणाली है और अपने ही हठ पर अड़े रहना, मूढ़ों का आचरण है। हमारे शास्त्रों ने कहा है, **'एकं सत्यं विप्राः बहुधा वदन्ति।'** यानी सत्य एक है, परंतु आचरण के क्षेत्र में वह अनेक हो सकता है। **'एकं सत्यं मूर्खाः बहुधा वदन्ति'** की परंपरा हमारे चिंतन में नहीं रही। इसलिए व्यास-गणेश का यह 'डायलाग' अभी पूरा नहीं हुआ है। 'महाभारत' अभी पूरी लिपिबद्ध नहीं हुई है। व्यासजी बोलेंगे और गणेशजी लिखेंगे, ब्रह्माजी के सामने ऐसा करार हुआ था। दोनों पंडित थे। मगर मीन-मेख के बिना कैसा पांडित्य? गणेशजी ने शर्त रखी कि व्यासजी रुके बिना बोलते गये, तब मैं लिखूंगा, किंतु यदि बीच में रुक गये, तब मेरा लिखना बंद। व्यासजी भी कैसे पीछे रहते? बोले कि यह शर्त मुझे मंजूर है, परंतु मेरी भी एक शर्त है, अगर गणेशजी ने बिना सोचे-विचारे कुछ भी लिख लिया, तब मैं बोलना बंद कर दूंगा। खैर, पंडितों-विद्वानों के बीच बौद्धिक दाव-पेंचों की कड़वी-मीठी परंपरा हमारे यहां है, पर बुद्धि के उन्मेष के लिए यह जरूरी भी है। नहीं तो साहित्य-निर्माण का बोध कैसे जागेगा? साहित्य तो सार-स्वत है; जो बिके या मोहांध हो जाए, वह क्या सरस्वती! मम्मट ने अपने 'काव्य-प्रकाश' के आरंभ में दैव-धन-सत्ता की वश्यता से मुक्त, आत्मानंद से प्रेरित, नौ रसों से सुशोभित भारती का अभिनंदन किया है, जय-जयकार किया है।

नियतिकृत नियम रहितांह्लादैकमयीमनन्य परतंत्रां नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति ।

विनोबाजी के जीवन-दर्शन की यह एक झांकी है—अनासक्त प्रेमार्पण द्वारा प्राणिमात्र के हृदय में विराजमान परमेश्वर का क्रियात्मक साक्षात्कार। साहित्य की कृतार्थता के प्रसंग में उनका जो दृष्टिकोण है, वहीं राजनीति के प्रसंग में भी उनका लक्ष्यबोध है। जीवन को वे एक संपूर्ण इकाई मानते थे—द्वैतात्मक जीवन के, समझौतों के पैबंदों के वे घोर विरोधी थे। मनुष्य के जीवन की मंगल-यात्रा को वे गंगा के अनासक्त-अविराम अर्पण के सांचे में ढालना चाहते थे। रात-दिन जीवमात्र की सेवा में रत रहकर भी गंगा अपने परमार्थ को भूलती नहीं। जीने में और पूजा में वहां कोई विरोध नहीं है। सबको तृप्त करने के बाद ही पूजा की सार्थकता है। रवींद्रनाथ भी कहते हैं कि सब को वंचित करके तो तुम्हारी पूजा नहीं हो सकती—

सबारे वंचित करि, तव पूजा न हे !

जीवन की पूर्णता के ऐसे स्तोता को —विनोबाजी को—आज देहोत्सर्ग के बाद कहीं हम अपनी प्रत्यक्ष आचरण-भूमि से उठाकर देवताओं के परोक्ष-लोक में निर्वासित न कर दें। अवतारों, महापुरुषों के गुणों-विभूतियों का रात-दिन के आचरण में दर्शन करने के बजाय हम प्रायः उन्हें मन से निर्वासित कर मंदिर की मूर्तियां बना देते हैं। यह हमारा राष्ट्रीय स्वभाव है। राम, कृष्ण और बुद्ध के बाद हमने गांधी को भी 'देशनिकाला' दे दिया है। आज गांधीजी हमारे कर्मक्षेत्र को प्रकाशित करनेवाले प्रेरणादीप नहीं रहे, जयंतियों-पुण्यतिथियों पर औपचारिक वाणी में महज लोकलाज के लिए याद किये जानेवाले भूले-बिसरे प्रसंग-भर रह गये हैं। भय है कि कहीं विनोबाजी भी इसी पंक्ति में न बिठा दिये जाएं ! क्योंकि युग आज, तुलसीदासजी के शब्दों में, **'बहुत प्रीति पुजाइबे में, पूजिबे में थोरी'** का है। अपने को पुजवाने की अंधी दौड़ से फुरसत मिले, तब देवता की पूजा की याद आये !

तप की कसौटी पर विनोबाजी जीवन में जैसे खरे उतरे हैं, वैसे ही मृत्यु में भी वे 'तप्तकांचन' सिद्ध हुए हैं। भूदान-आंदोलन के बाद उन्होंने पवनार में क्षेत्र-संन्यास ले लिया था। विदेहावस्था की अनुभूति भी इसी अवधि में शुरू हो गयी थी। भय को वे जीवन-काल में ही जीत चुके थे। आनंदबोध ने सारी रसानुभूतियों को पूर्णानंद के 'हरि-सरवर' से जोड़ दिया था। महाराष्ट्र की संत-परंपरा के समाधि-प्रसंग विनोबाजी के सामने थे। तुकाराम की तरह सदेह स्वर्ग जाने की कामना उनकी नहीं थी। 'ज्ञानेश्वरी' गीता के व्याख्याता ज्ञानेश्वर के देवोत्सर्ग का मार्ग ही उनके संकल्प में था। चरक-संहिता का हवाला देते हुए उन्होंने अपने एक भक्त को कहा था कि जब शरीर में प्राण सुखपूर्वक नहीं

रह सकते हों, तब मृत्यु के द्वार पर अतिथि बनकर जाना चाहिए, नामकीर्तन करना और विष्णु-सहस्रनाम सुनना चाहिए। एक बार उन्होंने मृत्यु को गुरु बनाकर नचिकेता की भांति दीक्षा लेने की बात भी कही थी। किंतु विनोबाजी के पास काल स्वयं उनका आनंदस्वरूप आराध्य बनकर आया था—उनका वह सच्चिदानंद, जिसे उन्होंने जगत के कोटि-कोटि प्राणियों में प्रकाशित सत्य के रूप में अनुभव किया था, उनके समक्ष प्रत्यक्ष हुआ था!

विनोबाजी हमारी सनातन ऋषि-परंपरा की तपोप्राण कड़ी थे। उनकी तपस्या ने हमारी श्रद्धा को नया आयुर्बल दिया और हमारी चेतना को सात्विक संजीवनी। गांधी अपनी महाकरुणा में बुद्ध थे, तो विनोबाजी उस पथ के बोधिसत्व थे। वे युग-दर्शन के नये स्तोता थे। वेदों की भाषा में चेतना के बीहड़ वन में नयी पगडंडी के निर्माता—नये 'पथिकृत' थे। प्रकाश-पगडंडियों के पुरातन ऋषि-शिल्पियों को जिस वेदवाणी में हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते आ रहे हैं, उसी वेदवाणी में युग के नये 'पथिकृत' विनोबाजी को भी हम अपनी पुष्पांजलि चढ़ाते हैं—

इदं नम ऋषिभ्यः
पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः
पथिकृद्भ्यः।

—पहले के उन पूर्वज ऋषियों को हम प्रणाम करते हैं, जिन्होंने अज्ञान के घोर जंगलों को चीरकर हमारे लिए ज्ञान की पगडंडियां बनायीं।

—१२ फीरोज गांधी मार्ग, लाजपत नगर-३
नयी दिल्ली—११००२४

ज्ञान - गंगा

मित्राणि शत्रुत्वमुपानयन्ती मित्रत्वमर्थस्य वशाच्च शत्रून् नीतिर्नयत्यस्मृत पूर्ववृत्तं जन्मातरं जीवत एव पुंसः

स्वार्थ के वशीभूत होने पर राजनीति मित्र को शत्रु और शत्रु को मित्र बना देती है। वह जीवनकाल में ही पुरुष का मानो जन्मांतर कर देती है, जिसमें वह पहले की घटनाओं को भूल ही जाता है।

त्यागाधिकाः स्वर्गमुपाश्रयन्ते
त्यागेन हीना नरकं व्रजन्ति
न त्यागिनां किञ्चिदसाध्यमस्ति
त्यागो हि सर्वव्यसनानि हन्ति

अधिक त्यागवाले स्वर्ग में और त्यागहीन नरक में स्थान पाते हैं। त्यागी के लिए कुछ भी असाध्य नहीं। त्याग सभी विपत्तियों को दूर कर देता है।

मिथ्योपकरणं नारीं गणयन्ति नृणानां जनाः।
परिणामे तु नारीणां क्रीडोपकरणं नराः ॥

लोग झूठे ही स्त्री को पुरुष की सामग्री मानते हैं। अंत में तो पुरुष ही नारी की क्रीड़ा की सामग्री बनते हैं।

दुःखितमपि जनं रमयति सज्जनसमागमः

दुःखी पुरुष को भी सज्जनों का समागम प्रसन्न कर देता है

क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते।

क्लेश फल की प्राप्ति होने पर पुनः नयी स्फूर्ति ला देता है।

—प्रस्तोता : महर्षि कुमार पाण्डेय

'सीपिकाएं' स्तंभ में आनेवाली अधिकांश रचनाएं हास्य-व्यंग्य की होती हैं। 'सीपिकाएं' स्तंभ हास्य-व्यंग्य के लिए नहीं है। इस स्तंभ में वही रचनाएं स्वीकार की जाएंगी, जो इसके योग्य होंगी।

—संपादक

नव प्रभात

लिबासों का धुंधलका
मकानों से उगता धुंआ
कोहरे की परत बन
नवप्रभात
मोम की तरह टपकता रहा

—डॉ. अखिलेश शर्मा

अंतर्द्वंद्व

मेरे और मेरी कविता
के बीच
अंतर्द्वंद्व
उस समय असहनीय हो
जाता है
जब लोग मुझे कवि
कहकर संबोधित
करते हैं

—राघवेंद्र दत्त मिश्र

बोध

पीड़ाओं का घर
दीपों की लौ पर
ठहरा रहा
हो तिरछा
रात सरकने के नाम पर
बढ़ती गयी लंबाई में
यह हादसा . . .
अब हालात हैं

—सविता सिंह

मिश्र
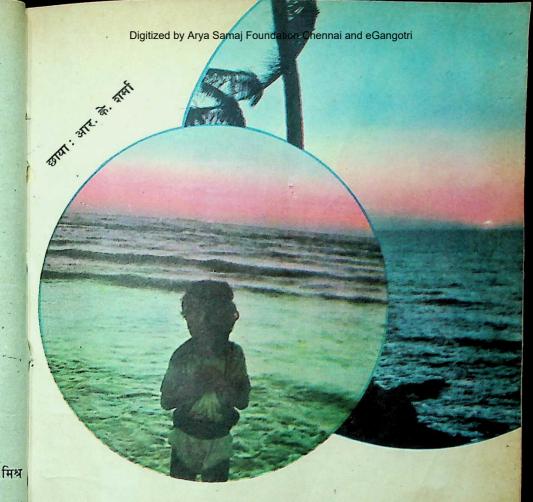
बीत गया वर्ष : उदित हुआ वर्ष

धूपछांह के रंग की रेती
. अनिल उर्मियों से सर्पांकित
नील लहरियों में लोड़ित
पीला जल रजत जलद से बिंबित
सिकता, सलिल, समीर सदा से
स्नेह-पाश में बंधे समुज्वल
अनिल पिघलकर सलिल
सलिल ज्यों गति द्रव खो बन गया लवोपल

——सुमित्रानंदन पंत

सिंह
नी

हिमालय के गप्पू दिल्ली में
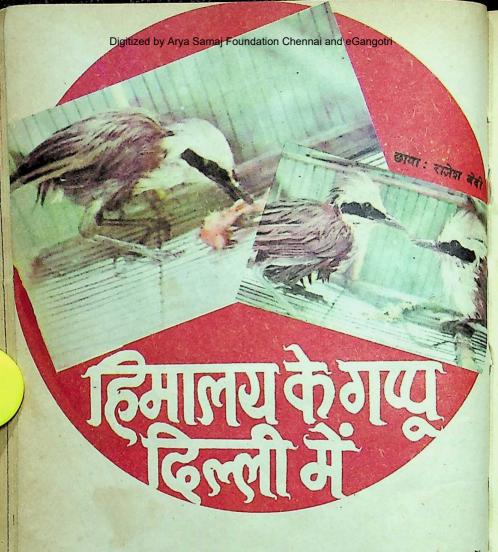
हमारे देश से हर साल लाखों रुपये के पक्षी विदेशों को भेजे जाते हैं। इन पक्षियों के बारे में बी.बी.सी. टेलीविजन अपने लंदन के दर्शकों को एक प्रोग्राम दिखाना चाहता था। उनके लिए मेरे बेटे नरेश बेदी और राजेश बेदी ने इन पक्षियों पर दिसंबर, १६७८ में एक 'फिल्म-कवरेज' की थी। 'फिल्मिंग' के दौरान मैंने अनेक पक्षी देखे। इनमें हिमालय के गप्पू (लाफिंग थ्रश) पक्षी भी थे। हिमालय की यात्राओं में मैंने इन्हें जंगलों, कहीं-कहीं घने झुरमुटों के अंदर देखा था। ये इतने शरमीले थे कि मुझे देखते ही गायब हो जाते थे। इनकी मामूली झांकी तो मैं ले सका था; इनके बारे में अधिक नहीं जान सका था।

मेरठ में पक्षियों के व्यापारी रामसेवक के पास कोई सौ गप्पू थे, जिन्हें वे यूरोपीय देशों को भेज रहे थे। मैं एक जोड़ा गप्पू ले आया। इनके लिए मेरठ

नर और मादा गप्पू

के एक बहेले से बना-बनाया पिंजरा पचीस रुपये में खरीद लिया। पक्षियों के पिंजरे बनाना उसका पुश्तैनी पेशा है। इसलिए वह पक्षियों की जरूरतों का ध्यान रखकर पिंजरे बनाया करता है। पिंजरे के आधार से तेरह सेंटीमीटर ऊपर उसने आमने-सामने तीस सेंटीमीटर के फासले पर बांस की दो पतली खपचियां लगा दी थीं। इन पर गप्पू बैठते थे।
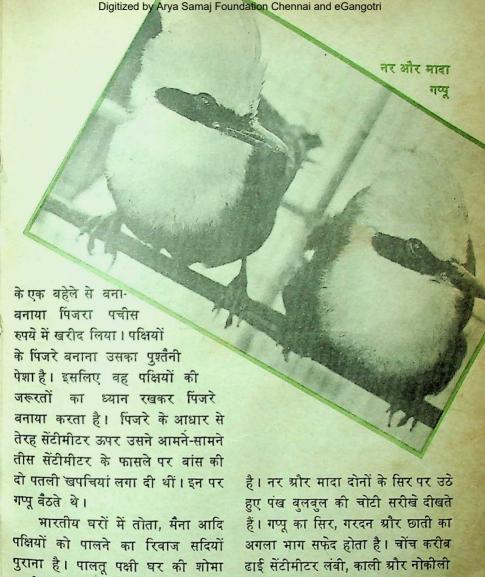
भारतीय घरों में तोता, मैना आदि पक्षियों को पालने का रिवाज सदियों पुराना है। पालतू पक्षी घर की शोभा बढ़ाते हैं। यूरोप और अमरीका में घरों की शोभा के लिए गप्पू पाले जाते हैं।

नर और मादा गप्पू एक समान होते हैं। सिर पर गोल कलगी होती है। आकार में यद्यपि यह मैना के बराबर पक्षी है, पर बनावट में बुलबुल सरीखा पक्षी लगता है। नर और मादा दोनों के सिर पर उठे हुए पंख बुलबुल की चोटी सरीखे दीखते हैं। गप्पू का सिर, गरदन और छाती का अगला भाग सफेद होता है। चोंच करीब ढाई सेंटीमीटर लंबी, काली और नोकीली होती है। चोंच की कालिमा पतली काली पट्टी के रूप में आंख के नीचे बढ़ती हुई गरदन के पीछे की तरफ कान के ढक्कन तक चली जाती है। यह पट्टी ढाई सेंटी-मीटर लंबी और बासठ मिलिमीटर चौड़ी होगी। बाकी शरीर का रंग चॉकलेट-

नर गप्पू: सुदृढ़ शरीर
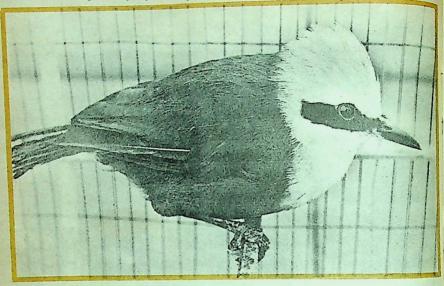
जैसा होता है। छाती पर तथा चोटी में सफेदी कितनी है और अन्य सूक्ष्म अंतरों के कारण गप्पू की चार नस्लें हैं।

यह जंगलों में रहनेवाला पक्षी है। हिमालय में २,५०० से ५,००० फीट तक, शिमला के आसपास के पहाड़ों से पूर्व की ओर असम के पहाड़ों तक पाया जाता है। नीचे बर्मा से तेनास्सेरिम, स्याम आदि देशों तक चला गया है।

प्रकृति में गप्पुओं का मुख्य भोजन कीड़े हैं। साल के जंगलों में धरती पर सूखे पत्तों को पलटते हुए ये कीड़ों की तलाश करते रहते हैं।

खाने के बारे में इनकी नजाकत का मुझे कई परीक्षणों में अनुभव हुआ। संतरा छीलकर उसकी फाड़ियां मैंने पिंजरे में रखीं। गप्पुओं ने चोंच मारी और एक तरफ जा बैठे। फांकों के ऊपर बारीक झिल्ली को उतारने की जहमत उन्होंने नहीं की। मैंने झिल्ली उतार दी, जिससे उसकी छोटी-छोटी तुरियां अलग-अलग हो गयीं। एक प्याली में इसे रख दिया। वे दबादब खाने लगे। एक प्याली में, टमाटर के बारीक कतरे काटकर रख दें तो ये उसका गूदा, बीज, रस सब कुछ खा-पी जाते थे। छिलके भी नहीं छोड़ते थे। बड़े कतरे नहीं खाते थे।

सर्वभक्षी गप्पू

फल, अनाज और अनाज से बने पकवानों को जिस शौक से गप्पू खाते थे, उससे अधिक चाव से वे कीड़ों, पतंगों, छिपकलियों और विविध प्रकार के छोटे जीवों को खाते थे। मुझे जब भी मौका मिलता, मैं उन्हें नये-नये जीव खिलाता था।

एक दिन मैंने अगले आंगन की क्यारी में से गिडोले (केंचुए) खोदकर खिलाये। पिछले सेहन में रखे पुराने कागजों की सफाई में टिड्डियां और छोटे-बड़े कई किस्म के कॉक्रोच निकले। झाड़ू से हलकी-सी चोट मारकर उन्हें मैं भागने में अक्षम कर देता था। तब तिनके के सिरे पर उठाकर उसे तारों के बीच में से पिंजरे के अंदर ले जाता था। गप्पू झपटकर जिंदा कॉक्रोच को साबुत निगल जाते थे। एक बार कॉक्रोच अधिक बड़ा था और जिंदा था। गप्पू के गले में वह अटक गया। गप्पू ने उसे उगल दिया और चोंच से मारकर फिर खा लिया। गप्पुओं की निगाह तेज थी। दूर रेंगते हुए कॉक्रोच को देखकर चौकस हो जाते थे। वे कुशल शिकारी थे। तेजी से भागते हुए कॉक्रोच को एक झपट्टे में पकड़कर सटक जाते थे।

अगले दिन मैं फिर क्यारी को खोदकर गिडोले तलाश कर रहा था। यह गप्पुओं का प्रिय आहार था। क्यारी में मुझे लाल दीमकों के झुंड मिल गये। गप्पू दीमकों को खाते तो थे, पर सावधानी से। दीमकें उनके मुंह के अंदर काट लेती थीं। इसलिए वे चोंच से पहले उन्हें मार लेते थे और तब निगलते थे।

भोजन करने के बाद गप्पू पिंजरे के अंदर खूब फुदकते थे। एक खपच्ची से दूसरी खपच्ची पर और ऊपर-नीचे कूदकर अपनी तृप्ति प्रकट करते थे। साथ ही बारीक मद्धम आवाज करते हुए संतोष

दूध-मलाई खाने के लिए एक काला बिल्ला खिड़की से रसोई में घुसा करता था। वह अब गप्पुओं की घात लगाने लगा। मौका मिलने पर वह पिंजरे की बाजुओं पर पंजे मारता और पिंजरे के ऊपर चढ़ जाता। जान बचाने के लिए भागते हुए गप्पुओं के सिर तारों से टकराकर जख्मी हो जाते...

अभिव्यक्त करते थे। कूदने से उनकी कसरत भी हो जाती थी। छोटे पिंजरे में यह संभव नहीं था। इसीलिए मैंने इन्हें बड़े पिंजरे में रखा था। यह चौवन सेंटीमीटर लंबा, छियालीस सेंटीमीटर चौड़ा और चवालीस सेंटीमीटर ऊंचा था।

सफाई-प्रेमी गप्पू

गप्पू साफ-सुथरे पक्षी थे। पंजों में चिपके भोजन के अंशों को चोंच से साफ कर लेते थे। चोंच को खपच्ची के साथ दायें-बायें रगड़कर पोंछ लेते थे। सफाई में दोनों पक्षी एक दूसरे की सहायता करते थे। चोंच से अपने तथा अपने साथी के शरीर को साफ करते थे।

एक पक्षी दूसरे के पास जाता था, उसे सिर पर खुजली हो रही होती थी। वह सिर को दूसरे पक्षी के सामने कर देता था और सिर के पंख खड़े कर लेता था। दूसरा पक्षी अपनी चोंच से उसे खुजा देता था। आंख के पास भी चोंच फेर देता था। गरदन पर खाज हो तो गरदन को

टेढ़ा कर वहां के पंख खड़ा कर लेता था। ऐसा लगता था कि इसमें पक्षी बहुत सुख अनुभव कर रहा था। जिन भागों पर अपनी चोंच पहुंच जाती थी, वहां वह खुद चोंच फेरकर खुजा देता था और सफाई कर लेता था। एक पक्षी खपच्ची पर बैठा होता था, दूसरा नीचे बैठकर उसकी पूंछ के निचले हिस्सों को भी चोंच से साफ कर देता था।

मिट्टी के छोटे बरतन में मैं पीने का पानी रखता था। गप्पू पानी से खेलना चाहते थे। बरतन को उठाकर पानी बिखेर देते थे। स्नान करते समय पक्षी जिस तरह पंख फड़फड़ाया करते हैं, गप्पू भी उसी तरह पंख फड़फड़ाते थे। जाहिर था कि वे नहाना चाहते हैं। इसे देखकर मैंने चौड़ी तश्तरी में पानी रखना शुरू किया। वे उसमें नहाने लगे।

घरवालों से जान-पहचान

गप्पू के छोटे बच्चे पाल लिये जाएं तो वे घरवालों से हिलमिल जाते हैं। उन्हें पिंजरे में बंद करने की जरूरत नहीं पड़ती। पालकों के पीछे-पीछे इस कमरे से उस कमरे में फुदकते फिरते हैं। जंगल से पकड़ा हुआ बड़ा गप्पू इस हद तक पालतू नहीं बन पाता। मेरे गप्पू घरवालों को पहचानते थे। भोजन मांगने के लिए शोर मचाते थे और फुदकते थे। लेकिन, उनके साथ हमें घनिष्टता बढ़ाने में सफलता नहीं मिली। खाना रखने के लिए और सफाई करने के लिए पिंजरे के अंदर सुभाष जब हाथ डालता, तब वे डरकर इधर-उधर भागते। मानो कि तारों के बीच में से बाहर निकलने की कोशिश करते हों। उनकी चोंच के ऊपर खून की बूंद निकल आती थी।

शुरू के दिनों हम पिछले सेहन में पिंजरा रखते थे, क्योंकि वहां अधिक समय तक छाया बनी रहती थी। हमारी रसोई की खिड़की के शीशे भी उधर खुलते थे। दूध-मलाई खाने के लिए एक काला बिल्ला इसी खिड़की से रसोई में घुसा करता था। वह अब गप्पुओं की घात लगाने लगा। मौका मिलने पर वह पिंजरे की बाजुओं पर पंजे मारता और पिंजरे के ऊपर चढ़ जाता। जान बचाने के लिए भागते हुए गप्पुओं के सिर तारों से टकराकर जखमी हो जाते। ऊपरवाली मंजिल से ईवान स्मिथ के बच्चे आवाज देते, तभी मुझे बिल्ले के हमले का पता चलता।

पिंजरे के पंछी

एक बार की बात है। हमारे परिवार के सभी सदस्य कॉर्बेट नेशनल पार्क घूमने चले गये थे। अपना घर मेहरी को सौंप गये थे। उसका लड़का गप्पुओं को खाना डाला करता था। एक दिन पिंजरे का दरवाजा खुला रह गया। एक गप्पू निकल गया। पिंजरा अगले सेहन में तुलसी के पौधे के नीचे रखा था। गप्पू सड़क-पार निचले फ्लैट में उड़ गया। लड़के के पुकारने पर वह वापस आ गया। हमारे घर में पिंजरे के अंदर रहते हुए गप्पुओं को

चार महीने हो गये थे। चार महीने में वे अपने पिंजरे को, हमारे घर को और घर के आदमियों को पहचानने लगे थे।

एक दिन इसी तरह एक गप्पू अचानक फिर निकल गया था। सुभाष ने एक कटोरी में गप्पुओं के लिए दूध डालकर डबल रोटी भिगोयी थी। कटोरी रखने के लिए दरवाजा खोला था, तो गप्पू बाहर निकल आया था। उसने अपनी आजादी का लाभ नहीं उठाया। पिंजरे के पास ही पड़े तख्तपोश पर बैठा रहा। उसके पास गये तो वह पिछले फ्लैट में उड़ गया।

इन घटनाओं से यह तो स्पष्ट था कि ये अब पूर्णतया पिंजरे के पंछी बन गये थे। दिल्ली में और उसके आस-पास उनकी बिरादरी के पंछी थे भी नहीं, जिनके साथ ये, पिंजरे से आजाद होने के बाद, मिल जाएं। महीनों पिंजरे में रहते-रहते उनकी उड़ने की सामर्थ्य भी कम हो गयी थी। प्रकृति में संघर्षमय आजाद जीवन बिताने की लालसा उनमें खत्म हो गयी थी। मेरे घर को उन्होंने अभयस्थल मान लिया था।

१९८० की जुलाई में हम लोगों ने राजौरी गार्डन में एक कोठी खरीद ली थी। उसके नवीकरण में सभी लोग व्यस्त थे। इसके अलावा इंटरनेशनल मार्किट के लिए मेरी 'लद्दाख' पुस्तक का अंगरेजी संस्करण तैयार किया जा रहा था। मुझे उसके 'टेक्स्ट' के लिए समय देना पड़ रहा था। पुस्तक में लगभग दो सौ रंगीन ट्रांस्पेरेंसियां जानी थीं, जिनका 'ले-आऊट' राजेश और नरेश कर रहे थे। दस अगस्त को 'स्नेक वर्शिप' फिल्म के शूटिंग के लिए नरेश शिराला चले गये। सुभाष गप्पुओं की देखभाल कर लेते थे, वे नयी कोठी में रहते थे। चौदह अगस्त को मैं मायापुरी-वाले फ्लैट में 'लद्दाख' की टाइप स्क्रिप्ट ठीक कर रहा था। मुझे गप्पुओं का खयाल आया। ग्यारह बजे होंगे। मग में पानी लेकर मैं उनके पास गया। दोनों पिंजरे के अंदर मरे पड़े थे। मैं स्तब्ध रह गया। गप्पुओं की यह स्वाभाविक मौत नहीं थी। घर के सभी सदस्य दूसरे कामों में बुरी तरह फंसे थे। किसी को खाना-पानी डालने का भी ध्यान नहीं रहा। उस दिन धूप भी कड़ाके की थी। फर्श पर पैर जलते थे। हर रोज मैं पिंजरे के ऊपर कपड़ा ढक देता था। उस दिन पिंजरा धूप में पड़ा था। पास ही पपीते और तुलसी की छाया में चिड़क्कों का गोल पिंजरा रखा था। ये बाजरा खाते थे, जो दूकानों में आसानी से नहीं मिलता था। गप्पुओं की मौत ने मुझे बहुत दुखी कर दिया था। मैंने चिड़क्कों के पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। हम लोग उनकी परवरिश के लिए समय नहीं निकाल पाते, तो उन्हें उन्मुक्त कर देना ही श्रेयस्कर था।

एक चिड़क्का बाहर निकला और गप्पुओं के पिंजरे के ऊपर बैठ गया। मैं उसे पास से देखता रहा। उसका मनुष्य से भय निकल चुका था। वह इस अभय-स्थल से दूर नहीं जाना चाहता था। कुछ देर बाद उसके दोनों साथी बाहर निकल आये। तीनों दूरदर्शन के एंटिना पर जा बैठे।

—एल-६, राजौरी गार्डन, दिल्ली-२७

कहानी

निर्मला उर्फ निम्मी ने बरतन मांजकर दासे पर सजा दिये, झाड़ू से रगड़-रगड़कर धोकर रसोई चांदनी कर दी और तब अपनी रजाई में बैठकर अपने होमवर्क के सवालों से जूझने लगी। मां पास से निकलीं, तो वे सुनाती गयीं, "बैठ गयीं चढ़कर खटा पे, भइया हमें तो इत्ती फुरसत कभी मिलती नहीं कि हम तुम्हारी तरह बैठकर अपना कोई काम कर सकें।"

निम्मी थरथरा गयी, बोली, "मां, बरतन तो मैं मांजकर रख आयी हूं, रसोई भी धो दी है रगड़-रगड़ के।"

"बस, तुमने तो अपने काम गिना दिये, हमसे पूछो, रात-दिन खटते रहते हैं और चूं नहीं करते। हमारी किस्मत में तो यों ही कोल्हू के बैल की तरह पिसते रहना है जिंदगीभर।" मां के आखिरी शब्द रसोई तक जाते-जाते डूबते चले गये, निम्मी ने चैन की सांस ली, जान बची लाखों पाये, वह अपने सवालों में लगी रही।

अगले दिन सबेरे निम्मी जल्दी उठ गयी, मां की रात की बकझक उसे याद थी। जब स्कूल में पढ़ती थी, तो उसे दूसरी शिफ्ट में बारह बजे जाना होता था, उस समय वह मां के साथ रोटी बिलवाने का काम करती ही थी, कॉलेज में जाने लगी, तो समय बदल गया। इस हालत में कुछ अधिक काम करवाना मुश्किल हो जाता है। फिर भी करेगी वह, मां खुश हो जाएंगी, हाथ धोकर वह रसोई में पहुंच गयी।

"मां, रोटी बिलवाऊं? रामे, बीनू, दम्मी सबको तैयार कर दिया है मैंने।"

"इसी तरह रोज बिलवा दो तो भले दिन न होएं। लो बेलो। हम तो ये चाहते हैं, रोटियां बेलते-बेलते हमारे तो हाथ के गट्टे पिरा गये।" मां ने चकला सरका दिया और खुद बच्चों के लिए थालियां

नहीं का मतलब

● डॉ. शशिप्रभा शास्त्री

लगाने लगीं। दो-चार मिनट में ही उसने पूरा बड़ा थाल रोटियां बेल-बेलकर भर दिया था।

"उठ जाओ, हमें नहीं बिलवानी रोटियां—हम कोई मशीन हैं, या जिन्न-भूत, कि इत्ती सारी रोटियां पलक झपकते सेंक गेरेंगे, उठो, बहुत बिल गयीं रोटियां।" मां ने फिर दोहराया और बेटी के हाथ से बेलन लगभग छीन ही लिया।

निम्मी का मन बुरा हो गया, सारी भूख-प्यास खत्म हो गयी। हथेलियां रगड़कर आटे की बत्तियां निकालती हुई बोली, "मुझे भूख नहीं है, आज मैं खाना नहीं खाऊंगी।" और बिना कुछ सुने, वह तेजी

से अपने कमरे में आकर कंधे से बाल खींच-खींचकर काढ़ती रही।
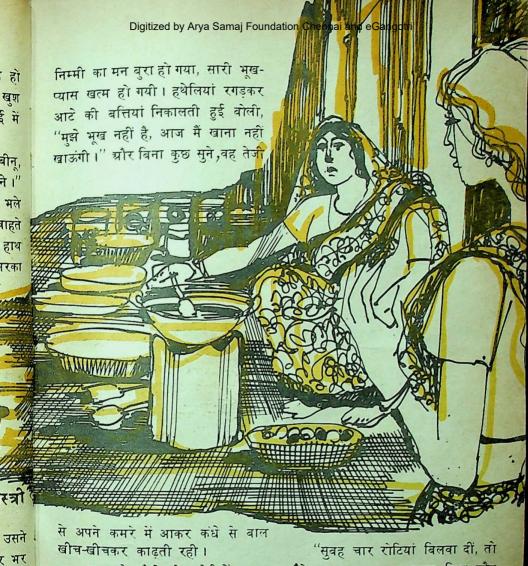
शाम को लौटी तो रसोई में जाकर वह अपने लिए चाय बनाने लगी। दिन में सहेलियों के साथ कुछ खा लिया था, पर इस समय लौटकर वह रोज ही चाय पीती थी, आज भी मन किया, तो वह रसोई में चली आयी, देखते ही मां की कतरनी फिर शुरू हो गयी।

"सुबह चार रोटियां बिलवा दीं, तो जैसे घरभर का काम उतार दिया और हमें सजा दे के चली गयीं कि रोटी नहीं खाएंगी। अरे, तुमने नहीं खायी है, तो हमने भी एक, डेढ़ बजे कौर मुंह में डाला है। चरखी से लगे रहे हैं, चरखी से।"

निम्मी सुनती रही, रसोई में खड़े होकर चाय बनाना उसके लिए भारी हो

गया। उसकी कोशिश थी, किसी तरह चाय बनाकर रसोई से भाग जाए, पर मां रसोई के बाहर ही पिढ़िया डाले बैठी थीं, चाय के लिए उनसे भी पूछना जरूरी हो गया।

"आप चाय पिएंगी ?"

"हमारे करम में चाय पीनी बदी है इत्ती आसानी से !" अपने कंघे में फंसे बालों को ऐंचती हुई वे बोलीं, "जिसने सुकरम किये हैं, वही पिये चाय, मेज-कुरसी पे बैठ के।"

मां बड़बड़ाती रहीं और निम्मी अपने कमरे में बैठी चाय के घूंट अपने कंठ में उतारती रही। वह सोच रही थी, यह भी कोई चाय पीना हुआ ? मां की रात-दिन की झिकझिक और असंतोष से वह परेशान हो चुकी थी।

उस दिन शाम की रसोई उसने ही निबटा दी। सब्जी और परांठे बनाकर उसने ढक-मूंदकर रख दिये। सोचा, आज मां को रसोई में बनाने-करने का कोई काम नहीं करना पड़ेगा, तो मां शांत रहेंगी। वे सचमुच शांत रहीं, पर अपने बिस्तर पर जाते-जाते उन्होंने फिर शुरू कर दिया।

"लोग-बाग समझते हैं, कि हमने चार रोटी उलट लीं, तो बहुत कर लिया, अब हम गाड़ीभर बरतन मांजकर आये हैं, तो उंगलियां ठिरा गयी हैं। मरी रजाई तक अपने ऊपर तक नहीं सरकायी जा रही।" इस प्रकार के ताने-तनाजों और उनके हरदम के रोने ने उसके मन को कुंठित बना रखा था, वह अपनी रजाई में दबी-ढकी बैठी रही। मां ने रजाई किसी तरह ओढ़ी होगी या जो कुछ किया होगा, सोते-सोते निम्मी का मन आक्रोश से भर उठा, 'कमाल है, जो काम ये करती हैं, वह पहाड़ होता है और जो कुछ काम दूसरे करते हैं, वे कुछ होते ही नहीं, अब किया तो क्या किया जाए ?'

अगले दिन निम्मी अपने को रोक नहीं सकी, वही बात उसने मां के सामने दोहरा दी, "मां, तुम्हारे सब काम बड़े होते हैं और दूसरे तो जैसे कुछ करते ही नहीं, रात-दिन टर्र-टर्र लगाये रहती हो। जीना मुश्किल कर रक्खा है।"

"तुमने तो लली, अपनी झाड़-फटकार कर ली, पर हमसे पूछो। जिस दिन हमारे जित्ता काम कोई कर लेगा, उस दिन हम उसकी टांग के नीचे से निकल जाएंगे। तुम्हें तो अपनी चोटी-कंघी से ही फुरसत नहीं मिलती, कभी चोटी-कंघी, तो कभी पढ़ाई-लिखाई. . . .।"

निम्मी खुद यही बात कहना चाहती थी, कि 'मां, तुम कभी मेरी चोटी-कंघी पर खीज निकालती हो, कभी पढ़ाई-लिखाई पर, पर अब मैं करूं तो क्या करूं ! ये काम भी तो करना जरूरी हैं, या तो मुझे पढ़ाई से हटा लो, और घर का छाज-छलनी पकड़ा दो, या मुझे कुछ दूसरा काम करने का भी मौका दो,' कितना कुछ कहना चाहती थी निम्मी, पर कुछ न कह-

कर उसने उस क्षण ईश्वर से बहुत तन्मयता से प्रार्थना की, 'हे ईश्वर, मुझे इस घर से मुक्ति दो, नाथ !'
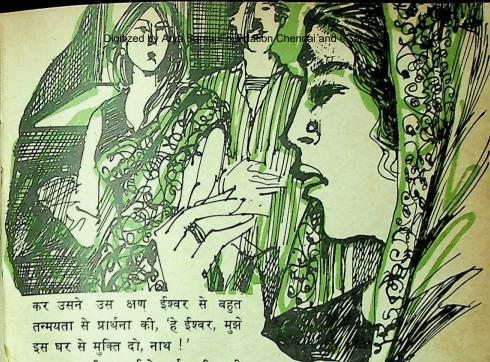
हृदय की गहराई से प्रार्थना की जाती तो वह पूरी ही हो जाती है शायद! निम्मी की कामना भी पूरी हुई, वह इलाहाबाद में अपने घर अहियापुर से हटकर भानुप्रताप इंजीनियर के घर सिविल लाइंस में आ गयी। वह खुश थी।

निम्मी खुश थी, बेहद संतुष्ट, शांत, उसकी इन तीनों उपलब्धियों की अवधि बहुत बेमालूम ही रही, क्योंकि सात-आठ महीने बाद ही मां को बुलाने की आवश्यकता फिर महसूस होने लगी।

"मां को ही बुला लो और क्या करोगी ?" पति से परामर्श करने पर बात घूम-फिरकर फिर वहीं आ गयी। "तुम्हारी तबियत यों ही गिरी-पड़ी रहती है। उनके लिए क्या अंतर पड़ता है, इधर रहीं या उधर रहीं।"

"हमें-तुम्हें अंतर नहीं पड़ता, पर उन्हें तो पड़ सकता है।" पति के सामने निम्मी ने इतना ही कहा, पर मन में वह न जाने क्या-क्या सोच गयी; मां पर फिर काम का बोझ पड़ जाएगा, वे फिर सुनाना शुरू कर देंगी। निम्मी सोचती रही, 'पर अब नौकर है, शायद मां पर उतना बोझ न पड़े'। सब-कुछ सोचकर उसने मां को कहला दिया, खुद इंजीनियर साहब ही जाकर कह आये।

जब तक वे लौटकर नहीं आये, उसे संशय बना रहा, मालूम नहीं मां आना पसंद करेंगी या नहीं करेंगी। यों घंटे भर के लिए कभी-कमार चक्कर लगा जाना और बात थी, पर बेटी के घर आकर लगातार दो-ढाई महीनों तक

रहने की बात —निम्मी विचारती रही । उसे आश्चर्य हुआ, जब मां ने अपने आने की अनुमति सहर्ष दे दी । घर में अब दमयंती (दम्मी) बड़ी हो गयी है, कुछ काम संभाल ही लेगी, शायद इसीलिए, मां को कोई आपत्ति नहीं हुई होगी, निम्मी ने हिसाब लगा लिया ।

मां तीसरे दिन पहुंच गयी थीं, अकेली ही । अपने साथ वे अपनी संदुकिया और बिस्तर भी लायी थीं—निम्मी खुश हो गयी, पूछा—"मां, बिस्तर क्यों लायी हो, यहां तो बहुत बिस्तर थे ?" मां की कौली भरकर वह भीतर ड्रॉइंगरूम में ले आयी, नौकर रुकमा ने मां का सामान उठाकर एक कमरा, जो उनके लिए ही तय कर दिया गया था, वहीं रख दिया। निम्मी ने चाय बनाने के लिए आदेश दिया, जिससे मां अब देख लें, किस तरह उनके आदेश पर एक नौकर हमेशा तैनात रहेगा । मां ने चादर उतारकर एक तरफ रख दी, बिस्तर के बारे में सफाई दी, "अपना पाक-साफ बिस्तर हो, तो ठीक रहता है।" मां के पहले वाक्य ने ही निम्मी के हुलास पर पानी डाल दिया, चाय प्याले में डालती हुई वह कहने लगी, "मां, तुम्हारे लिए गिलास मंगवाऊं ?"

"नहीं, मैं अपना प्याला लायी हूं।" मां जो एक कनस्तर भी लायी थीं, उसी में से उन्होंने अपना प्याला निकाल लिया। कनस्तर में से कुछ मेवा-मिठाई भी निकालकर सामने रख दी, "तुम्हारे पिताजी ने भिजवायी है, मैंने उन्हें जचगी का सामान लिखवा दिया था।" अपना तुर्रा घुसेड़ना, मां के लिए जरूरी होता था।

थोड़ी देर मां मोहल्ले-पड़ौस के किस्से सुनाती रहीं, फिर अपने कमरे में अपनी चारपाई पर सो गयीं। उठीं तो उन्होंने रसोई में जाकर व्यवस्था संभाल ली।

"मां, अब नौकर है न, तो तुम्हें काफी मदद मिल जाएगी, हर काम तुम्हें अपने आप नहीं करना पड़ेगा।" निम्मी ने बात शुरू की। मां ने मरे मन से कहा, "चलो देखो, ये नौकर तो नौकर क्या होते हैं, इनकी चाकरी पहले करनी पड़ती है। तुम कहती थीं न, कि नौकर बड़ा कुछ कर डालेगा, पर हम तो जानती हैं, कि नौकर के साथ मालिक को नौकर बनना पड़ता है। अब देखो, जरा नहीं बताया, तो कम्मखत ने लौकी के कितने नन्हे-नन्हे टुकड़े कर डाले हैं और कटहल, जिसके छोटे करने थे, उसके ये हव्वाड़े करके रखे हैं।"

निम्मी बुदबुदाकर बोली, "मां, तुम्हें तो कभी-भी संतुष्टि नहीं होगी, चाहे तुम्हें चार नौकर दे दिये जाएं।"

"हां भइया, हमसे नहीं संभलता तुम्हारा कारोबार, एक नौकर से जूझना मुश्किल पड़ रहा है, चार होएंगे तो हमारा तो दिमाग पलेंदा ही हो जाएगा। अब हमारी यह पानी की लुटिया अलग-थलग रखी थी, इसमें से पानी ले लिया कम्मखत ने और तिसमें तुर्रा ये, कि आटा माड़ने

से पहले हाथ धोये नहीं। बोलो, हमारा पानी छूने की क्या पड़ी थी तुझे, दस-बारह तरह के पानी रखे हैं उनमें से ले लेता!"

"इन पानियों पर आप चिप्पी चिपका दो मां, कि कौन पानी किस काम के लिए इस्तेमाल होना है, तब तो ठीक पानी लिया जाएगा, वरना गड़बड़ ही होती रहेगी।"

बेटी के द्वारा नौकर का पक्ष लिये जाने पर मां और बड़बड़ायीं। यों काम चल रहा था और काम के साथ तकरार भी चल रही थी, फिर भी वाकयुद्ध की छांव में किसी तरह काम निबट ही गया। अपने नाती को जन्म दिलवाकर मां अपने घर चली गयीं। चलते हुए बोलीं, "हमारे भाग में यश नहीं बदा है, मर-मर के सेवा करेंगे सबकी, पर मजाल है, कोई धन्यवाद के दो शब्द उचार दे, अब अपने तलुओं के गड्ढे तो घर जा के ही दो-चार महीनों में भरेंगे।"

निम्मी और निम्मी के पति भानुप्रताप बहुत कुछ कहना चाहते थे, पर जब मां ने अपने गुणों का इतना बखान खुद ही कर डाला, तो दूसरी तरफ से कुछ कहने की गुंजायश ही नहीं रह गयी थी।

मां के चले जाने पर निम्मी और भानुप्रताप ने चैन की सांस ली और शायद नौकर ने भी। पर मां की कुछ दिन की अनुपस्थिति ने निम्मी के मन में उनके प्रति कुछ-कुछ फिर पिघला दिया।

तीन महीने गुजरते देर नहीं लगी और मां को बुलाने की जरूरत फिर महसूस होने लगी।

"मैं कहता हूं, छोड़ो नामकरण-संस्कार हो जाएगा कभी।" भानुप्रताप ने अपनी सलाह दी।

"पर पंडिज्जी का कहना है, कि एक सौ एक दिन के भीतर-ही-भीतर यह संस्कार जरूर हो जाना चाहिए। संस्कारों का भी प्रभाव पड़ता है आखिर।"

"तो एक बात कहूंगा मैं, पंडिज्जी को बुलाना, पर अपनी मां को मत बुलाना।"

"क्यों ऽऽ!!" खुद चाहे निम्मी मां से कितनी भी त्रस्त हो, पर मां के बारे में कोई भी दूसरा ऐंडा-बेंडा कहे, तो उसे अच्छा नहीं लगता था।

"तुम उस दिन कह रही थीं, मां को कम-से-कम तकलीफ देना चाहिए।" भानुप्रताप ने बात पलट दी।

"तो ऐसा करते हैं, कि मां को तब बुलायेंगे, जब पूरी तैयारी हो जाएगी।"

"और आराम करें, यह इरादा ठीक है। हलवाई बुलवा लो, वह सब कुछ बनाकर डाल देगा।"

ऐसा ही किया गया, हलवाई ने सब काम किया, उसे उसकी मांग के मुताबिक सामान मुहैया कर दिया गया। वह अपने साथ एक सहायक भी लाया था, घरवालों को कुछ करने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

निम्मी के माता-पिता निमंत्रण के अनुसार ऐन मौके पर आकर खड़े हुए, तो निम्मी आह्लादित हो उठी, "मांऽऽ!!"

मां को देखकर वह उनके गले से झूल गयी, जैसे बरसों बाद मिल रही हो।

"अरी ये कैसा बुलावा होता है, इतना बड़ा कारज हो रहा है, और दामाद रात को गये और सबेरे आने को कहकर चले आये। ये तो हमी बेसरम थे जो——"

"मां, हम आपको 'सरप्राइज' देना चाहते थे, देखिए इतना बड़ा काम बिना आपको तकलीफ दिये ही हो गया। और जो कुछ काम था, वह मुहल्ले-पड़ोस-वालों ने संभाल लिया।"

"खाक संभाल लिया, हलवाई ने जो ऊने के दूने खर्च करवाये होंगे, उसका हिसाब लगाया ?"

मेहमान आने शुरू हो गये थे, निम्मी ने मां को रोक दिया, "मां, अभी नहीं। तुम बैठो, रौनक देखो।" मां ने साथ लाया हुआ सामान थाल में लगाकर बीच में रख दिया और खुद मेहमान सरीखी बनकर औरतों के बीच में बैठ गयीं। यज्ञ-संस्कार हुआ, पर उन्होंने उसमें कोई दखल नहीं दिया, अपना-सा मुंह लिये बैठी रहीं।

समारोह समाप्त हो जाने पर वे फिर बिफर पड़ीं—

"इत्ता बड़ा जज्ञ रचा लिया, बिना मां-बाप को सुराग दिये ?"

"मां, अच्छा यह बताइए, आपको अच्छा नहीं लगा? कित्ती बड़ी पार्टी हो गयी, सब खुश-खुश गये, संगीत-पार्टी ने भी कैसा रंग जमाया और आपको कुछ करना भी नहीं पड़ा।"

"हम करने के लिए ही मरते हैं न, तुम यही तो समझी हो न !"

"मां, आप जन्म-जिंदगी खपती रही हैं, कभी तो आप शांति से बैठें और अगर करने का ही शौक है, तो करो न अब, आप कहतीं थीं, अगाड़ी से पिछाड़ी भारी होती है।"

"अब तुम्हीं करती रहो अगाड़ी-पिछाड़ी, इस बार अपने आप संभाला है, तो आगे के कारज भी खुद ही संभाल लेना ऐसे ही, खबरदार जो मुझे कभी बुलाया तो—!" मां ने बेटे को रिक्शा लाने का आदेश दिया,

"जा रिक्शा ले आ, मैं तो अपने घर जाऊं, देख लिया यहां का तौर-तरीका...।" सहमा हुआ बच्चा रिक्शा ले आया, निम्मी के पिता और पति ने बहुत रोका, पर मां रिक्शे पर बैठकर चली गयी थीं। चलते हुए उन्होंने फिर सुनाया,

"अब न बुलाइयो मुझे अपने किसी ठिक-टहले और किसी कारज में, समझीं।"

निम्मी, भानुप्रताप और परिवार के सभी जन हक्के-बक्के देख रहे थे। लगता था, मां लड़ने और अपनी बात ही कहने के लिए आयी थीं, क्योंकि उन्होंने खान-पान को भी हाथ नहीं लगाया था, पर निम्मी जानती थी, मां की 'नहीं' का मतलब क्या था।

३१६ भगवान नगर, देहरादून

हिटलर के बंकर से एक मील दूर बम-वर्षा में ध्वस्त एक भवन की मंजिल में सात तिब्बती भिक्षुओं के शव . . . ! उन्हें हिटलर ने क्यों निमंत्रित किया था जरमनी में ?

जमीन के नीचे भी दुनिया है

● जॉन इवांस

सन १९४५, रूसी सेना जरमन भूमि को रौंदती हुई बरलिन की ओर बढ़ रही थी कि उसके सैनिकों ने आंखें चौंधिया देनेवाला एक चमत्कार देखा । ऐसा अनुभव उन्हें पूरे युद्धकाल में इससे पहले कहीं नहीं हुआ था । हिटलर के बंकर से लगभग एक मील दूर, बम-वर्षा से ध्वस्त एक भवन की निचली मंजिल पर छह व्यक्तियों के शव, गोल घेरा बनाते हुए पड़े थे ।

दहशत पैदा कर देनेवाली इस मृत्युमाला के बीच एक सातवें व्यक्ति का शव था । उसने हरे रंग के दस्ताने पहन रखे थे और हाथ प्रार्थना की मुद्रा में जोड़े हुए थे ।

ये सातों भिक्षु थे । इनमें से किसी के भी शरीर पर घाव का कोई निशान दिखायी नहीं दे रहा था । लाल सैनिकों ने इसे समाधि लगाकर प्राण त्याग देने का मामला माना ।

बहुत-से प्रमुख नाजियों ने अपनी हार को सुनिश्चित जानकर आत्महत्या कर ली थी, लेकिन ये मृतक, जरमनवासी नहीं वरन, तिब्बती भिक्षु थे । बरलिन पर कब्जे के दौरान रूसी सेना को समान स्थितियों में पड़े और कई भिक्षुओं के शव मिले । ये पवित्र आत्माएं हिटलर-शासित जरमनी में क्या कर रही थीं ?... इस प्रश्न का उत्तर यह है कि फ्यूहरर हिटलर अत्यधिक अंधविश्वासी था । वह पृथ्वी-तल के नीचे एक अन्य जगत के अस्तित्व में विश्वास करता था । उसे आशा थी कि तिब्बतवासी उसे इस नवीन जगत तक ले जा सकते हैं ।

हिटलर की इस धारणा का आधार बुलवर लिटन नाम के एक अंगरेज द्वारा लिखित एक पुस्तक थी, जिसने १८७१ में भविष्यवाणी की थी कि एशिया के पर्वतों और रेगिस्तानी क्षेत्रों के नीचे से श्रेष्ठतर आर्य नस्ल का उद्भव होगा ! लिटन ने इसे 'आगामी नस्ल' बताया ।

उसने कहा, 'यह नस्ल, मानव-सभ्यता से बहुत उन्नत है और सुरंगों व भूमिगत गुफाओं में रहती है। एक दिन यह भूमिगत संसार से निकलकर पृथ्वी पर अधिकार कर लेगी।'

सनक

लिटन के अधिकांश समकालीन उसे सनकी मानते थे। हिटलर ने, जो कि स्वयं भी सनकी कहा जाता था, उसकी बातों पर पूरा-पूरा विश्वास कर लिया।

लिटन के लेखों ने इस युद्ध-पिपासु नाजी शासक पर इतना गहरा असर जमा लिया था कि जिस समय जरमनी भीषण खतरे में पड़ा और उसके नगरों पर बम बरसने लगे, तब भी उसने सुरंगों में खोजी दस्तों को भेजकर तिब्बती भिक्षुओं द्वारा बताये गये रास्ते के अनुसार 'नये उन्नत मानव' की खोज जारी रखने के निर्देश दिये थे।

एलिस मेक्लेलन की नयी असाधारण पुस्तक 'विस्मृत लोक : अगार्थी' (प्रकाशित सोवेनियर प्रेस, मूल्य ६. ९५ पौंड) के अनुसार इस अभियान की हर असफलता, हिटलर की सनक और भी बढ़ा देती थी।

मेक्लेलन के अनुसार उस समय, संयोगवश एक महत्त्वपूर्ण खोज कर ली गयी थी। लेकिन यह खोज करनेवाले जरमन न होकर स्लोवाक मुक्ति-योद्धा थे। इस खोज को करनेवालों में एक डॉ. अंतोनिन होराक थे। उन्होंने बाद में बताया कि मुक्ति-संघर्ष के दौरान उन्हें

हिटलर
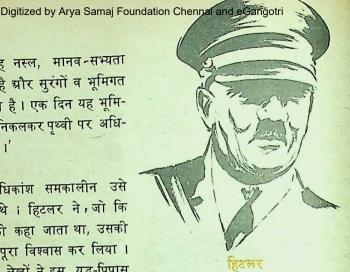
अपने दो साथियों समेत एक भूमिगत सुरंग में शरण लेनी पड़ी।

प्रेतग्रस्त गुफा

डॉ. होराक के अनुसार एक दयालु किसान ने उन्हें गुफा में जाने से मना किया था और चेतावनी दी थी कि गुफा प्रेतग्रस्त है। किसान ने यह भी कहा था कि अधिक दूर जाने पर इसमें जगह-जगह गहरे खड्ड हैं और विषैली गैसें भरी हैं।

होराक वैज्ञानिक थे। उन्होंने किसान की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया और साथियों समेत गुफा में शरण ले ली।

होराक के विवरण के अनुसार : 'टार्चों की रोशनी में मैंने देखा कि गुफा गोलाकार, सीधी और विस्तृत थी। वह चट्टानी दीवारों से निर्मित थी। गुफा का फर्श ठोस चूने का बना था।' स्पष्टतः यह गुफा मानव-निर्मित थी। डॉ० होराक ने उससे कुछ नमूने लेने का निर्णय किया।

उन्होंने गुफा की दीवारों पर, फर्श

पर कुल्हाड़ी चलायी, लेकिन एक छेपटी तक नहीं उतार सके। अंततः उन्होंने पिस्तौल दागी। परिणाम न केवल किंकर्त्तव्यविमूढ़ वरन निराश कर देनेवाला ही निकला। गोली दीवार से बहराकर देनेवाले शोर के साथ टकरायी। चिंगारियां छिटकीं और गुफा भीषण गर्जन से गूंजने लगी। लेकिन इस बार भी दीवार से कोई छेपटी नहीं गिरी।

हारकर डॉ० होराक आग तापने बैठ गये और सोचने लगे, 'यह गुफा किसने बनायी थी? और क्यों बनायी थी?' डॉ० होराक फिर कभी उस स्थान पर नहीं लौटे और न ही तब से आज तक कोई अन्य ही वहां पहुंचा है।

प्रवेशद्वार

इन बातों में कोई सत्यता हो या नहीं, लेकिन अवधारणा के अनुसार यदि अगार्थी-जैसा कोई स्थान वास्तव में है, तब उसके कई प्रवेश-द्वार होने चाहिए।

मेक्लेलन के कथनानुसार इन प्रवेश-द्वारों में से एक उत्तरी यार्कशायर क्षेत्र की अपर व्हार्फडेल पर्वत-श्रृंखला में भी हो सकता है। यदि हम इस पाताल-लोक को ढूंढ़ ही निकालें, तो क्या उसके वासियों की परवाह करेंगे?

पाताल-लोक के अस्तित्व का दावा करनेवाले जोर देकर कहते हैं कि उन्नत पातालवासी महामानव एक अनोखी शक्ति से युक्त हैं—जिसे सत्याभास की शक्ति कहा जाता है। यह शक्ति इतनी चमत्कारिक बतायी जाती है कि इससे युक्त प्राणी द्रव्य की अवहेलना कर सकता है और दृष्टिपात मात्र से किसी भी वस्तु का स्वामी हो सकता है।

यह भी एक विडंबना ही कही जाएगी कि भूमिगत मानव के अस्तित्व के विश्वासी हिटलर के भाग्य में भूमिगत बंकर में मरना लिखा था।

प्रस्तुति : कुमार अनुपम

सुनहरा सबेरा

'गोल्डन डॉन' यानी 'सुनहरा सबेरा'--यह एक ऐसी पुस्तक का नाम है, जिसमें जादुई पूजा के विधि-विधान दिये गये हैं। यह पुस्तक 'जेड टू' भी कहलाती है। हक्सले ने कहा था कि इन विधि-विधानों के कारण दार्शनिक उछलकूद करने लगेंगे। हिटलर ने भी इन तरीकों का इस्तेमाल कर अपने अनुयायियों की भावनाएं उभारी थीं।

इस पुस्तक में वर्णित अनेक तरीकों में से एक--

जादू जगानेवाला व्यक्ति रंग-बिरंगे ज्यामितीय आकारों और ऐसी अन्य वस्तुओं के मध्य खड़ा हो जाता है। इन्हें वह विभिन्न मंत्रों द्वारा आह्वान किये जानेवाले देवता से संबद्ध मानता है। उसके चारों ओर सुगंधित अगरबत्तियां जलती रहती हैं। धीरे-धीरे वह अपने शरीर को हिलाता है और देवता का आह्वान करने के लिए बर्बरतासूचक शब्दों का प्रयोग करता है। कुछ समय बाद उसके शरीर में 'देवता' आ जाता है।

इस विधि को मैकग्रेगोर मैथस और एलिस्टर क्रावले नामक जादूगरों ने अपनाया था। आज भी पश्चिम के जादूगर इस विधि को अपनाते हैं।

युद्ध का एक दृश्य

सिंधिया के तोपची लोहे के आदमी हैं

● बाला दुबे

सन १८०३!
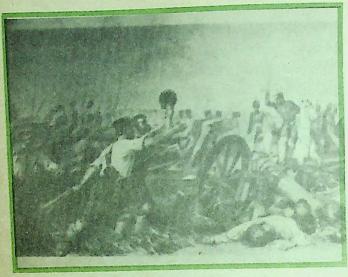
फुट गार्डस् का मंजा हुआ अफसर जनरल लार्ड लेक, कमांडर-इन-चीफ माथे से पसीना पोछता हुआ आगरे की तरफ लपक रहा था। भारतवासियों को अंगरेजों की विजय का सूत्र हाथ लग चुका था। उनकी युद्ध-पद्धति भारत की सेना से कहीं अच्छी थी। तभी जगह-जगह फ्रांसीसी सेनाशास्त्री भारतीय सेना को नयी पद्धति के सांचे में ढालने के लिए जाने लगे। भारतीय सैनिक हेठे नहीं थे, उनके निर्देशक हेठे थे। दौलतराव सिंधिया ने अपनी सेना का कायाकल्प फ्रांसीसी जनरल डि बोइन और पैरों से कराया था। डि बोइन ही सिंधिया के सैनिकों का द्रोणाचार्य था। उसके परामर्श के अनुसार ही इस सेना में अधिकतर सैनिक अवध, रोहिलखंड और दोआब से रखे गये थे। सिंधिया के तोपचियों ने एक प्रतिष्ठा बना ली थी। वह मरते भी थे, तो अपनी तोपों के साये में। फ्रांसीसियों ने सेना को अद्भुत युद्ध-दीक्षा दी थी। वह मरना-मारना सीख गयी थी। रणक्षेत्र में जो भी गिरता, उसके सीने पर छेद पाये जाते, पीठ पर नहीं।

जब जनरल लेक अलीगढ़ और दिल्ली के मुहासिरे जीतता हुआ आगरे की ओर बढ़ा, तब तक उसके मुखबिरों ने सिंधिया की सेना का सही चित्रण करके बतला दिया था, सिंधिया के तोपची लोहे के आदमी हैं,

साहब। वे अपनी तोप को इतना प्यार करते हैं कि मारते समय भी उनकी बाहें तोपों के गले में लिपटी हुई मिलती हैं।'

लेक चकित होकर सुनता रहा। उसने आंख बंद करके जायजा लिया। 'सिंधिया के तोपखाने को काबू में करना होगा। बस, युद्ध-मंत्र यही है। इस मंत्र को सिद्ध करना होगा। और यह सिद्धि मुझे प्राप्त कराएगी मेरी घुड़सवार सेना।'

लेक ने युद्ध-शतरंज के मोहरे बैठाने शुरू कर दिये थे। जब भी वह अकेला बैठा होता, उसकी आंखों के सामने सिंधिया का तोपखाना घूम जाता। उसके भाग्य का सितारा इसी तोपखाने के ऊपर एक कच्ची डोर से बंधा लटक रहा था।

ड्रुडनेक सात बटालियन लेकर दक्षिण से चला और बोरक्विन की तीनों बटालियन से मिलाप करके जम गया। अब सिंधिया की सेना में १२ सुदृढ़ बटालियनें जमा हो चुकी थीं—यानी करीब नौ हजार सिद्धहस्त लड़ाकू। इसके अतिरिक्त सिंधिया की जानी-मानी तोपें भी सजी हुई खड़ी थीं, जिनकी रक्षा के लिए डेढ़ हजार सजीले घुड़सवार युद्ध-संकल्प किये बेचैन खड़े थे। तभी न जाने कौन-सी मजबूरी ने ड्रुडनेक को अंगरेजों के आगे हथियार डालने को प्रेरित कर दिया। इस बात का लाभ उठाते ही लार्ड लेक इस सेना को अपनी झोली में डालने को बेचैन होकर आगरे की ओर लपक रहा था।

पहली नवंबर, १८०३ को आगरे से तीस मील दूर लसवाड़ी नामक गांव पर मरहठा सेना जनरल लेक का रक्त और आग से स्वागत करने जम गयी। सेना का हृदय-केंद्र उसका तोपखाना था। सिंधिया के मस्तक का विजय-टीका भी उसका यही तोपखाना था। जब सेना ने तोपों की लड़ी सजायी, तब तोपचियों के चेहरों पर गर्व दमक रहा था। उन्होंने युद्ध की प्रचंड आंधी को सीने पर थामने का दृढ़ संकल्प किया था। तोपों के पहियों को लोहे की भारी जंजीरों से बांध दिया था। एक मकड़ी के जाले-सा लगने लगा था सिंधिया का तोपखाना! तोपची बैरागी की भांति जीवन-मोह को त्यागे जनरल लेक की प्रतीक्षा कर रहे थे। दूर से मराठी

लार्ड लेक को घोड़ा सौंपते हुए मेजर लेक

सेना चीटियों की विशाल कतार-सी दिखायी देती—उनकी दांयी करवट लस-वाड़ी गांव के गहरे नाले पर टिकी थी और बांयी करवट मालपुर गांव के सहारे। और हाथी-घास में घात लगाये चीते की भांति लोहे की भारी जंजीरों से जकड़ी पिचत्तर पीतल की तोपें खड़ी थीं, सुरसा-जैसा मुंह फाड़े, आग और मृत्यु उगलने को तत्पर।

जनरल लेक अपनी घुड़सवार सेना लेकर आ पहुंचा था, पर उसकी पैदल सेना

'क्या कर रहे हो जनरल लेक! अपने गिरते हुए बेटे को देखकर अधीर हो रहे हो। उधर नहीं देख रहे हो उधर। ७६ वीं रेजीमेंट के तुम्हारे सैकड़ों बेटे गिरते जा रहे हैं।...'

काफी पिछड़ गयी थी। लेक ने शीघ्र ही जायजा लेकर आक्रमण करने का विचार कर लिया। पर उसकी पैदल सेना अभी तक उसके पास पहुंच नहीं पायी थी। लेक ने युद्ध का उसूल तोड़ते हुए कर्नल मैकन की घुड़सवार सेना को मरहठों पर झोंक दिया। हाथी-घास के परदे में छुपी तोपें जब अग्निवमन करते हुए गरजीं, तब घुड़सवार सेना मिट्टी के खिलौने की भांति टूट गयी।

पंख टूटे पक्षी की भांति लेक एक टीले पर बैठे अपनी पैदल सेना की प्रतीक्षा करने लगा। ग्यारह बजे के करीब उसकी थकी-मांदी पैदल सेना जीभ लटकाती हुई आ गयी। लेक ने उन्हें सुस्ताने के लिए बहुत कम समय दिया था। मराठी सेना ने हाल ही में उसकी घुड़सवार सेना को भमोड़ खाया था। एक तिहाई के लगभग घुड़सवार नाकाम हो गये। इसके अतिरिक्त पहले से ही मराठी सेना पीछे हटने की अवस्था में पहुंच चुकी थी। लसवाड़ी और मालपुर के पास तो उसने अपने पंजे जमीन में इस कारण गाड़ दिये थे कि लेक की थकी-मांदी सेना को वो तितर-बितर कर सके। पर सिंधिया का भी यह दुर्भाग्य कदाचित विधना का विधान ही था, जो उसकी सेना का संचालन करनेवाले विदेशी युद्ध-निर्देशकों में से एक भी इस समय वहां उपस्थित नहीं था। इसका भी एक विशेष कारण था। जनरल लेक ने सिंधिया के विदेशी अफसरों को फोड़ने का प्रयत्न किया था और उसके भाग्य से उस समय सिंधिया के फ्रांसीसी जनरल पैरों का विश्वास उखड़ने लगा था। दौलत राव सिंधिया के दरबार का सामंत अंबाजी इंगलिया पैरों का शत्रु बन बैठा था। वह पैरों की जागीर छीनने का षडयंत्र कर रहा था। ऐसी स्थिति में जनरल लेक की ओर से बढ़ता हाथ देखकर पैरों का मन डांवाडोल होने लगा था। उधर हाल ही में अलीगढ़ में मराठा पैदल सेना के गुरु लुई बोरक्विन ने युद्ध हारकर आत्म-समर्पण कर दिया था। जनरल लेक अपनी पैदल सेना को बटोरकर आक्रमण की रूपरेखा बना रहा था। उसके पास ७६वीं अंगरेज रेजीमेंट और छह हिंदुस्तानी सिपाहियों की बटालियनें थीं। घुड़सवारों

के तीन ब्रिगेड में से एक ब्रिगेड को उसकी पैदल सेना की सहायता देनी थी, दूसरा शत्रु के दायीं ओर चौकसी और दबाव के लिए तैनात किया गया। तीसरा रिजर्व में रखा गया कि जब मराठी दल में खलबली पैदा हो, तभी वह आक्रमण कर दे। लेक ने अपना पूरा तोपखाना चार बैटरी में बांट-कर पैदल सेना के आक्रमण की सहायता के लिए दे दिया।

बिल्ली की चाल से जनरल लेक अपनी पैदल शक्ति को लेकर नाले-नाले होता हुआ चला। ऊंची घास के कारण कुछ देर तक उसकी आमद को मराठे नहीं देख सके। जैसे ही सिंधिया के तोपचियों ने अंगरेजों को बढ़ते देखा, वे अपनी तोपों पर जम गये।

उस समय ७६वीं अंगरेज रेजीमेंट आंधी के वेग से बढ़ रही थी। जैसी कि जनरल लेक की आदत थी, वह सबसे आगे अपने घोड़े पर तलवार निकाले अलग ही दमक रहा था। मराठे तोपचियों ने 'हर-हर महादेव' का नारा लगाया और उनकी तोपें डकारने लगीं। दूर से उनके मुंह से लाल-पीली जुबान वातावरण में लपलपाती हुई नजर आती। ७६वीं अंगरेज रेजीमेंट छलनी हो गयी। गोरे चकरघिन्नी खाकर धराशायी होने लगे। लेक ने अपने तोपखाने को जवाब देने का आदेश दे दिया था, पर सिंधिया की तोपें उसकी तोपों से कहीं श्रेष्ठ थीं। और, उन तोपों के रखवाले साक्षात विकराल भैरव-से लग रहे थे। लेक बदहवास-सा

लार्ड लेक

हो गया था। उसकी चहेती पल्टन—हिज मैजेस्टीज ७६वीं रेजीमेंट उसकी आंखों के सामने तहस-नहस हो रही थी।

७६वीं रेजीमेंट को बचाना होगा। हिज मेजेस्टी की रेजीमेंट को बचाना होगा। तभी लेक की निगाह १२वीं और १६वीं बंगाल नेटिव इनफ्रेंट्री पर फिसली। उसने पलभर में अपनी चील-जैसी दृष्टि से इधर-उधर देखा और निर्णय कर डाला, 'तत्काल ही १२ वीं और १६वीं नेटिव इनफ्रेंट्री को ७६ वीं रेजीमेंट की सहायता करने के लिए बढ़ाना होगा।'

यह शिव-संकल्प किये हुए लेक ने अपना घोड़ा मोड़ा और तभी सनसनाती

हुई एक गोली उसके घोड़े के सीने में धंस गयी। गिरते हुए घोड़े के साथ लेक भी जमीन पर गिर पड़ा। उसे गिरते हुए उसी के पुत्र मेजर लेक ने देखा। वह बिजली की भांति उलझे हुए युद्ध-जाल से निकलकर आया और अपना घोड़ा अपने पिता को देते हुए बोला, "सर, आपकी आवश्यकता मेरी आवश्यकता से कहीं ज्यादा है।" लेक ने भरे युद्ध में अपने बेटे को धन्यवाद दिया और उसके घोड़े पर बैठ गया। तभी शायद प्रकृति ने लेक के धैर्य को परखने का वह नाटक रचा था। मेजर लेक अपने पिता को घोड़ा देकर मुसकरा रहा था कि सहसा किसी सिंधिया के सैनिक ने उस पर हमला किया। जनरल लेक ने अपने बेटे मेजर जार्ज लेक को गंभीर रूप से घायल हो गिरते देखा। एक बार जनरल लेक को लगा कि वह इस भीषण युद्ध में जनरल के अतिरिक्त एक पिता भी है। उसके कलेजे का टुकड़ा उसी की आंखों के आगे कराहकर गिर पड़ा। जनरल लेक को सहसा आभास हुआ कि वह कितना कमजोर होता जा रहा है।

कमजोर पिता लेक को सहसा जनरल लेक ने झकझोरा, 'क्या कर रहे हो जनरल लेक ? अपने गिरते हुए बेटे को देखकर अधीर हो रहे हो। उधर नहीं देख रहे हो—उधर। ७६वीं रेजीमेंट के तुम्हारे सैकड़ों बेटे गिरते जा रहे हैं।' जनरल लेक ने तभी अपनी नजर मेजर लेक से हटा ली और वह घोड़े को सरपट भगाकर १३वीं और १६वीं नेटिव इनफ़ेंट्री को लेने चल पड़ा।

दोनों नेटिव इनफ़ेंट्री बटालियनों के आगे-आगे जनरल लेक तलवार निकाले साक्षात परशुराम-जैसा लग रहा था। उसका स्वागत करने सिंधिया की तोपें मृत्यु की माला लिये प्रतीक्षा करने लगीं। बड़ी भीषण मार थी उन क्रुद्ध तोपों की। उन्होंने अब 'कैनिस्टर शॉट' भरकर मारने आरंभ कर दिये थे। युद्ध-स्थल में खून के फौव्वारे छूटने लगे। लेक ने स्थिति को देखकर २९वीं ड्रेगून्स को भिड़ जाने का आदेश दिया।

काश कि मराठा घुड़सवारों ने जी-जान से आक्रमण किया होता। उनके वेग को 'ड्रेगून्स' ने थाम लिया।

यह युद्ध सुबह से चल रहा था। उस समय कोई साढ़े तीन बजे होंगे।

जनरल लेक ने अब अपना सर्वस्व स्वाहा करने का संकल्प कर डाला। उसके घुड़सवार बाढ़ के पानी की भांति सिंधिया के तोपखाने पर टूट पड़े। पर क्या वे तोपों को डिगा सकते थे ? सिंधिया की तमतमाती पिचत्तर तोपें एक-दूसरे के पहिये से जकड़ी खड़ी थीं। उनके तोपची सर पर कफन बांधकर लड़ रहे थे। लेक ने बहुत पास आकर सिंधिया के तोपचियों का अद्भुत पराक्रम देखा। उसके मुंह से अनायास ही निकल गया, "तुम धन्य हो हमारे वीर शत्रु !" जकड़ा हुआ तोपखाना

चारों तरफ से घिर गया था। हरेक तोपची अपनी तोप की रक्षा इस प्रकार कर रहा था—मानो वह तोप उसका निजी किला हो। जो भी सिंधिया का तोपची वीर-गति को प्राप्त हुआ, उसकी मुट्ठी में तलवार कसी हुई थी। करीब दो हजार सैनिक घिरकर कैदी बना लिये गये।

चार बजे युद्ध का निबटारा हो चुका था। जनरल लेक हर्ष से पागल-सा सिंधिया के तोपचियों के पास गया। उनकी पीठ थपथपाता हुआ वह निष्पक्ष भाव से बोला, "मैं समझता था कि तोप को संभालना केवल हम अंगरेज ही जानते हैं। आज मेरा भ्रम टूट गया। जिस प्रकार तुमने अपनी तोपों की रक्षा के लिए दृढ़ वीरता दिखायी है, उसकी मैं सराहना करता हूं।"

यह कहकर उसने सिंधिया के तोपचियों के सामने अपना टोप उठाया और सर झुका दिया। फिर बड़े आवेश में भरकर वह बोला, "मैं तुम्हारे साथ जबरदस्ती नहीं कर रहा हूं। पर मेरी प्रार्थना है कि तुम मेरे तोपखाने में आकर मुझे सहारा दो।"

उसी क्षण जनरल लेक ने सिंधिया के बचे हुए तोपचियों को अपने तोपखाने में उनकी मरजी से 'एनलिस्ट' कर लिया।

लसवाड़ी का युद्ध एक प्रलय-जैसा हुआ था। ७०० अंगरेज धराशायी हुए थे, करीब ७००० सिंधिया के वीर सैनिक खेत रहे थे। जब विजयी लेक को उसकी सेना ने बधाई दी, तब लेक ने अपना टोप उतारकर उनकी बधाई को स्वीकार करते हुए वीर-गति पानेवाले सिंधिया के तोपचियों की ओर संकेत करके कहा, "मृत्यु का तिरस्कार करना सीखो! जैसे इन बहादुरों ने किया है।"

युद्ध में गिरे हुए वीरों का जब जायजा लिया गया, तब जनरल लेक के पास कोई खबर लाया, "आपका बेटा मेजर लेक सिर्फ घायल हुआ है। उसका यथेष्ट उपचार हो रहा है।"

जनरल लेक ने शांति से इस समाचार को सुना। वह उद्वेलित नहीं हुआ। लार्ड वैल्जली ने जब लेक से पूछा, "जनरल, तुमने अपने बेटे को गिरते हुए देखा, तब क्या तुम्हारा दिल हिला नहीं था?"

जनरल ने उत्तर दिया, "हां, उसे गिरते हुए देखकर मैं एक क्षण को सकते में आ गया था। पर फिर मुझे खयाल आया कि मेरे सैकड़ों बेटे संकट में घिरे हुए हैं। मैंने उस अवस्था में इस एक बेटे को छोड़कर आगे बढ़ना ही ठीक समझा।"

—एफ ४८ ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली, ११००१६

अंगरेज राजघराने ने अभी तक सिर्फ एक विज्ञापन, अखबार में छपवाया है। १६६० में राजा चार्ल्स द्वितीय ने अपने खोये हुए कुत्ते को वापस करने के लिए यह विज्ञापन दिया था और उसके बाद आज तक राजघराने की ओर से और कोई विज्ञापन कहीं नहीं छपा है।

गोपालसिंह गहमरी—हिंदी उपन्यास साहित्य के 'आर्थर कानन डायल'—बहुत कम लोग जानते हैं कि १८८२ से १९१० तक गहमरीजी ने महाराजपुर (आज का मंडला) में रहकर उपन्यासों की रचना की। उपन्यासकार के जीवन के इसी पक्ष पर प्रकाश।

वे हिंदी के 'कानन डायल' थे

● डॉ. राजकुमार उपाध्याय

हिंदी साहित्य के प्रारंभिक उपन्यासकारों में श्री गोपालरामजी गहमरी का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने हिंदी साहित्य को दो सौ से अधिक उपन्यास प्रदान किये, जिनमें से अधिकतर उपन्यासों को जासूसी उपन्यासों की श्रेणी में रखा जाता है। उपन्यास की प्रारंभिक विधा का शुभारंभ जब हो रहा था, तब से ही गहमरीजी ने उपन्यास-लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था, पर यह विडंबना है कि जो ख्याति दूसरे प्रारंभिक उपन्यासकारों को केवल एक या दो उपन्यासों के लिखने से प्राप्त हुई, उस विषय में गहमरीजी को वस्तुपरक, तथ्यपरक, और समयपरक, विशिष्टता के बावजूद वह स्थान न मिल सका। पर क्या इस विशिष्ट उपन्यासकार को भुलाया जा सकता है—नहीं, कभी नहीं!

मंडला से महाराजपुर जाने के लिए जब आप नावघाट से नर्मदा पार करने के लिए कुछ ऊंचाई पर खड़े होंगे, तब बायीं तरफ महाराजपुर में आपको एक बड़ा भवन दिखायी पड़ेगा। यही भवन या बाड़ा 'चौधरीजी के बाड़े' के नाम से प्रसिद्ध है। रायबहादुर मुन्नालाल चौधरी एवं रायबहादुर जगन्नाथ चौधरी का यही निवास स्थान रहा है।

रायबहादुर श्री मुन्नालालजी चौधरी सन १८८२ (अप्रैल-मई) में अपने एक रिश्तेदार के यहां गहमर गये। वहां पर उनसे गोपालराम नामक एक दीन-हीन बालक की मुलाकात उनके रिश्तेदार ने करवायी और उसे कहीं जीविकोपार्जन के लिए कोई कार्य देने की प्रार्थना की। उस बालक से प्रभावित होकर वे गोपालरामजी को अपने साथ महाराजपुर (मंडला) ले आये। ऐसा माना जाता है कि गोपालरामजी महाराजपुर आने के पहले मातृ-पितृ-विहीन हो चुके थे, क्योंकि अपने उपन्यास 'सास-पतोहू' (१८९९) में उन्होंने यह स्वीकार किया है

मंडला (महाराजपुर) में स्थित रायबहादुर जगन्नाथ चौधरी का बाड़ा, जहां रहकर गहमरीजी ने अनेक उपन्यासों की रचना की।

"बड़े लोगों के मुख से बेटा या बेटी शब्द सुनते कैसा मीठा लगता है ?—हा ! परमेश्वर हम सरीखे अभागों को, जिनके बाप छह-सात महीने की अवस्था में छोड़कर, जगत को लात मारकर सुरपुर जा बसे, स्नेह और प्यारभरा 'बेटा' शब्द का सुख कहां नसीब हो ?"

बंगला उपन्यासों का अनुवाद

गहमरीजी का कार्य महाराजपुर में उनके लड़के जगन्नाथ चौधरी को पढ़ाना था और मुन्नालालजी के कार्य में सहयोग करना था। महाराजपुर में ही रहकर उन्होंने बंगला उपन्यासों का अनुवाद-कार्य प्रारंभ कर दिया था। चौधरीजी के यहां के रिकार्ड में अभी भी उनके द्वारा किया हुआ पत्र-व्यवहार, अनुवाद-कार्य संबंधी लेखा-जोखा मौजूद है। चौधरी-परिवार के गहमरीजी एक अभिन्न अंग बन चुके थे। चौधरी मुन्नालालजी के साथ गहमरीजी ने संपूर्ण मंडला जिले का दौरा भी किया था। उनके प्रारंभिक उपन्यासों में इस जिले के अनेक स्थलों से संबंधित कथानक प्राप्त होते हैं। मंडला जिले की भौगोलिक स्थिति का वातावरण के रूप में उन्होंने प्रयोग किया है। मधुपुरी के चोर डाकू, सफेद डाकू, रामनगर के करिया पहाड़ से संबंधित कथानक उनके अनेक उपन्यासों के आधार बने हैं। यहीं पर रहते हुए केहरपुर निवासी पंडित बालमुकुंद पुरोहित से उनका परिचय हुआ।

पुरोहितजी उस समय सागर में तहसीलदार थे। गहमरीजी ने अपना उपन्यास 'सास-पतोहू' पुरोहितजी को ही समर्पित किया है। महाराजपुर (मंडला) में रहते हुए उन्होंने 'शोणित चक्र', 'घटना-घटाटोप', 'माधवी कंकण' नामक उपन्यासों की रचना की। इसी समय मंडला (महाराजपुर) में 'कंठ कोकिला' नामक साहित्यिक संस्था का गठन किया गया, जिसमें बाबू जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, पं.

लोचन प्रसाद पांडेय, पं. रेवाशंकर चौबे, गोपाल कवि, सेठ भद्देलालजी अग्रवाल चौधरी, जगन्नाथ प्रसाद और गोपालरामजी गहमरी प्रमुख सदस्य थे । गहमरीजी द्वारा अनेक नाटक भी अनूदित किये गये, जिसमें 'विद्याविनोद' (१८९२), 'देश-दशा' (१८९२), 'यौवन योगिनी' (१८९३), 'दादा और मैं' (१८९३), 'चित्रांगदा' (१८९५), 'वभ्रुवाहन', 'जैसे को तैसा' आदि प्रमुख हैं। सामाजिक उपन्यासों में 'चतुर चंचला' (१८९३), 'भानुमति' (१८९४), 'नये बाबू', 'नेमा', 'सास-पतोहू', 'बड़ा भाई', 'देवरानी-जेठानी', 'दो बहन', 'तीन पतोहू', 'गृह-लक्ष्मी', 'ठन-ठन गोपाल' आदि उपन्यासों ने विशेष प्रसिद्धि पायी । गहमरीजी ने अपने उपन्यास राय बहादुर जगन्नाथ चौधरी को भी समर्पित किये हैं।

पांडुलिपियों की खोज

श्री विश्वंभर नारायण द्विवेदी ने मुझे बताया कि चौधरी-परिवार गहमरीजो की पुरानी पांडुलिपियों की खोज में व्यस्त हैं। श्री गिरिजाशंकरजी अग्रवाल द्वारा यह जानकारी मिली कि अग्रवाल लायब्रेरी (नगरपालिका) में उनके अनेक उपन्यास और पांडुलिपियां संग्रहीत हैं, जिस पर एक नये शोध की आवश्यकता है। राय बहादुर जगन्नाथ चौधरी द्वारा लिखित 'हरिश्चंद्र' नाटक महाराजपुर में गहमरीजी के समय में ही खेला गया था। हिंदी इतिहास अब तक इस विषय में मौन था कि १८६६ ई. में जन्मे गहमरीजी का जीवन १८८२ तक कैसा था ? इस पर ही यह शोध प्रस्तुत किया जा रहा है। गहमरीजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे कवि, अनुवादक, उपन्यासकार, निबंधकार, नाटककार, कहानीकार के रूप में माने जाते हैं ।

बिहार विश्वविद्यालय ने गहमरीजी को उनकी कहानी 'माल गोदाम की चोरी' पर हिंदी साहित्य का प्रथम कहानीकार निरूपित किया है । डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने उन्हें हिंदी उपन्यास का 'कानन डायल' कहा है ।

--द्वारा श्री के. डी. उपाध्याय,
मकान नं. १०५, ओझा वार्ड, मंडला

१,८०० आदमियों के दो दस्ते गत १७ वर्षों से सुरंग खोदते हुए एक दूसरे की ओर बढ़ रहे हैं और संभवतः १९८३ के मध्य तक वे जमीन के नीचे आपस में मिल पाएंगे और उसी दिन वे जाम भी टकराएंगे--यह शर्त है !

यह दोनों दल, जापान के दो द्वीपों के बीच आपसी संबंध बढ़ाने के लिए पानी के नीचे से एक तैंतीस मील लंबी सुरंग खोद रहे हैं ।

बुद्धि-विलास

१. चार क्रमवार सम संख्याओं में पहली दो का जोड़ १४ तथा अंतिम दो का जोड़ २२ है। बताइए, अंतिम यानी चौथी संख्या कौन-सी है?

२. पृथ्वी पर किस जगह वर्षभर दिन और रात बराबर होते हैं?

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

क. ध्रुव-प्रदेश, ख. विषुवत-रेखा, ग. ० अंश देशांतर।

३. क. ललितादित्य (७२४-६० ई.) कहां का राजा था? ख. उसने किस प्रसिद्ध राजा को हराया था?

४. भारत के किस राष्ट्रपति को विभिन्न दलों के तीन प्रधानमंत्रियों के साथ काम करना पड़ा? प्रधानमंत्रियों के नाम भी बताइए?

५. फैक्टरी कानून (१९४८) में किस बात पर प्रतिबंध लगाया गया है?

६. मनुष्य के कान की श्रवणनलिका-अनुमानत: कितनी लंबी होती है?

७. दुनिया में चांदी का सबसे बड़ा बरतन कहां है?

८. किन व्यक्तियों ने और कब पहली बार उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों को पार करते हुए पृथ्वी की परिक्रमा की?

९. इंगलिश चैनल को कम से कम समय में तैर कर पार करने का अब तक का रिकॉर्ड क्या है, क. इंगलैंड से फ्रांस, ख. फ्रांस से इंगलैंड?

१०. अब तक कितनी महिलाओं ने अंतरिक्ष-उड़ानों में भाग लिया है?

११. बोइंग वायुयान द्वारा बिना रुके सबसे लंबी उड़ान का अब तक का रिकार्ड क्या है?

१२. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है?

इलाज मोतियाबिंद का

● डॉ. एम. एस. अग्रवाल

मोतियाबिंद--दृष्टि छीन लेने-वाला एक आम रोग। मोतिया-बिंद के उपचार के लिए अमरीका में एक नये यंत्र का आविष्कार किया गया है। लेकिन प्राकृतिक साधनों से भी मोतियाबिंद ठीक किया जा सकता है . . .

मनुष्य-जीवन में कुछ ऐसे रोग हो जाते हैं, जिनके कारण जीवन दुःख-मय हो जाता है। मोतियाबिंद एक ऐसा ही रोग है, जो मुख्यतः ४० वर्ष की आयु के बाद होता है और ५० से ६० वर्ष की आयु के बाद पक जाने पर ऑपरेशन के लायक बन जाता है। रोग के प्रारंभ होते ही दृष्टि-क्षीणता और धुंध-अवस्था में रोगी को काफी कम दिखायी देता है। ऐनक का प्रयोग रोगी को लाभप्रद नहीं होता।

रोग के लक्षण

१. नेत्र-दृष्टि में क्षीणता का अनुभव।
२. जिस समय कांच के मध्य भाग में सफेदी होती है, उस समय दृष्टि-क्षीणता अधिक अनुभव में आती है एवं तेज प्रकाश में व्यक्ति को बहुत कम दिखायी देता है।
३. कांच की परिधि में सफेदी होने पर रोगी को प्रकाश में अधिक कष्ट का अनु-भव नहीं होता।
४. रोगी के नेत्रों के सामने मक्खियां-सी उड़ना और कभी-कभी इनका स्थायी रूप ले लेना।
५. कभी-कभी एक वस्तु के स्थान पर दो या तीन या अधिक वस्तुओं का दीखना।
६. दूर-दृष्टि अधिक क्षीण होने पर प्रारं-भिक अवस्था में रोगी अपनी ऐनक ठीक रूप से प्रयोग में नहीं लाता है, या गलत नंबर की ऐनक प्रयोग में लाता है।

आज के युग में सेनाईल मोतिया-बिंद अधिक देखने में आता है। मानव की अधिक आयु होने पर कांच में सफेदी आने लगती है। वैज्ञानिक दृष्टि में प्रायः दोनों नेत्रों में एक साथ होता है, लेकिन कुछ लोगों में एक नेत्र में पहले और समय के साथ दूसरा नेत्र भी मोतियाबिंद से ग्रस्त हो जाता है।

प्रारंभिक अवस्था

शुरू में हलकी-हलकी धारियां कांच पर

पड़ने लगती हैं, जो कांच की परिधि से केंद्र-स्थल तक जाती हैं, समय के साथ यह धारियां परिवर्तित हो जाती हैं। ऑपथलमोस्कोप नामक नेत्र-यंत्र द्वारा परीक्षा करने पर यह धारियां कुछ हलका रंग लिये दिखती हैं। कुछ लोगों में केंद्र-स्थल पहले सफेदी ग्रहण कर लेता है और अन्य में परिधि का भाग पहले रोग-ग्रस्त हो जाता है। इस अवस्था में रोगी अच्छी तरह चल-फिर सकता है और घर के सभी कार्यों में कोई कठिनाई महसूस नहीं करता।

पकी अवस्था

कांच का सारा भाग कुछ फूल-सा जाता है या पूर्णरूप से सफेद दिखायी देता है। इसका रंग सफेदी में नीलापन लिये हुए होता है, कुछ रोगियों में सफेदी काफी अधिक चमक लिये होती है। पकी अवस्था में कांच का जल कम एवं कांच में कुछ झुकापन दिखायी देता है। अधिक पक जाने पर कांच काफी शिथिल एवं शक्ति-हीन हो जाता है, और सफेदी में कुछ मैलापन दिखायी देने लगता है।

चिकित्सा

इसके मुख्य दो उपचार हैं :१, प्राकृतिक, २. चीर-फाड़।

प्राकृतिक साधन

१. शुद्ध शहद प्रातः के समय नेत्रों में लगाकर सूर्य किरणों का सेवन नेत्र बंद करके लेना चाहिए (पांच मिनट)।

२. त्रिफले के जल या गुलाबजल से नेत्रों को धोना चाहिए।

३. जापान की केटेलीन नामक दवा का प्रयोग दिन में तीन या चार बार करना चाहिए। दवा के प्रयोग से पहले नेत्रों को अवश्य धोना चाहिए।

४. रोगी को विषय भोगों से दूर रहना चाहिए।

५. दिन में जितनी बार हो सके, नेत्र धोयें।

शल्य-चिकित्सा (चीर-फाड़)

आजकल के वैज्ञानिक युग में मोतियाबिंद के लिए स्मिथ ऑपरेशन प्रयोग में लाया जाता है। जालंधर (पंजाब) के लेफ्टीनेंट कर्नल हेनरी स्मिथ ने इस पद्धति को प्रचलित किया था। इन्होंने ५०,००० नेत्र-ऑपरेशनों के बाद इस विधि को जगत-प्रसिद्ध कर दिया था।

अमरीका में नया आविष्कार

बोस्टन के चिकित्सकों ने मोतियाबिंद के रोगियों के लिए एक विशेष यंत्र का आविष्कार किया है। डॉ. चार्ल्स स्केपेंस ने हजारों पशुओं में परीक्षण करके अनुभव किया कि यह यंत्र मनुष्य के लिए बहुत ही लाभकर सिद्ध होगा।

नये उपकरण का नाम 'केटरेक्ट फ्रेगमेंटेटर' है, और इसकी सहायता से मोतियाबिंद आसानी से निकल आता है। प्रायः शल्य-चिकित्सा में ३२ मिलिमीटर हिस्से की चीरफाड़ करनी पड़ती है, लेकिन इस विधि द्वारा केवल पांचवें भाग की चीराफाड़ी होती है।

—१९, दरियागंज, नयी दिल्ली—२

लद्दाख का तांत्रिक

• प्रेम कुमार कपूर

लगभग दस माह बाद, सचमुच वही घटा, जो उसने दस माह पहले कहा था।

दस माह पहले लद्दाख में मेरी उससे भेंट हुई थी। मैं अपने एक सैन्य अधिकारी मित्र के निमंत्रण पर लेह गया था। उस दिन मैं अकेला, एक टैक्सी में लद्दाख के विश्व-प्रसिद्ध गोम्फाओं को देखने निकला था।

पहाड़ों की टोलियां बर्फ की सफे[द] टोपियां पहने थीं। सिंधु नदी के किनारों पर रुई के गालों-सी बर्फ इकट्ठा थी। एक विचित्र बात थी, सिंधु के उस ओर के पर्वतों पर बर्फ ही बर्फ थी, जब कि इस ओर के पर्वत मिट्टी के ढेर से खड़े थे। मैं मैदानों का रहनेवाला, सिंधु को केवल नक्शे में ही देखा था। मंत्र-मुग्ध-सा सब कुछ निहारता चला जा रहा था।

तिब्बती में लिखी इबारत

राह में कभी-कभी मुझे किसी चट्टान पर तिब्बती में लिखी एक ही इबारत नजर आती। उसमें 'ओं' तो साफ नजर आ जाता, शेष कुछ समझ न आता।

इसीलिए जब हेमिस के गोम्फा में पहुंचा, तब मेरे मन में यही जिज्ञासा थी कि जगह-जगह चट्टानों पर लिखी उस इबारत का अर्थ जानूं।

टैक्सी एक ऊंचाई के बाद, अधिक चढ़ने में असमर्थ थी। मैं अकेले गोम्फा की

ओर चल पड़ा।

लद्दाख में तेजी से चलने पर सांस जल्दी फूल आती है। लगता है, दमे की बीमारी हो गयी है। इसलिए मैं बेहद धीरे-धीरे ऊंचाई चढ़ रहा था।

नीचे सड़क, सूनी सर्पाकार सड़क किसी बलखाती रस्सी-सी मालूम पड़ रही थी।

उसी सूने मार्ग पर मेरी उससे भेंट हुई थी।

वह लामाओं-जैसे कपड़े पहने था। चमड़े के रंग-बिरंगे लांग बूट, ऊन का लबादा और लंबी टोपी। दूर से वह लद्दाखी लग रहा था। मेरे मन में उससे चट्टान पर लिखी इबारत का अर्थ पूछने की इच्छा हुई। फिर सोचा, क्या वह मेरी भाषा समझ जाएगा? मैं उधेड़बुन में खड़ा, धीरे-धीरे बढ़ रहा था। वह भी मेरी ओर ही आ रहा था। शायद गोम्फा में बुद्ध की प्रतिमा के दर्शन कर नीचे कस्बे में जा रहा था।

सहसा मैं चौंक उठा। यद्यपि वेशभूषा से वह लद्दाखी लग रहा था, तथापि उसकी आकृति जानी-पहचानी यानी मैदानों में रहनेवालों-जैसी लग रही थी।

वह पहाड़ियों में समा गया

मुझे देखते ही वह मुसकरा उठा। मैं उससे कुछ पूछता कि उसने कहा, "अभी नहीं, दस महीने बाद फिर मिलेंगे, रामगिरि में।" यह बात उसने इतनी शुद्ध

वह लामाओं-जैसे कपड़े पहने था। चमड़े के रंग-बिरंगे लांगबूट, ऊन का लबादा और लंबी टोपी। दूर से वह लद्दाखी लग रहा था। मेरे मन में उससे चट्टान पर लिखी इबारत का अर्थ पूछने की इच्छा हुई। . . . सन्मा मैं चौंक उठा..
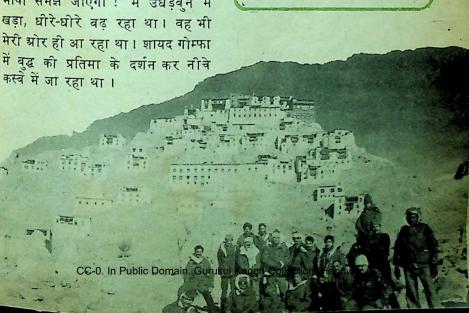
हिंदी में, ऐसे शुद्ध उच्चारण में कही कि मैं आश्चर्यचकित हो गया।

मैंने उसे रोकते हुए कहा, "जरा ठहरिए तो।"

उसने ओठों पर तर्जनी रखी। चुप रहने का इशारा करते हुए वह तेजी से नीचे उतरने लगा।

मैं बड़े अचरज में था। गोम्फा में बुद्ध की प्राचीन और नवीन प्रतिमाओं के दर्शन कर जब मैं नीचे उतरने लगा, तब भी मैंने उसे ढूंढ़ना चाहा, पर वह तो जैसे पहाड़ियों में समा गया।

लेह लौटकर मैंने अपने मित्र से इस घटना की चर्चा की तो वे बोले, "यह तो साधना का प्रदेश है। होगा कोई बौद्ध साधक या महापंडित राहुल-जैसा जिज्ञासु यायावर!"

लेह में तीन-चार दिन रहकर मुझे उस विचित्र व्यक्ति की याद रही, फिर धीरे-धीरे मैं उसे बिलकुल भूल गया।

हाल ही में वह मुझे फिर मिला। ठीक दस महीने बाद!

बिना किसी मसाले से जुड़ी छत

मैं अपने एक मित्र के साथ नागपुर गया था। मित्र वहीं के रहनेवाले हैं और उनका आग्रह था कि मैं कभी उनके साथ नागपुर चलूं। मैंने पढ़ रखा था कि नागपुर के पास रामटेक नामक स्थान है, जिसका महाकवि कालिदास ने अपने अमर काव्य 'मेघदूत' में भी उल्लेख किया है।

मैं अपने मित्र के साथ इसी स्थान पर गया था। यह स्थान नागपुर से २०–२५ किलोमीटर पूरब में है--छोटी-छोटी पहाड़ियां, पहाड़ियों के बीच सुंदर सरोवर और हरे-भरे वृक्ष।

इन्हीं में से एक पहाड़ी पर श्रीराम का मंदिर है। उसके पास ही कालिदास-स्मारक है। मित्र ने बताया कि पहले मंदिर तक पैदल ही चढ़ाई करनी पड़ती थी। अब तो कालिदास-स्मारक तक बस से पहुंचा जा सकता है।

यह संयोग था या अदृश्य शक्ति का चमत्कार! कालिदास-स्मारक के पास पहुंचते ही हमारी जीप में कोई खराबी आ गयी।

मित्र ने मुझसे कहा, "तुम स्मारक देखो, श्रीराम की मूर्ति के दर्शन कर आओ, तब तक मैं नीचे शहर में जाकर किसी मैकेनिक को लाता हूं।"

संयोग! उन्हें एक कार में एक पर्यटक-दल ने 'लिफ्ट' भी दे दी।

मैं झाड़ियों में लुका-छिपी का खेल खेल रही, पगडंडी पर अकेले चल पड़ा।

थोड़ी दूर जाने पर मुझे एक मंदिर नजर आया। यह नरसिंह का मंदिर था। विशालकाय स्तंभों पर बिना किसी मसाले के जुड़ी छत! यह देवगिरि के प्रख्यात वास्तुविशारद हेमाद्रि पंत की मंदिर निर्माण-शैली की विशेषता है। मंदिर देखने, मूर्ति के दर्शन करने, मैं चबूतरे पर चढ़ा।

मंदिर के गर्भ-गृह में कोई व्यक्ति ध्यान में लीन था। मैं उसकी साधना में विघ्न नहीं डालना चाहता, अतः उलटे पैर लौटने को हुआ। तभी उस व्यक्ति ने घूमकर मुझे रोका, "रुकिए, क्या मेरा वायदा याद नहीं रहा!"

मैं चौंक उठा।

यह तो लेह में मिला वही साधक था। वही शांत मुखाकृति, वही बरबस बांध लेनेवाले नेत्र! मुझे सहसा लेह-यात्रा के दौरान चट्टानों पर लिखी इबारतों की भी याद आ गयी।

मैंने वायदा किया था

उसने शायद मेरे विचारों को पढ़ लिया था। बोला, "एक प्रश्न तुम्हें बेचैन किये है ना! तुम लद्दाख की पर्वत-शृंखलाओं पर जगह-जगह लिखी इबारतों के बारे में जानना चाहते हो। मैंने तुम्हें उनके बारे में बताने का वायदा भी किया था। बैठो!"

फिर उस साधक ने मुझे जो कुछ बताया, उसका सार इस प्रकार है। उस साधक के अनुसार, चट्टानों पर अंकित इबारत दरअसल एक प्रभावपूर्ण बौद्ध मंत्र है। सामान्य व्यक्ति से लेकर आचार्य, महा-स्थविर और लामा तक, सभी इस मंत्र का जाप करते हैं। यह मंत्र अत्यंत चमत्कारिक और उच्च कोटि की सिद्धियां प्रदान करनेवाला है।

साधक ने बताया कि इस मंत्र को सिद्ध कर लामा इच्छानुसार अवधि तक जीवित रह सकते हैं।

मंत्र है——

ॐ ह्रीं मणि पद्मे हुम

साधक ने मुझे बतलाया इसमें ॐ, प्रणव है और ह्रीं बीज, मणि पद्मे मंत्र है एवं हुम पल्लव। इस मंत्र का जाप करते समय साधक को अपनी दोनों भौहों के मध्य ज्योति का ध्यान करना चाहिए। जैसे-जैसे साधक की साधना बढ़ती है, वैसे-वैसे उसे अलौकिक शक्तियां प्राप्त होती जाती हैं।

मैंने पूछा, "क्या आपने इस मंत्र को सिद्ध किया है?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया केवल मुसकरा उठा। बेहद शांतिदायक मुसकान थी वह!

सहसा वह उठ खड़ा हुआ। "अच्छा तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल गया न! अब चलता हूं।"

मैं चाहकर भी उसे नहीं रोक पाया। लगा, जैसे उसने मुझे सम्मोहित कर रखा है।

मंदिर में श्रीराम के दर्शन के बाद मैंने उसे ढूंढ़ने की फिर कोशिश की, पर वह कहीं नहीं दिखायी दिया। ●

डयुसेलडॉर्फ, पश्चिम जरमनी की बुढ़िया अन्ना रोजर चोर-डाकुओं से हमेशा डरती रहती थी और दरवाजे खिड़कियों पर ताले लगाती रहती। लेकिन उसके डर का राज तब खुला, जब वह मर गयी और उसकी लड़की ने फ्रीज में से एक बत्तख का शव बाहर निकाला ... बत्तख के पेट में एक लाख रुपये मूल्य का एक हीरा छुपाया हुआ था।

कहानी

• राधेश्याम

जब से मैं आया हूं, काम पूरा करके जल्दी से वापस लौटने की चिंता सता रही है। अगर अकेले का काम होता, तो संभव था, मैं दो दिनों में पूरा कर लेता। लेकिन जब किसी काम को पूरा करने के लिए, किसी के सँहयोग का आश्रय लेंना पड़े, तब इच्छानुसार कुछ भी कर पाना असंभव लगता है।

"अभी आये हो; ऐश करो। कंपनी का भत्ता है। कौन तेरे घर का खर्च हो रहा है;" मल्होत्रा चाय सुड़कते हुए कहता है और मेरी ओर देखकर मुसकराने लगता है। उसके देखने के भाव से यह स्पष्ट झलकता है कि वह काम न करके मेरे हित में एहसान जता रहा है। उसका काम न करना एक त्याग है, जो उसने मेरे लिए किया है। मैं अप्रभावित होते हुए बात काटना चाहता हूं। उसे क्या पता, कंपनी जो भत्ता देती है, उससे एक दिन का खाना भी नहीं हो सकता। फिर रहना और अन्य खर्चों की तो बात ही अलग है।

"भाई, कुछ भी हो। यह मेरे लिए परदेश है। जल्दी से काम खत्म करो। मैं वापस जाऊं।"

"यार, इतना काम मत किया करो। करोगे तब भी तुम्हें कोई पद्मश्री नहीं दे देगा। जितनी तनख्वाह मिलती है, उस हिसाब से काम करो। तू यदि न भी करे, तब भी मैं तो उसी तरह से ही करूंगा।"

मैं चुप हो गया हूं। मुझे नीति-श्लोक की पंक्तियां याद आती हैं, 'सोये को जगाया जा सकता है, लेकिन जगे हुए को जगाना हो ही नहीं सकता।' मुझे मल्होत्रा को देखकर कई बातें याद आने लगती हैं। अभी कुछ सालों की ही तो बात है, जब वह चौदह दिन के अनुबंध पर काम करने आता था और किसी कोल्हू के बैल की तरह काम करता रहता था। तब उसकी यही इच्छा थी कि वह किसी तरह 'रेगुलर' हो जाए। उन दिनों इसके पास जितना भी काम होता, उसे कम ही

लगता। जी-जान से, अपनी बुद्धिमता के अनुसार पूरा करके ही दम लेता। इसीलिए अच्छे और शीघ्र पूरा होनेवाले कामों के लिए, सभी मल्होत्रा को याद करते। मुझे याद है—जब तक वह अनुबंध पर काम करता रहा, कभी उसके मुंह से 'ना' शब्द किसी ने नहीं सुना। न उसने कभी किसी से ऊटपटांग बात ही की। आज वही मल्होत्रा मेरे सामने बैठा है। पिछले दो सालों से 'रेगुलर' हो गया है। अब काम जल्दी न करके, मेरा यात्रा-भत्ता बढ़वाकर, दोस्ती का फर्ज निभा रहा है।

"ऐसा करो, अभी तुम जब तक हो, अपनी पुरानी गर्ल-फ्रेंड से मिल लो . . . ," वह कहकर मेरी ओर कनखी मारता हुआ, जोर से हंस पड़ता है। उसके साथ में हमारे एक भूतपूर्व निदेशक के भाई का दामाद भी हंसने लगा है, जो इस कंपनी के एक क्लास वन अफसर का सहायक है। हालांकि, उसने न तो मुझसे बात करने की कोशिश की है और न वह मुझसे बात करना चाहता है। चूंकि सहायक के रूप में उसकी स्थिति नौकरों से भी बदतर है, लेकिन वह अपने अहंकार के एहसास से काट-काटकर मुझे छोटा बना रहा है। उसकी आंखों में हिकारत की चमक सफेद काई की तरह लग रही है, जिसे मैं उससे वरिष्ठ होते हुए भी झेलने में स्वयं को असमर्थ पा रहा हूं। इसलिए वहां से हट जाना ही उचित मानकर, मन में आज की योजनाएं निर्धारित करने लगता हूं।

अनेना से मिले एक लंबा अरसा हो गया है, जो पारदर्शी परदे की तरह टंगा हुआ है। इसके बीच से अतीत के कई टुकड़ों को अपने एहसास से जोड़कर देख तो सकता हूं, लेकिन छू नहीं सकता। किसी कपूर के टुकड़े के सुगंध की तरह उड़ता हुआ मेरा अतीत, इन्हीं अस्तबल-नुमा कमरों में छूट गया है।

'सुगंध को छूना आसान है, क्या ?' मैं स्वयं से प्रश्न पूछकर उठता हूं और एक मजबूर क्रोध को दबाता हुआ, कैंटीन से बाहर हो गया हूं।

हवा में हलकी-सी ठंड है। गुलमोहर के फूलों में लाल-लाल रंग भर गये हैं, सेनुरी रंग . . . लाल टीस . . .। यद्यपि गुलमोहर, हम दोनों से किसी भी रूप में नहीं जुड़ा था, फिर भी मुझे उसके फूलों का रंग तब भी उतना ही अच्छा लगता था, जितना अभी लग रहा है। भले ही प्रकट में मैंने कभी नहीं कहा, 'आओ अनि, हम दोनों भी एक प्यार का नन्हा गुलमोहर रोप दें और ऋतुओं के बीच खिलने को छोड़ दें,' लेकिन कई बार कहना चाहा जरूर था। पता नहीं, क्यों मुझे यह पेड़ प्रेम के कोमल प्रतीक की तरह लगता रहा था। अनेना ने कभी भी इस पेड़ का जिक्र नहीं किया। इस पेड़ का भी हमारे दफ्तर के जीवन में एक महत्त्व-पूर्ण योगदान था, ऐसा उसने कभी सोचा भी नहीं होगा।

वह कई बातें सोच भी नहीं सकती थी। क्योंकि वह अंदर से एक मरियल नन्ही

कंदील थी, लौकी की तरह थी, जो हवा की जरा-सी सुरसुराहट पर कांपने लगती या उसकी नैतिकता और आदर्शात्मक नीतियां, जरा-सी विपरीत फुसफुसाहट के डर से कछुए की गरदन की तरह सिकुड़ जाती। इन स्थितियों में कभी-कभी वह मुझे ठेले पर ढोयी जानेवाली बड़ी-बड़ी बर्फ की सिल्लियों के मानिंद लगती। फिर भी कहीं-न-कहीं कुछ था, जो हम दोनों के बीच बार-बार जुड़ जाता था। शायद, इसीलिए मैं उसे अच्छी तरह अपना नहीं कर सका।

'एक बात सच है, अनि, कि मेरे-जैसा धैर्यवान व्यक्ति जब तुम्हें नहीं समझ सका, तब तेरे भविष्य का भगवान मालिक है। एक दिन तुम मेरे इतने पास हो जाती हो कि जीवन का हिस्सा लगने लगती हो। फिर पता नहीं, दूसरे ही क्षण लगता ही नहीं कि तुम ठीक वैसी ही हो।'

'छोड़ो, ज्यादा मत सोचो। जब वक्त आएगा, देखा जाएगा। तुम वक्त से पहले की बातें मत सोचो,' वह कहती।

उसका यह कहना मेरे पूरे रोमांस के जहर को मार डालता। मुझे लगता, नशा उतारने के लिए किसी ने नीबू का खट्टा रस मेरे गले में उतार दिया हो। जब तक मेरा तबादला नहीं हुआ था, तब तक मेरे रोमांस का तिलस्म टूट-टूटकर बनता रहा। मैं भावनाओं की रेत को समेटकर घरौंदे को बनाता, वह उसके एक वाक्य से बिखरकर, मेरी मेहनत को मुंह चिढ़ाने लगता। मेरी यह कोशिश, बेकारी में फटी हुई उस कमीज की तरह लगती, जिसे चाहकर भी पहनना नहीं छोड़ सकता था, चाहे जितने पैबंद उसमें लगते रहे हों।

यह कोशिश मैंने तब भी की थी, जब मुझे यह पता चला गया था कि उसकी दिलचस्पी का विषय बत्रा हो गया था। फिर भी एक महान आशावादी की तरह उसके साथ होने की कल्पनाओं के साथ जोंक की तरह सटा हुआ था। मुझे हर वक्त लगता, बत्रा झूठ था। सच केवल मैं था। मेरे अतिरिक्त कोई दूसरा हो ही नहीं सकता और सच में ऐसा ही हुआ। बत्रा झूठ ही था। लेकिन मैं सच नहीं था। बत्रा तो कम से कम झूठ भी निकला, परंतु मैं उसके लिए न सच था और न झूठ। यह मेरी सबसे ज्यादा पीड़ादायक स्थिति थी।

●●

"कहिए, काम हो गया?" मेरे पीछे से किसी की पुकार मुझे चौंका देती है। मैं मुड़कर देखता हूं, आवाज अनेना की है। आकर्षक वेशभूषा में भी अब चेहरे पर ढलान की रेखाएं बनने लगी हैं। सब कुछ वैसा ही है। कद, रंग, मुस्कराहट की लंबाई और कपड़े पहनने का आभिजात्य ढंग . . .।

"कैसी हो?" कहकर एक बार मैं रुक जाता हूं। सुधारकर दुबारा पूछता हूं, "कैसी हैं, आप?"

"बस, जिंदगी चली जा रही है। आप?

"बस, जिंदगी चली जा रही है।" मैं उसके संवाद को उसे वापस कर देता हूं।

"अभी आप रहेंगे, न ?"

"शायद, रहना पड़े। कोई काम करना चाहता ही नहीं।"

"मुझे पता चला, आप आये हैं। मैं फिर मिलूंगी . . . जरा काम है मुझे।"

"हां, मुझे भी काम है। हम फिर मिल लेंगे," मैं भी कहता हूं। यद्यपि मैं जानता हूं, यह सच नहीं है। लेकिन, इन स्थितियों के लिए इनसे अच्छे ग्रौर सटीक संवाद दूसरे हो भी तो नहीं सकते।

हम दोनों के बीच न जाने कहां से एक झूठ 'विलेन' बनकर आ गया ? यह हादसा ऐसा हुआ। जैसे किसी शांत पोखरे में एक किनारे छोटा-सा पत्थर गिर जाए। मैं उसे दूर तक जाते हुए देखता हूं।

"हलो अवकाश, हाउ डू यू डू ?"

यह प्रसाद है। मेरा पुराना परिचित। वह हाथ मिलाने के लिए बढ़ाकर, पान की पीक फेंक रहा है। हलकी हवा के साथ उड़कर पीक के छींटे मेरे हाथ पर गिरे हैं, जिसको बड़ी घृणा से मेरी त्वचा ने स्वीकार किया है। मैं दूसरे हाथ से उस जगह को पोंछने लगता हूं।

"सॉरी यार, असल में . . .।" वह समझकर माफी मांगने लगा है। मैं कहता हूं, "कोई बात नहीं, यार। आगे बोलो, तुम कैसे हो ?"

"बस, जिंदगी गुजर रही है। जब से तुम गये हो, यहां का प्रशासन बिलकुल अजीब हो गया है। कोई काम करना नहीं चाहता। तुम घूम आग्रो इन कमरों में, एक आदमी भी अगर काम करता हुआ देख लो, फिर कहना, जब कोई नहीं करता, तब मुझे क्या गरज पड़ी है ? मेरे दादाजी का दफ्तर है ? कंपनी का काम-काज चलता रहता है। तुम कब आये ? कब तक रहोगे ?"

"मैं जल्द ही जाना चाहता हूं।" तभी वह बीच में कहता है, "अमां रहो यार। घूम-फिर लो। तुम्हारी पुरानी जगह है। हीरो बनकर रहे हो। भत्ता तो मिल ही रहा है . . . ऐश करो . . .।" कहकर जोर से मेरे हाथ को दबाकर जा रहा है। मुझे हर हालत में जल्दी वापस लौटना है, यह बात किसी की समझ में नहीं आ रही है। सोचता हूं, मैं गौड़ को जाकर बता दूं शायद, वह कुछ काम आ जाए। मैं उससे मिलने उसके कमरे की ग्रोर लपकता हूं। पता चलता है, वह सीट पर नहीं है। बड़े साहब के यहां गया है। वहां जाकर पता करता हूं, तो बड़े साहब अपने बड़े साहब के पास हैं। गौड़ अपने बड़े साहब के कमरे में इंतजार कर रहा है। मुझे देखते ही वह लपककर गले मिलता है। "आग्रो यार, साला तुम यहां से गया, सब कुछ बदल गया। सब चमचागिरी में लग गये हैं। काम-धाम तो होता नहीं। किसको क्या कहे कोई। बॉस की मक्खनबाजी में समय बीत रहा है . . .।"
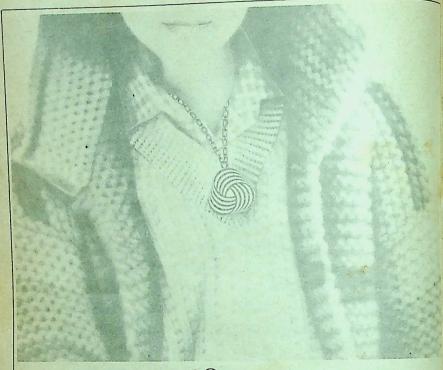
न
रहे
तब
हूं,
से
चा
घर
नि
देख
मि
हो
कंप
है,
पां
देग
इस
बॉ
गौ
कैंट
हूं
का
की
तुम
के
या
को
ज

"तुम भी तो करते हो।" मैं कहता हूं।

"जब सब कर ही रहे हैं, तब मैं क्यों न करूं? काम नहीं करो, रिपोर्ट ठीक रहेगी। काम करोगे। गलती होगी। कब तक रहोगे?"

"रहना क्या है, एक काम लेकर आया हूं, खतम हो जाए।"

"अभी रहो। जल्दी क्या है। कंपनी से भत्ता तो पा रहे हो . . . चलो, जरा चाय पी आयें।" कहकर गौड़ मुझे बाहर घसीटता है। हम दोनों जैसे ही बाहर निकलते हैं, शर्मा लपकता हुआ मुझे देखकर रुक जाता है। गर्मजोशी से हाथ मिलाकर पूछता है, "कब आये? कब तक हो? अभी हो ना? मौज है, तुम्हारी . . . कंपनी के भत्ते का लाभ उठाओ।"

उससे अलग होते ही गौड़ कहता है, "साला, मालिश करने आया है। अब पांच बजे तक पूरे शहर का मक्खन लगा देगा। शर्मा और अंसारी में, समझ लो, रोज इस बात की प्रतियोगिता होती है कि कौन बॉस को कितना मक्खन लगा सकता है।" गौड़ कहता है और तेज कदमों से चलकर कैंटीन आ जाता है। मैं भी उसके साथ हूं। तभी गौड़ एक हलकी-सी चिकोटी काटकर मुझे एक कोने में बैठी अनेना की ओर इशारा करता है, "वह देखो तुम्हारी गर्ल-फ्रेंड, आजकल उस आदमी के साथ या तो दफ्तर से गायब रहती है या कैंटीन में बैठकर लंच करती रहती है। कोई फाइल मांगो तो ढूंढ़ने लगती है ...।"

पता नहीं, क्यों इस बार अनेना को देखकर मेरे अंदर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। वह भीड़ में शामिल हर आदमी की तरह एक संख्या भर लगती है। और मुझे लगता है, अभी क्षणभर पहले, जो अदृश्य परदा, मैंने महसूस किया था, वह कभी था ही नहीं।

मैं भी गौड़ के साथ बैठ जाता हूं। अनेना ने मुझे नहीं देखा है, क्योंकि उसकी पीठ मेरे सामने है। पता नहीं, क्यों मेरे अंदर गंभीरता से काम करने की वजह से अपराध-बोध का एक नन्हा-सा बीज अंकुरित होने लगा है। त्यागी की आवाजें कैंटीन के कोलाहल में भी मेरे कानों के परदे को ठुनठुनाने लगी हैं, 'तुम्हें काम की चिंता क्यों सता रही है? आराम करो। जब सब आराम कर रहे हैं, तुम्हारे अकेले काम करने से क्या होगा? बहुत दिनों के बाद आजादी मिली है, भैया . . .।'

मेरा मन उदास है। गौड़ अंदर की राजनीति पर बहस करने लगा है। अब मैं कहां जाऊं? यह मेरी चौथी नौकरी है।

—दूरदर्शन केंद्र, मुजफ्फरपुर

अचानक हजारों व्यक्ति सड़कों पर दौड़ पड़े रोडस रेडियो से यह सुनते ही कि आगामी कुछ मिनटो में भूचाल आनेवाला है। रेडियो ने हालांकि तभी निवेदन किया कि 'यह टेप गलती से बज गया था, अब आप संगीत सुनें', लेकिन रेडियो से भूल-सुधार सुनने के लिए कोई भी घर में था ही नहीं . . .सड़क पर लोग भूचाल का इंतजार कर रहे थे।

साहिर की याद में

● मनमोहन कुमार तमन्ना

मौत का दूसरा नाम आत्मा की गिरफ्तारी है। जैसे कई बार गलत फैसले हो जाते हैं, वैसे ही साहिर की आत्मा की गिरफ्तारी भी गलत हुई। क्योंकि, साहिर की मृत्यु उसी दौर में हुई, जिसमें उनके होने की अत्यधिक आवश्यकता थी। देश-समाज को अपने काव्य से झकझोर कर रख देने की शक्ति साहिर लुधियानवी में ही थी। उनके गीतों में आम आदमी को अपनी अनुभूति ही लगती थी। वे सदा समाज में हो रहे अन्याय के लिए लड़ते रहे। उनके काव्य में मन की गहराइयों में उतर जानेवाले प्यार के मीठे बोल भी थे और मुरदा दिलों में जोश के अंगारे भर देने की ज्वाला भी।

साहिर साहब से मैं वर्षों से मिलन[illegible] चाह रहा था, परंतु मेरी उनसे भेंट जन[illegible] वरी, १९७४ में ग्वालियर में, मेरी ही फिल्म 'चंबल की कसम' की शूटिंग के समय हुई। श्री राम माहेश्वरी ने परिच[illegible] कराया। संगीतकार श्री जयदेव [illegible] तब साथ थे। चार दिन एक साथ र[illegible] कर मैंने उस महान शायर में एक बहु[illegible] ही पुण्य आत्मा के दर्शन किये। फि[illegible] मैं उनके साथ ही बंबई तक गया[illegible] जहां जगह होती, वहीं ठहर जाते[illegible] उनकी मां तथा बहन अनवरी भी साथ[illegible] थीं। दो कारें थीं, जिसमें से एक विदे[illegible] महंगी कार थी। रास्ते में जी भरकर उन[illegible] शायरी, चुटकुले सुनता रहा। गुना जि[illegible] आने से पहले वे बोले, "वहां चौराहे [illegible] एक बड़ी-बड़ी मूछोंवाला ट्रैफिक [illegible]

साहिर कोमलतम भावनाओं के शायर थे। वे अतिवादी थे। 'एक्स्ट्रीम ओप्टिमिस्ट' भी थे, और 'एक्सट्रीम पेसिमिस्ट' भी। उनके काव्य में मन की गहराइयों में उतर जानेवाले प्यार के मीठे बोल भी थे और मुरदा दिलों में जोश के अंगारे भर देने की ज्वाला भी।

सिपाही मिलेगा।" वही हुआ। संयोग से सिपाही चौराहे पर था। कार का नंबर पढ़ते ही उसने गाड़ी रोकने के लिए इशारा किया। जब कार रुकी, तो उसने ऊंचे बने चबूतरे पर ही मोर बनकर दिखाया। हम सब हंस पड़े। तब साहिर साहब ने उसे सौ रुपये का नोट इनाम में दिया। रास्ते में अनेक जगह अपाहिज भिखारियों को वे गाड़ी रुकवाकर कुछ न कुछ देते रहे। भिखारियों को सड़क पर देखकर उनके चेहरे पर दुःख के भाव उभर आते। एक बार बोले, "आजादी का कोई अर्थ नहीं, जब तक देश में लोग भूखे सोते हैं।"

यह साहिर ही थे, जो जिंदगी के हर 'मूड' और हर पहलू पर सीधे-सादे शब्दों में अपनी बात कह लेते थे। उनके गीतों में तुकबंदी न थी, थी उसमें हृदय के तारों को झकझोर देने की शक्ति। वे अपने गीतों से कभी फूल और कभी अंगारे बरसाते थे। उनके हर गीत, गजल में कोई न कोई संदेश होता था। जैसे, गीता का सारांश इन पंक्तियों में देखा जा सकता है—

जियो तो ऐसे जियो
जैसे सब तुम्हारा है
मरो तो ऐसे मरो
जैसे तुम्हारा कुछ भी नहीं

 ऊपर: स्वर्गीय साहिर लुधियानवी के साथ लेखक

उनकी जीवन-यात्रा में दुःख, अभाव और घुटन सदा साये की तरह साथ रहे। वे हलके गीतों में भी कोई न कोई पैगाम देते थे, जैसे—

चाहे कोई खुश हो
चाहे गालियां हजार दे
मस्तराम बन के
जिंदगी के दिन गुजार दे

अथवा पलायनवादी मनःस्थिति में—

अपनी खातिर जीना है
अपनी खातिर मरना है
होने दो जो होता है
अपने को क्या करना है ?

अभाव, बेरोजगारी पर कितना तीखा व्यंग्य है, निम्न गीत में—

चीन-ओ-अरब हमारा हिंदुस्तां हमारा
रहने को घर नहीं है, सारा जहां हमारा
तालीम है अधूरी, मिलती नहीं मजूरी
फुटपाथ पर बंबई के है, कारवां हमारा

साहिर साहब की जिंदा-दिली भी कम प्रसिद्ध नहीं थी। किसी भी चर्चा में भोले भाव में बोलनेवाले बालक की तरह धीमे से ऐसी चुटकी लेते कि सब हंसते-हंसते लोटपोट हो जाते। एक बार उनके घर सुबह नाश्ते के समय एक निर्माता-निर्देशक आये। उन्हीं दिनों यश चोपड़ा की 'कभी-कभी' फिल्म 'सुपरहिट' हुई थी। वे एक नयी फिल्म शुरू करनेवाले थे। बोले कि साहिर साहब, आपके गीत हों और फलां संगीतकार का संगीत, तो सोने में सुहागा रहे . . ।

साहिर साहब ने कहा, "भाई, उन संगीतकार के साथ तो मैं अब लिखूंगा नहीं। आप यह तय कर लीजिए कि आपको सोना चाहिए या सुहागा ?"

नारी-सम्मान के प्रवक्ता

नारी को समाज में सम्मान दिलाने के लिए जितना अधिक साहिर ने लिखा, दूसरे किसी भी भाषा के कवि ने नहीं लिखा है। अपने काव्य-संग्रह 'आओ कोई ख्वाब बुनें' में उन्होंने लिखा है—

जिंदगी का नसीब क्या कहिए
वह सीता थी, जो सतायी गयी

एक और फिलम 'साधना' में कहते हैं—

औरत ने जन्म दिया मर्दों को
मर्दों ने उसे बाजार दिया
जब जी चाहा मसला, कुचला
जब जी चाहा दुत्कार दिया

एक बार केंद्र के एक बड़े नेता ने कहा था कि हमें नाज है कि हम हिंदुस्तान में पैदा हुए हैं। इस पर साहिर ने फिल्म 'प्यासा' में लिखा—

ये कूचे, ये नीलामघर दिलकशी के
ये लुटते हुए कारवां जिंदगी के
जिन्हें नाज है हिंद पर
वो कहां हैं ?

अथवा पलायनवादी मनःस्थिति में कवि कीट्स की तरह उनकी कविता में 'पिक्टोरियल क्वालिटी' (शब्द-चित्र) देने की भी क्षमता थी। सरल शब्दों में वे भारत के नौजवानों का चित्र यूं खींचते हैं—

ये देश है वीर-जवानों का
अलबेलों का मस्तानों का
इस देश का यारो क्या कहना
ये देश है दुनिया का गहना

साहिर में जिंदगी के हर पक्ष की अनुभूतियों को गीतों के माध्यम से व्यक्त करने की अद्भुत सामर्थ्य थी। सामाजिक रिश्तों के भावों को भी वे सहज में महसूस करा देते थे। पिता जब अपनी बेटी की डोली विदा करता है, उस समय की पिता की हृदय-व्यथा को कितने मार्मिक शब्दों में उन्होंने फिल्म 'नील-कमल' में व्यक्त किया था कि गीत सुनकर आज भी आंखें भर आती हैं——

बाबुल की दुआएं लेती जा
जा तुझको सुखी संसार मिले
मैके की कभी न याद आये
ससुराल में इतना प्यार मिले
बीते तेरे जीवन की घड़ियां
आराम की ठंडी छांव में
कांटा भी न चुभने पाये कभी
मेरी लाड़ली तेरे पांव में
उस द्वार से भी दुःख दूर रहे
जिस द्वार से तेरा द्वार मिले

साहिर कोमलतम भावनाओं के शायर थे। वे अतिवादी थे——'एक्स्ट्रीम ऑपटिमिस्ट' (आशावादी) भी और 'पेसीमिस्ट' निराशावादी भी। जब मानव-मन परिस्थितियों और संघर्षों से जूझते हुए हार जाता है, तब निराशावादी जीवन जीना एक सजा समझने लगता है। उन्हीं स्थितियों में उन्होंने फिल्म 'चांदी की दीवार में' लिखा था——

कहीं करार न हो
और कहीं खुशी न मिले
हमारे बाद किसी को
यह जिंदगी न मिले
मौत कितनी भी संगदिल हो मगर
जिंदगी से तो मेहरबां होगी
रंग और नस्ल, नाम और दौलत
जिंदगी कितने फर्क मानती है
मौत हदबंदियों से ऊंची है
सारी दुनिया को एक जानती है

वे जीवन में आशा का संदेश भी देते थे——

वह सुबह कभी तो आयेगी
वह सुबह कभी तो आयेगी
इन काली सदियों के सिर से
जब रात का आंचल ढलकेगा
जब दुःख के बादल पिघलेंगे
जब सुख का सागर छलकेगा

कव्वालियां लिखने में साहिर साहब बेताज बादशाह थे। कव्वालियां औरों ने भी लिखीं, पर साहिर का तो अंदाजे-बयां ही कुछ और था।

वे प्रत्येक मिलन का अंतिम छोर जुदाई में मानते थे। अपने प्यार को न लादते हुए लिखते हैं——

तुम मुझे भूल भी जाओ
तो यह हक है तुमको
मेरी बात और है
मैंने तो मोहब्बत की है

साहिर का स्वयं का जीवन संघर्षों,

अभावों में बीता था। आरंभिक दिनों में उन्होंने बहुत दुःख, अपमान और फाके झेले थे। एक बार मुझे बता रहे थे, "जिंदगी की झोली के सारे दुःख मैंने चखे हुए हैं। और यह दुनिया तो बहुत बेरहम है। इसने मेरी और मैंने इसकी बहुत कम फिक्र की है।"

'प्यासा' फिल्म में वे अपने मन की कड़वाहट को निम्न शब्दों में बताते हैं--

ये महलों, ये तख्तों, ये ताजों की दुनिया
ये इंसां के दुश्मन, समाजों की दुनिया

साहिर की सहानुभूति हमेशा गरीब और कमजोर के साथ रही। वे श्रम को दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति मानते थे। मजदूरों की एकता को अपने गीत के माध्यम से संदेश देते हुए उन्होंने कहा—

माटी से हम लाल निकालें
मोती लायें जल से
जो कुछ इस दुनिया में बना है
बना हमारे बल से
कब तक मेहनत के पैरों में
दौलत की जंजीरें?
हाथ बढ़ाकर छीन लो
अपने ख्वाबों की ताबीरें
साथी हाथ बढ़ाना

उनके गीत भारतीय जन-मानस के मस्तिष्क में क्रांति-भाव जगाते रहे हैं। यह बात अधूरी रहेगी, यदि उनके विद्रोही स्वर की संक्षिप्त चर्चा न की गयी। कालेज के दिनों में ही उनकी नज्म 'ताजमहल' काफी लोकप्रिय हो चुकी थी।

इक शहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर
हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मजाक

वे शांतिप्रिय-स्वभाव के थे। जीयो और जीने दो के सिद्धांत को मानते थे। लोग तो कहते ही हैं, परंतु वे उसे व्यवहार में भी लाते थे। **'मैंने जज्बात निभाये हैं उसूलों की जगह।'** युद्ध से उन्हें नफरत थी। लड़ाई की चर्चा के दौरान उन्होंने कहा था, 'जब भी देश के किसी सिपाही के गोली लगती है, तब मुझे ऐसा लगता है कि जैसे वह गोली स्वयं मेरे सीने में लगी हो।'

फिल्म 'ताजमहल' में उन्होंने युद्ध के बारे में लिखा था—

खुदाए बरतर, तेरी जमीं पर
जमीं की खातिर
ये जंग क्यों है?
हर एक फतह-ओ-जफर के दामन पे
खूने इंसा का रंग क्यों है?

धर्म, स्वर्ग के संबंध में भी उनका एक अपना अलग दृष्टिकोण रहा है। हिंदी का भी अच्छा ज्ञान रखते थे। शुद्ध हिंदी के कोमल और उचित शब्दों का चयन करने का उनका अपना ढंग था—

संसार से भागे फिरते हो
भगवान को तुम क्या पाओगे
इस लोक को भी अपना न सके
उस लोक में भी पछताओगे

प्रायः प्रत्येक को किसी-न-किसी से कोई-न-कोई शिकायत रहती है। साहिर

साहब शिकायत न करके, सब्र कर लेने में विश्वास रखते थे। जो जीवन में जितना कर दे, उसे ही एहसान मानते थे। मन को समझाने का उनका यह भी तरीका था—

मन रे, तू काहे न धीर धरे
उतना ही उपकार समझ ले
जितना कोई संग निभा दे
कोई न संग जीये, कोई न संग मरे

जिन परिस्थितियों में इंसान टूट जाता है, उनमें भी वे हंसने की सलाह देते हैं। मन की स्लेट से गलत सवाल की तरह गम के बादलों को मिटा देने की प्रेरणा देनेवाली उनकी एक गजल देखिए —

मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया
हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया

वर्षों के संघर्षों के बाद फिल्मों ने उन्हें पर्याप्त नाम, दाम और ख्याति दी। फिर भी उनमें लेश-मात्र को भी अहंकार नहीं था। वे आदमी से ज्यादा 'समय' को बलवान मानते थे।

साहिर का प्यार, दोस्ती सदा मेरे लिए गौरव की बात रही। दुर्भाग्य के क्रूर हाथों ने एक सच्चा मित्र, मार्गदर्शक, एक पुण्य-आत्मा को असमय में छीन लिया। ८ मार्च, १९२१ को लुधियाना में जन्मे साहिर की जीवन-यात्रा २४ अक्तूबर, १९८० को समाप्त हो गयी। परंतु जब तक दुनिया है, साहिर के गीत जिंदा रहेंगे। काल की मोटी पर्तें भी उनके गीतों के स्वरों को न छिपा सकेंगी क्योंकि साहिर तो सहर (सुबह) थे। और सुबह कभी नहीं मरती है।

—गृह नं. ७३, मुरेना (म. प्र.)

छतरी : इतिहास के झरोखे में

बरसात के मौसम में इस बात का कोई ठिकाना नहीं कि कब पानी बरसने लगे, इसलिए लोग हमेशा छतरी साथ रखते हैं, और उसे भूल भी जाते हैं। एक आंकड़े के अनुसार साल में डेढ़ लाख से ज्यादा लोग अपनी छतरियां बसों और ट्रेनों में भूल जाते हैं। हम भले ही छतरियों को भूलते रहें, लेकिन इतिहास उसे नहीं भूल सकता। इतिहास बताता है कि शिवाजी छत्रपति थे, यानी दरबार में उनके ऊपर छतरी रहती थी, लेकिन उनसे भी बहुत पहले, एशिया और अफ्रीका के बहुत से राजा छत्रपति थे। सबसे बड़ी छतरी बर्मा के राजाओं की होती थी। एक सुल्तान तो जब भी सफर पर जाता था, तब उसके ऊपर सिर पर हीरे-जवाहरातों से जड़ी हुई सात-सात छतरियां होती थीं। सिर्फ राजाओं को अपने सर पर छतरियां रखने का अधिकार था। ईस्ट इंडिया कंपनी के बड़े अफसरों को भी छतरियां रखने का हक था, जो उन्हें गवर्नर-जनरल देता था।

यूरोप में शुरू में छातों का इस्तेमाल सिर्फ औरतें ही करती थीं। जो पुरुष छातों का इस्तेमाल करते थे, उन्हें लानत-मलामत उठानी पड़ती थी।

आज बाजार में जादूगरों, सरकस के खिलाड़ियों, फेरीवालों, और शौकीन मिजाज महिलाओं के लिए किस्म-किस्म के छाते मिलते हैं। छाते का एक 'सी-थ्रू' (पारदर्शी) मॉडल आजकल विदेशों में बहुत लोकप्रिय हो रहा है।

विधि विधान

विनोदकुमार, गोरखपुर : हमारे महाविद्यालय एवं छात्रावास के निकट एक चलचित्र-गृह है, जो प्रतिदिन चारों शो चलाता है, जिसके रिकॉर्ड बहुत जोर से बजते हैं, जिससे हम छात्रों के अध्ययन में बहुत व्यवधान पड़ता है। क्या कोई ऐसा उपाय है, जिससे इसे रोका जा सके?

आपको स्वयं या अपने विद्यालय के अधिकारियों द्वारा पुलिस में रपट दर्ज करानी चाहिए। कोई भी चलचित्र-गृह तेज रिकॉर्ड चलाकर आपकी पढ़ाई में व्यवधान नहीं डाल सकता। नियमों का पालन न करने पर उसका अनुमति-पत्र भी निलंबित किया जा सकता है।

पत्नी का नाम बदला

विजेंद्रकुमार अग्रवाल, देहरादून : मेरी शादी एक अल्प-शिक्षित महिला से सन १९६९ में हुई थी। मेरी पत्नी का नाम उस समय शशि बाला था। मैंने अपने जीवन बीमा, पेंशन व ग्रेचुएटी के पेपर्स में उसका यही नाम लिखा रखा है। उसके पास स्कूल का कोई सर्टिफिकेट भी नहीं है। समस्या ये है कि मैंने शादी के एक वर्ष बाद ही उसका नाम व्यवहार में प्रभारानी कर दिया। उसी के अनुरूप अब सब लोग पिछले बारह वर्ष से उसे इसी नाम से जानते-पहचानते हैं, यहां तक कि बैंक एकाउंट भी उनका प्रभारानी के नाम से ही है। कृपया, बतायें मुझे क्या करना चाहिए, जिससे उसका नया नाम मान्य हो सके, और मेरे बाद उसे मेरे फंड, ग्रेच्यूटी व बीमा-राशि मिलने में कठिनाई न हो।

विवाह के बाद पत्नी का नाम बदलने की परंपरा अनेक घरानों में विद्यमान है। मैं समझता हूं कि परेशानी का कोई कारण नहीं है। आप अपनी पत्नी के दो नाम होने की स्थिति स्पष्ट करते हुए एक घोषणा-पत्र लिख दें, जिसमें विवाह से पूर्व का तथा बाद के परिवर्तित नाम का उल्लेख कर दें। इस नाम परिवर्तन की सूचना मुख्य-सचिव, उत्तर प्रदेश, जीवन बीमा निगम व अपने कार्यालय को भी दे दें। जीवन बीमा की पालिसी व अपने कार्यालय में नाम बदलवाने के लिए आवेदन करके नाम ठीक करा दें। दोनों नामों के बीच उर्फ लगाकर सभी स्थानों पर नाम लिखे जाने से आपकी परेशानी हल हो जायेगी।

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

कोर्ट मैरिज कैसे हो ?

रामकुमार वर्मा, पटना : मैं एक २१ वर्षीय नौजवान हूं और बी.एस-सी. की डिग्री प्राप्त कर चुका हूं; मैं एक लड़की से प्रेम करता हूं, जिसकी उम्र मुझसे एक वर्ष अधिक है। हम दोनों अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध कोर्ट में शादी करना चाहते हैं। अतः हमें क्या करना होगा और कौन से कोर्ट में जाना होगा ?

यह ठीक है कि प्रायः विवाह से पूर्व यह देखा जाता है कि पत्नी की आयु पति की आयु से कुछ कम रहे। परंतु ऐसा कोई कानून नहीं है, जो केवल अपने से छोटी उम्र की लड़की से ही विवाह की अनुमति देता हो। आपके विवाह में आयु के आधार पर कोई वैधानिक रुकावट नहीं है। आप हिंदू पद्धति से या विशेष विवाह अधिनियम के अंतर्गत विवाह कर सकते हैं। इसके लिए प्रत्येक क्षेत्र में सरकार ने विवाह-अधिकारियों की नियुक्ति कर रखी है। साधारणतया यह अधिकार अतिरिक्त जिला दंडाधिकारियों को दिया गया है।

जगह किसकी है ?

मुरलीधर बाधवानी, खुरई : मेरे दो खोखे (गुमटी) अगल-बगल से मंदिर की जगह पर रखे हैं, जिसका किराया मैं मंदिर के ट्रस्ट को देता हूं। मैं खोखे से नीचे कोई सामान भी नहीं रखता। नगर पालिका परिषद मुझसे प्रतिदिन बाजार-बैठकी के ५० पैसे प्रति खोखे के हिसाब से लेती है। क्या इस हालात में नगर पालिका का बाजार-बैठकी लेना कानूनन उचित है ?

प्रश्न यह है कि आपके खोखे किसकी जगह पर हैं? खोखे के नीचे की जगह का मालिक मंदिर है या नगर पालिका परिषद ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह जगह नगर पालिका की ही हो और मंदिरवाले जगह मंदिर के बाहर या नजदीक होने के कारण आपसे किराया वसूल कर रहे हों। अगर जगह नगर पालिका की है, तो नगरपालिका तह बाजारी या किराया वसूल कर सकती है। आपको जगह के स्वामित्व के बारे में छान-बीन करनी चाहिए, तभी कोई कार्यवाही की जा सकती है।

कौन कितना अधिकारी ?

रामसेवक गुप्त, कानपुर : हम चार भाई व दो बहनें हैं। सभी का विवाह हो चुका है। मां नहीं है। कृपया, बताएं कि पिता की मृत्यु के पश्चात नियमानुसार उनकी संपत्ति में किसका कितना अधिकार है, जबकि समस्त संपत्ति पिता द्वारा अर्जित की गयी है ?

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम में पुत्र व पुत्री में कोई भेद नहीं रखा गया है। उत्तराधिकार की दृष्टि से दोनों ही प्रथम श्रेणी में आते हैं तथा पिता की संपत्ति में बराबर के हकदार होते हैं। आपने अपनी मां के जीवित न होने की बात तो लिखी है, परंतु अपनी दादी के बारे में कुछ नहीं लिखा। यदि आपकी दादी जीवित हों, तो वह भी उत्तराधिकारियों
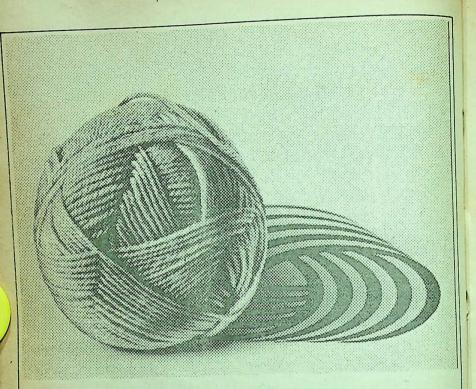
की प्रथम श्रेणी में आती हैं। अन्यथा आप चारों भाई व दोनों बहनें सभी पिता की संपत्ति में बराबर के हिस्सेदार हैं।

मकान किराये पर देना है

एस. आर. वर्मा, दिल्ली : दिल्ली विकास प्राधिकरण (डी. डी. ए.) से खरीदी गयी जमीन पर मेरा एक मकान है, जिसे मैं कुछ समय के लिए किराये पर देना चाहता हूं। वैधानिक दृष्टि से इस संबंध में क्या-क्या औपचारिकताएं पूरी करनी होती हैं। कम-से-कम और अधिक-से-अधिक कितने समय के लिए किरायेदार से एग्रीमेंट किया जाना चाहिए। बाद में किराया बढ़ाने और आवश्यकता पड़ने पर मकान खाली कराने का क्या नियम है?

दिल्ली किराया नियंत्रण अधिनियम के अंतर्गत मकान निश्चित समय के लिए किराये पर दिये जाने की व्यवस्था है। इसके लिए किराया-नियंत्रक की पूर्व अनुमति लेनी आवश्यक है। इस प्रकार की अनुमति केवल तब ही दी जा सकती है, जबकि मकान रिहायशी प्रयोजन हेतु किराये पर दिया जाना हो। यदि आप किराया बढ़ाने या दोबारा किराये पर देने के उद्देश्य से मकान निश्चित अवधि के बाद खाली कराना चाहते हैं, तब आपको निश्चित अवधि के लिए मकान किराये पर देने की अनुमति नहीं मिल सकती। इस प्रकार की अनुमति के लिए यह आवश्यक है कि मकान-मालिक को वर्तमान में मकान की आवश्यकता न हो और निश्चित अवधि के बाद उसे अपने तथा अपने परिवार के रहने के लिए मकान की आवश्यकता हो। अनुमति के उपरांत विधिवत किरायानामा लिखाकर मकान किराये पर दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार किराये पर दिया गया मकान निश्चित अवधि के बाद किराये पर दिया जा सकता है। बाद में किराया बढ़ाने की कोई व्यवस्था दिल्ली किराया नियंत्रण अधिनियम में नहीं है।

तंग आ चुका हूं पत्नी से

रामप्रसाद गुप्त, रांची : मेरी पत्नी जड़-बुद्धि, लापरवाह और उज्जड स्वभाव की है, जिसे मुझसे, मेरे हालातों से भी कोई लगाव नहीं है, जबकि मेरे सामने रोजगार की तलाश, विधवा मां की देखभाल, पांच जवान बहनों की शादी, संपत्ति पर दांत गड़ा चुके दो सौतेले भाइयों से निपटने आदि की विकट समस्याएं हैं। मैं, मां और बहनें उसे सुधारने की हर कोशिश कर चुके हैं और मैं उससे इतना तंग आ चुका हूं कि आत्महत्या की बात सोचने लगा हूं। क्या मुझे तलाक मिल सकता है?

जड़-बुद्धि, उज्जड व लापरवाह होने के आधार पर पत्नी से तलाक द्वारा छुटकारा नहीं मिल सकता। परिवार की चिंताओं के आधार पर भी तलाक नहीं मिल सकता। आत्महत्या की बात सोचना कायरता है। पत्नी में सुधार के उपाय खोजने के साथ अपने अन्य परिवारजनों के सुधार के उपाय भी खोजिए—गलतियां उनकी भी हो सकती हैं। ●

उन दिनों आइंसटाइन अमरीका में रहते थे। एक बार उनके एक मित्र ने उन्हें रात के खाने पर बुलाया।

आइंसटाइन के अलावा कुछ अन्य मेहमानों को भी उस भोज में शामिल होने का निमंत्रण था। भोजन के बाद संगीत का कार्यक्रम था।

सब लोग डाइनिंग रूम से ड्राईंगरूम में चले आये।

आइंसटाइन एक सोफे पर बैठ गये।

आइंसटाइन संगीतकार थे!

• सुरेश रामभाई
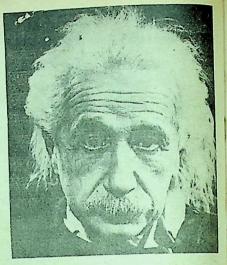
वे मुंह में पाइप लिये ठाठ से धुआं छोड़ रहे थे।

संगीत शुरू हुआ। पश्चिम के महान संगीतज्ञ बाख की तर्ज चल रही थी।

थोड़ी देर में ही सुननेवाले गद्‌गद हो गये। हंस-हंसकर दाद देने लगे।

आइंसटाइन संगीत के जानकार रसिक थे। वे भी मस्ती में झूमने लगे। उनके बगल में एक अपरिचित युवक एकदम सुन्न बैठा था, मानों कान में रुई ठूंसकर आया हो।

आइंसटाइन ने धीमे-से उसके कान में पूछा, "तुम्हें बाख का संगीत पसंद नहीं है क्या ?"

युवक सहम उठा। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या जवाब दे। उसने आइंसटाइन का नाम सुना था। अखबारों में और टी.वी. पर उनके चित्र बीसियों बार देखे थे। वह उन्हें खूब पहचानता था।

उसने जवाब देने की कोशिश की— "बात यह है..."

इतना कहकर वह रुक गया। आइंसटाइन अपनी अनोखी आंखों से उसे देख रहे थे। उनके अंदर से अद्‌भुत प्यार झलक रहा था। ऐसा अपनत्व युवक ने अपने पिता की आंखों में ही देखा था। उसका रोम-रोम श्रद्धा से भर गया।

उसने महसूस किया कि उनके आगे वह झूठ नहीं बोल सकेगा।

हिम्मत बटोरकर उसने कहा, "मैं बाख के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैंने उनका संगीत कभी नहीं सुना।"

आइंसटाइन को मानो जबरदस्त धक्का लगा। अचंभे से उन्होंने पूछा, "बेटा, क्या तुमने बाख का आनंद कभी नहीं उठाया ?"

उनकी वाणी से जैसे दर्द निकल रहा था। उस युवक को लगा, मानो उसके पिता पूछ रहे हों कि 'बेटा, क्या तूने बाथ (स्नान) तक का आनंद नहीं लिया ?'

युवक का दिल धुकुर-पुकुर कर रहा था। उसने जल्दबाजी में जवाब दिया, "ऐसा नहीं कि मैं बाख को पसंद नहीं करना चाहता....। लेकिन भैंस के आगे बीन बजाने से क्या फायदा ? मेरी स्थिति कुछ ऐसी ही है। मैंने कभी किसी तरह के संगीत का आनंद नहीं लिया।"

यह सुनकर आइंसटाइन और भी आहत हुए। उनके चेहरे से ऐसा लगा, मानो कोई बड़ी प्यारी जरूरत की चीज खो गयी हो। पलभर उन्होंने कुछ सोचा, उठे और फिर उस नौजवान के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "क्या तुम मेरे साथ आ सकते हो ?"

वह खड़ा हो गया। आइंसटाइन ने उसकी बांह पकड़ी और उस बड़े कमरे को दबे पैरों से पार किया। युवक उनके कदम से कदम मिलाकर बढ़ने लगा। उसकी निगाह नीचे बिछे बढ़िया कालीन पर थी। लोगों ने धीमी आवाज में आपस में कहा कि 'माजरा क्या है ? आइंसटाइन-जैसा संगीत का रसिक और मर्मज्ञ इस तरह उठकर चल दिया, शायद उस लड़के का कुछ काम करना होगा।' आइंसटाइन ने उस फुसफुसाहट पर कोई ध्यान नहीं दिया।

वह अपने युवा मित्र का हाथ पकड़े उसे ऊपर ले गये। एक कमरा खोला। वहां संगीत के तरह-तरह के बाजे सजे हुए थे।

उन्होंने युवक का हाथ छोड़कर, उससे बैठने को कहा। फिर एक दुःखभरी मुसकान के साथ उसकी तरफ देखकर बोले, "बेटा, मुझे बता सकते हो कि संगीत के बारे में इस तरह की भावना तुम्हारे अंदर कब से है ?"

नौजवान ने बेचैनी के साथ कहा, "जिंदगीभर से समझिए। लेकिन मेरी विनय है कि आप मेरी खातिर परेशान न हों, और नीचे सबके साथ संगीत सुनें।... मुझे उसमें आनंद नहीं आने से किसी का क्या बिगड़ता है ?"

उन्होंने इस तरह सिर हिलाया, मानो वह नासमझी से कुछ कह रहा है। आइंसटाइन के बाल घने और खुले थे, सफेद और सुंदर। बाल भी हवा में उड़कर उनकी वेदना की गवाही दे रहे थे :

उनके एक हाथ में पाइप था, दूसरा हाथ बालों पर फेरते हुए उन्होंने फिर पूछा,

"यह बताओ कि कोई भी गीत या संगीत ऐसा है, जो तुम्हें पसंद हो ?"

"वही मामूली गाने, जो सड़कों पर लड़के-लड़कियां गाते फिरा करते हैं।"

यह सुनकर उनके चेहरे का रूप एकदम बदल गया। उन्होंने कहा, "तो फिर कोई गाना सुनाओ।"

युवक ने एक गाना सुना दिया।

आइंसटाइन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने आलमारी में से

संगीत का कार्यक्रम ... संगीतज्ञ बाख की तर्ज चल रही थी। सुननेवाले गद्गद। आइंसटाइन भी आनंद से झूम रहे थे। लेकिन उनके पास बैठा एक युवक एकदम सुन्न था। आइंसटाइन ने कुछ ऐसा किया कि जब कार्यक्रम समाप्त हुआ, तब वह भी आनंदविभोर हो तालियां बजा रहा था।

ग्रामोफोन निकाला। फिर रेकार्ड लगाया। और रेकार्ड खत्म होने पर उन्होंने कहा, "यह गाना पसंद आया! सुना सकते हो?"

युवक ने उसकी दो पंक्तियां सुना दीं। आइंसटाइन का चेहरा खुशी से चमक उठा और वे बोले, "देखा बेटा तुमने! तुम्हारे कान कितने संगीत-प्रिय हैं।"

युवक ने बहस की, "यह गाना मैं बहुत बार सुन चुका हूं। इसलिए आपको सुना दिया। लेकिन इस आधार पर मेरी संगीतप्रियता सिद्ध करना अन्याय है।"

"मूर्खता मत करो। इससे सब कुछ सिद्ध होता है। तुम्हें स्कूल में पढ़े अपने गणित के पहले पाठ की याद है?"

"जोड़ना-घटाना था उसमें।"

"ठीक कहते हो। लेकिन अगर तुम्हारी शिक्षिका तुम्हें उसी वक्त सही-बटे और दशमलव का सवाल हल करने को देतीं, तो क्या तुम कर लेते ?"

"हरगिज नहीं!"

"ठीक! अगर शिक्षिका वैसा करतीं तो तुम घबड़ा जाते और आगे कभी भी गणित में प्रगति नहीं कर पाते। अपनी शिक्षिका की एक छोटी-सी भूल की वजह से तुम जीवनभर सही-बटे और दशमलव के आनंद से वंचित रह जाते। कोई भी शिक्षिका पहले दिन वैसी मूर्खता नहीं करेगी। वह धीरे-धीरे तुम्हारा क्षेत्र बढ़ाएगी और बाद में सही-बटे और दशमलव पर पहुंचा देगी।"

"जी हां, निश्चय ही।"

"यही हाल संगीत का है। यह गाना, जो तुमने गाया; वह मामूली जोड़ने-घटाने के सवाल-जैसा है।" कहते हुए उन्होंने रेकार्ड लगाया। कुछ देर बजाकर रुक गये और बोले, "बेटा, अब इसे सुनाओ।"

उसने ठीक-ठीक सुना दिया। आइंस-टाइन के चेहरे से ऐसी गुलाबी आभा झड़ रही थी, वे बोले, "बहुत अच्छे बेटे, बहुत अच्छे!"

इसके बाद उन्होंने कई रेकार्ड लगाये और हर एक के बाद उस युवक से उसकी दो-चार पंक्तियां सुनते रहे। वह युवक भी मन ही मन यह सोचता रहा कि इस महापुरुष के साथ मेरा वास्ता इत्तफाक से पड़ गया, लेकिन वह मुझमें ऐसे व्यस्त हैं, मानो दुनिया में मेरे सिवा उनका कोई और है ही नहीं।

उन्होंने बारहवां रेकार्ड लगाया और उसकी धुन भी उस युवक से सुनी। अंत में उन्होंने कहा, "मेरे मित्र! अब तुम्हें बाख का आनंद लेने में दिक्कत नहीं आएगी। चलो, नीचे चलें।"

संगीतवाले अंतिम राग की तैयारी में लगे थे। आइंसटाइन धीमे-से मुसकराये और नौजवान की पीठ थपथपाकर बोले, "अब सुनते रहो।"

जब कार्यक्रम खत्म हुआ, तब सबके साथ उस नौजवान ने भी सच्चे दिल से ताली बजायी। उसी समय गृह-स्वामिनी आकर बोलीं, "डॉ. आइंसटाइन, मुझे खेद है कि संगीत का काफी हिस्सा आपने 'मिस' कर दिया।"

आइंसटाइन ने कहा, "मुझे भी इसका अफसोस है। लेकिन मेरा यह नौजवान दोस्त और मैं ऊपर चले गये थे और वहां हम दोनों उस उच्चतम प्रवृत्ति में डूब गये, जो मानव के लिए संभव हो सकती है।"

महिला भौचक्की रह गयीं और बोलीं, "वाकई में? और वह प्रवृत्ति क्या है?"

आइंसटाइन हंसे और अपने युवक मित्र के कंधे पर अपना हाथ रखकर बोले, "सौंदर्य के क्षितिज के एक और अंग को खोल देना।"

—१५७, उत्तराखंड, जवाहरलाल नेहरू-विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली—११००६७

अमरीकी लेखक फ्रेंक डी फेलिटा पुनर्जन्म में कतई विश्वास नहीं करते थे, लेकिन उनके साथ एक ऐसी घटना घटी कि उन्हें उस पर विश्वास करना पड़ा। हुआ यह कि एक शाम वह अपनी पत्नी के साथ बैठे थे कि उन्हें एकाएक अपने पियानो पर बहुत ही कुशल संगीत सुनायी पड़ा। देखा कि उनका छह साल का लड़का पियानो बजा रहा है। जबकि बच्चे ने इससे पहले कभी पियानो छुआ तक नहीं था। लड़के ने बताया कि 'मेरी अंगुलियां अपने आप ही चल निकली थीं।'

उन्होंने ओझाओं, मनोवैज्ञानिकों से विचार-विमर्श किया तो उन्होंने बताया कि यह पुनर्जन्म का मामला है, बच्चा पूर्वजन्म में कोई कुशल संगीतकार रहा होगा। डी फेलिटा को पुनर्जन्म पर विश्वास करना पड़ा और उन्हें इसी विषय पर 'द रिइनकार-नेशन ऑव औड्रे रोज' नामक उपन्यास लिखने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह उप-न्यास बेहद बिका और इस पर बनी फिलम भी बहुचर्चित हुई।

व्यंग्य

पुस्तकें प्रेताविष्ट

● अनामिका

एक छोटे-से शहर की पतली-सी गली के ठीक सामने लाल पत्थरों की एक विशालकाय भुतही इमारत थी, जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में खुदा था– 'थियासॉफिकल लॉज ।' उसके संरक्षक भूरी मूंछों और फटी-फटी आंखोंवाले श्री बर्टन थे । रोज शाम ठीक सात बजे वे घर से सज-संवरकर आते थे, नजाकत से ताले में चाभी डालते थे और दरवाजों से जोरदार जमहाई लेकर अंगड़ाई की मुद्रा में बांहें पसार देने पर बहुत ही विनम्र भाव से हॉल के बीचों-बीच पीली रोशनी में बैठ कुछ-कुछ सोचा करते थे । चारों ओर लकड़ी की आलमारियों में धूलसिक्त मोटी-मोटी किताबें कनखियों से उन्हें देखा करती थीं, पर उन्होंने इन किताबों से आंखें मिलाने की चेष्टा कभी नहीं की । परम सतर्कता से वे लोगों की राह देखते थे । कभी कोई नहीं आता था । नौ-साढ़े नौ के करीब हैट वापस सिर पर डाल, छड़ी से रास्ता टटोलते हुए घर लौट जाते थे ।

आलमारियों के सिर पर घोंसले बनाकर कुछ रूहें रहा करती थीं— लेखकों की रूहें—परकटी और बेचैन । कुछ 'क्रांतिकारी' कुछ कर गुजरने का हौसला मन में दफनाये खुदा को प्यारे हो गये थे । उनमें एक थे कवि महोदय । उनके समूचे चेहरे में बस आंखें ही थीं— डबडबायी-सी । दूसरे, समालोचक-शिरोमणि थे । उनके पूरे चेहरे में चढ़ी-चढ़ी-सी नाक के सिवा कुछ नहीं था । तीसरे थे कहानीकार, जिनका न सिर था, न पैर, बस दो तगड़े हाथ थे, जो हर चार दिन बाद एक नये नारे के समर्थन में फड़क उठते थे । नंबर चार थे एक प्रकाशक महाशय, जिनके शरीर के नाम पर एक तोंद भर थी और जिन्हें हमेशा हाजमा खराब होने की शिकायत बनी

> अचानक देवीजी के मन में एक अपूर्व सूझ जगी । बहुत दिनों से कुछ बोली नहीं थीं । जीभ बेकार पड़ी-पड़ी ऐंठ रही थी । बहुत श्रम से उसे सीधा किया और जोरदार हांक लगायी । . . . तीनों दौड़े-दौड़े आये । उन्होंने गला-साफ किया और मुसकरा कर बोली . . . "तो आखिर मैंने आपके गहन दुःखों का निदान पा ही लिया । . . . "

रहती थी । नंबर पांच एक निबंधकर्त्ता थीं । उनके चेहरे में केवल दो होंठ जड़े थे—गहन दर्शन की टकसाली लिपिस्टिक से रंजित-अनुरंजित, जो बोलते कम थे, बुदबुदाते ज्यादा थे ।

और इसी कम बोलने, ज्यादा बुद-बुदाने की अबूझ दार्शनिकता के कारण उन्हें सर्वाधिक बौद्धिक समझा जाता था । उनकी इज्जत सबसे ज्यादा की जाती थी । उन्हें देखते ही कवि महोदय की आंखें भावावेश में जरा और पनीली हो जाती थीं, समालोचक शिरोमणि की नाक कुछ ढीली पड़ जाती थी और कहानीकारजी शरमाकर उंगलियां चटकाने लगते थे । प्रकाशकजी की बात जाने दीजिए । उन्हें दिनभर एक स्वप्नभरी नींद सोने के सिवा किसी चीज में दिलचस्पी नहीं थी । देवीजी का इतना लिहाज वैसे तो बहुत-से कारणों का प्रतिफल था, पर कारणों में प्रमुखतम यही कहा जा सकता है कि अपने जीवनकाल में इन्होंने इन तीन 'मनीषियों' पर एक शोधात्मक निबंध किसी प्रतिष्ठित पत्रिका में छपवा डाला था, जिसके ये बेहद कृतज्ञ थे । कलाकार और चाहे जो हों, कृतघ्न नहीं होते ।

उस रात पीट-पीटकर पानी पड़ा, जोर-जोर से बिजली चमकी । कवि महो-दय उड़कर वातायन पर जा बैठे और बादलों की रेल-पेल पर आंखें जमा दीं । कहानीकारजी खिड़की पर जमे और परम सतर्कता से बिल्लू बावर्ची का अपने ढाबे में तुड़मुड़कर बैठे रिक्शावालों को कूद-कूदकर गरम लिट्टियां परोसना निहारने लगे । समालोचक-शिरोमणि बंद दरवाजे से टिके खड़े कभी तो इनकी बेहूदगियों पर नाक सिकोड़ रहे थे और कभी कोने में देवीजी की जलायी अगर-बत्तियों की गंध सुड़कते हुए मदहोश हो रहे थे । प्रकाशकजी खर्राटे खींच रहे थे ।

अचानक देवीजी के मन में एक अपूर्व

सूझ जगी। बहुत दिनों से कुछ बोली नहीं थीं। जीभ बेकार पड़ी-पड़ी ऐंठ गयी थी। बहुत श्रम से उसे सीधा किया और जोर-दार हांक लगायी। प्रकाशकजी ने करवट बदली और बाकी तीनों दौड़े आये। उन्होंने गला साफ किया और मुसकराकर बोलीं, "तो आखिर, मैंने आपके गहन दु:खों का निदान पा ही लिया। आप लोगों की प्रमुख समस्या यही थी न कि आपका समुचित प्रचार-प्रसार हो पाये, इसके पहले ही आप चल बसे। आपकी किताबें संदूकों-आलमारियों में उपेक्षित पड़ी रहती हैं। कोई आपको पढ़ता नहीं। आपकी वर्षों की साधना बेकार गयी। 'अपहचान' की इस दुर्वह स्थिति से निबटारा असंभव नहीं। जी, इसका उपाय है, चूहों से दोस्ती। साहित्य के समुचित प्रचार-प्रसार में चूहों का हमेशा से महत्त्व-पूर्ण स्थान रहा है। निर्विकार भाव से कहीं से कुछ कुतुरकर कहीं उगल देने में इन्हें महारत हासिल है। पूंछ नचाते सरपट-सरपट सारी दुनिया में दौड़ते हैं और पैर बांधने पर उछल-कूद भी कम नहीं मचाते। 'कुट-कुट-कुट' की अविराम करतल-ध्वनि से आकाश सिर पर उठा लेते हैं, वह सो अलग। शोर और उछल-कूद की राज-नीति सभी नीतियों से अधिक कारगर होती ही है। देखते-देखते एक दिन वे दुनिया के सरताज हो जाते हैं और उनके मुंह से जो कुछ भी निकलता है, ब्रह्म-वाक्य होता है। इसलिए पहले से ही अपने प्रति उनकी धारणा, दोस्ती-वोस्ती पुख्ता किये रहने में भलाई है। यह तो दूरवर्ती लाभ हुआ। दोस्ती से तत्काल लाभ यह होगा कि दांतों से खींचकर आपकी किताबें किसी भी ढेर में सबसे ऊपर कर देंगे। नजर पड़ेगी तो लोग कम-से-कम उलटेंगे जरूर . . .।"

इसी तरह भिन्न-भिन्न योजनाएं पारित होती रहीं और रात ढल गयी। सुबह होने को आयी तो दीमकों की प्रिंटवाली धूल की दुलाई ओढ़ अपनी-अपनी किताबों की फ्लैप में लेखक जा घुसे और अर्द्धनिद्रा में तरह-तरह के खुशनुमा सपने लगे देखने। तभी चरमराकर दरवाजा खुला और श्री बर्टन के सुपुत्र भीतर आये। पिछली रात जुए में काफी-कुछ हार चुके थे। पॉकेट-खर्च के लिए रुपयों की 'सख्त' जरूरत आ पड़ी थी, तो चुपके से पिता की जेब से थियोसॉफिकल लाज की चाभी उड़ा लाये थे कि रद्दीवाले को बेकार पड़ी किताबों के कुछ ढेर बेच सकें।

किताबों के साथ-साथ लेखकों की आत्माएं भी तराजू पर तुलीं और रुपये किलो के भाव से बिक गयीं। चिद्दी-चिद्दी कर उन्हें गलाया गया और जब मशीन के बाहर आयीं, तो वे महीन, कोरे कागज का एक लंबा-चौड़ा शीटभर थीं। उनकी कॉपियां बनीं और उनके पहले पन्ने पर किसी सरकारी स्कूल शिक्षक महोदय ने श्रुतिलेख लिखाया—'लेखक मानव-मूल्यों के सजग सांस्कृतिक प्रहरी हैं। पुस्तकें समाज का दर्पण और हमारा सच्चा धन हैं।'

—अनिकेत, मुजफ्फरपुर

कीलें

कीलें ठोक-ठोक कर
खिड़कियां बंद कर दी गयी थीं
मोटे-मोटे ताले लगाने के बाद
दरवाजों पर थालियां रख दी गयी थीं
कि
हलकी-सी सिहरन होने पर वे गिर जाएं
और
चोर डरकर भाग जाएं
खिड़कियां बंद ही रहीं
उनको खोलने की जरूरत ही न पड़ी
थालियों ने न जाने कितना शोर मचाया
बेसहारा दरवाजों ने अपने को
लुटते-टूटते देखा
और डरे हुए लोग देखते रह गये--
आज चोर नहीं, डाकू आये थे !
सब कुछ लूटा उन्होंने,
जेवर, पैसे, इज्जत . . .
और
जो लूट न सके
उसे तोड़ डाला !
सत्तर साल की बूढ़ी मां
एक ही प्रहार से मृत
देखती रही खुली आंखों से
पूरा घर गूंगा हो गया था--
चीखते-कराहते लोगों के बीच !
हां वे, गूंगे थे
क्योंकि
उनकी आवाजों में जान नहीं थी
बाहर लोग सुनकर भी चुप थे
शायद वे बहरे हो गये थे !
या
निर्विकार, निराश्रित और
निर्बोध बालक
या अभिशप्त संस्कृति के स्वर्ण-स्तंभ !
गूंगे और बहरों के बीच
चोर नहीं, डाकू पनपते हैं
और फिर
ऐसे में आदमी सड़ने लगे
तो बुरा भी क्या है !
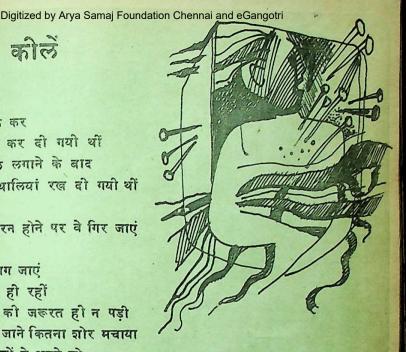
—शिवशंकर अवस्थी

एफ-१२, जंगपुरा एक्सटेंशन,
नयी दिल्ली-११००१४

हंसाइयां

एक विवाहित महिला ने कुंआरी को अपनी परेशानी का कारण बताया, "मैं अपने पति को पिछले दस घंटे से ढूंढ़ रही हूं, कहीं पता ही नहीं चल रहा।"

"ओह ! आप तो दस घंटे से ही ढूंढ़ रही हैं। मैं तो पिछले बारह वर्षों से ढूंढ़ रही हूं।" —नरेशकुमार बंका

"तुम एक पुलिस कर्मचारी हो, इसलिए तुम्हें वर्दी पहनकर ही थाने में आना चाहिए, वरना लोगों में तुम्हारे चरित्र की पोल खुल सकती है !"

व्यंग्य-चित्र : ल. अशोक

होटल में खाना खाने के बाद वेटर से क्षमा मांगते हुए ग्राहक ने कहा, "आज गलती से मेरा बटुआ घर पर रह गया है, इसलिए खाने का बिल मैं जब अगली बार आऊंगा, तभी दे दूंगा।"

"ठीक है, हम आपका नाम दीवार पर लिख देते हैं, जब आप बिल चुका देंगे, तब हम आपका नाम मिटा देंगे।"

"इससे तो लोग मेरा नाम पढ़ेंगे और मेरी बदनामी होगी।"

"लोग कैसे पढ़ेंगे? उस पर तो आपका कोट टंगा होगा।"

—मंजु भाटिया

☆

"नियुक्ति के एक माह बाद ही तुम्हें निकाल दिया गया?"

"हां"

"क्यों?"

"मेल नहीं हुआ।"

"किससे? मालिक और तुम से।"

"नहीं, कैश-बुक और कैश में।"

—पूर्णिमा डेजी

☆

रोगी: अब मुझे पता चला कि छोटी-मोटी खांसी के भी भयंकर परिणाम होते हैं।

डाक्टर: वह कैसे ?

रोगी: आपका बिल देखकर।

—जोगेन्द्र पाल

"पूरी ट्रेन में सबसे अधिक शोर इंजन का होता है।"

"नहीं, इसका मतलब यह है कि तुमने ट्रेन का जनाना डिब्बा देखा ही नहीं।"

★

एक सब्जी-विक्रेता के घर बच्चा हुआ। बधाई देनेवाले एक व्यक्ति ने पूछा, "बधाई हो, बच्चा कैसा है?"

"एकदम ताजा है, भैया," सब्जी-विक्रेता ने कहा!

—श्याममनोहर व्यास

★

कवि-पुत्र ने अपने पिता से कहा, "पिताजी! आज मैंने होमवर्क नहीं किया है।"

"तो मैं क्या करूं?"

"आप कोई 'वीर-रस' की कविता सुना दीजिए, ताकि मैं स्कूल जा सकूं।"

★

एक दल-बदलू नेता से पत्रकार ने पूछा, "आप अपनी पत्नी को महान समझते हैं या प्रेमिका को?"

"मैं तो सिर्फ इतना जानता हूं कि पत्नी को 'वर्तमान दल' एवं प्रेमिका को 'विचाराधीन दल' मानता हूं!

—मदनलाल अग्रवाल

★

चोर की सजा पूरी हो रही थी और अगले दिन वह रिहा होने वाला था। उसके एक साथी ने पूछा, "जेल से निकलते ही पहला काम तुम क्या करोगे?"

"एक टॉर्च खरीदूंगा, क्योंकि पिछली बार मैंने अंधेरे में बत्ती के बजाय रेडियो का बटन दबा दिया था।"

—कमल सौगानी

कुटुंब

वसुधैव कुटुंबकम्
युगों से हमारा मूलमंत्र रहा है
यानी वसुधा एक कुटुंब है
(अथवा) कुटुंब ही वसुधा है!

बिकनी

भावों के सागर में
डूबती-उतराती हैं
इसीलिए प्रायः वह
बिकनी में नजर आती हैं!

कराटे

कराटे का युग आ गया है
अतः आप पाएंगे
हाथ मिलाने की जगह लोग अब
'नमस्ते' का ही
आदर्श अपनाएंगे!

शहीदों की भूमि

वे बताते हैं,
'अस्पताल भी शहीदों की भूमि है
यहां भी लोग
गोलियां खाते हैं'

—डॉ. सरोजनी प्रीतम
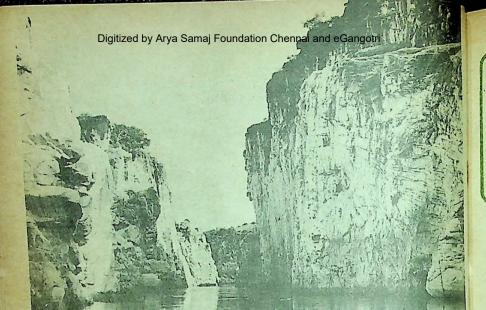
अंगुलियां जो पत्थर में सौंदर्य ढालती हैं

● दिनेश खरे

जिन्होंने जबलपुर का नाम सुना है, उन्होंने जबलपुर से २३ किलोमीटर दूरी पर स्थित प्रकृति की अद्‌भुत कृति—संगमरमरी चट्टानों को अपने आगोश में अभिषंगित किये भेड़ाघाट का नाम भी अवश्य सुना होगा। रेवा तटवर्ती इस स्थान पर प्रकृति द्वारा निर्मित धारवाड़ समूह (आर्कीयन ग्रुप) की ये संगमरमरी शैल-श्रेणियां सारे भारत में अपने आप में एक अजूबा हैं। एक उत्तम सैलानी-स्थल के अलावा भेड़ाघाट की एक और विशेषता है कि यहां पर संगमरमरी चट्टानों के बीच बने पॉकेटों में मिलने-वाले गोरा पत्थर (सोप-स्टोन) को स्थानीय निवासियों की कलात्मक अंगुलियों ने मूर्तियों में तराश दिया है। जिन सैलानियों ने जबलपुर-भ्रमण के दौरान गोरा की इन मूर्तियों का अवलोकन किया है, उन्होंने दांतों-तले अंगुलियां अवश्य दबायी हैं। कारण यह कि भेड़ाघाट में मिलने-वाले भुरभुरे किस्म के गोरा को इतना आकर्षक स्वरूप देना असंभव नहीं, तो दुष्कर अवश्य है।

भारतीय सभ्यता में मूर्तिकला का स्थान सर्वोपरि रहा है। हिंदु धर्म की मूर्ति पूजा की धारणा ने इतिहास के पन्नों में

नर्मदा का धुंआधार प्रपात : पंचवटी भेड़ाघाट

जबलपुर के पास रेवा के तट पर प्रकृति द्वारा निर्मित संगमरमरी शैल-श्रेणियां सारे भारत में अपने आप में एक अजूबा हैं। इन शैल-श्रेणियों के बीच पाये जानेवाले गोरा पत्थर से भेड़ाघाट के कलाकार ऐसी कलात्मक मूर्तियों का निर्माण करते हैं, जिन्हें देखनेवाले दांतों-तले अंगुली दबाये बिना नहीं रह सकते . . .

विलुप्त राजवंशों को देवी-देवताओं की कलात्मक मूर्तियां बनाने को प्रेरित किया था। अशोक के समय से बननेवाली मूर्तियां कलचुरी वंश और उसके कुछ बाद तक राजवंशों के आकर्षण का केंद्र रही हैं। जबलपुर नगर कलचुरी वंश के कार्य-कलापों का एक प्रमुख स्थल रहा है और जबलपुर से १४ किलोमीटर दूरी पर बसे वर्तमान तेवर गांव के आसपास बिखरे त्रिपुरी के भग्नावशेषों का मिलना इस तथ्य का द्योतक है कि मूर्तिकला और स्थापत्य-कला कलचुरी समय में अपनी चरम सीमा पर थी। भेड़ाघाट के पास बनी पहाड़ी पर स्थित चौसठ योगिनी का मंदिर कलचुरी वंश की मूर्तिकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। शायद उसी समय से भेड़ाघाट और उसके आसपास के क्षेत्रों में मूर्तियों का सृजन प्रारंभ हुआ होगा। फिर यह कला शनैः-शनैः आर्थिक कारणों से सस्ते गोरे में गढ़ी जानेवाली

गोरा पत्थर में उत्कीर्ण लयात्मक सौंदर्य से परिपूर्ण कलाकृतियां

अग्रणी कलाकार : मदनप्रसाद सिन्हा

मूर्तियों में कायांतरित हो गयी होगी, ऐसा अनुमान किया जाता है।

भेड़ाघाट के पास उपलब्ध गोरा पत्थर, जो कि संगमरमर की प्रस्तर-शिलाओं में मिलता है, पृथ्वी के सबसे प्राचीन प्रस्तर-समूह—धारवाड़ की शृंखला में आता है। यह प्रस्तर समूह ही एक ऐसा समूह है व ऐसी उम्र का कि भूभौतिकविदों की धारणानुसार पृथ्वी पर उपलब्ध धातुएं इसी युग की बनी हैं। ऐसा कहा जाता है कि डोलोमाइट या चूना पत्थर का संगमरमर में कायांतरण (मेटामारफिज्म) इस क्षेत्र में कालांतर में पृथ्वी-संरचना की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न ताप से हुआ और यह ताप या गरमी नर्मदा के उभय पुलिनों पर स्तीर्ण धारवाड़ और अवसादी (सेडीमेंटरी) चट्टानों के बीच बनी बड़ी दरार या भ्रंश (फॉल्ट) के कारण पैदा हुई। इस ताप के प्रभाव से ही कायांतरण की क्रिया हुई। राजस्थान की अरावली पर्वत-श्रेणियां भी इसी धारवाड़ समूह के अंतर्गत आती हैं और यही कारण है कि राजस्थान के मकराना में मिलनेवाला संगमरमर भी इसी युग की देन है। जहां-तहां भी संगमरमर मिलता है, वह इसी युग का है।

करीब-करीब छह किस्म के संगमरमर सारे विश्व में पाये जाते हैं, जिनमें से पांच किस्में तो जबलपुर में ही उपलब्ध हैं। भू-भौतिकी की दृष्टि में जबलपुर में मिलनेवाला गोरा बुनावट (टैक्सचर), रंग व चट्टानों की आकारादि की दृष्टि में उच्चकोटि का नहीं है, इसलिए इससे बड़ी मूर्तियां नहीं बनायी जा सकतीं।

भेड़ाघाट की मूर्तिकला

भेड़ाघाट में श्री मदनप्रसाद सिन्हा मूर्तिकला को समर्पित व्यक्ति हैं। उन्होंने बताया कि १९५८ में जिस समय वह भेड़ाघाट आये, उस समय उनकी मुलाकात वहां के सबसे बड़े बुजुर्ग ८० वर्षीय श्री कन्हैयालाल तिवारी उर्फ कंदी दादा से हुई। वह यहां पर पिछले ६५ वर्षों से मूर्तियां बनाने का कार्य कर रहे थे, लेकिन उनकी मूर्तियां मात्र शंकरजी की बटइयां और पेपरवेट तक ही सीमित थीं। कंदी दादा के समकक्षी साठ वर्षीय जोखू और ५० वर्षीय भूरे मास्टर थे, जो इन मूर्तियों के अलावा कभी-कभी नंदी और छोटे-छोटे हाथी भी बनाया करते थे। ये हाथी करीब पिछले ७५ वर्षों

साठ वर्षीय कलाकार कमलसिंह

से भेड़ाघाट में बनते चले आ रहे हैं। हाथी को छोड़कर अन्य पारंपरिक मूर्तियां बनना अब करीब-करीब बंद हो गया है।

भेड़ाघाट में रहनेवाले मुसलमान एगेट पत्थर को सान पर घिसकर गुरियां (बीड्स) बनाया करते थे। जबलपुर के काफी मुसलमान अभी भी गुरियों से संबंधित मनिहारी का काम करते हैं।

पारंपरिक मूर्ति-सृजन के अलावा रोटी बेलने का चकला, बेलन, सामान रखने का डिब्बा, शंकरजी की बटइयां आदि क्यों बनाये जाते थे, इसका भी एक कारण है। जबलपुर-भेड़ाघाट मार्ग पर बसे तेवर गांव में फ्लेग-स्टोन (चीप) से रोटी बनाने का चकला, शंकरजी, बेलन, खंबे का बेस, नंदी आदि बनाये जाते थे। इस सामान को लड़िया नामक जाति बनाया करती थी, जिसने शायद यह नाम पत्थर के सिल-लोड़ा बनाने के कारण पाया हो। जबलपुर के सिल-लोड़ा आज भी प्रसिद्ध हैं।

भेड़ाघाट में आज भी ऐसे कई व्यक्ति मिल जाएंगे, जो आकर्षक मूर्तियों के निर्माण में लगे हैं। इनमें शेख करीम खां, रहमान खां, करनसिंह, गोपी शर्मा, डोरीलाल, सुखलाल, गोपालप्रसाद और उप-सरपंच प्रतापसिंह प्रमुख हैं। इनमें करीम खां, गोपी शर्मा व डोरीलाल का काम देखते ही बनता है। गणेशसिंह नामक एक संगतराश ने प्लॉस्टर ऑव पेरिस का काम भी प्रारंभ किया, जो भेड़ाघाट के लिए नया है। अब आपको खजुराहो

खजुराहो के बाह्य मंडपों पर अलंकृत अप्सराओं की अनुकृतियां

के मंदिरों के बाह्य-मंडपों पर खुदी मूर्तियों की 'इरॉटिक' भाव-भंगिमाओं की मूर्तियां, पनिहारिन, वीनस, गौतम बुद्ध, अलंकरण में रत सुंदर बालाओं आदि की मूर्तियां भेड़ाघाट में मिल जाएंगी।

भेड़ाघाट के वर्तमान संगतराश

भेड़ाघाट में इस समय करीब १७५ परिवार के छह-सात सौ लोग मूर्ति-निर्माण के व्यवसाय में लगे हैं। इनमें सभी जाति और सभी उम्र के लोग हैं। एक संगतराश एक दिन में ३५ से ५० रु. कीमत की मूर्तियां बना लेता है, लेकिन बिक्री संतोषजनक नहीं होती।
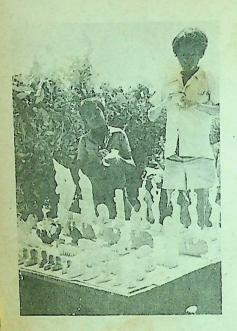
भेड़ाघाट की पारंपरिक कलाकृतियां अपने नन्हे कलाकारों के साथ

मूर्तियों का 'एक्सपोर्ट' नगण्य-सा है। कुछ व्यक्तियों ने भेड़ाघाट की मूर्तियों को बंबई और दिल्ली जाकर अवश्य बेचा है। हां, कुछ निर्यात करनेवाली संस्थाओं ने गोरा की मूर्तियों के निर्यात का बीड़ा उठाया, पर उन्हें भी काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा। इसका मुख्य कारण था, भेड़ाघाट में पत्थर का उत्खनन करनेवाली फर्मों व सरकार के बीच चलनेवाले विवाद के कारण गोरा की अनुपलब्धता। इतना ही नहीं, गोरा पत्थर की कीमत पिछले बीस वर्षों में काफी बढ़ गयी है। सन १९५८ में मिलने वाले १० रु. के गोरे की कीमत आज ३५ रु. प्रति क्विंटल हो गयी है और वह भी आसानी से सुलभ नहीं होता। बरसात में यह समस्या और भी ज्यादा स्याह हो जाती है। इन दिनों में एक तो, पर्यटकों का आवागमन करीब-करीब रुक जाता है। दूसरे, गोरा के उत्खननवाले क्षेत्र जल-प्लावन की स्थिति में पहुंच जाते हैं।

यदि गोरा उचित मूल्य पर नियमित रूप से मिलता रहे, तो न ही सिर्फ इन संगतराशों की रोजी-रोटी बरकरार रह सकती है, बल्कि मूर्तिकला और भी अभिनव रूप से विकसित हो सकती है।

अभी गोरा पर सिर्फ हाथ से काम किया जाता है। गोरा सस्ता होने पर और पूंजी बढ़ने पर मशीनों का उपयोग भी किया जा सकता है।

शासकीय सहायता

संगतराशों की समस्याओं की ओर शासन का ध्यान गया है और बीस-सूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत 'ट्रायसेम योजना' के मुताबिक प्रशिक्षण का प्रावधान रखा गया है। संगतराशों के पास सबसे बड़ी समस्या है पूंजी की, जिसको हल किया है जबलपुर की भारतीय स्टेट बैंक की शाखा ने, जिसने पिछले दो वर्षों में करीब ९६ परिवारों को तीन से छह हजार रुपये तक का ऋण देकर करीब तीन लाख रुपये की सहायता पहुंचायी है। इस ऋण की वजह से संगतराशों का व्यवसाय दोगुना हो गया है, और वे भविष्य के प्रति थोड़े आशान्वित हुए हैं।

भेड़ाघाट में मूर्ति-कला के विकास में आनेवाले अवरोधों को दूर करना अति आवश्यक है, जिससे कि वहां का संगतराश अपनी कला को ही विकसित करने में रत रहे और रोजी-रोटी कमाने के लिए कला को छोड़कर अन्य व्यवसाय में न चला जाए। इस प्रकार की स्थिति कुछ-कुछ जबलपुर के जुलाहों की हुई है और वे जुलाहों से मजदूर बन गये हैं। काश, ऐसा भेड़ाघाट के संगतराशों के साथ न हो जाए।

—१५९४, नेपियर टाउन, जबलपुर
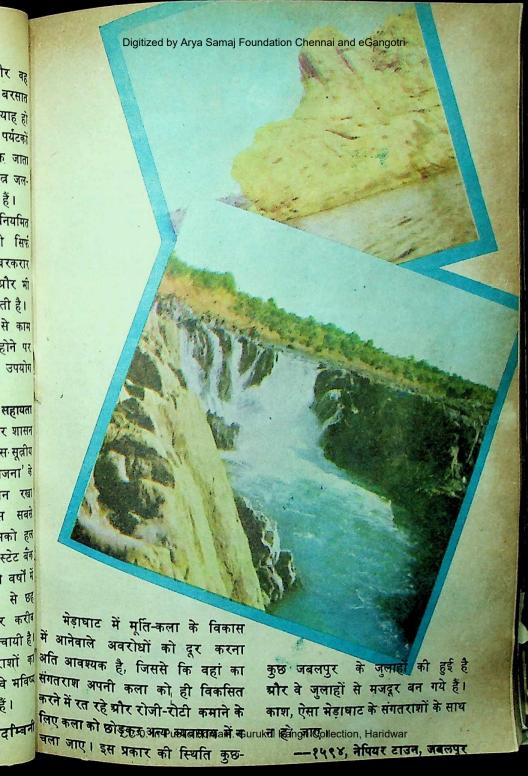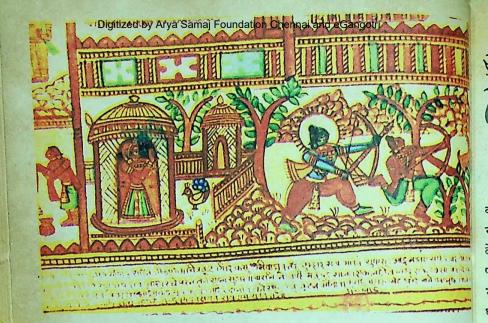
पड़-शैली में चित्रित रामायण के दो प्रसंग

राजस्थान की पड़-शैली में रामायण

• लक्ष्मण बोलिया
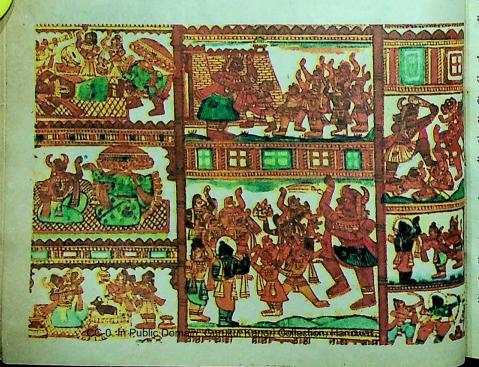
कलम, कूची और कपड़े की बहुरंगी पड़-शैली सदियों से मेवाड़ के भीलवाड़ा और शाहपुरा अंचलों की आभा रही है। पाबूजी, तेजाजी, रामदेवजी, देवनारायणजी आदि लोक-देवताओं की पड़ों पर चित्रित जीवन-गाथाएं, गायक भोपों की कंठहार बनी हुई थीं। हाथी-घोड़े, तीर-तलवार, मूंछे मरोड़ते रण-बांकुरे सरदार, राजा-रानी, देवी-देवताओं से युक्त चटख रंगों की, लोक-शैली में रची-बसी गाथाओं की, पड़ें, अब देश-विदेश की शान बन गयी हैं।

इतने वर्षों की चमक-दमक के बाद भी शोषण और उत्पीड़न के माहौल में जी रहे, इन लोक-कलाकारों में से अब तक नव सृजन का नीलकंठ कोई नहीं बन सका। चांदी के सिक्कों के लालच में उलझा कौन कलावंत अविराम साधना का गरल पीने को तैयार होता है?

लेकिन ढलते सूरज की उदास किरणें भी कभी-कभी अरुणांचल से छोड़ जाती हैं, एक अचीन्ही आकृति, जिसके आकार में जन्म ले लेता है, एक संकल्प-सवेरा। एक दिन ऐसे ही सूरज की किन्हीं कंचन-किरणों ने पड़-शैली के चितेरे रंगकर्मी के रोशनदान में झांका, तो संपूर्ण राम-चरित मानस कथा की १०८ लालित्यपूर्ण चित्र-कृतियों का निर्झर बह निकला।

उनतीस वर्षीय युवा शरमीले कलाकार प्रदीप मुखर्जी ने संत कवि तुलसी

ऊपर : विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा
मध्य : मारीच-सुबाहु-वध
नीचे : राम-वंदना

प्रदीप मुखर्जी

की रामचरित मानस को लोक पड़-चित्र-शैली में विविध रंगों और लोक आकृतियों की १०८ चित्र-मणियों की माला में पिरोकर सितंबर, १९८२ में जन-जन को समर्पित कर दिया है।

प्रतिदिन १० से १२ घंटों तक अविराम, आठ महीनों की संघर्ष-साधना की यह चित्र-कृतियां गढ़-चित्तौड़ के पास घोसुंडा गांव के परंपरागत हाथ से बने मोटे माधोपुरी सफेद कागज पर अंकित हैं। कहीं-कहीं तो आकृतियां इतनी सूक्ष्म हैं कि बिल्लौरी कांच की सहायता लेनी पड़ती है। लंका-दहन, राम-रावण-युद्ध, जटायु की व्यथा, लक्ष्मण-परशुराम-संवाद, सीता-स्वयंवर ही नहीं, रामायण की संपूर्ण घटनाएं ३० सेंटीमीटर लंबे और २० सेंटीमीटर चौड़े छोटे से कागज पर मनमोहक छवि के साथ जीवंत हो उठी हैं।

आकृतियां १० हजार से अधिक
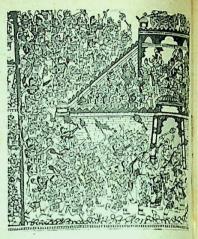
महाराजा जगतसिंह की कंचन-काय, प्रियतमा रस कपूर की मृत्यु से जुड़ी स्म नाहरगढ़ की ओर जानेवाली नाहर सड़क पर एक साधारण से, किराये के छ से दालान में प्रदीप मुखर्जी ने चित्र-साध की एवं राम को मन में बिठाकर, और कूची से उनके जीवन-वृत्त की कल्प को साकार रूप देने के लिए १०८ क कागजों में, १० हजार से अधिक आकृति उतारीं। किसी-किसी चित्र में तो १ से अधिक आकृतियां झांकती हैं। अ प्रत्यंगों के हाव-भाव और भाव-भंगि नदी-नाले, पहाड़ और वनों में जिस प्र के दर्शन कराये हैं, उससे आंखें फटी फटी रह जाती हैं। एक को छोड़कर स रंग वही हैं, जो प्राचीन पड़-शैली में परा से प्रयोग में लाये जाते हैं। भा में अवतारी भगवत-स्वरूपी लोकपुरुष जीवन-लीला को पड़-शैली में छोटे आ में चित्रित करने का यह प्रथम प्रयास

बातचीत के दौरान प्रदीप मुख
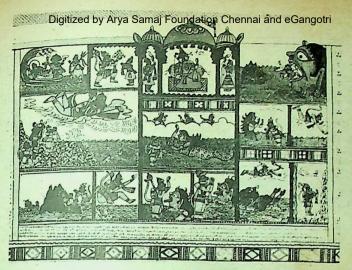
भावुक हो उठे। रुंधे कंठ से बोले, "चौकी पर बैठकर ही नहीं, सोते-जागते, हर पल, हर क्षण रामचरित मानस की चौपाई में दिखायी देती छवियों की कल्पना में खोया रहता। सपने में भी वही देखता, और जागते में भी वही। केवल राम, रामायण और कुछ नहीं। खाने-पीने की सुध भी तो नहीं थी। राम के पीछे पागल जो हो गया था, मैं! मानस के एक-एक दोहे को अनेक बार पढ़ता, कल्पना करता और बिना पेंसिल की सहायता के आकृतियां बनाता रहा।"

तिरस्कार का परिणाम

बाईस अगस्त, १९५३ को जयपुर में एस. मुखर्जी के बंगाली-परिवार में जन्मे श्री प्रदीप मुखर्जी को उनके पिता ने अपने पुत्रविहीन अनन्य मित्र भंवरलाल जैन को जन्म के तीन दिन बाद ही गोद दे दिया। श्री भंवरलाल, नये पिता, अपने दत्तक पुत्र को कलकत्ता ले गये। उनकी पत्नी ने प्रदीप को मां का भरपूर प्यार दिया। जैन-संस्कारों में कलकत्ता में ही पले-पोसे प्रदीप ने बी. कॉम पास किया। दुर्भाग्य से कारोबार में घाटा हो गया। पिता की आर्थिक हालत एकदम खराब हो गयी और एक दिन वे दुनिया से कूच कर गये। प्रदीप जैसे गये, वैसे ही सब-कुछ छोड़कर जयपुर लौट आये।

राजस्थान लघु-उद्योग निगम के तत्कालीन प्रबंध-निदेशक एवं वर्तमान जन-संपर्क निदेशक, श्री के. एल. कोचर ने प्रदीप को सहारा दिया।

पड़-चित्र कला के प्रति रुझान

मुखर्जी ने मुझे बताया, "पड़-शैली की सरलता व रेखाओं की संपन्नता पर मैं मुग्ध हो गया। जयपुर छोड़कर भीलवाड़ा गया, जहां इस शैली के प्रख्यात परंपरागत चित्रकार गुरु श्री लाल जोशी के सान्निध्य में ढाई वर्ष तक काम सीखा।"

—ई-१७९, संतोष सदन, सुभाष मार्ग, सी स्कीम, जयपुर-३०२००१

रोमन साम्राज्य के जमाने से यूरोप के लोगों की जुबान पर पूर्वी द्वीप समूह के मसालों का स्वाद चढ़ा था और दक्षिण-पूर्वी एशिया के इन द्वीप समूहों से चले मसाले जब मध्य एशिया के कठिन रास्ते से होकर एशिया माइनर को पार करके यूरोप पहुंचते थे, तो वे बेशकीमती हो जाते थे। दालचीनी, अदरक, कालीमिर्च वगैरह तब यूरोप में चांदी के भाव तुला करती थीं। सन १४३३ में जब एशिया और यूरोप की सीमा-रेखा पर स्थित कुस्तुनतुनिया नगर पर आटोमन तुर्कों का अधिकार हो गया, तब पूर्व को जानेवाले व्यापार-मार्ग संकटापन्न हो गये और पूर्व से आनेवाला माल, खासकर मसाले और भी मह और दुर्लभ हो गये। जमीन का व्यापा मार्ग संकटग्रस्त हो जाने पर समुद्र से हो जानेवाले वैकल्पिक मार्ग की खोज जरूरत यूरोप का हर देश महसूस क लगा।

कुतुबनुमा ने समुद्री द्वार खो

सौभाग्य से इसी समय कुतुबनुमा आविष्कार हो गया और उसकी सहाय से समुद्र-पार की यात्रा करना संभव गया। कुतुबनुमा के आविष्कार के प केवल तटीय समुद्र की यात्राएं ही हो पा थीं। पंद्रहवीं शती के अंतिम चरण में को बस ने और बाद में वार्थोलोम्यो दिया

● सुरेश मिश्र
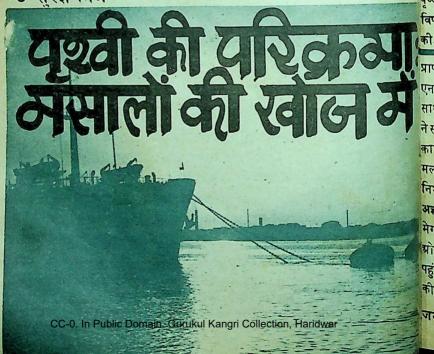
तथा जान कैबट ने समुद्र पार की जो यात्राएं की थीं, वे पूर्व के मसालों के द्वीपों के लिए निर्बाध समुद्री मार्ग खोजने के उद्देश्य से ही की गयी थीं। ये तीनों भारत नहीं पहुंच पाये, १४९८ में वास्कोडिगामा अफरीका का चक्कर लगाकर भारत पहुंचने में समर्थ हुआ और इसके बाद, पूर्व में व्यापार तथा साम्राज्य की स्थापना के लिए एक दौड़ शुरू हो गयी। सात साल बाद पूर्वी द्वीप समूह में व्यापार स्थापित करने के उद्देश्य से पोर्तगाल ने जो नौ-सेना भेजी, उसमें फर्डिनेंड मेग्लान नामक चौबीस वर्षीय एक सैनिक भी था। इस नौजवान ने इस प्रदेश की यात्राएं करके अनुभव भी प्राप्त किया और जब लौटा, तब साथ में एनरिक नामक एक मलय गुलाम भी साथ ले आया। आगे चलकर इसी मेग्लान ने समुद्री यात्राओं के इतिहास में एक रोमांचकारी अध्याय जोड़ा और इसमें उसके मलय गुलाम ने भी एक अहम भूमिका निभायी।

चौबीस वर्षीय युवा सैनिक मेग्लान एक मलय दास के साथ मसालों की खोज में पृथ्वी की परिक्रमा के लिए निकला। इस जोखिमभरी यात्रा में उसे अनेक तरह की विपत्तियों का सामना करना पड़ा। कोलंबस की ऐतिहासिक यात्रा के बाद मेग्लान की इस यात्रा ने अनेक देशों को झकझोरकर रख दिया था।

अज्ञात भविष्य को प्रस्थान

मेग्लान ने सोचा कि पोर्तगाल से पूर्व की ओर यात्रा करने पर पूर्वी द्वीप समूह तो पहुंचते हैं, पर यदि पृथ्वी गोल है, तो पश्चिम की ओर समुद्र में चलते जाने से भी पूर्वी द्वीप समूह पहुंचा जा सकता है। इस जोखिम-भरी यात्रा को संपन्न करने के लिए मेग्लान ने पोर्तगाल के तत्कालीन शासक मेनुएल प्रथम से एक जहाजी बेड़ा देने का निवेदन किया। जब पोर्तगाल के शासक ने सहयोग देने से मना कर दिया, तब मेग्लान ने पोर्तगाल के प्रतिद्वंद्वी स्पेन से सहायता मांगी और स्पेन के शासक ने इसकी अनुमति दे भी दी। स्पेन के साहूकारों ने आगे बढ़कर पांच जहाजों के बेड़े की व्यवस्था कर दी, क्योंकि उन्हें इस यात्रा की सफलता के बाद मसालों के व्यापार में बहुत लाभ होने की उम्मीद थी। २० सितंबर, १५१९ को मेग्लान २६५ लोगों को पांच जहाजों में लेकर स्पेन से उस यात्रा पर रवाना हुआ, जिसके भविष्य का किसी को अनुमान नहीं था और जिससे जीवित लौटने की भी कल्पना किसी को नहीं थी। इन यात्रियों में एक इटालियन भी था—अंतोनियो पिगाफेता। इसने यात्रा का जो विवरण रखा, उसीसे लोगों को मेग्लान के अभियान की कहानी ज्ञात हुई।

यात्रा के कुछ समय बाद ही समस्याएं उभरनी प्रारंभ हो गयीं। साथ के एक जहाज के कप्तान कार्टागेना ने जब मेग्लान के नेतृत्व को चुनौती दी, तब उसे

मेग्लान ने गिरफ्तार कर लिया। ग्यारह सप्ताह की यात्रा के बाद मेग्लान का बेड़ा रायोडिजनीरो की खाड़ी में पहुंचा। यह दक्षिण अमरीका के ब्राजील में है। यहां दो सप्ताह तक विश्राम करके और रसद आदि लेकर, बेड़ा आगे चला। लगभग एक माह चलकर १० जनवरी, १५२० को बेड़ा वहां पहुंचा, जिसे आज रायोडि-लाप्लाटा कहा जाता है।

सफलता के द्वार पर

मेग्लान का विश्वास था कि जिस दिशा में वह यात्रा कर रहा है, वहां कोई ऐसी खाड़ी है, जो पश्चिम का द्वार खोलती है। रायो डि लाप्लाटा और उसके बाद मिलनेवाली हर खाड़ी की उसने इस दृष्टि से पड़ताल की पर सफलता हाथ नहीं लग रही थी। चट्टानी किनारों और तूफानों से टकराते हुए जहाजी बेड़ा चलता जा रहा था। यात्रा के साथ तकलीफें बढ़ती जा रही थीं और तकलीफें असंतोष को जन्म दे रही थीं। इस असंतोष की परिणति उस विद्रोह में हुई, जिसका नेतृत्व मेग्लान के विरोधी कार्टगेना ने किया। मेग्लान की तत्परता से विद्रोह का दमन कर दिया गया और कार्टगेना तथा उसके साथी को बंदी बना लिया गया। साथी को तुरंत मौत के घाट उतार दिया गया और कार्टगेना को भाग्य के भरोसे तट पर ही छोड़ दिया गया। २४ अगस्त, १५२० को जब मेग्लान ने सेंट जुलियन से लंगर उठाया, तब उसे स्पेन से निकले एक साल हो चुका था। उसका एक जहाज तूफान में नष्ट हो चुका था और दो कप्तान समाप्त हो चुके थे। आगे का समुद्र इतना तूफानी था कि दो माह तक मेग्लान आगे नहीं बढ़ पाया। दो माह बाद वह एक ऐसी खाड़ी में पहुंचा, जो पहाड़ों से घिरी थी और जिसका पानी गहरा और काला था। चार दिन तक मेग्लान के साथी खाड़ी का चप्पा-चप्पा छानते रहे कि शायद यही पश्चिम जाने का द्वार हो, पर भयंकर तूफान ने ऐसा संकट पैदा किया कि जहाजों के नष्ट होने की नौबत आ गयी। मुश्किल से जहाज बचाये जा सके और घनघोर निराशा के क्षणों में एकाएक खाड़ी का मुहाना आ पहुंचा, जहां से विशाल महासागर प्रारंभ होता था। मेग्लान की खुशी की सीमा नहीं थी। पश्चिम का द्वार उसे मिल गया था। जिस खाड़ी को उसने पार किया था, वह अब मेग्लान की खाड़ी के नाम से जानी जाती है। खाड़ी के बाद के महासागर के शांत पानी को देखकर उसने उसे प्रशांत महासागर कहा।

मंजिल सामने दिख रही थी, पर आगे की यात्रा के लिए रसद की कमी थी। इसी बीच मेग्लान के बेड़े के चार जहाजों में से एक जहाज जिसमें रसद का अधिकांश भाग था, धोखा देकर स्पेन लौट गया। अब कठिनाई और गंभीर हो गयी। पर मेग्लान अपने तीन जहाजों के साथ २८ नवंबर, १५२० को उस अनजान महासागर के विस्तार

भाग्य आजमाने चल पड़ा। उसे विश्वास था कि कहीं आगे मसाले के द्वीप और भारत तथा चीन हैं। उस अनंत जल-राशि में चलते-चलते मेग्लान को तीन माह बीत गये पर उसे ज्ञात नहीं था कि अभी महासागर का एक तिहाई भाग भी उसने पूरा नहीं किया है। रसद की कमी से यात्रियों में भुखमरी फैल गयी थी, उनके कपड़े तार-तार हो चुके थे और जहाज भी जीर्णशीर्ण हो चुके थे। प्रशांत महासागर में प्रवेश करते समय जो १९० लोग बचे थे, उनमें से १९ लोग प्रशांत की भेंट में चढ़ गये थे, और तब २४ जनवरी, १५२१ को वे सेंट पाल द्वीप पहुंचे। वहां कुछ विश्राम किया गया और रसद एकत्र की गयी। छह सप्ताह की यात्रा के बाद हालत यह हो गयी कि दो-तीन दिन से अधिक जीना यात्रियों के लिए असंभव था और तभी दैवयोग से एक खाड़ी में कबीले से उनकी मुठभेड़ हो गयी, जिसमें लूट के माल के रूप में यात्रियों को फ़ल, गोश्त और पानी का भरपूर भंडार मिल गया। इससे सभी को जीवन की आशा बंधी और अज्ञात की यात्रा जारी रही। फिर मिली द्वीपों की एक श्रृंखला, जो आज फिलिप्पाइंस के नाम से जानी जाती है। तब से फिलिप्पाइंस एक लंबे अरसे के लिए स्पेन का उपनिवेश बना रहा। पर मेग्लान को ज्ञात नहीं था कि वह मलय-द्वीप समूह के निकट पहुंच रहा है।

इस द्वीप समूह से गुजरते समय एक चमत्कारी घटना घटी। तट के कबीलों के

कोलंबस की ऐतिहासिक यात्रा

मित्रतापूर्ण बर्ताव से प्रोत्साहित होकर मेग्लान ने अपने गुलाम एनरिक को कबीलों के पास भेजा। उसने सोचा था कि गोरी चमड़ीवाले आदमी की तुलना में मलय गुलाम के प्रति ये कबीले अधिक सहृदय होंगे। एनरिक ने जब उन लोगों से बात प्रारंभ की, तब उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, उसने पाया कि कबीले की भाषा वही है, जो स्वयं एनरिक की है। मेग्लान समझ गया कि वह मलय लोगों के मध्य पहुंच चुका है। और अब यह पक्का हो गया कि पृथ्वी गोल है। वहां के राजा कलम्बू ने यात्रियों की बड़ी आवभगत की और अब मेग्लान फिलिप्पाइंस द्वीप समूह के सबसे बड़े द्वीप जेबू को चला। जेबू के राजा से न केवल मेग्लान ने दोस्ती कायम की, बल्कि राजा तथा उसके अनु-चरों को ईसाई धर्म अंगीकार करने के लिए तैयार कर लिया।

दुस्साहस ने जान ली

अभी तक मेग्लान को सफलताएं मिल रही थीं, पर दुर्भाग्य से उसके दुस्साहस ने उसे ऐसे संकट में डाल दिया, जो जानलेवा सिद्ध हुआ। हुआ यह कि जेबू द्वीप के पास मेक्टन नामक छोटा द्वीप था, जो जेबू का विरोधी था। एकाएक मेग्लान ने उसे नीचा दिखाने का निश्चय कर डाला और स्पेन की अद्वितीय ताकत का प्रदर्शन करने के लिए सिर्फ साठ आदमियों के साथ वह मेक्टन के निवासियों से भिड़ पड़ा। जिरह बख्तर से सुसज्जित होने के बावजूद मेग्लान और उसके साथी मेक्टन के लोगों के तीरों तथा भालों की मार न सह सके और मेग्लान समेत अनेक लोग मारे गये। यह बड़े दुर्भाग्य की बात थी कि जेबू के राजा द्वारा प्रस्तुत सैनिक सहायता स्वीकार न करके थोड़े से आदमियों के साथ मेक्टन पर धावा करने का अविवेकपूर्ण निर्णय मेग्लान ने लिया। मेग्लान की मृत्यु से यात्रियों को बहुत आघात लगा, पर मेग्लान के बाद जिन्होंने नेतृत्व संभाला, उन्होंने भी एक गलती कर डाली। उन्होंने मेग्लान के मलय गुलाम एनरिक से दुर्व्यवहार किया जिससे एनरिक रुष्ट हुआ और उसने जेबू के राजा से मिलकर उन नये नायकों को उनके अनुचरों समेत मरवा डाला। सौभाग्य से पिगाफेता तथा अन्य ११५ लोग जहाजों में बच भागे। एक जहाज जीर्ण होने के कारण, उन्होंने छोड़ दिया और अब सिर्फ दो जहाज अपने वास्तविक नेता के बिना चल रहे थे। मसालों का द्वीप समूह मलक्का कोई दूर नहीं था। पर मलक्का तक पहुंचने के लिए वे छह माह भटकते रहे।

मसालों के द्वीप

अंत में ये लोग ८ नवंबर, १५२१ को मसालों के द्वीप मलक्का में पहुंचे। मंजिल मिल चुकी थी, किंतु नेता खो गया था और डेढ़ सौ साथी तथा तीन जहाज भी रास्ते की भेंट चढ़ गये थे। फिर भी स्पेन के ये साहसी यात्री प्रसन्न थे। उन्होंने मसालों के द्वीप को जानेवाला पश्चिमी समुद्री मार्ग खोज लिया था और यह भी जान लिया था कि पृथ्वी वास्तव में गोल है। जो भी कुछ नाविकों के पास था, उसे देकर उन्होंने मसाले खरीदे, क्योंकि अब उन्हें स्पेन लौटना था और उन्हें बेचकर धनवान बनकर शेष जीवन गुजारना था। अभी भी आधा ग्लोब पार करना शेष था, पर यह रास्ता लंबा होते हुए भी जाना-पहचाना था। शेष बचे जहाजों में से एक जहाज खराब था। अतः ५१ लोग उसकी मरम्मत तक मलक्का में ही रुके रहे और शेष लोग एक जहाज में पर्याप्त रसद लेकर स्पेन रवाना हुए। आगामी पांच माह के लिए भरपूर रसद थी, पर भू-मध्यरेखा के सूरज ने अधिकांश भोजन सामग्री सड़ा दी और फिर इन यात्रियों को भोजन के लाले पड़ने लगे इससे एक-एक करके लोग मरने लगे। छह माह की भयावह यात्रा करके अफ्रीका के दक्षिणी सिरे का चक्कर लगाने के बाद केप वर्डे द्वीपों के सेंतियागो बंदरगाह

से जब जहाज ने १ जुलाई १५२२ को लंगर उठाया, तब लगभग दो दर्जन लोग और मर चुके थे। केप वर्डे द्वीप पोर्तगाल, यानी शत्रु के अंतर्गत थे। अतः वहां रुकने का मतलब था गिरफ्तारी। लेकिन पेट की आग इसे भी स्वीकार करने को तैयार थी। अपने को अमरीका से आया हुआ बताकर यात्रियों ने रसद एकत्र करनी चाही, पर पूरी रसद एकत्र करने के पहले ही उनका रहस्य खुल गया और वे जहाज लेकर भाग खड़े हुए।

केप वर्डे द्वीपों में यात्रा के इटालियन वृत्तांतकार पिगाफेता को एक चमत्कारी जानकारी मिली। तट पर जो लोग रसद के लिए गये थे, उन्होंने बताया कि उस दिन तट में गुरुवार था जबकि जहाज के यात्रियों के लिए वह बुधवार का दिन था। पिगाफेता को अपनी गणना पर पूरा भरोसा था और वह तथा उसके साथी यह नहीं समझ पाये कि जब उनके अनुसार बुधवार है, तब केप वर्डे में गुरुवार का दिन क्यों है? उसका समाधान न पिगाफेता कर पाये न उसके साथी इसे समझ पाये। जब पिगाफेता ने इस अजीब तथ्य की जानकारी यूरोप में दी, तब यूरोप-वासी इसका रहस्य न समझ सके, क्योंकि तब यह कोई नहीं जानता था कि पृथ्वी के घूमने की दिशा में यात्रा करने पर एक दिन बच जाता है।

और वे सुरक्षित लौट आये

अभी स्पेन दूर था और साधन तथा शरीर क्रमशः नष्ट हो रहे थे। अंत में ७ सितंबर, १५२२ को बहादुर यात्री स्पेन के तट से आ लगे। जीर्ण अवस्था वाले मात्र अठारह यात्री अपने प्यारे देश वासियों के स्वागत का आनंद लेने के लिए बचे थे। स्पेन व यूरोप के लिए और इन साहसी यात्रियों के लिए यह अपूर्व दिन था। जनता ने जय-जयकार के साथ इनका स्वागत किया। भूख-प्यास से त्रस्त इन यात्रियों को भोजन दिया गया, किंतु भोजन पर हाथ लगाने के पहले उन्हें एक शपथ पूरी करनी थी। वे सब पैदल गिरजाघर गये, वहां उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया और अपने प्यारे मेग्लान तथा अन्य मृत साथियों के लिए प्रार्थना की।

कोलंबस की यात्रा के बाद यह दूसरी यात्रा थी, जिसने उस समय के जगत को झकझोर दिया। जहां से यात्री चले थे, वहां वे फिर से पहुंच गये और वह भी एक ही दिशा को चलते हुए। सिद्ध हुआ कि पृथ्वी गोल है और यह भी सिद्ध हुआ कि पृथ्वी समुद्र से घिरी है।

शासकीय नर्मदा महाविद्यालय, होशंगाबाद

स्वर्गीय उमाकांत मालवीय न केवल प्रतिष्ठित नव गीतकार, वरन श्रेष्ठ ललित निबंधकार भी थे। 'कादम्बिनी' को प्रारंभ से ही उनका सहयोग प्राप्त होता रहा। गत ११ नवंबर, १९८२ को हृदय-गति रुकने से उनका असामयिक निधन हो गया। प्रस्तुत मर्म स्पर्शी ललित निबंध उन्होंने अपने निधन से कुछ समय पूर्व 'कादम्बिनी' में प्रकाशनार्थ भेजा था। श्री उमाकांत मालवीय के निधन से हिंदी कविता ने एक प्रमुख कवि खो दिया है। दिवंगत आत्मा को 'कादम्बिनी' परिवार की श्रद्धांजलि। —संपादक

आदमी अब पशु हो चला है

• उमाकांत मालवीय

मेरे सामने कुत्तूलाल अपनी पिछली दो टांगों पर बैठा है। गहरा भूरा रंग, स्वस्थ खूब भरा हुआ बदन। शिब्बू के चुराये हुए कंचे-सी दो चमकदार नीली-भूरी पारदर्शी आंखें। रमेशजी सपरिवार बाहर गये हुए हैं। आज तीसरा दिन है, कुत्तूलाल ने खाना-पीना लगभग छोड़ रखा है। उसकी आंखों में एक तलाश, एक बोलता हुआ सवाल है। वह रमेशजी, मायाजी, वंदना, विवेक किसी एक अथवा उन सबका पता-ठिकाना जानना चाहता है। नित्य शाम टहलने की उसकी तलब, आज हुड़क में बदल गयी है। एक अजीब-सी निरुपायता असहायता है उसकी आंखों में। संवेदना के पंखों पर सवार, एक मर्म है, जो मेरे भीतर गहरे-गहरे और गहरे उभरता जा रहा है। मेरे और उसके बीच एक संवाद-सेतु स्थापित होता है। उस संप्रेषण के चलते वह बहुत ही अपना, बड़ा सगा लग रहा है। इसके पहले वह कभी इतना अपना, इतना सगा नहीं लगा।

कभी किसी अमराई में किसी बालगोपाल को किसी कोकिल की पंचम की नकल करते देखा-सुना है? उसको, कोकिल को, जैसा कि कहा जाता है, वह नकल से खीझता है, चिढ़ता है, पंचम में खीझभरा प्रत्युत्तर देते सुना है? बच्चे का उस पंचम से जुड़ना और जुड़ाना महसूस किया है?

मेरे दृष्टि-पथ पर अवधूत भगवान दत्तात्रेय का चित्र उभरता है। उनके पीछे एक उजली गाय खड़ी है, अर्धनिमीलित नेत्रों से वह भगवान दत्तात्रेय के सामीप्य

को महसूसती हुई, अभिव्यक्ति दे रही है। एक तरफ एक काला कुत्ता है, वह भी भगवान के परिवार का एक दुलारा सदस्य है। उसकी शान और मानभरी मुद्रा देखकर याद आता है—

'हम सगे कूए अली हैं और तो कुछ भी नहीं।

क्यों न हो ऊंचा हमारा रुतवा फिर कितमीर से।'

(अर्थात, हम तो कुछ भी नहीं हैं, अली की गली के कुत्ते हैं, फिर हमारा रुतवा कितमीर—स्वर्ग के दैवी दिव्य कुत्ते—से ऊंचा क्यों न हो।) एक कुत्ता था, जिसे राम के दरबार में ब्राह्मण के विरुद्ध न्याय मिला था, जिसने मठाधीशी के कच्चे चिट्ठे उजागर किये थे। एक और था, वह भी तो आखिर कुत्ता ही था, जिसके बिना धर्मराज युधिष्ठर ने स्वर्ग जाने से इनकार कर दिया था। भगवान दत्तात्रेय का एक और कबूतर है। कपोत, शांति का धवल प्रतीक, मूर्तिमयी निरीहता। कपोत, जिसका मूल्य उशीनर शिवि जानता है, राजा मेघरथ जानता है, जो बाज के कबूतर के एवज में, उसके बराबर का अपना मांस काट-काटकर देता है।

सघन तादात्म्य संवेदन का एक और रंग उभरता है। क्रौंचयुग्म मिथुनरत है। आनंद की परिणति होने के पूर्व ही, बहेलिये का शर, मूर्त आनंद को बेध जाता है। मादा क्रौंच के विलाप में आदि कवि के आंसू भी शामिल हो जाते हैं और इस प्रकार सृष्टि की आदि कविता अवतरित होती है।

आज तो हमारा संवेदन गोठिल हो चुका है। राम जाने, कैसे लोग यज्ञों में निरीह पशुओं की बलि देते रहे, भवानी को भैंसा अथवा बकरी की बलि देते रहे हैं। लगता है, वे संस्कार लुप्त नहीं हुए हैं, उनकी संतानें आज भी सौंदर्य-प्रसाधनों (कास-

मेटिक्स के निर्माण में खरगोशों की निरीह आंखों पर प्रयोग करती है, उन्हें अंधा बना देती है। उफ, यह तथाकथित सौंदर्य और इसकी असुंदर-कुरूप घिनौनी साधना। बछड़े की खाल उसके जीते-जी उतार ली जाती है और 'काफ लेदर' के सामान बनाये जाते हैं। हिरन का सिर कटवाकर ड्राइंग-रूम सजाते हैं। भारी-भरकम मछली, स्वस्थ बकरे अथवा मुर्गों को देखकर उनकी लुब्धक दृष्टि में स्वाद की विकृति का नरक तांडव करने लगता है। अब तो खरगोशों, चूहों का भी मांस बचने नहीं पाएगा। आखेट में शरसंधान कर किंवा रायफल लेकर हिरन के पीछे पड़ने में जाने कौन-सी विकृति को तृप्ति मिलती है। पता नहीं कब किस आखेट में, हमारे भीतर के पशु का अहेर होगा, जाने कब हमारी पाशविकता स्वयं शिकार बन जाएगी। राम करे वह घड़ी जल्दी ही आये। स्वार्थ-प्रेरित आत्म-केंद्रित आदमी 'पुच्छ विषाण हीन' पशु हो चला है और पुच्छ विषाण सहित पशु भी कितनी आत्मीय, मानवीय ऋजुता से संपन्न है।

राम की डबडबायी आंखें

दृश्य पर दृश्य उभरते चले आ रहे हैं, आंखें हैं कि अघाती नहीं है। अघायें भी कैसे? यह सब कुछ तो राम-चर्चा है। **'राम-कथा जो सुनत अघाहीं रस विशेष जाना तिन नाहीं।'** शिशु राम की चिबुक पर लार बह आयी है। काकभुशुंडि कौआ उनकी चिबुक से चोंच लगाकर लार पान कर रहा है। राम मगन हैं। राम जटायु को अंक में सहेजे हुए हैं। वे अपनी जटा से जटायु के तन की धूल झाड़-पोछ रहे हैं। राम की हथेली पर नन्हीं-सी गिलहरी है। राम उसकी पीठ स्नेह और वात्सल्य से सहला रहे हैं। राम के राज्याभिषेक के बाद की कोई शाम है। दिव्य दंपति राम और सीता बतरस में रत हैं। सीता कहती है, "यदि आप अन्यथा न लें, तो एक बात पूछूं?" "हां हां वैदेही निःसंकोच पूछो।" राम ने आश्वस्त किया। "कंचन-मृग के पीछे जब आप काल रूप में धावन कर रहे थे, तब क्या भीत नजरों से पीछे मुड़कर मृग ने आपको देखा था? आप तो मुझे भीरु मृग-नयनी कहते हैं, क्या उस समय आपको मेरी सुधि आयी थी? यदि हां, तो आपका वाण भीत मृग-नेत्रों पर कैसे चल सका? यद्यपि मैंने हीं उस कंचन मृग की कामना की थी, तथापि . . .।" सीता के इस प्रश्न पर राम चुप रह गये, वे क्षितिज की ओर डबडबायी आंखों से देखते रहे।

दृश्य बदलता है। भगवान दत्तात्रेय की पूर्वकथित छवि का एक सर्वथा नवीन-संस्करण सामने प्रस्तुत है। वेणु-वादक कृष्ण के पीछे खड़ी अधमुंदी नेत्रों से वेणु-रस का पान करती, उनकी दाहिनी एड़ी को चाटती एक धवल धेनु। रसखान कामना करते हैं, **"जो पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मझारन।"** यह घायल जटायु गीध नहीं, यह घायल हंस है। यह साकेत के वनवासी राजकुमार

का अंक नहीं, यह कपिलवस्तु के राजकुमार का अंक है। हां, हमने ठीक ही पहचाना है। यह राम नहीं, सिद्धार्थ हैं। परंतु, सिद्धार्थ की यह छवि देखकर राम की उपर्युक्त छवि की याद आना क्या नितांत स्वाभाविक नहीं है? ईसा की वत्सल बांहों में मेमना अथवा गांधी का अनुधावन करती बकरी की-सी भावुक मन को संवेदनप्रवण बनाने के लिए क्या पर्याप्त नहीं है?

कुत्ते का दाह-संस्कार

येरुशलम के मंदिर के मुख्य द्वार पर ही एक कुत्ता मरा पड़ा है। उसका मुंह खुला हुआ है, उसके मोतियों से दांत चमक रहे हैं। नाक पर रूमाल रखे हुए पुजारी आया, उसने कुत्ते को गालियां दीं। कोई तथाकथित भक्त आया, उसने कुत्ते को गालियां दीं, उसके शव पर डंडे बरसाये। हर कोई, जो भी आता, दुर्गंध की शिकायत करता, गालियां देता और डंडे बरसाता। मरियम का बेटा आया, वह घुटने टेककर उस पर झुक गया, "लोगों ने तेरी दुर्गंध महसूस की, तुझे गालियां दीं, तुझ पर डंडे बरसाये, पर किसी ने तेरे मोतियों-जैसे चमकते दांत नहीं देखे।" और उसका खुला हुआ मुख चूम लिया। भरी आंखों उसे उठाया और आहिस्ते-से उसे दफन कर दिया।

छत्रपति शिवाजी की समाधि के पड़ोस में एक और समाधि है, जो उनके प्यारे कुत्ते की समाधि है, जिसने स्वयं को स्वामी की चिता पर समर्पित कर दिया

स्वर्गीय उमाकांत मालवीय

था। गुरु गोविन्दसिंह की बाणधारी छाव क्या भुलायी जा सकती है? बंदा बैरागी की प्यारी बिल्ली तो उसके साथ ही बलिदान हुई थी।

सिनेमा की रील जैसे आगे बढ़ती है। एक नन्हा-सा बच्चा कुतूहलवश, घोंसले से चिड़िया का अंडा निकाल लाया था। उम्मीद थी कि मां को दिखलाऊंगा, उसकी आंखें चमक उठेंगी और वह खिल उठेगी। परंतु, हुआ ठीक इसके विपरीत, मां उदास और दुखी हो गयी, "तुझे स्कूल से लौटने में जरा-सी भी देर होती है, तो मैं कितनी परेशान हो जाती हूं। तू जब भी घर लौटता है, तब मुझे दरवाजे पर ही, तेरे रास्ते की ओर देखती, इंतजार करती पाता है। उस चिड़िया को जब वापस लौटने पर अपने घोंसले में उसका अपना अंडा न मिलेगा, वह कितनी दुखी होगी।" बच्चा तुरंत पलट पड़ा, देखा, घोंसले से

अलग एक शाख पर बैठी चिड़िया चीख रही है, उसने घोसले में उसका अंडा वापस रख दिया। हजार चिरौरी की, बिनती की, अनुनय विनय किया, हाथ जोड़ा गिड़गिड़ाया, देख तेरा अंडा तेरे घोसले में वापस आ गया है। जा अपने अंडे को देख और खुश हो जा, मुझ पर मेहरबानी कर मुझे माफ कर दे।" चिड़िया ने पलट कर घोसले को नहीं देखा, वह बराबर चीखती रही और बच्चे को अपने जीवन का सबक मिला। जीव-दया और अहिंसा का वह पाठ, चिड़िया की वह नाराजगी, वह जीवनपर्यंत भूल नहीं पाया। वह बच्चा ही विश्व में दीनबंधु सी. एफ. एंड्रूज के नाम से जाना गया।

साहित्यकारों का पशु-प्रेम

कुत्तू लाल की आंखों में पन्ने दर पन्ने खुलते जा रहे हैं। सुप्रसिद्ध कवि ब्राउनिंग, उसके मित्र मेढ़क, सांप, छिपकली, गिड़गिड़ान और जाने क्या-क्या। महादेवी वर्मा, उनके परिवार के सदस्य गिल्लू गिलहरी का बच्चा, खरगोश, नीलकंठ, मयूर, हिरन, नीलगाय, बिल्लियां और कुत्ते। साक्षात पशुपतिनाथ महाकवि जानकी वल्लभ शास्त्री, निराला निकेतन मुजफ्फरपुर में एकत्र कुत्ते और बिल्लियां। हर किसी का अपना नाम, अंजू, मंजू, नंदा, महेन्द्र और जाने क्या-क्या।

मानव, पशु-पक्षी, कीट पतंग ही क्या, वानस्पतिक जगत भी एक जीवंत स्पंदन का सबूत देते हैं। कबीर ने पुत्र कमाल को भेजा, गौ-शाले के लिए घास काट लाने के लिए। बहुत ही विलंब हो गया, कबीर गये, देखते क्या हैं, सर तक बराबर घास में खड़े कमाल हवा में लहराती घास के साथ झूम रहे हैं। पूछने पर कमाल कहते हैं, "पिताजी, इस तरह जीती-जागती, झूमती-नाचती घास को काटने का कलेजा कहां से लाऊं?" कबीर क्या कहते।

रामकृष्ण परमहंस, खड़ी हरी फसल को बड़े छोह से निहार रहे थे। अकस्मात एक व्यक्ति उन फसलों को रौंदता हुआ निकल गया। ठाकुर कलेजा थामकर हाय-हाय करते लुढ़क गये, लगा, जैसे वह फसल को नहीं, उनके कलेजे को रौंदता हुआ निकल गया हो। तादात्म्य के आत्मीयता के कैसे तंतु रहें होंगे वे!

कुछ क्षणों के लिए ही सही, तादात्म्य के जिन अनेकानेक क्षितिजों का साक्षात्कार कुत्तूलाल के माध्यम से हुआ है, जैसे एक के बाद दूसरी यवनिकाएं उठती जा रही हैं, उसके लिए कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सोचता हूं, क्या कोई ऐसी भावभूमि मेरे नसीब में भी होगी? क्या यह क्षणिक बोध कभी स्थायी भाव नहीं हो सकता?

विश्व की सबसे बड़ी किताबों की दूकान लंदन में चेरिंगक्रास स्टेशन के पास।... इस लंबी दूकान का उद्घाटन सन १९०४ में हुआ था।

कहानी

व्योम-बाला

• यशपाल जैन

दिल्ली के पालम हवाई अड्डे से जब चेतन एयर इंडिया के जंबो-जेट से सपत्नीक न्यूयार्क जा रहा था, तब उसकी हालत बड़ी अजीब-सी हो रही थी। यह उसकी पहली विदेश-यात्रा नहीं थी, पहले भी वह कई बार बाहर हो आया था, लेकिन आज की जैसी हैरानी उसे शायद ही कभी हुई हो। घर से चलते समय उसने एहतियातन हवाई अड्डे को फोन किया था, तो जवाब मिला था कि जहाज चार बजे छूटेगा और उसे दो बजे तक वहां पहुंच जाना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर वे लोग पालम पहुंच गये, पर वहां पहुंचते ही उन्हें खबर मिली कि जहाज कोई दो घंटे देर से जाएगा।

हवाई अड्डे के भीतर ठंडक की व्यवस्था होते हुए भी चेतन को पसीना आ रहा था और उमस के मारे दम घुट रहा था। पर अब हो क्या सकता था! मन का गुबार निकालने के लिए उसने कठोर मुद्रा में पत्नी से कहा, "देखा, यह हाल है, अपने देश का!"

अपनी परेशानी को दबाते हुए पत्नी ने उत्तर दिया, "यह कोई नयी बात थोड़े ही है। फिर जो चीज अपने बस में नहीं है, उसे लेकर खीजने से फायदा क्या!"

पत्नी ने बात सहज भाव से कही थी, लेकिन उसने आग में घी का काम किया। उबलकर उसने कहा, "इस देश का बेड़ा तुम-जैसों ने ही गर्क किया है।"

पत्नी आसानी से हार माननेवाली

नहीं थी, पर पति की दिमागी हालत देखकर खामोश हो गयी। चेतन ने जेब से रूमाल निकालकर माथे का पसीना पोछा और जैसे अपने को ही संबोधित कर रहा हो, बड़बड़ाकर बोला, "एक वे देश हैं कि दस मिनट की भी देर होती है, तो मुसाफिरों को फोन पर इत्तला कर देते हैं और एक यह हमारा देश है कि लोगों का घंटों वक्त बरबाद हो जाए, उन्हें चिंता नहीं! गजब है!"

चेतन का मन अब बेकाबू होकर उछल-कूद कर रहा था। अचानक उसकी निगाह बराबर की कुरसी पर गयी। देखता क्या है कि उस पर एक विदेशी तरुणी ऐसे सो रही है, जैसे उसे कहीं जाना ही न हो। चेतन के भीतर का तूफान और तेज हो गया। आदमी का जी अशांत होता है, तो दूसरे की शांति उसे और अशांत कर देती है। चेतन को लगा कि वह उसे झकझोरकर जगा दे और कह दे कि 'देवीजी, यह मुसाफिरखाना है, सोने का कमरा नहीं है', पर उसने जब्त कर लिया।

आखिर जब विमान में बैठने की घोषणा हुई, तो दिन का उजाला फूट आया था। विमान में उन्हें खिड़की के पास की सीटें मिली थीं। अपने सामान को इधर-उधर जमाकर वह कुरसी पर ऐसे पड़ा रहा, मानो उसका शरीर बिलकुल बेजान हो गया हो। तभी व्योम-बाला ने हाथ में ट्रे लेकर यात्रियों को मीठी गोलियां, सौंफ आदि देना शुरू कर दिया। चेतन ने यंत्र-वत एक गोली उठा ली और उसका कागज हटाकर मुंह में डाल ली।

विमान का इंजन घड़घड़ाने लगा था। थोड़ी देर में विमान रेंगने लगा। रेंगते-रेंगते रुका, अनंतर तेज दौड़ा और फिर धरती को छोड़ अंबर की ओर उड़ चला। उसे बड़े जोर की प्यास लग रही थी। उसका गला चटक रहा था। उसने घंटी बजाकर व्योम-बाला को बुलाया और एक गिलास पानी लाने को कहा। व्योम-बाला उसकी बात सुनकर चली गयी, पर पानी लेकर तत्काल लौटी नहीं। पांच मिनट निकले, फिर भी वह नहीं लौटी, तो चेतन ने अधीर होकर

फिर दोबारा घंटी बजायी। व्योम-बाला आयी, पर उसके हाथ में पानी का गिलास नहीं था। चेतन ने झुंझलाकर कहा, "मैंने एक गिलास पानी मांगा था।" तपाक से वह बोली, "जी हां, पर जहाज में आप अकेले मुसाफिर नहीं हैं, ग्रौर भी लोग हैं ग्रौर मुझे सबको देखना पड़ता है।"

घटना बड़ी अप्रत्याशित थी। सामान्यतया विमानों पर व्योम-बालाएं बहुत ही मधुर ग्रौर शिष्ट होती हैं। उनके चेहरे पर हर घड़ी मुसकराहट खेलती रहती है। उसके चेहरे के तनाव ग्रौर वाणी की तलखी को देखकर चेतन को गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन दूसरे यात्रियों का ख्याल करके गुस्से को पी गया। व्यंग्य में बस इतना कहा, "ठीक है।"

व्योम-बाला ताव में तेजी दिखा तो गयी थी, पर शायद जाते-जाते उसे लगा कि ऐसा नहीं होना चाहिए था। वह तुरंत पानी लेकर लौटी। चेतन कुरसी की पीठ पर सिर टिकाये आंखें बंद किये बैठा था। व्योम-बाला थोड़ी देर खड़ी रही, फिर ज़रा ऊंची आवाज में बोली, "पानी लीजिए।"

चेतन ने आंखें खोलीं, पर एकबारगी गिलास ले लेने का जी नहीं हुआ। सोचा, कह दे, 'ले जाग्रो अपना पानी, मुझे नहीं चाहिए।' लेकिन मुंह से ये शब्द निकलें कि गिलास उसके हाथ में था।

कुवैत तक विमान को कहीं रुकना नहीं था। चार या पांच घंटे की उड़ान थी। चेतन अब कुछ सो लेना चाहता था। लेकिन कुछ ही देर बाद नाश्ता आ गया। वही व्योम-बाला लायी थी। उम्र उसकी कोई बीसेक साल की रही होगी। देह पर रेशम की साड़ी थी। छरहरा बदन था। देखने में अच्छी-खासी थी, लेकिन उसके चेहरे पर कुछ ही देर पहले चेतन ने जो तनाव देखा था, वह अब ग्रौर गहरा हो उठा था।

चेतन ने देखा, मर्सी जीवन की दहलीज पर खड़ी होकर, आगे कदम बढ़ाने को है। शरीर स्वस्थ है, चेहरा मासूम है, होठों पर मुसकराहट है। वह पूछना चाहता था, कि क्या सचमुच तुम इतनी सुखी हो, जितनी दिखायी देती हो, पर यह प्रश्न एक साथ मुंह से बाहर नहीं निकल पाया। उसने पूछा, "मर्सी, आसमान में उड़ते-उड़ते तुम्हें कैसा लगता है?"

कुवैत आने की घोषणा हुई, तो उसी व्योम-बाला ने आकर उसे जगाया ग्रौर कुरसी की पेटी बांधने को कहा। इस आशा से कि कहीं उसके चेहरे पर कुछ बदलाव आ गया हो, उसने उसकी ग्रोर देखा। पर वह चेहरा तो अब भी पाषाण-जैसा बना था।

कुवैत पर जहाज एक घंटा रुका, पर सूचना दी गयी कि सुरक्षा की दृष्टि

से आगे जानेवाला कोई भी यात्री न उतरे।

चेतन को बुरा लगा। वह चाहता था कि उसे ताजी हवा मिले, थोड़ा घूमना मिले, तो तबीयत कुछ हल्की हो जाए, पर वह भी संभव न हो सका। इस बीच उसकी पत्नी ने मजे की नींद ले ली थी और कुवैत पर जहाज से न उतरने की सूचना पाकर फिर नींद में खो गयी थी। चेतन आंखें मूंदे बैठा रहा।

एक घंटे बाद जब विमान चला, तब चेतन ने आंखें खोलीं। उसे यह देखकर बड़ी राहत मिली कि जिस व्योम-बाला ने उसकी नींद हराम कर दी थी, वह बदल गयी है और उसकी जगह कुवैत की एक नयी व्योम-बाला आ गयी है। वह मुसकराती हुई, शरबत का गिलास लेकर आयी और बड़े शालीन ढंग से उसे चेतन के हाथ में थमाकर आगे बढ़ गयी। उसके चेहरे पर बहुत ही मधुर सौम्यता थी और उसकी आंखों से प्यार छलक रहा था। चेतन का सारा मानसिक तनाव दूर हो गया। उसने देखा, व्योम-बालाएं ही नहीं बदली हैं, बाहर के सारे दृश्य भी बदल गये हैं। तेल की भीमकाय टंकियां बता रही थीं कि वह तेल का देश है। पर भूमि शस्य-श्यामला नहीं है। सूखे पर्वत और सूखे मैदान इसके साक्षी थे। तभी विमान बादलों को चीरकर ऊपर उठा और पैंतीस हजार फुट की ऊंचाई पर पहुंच गया।

विमान के अधिकांश यात्री ऊंघ रहे थे। कुवैत के समय के अनुसार अभी वहां सवेरा था, और व्योम-बालाएं नाश्ते की तैयारी कर रही थीं। थोड़ी देर में यात्रियों को नाश्ता दिया गया। जब वह भोली-भाली व्योम-बाला चेतन से पूछने आयी कि वह शाकाहारी नाश्ता लेगा, या सामिष, तो चेतन ने शाकाहारी नाश्ते की मांग करते हुए उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

बड़ी आत्मीयता के साथ मुसकराकर उसने कहा, "मर्सी।"

"वाह, यह नाम तो बड़ा अच्छा है!" चेतन के मुंह से अनायास निकल गया।

मर्सी का चेहरा आरक्त हो गया, उसकी मुसकराहट और मधुर बन गयी, पर वह अपनी लज्जा को समेटकर बड़ी फुरती से वहां से हट गयी। निमिषभर में उसने शाकाहारी नाश्ते की ट्रे चेतन के सामने लाकर रख दी।

नाश्ता निबटने के बाद जहाज में फिर निस्तब्धता छा गयी। समय आने पर दोपहर का भोजन कराया गया, फिर खिड़कियों पर परदे डाल दिये गये, जिससे प्रकाश यात्रियों की नींद में बाधक न बने। चेतन कुछ देर विचारों के सागर में गोते लगाता रहा, फिर अनायास उसका हाथ घंटी के बटन पर चला गया। मर्सी सामने आ खड़ी हुई। सकपकाकर उसने कहा, "कोई अखबार लाकर दे सकोगी ?"

सपाटे से मर्सी गयी और दो-तीन अखबार उसे दे गयी। बोली,

"पीछे रैक में और कई अखबार रखे हैं, आपको जो चाहिए, ले लीजिए ।"

अखबारों पर निगाह डालकर चेतन अलस भाव से उठा और रैक के पास जाकर अखबारों को देखने लगा। उनमें कुछ अखबार फ्रेंच में थे, चेतन फ्रेंच नहीं जानता था। अंत में उसने अंगरेजी की दो-तीन पत्रिकाएं चुनीं और उन्हें लेकर चलने को हुआ तो देखा, सबसे पीछे की सीट पर मर्सी अकेली बैठी है। उसके साथ की सीट खाली थी। चेतन ने उधर जाकर मर्सी से कहा, "क्या मैं यहां बैठ सकता हूं?"

बड़े मुक्त भाव से मर्सी ने उत्तर दिया, "जरूर, आइए।"

चेतन बैठ गया। फिर उसने कहा, "मर्सी, बुरा न मानो तो एक बात पूछूं?"

बड़ी सहजता से मर्सी बोली, "एक नहीं, दो।"

चेतन ने देखा, मर्सी जीवन की दहलीज पर खड़ी होकर आगे कदम बढ़ाने को है। शरीर स्वस्थ है, चेहरा मासूम है, होंठों पर मुसकराहट है। वह पूछना चाहता था कि 'क्या सचमुच तुम इतनी सुखी हो, जितनी दिखायी देती हो', पर यह प्रश्न एक साथ मुंह से बाहर नहीं निकल पाया। उसने पूछा, "मर्सी, आसमान में उड़ते समय तुम्हें कैसा लगता है?"

मर्सी ने प्रश्न सुना, पर तत्काल उत्तर नहीं दिया। थोड़ी देर चुप रही। फिर बोली, "कैसा लगता है? अच्छा लगता है।"

इस उत्तर से चेतन का समाधान नहीं हुआ। वह जानता था कि नौकरी है तो अच्छा लगे या न लगे, अच्छा लगाना होगा। पर वह भीतरी सचाई जानना और बात को बढ़ाना चाहता था।

मर्सी उसके अंतर के भावों को ताड़कर हंस पड़ी। बोली, "मैं समझ गयी कि आप क्या जानना चाहते हैं? आपके ध्यान में आसमान में उड़ते पंछी हैं। कितने मुक्त हैं वे! कितने स्वच्छंद! कितने प्रसन्न! आप यही जानना चाहते हैं कि क्या मैं व्योम-विहारिणी, इन पंछियों की तरह बंधनों से मुक्त और स्वच्छंद हूं?"

उसे चुप देखकर मर्सी बोली, "सुनिए,

जो चमकता है, वह सब सोना नहीं होता। कहां अनंत आकाश में विचरण करनेवाले पंछी और कहां हम ! वे मुक्त हैं, हम बंदी हैं। हमारी मुसकराहट बहुत धोखा देनेवाली है।''

कहते-कहते मर्सी रुंआसी हो आयी। चेतन को लगा कि वह रो पड़ेगी। उसे सांत्वना देते हुए चेतन ने कहा, ''मर्सी, आदमी के पास बहुत बड़ी दौलत है, उसका मन। वह कभी बंदी नहीं होता। जहां चाहे, उड़कर दौड़ जाता है। जिस दूरी को पार करने में पंछी को बहुत समय लगता है, वहां मन पलभर में पहुंच जाता है।''

''आप ठीक कहते हैं।'' वह कुछ विह्वल होकर बोली, ''मैं मन की उड़ान को खूब जानती हूं। मेरा मन भी तो कम नहीं उड़ता। कभी-कभी तुकबंदी भी करती हूं। सच मानिए, विचारों में डूबना मुझे बड़ा अच्छा लगता है, लेकिन डूब नहीं पाती।''

बिना हिचकिचाहट के मर्सी ने कहा, ''इसलिए कि जो विचारों में डूबता है, वह बाहरी दुनिया के लिए मर जाता है। मैं मर नहीं सकती। मुझे दुनिया में रहना पड़ता है।''

कहते-कहते उसका मन बेकाबू होने लगा। बोली, ''मुझे दो जिंदगियां जीनी पड़ती हैं। हंसते हुए कभी-कभी भीतर से रुलाई आती है, पर मैं इतनी मजबूर हूं कि रो भी तो नहीं सकती।''

चेतन उसकी बातों से इतना अभिभूत हो गया कि वह भूल गया कि वह जहाज में बैठा है और व्योम-बाला से बातें कर रहा है।

मर्सी अब एकदम बदल गयी थी। वह विमान में उड़नेवाली अबोध षोडशी व्योम-बाला नहीं रही थी, जीवन की गहराइयों में से ज्ञान अर्जित करनेवाली प्रौढ़ा बन गयी थी।

मर्सी का मर्म जैसे किसी ने छू दिया था। उसका बांध टूट गया था। उसी स्वर में वह बोली, ''मेरे चेहरे को देखकर आप सोचते होंगे कि मैं बहुत सुखी हूं, पर क्या आप मान सकेंगे कि मेरे जीवन का रस धीरे-धीरे सूखता जा रहा है ? लंबी उड़ान के बाद लौटती हूं तो लगता है बदन टूट गया है। इतनी मुसकराहट देनी पड़ती है कि भीतर से खाली हो जाती हूं। फिर कुछ भी करने को जी नहीं करता। बार-बार एक ही बात मन में उठती है कि मैं वह नहीं हूं, जो हूं। एक दिन वह आएगा, जब असली मर्सी मर जाएगी और जो बचेगी, वह नकली मर्सी होगी।''

विचारों के उद्दाम प्रवाह को रोकते हुए चेतन ने पूछा, ''घर में कौन-कौन है?''

मर्सी की आंखें छलछला आयीं। रुंधे कंठ से बोली, ''मेरी मां बचपन में ही मुझ अकेली संतान को, छोड़कर चल बसी थी। घर में पिता हैं। उन्हें शराब की लत है। पेंशन में जो रुपया पाते हैं, वह सब दारू में उड़ा देते हैं। मैं न कमाऊं तो प

नहीं, घर का क्या होगा !"

उसके होंठ कांपने लगे। उसने पर्स से रूमाल निकालकर आंखें पोंछी, नाक साफ की। किंकर्तव्य-विमूढ़ होकर चेतन ने कहा, "मर्सी !"

तभी जैसे भीतर से किसी ने मर्सी को जोर का झटका दिया, 'ओ पगली, तू यह क्या कर रही है ? आपे से बाहर हो रही है। जिसके सामने अपना दुखड़ा रो रही है, वह एक बटोही है। मंजिल आएगी, वह चला जाएगा। अरी मूर्ख, आदमी का दुःख अपना होता है। उसके बोझ को उसे स्वयं ही उठाना पड़ता है।'

मर्सी ने सिर को झटका। वह जैसे स्वप्न से जाग उठी। संभलकर बोली, "विचारों का एक झोंका आ गया था। पता नहीं, जाने क्या-क्या कह गयी। आप उस सबको भूल जाइए। थोड़ी देर में लंदन आ जाएगा। वहीं मैं उतर जाऊंगी। ईश्वर ने मिलाया तो फिर मिलेंगे। अच्छा, मैं जाती हूं।"

इतना कहकर मर्सी बड़ी फुरती से उठी, जैसे कुछ हुआ ही न हो और लंबे-लंबे डग रखती चली गयी। उसके चेहरे पर फिर खोयी मुसकराहट खेलने लगी थी।

चेतन अन्यमनस्क भाव से उठा और अपनी कुरसी पर आ बैठा। उसकी पत्नी अब भी बेखबर सो रही थी। चेतन का ध्यान उस व्योम-बाला की ओर गया, जो कुवैत पर उतर गयी थी। उसके प्रति अब उसके मन में वितृष्णा नहीं, करुणा थी।

तभी सामने की पट्टी पर कुरसी की पेटी बांधने की सूचना उभरी और घोषणा हुई, "हमारा विमान अब कुछ ही देर में लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर उतरने-वाला है।" चेतन ने देखा, मर्सी अपनी कुरसी पर बैठी है और उस मुखौटे को उतारने की तैयारी कर रही है, जो उसने जहाज में घुसते समय पहन लिया था।

—एन-७७, कनॉट सर्कस, नयी दिल्ली-१

एक पेंटर ने अपना काम बहुत अच्छा किया, मालिक ने खुश होकर मजदूरी के अलावा दस रुपये इनाम के दिये और कहा, "आज शाम को बेगम के साथ फिल्म देखना।"

शाम को पेंटर फिर आया। साहब बोले, "कैसे आना हुआ ?" पेंटर ने जवाब दिया, "आपने दस रुपये दिये थे और कहा था कि शाम को बेगम के साथ फिल्म देखना। मैं बेगम साहिबा को लेने आया हूं।"

★

नशे में धुत एक नेता होटल में पहुंचा और बोला, "जल्दी से खाना मंगवाओ वरना झगड़ा हो जाएगा।" मैनेजर ने खाना मंगवा दिया। फिर उस नेता ने कहा, "जल्दी से कॉफी मंगवाओ वरना झगड़ा हो जाएगा।" कॉफी भी आ गयी। फिर वह बोला, "अब मुझे जाने दो, वरना झगड़ा हो जाएगा ?"

मैनेजर बोला, "क्यों भाई, झगड़ा क्यों होगा ?"

"क्योंकि मेरी जेब में पैसे नहीं हैं। और, पैसे मांगने पर झगड़ा होगा।"
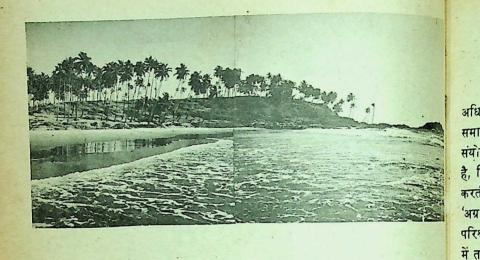
एक भारतीय पत्रकार ने बाजी मार ली

● डी. आर. मानकेकर

एसोसिएटेड प्रेस ऑव इंडिया के बंबई मुख्यालय से संबद्ध रहने के अपने सात वर्षों में समाचार-डेस्क से बंधा होने पर भी अकसर मैं विशेष कार्यभारों पर बाहर चला जाया करता था।

वर्मा के मोरचे पर १९४४–४५ में युद्ध-संवाददाता के रूप में बीते दो घटनापूर्ण वर्षों के पहले मैंने एक सबसे बड़ी, अत्यंत दिलचस्प और साथ ही सबसे मुश्किल समाचार-कथा तटस्थ पुर्तगाली गोवा में 'अक्तूबर १९४३ में' अपने बार... दिवसीय विशेष प्रवास में तैयार की थी। व... थी, अमरीकी और जापानी युद्ध-बंदियों की अदला-बदली की कहानी। एक जापानी जहाज चीन और एशिया के अन्य भागों से कोई एक हजार अमरीकी बंदी लेकर वहां आ रहा था, जिन्हें किराये के ए... अमरीकी जहाज में आ रहे जापानी बंदियों से उतनी ही तादाद में बदला जाना था।

ईमानदार संवाददाता मानेंगे कि...

ऊपर : मार्मुगाओ का समुद्रतट

गोवा के ताबूत में संत फ्रांसिस जेवियर का शव

अधिकतर अग्र समाचारों के पीछे संयोग की बात होती है, जिसमें तकदीर काम करती है। हालांकि कुछ 'अग्र समाचार' धीरज और परिश्रम से भी बन जाते हैं। गोवा में तकदीर साथ थी, यह मैंने कार्यभार की बात उठते ही समझ लिया था।
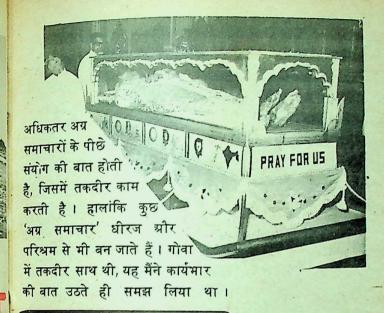
होटल के कमरे में लौटकर पढ़ने बैठा, तो पाया कि रूटर्स के अमरीकी पाठकों के लिए बड़ी जबर्दस्त समाचार-कथा हाथ लग गयी है। मैंने अपना समाचार तैयार किया, जिसमें दो हजार शब्दों में अमरीकी बंदियों के बारे में हर तरह का विवरण था...।

पहली बात तो यह है कि मुझे अंतिम क्षणों में चुना गया था——रूटर्स के महारथी सितारे एलन हम्फ्रीज की जगह, जो गोवा की घटना की समाचार-कथा के लिए काहिरा से भारत आ रहे थे। काहिरा में वे विमान चूक गये। रूटर्स ने उन दिनों अमरीकी अखबारों में नये ग्राहक बनाये थे और वह साबित करना चाहती थी कि वह अमरीकी कहानी के मामले में भी अमरीका में ही अमरीकी समाचार-एजेंसियों से सफलतापूर्वक प्रतियोगिता कर सकती है। अब चूंकि दूसरा कोई यूरोपीय संवाददाता हाजिर नहीं था, इसलिए देशी आदमी को विशेष कार्यभार पर भेजना जरूरी हो गया। आखिरी क्षणों में बिना किसी तरह की मानसिक या अन्य तैयारी के मुझे मैदान में उतार दिया गया।

समाचार-संकलन में शीघ्रता

मैं काफी बुझी तबीयत लिये मार्मुगाओ पहुंचा, जो गोवा का बंदरगाह है। वहां बड़े-बड़े अमरीकी संवाददाता डेरा डाले

थे। मामले पर अमरीकी नजरिये से अपनी समाचार-कथा भेजने के लिए यूनाइटेड प्रेस ऑव अमरीका के पूर्वी क्षेत्र के महा-प्रबंधक जॉन मॉरिस स्वयं मार्मुगाओ आ धमके थे और साथ में किराये का एक हवाई जहाज लाये थे, ताकि समाचार-कथा की प्रति तुरंत बंबई भेजी जा सके और वहां से उसका अमरीका को तार।

विदेशी और तटस्थ क्षेत्र गोवा में मैं किसी को नहीं जानता था। ब्रिटिश भारत के नागरिकों पर वहां निगरानी रखी जाती थी। मार्मुगाओ से कोई दो मील दूर, वहां का एकमात्र होटल अमरीकी दूतावास के लोगों और अमरीकी संवाद-दाताओं से ठसाठस भर चुका था।

इस हालत में मुझे गोदी के ठीक सामने स्थित 'लोबो' होटल नाम के एक तीसरे दरजे के होटल में कमरे से ही तसल्ली करनी पड़ी। लेकिन यह भी तकदीर का खेल था कि मैं उस गोदी के बिलकुल करीब था, जहां जहाज लगनेवाले थे। चंद कदमों के फासले पर तारघर भी था।

इस सबसे बढ़कर बात तो यह थी कि मार्मुगाओ में पहले ही दिन मैं काम के आदमी से टकरा गया। मुझे समझ आ रहा था कि किस्मत साथ दे रही है। कामथ साहब जापान की उस जहाजी कंपनी के स्थानीय एजेंट के प्रबंधक थे, जिसके जहाज में अमरीकी बंदी मार्मुगाओ आ रहे थे।

कामथ जानने को उत्सुक थे कि उस सोये पड़े नगर में आखिर मैं क्या करने आया हूं? मैंने उन्हें अपना प्रयोजन बताया, तो उन्होंने भी बता दिया कि बंदियों को ला रहे जापानी जहाज के एजेंट वे ही लोग हैं।

बंदियों की विस्तृत सूची

मेरे कान खुजलाये। मैंने उड़ते-उड़ते पूछ लिया कि क्या जहाज और उसके इंसानी 'असबाब' के बारे में कुछ जानकारी मिल सकती है? अखबारवालों के तरीकों से अनजान कामथ ने फौरन कह दिया कि उनके पास जो कुछ जानकारी है, सब दे देंगे। उन्होंने मेज की दराज खोलकर कागजों का एक पुलिंदा निकाला और यह कहते हुए मुझे थमा दिया कि बंदियों की विस्तृत सूची इसमें है।

कामथ ने मुझे जो पुलिंदा दिया, वह काफी बड़ा था और समाचार-कथा में इस्तेमाल के लिए उसके बारीकी से अध्ययन की जरूरत थी। उसमें 'तिया मारू' जहाज में आ रहे बंदियों के नाम, पेशे, लिंग, उम्र, पतों आदि की जानकारी विस्तार से दी गयी थी।

जबर्दस्त समाचार-कथा

होटल के कमरे में लौटकर पढ़ने बैठा तो पाया कि रूटर्स के अमरीकी पाठकों के लिए बड़ी जबर्दस्त समाचार-कथा हाथ लग गयी है। मैंने अपना समाचार तैयार किया, जिसमें दो हज़ार शब्दों में अमरीकी बंदियों के बारे में हर तरह का विवरण था। जहाज के मार्मुगाओ पहुंचने में अभी

बहत्तर घंटे बाकी थे। मैंने समाचार-कथा भेज दी, इस निर्देश के साथ कि 'तिया मारू' के बंदरगाह पहुंच जाने का मेरा भेजा समाचार मिलते ही इसे प्रसारित कर दिया जाए।

इस बार रूटर्स ने अग्र-समाचार के मामले में अमरीकी प्रतिद्वंद्वियों से बाजी मार ली थी। और, जहाज के पहुंचने की खबर भेजने में भी मैं ही सबसे आगे साबित हुआ। बंदियों की बदली की समाचार-कथा के सिलसिले में मार्मुगाओ पहुंचे, हम विदेशी संवाददाताओं के बीच यह धारणा थी कि पुर्तगाली तारघर ने न तो कभी समाचार-तार देखा होगा और न कभी दिनभर में सौ-दो-सौ से ज्यादा शब्दों के तार भेजे होंगे। हजारों शब्द रोजाना भेजने का बड़ा काम आ पड़ेगा, तो वह घुटने टेक देगा। यही वजह थी कि समाचार-कथा बंबई भेजने के लिए युनाइटेड प्रेस के जॉन मॉरिस किराये का हवाई जहाज साथ लाये थे। ए. पी. के प्रेस्टन ग्रोवर ने भी एक टैक्सी कर रखी थी कि उसमें बेलगाम जाकर वहां से अमरीका तार भेजें।

मुझे हवाई जहाज या टैक्सी में बड़ी रकम खर्च करने की कोई मंजूरी नहीं दी गयी थी। मैंने तारघर के प्रभारी से बात करके उससे दोस्ती गांठी। पूछा कि क्या वह बंदियों की बदली के वक्त आनेवाले बड़े समाचार तार से भेज सकेगा?

प्रभारी ने बताया कि पुर्तगाली तार-विभाग घटना के महत्त्व के प्रति सचेत है और जानता है कि क्या करना पड़ेगा। इसलिए संवाददाताओं को इस मामले में चिंता की कतई कोई जरूरत नहीं।

उपहार का चमत्कार

बातों-बातों में ही मुझे पता चला कि अगले दिन उस अधिकारी की पांच साल की बेटी का जन्म-दिन है। मैं बच्ची के लिए उपहार में एक अच्छा फ्रॉक ले गया और उसके बाद हम लोग दोस्त हो गये।

बेसिलका ऑव बाम जीसस का मुख्य 'आलटर'

गोवा जाते समय मैं करोना के जो छह सिगार ले गया था, वे भी बड़े काम के निकले। तंबाकू की तलब में बेचैन बंदरगाह और तटकर-अधिकारियों की मदद उनके कारण ही मिली।

जहाजों के आने के दिन मैंने क्षितिज पर निगाह रखी। सबेरे आठ बजे वहां कोहरे में एक धुंधली-सी आकृति नजर आयी। मैंने अब तक दोस्त बन चुके बंदरगाह के अधिकारी से पूछा कि क्या यही 'तिया मारू' है? उसने कहा कि हो सकता है और फिर कुछ मिनटों बाद बता दिया कि वही है।

साढ़े आठ बजे पहाड़ी पर लगे ध्वज-दंड पर बंदरगाह का ध्वज चढ़ गया। दस मिनट बाद ही अर्थात जितना समय बंदरगाह की इमारत से तारघर पहुंचने में लगा, मेरा समाचार तार करनेवाले के हाथ में पहुंच गया था। उसमें लिखा था कि " 'तिया मारू' दिख गया। समाचार-कथा प्रसारित कर दें"।

बंबई में रूटर्स के संपादकों ने 'दिख गया' के स्थान पर 'आ गया' कर दिया और समाचार-कथा प्रसारित कर दी। अमरीकी प्रतिद्वंद्वियों के समाचारों से घंटे-भर पहले ही बंदी-आदान-प्रदान की दो हजार शब्दों की रूटर्स की समाचार-कथा अमरीकी अखबारों को पहुंचा दी गयी। अमरीकी एजेंसियां तब तक यह खबर भी नहीं दे पायी थीं कि जहाज आ गया।

अमरीकी यात्रियों के विवरण के मामले में तो ये एजेंसियां तीन घंटे से भी ज्यादा पिछड़ गयीं।

मेरी खुशकिस्मती!

गोवा की इस यात्रा में मेरी तीसरी खुशकिस्मती की बात रही 'तिया मारू' से आये एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सूचना-स्रोत से मुलाकात की। यह सूचना-स्रोत थीं, एक लेखक और पत्रकार।

जहाज आने की तिथि का पूरा दिन निकल गया, लोगों से मिलने-जुलने, भाग-दौड़ और अपने काम में। शाम को मैंने तय किया कि 'लोबो' में जो कुछ खाने-पीने को मिले, उसी से अपनी कामयाबी का जश्न मना लूं। लेकिन जश्न अकेले मनाना था। गोवा में मेरे एकमात्र जिगरी दोस्त कामथ मुझे 'पीते' और मांस खाते देखते, तो उन्हें आघात पहुंचता। अपने अमरीकी प्रतिद्वंद्वियों को बुलाता तो वे सोच सकते थे कि खिल्ली उड़ाने को बुलाया है।

इसलिए शाम का साया लंबा होते ही मैं 'लोबो' के शराबघर की अपनी प्रिय मेज पर जा बैठा और एक 'बड़ी' स्कॉच और सोडे के साथ ही ठंडी पुर्तगाली शराब मंगायी और खाना लाने के लिए कहा। स्कॉच और सोडे की चुस्कियां लेते हुए मैं नयी आयी एक पुस्तक के पन्ने उलट रहा था। वह थी, एमिली हैन की 'सूंग सिस्टर्स'। पुस्तक से आंखें उठायीं तो पाया कि दूसरे कोने में एक सुंदर गौरांग महिला भी स्कॉच का 'उद्धार' कर रही है, लेकिन सोडे की बजाय बियर के साथ।

मुश्किल में फंसी लाल परी

मैंने देखा कि वह अमरीकी है और जहाज से आयी है। उसे मैं अपनी मेज पर मेहमान बनने के लिए राजी कर सकूं तो जहाज के जीवन के बारे में मानवीय दिलचस्पी की बेहद रसीली कहानियां मिल सकती हैं। मैं सोच ही रहा था कि 'हातिम ताई' को मुश्किल में फंसी 'लाल परी' की मदद का मौका हाथ लग गया। आधी दरजन स्कॉच और बियर की बोतलें खाली करके उस महिला ने बिल मंगाया और भुगतान के लिए दस डॉलर का नोट थमा दिया। 'लोबो' के खजांची ने उसे लेने से इंकार कर दिया और भुगतान रुपयों में मांगा।

अमरीकी महिला को सदमा लगा कि दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जो डॉलर लेने से इंकार कर सकते हैं। लेकिन उसके पास डॉलरों के सिवा और कोई मुद्रा थी नहीं।

मैं आगे बढ़ा और पूछा कि क्या उसकी मदद कर सकता हूं? उसने समस्या बतायी। मैंने भी समझाया, पर जब खजांची न माना तो मैंने पेशकश की कि वह बुरा न माने तो बिल भारतीय रुपयों में मैं दे दूं। वह आभार से भरकर तुरंत राजी हो गयी। मैंने उसे अपनी मेज पर निमंत्रित किया और खाने-पीने के लिए और भी सामग्री मंगायी।

महिला ने अपना नाम जब एमिली हैन बताया और कहा कि वह लेखिका है, तब मेरे दिमाग में घंटियां झनझना उठीं। मैंने हाथ की किताब सामने करके उसके आवरण पर छपे लेखिका के नाम पर अंगुली रख दी।

उसने देखा तो आश्चर्य से उछल पड़ी! बताया कि जब लड़ाई छिड़ी, उस समय वह शंघाई में थी। उसने पांडुलिपि प्रकाशक को भेज दी थी और उसे यह भी पता नहीं था कि पुस्तक छप चुकी है या नहीं?

कुमारी हैन के मेरे नजदीक आने का अब एक और कारण बन गया था। मेरे आग्रह पर उसने भारतीय भोजन किया और बताया कि भारतीय कढ़ी उसे बहुत पसंद है। खाने के साथ उसने पूरा न्याय किया।

मैंने बाकी बचे दो करोना सिगार कोट की भीतरी जेब से निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिये।

उसके बाद गोवा में बीते अगले दस दिनों तक एमिली हैन, जो 'सैटरडे इवनिंग पोस्ट' की पत्रकार और प्रतिष्ठित लेखिका थी, दिन में दो बार, दोपहर के भोजन के समय और शाम, मेरे पास आती रही। उसके कारण ही मैंने रूटर्स को मार्मुगाओ की रसीली कथाओं से पूर दिया।

दिग्गज अमरीकी पत्रकारों के मुकाबले इस सफलता पर रूटर्स में मुझे पहला प्रशस्ति-उल्लेख मिला और बधाई के अलावा दो सौ रुपये का विशेष पुरस्कार।

—सी-४४, गुलमोहर पार्क
नयी दिल्ली-४९

आठवें दशक के आरंभ के कविता-संकलन

● प्रो. विश्वंभर अरुण

हजार-हजार बाहोंवाली
लेखक––नागार्जुन, प्रकाशक––राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड, नयी दिल्ली-२, मूल्य––३५ रुपये।

नागार्जुन की नवीनतम पुस्तक का नाम **'हजार हजार बाहोंवाली'** है, जिसमें उनकी पिछले पैंतीस वर्षों की रची कविताएं आ गयी हैं। यहां प्रखर कवि नागार्जुन की नजर से भगवान भी नहीं बच पाया है। 'कल्पना के पुत्र हे भगवान' को संबोधित करता कवि 'शत-रंज-सा फैला संसार' को निस्सार नहीं मानता। शुद्ध भौतिकवादी नजरिये से **'इसी में भव, इसी में निर्वाण / इसी में तन-मन, इसी में प्राण'** के निष्कर्ष को प्रतिपादित करता है। सड़ी-गली सामाजिक व्यवस्था, सड़ांधवाली सांस्कृतिक मान्यताओं के मूल पर वह चोट करना चाहता है। 'पीपल के पीले पत्ते' शीर्षक कविता में पंत की 'द्रुत झरो' कविता की तरह वह प्रतीक-पद्धति में पुरानी व्यवस्था को ढहा देने का आकांक्षी है। आक्रोश का लावा ही उसकी कविताओं में फूट पड़ता है––**'नफरत की अपनी भट्ठी में / तुम्हें गलाने की कोशिश ही / मेरे अंदर बार-बार ताकत भरती है / प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है, मेरे कवि का / जन-जन में जो ऊर्जा भर दे, मैं उद्गाता हूं उस रवि का /'** प्रश्न यह है कि नफरत की भट्ठी में जलानेवाले प्रतिहिंसालु कवि की प्रतिबद्धता पाठकों को क्या सचमुच पाथेय दे सकेगी?

अलबत्ता कवि की साफगोई उसे निरीह-शोषित जनता के अभावों का अंकन करने का आवेश देती है और उससे निश्चय ही उसकी कई कविताएं ओज की सशक्त अभिव्यक्ति भी बन गयी हैं।

प्रतिबद्ध कवि के रूप में नागार्जुन की पहचान यहां भी कुछ कविताओं में एकदम प्रकट है।

पर, प्रकृति पर लिखीं 'वलाका', 'देवदारु', 'सफेद बादल', 'करवटें लेंगे बूंदों के सपने'-जैसी कविताएं मनभावन बन पड़ी हैं। 'सच न बोलना', 'सौदा', 'अजगर करे न चाकरी'-जैसी सचोट व्यंग्य की कविताएं भी संकलन को सार्थकता प्रदान करती हैं।

उस जनपद का कवि हूं
लेखक—त्रिलोचन, प्रकाशक : उपर्युक्त, मूल्य—२७ रुपये ।

त्रिलोचन की ख्याति मंचीय कवि के रूप में तो रही ही है, प्रबुद्ध पाठकों द्वारा भी उनकी कविताएं पढ़ी और सराही गयी हैं। हिंदी में उन्होंने सॉनेट-शैली में कविताएं लिखकर अपनी खास पहचान बना ली है ।

यद्यपि वे छायावादी शैली को नकारनेवाले और प्रगतिशील खेमे के संवाहक कवि रहे हैं, तथापि उनके इन 'सॉनेट्स' में धरती की ताजी सौंध और स्फूर्ति समायी हुई है। त्रिलोचन चाहे प्रकृति पर कविता लिखें या किसी मानवीय स्थिति या सोच पर—सर्वत्र उनमें अकृत्रिमता और अपनेपन को लक्षित किया जा सकता है। चाहे प्राकृतिक परिवेश की बात हो या मानव-समाज की, कवि की दृष्टि पहले उपेक्षित और असहाय पर ही जाती है। त्रिलोचन की कविता का प्रमुख प्रतिपाद्य मानव ही है; **'कवि, ऋषि, देव आदि पीछे हो मानव पहले / ऐसे रहो कि धरती बोझ तुम्हारा सह ले'**। सीधी-सहज, पर चुभती हुई बात को कहने में त्रिलोचन को कमाल हासिल है ।

'उस जनपद का कवि हूं' में त्रिलोचन की सन ५० से ५४ तक की कविताएं संकलित हैं, तथापि इनकी प्रासंगिकता आठवें दशक की इस शुरुआत में भी वैसी ही बनी हुई है ।

नदी की बांक पर छाया,
लेखक—अज्ञेय, प्रकाशक—राजपाल एंड संस, दिल्ली-६, मूल्य—२० रुपये ।

अज्ञेय अच्छे और आला दरजे के गद्यकार हैं, पर बहुतों को उनकी कविता व्यक्तिवादी केंचुलों में लिपटी अनबूझ पहेली का पुलिंदा प्रतीत होती है। जो भी रहा हो, पर अज्ञेय ने अपनी कविताओं के बलबूते पर ही अपने को एक प्रमुख काव्य-प्रवृत्ति का प्रवर्त्तक घोषित करवा ही लिया। कविता-क्षेत्र में सदा से वे आंदोलनकर्त्ता के रूप में सामने आये। कभी तार सप्तकों के द्वारा तो कभी 'प्रतीक'-पत्रकारिता के सहारे। **'नदी की बांक पर छाया'** उनकी नवीनतम कविताओं का—सन ७७ से-८१ तक की—सबसे ताजा संकलन है और इसमें कोई नया शगूफा नहीं छोड़ा गया है। 'अलबत्ता', 'परती का गीत', 'मेरे देश की आंखें', 'उसके पैरों में बिवाइयां', 'उसके चेहरे पर इतिहास' आदि कविताओं के द्वारा अपने आसपास के समाज से संबद्ध होने की कोशिश उन्होंने जरूर दिखायी है और इस तरह यह जताना चाहा है कि वह समाज से अलग-थलग रहनेवाले कवि नहीं हैं। हालांकि उनका 'कवि' महसूसता है कि औरों के दुःख-दर्द में डूबने-गलने की बात उसके बूते की नहीं—**'मेरे हृदय का गलना / उसके किस काम का ? तब क्या वह मेरा पाखंड है ? यह मेरा प्रश्न / मेरे पैरों की फटन है / और मेरी जमीन भी . . .'** क्योंकि वह महसूस

करता है—**'देखा उसे जिस ही क्षण मैंने / पास . . . / उसी क्षण जाना / कि कितना व्यर्थ है मेरा प्रयास . . .'**

पर, प्रकृति और रोमानियत के मूड में लिखी कुछ कविताएं कमनीय बन पड़ी हैं, यथा, 'धुंधली चांदनी', 'मेघ एक भटका-सा', 'आज मैंने'। अज्ञेय की भाषा की कुछ नयी भंगिमाएं भी इस संकलन की कुछ कविताओं में देखने को मिल जाएंगी। शब्दों के नये-नये प्रयोग कुछ अटपटे, पर कुछ सधे हुए यहां भी दीख पड़ेंगे।

बयान

लेखिका—श्रीमती कमलकुमार, प्रकाशक—सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७, मूल्य—२० रुपये।

कवयित्री कमलकुमार का हालांकि यह पहला ही कविता-संकलन है, पर परिवेश की पहचान और पकड़ की दृष्टि से यह प्रौढ़त्व का परिचायक है। कवयित्री अपने आसपास की फैली आपा-धापी और अव्यवस्था से त्रस्त कम, क्रुद्ध ज्यादा है, इसलिए उसने कविता को हथियार के रूप में इस्तेमाल भी कई जगहों पर करना चाहा है। **'घुप्प अंधेरा / दिमाग में उग आया एक घना जंगल / फेफड़ों की हवा रुकने लगी है/'** इन कविताओं में कवयित्री की कोमलता-कमनीयता बहुत कम, उसकी कटु-कठोर अनुभूतियां ही अधिक अभिव्यक्ति पा सकी हैं।

गीत निरंतर

लेखक—मेघराज मुकुल, प्रकाशक—चिन्मय प्रकाशन, जयपुर—३, मूल्य—१५ रुपये।

"मैं तो गीत गाता हूं, क्योंकि गेयता उसका जन्म-गोत है, उसका अभिजात-संस्कार है, उसका मौलिक अधिकार है। . . . वस्तुतः मेरा गीत, नवगीत का विशेषण न लेकर भी, जीवन के नये यथार्थ-बोध की सही व्याख्या करने का प्रयत्न करता है।" मशहूर मंचीय कवि मेघराज मुकुल के इक्यावन गीत-कविताओं के संग्रह **'गीत निरंतर'** के आधे से अधिक गीत पढ़ने में भी मधुर लगते हैं और गुनगुनाने में गाने योग्य भी। अधिसंख्यक गीत रोमानियत के रंग में सराबोर हैं, पर जीवन के नये यथार्थ-बोध की व्याख्या करने का प्रयास करनेवाले गीत दो-चार की संख्या को छोड़कर, खोजने पर भी नहीं मिले।

पाकिस्तान—८१

लेखिका—फहमीदा रियाज, प्रकाशक—राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली—२, मूल्य—१६ रुपये।

बकौल कर्तारसिंह दुग्गल, फहमीदा रियाज भारत के लिए अजनबी नहीं हैं। एक तो इसलिए कि उनकी कविताओं में आत्मिक दृष्टि से यहां की गंध रची-बसी है। दूसरे, विभाजन से पूर्व वे यहीं के मेरठ शहर की जन्मी हैं। वे पाकिस्तान की नागरिक रहीं, पर अपनी 'आवाज' को मुरदा न कर पाने की खातिर उस देश को छोड़, अपने पति-बच्चों के साथ आजकल यहीं हैं। पाकिस्तान पर कसे हुए डिक्टेटरी-पाश के खिलाफ उनकी

कविताओं में आक्रोश व्यक्त हुआ है। आम आदमी के अभावों को महसूसते हुए उनके आहत मन ने मौजूदा व्यवस्था को नकारा है। आसपास की फिजां में व्याप्त जहर उसमें भी भरता जा रहा है :

'गद्दारियों और दगाओं से पुर / हर कदम पर संपोले कुलबुलाते हैं /
उफ ! मेरे अंदर कितना जहर भर गया है मैं सांप बनकर नहीं जी सकती / अपने ईमान के अटल पत्थर पर / फन पटक-पटककर जान दे दूंगी /

अपनी कविताओं में अपनी हिम्मत और हौसलों की अभिव्यक्ति वे पूरी आस्था से देती हैं :

'इबलीसियत को खुल खेलने की इजाजत नहीं होगी / हम उसे मुल्क से बदर करने वाले हैं / लूट-खसोट के बावले दरिंदे को / चौराहे पर शूट किया जाएगा / मैं उसी दिन के लिए गाती हूं / गाती रहूंगी।'

'क्या तुम पूरा चांद न देखोगे?' शीर्षक इस संकलन की सात बड़ी कविताएं कवयित्री के असल आवेश को सार्थक अंजाम देती हैं और अन्याय-अव्यवस्था के खिलाफ मोर्चा बुलंद करती हैं।

भरी सड़क पर

लेखक—राजेंद्र प्रसाद सिंह, प्रकाशक—सहलेखन, सी–७।१५७ होजखास, नयी-दिल्ली—११००१६, मूल्य—बारह रुपये।

हिंदी साहित्य में जिस समय 'नयी कविता' एक स्वायत्त विधा के रूप में अपना स्थान बना चुकी थी और 'गीत मर गया है' का नारा बुलंदी पर था, उस समय गीत को नये ढंग से प्रस्तुत कर उसे जीवित बनाये रखने में राजेन्द्र प्रसाद सिंह का बड़ा योगदान रहा है। 'गीतांगिनी' के संपादन से लेकर **'भरी सड़क पर'** तक की कवि की यात्रा गीत को नित-नूतन आयाम देती रही है। समीक्ष्य कृति में नवगीत विधा को नयी संभावना के रूप में 'नवगीत-बेले' तक ले जाकर छोड़ा गया है, जो एक प्रयोग मात्र ही है और जिसकी सफलता भविष्य के गर्भ में छिपी है। उक्त संकलन में सन १९६३ से ७२ तक के गीत संग्रहीत हैं, जिनमें नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के कामगरों, मजदूरों आदि की उन संवेगात्मक मन:स्थितियों का यथार्थपरक चित्रण है, जिनमें वह जीता है, खटता है। 'इतिहास मुद्रा में नारी' शीर्षक से लिखे पांच गीतों के साथ, 'अब मेरा क्या', 'फूटती चिनगारियां', 'बंधु रे' शीर्षक गीत अच्छे बन पड़े हैं। 'नवें दशक में प्रवेश करते हुए जनबोधी नवगीत के कदम मध्यवर्गीय रचना-जगत की यांत्रिकता के घेरे तोड़कर सार्वजनिक जिजीविषा के सहज संघर्षमय भावी क्षितिज की ओर बढ़ रहे हैं' कवि की यह घोषणा सत्य ही प्रतीत होती है।

ब्रिटेन के राजा रिचर्ड की रानी बेरेनगारिया ने कभी इंग्लैंड को नहीं देखा—उसकी शादी विदेश में ही हुई और युद्ध में व्यस्त रहने के कारण रिचर्ड कभी भी अपनी पत्नी को घर नहीं लाये।

ज्योतिष
आपकी परेशानियों का निदान

१०

नीचे दिये खाली जन्म-चक्र को भरकर भेजिए। हमारे ज्योतिर्विद आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे। हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं। क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे। प्रविष्टि–१० का उत्तर यदि उस अंक में न मिले तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है। आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें। एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे। अगले अंक में प्रतीक्षा न करें।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान'-जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए। प्रविष्टि की अंतिम तिथि २० जनवरी, '८३।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर ही चिपकाकर भेजिए। लिफाफे में भेजी गयी प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

. . . . यहां से काटिए . . . .

१०

नाम . . . .

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख में) . . . . . . महीना . . . . सन . . . .

जन्म-स्थान . . . . जन्म-समय . . . . .

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा . . . .

पता . . . .

आपका एक प्रश्न . . . .

. . . .

. . . .

. . . . यहां से काटिए . . . .

इस पते को ही काटकर पोस्ट कार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग प्रविष्टि-१०), 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

आपके गैस सिलिंडर में एक बहुत ही ज्वलनशील लिक्विफ़ाइड गैस दबाव से भरी होती है. इसलिए जब आपका सिलिंडर बदला जा रहा हो तो सभी खुली आग और आग की लपटों को बुझा दें—सिगड़ी, हॉट प्लेट, दीया, अगरबत्ती और सिगरेट आदि. क्योंकि ज़रा सी चिनगारी से भी गैस आग पकड़ सकती है.

इसके अलावा, इस पर भी ध्यान दें कि सिलिंडर लाने वाला आदमी :

- सुरक्षा नट को खोलने से पहले सिलिंडर वाल्व बंद कर दे जिससे गैस लीक न हो.
- सिलिंडर कॅप या वाल्व को खोलने के लिए हथौड़े आदि का उपयोग नहीं करे क्योंकि ऐसा करने से वाल्व ख़राब हो सकता है जिससे गैस लीक होने लगेगी.
- हर बार प्रेशर रेग्यूलेटर का रबर वॉशर बदल दे. घिसे-पिटे रबर वॉशर के कारण गैस लीक हो सकती है.
- साबुन के घोल से सभी जोड़ों, कनेक्शन और ट्यूब आदि की जाँच कर ले जिससे गैस लीक होने का पता चल जाए. गैस लीक होने पर साबुन के बुलबुले दिखाई देंगे.
- सिलिंडर बदलने के बाद बर्नर जलाकर देखे कि वे ठीक से काम कर रहे हैं या नहीं.

याद रखिए, अगर सही ढंग से उपयोग करें तो कुकिंग गैस आज खाना पकाने का सबसे सुरक्षित साधन है. इसलिए थोड़ा ध्यान दीजिए. इसका दुरुपयोग नहीं कीजिए.
कोई भी कठिनाई हो तो अपने इंडेन वितरक या निकटतम इंडियनऑयल कस्टमर सर्विस सैल से सम्पर्क कीजिए.

Indane
इंडेन कुकिंग गैस

Shilpi IOCL 11/82

ज्योतिष समस्या और समाधान

८

'कादम्बिनी' के लोकप्रिय स्तंभ---'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' का पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक आठ के लिए हमें काफी संख्या में पाठकों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, सुपरिचित ज्योतिषाचार्य पं. शिवप्रसाद पाठक।

राधेश्याम सिंहल, औरंगाबाद

प्रश्न---आर्थिक संकट एवं कर्ज में निरंतर वृद्धि हो रही है। कारण ?

उत्तर---साढ़े साती शनि के कुप्रभाव के कारण संकटापन्न स्थिति का योग है। दिसम्बर, सन '८४ के पश्चात लाभ की प्राप्ति एवं राजनीतिक वर्ग के माध्यम से तीव्रतम प्रगति का योग उपस्थित होगा। ३६ वर्ष की आयु से पूर्ण भाग्योदय का योग है।

कृष्णराव जाधव, भिलाई

प्रश्न---नौकरी छूट गयी, कब तक लगेगी ?

उत्तर---विशोत्तरी दशा के अनुसार नीचस्थ चंद्रमा की दशारंभ में ही नौकरी छूट गयी है। सन '८३ में गोचर गुरु, जन्म के चंद्र-गुरु पर से भ्रमण करेगा, फलतः नौकरी पुनः लग जाएगी, लेकिन कुछ क्षति अवश्य होगी।

महेशकुमार, नयी दिल्ली

प्रश्न---तलाक होगा अथवा नहीं ?

उत्तर---दांपत्य-जीवन में विरोध, व्यवधान सतत चलेगा, किंतु गोचर ग्रहों के अनुसार शीघ्र तलाक संभव नहीं है, अपितु समझौता शीघ्र हो सकता है।

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल, मुजफ्फरपुर

प्रश्न---व्यापार में कर्ज कब समाप्त होगा ?

उत्तर---सन '८३ तक शनि में सूर्य की दशा कष्टदायी रहेगी। आप सावधानी से, कम से कम जोखिमवाले कार्य करें। दिसम्बर सन '८४ के बाद ही प्रगति शुरू होगी।

श्यामसुंदर बजोरिया, कलकत्ता

प्रश्न---व्यापार में उन्नति है अथवा नहीं ?

उत्तर---लाभ-भाव में शुक्र-बुध योग है, इसलिए धन-लाभ और व्यावसायिक प्रगति तो अच्छी रहेगी, किंतु काल-सर्पयोग के कारण कर्ज से प्रगति होगी। व्यापार कर्ज

लेकर ही करें ।

नवलकिशोर जोशी, लखनऊ

प्रश्न—बीमार रहता हूं। आयु को कोई खतरा तो नहीं ?

उत्तर—आपकी पत्रिका में दीर्घायु-योग बनता है । चंद्रमा के कुप्रभाव से मानसिक तथा शारीरिक व्यथा, जीवनभर रहेगी । आप ठंडी वस्तुओं तथा एकांत से बचाव करें ।

दिनेश शर्मा, हापुड़

प्रश्न— क्या विभागीय जांच के बाद पदोन्नति होगी ?

उत्तर— ५ सितंबर, सन '८३ तक राहु महादशा में शुक्रांतर है। शुक्र का दशापति से षडाष्टक है । शुक्र अकारण प्रगति में अवरोधक होगा । त्रिकोणाधिपति सूर्यांतरदशा में सितम्बर, सन '८३ से सितम्बर सन '८४ तक के मध्य उच्चपद प्राप्ति का योग होगा ।

आनंदकुमार, मुरादाबाद

प्रश्न—जातक घर से गायब है । कब लौटेगा ?

उत्तर—२२ अप्रैल, सन '८३ से गुरु महादशा में शनि - अंतर्दशा होगी, जिसमें जातक के घर आने का योग है । ये वर्तमान में जन्म-स्थान से १००० किलोमीटर के भीतर पूर्व दिशा में निवास कर रहे हैं ।

रश्मि पांडे, जौनपुर

प्रश्न—कन्या की मानसिक अशांति कब दूर होगी ?

उत्तर—अप्रैल, सन '८३ में राहु के गोचर में परिवर्तन के साथ ही इनकी विरोधाभास पूर्ण स्थिति समाप्त होगी एवं स्थान परिवर्तन का योग भी उपस्थित होगा। अक्तूबर, सन '८२ तक इनका अनि[illegible]कारी समय था ।

रमेशचंद्र गौतम, बा[illegible]

प्रश्न—केडर-परिवर्तन या पदोन्नति क[illegible] होगी ?

उत्तर— विंशोत्तरी महादशा के अ[illegible]सार शनि महादशा में शुक्र की अंतर्दशा में केडर-परिवर्तन के योग उपस्थित हैं किंतु अप्रैल, सन '८३ तक जन्मगत रा[illegible] केतु कुप्रभावी बने रहेंगे । इसलिए यो[illegible]कारी स्थिति उसके बाद ही उदय होगी।

अरविंदकुमार शर्मा, नयी दिल्ली

प्रश्न—क्या न्यायिक सेवा में प्रवे[illegible] होगा ?

उत्तर—शनि, मंगल, गुरु उच्च राशि[illegible]स्थ हैं तथा शनि, शुक्र, मंगल के स्था[illegible] परिवर्तन के कारण पत्रिका प्रबल है। गुरु कानून का कारक है। अतः दश[illegible] पर इसका पूर्ण प्रभाव होने के का[illegible] विधि-विधान के व्यवसाय में ही प्र[illegible] कराएगा ।

अंजनीकुमार, औरंगा[illegible]

प्रश्न—आर्थिक उन्नति के लिए [illegible] प्रकार का व्यवसाय उपयुक्त होगा ?

उत्तर—आपकी जन्म-पत्रिका के [illegible]सार मंगल सर्वाधिक कारक है । [illegible] भूमि, औषधि तथा कृषिगत वस्तुओं [illegible] व्यापार में सफल होंगे। कृषि, खाद[illegible]

व्यवसाय सर्वाधिक उपयुक्त होगा।

हेमंतकुमार, बुलंदशहर

प्रश्न—जातक मानसिक रूप से अस्वस्थ है। कब और कैसे ठीक होगा ?

उत्तर—पत्रिका में बालारिष्ट योग है। ७ वर्ष की आयु में किसी धार्मिक संत अथवा साधक की अनुकंपा से अचानक लाभ होगा। लग्नस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य अवश्य सुधरेगा।

संजय राधेश्याम अग्रवाल, नागपुर

प्रश्न—कौन-सा व्यापार फलदायी होगा ?

उत्तर—आपकी जन्म-पत्रिका में पंचग्रही योग तथा दशमस्थ राहु से ठेकेदारी या विषैली वस्तुओं का व्यवसाय अनुकूल होगा। दिसम्बर, सन'८३ तक आप व्यापार शुरू कर देंगे।

कोमल बाला, दिल्ली

प्रश्न—क्या मैं पूर्ण रूप से मांगलिक हूं ? क्या दो विवाहों का योग है ?

उत्तर—बारहवें भाव में सूर्य-मंगल-राहु योग के साथ शनि की दृष्टि होने के कारण मांगलिक योग तो बनता है। मांगलिक वर से विवाह करना उचित होगा। विवाहोपरांत सुख में व्यवधान एवं सामयिक विच्छेद की स्थिति भी आ सकती है, लेकिन दो विवाह का योग नहीं है।

श्यामसुंदर पारीक, जमशेदपुर

प्रश्न—आर्थिक स्थिति एवं व्यवसाय संबंधी जानकारी दें।

उत्तर—लाभेश एवं चतुर्थेश शुक्र चतुर्थस्थ है। केतु, द्वितीयस्थ चंद्रमा से सप्तमस्थ है। ४८वें वर्ष की आयु से आर्थिक स्थिति श्रेष्ठ होगी। आपको उपभोक्ता वस्तुओं के व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी।

विष्णुप्रसाद तांबोली, दुर्ग

प्रश्न—गत ६ माह में पत्नी की मृत्यु एवं कन्या विधवा क्यों हो गयी ?

उत्तर—आपकी शनि महादशा में सूर्यांतर-दशा अप्रैल, सन '८३ तक रहेगी, इसमें प्रियजन-विछोह, कष्ट एवं स्थायी दुःख की प्राप्ति होती है। सप्तम में शनि एवं केतु द्वादशस्थ हैं। गोचर में मंगल से शनि का भ्रमण होने पर प्रियजन के विछोह के कारण भावनात्मक आघात सहन करना पड़ा। अब अनिष्टकारी समय थोड़ा ही शेष है। धैर्य से कार्य करें।

ऐस्थर बर्नार्ड, कोटा

प्रश्न—शारीरिक, आर्थिक व पारिवारिक दुःखों का निवारण कब होगा ?

उत्तर—विंशोत्तरी महादशा के अनुसार २ नवम्बर, सन '८५ तक गुरु महादशा रहेगी। गुरु भाग्येश तथा द्वादशेश है। वर्तमान में १२वें भाव के अभाव के फलस्वरूप व्यर्थ चिंता, व्यय एवं तमाम परेशानियों का योग चल रहा है। नवम्बर, सन'८५ से शनि दशा में असाधारण प्रगति, संपत्ति, वाहन-सुख प्राप्त होने के योग हैं।

ओमप्रकाश शर्मा, नयी दिल्ली

प्रश्न—फैक्ट्री से आय कब शुरू होगी ?

उत्तर—लग्नेश दशम में उच्च स्थान पर आ चुका है, अतः प्रगति प्रारंभ हो चुकी होगी। धन-लाभ (भाग्योदय) ३६ वर्ष की आयु से प्रारंभ होगा।

—१२/४, सुभाषनगर, भोपाल-२३

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

समस्याओं से बेबस

नरेन्द्रसिंह, मुरैना (म. प्र.) : १८ वर्षीय, बी. एस-सी. का, छात्र हूं। मार्च, १९८२ में एक परीक्षा की तैयारी के दौरान मित्र के घर पर बैठा था, तभी उसने एकटक मेरी ओर देखा। तब से उसकी चमकभरी आंखों से सम्मोहित हो गया, इसके कारण सिर घूम गया और चक्कर आने लगे। अब दिमाग में सिकुड़न-सी महसूस होती है, कुछ भी याद नहीं होता। कभी प्रतीत होता है कि शरीर का कोई एक अंग नहीं है। मैं कौन हूं? यह ध्यान भी नहीं रहता। मन लगाकर पढ़ना चाहता हूं, परंतु इन सब समस्याओं से बेबस हो जाता हूं। डॉक्टर साहब! क्या करूं? कृपया बतायें।

परीक्षा की होड़ में कई बार मित्र एक-दूसरे को नीचा दिखाना, या डराना, छेड़ना आदि तरीकों से पछाड़ना चाहते हैं। लगता है, आपके मित्र बहुत सशक्त व्यक्तित्व के व्यक्ति हैं और आप कमजोर व्यक्तित्व के। इसीलिए आप सम्मोहित हो गये, और बहुत घबरा गये। यह सब मन की तनावपूर्ण स्थिति में हुआ। असली इलाज तो यही है कि आप अपने व्यक्तित्व को उभारें। इस समय आपको एक ऐसे व्यक्ति के सहारे की आवश्यकता है, जिससे आपको मनोबल प्राप्त हो सके, तथा वह आपको सकारात्मक सुझाव दे सके। मन को तनाव व डर से दूर रख, अपने आपको नयी-नयी उम्मीदों से जोड़ें, यानी कि स्व. मन में दृढ़ता और कार्य करने के प्रति लगन की भावना रखें। अपने में आत्मविश्वास पैदा कीजिए। ऐसा विश्वास तभी आ सकता है, जब आप खूब पुस्तकों का अध्ययन करेंगे और यात्रा करते समय नयी-नयी चीजों का अवलोकन कर, अपने मस्तिष्क द्वारा मौलिक निर्णयों की सूझ-बूझ रखेंगे। तब आप सम्मोहित नहीं हो सकते हैं और जीवन का रास्ता आसानी से चुन सकते हैं।

सपने में मृत्यु का दिन

क. ख. ग., कानपुर : १९ वर्षीया बी. ए. की, छात्रा हूं। करीब ४ वर्ष से 'जन्म-मृत्यु'-जैसी बातें हर समय दिमाग में घूमती रहती थीं। अब कुछ समय से स्थिति बिगड़ गयी है, कारण हैं—'सपने' मैं अपने से संबंधित बुरे सपने देख

हूं। इससे अत्यंत भयग्रस्त हूं और डरती हूं, कहीं स्वप्न वास्तव में सच न हों। डॉक्टर साहब ! क्या सपने वास्तव में सच होते हैं? सपने में मुझे मेरी मृत्यु का दिन तक पता चल गया है। तब से जीवन में उत्साह ही नहीं रहा।

किशोरावस्था में 'जन्म-मृत्यु'-जैसे विचार स्वाभाविक हैं, परंतु आपका मन तनाव-ग्रस्त व अत्यंत भयभीत है। यह मानसिक उदासीनता (mental depression) की स्थिति है। सपने भी उसी तनाव व उदासीनतापूर्ण मन:स्थिति को अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं। सपने अचेतन मन की भाषा हैं। यह वास्तव में सच नहीं होते। कई वार तो स्वप्न में दिखी चीज का अर्थ बिल्कुल उसके विपरीत होता है। सामाजिक जीवन में रम जाएं व हर चीज को इतनी गंभीरता-पूर्वक न देखें। आप एकांत में न रहें, बल्कि सखियों के साथ या घर के बड़े लोगों के बीच बैठें। डर ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। डर व तनावपूर्ण मन:स्थिति से दूर रहें तथा 'जीना सीखें'। यही मुख्य दवा है।

दौरों से परेशान

गिरिराज शर्मा, उज्जैन : मेरा १६ वर्ष का छोटा भाई लगभग ५-६ वर्ष से 'दौरों' से परेशान है। दौरे में दांत भीच, 'हो-हो' की अजीब आवाज निकालता है। शरीर में अत्यधिक बल आ

> **इस स्तंभ के लिए अपनी समस्याएं भेजते हुए पाठक कृपया अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में पूरा परिचय, जिसमें आयु, पद, आय एवं पते का भी उल्लेख हो, अवश्य भेजें। इस विवरण के अभाव में समस्याओं का समुचित निराकरण संभव न होगा।**
>
> —संपादक

जाता है। फिर गिर जाता है। यदि ऐसी स्थिति में उसे न पकड़ें, तब चोट भी लग जात्ती है। ऐसी अवस्था उसकी २-३ मिनट तक ही रहती है। तत्पश्चात वह कुछ ढूंढ़ता-सा है और पास ही पड़ी कोई चीज उठाकर फिर वापस रख देता है। उसे ऐसे दौरे अब तो रोज २-३ बार पड़ने लगे हैं।

कई ओझाओं के पास, भूत-प्रेत समझ इलाज करा लिया, परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। कृपया उचित सलाह दें।

आपके छोटे भाई को मिर्गी के दौरे के सभी लक्षण हैं। शीघ्र ही उसका 'स्नायु-परीक्षण' करायें और मिर्गी के दौरों की चिकित्सा शुरू करें। आपका भाई पूर्ण रूप से ठीक हो सकता है।

पत्र बिना गुजारा नहीं

एस. एस. सिंह, वाराणसी : २१ वर्षीय, बी. एस- सी. का, छात्र हूं। जब भी सगे-संबंधियों को पत्र लिखने बैठता हूं, तब ही सिर-दर्द व एक विचित्र प्रकार की उलझन महसूस होती है। पत्र लिखे बिना भी गुजारा नहीं, कोई सुझाव दें।

चेतन मन से तो आप अपने सगे-संबंधियों को प्रेमपूर्वक पत्र आदि लिखना चाहते हैं, परंतु आपके अचेतन मन में वास्तव में उनके प्रति गुस्सा, द्वेष (hostility) है, जो दबा हुआ है। यह किसी घटना को लेकर भी हो सकता है। कई बार सगे-संबंधी किसी व्यक्ति को उन्नत होते, उसके व्यक्तित्व को उभरते देख, ईर्ष्या से जल जाते हैं ग्रौर अत्यंत द्वेष की भावना मन में आ जाती है। ऐसा तब होता है, जब वह या उनके परिवार के सदस्य इतना न उन्नत हो पाये हों। इसका आभास लगने पर भी ऐसी प्रतिक्रिया हो सकती है। अपने मन को टटोलें।

छींक से परेशानी

घनश्याम, जयपुर : मैं छब्बीस वर्षीय युवक हूं। बचपन से ही शंकालु हूं विशेष तौर से छींक से अत्यधिक परेशान हूं। बचपन से ही मेरे दिमाग में यह बात बिठा दी गयी है कि छींक से काम में रुकावट होती है। अब मुझे हर समय छींक का आभास होता है। विशेष रूप से जब भी कोई आवश्यक कार्य हो। ऐसी स्थिति में मैं काम छोड़ देता हूं; यदि कर भी लूं, तो यही प्रतीत होता है कि काम पूरा नहीं होगा। मन को बहुत समझाने पर भी मैं अपने आप को इस घबराहट से मुक्त नहीं कर पाता। डॉक्टर साहब, कृपया उपाय बतायें।

यों तो छींक का वहम बहुत से लोगों को होता है, लेकिन आपको हर समय छीं का आभास होता है, यह आपकी निराशा-वादी प्रवृत्ति का सूचक है। अपने मन से निराशा को दूर करके आशावादी बनें सोच लें कि कार्य अवश्य होगा। प्रायः लो कार्य करते हैं, छींकते भी हैं, लेकिन उन्हें छींक का ध्यान ही नहीं रहता। आशावादी होने पर ही आप इस मनःस्थिति से उबर सकते हैं। आशावाद मन की ही एक स्थिति है। निराशावाद का त्याग करें। छींक का आपको ध्यान भी न आएगा।

जीवन व्यर्थ लगता है

कु. राजेश्वरी, जबलपुर : मैंने मैट्रि प्रथम श्रेणी में पास की। सातवीं कक्षा में मैं एक अजीब रोग से पीड़ित हो गयी बीमारी के आरंभ में मुझे उठने-बैठने में बहुत तकलीफ होती थी। अब भी बिना सहारा लिये न उठ सकती हूं, न बैठ सकती हूं। बहुत उपाय किये, किंतु कुछ लाभ नहीं हुआ। बचपन में तो मैं बिलकुल स्वस्थ थी। अब दाहिने पैर से लंगड़ाने भी लगी हूं। परिवार में किसी प्रकार का रोग नहीं, अन्य सहेलियों को दौड़ते देखकर अपना जीवन व्यर्थ लगने लगा है, क्या करूं? हीनता की भावना बढ़ रही है।

आपके पत्र से प्रतीत होता है कि आपका रोग स्नायु-तंत्र की खराबी से है। इसके लिए आप किसी स्नायुरोग विशेषज्ञ को दिखायें। रोग का निदान मिलते ही हीनता की भावना भी समाप्त हो जाएगी।

● के. ए. दुबे 'पद्मेश'

ग्रह-स्थिति : शनि तुला में, केतु धनु में, मंगल कुंभ में, राहु मिथुन में, गुरु वृश्चिक में, शुक्र मकर में, १४ से सूर्य मकर में, बुध मकर में।

मेष-(चु, चे, चो, ला, ली, ले, लो, अ)

१ से १३ जनवरी के मध्य मांगलिक समाचार प्राप्त होंगे। नौकरी एवं कार्य-व्यवसाय में नवीन योजना बनेगी। पत्नी के सहयोग से कार्य-सिद्धि। १३ से २७ के मध्य समाज में सम्मान, सुखद यात्रा संभाव्य, घर-परिवार में शुभ कार्य होंगे।

वृष (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू, बो)

इस मास में काफी उतार-चढ़ाव रहेंगे। मित्रों, बंधुओं एवं अपने लोगों से मतभेद पैदा होते रहेंगे। काम करने में दिलचस्पी नहीं रहेगी। २५ से ३० तक परिस्थितियों में सुधार के आसार नजर आने लगेंगे। मंगल-कार्यों एवं मांगलिक उत्सवों में मन लगने लगेगा। नये कार्यों एवं व्यवसायों के योग बनेंगे।

मिथुन (क, की, कु, घ, छ, के , को, ह)

इस मास में अनेक उलझनें और समस्याएं पैदा होंगी। मित्रों और बंधुओं से कलह की स्थिति पैदा होगी। विलासिता एवं शान-शौकत के कार्यों से बचें तो सुखी रहेंगे। २५ से ३० तक समय धन-लाभ के लिए श्रेष्ठ है। व्यावसायिक या किसी अन्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ऋण लेना पड़ सकता है। पेट की बराबर संभाल रखें और लड़ाई-झगड़े से बचें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

आपकी राशिवालों के लिए यह माह द्विविधा, बेचैनी और मति-भ्रम का रहेगा। बृहस्पति, शुक्र, शनि ग्रहों की स्थिति अनुकूल न होने से घर-परिवार में क्लेश की स्थिति रहेगी। अधिक तंगी,

ऋण लेने की नौबत भी आ सकती है। १४ के बाद रुके हुए कुछ कार्य संपन्न होंगे। यात्रा के अवसर प्राप्त होंगे। २५ से विशेष दौड़-धूप एवं परेशानी से कार्य सिद्ध होंगे।

सिंह (म, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टू, टी, टे)

इस महीने में मिले-जुले फल प्राप्त होंगे, मेहनत एवं प्रयत्न से सभी कार्य संपन्न होंगे। कार्य-व्यवसाय में उन्नति होगी, शत्रु के षड्यंत्रों का पता चलेगा। १६ से २५ तक धन-लाभ की आशा और व्यवसाय में वृद्धि के योग प्राप्त होंगे। समाज में ख्याति, प्रतिष्ठा मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। पेट में व्याधि उत्पन्न होगी। २० के बाद यात्रा हितकर।

कन्या (टो, पा, पी, पू, पु, ष, ठ, पे, पो)

७ से १५ तक पिछले दिनों से चली आ रही समस्याओं का समाधान होगा। विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे। १६ से २८ तक व्यवसाय में उन्नति, समाज में मान तथा प्रभाव में वृद्धि, रोमांस के अवसर। सेहत भी अच्छी रहेगी। कामों में शिथिलता न बरतें।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

आपकी राशिवालों के लिए पिछले महीने से यह महीना श्रेष्ठ रहेगा। ८ से १३ तक मध्यम, किंतु १४ से ३० तक धन-प्राप्ति के मौके मिलेंगे। व्यवसाय एवं किये हुए कार्यों में अवश्य ही सफलता प्राप्त करेंगे। नये व्यवसाय तथा नये रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। पत्नी एवं संतान के सौभाग्य में वृद्धि होगी। समाज में मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। साहित्यिक रुचि के व्यक्ति अपने कार्यों से लाभान्वित होंगे। घर में भी शुभ कार्य होंगे।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यु)

इस माह में अकल्पित घटनाएं घटेंगी। १ से १३ तक अनेक शुभ कार्य होंगे। इच्छा-शक्ति दृढ़ होगी। कर्म-क्षेत्र में उत्तरोत्तर उन्नति होगी, १५ से ३१ तक धन-लाभ एवं यात्रा के योग, पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे)

आप १ से १३ तक कई सुखद अनुभूतियां प्राप्त करेंगे। समस्याएं उत्पन्न होते हुए भी त्याग और निष्ठा से सभी कामों में हाथ बंटाएंगे। नये व्यवसाय एवं नयी कार्य-पद्धति को व्यावहारिक बनाएंगे। मित्रवर्ग एवं परिवार के लोगों से सहायता मिलेगी। १५ से २५ तक वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े से बचें तथा पत्नी के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रा करते समय कार्य को निपटाते रहें।

मकर (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

यह माह उन्नतिकारक है। कामों में मन लगा रहेगा। १ से ३१ तक मित्रों, बांधवों एवं परिजनों से भी सहायता मिलती रहेगी। मन-पसंद उपहार प्राप्त होंगे। कर्म-क्षेत्र में कामयाबी हासिल होगी।

किसी मित्र या पड़ोसी के कुतर्क से बचें एवं स्वास्थ्य पर ध्यान दें। १६ से ३१ तक धन-लाभ के कई मौके आएंगे एवं साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समारोहों में भाग लेंगे। भविष्य के लिए कोई सुखद योजना बनेगी। पत्नी एवं संतान-सुख भी प्राप्त होगा।

कुंभ (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा)

इस मास में राज्य-पक्ष से सहयोग और लाभ मिलेंगे। कोई शुभ समाचार मिलेगा। ४ से १३ तक कर्म-क्षेत्र में नवीनता आएगी। साहित्यिक, राजनीतिक एवं दार्शनिक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा को निखारने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। नये संबंध जुड़ेंगे, किंतु १३ से ३१ तक अचानक सभी कार्यों में निराशा आ जाएगी। मित्र-वर्ग एवं सहयोगी धोखा देंगे। किसी संबंधी के बारे में शोक-समाचार मिलने तथा गृहस्थ जीवन में दरार पड़ने की संभावना होगी। भागीदार एवं किसी मित्र के धोखे से भी बचें।

मीन (दी, दु, थ, फ, दे, दो, च, ची)

यह मास सर्वश्रेष्ठ रहेगा। पहले सप्ताह में सुखद अनुभूतियों की प्राप्ति होगी। पराक्रम एवं आत्मविश्वास से सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करते जाएंगे। १ से १३ तक सभी कार्य अनुकूल होते चले जाएंगे, किंतु १४ से मानसिक परेशानी बढ़ जाएगी, बनते कामों में बिगाड़ की स्थिति होती जाएगी। धन-लाभ के लिए २४ से ३१ तक समय अनुकूल है। इन तारीखों के मध्य अचानक लाभ हो सकता है। समारोहों में भाग लेने का मौका मिलेगा।

पर्व एवं त्योहार

२ जनवरी—माघ-चतुर्थी-व्रत, ९ जनवरी—षटतिला एकादशी-व्रत, ११ जनवरी—प्रदोष-व्रत, १४ जनवरी—मकर संक्रांति, १९ जनवरी—बसंत पंचमी, श्री पंचमी, २२ जनवरी—भीष्माष्टमी, २५ जनवरी—जया एकादशी-व्रत, २६ जनवरी—प्रदोष-व्रत, २८ जनवरी—माघी पूर्णिमा, गंगास्नान, ३१ जनवरी—चतुर्थी-व्रत।

राशियां और प्रभाव—इस मास के दूसरे सप्ताह तक पौष मास की क्षय-स्थिति होने से शुभ कार्यों का सर्वथा अभाव रहेगा। जनता अपमान, कलह एवं वाद-विवाद के घेरे में पड़ी रहेगी। कहीं-कहीं भूकंप, लड़ाई-झगड़े की आशंका, जनता में असंतोष एवं वायु-प्रकोप तथा ओले पड़ने की संभावना रहेगी। वृष, मीन, वृश्चिक, कन्या, तुला राशियां शनि से पीड़ित रहेंगी। इन राशिवालों को वाद-विवाद एवं कुसंगति से बचना होगा तथा आर्थिक नियंत्रण रखना होगा।

सन १९८३ में क्या होगा?

सन १९८३ का वर्ष अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होगा, क्योंकि शनि, गुरु, बुध की स्थिति अधिकतर वक्री रहेगी। राहु एवं केतु का भी राशि-परिवर्तन होगा। ऐसी स्थिति में वायु-मंडल पर भी प्रभाव पड़ेगा, जिससे प्राकृतिक प्रकोप, भीषण बाढ़, सूखा, भूकंप, ज्वालामुखी, तूफान आदि की स्थिति से अनेक देश प्रभावित होंगे।

प्राकृतिक प्रकोप के साथ-साथ अनेक देशों की सत्ता में भी परिवर्तन होगा। राहु राजनीति का कारक ग्रह है। वह १५ जुलाई से वृष राशि में प्रवेश करेगा। ऐसी स्थिति में प्रायः सभी देशों की राजनीति पर प्रभाव पड़ेगा। कई देशों में तो राजनीतिक तूफान भी आ सकता है।

भारत पर प्रभाव

भारत में १३ फरवरी से २० मई अथवा १५ जुलाई से १७ नवम्बर के मध्य केंद्रीय मंत्रि-मंडल में परिवर्तन की संभावना बनती है।

सन १९८३ में कई मुख्य-मंत्रियों को अपने पदों से भी हटना पड़ सकता है। भारत के लिए १६ अक्तूबर से १८ नवम्बर, सन '८३ तक के मध्य का समय निर्बल है। कोई असाधारण और अप्रिय घटना घट सकती है।

४ दिसम्बर से २२ दिसम्बर के मध्य भी दुर्घटना की स्थिति आ सकती है। ६ अगस्त से १९ सितम्बर के मध्य प्राकृतिक प्रकोप की विशेष संभावना बनती है।

राशियां और प्रभाव—सन १९८३ में सभी राशियां कुछ न कुछ प्रभावित होंगी। शनि-प्रधान राशियों, मकर, कुंभ के लिए १४ अक्तूबर से १७ नवम्बर के मध्य का समय निर्बल होगा। मीन, धनु के लिए २८ मई से २९ जुलाई तथा ४ दिसम्बर से ११ दिसम्बर तक के मध्य का समय निर्बल है। वृष और वृश्चिक राशियों के लिए १५ जुलाई से १७ नवम्बर तक का समय निर्बल है।

इसी प्रकार मिथुन और कन्या राशियों के लिए फरवरी तक तथा २० अप्रैल से ४ मई तथा ६ अगस्त से १९ सितम्बर के मध्य का समय निर्बल है। मेष के लिए १४ अक्तूबर से १७ नवम्बर के मध्य का समय और कर्क एवं सिंह के लिए ६ अगस्त से १९ सितम्बर के मध्य का समय निर्बल है। तुला के लिए १४ अक्तूबर से १७ नवम्बर तक का समय निर्बल है।

सामान्यतः १५ जुलाई से २० अगस्त तथा १४ अक्तूबर से १७ नवम्बर के मध्य सावधानी बरतें। शेष समय ठीक है।

—'पद्मेश'

तीन व्यक्तित्वः तीन प्रसंग

एक बार श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कलकत्ता में अपने मित्र के कार्यालय से रेलवे-ऑफिस में फोन किया और पूछा, "हलो, कितनी सीटें खाली हैं?"

उधर से तुरंत उत्तर मिला, "सीधे चले आइए। यहां तो पूरे पांच सौ व्यक्तियों के लिए स्थान खाली है।"

उत्तर सुनकर श्री राधाकृष्णन को अचरज हुआ और वह सोचने लगे कि यह रेलवेवाले आज इतने उदार कैसे हो गये हैं! उन्होंने फिर पूछा, "भाई, मजाक न करो, ठीक-ठीक बताओ... आप कहां से बोल रहे हैं?"

"उस जगह से, जहां सीट रिजर्व होने के बाद कोई वापस नहीं लौटता। यह है नीमतल्ला का श्मशान-घाट!"

तीस पुत्र!

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने एक अवसर पर यह घोषित किया, "आप लोगों को आश्चर्य तो होगा, परंतु मेरे तीस पुत्र हैं!"

श्रोताओं की उत्सुकता बढ़ी। मुंशीजी ने बताया, "एक पेड़ लगाने पर दस पुत्रों का पुण्य प्राप्त होता है, या यों कहिए कि एक पेड़ दस पुत्रों के बराबर है। मैंने तीन पेड़ लगाये हैं। मेरे तीस पुत्र हुए न?" और कुछ देर बाद वे फिर आगे बोले, "यदि सचमुच तीस पुत्र होते तो, इस महंगाई के जमाने में मुझ पर भारी भार पड़ता। लेकिन मेरे ये पुत्र—ये पेड़ स्वावलंबी हैं, अपना पोषण आप करते हैं।"

एक विचित्र व्यक्ति

एक बार एक महिला श्री गोविंदवल्लभ पंत के आफिस में तूफान की तरह प्रविष्ट हुई। उसको यह भ्रम हो गया था कि उसका केस श्री गोविंदवल्लभ पंत के कारण ही बिगड़ा है। सो, आते ही वह पंतजी पर बिगड़ी और जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

लोगों ने उसे रोक देना चाहा और पकड़कर परे कर देने का प्रयत्न किया, परंतु श्री गोविंदवल्लभ पंत ने उन्हें इशारे से चुप किया। उन्होंने महिला को अपना आवेश प्रकट करने का पूर्ण अवसर दिया।

वह बड़ी देर बकती-झकती रही। श्री गोविंदवल्लभ पंत पूरे समय, मुसकराते हुए, उसके वचन-बाण सहते रहे।

इससे वह महिला सर्वथा निराश हो गयी और यह कहते हुए चली गयी, "इतना सहनशील व्यक्ति तो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा!"

—गोपालदास नागर

२६/१६ए, चौखंबा, वाराणसी-१
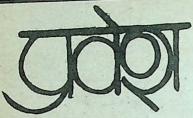
इस अंक में हम पाठकों को परिचित करा रहे हैं, निखिलेश्वर प्रसाद वर्मा से। इनकी पांचों रचनाएं पढ़कर हमें लगा कि इनकी कविताओं में प्रेम की संवेदनाओं की मुखर अभिव्यक्ति हुई है। यहां प्रस्तुत हैं, इनकी पांच कविताओं में से चुनी हुई तीन कविताएं।

—संपादक

गिलहरी घड़ियों में

गिलहरी घड़ियां
अपनी पतली कांपती अंगुलियों से
जब भी बुनती हैं धुंध
तुम्हारा टिकुली-सा चेहरा
हथेलियों पर टिका
उभरता है
ज्यों पास-पास किंतु निर्लिप्त खड़े
उदास ठूंठ के बीच
उभरता है एक पूरा चांद

•

मैं
खुद में ही सिमटे पहाड़ी शहर-सा
ढूंढ़ने लगता हूं तुम्हें
पुराने अक्षरों के घरौंदों में
चूम लेना चाहता हूं
तुम्हारी पेशानी पर बिखरी लटें
मेरे नाम के तुम्हारे आंसू
अधरों का अस्फुट कंपन
एक प्यास
डुबोने लगती है यह निपट आकाश-सा मन
बहुत गहरे तक
और तुम बेहद करीब आकर मेरे
फिर कहीं दूर
बहुत दूर जाती
नजर आती हो

संवेदना के क्षण

तुम्हें खत लिखना
प्यार करने-जैसा ही है
पर विडंबना तो यह है
कि तीव्रतम संवेदनाओं के क्षणों में
भावनाएं किसी सिलसिले को
नहीं मानती हैं
शब्द
सिमट आते हैं शब्द-कोषों में
असहाय, अर्थहीन

थके मुसाफिर से ऊंघते
तथा भाषा की जमीन
बहुत पीछे छूट जाती है

अभिव्यक्ति
जन्म लेती है खामोशी की नज्म में
इक तन्हा-सी गहराती नज्म
और चाह होती है
काश इस नज्म को
तुम्हारा स्पर्श
मिल जाए
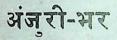
अलग-अलग
स्तरों पर
जीते-जीते
पता नहीं, कहां भूल आयी थी
खुद को
पर आज
तुमने पूरी आस्था से
अपनी अंजुरी में भर
मुझे पूरा का पूरा जो पिया

तो लगा,
मेरे वजूद की धड़कनें
शेष हैं
अब आंच बाकी है
रातभर की जली पड़ी बरोसी में

बहुत दिनों बाद
फिर से आज
नहाते वक्त गुनगुनाने की चाह हुई है

—निखिलेश्वर प्रसाद वर्मा
द्वारा-डॉ. ए. पी. वर्मा,
बेतिया-८४५४३८

आत्म-कथ्य

जन्म—१८ जून, १९५९।
जब भी भावनाओं का ज्वार उफनता है, तब शब्दों से बतियाना एक सुकून देता है।
संप्रति—राजेंद्र मेडिकल कॉलेज, रांची में तृतीय वर्ष का छात्र।

सार-संक्षेप

राजदूत और दिव्य पतलूनों के निर्माता

• डेनियल वा

कभी-कभी जब ग्रीष्म की मूक-मौन संध्याओं में, वायु भी गति-शून्य हो जाती है, मैं अपने विशाल निवास-स्थान के एक कोने को धूप सुलगाकर सुगंधित कर देता हूं। धूप का धुंआ आख्योपन्यास के जिन्न द्वारा निर्मित कल्पना-महल का रूप धारण कर लेता है। तब, कल्पना के पंखों पर सवार होकर मैं भी एक अज्ञा लोक में पहुंच जाता हूं, जहां मुझे उन तातार सेनापतियों की, जिनकी स्मृति यह निवास-स्थान निर्मित हुआ था, आत्मा अपने चारों ओर मंडराती लगती हैं।

रूसी जन-क्रांति की पृष्ठ-भूमि पर लिखी गयी यह अविस्मरणीय आत्म-कथा, जो अपने कुछ भागों में सम्मोह-निद्रा और सपनों में जीवन की अभिव्यक्ति के असामान्य बोध से स्पंदित है, तत्कालीन चीन और वहां के लामाओं के रहस्यपूर्ण और चित्र-विचित्र कार्यकलापों का रोचक और अनूठा चित्रण करती है। स्वप्नों के इस अविश्वसनीय पहलू का ऐसा हृदयग्राही वर्णन किसी और पुस्तक में देखने को नहीं मिलता। यह मोहक सत्य कथा अंत तक अपने इंद्रजाल में आपको उलझाये चलेगी। एक रहस्यात्मक अनुभूति के संपूर्ण उपादान के रूप में प्रस्तुत है, चीन में भूतपूर्व इतालवी राजदूत डेनियल वारे कृत 'द मेकर्स ऑव हैवनली ट्राउजर्स' नामक आत्म-कथा का सरल-संक्षिप्त हिंदी रूपांतर। रूपांतरकार : हरिमोहन शर्मा

आदमी की सामाजिक स्थिति के आधार-स्तंभ कभी-कभी बड़े नाजुक होते हैं और बड़े अजीव भी होते हैं। मैं चीन में इटली का राजदूत हूं। इस दृष्टि से मेरी सामाजिक स्थिति काफी अच्छी है, मगर वह सुखद और भव्य भी बन गयी है—पेकिंग स्थित मेरे निवास-स्थान के बाहर प्रतिष्ठित, मणि-शिल्प-निर्मित दो सिंहों के कारण। ऐसी शानदार सिंह-मूर्तियां चीन में या तो राज-प्रासादों के द्वारों पर मिलती हैं, या बड़े मंदिरों-मठों के बाहर।

मकान-मालिक यू ने एक बार मुझे बताया था कि यह मकान पहले वास्तव में एक मंदिर ही था, और उसका निर्माण सम्राट चुंग चेन ने दो शूर और राजभक्त तातार सेनापतियों की स्मृति में करवाया था।

जब से मैं इस घर में रहने आया हूं, पड़ोस में एक ही परिवर्तन हुआ है। एक छोटी-सी और भद्दी इमारत के स्थान पर एक जरमन फर्म के चीनी एजेंट ने यूरोपीय शैली की एक इमारत बनायी है, जिसके निचले भाग में आह-तिंग-फू नाम के दरजी ने एक दूकान खोली है। दूकान के ऊपर उसने अपना साइन बोर्ड लगाया है, जिस पर अंगरेजी में लिखा है : 'दिव्य पतलूनों के निर्माता' (द मेकर्स ऑव हैवनली ट्राउजर्स)। कोई नाम नहीं। केवल इतना-सा संक्षिप्त आत्म-परिचय। ऐसे साइन बोर्ड आपको चीन में ही देखने को मिल सकते हैं।

इस दूकान के ऊपरी भाग में एक इतालवी परिवार रहता था—माता, पिता और एक छोटी लड़की कुनी-आंग। पिता पेकिंग से हांकाव जानेवाली रेल लाइन में काम करते थे। नाम—कांते द तालोमी। चीनी इस आकर्षक और हंसमुख युवक को तोला-ई कहते थे। तालोमी ज्यादातर बाहर ही रहते थे।

सन १९२८ में सहसा उनकी पत्नी का

देहावसान हो गया। अब उनके सामने यह समस्या उत्पन्न हुई कि आठ साल की कुनी को किसके पास छोड़ें ? बाद में, घर पर एक फ्रांसीसी आया रखकर, और कुनी-आंग को एक यूरोपीय स्कूल में भरती कराकर, उन्होंने अस्थायी रूप से इस समस्या को हल कर लिया।

कुनी-आंग का मूल नाम रेनाटा था। उसकी मां स्कैंडिनेविया की थी, इसलिए उसके बाल सुनहरे थे। उसके माथे पर बचपन से ही, अर्द्धचंद्र-जैसा एक चिह्न अंकित था, जिसकी वजह से चीनियों ने उसका नाम फान-गो-कुनी-आंग (चंद्रपरी) रख दिया था। यह नाम संक्षिप्त होकर कुनी-आंग रह गया।

स्कूल से छुट्टी मिलते ही कुनी चीनी बच्चों के साथ मेरे घर के बाग में खेलने आ जाती थी। पहले मैं उसे चीनी लड़की ही समझता था, उसके इतालवी होने का पता मुझे बहुत बाद में चला।

पड़ोस में एक रूसी परिवार भी रहता था। उसका प्रमुख भी रेलवे में काम करता था। उससे मेरा परिचय दुआ-सलाम तक ही सीमित था।

उस दिन (१३ मार्च, सन १९१३) मैं खाना खाकर, सोफे पर लेटा 'पेकिंग गजट' पढ़ रहा था। पढ़ते-पढ़ते मुझे नींद आ गयी।

करीब आधा घंटे बाद, जब मेरी आंखें खुलीं, तब मैंने कुनी-आंग को अपने पास बैठे पाया। वह रो रही थी। मुझे उठते देखकर उसने एक टूटी हुई मुहर, जो चीन में निमंत्रण-पत्रों पर लगायी जाती है, मुझे दिखाकर कहा, "मैंने आपकी मुहर तोड़ दी है। आप मुझे सजा दें। रूसी परिवार की नटाशा को कोई चीज तोड़ने पर ब्रश से पीटा जाता है।"

"मगर मेरा तो तुम्हें पीटने का कोई इरादा नहीं है।"

"मैं जानती हूं", उसने उदास स्वर में कहा, "मैं किसी की नहीं हूं।"

मैं करुणा और सहानुभूति से द्रवित हो आया। मुझे लगा, उसे पीटकर, शायद मैं उसके अधिक निकट आ सकता था। मुहर के दो टुकड़े मेरे हाथ में थे। उन्हें देखकर मेरे मन में एक विचार आया। मैंने उसे एक टुकड़ा देते हुए कहा, "आज से हम-तुम दोस्त हुए। जब कभी तुम्हें मेरी जरूरत पड़े, तब इस टुकड़े को मेरे पास भिजवा देना। इसी तरह, जब मुझे तुम्हारी जरूरत होगी, तब मैं अपना टुकड़ा तुम्हें भिजवा दूंगा। मंजूर है ?"

कुछ सोचकर उसने पूछा, "मगर आपको मेरी जरूरत क्यों पड़ेगी !"

"कौन जाने, कब मुझे तुम्हारी जरूरत पड़ जाए।"

"अच्छी बात है। मुझे मंजूर है", उसने मुसकराकर कहा।

कुछ दिन बाद ही, उसे मेरी सहायता की जरूरत पड़ गयी।

जिस इमारत में कुनी रहती थी उसे किसी ने खरीद लिया था। नये मालिक वहां कोई और इमारत बनाना

चाहता था। इसलिए, कुनी सहसा बेघर हो गयी। जिन दिनों मैंने उसे अपने यहां आश्रय दिया, उन दिनों उसकी आयु १४ वर्ष थी और वह अभी तक स्कूल में ही पढ़ रही थी।

उसके पिता परेशान थे कि कुनी का क्या होगा? वे उसे इटली वापस भिजवाना चाहते थे, लेकिन दिक्कत यह थी कि इटली में भी उनका कोई ऐसा निकट का रिश्तेदार न था, जो कुनी को आसानी से अपने पास रखने को तैयार हो जाता।

मैंने उनसे कहा, "जब तक कोई स्थायी व्यवस्था नहीं हो जाती, तब तक उसे मेरे पास ही रहने दीजिए। मैं भी तो इटली का ही हूं।"

वह मेरा शुक्रिया अदा करके चले गये। वह काई-फेंग-फू नामक जिस क्षेत्र में गये थे, वहां एक विद्रोही जनरल फेंग के सैनिकों और सरकारी सैनिकों में युद्ध चल रहा था।

इसी तरह दिन बीतते गये।

एक रविवार की सुबह को मैंने देखा कि पड़ोस के रूसी परिवार के घर में कुनी-आंग एक रूपवती महिला के साथ बैठी है। महिला मेरे लिए सर्वथा अपरिचित थी, और उच्च कुल की प्रतीत होती थी।

बाद में कुनी ने मुझे बताया कि यद्यपि उस महिला का नाम एलिजाबेथ एलेक्जैंड्रा है, तथापि सब उसे एलिसा-लैक्स कहते हैं। वह रूस की सर्वाधिक प्रतिष्ठित और प्रख्यात महिलाओं में से एक है, और रूस में जन-क्रांति शुरू होते ही वहां चली जाएगी।

एक दिन कुनी उससे मिलवाने के लिए मुझे उसके पास ले गयी। घर में कुनी की सहेली नटाशा, उसके भाई फेदारे और उस महिला को छोड़कर और कोई न था। बातचीत की शुरुआत करते हुए, फेदोर ने उस महिला से कहा, "रास्पुटिन

की हत्या से रूसी लोग बहुत खुश हैं। अब रूस के भविष्य के बारे में आप क्या सोचती हैं ?"

लगा, एलिसालैक्स रास्पुटिन के बारे में कुछ कहने से हिचकिचा रही थी। उसने इतना ही कहा, "अब रूसी साम्राज्य का पतन जल्दी ही हो जाएगा। ग्रिशका ने, रास्पुटिन के परिचित हम लोग उन्हें, इसी नाम से पुकारते थे, बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि उनका अंत हत्या द्वारा ही होगा। और, उनकी हत्या के छह महीने बाद, जार अपने पुत्र और अपनी गद्दी दोनों से हाथ गंवा बैठेंगे। इस भविष्यवाणी का पहला भाग तो सच निकल ही चुका है। उन्होंने रूस में कत्ले-आम होने की भविष्यवाणी भी की थी, और कहा था कि महायुद्ध होगा, जिसमें अंत में जरमनी की हार होगी।"

"आप भी तो उसकी शिष्याओं में थीं न !" फेदोर ने पूछा।

मुंहफट फेदोर के प्रश्न का बुरा न मानते हुए, एलिसालैक्स ने कहा, "ग्रिशका से मुझे बहुत हानि पहुंची, मगर अब उनकी बुराई करने से क्या लाभ ? भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।"

इस भेंट के एक सप्ताह बाद मुझे डाक से एक गुमनाम पत्र मिला, जिसमें मुझे सलाह दी गयी थी कि मैं कुनी-आंग को एलिसालैक्स से ज्यादा न मिलने-जुलने दूं, क्योंकि वह एक बदनाम औरत है और कुनी को बिगाड़कर रख देगी।

पता नहीं चला कि पत्र-लेखक कौन था, और पत्र लिखने में उसका वास्तविक उद्देश्य क्या था। फिर भी कुनी का संरक्षक होने के नाते मैंने तय कर लिया कि उसका रूसी परिवार में आना-जाना बंद करना होगा। वह शाम को ही वहां जाती थी। मैंने उसे यह आदेश देकर कि शाम को वह मेरी सैक्रेटरी का काम किया करे, उसका वहां आना-जाना बंद कर दिया।

शीघ्र ही कुनी-आंग एक कुशल सैक्रेटरी बन गयी।

लेकिन, अपने कार्य में काफी व्यस्त रहने के बावजूद, वह एलिसालैक्स को बिलकुल नहीं भूली थी। रूसी नव वर्ष के अगले दिन, पहली बार उसने एलिसालैक्स और रूसी परिवार के सदस्यों को अपने घर आमंत्रित किया।

चाय के बाद, कुनी नटाशा और फेदोर को अपने कमरे में ले गयी और मैं एलिसालैक्स से बातें करने लगा।

उसने सिगरेट सुलगाते हुए पूछा, "एक सवाल पूछ सकती हूं ?"

"अवश्य पूछिए।"

"क्या यह सच नहीं है कि आपने कुनी-आंग को अपनी सैक्रेटरी इसलिए बनाया है कि वह मुझसे ज्यादा न मिल सके ? यों आपने जो कुछ किया, ठीक ही किया। मगर बड़ी कृपा होगी, यदि आप कुनी का मुझसे मिलना एकदम बंद न करेंगे, तो। मैं उसे बहुत चाहती हूं।"

"उस पर मेरा कोई अधिकार नहीं

है। वह आपसे मिलने को स्वतंत्र है।"

"बात अधिकार की नहीं, मित्रता की है। अच्छा, यह बताइए, क्या आप मेरे बारे में और अधिक जानने को उत्सुक नहीं हैं?"

"अवश्य हूं। आप पेकिंग में अकेली क्या करती रहती हैं?"

"अकेली कहां हूं? जिस परिवार के लोगों के साथ ठहरी हूं, उनके पूर्वज कभी हमारी जमींदारी में नौकर थे। पेकिंग में मैं इसीलिए आयी कि वहां मुझे बहुत अपमानित किया गया था। मैं अब इस प्रतीक्षा में हूं कि रूस में जन-क्रांति हो, यद्यपि उस क्रांति से स्वयं मुझे कोई लाभ नहीं होगा। जब तक ग्रिशका जीवित थे, उन्होंने रूस की शासन-व्यवस्था को खंडित नहीं होने दिया था।"

"आप रास्पुटिन की प्रशंसिका हैं, या उसकी शत्रु?"

"ग्रिशका ने मुझे भी तबाह किया और खुद को भी। मैं भी रूस के अनेक कुलीन परिवारों की महिलाओं की भांति उनकी ओर आकर्षित हुई थी, मगर उनकी भांति मैंने कभी आत्म-समर्पण नहीं किया। मैं कभी यह नहीं मान सकी कि वे भगवान का एक अंश हैं। उनकी देह से आनेवाली दुर्गंध भी मेरे लिए असह्य थी। फिर भी वे जितना ही बेहूदा और वहशी ढंग से मेरे साथ पेश आते थे, उतनी ही मैं उनकी ओर खिंचती जाती थी। विकर्षण में आकर्षण।"

कुछ क्षण चुप रहकर, उसने फिर कहना आरंभ किया, "ग्रिशका का स्थान रूस के इतिहास में अमर रहेगा। और, उनके बारे में लिखनेवाले शोधी इतिहासज्ञों को शायद यह भी पता चल जाएगा कि जहां रूस के सिंहासन की असली शक्ति ग्रिशका के हाथों में थी, वहां खुद ग्रिशका मेरे-जैसी बेशर्म औरत की मुट्ठी में थे। मैंने ही उन-जैसे गंवार किसान को राजनीति और राज्य-व्यवस्था की बारीकियों से परिचित कराया था। उनके जार पर हावी हो जाने के बाद, उनके शत्रुओं की संख्या बहुत बढ़ गयी थी। उनके शत्रु उन्हें तो नष्ट न कर पाये, हां, मुझे नष्ट करने में अवश्य सफल हो गये। धीरे-धीरे, उनके परामर्शदाता वही रह गये, जो जरमनी के गुप्त एजेंट थे। इन्हीं लोगों की सलाह पर जार ने ग्रांड ड्यूक निकोलस को पदच्युत करके सेना का नेतृत्व अपने हाथों में ले लिया था। बस, यहीं से उनके अंत की शुरुआत हुई।"

देखने में एलिसालैक्स २५–२६ से अधिक की नहीं लगती थी। मेरी यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह चीन में पली, लगभग-अनाथ, एक इतालवी लड़की को इतना क्यों चाहने लगी है? जब मैंने उससे यह प्रश्न पूछा, तब उसने कहा, "मेरे बाल ऊपर करके मेरे माथे के ऊपर देखिए।" जब मैंने ऐसा करके देखा, तब पाया कि उसकी बायीं भौहों

के ठीक ऊपर हलके लाल रंग का अर्द्ध चंद्र के आकार का जन्म-चिह्न था। ठीक उसी स्थान पर, और ठीक वैसा ही जन्म-चिह्न कुनी के माथे पर भी मौजूद था।

"जब मैंने कुनी के माथे पर यह जन्म-चिह्न देखा था, तभी मुझे लगा था कि शायद भाग्य ने हम दोनों को इसलिए मिलाया है कि हम एक-दूसरे में अपनी प्रतिच्छाया देख सकें।" यह कहते-कहते वह मेरे और निकट आ गयी। उसके बाल अभी तक मेरे हाथ में थे। अब उसकी आंखें मेरी आंखों में गड़ी थीं और उसके गरम श्वास का स्पर्श मुझे अपने गालों पर अनुभव हो रहा था। ओह ! कैसी मदभरी और मायाविनी थीं वे आंखें !

मुझे चक्कर आने लगा। कमरा चारों ओर घूमता दिखायी दिया। कब उसने अपनी बांहें मेरी गरदन में डाल दीं और कब मेरे तप्त होंठों का चुंबन ले लिया, मुझे कुछ मालूम न पड़ा। जब होश आया, तब सुना, एक मोहक मुसकान के साथ एलिसालेक्स मुझसे कह रही थी, "मैं भी ग्रिशका की भांति भविष्यवाणी कर सकती हूं। मेरी भविष्यवाणी है कि एक दिन तुम भी कुनी का इसी भांति चुंबन लोगे, जिस प्रकार मैंने तुम्हारा चुंबन लिया है। उसके होंठ मेरे होंठों से अधिक कोमल, तप्त और मधुर होंगे।"

किसी भी यूरोपीय के लिए, एक लंबे अरसे तक पूर्व के किसी देश में रहने के बाद, जादू-टोने के संपर्क में न आना और उससे प्रभावित न होना असंभव ही है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। कुनी ने एक दिन कुआंग-ती के मंदिर से एक जीता-जागता जादूगर लाकर मेरे सामने खड़ा कर ही दिया। मैं उसे देखकर खुश न हुआ, पर उसकी खातिर जादूगर महोदय से बातें करने के लिए तैयार हो गया। कुनी ने कहा, "ये नामी भविष्य-वक्ता भी हैं। यह, मेरी प्रार्थना पर मेरा भविष्य बताएंगे।"

जादूगर का नाम वांग था। उसने कुनी के चेहरे को कुछ देर तक ध्यानपूर्वक देखने के बाद कहा, "हंसी, आंसू और शांति—यह है तुम्हारा जीवन।"

मैंने वांग से कहा, "यह तो प्रायः सभी की भविष्यवाणी है।"

"हां, यह तो है," कहकर वांग चुप हो गया।

"मेरा विवाह होगा या नहीं ?" कुनी ने पूछा।

"हां, आपका विवाह अवश्य होगा।"

"क्या मैं कभी सिने-अभिनेत्री बनूंगी?" कुनी ने फिर पूछा।

वह आंखें बंद करके कुछ सोचने लगा। फिर बोला, "अपना जीवन जीना ही सबसे अच्छा है।"

"क्या मतलब ?" मैंने उससे पूछा।

"अपना जीवन जीना, छाया-जीवन जीने, या दूसरों के जीवन के छाया-चित्र देखने से कहीं अच्छा है।"

काफी देर तक निस्तब्धता रही। वांग काफी गंभीर था।

फिर इस निस्तब्धता को भंग करते हुए उसने कुनी से जो कुछ कहा, उससे मैं और कुनी दोनों स्तब्ध रह गये। बोला, "जैसा चिह्न आपके माथे पर है, वैसा ही आपके पड़ोस में रहनेवाली एक रूसी महिला के माथे पर भी है। यदि आप उस महिला के संपर्क में रहीं, तब बहुत-सी दिलचस्प घटनाएं घटेंगी। लेकिन, इन घटनाओं का आपके जीवन से कोई संबंध न होगा। वे एक ऐसे जीवन के छाया-चित्र होंगे, जो आपका अपना नहीं होगा।"

"यह तो काफी दिलचस्प बात बतायी आपने," कुनी ने कहा।

"दिलचस्प वे ही बातें होती हैं, जो आदमी के अपने जीवन में घटें। आदमी को अपनी ही हंसी और अपने ही आंसुओं से संबंध रखना चाहिए।"

कहकर वांग ने हमसे विदा ली। उसके जाने के बाद, कुनी काफी देर तक ध्यान-मग्न रही।

एक रात, अपने अध्ययन-कक्ष में बैठा मैं एक चीनी कविता पढ़ रहा था। कविता मुझे इतनी अच्छी लगी कि मैं आंखें बंद करके उसे गुनगुनाने लगा। गुनगुनाते-गुनगुनाते, मैं एक अजीब दुनिया में पहुंचकर खो गया।

सहसा मुझे लगा, किसी ने कमरे में प्रवेश किया है। आंखें खोलीं, तब अपने निकट ही, काले सांपों की पृष्ठ-भूमि में किसी को खड़े पाया। रंग-बिरंगी वेशभूषा और चित्र-विचित्र मुखावरणों और एक नेत्र-रंजक शिरोवस्त्र तथा अन्य आवरणों-वाली यह आकृति, सिने-अभिनेत्री बनने की शौकीन कुनी-आंग की ही थी। वह इस अनुपम वेशभूषा में अत्यंत मोहक लग रही थी। वह आकर मेरे पास बैठ गयी। वह ठंड से कांप रही थी और उसके हाथ अत्यंत सर्द थे।

मैं उसे कमरे में जलती हुई अंगीठी के पास ले आया। जब उसका शरीर गरम हो गया, तब मैंने गद्दे की तहोंवाला साटन का एक वस्त्र उसे ओढ़ा दिया। यह एक प्राचीन वस्त्र था, जो मैंने प्राचीन चीन के एक दरबारी के वंशज से खरीदा था। उसने बताया था कि इस वस्त्र को सम्राट की प्रेमिकाओं को ओढ़ाकर हिजड़े उन्हें सम्राट के विलास-गृह में ले जाते थे। प्राचीन काल के हिजड़ों की भांति मैं भी उसे उठाकर अपने शयन-कक्ष में ले जा सकता था, यह विचार मेरे मन में आते ही मेरा मन जोर-जोर से धड़कने लगा। वैसे, उसे आराम और नींद की जरूरत भी थी।

हाथों का हलका-सा सहारा देकर मैंने उसे उसके बिस्तर पर लिटा दिया। ऐसा करते समय, मैंने अपने होंठों को उसके होंठों के बहुत निकट पाया। मैं अपने को रोक न पाया और मैंने हलके-से उसका चुंबन ले लिया।

एलिसालैक्स की भविष्यवाणी सच

निकली।

चीन में एक कहावत है :

'कोलाहल बाजारों में ही नहीं है
और न शांति पर्वतीय स्थानों में ही है
इन दोनों का स्थायी निवास है
आदमी का चिर-परिवर्तनशील मन'

यह कहावत मुझे हमेशा से अच्छी लगती आयी थी, पर अब इस अनुभूति के बाद कि मैं कुनी-आंग को प्यार करने लगा हूं, उसकी सचाई मुझ पर और अधिक उजागर हो चली थी।

इस प्रेमानुभूति से पूर्व, मैं कुनी-आंग को उसके काल्पनिक प्रेमियों को लेकर चिढ़ाया करता था। मैं उससे कहा करता था कि 'प्लैटोनिक' प्रेम वास्तविक प्रेम से कहीं अधिक स्थायी और उपयोगी है। अब यह सब कुछ समाप्त हो गया था। मैं कुनी से प्रेम करने लगा था। अवचेतन मन के किसी अंधेरे मन में दुबकी पड़ी यह प्रेमानुभूति ज्वालामुखी के विस्फोट की भांति उस रात प्रकट हुई थी। कभी-कभी मन में विचार आता कि उससे प्रेम करके मैं उसकी स्थिति का अनुचित लाभ उठा रहा हूं। इस अंतर्द्वंद्व ने मेरी सारी शांति समाप्त करके रख दी।

और जब मैं अंतर्द्वंद्व के इस पीड़ादायक दौर से गुजर रहा था, तब ही मेरे जीवन में एक अन्य उल्लेखनीय व्यक्ति ने प्रवेश किया। इस व्यक्ति का संबंध न चीन से था, न उन पात्रों से, जिनका उल्लेख मैंने पीछे किया है। वह था, मेरे एक घनिष्ठ

मित्र जैरेमी मैंजे का नाती—पॉल डायजर्ट!

ब्रिटेनवासी जैरेमी सन १८६१ में चीन में आया था, और कुछ वर्षों बाद डेढ़ करोड़ डॉलर की संपत्ति का स्वामी बन गया था। उसकी मृत्यु के बाद उसका भाई इस संपत्ति का स्वामी बना और उसने अपने नाती पॉल को इस संपत्ति की देखभाल करने चीन भेजा था। वह अपने नाना के साथ चीन आया था और मेरे पास ही ठहरा था।

पॉल और कुनी की भेंट बड़े अप्रत्याशित ढंग से हुई। और शायद इस अप्रत्याशिता के कारण ही दोनों ने तत्काल एक दूसरे में रुचि लेना आरंभ कर दिया था। कुनी की आयु उस समय १९ वर्ष थी और उसका युवा हृदय किसी से प्रेम करने के लिए उत्सुक था। पॉल भी एक सुदर्शन युवक था, यद्यपि इस तथ्य से बेखबर नहीं था कि आसन्न मृत्यु की काली छाया उसके ऊपर मंडरा रही है। मौत की क्रूर छाया में जन्मा प्रेम आकस्मिक होने के कारण, कभी-कभी, प्रखर-प्रचंड भी होता है।

घटना-चक्र के इस नये मोड़ से मैं काफी खिन्न और चोट खाया हुआ अनुभव कर रहा था। जानता था कि वह दिन अवश्य आएगा, जब कुनी किसी से प्रेम करने लगेगी और मैं उसे खोकर ईर्ष्या की आग में जलने को शेष रह जाऊंगा। पर, अभी तक मैं इस दुःखांत घटना के लिए

नस्ल

अनादिकाल से
निर्भीक
उड़ते रहनेवाले
सम्राट
समय-पुत्रों ने
अपने
विराट पंखों को
काटकर
आकाश-पखेरू के
स्थान पर
स्वयं को भूमि का
जीव घोषित
कर दिया
मात्र इसलिए
कि सड़क पर
निकलनेवाले
जुलूस में
वे भी शामिल हो सकें
अन्य
सुडौल अश्वों की तरह

—प्रभुदयाल खट्टर

२५८०, भगतसिंह स्ट्रीट,
चूनामंडी, पहाड़गंज, नयी दिल्ली

तैयार न था और फिर स्वयं अपने से ही पूछता था, 'मृत्योन्मुख आदमी से ईर्ष्या कैसी ?'

उधर, पॉल के आगमन के बाद से कुनी का चेहरा दीप्तिमान हो गया था। अब उसका अधिकांश समय पॉल को पेकिंग के दर्शनीय स्थलों को दिखाने और दुनिया के हर विषय पर बातें करने में व्यतीत होता था। मैं केवल एक अवसर पर उनके साथ था, जब वे लामा-मंदिर के दर्शन के लिए गये थे। इस महामठ के अनेक लामा मेरे अच्छे मित्र थे और मैं उनसे मिलने का इच्छुक भी था। वहां मेरा परिचय एक मंगोल लामा से कराया गया। बाद में जो घटनाएं घटीं, उन्हें याद करता हूं, तब मनाता हूं कि यह परिचय न होता, तो अच्छा होता !

लामा और पॉल, न जाने किस अज्ञात कारणवश, जल्दी ही एक दूसरे के काफी निकट आ गये थे। लामा ने फ्रेंच में पॉल को बताया कि वह मंगोलिया का एक राजकुमार था और इस नाते रूस के जार उसका बहुत आदर करते थे। उन्होंने अपने इसी आदर को व्यक्त करने के लिए उसे एक उच्च सेनाधिकारी बनाया था। फिर उसने पॉल से पूछा, "क्या आपको चीन आकर प्रसन्नता हुई ?"

"हां। चीन आने की मेरी कामना काफी दिनों से थी। चीन के बारे में कुछ न जानते हुए भी, न जाने क्यों मन में उसके प्रति एक अज्ञात आकर्षण था, लेकिन एक बार मैंने सपने में पेकिंग का जो वर्णन सुना था, पेकिंग उससे भिन्न निकला।"

"कुछ स्थितियों में निद्रा-मग्न व्यक्ति के मन को प्रभावित किया जा सकता है और सपनों के माध्यम से उसे वांछित अनुभव कराये जा सकते हैं।"

"यह कैसे संभव है ?"

"निद्रा-मग्न व्यक्ति के विचार-स्थानांतरण द्वारा।"

"और ऐसे विचार-स्थानांतरण का परिणाम होगा—स्वप्न ?"

"हां। मैं फ्रेंच के अपने सीमित ज्ञान द्वारा सपनों के माध्यम से अतींद्रिय भाव-विनिमय की प्रक्रिया को नहीं समझा पाऊंगा, मगर आप चाहें, तो इस प्रक्रिया का व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत कर सकता हूं।"

"मैं राजी हूं। मेरा ख्याल है कि मात्र सैद्धांतिक चर्चा से यह कहीं अच्छा रहेगा।" पॉल ने उत्साहपूर्वक कहा।

हम जानेवाले ही थे कि महंत ने हमें पास के एक कमरे में आने के लिए आमंत्रित किया। कमरे में एक 'कांग' (पलंग) पड़ा था। महंत ने उस पर एक मोटा गद्दा, जिससे कपूर की गंध आ रही थी, बिछा दिया। फिर उसने पॉल से पूछा, "सोना चाहते हैं ? चूंकि यह सोने का समय नहीं है, इसलिए मैं आपको सुलाने में सहायता करूंगा।"

"तब तो यह सम्मोह-निद्रा होगी ?" पॉल ने पूछा।

जवाब में महंत ने सर हिला दिया, पर कहा कुछ नहीं। फिर वह हमसे प्रतीक्षा करने का इशारा करके, कमरे के बाहर चला गया।

"निश्चय ही वह अफीम लेने गया है", कुनी आंग ने कहा।

"मंदिर में अफीम कैसे रखी जा सकती है ?" पॉल ने पूछा।

"हर चीनी के पास हर जगह अफीम रहती है," कुनी ने कहा।

महंत एक छोटी-सी जली हुई अंगीठी के साथ लौटा। उसमें से पोस्ते की निद्रा-जनक गंध निकल रही थी। पॉल को कुनी ने प्रयोग में भाग लेने से रोका, पर उसने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं। वह अपने जूते निकालकर पलंग पर लेट गया। महंत के इशारे पर मैं और कुनी कमरे के बाहर आ गये।

मंदिर में आते समय मैंने कल्पना भी न की थी कि वहां मुझे सम्मोह-निद्रा विषयक कोई प्रयोग देखना पड़ेगा। मुझे सम्मोह-निद्रा में कोई रुचि न थी, लेकिन मैं व्यग्रता से पॉल पर उसके परिणाम के बारे में सोच रहा था।

मैं व्यग्र था, लेकिन महंत और कुनी दोनों शांत थे। सहसा, महंत ने कुनी के माथे पर अंकित अर्द्ध चंद्र के आकार के जन्म-चिह्न को गौर से देखना आरंभ कर दिया और फिर मुसकराकर उससे कहने लगा, "यदि आपके मित्र को नींद आ गयी, तब उसके सपनों में हम आपको लाने की कोशिश करेंगे।"

वह टहलता-टहलता आंगन के बीच में आ गया, जहां लाइलैक की झाड़ियों पर दो सफेद तितलियां मंडरा रही थीं। उसने आशीर्वाद देने की मुद्रा में अपने हाथ उनके ऊपर रखे। उसके ऐसा करते ही, दोनों तितलियां, अपने पंख बंद करके उसके हाथों के बीच की अंगुलियों पर चुपचाप आकर बैठ गयीं।

कुनी चमत्कृत तो हुई, पर पूरी तरह नहीं। उसने महंत के पास आकर पूछा, "क्या आप यह चमत्कार दोबारा करके दिखा सकते हैं ?"

महंत ने हलके स्पर्श से तितलियों को उड़ा दिया और जब वे काफी ऊंचाई पर पहुंच गयीं, तब उसने अपने हाथ ऊपर उठाकर उनका आवाहन किया। क्षणभर में दोनों तितलियां उसकी अंगुलियों के पोरों पर आकर बैठ गयीं।

महंत कुछ मिनट तक निश्चल खड़ा रहा और फिर हमें चुप रहने का इशारा करके उस कमरे में चला गया, जहां पॉल सो रहा था। उसके पीछे दबे पांव हम भी गये। जाकर देखा, पॉल पलंग पर गहरी नींद में सोया पड़ा था। महंत ने पॉल की कलाइयों को हलके से पकड़ रखा था। मैं और कुनी काफी देर तक शीतल और अंधकारमय कमरे में खड़े रहे, मगर कोई चमत्कार होता नहीं दिखायी दिया।

सहसा, मंदिर से ढोल और घंटे-घड़ियालों की आवाज आनी शुरू हो गयी।

चीन में धार्मिक समारोह से पूर्व वाद्य-वृंदों का जो शोर मचाया जाता है, वह मृत व्यक्तियों को जिलाने के लिए भी काफी होता है।

या तो इस शोर से, या उसकी सम्मोह-निद्रा भंग हो गयी थी, इस कारण, पॉल जग गया। वह काफी स्तब्ध दिखायी देता था। जब कुनी ने उससे पूछा कि उसे सपने में क्या दिखायी दिया था, तब उसने बिना कोई जवाब दिये, अपना सर हिला दिया। क्या अफीम ने उसे हत-बुद्धि कर दिया था ? जब हम रिक्शे में सवार हुए, तब भी पॉल बराबर जड़ बना बैठा था।

डिनर से एक घंटा पहले, पॉल की जड़ता कुछ कम होती दिखायी दी। वह कुनी को अपने सपने के बारे में बताने लगा.

"बड़ा अजीब अनुभव था। सपने में मैं तुम्हारे साथ सेंट पीटर्सबर्ग के एक विशाल सदन में तुम्हारे शृंगार-कक्ष में था। हम दोनों किसी नृत्य-शाला में जाने के लिए तैयार थे। तुम मुझसे पूछ रही थीं कि मैं 'क्रॉस ऑव अलैग्जेंडर' नामक हीरों से जटित एक आभूषण धारण करूं या नहीं? हम दोनों रूसी भाषा में बातें कर रहे थे, लेकिन सपने की एक विशेषता ऐसी थी जो मुझे अभी याद है और वह यह कि सपने में भी मेरे मन में तुम्हारे प्रति उतना ही प्यार था, जितना वास्तविक जीवन में वर्तमान में है।"

कुनी ने पॉल की स्वप्न-कथा बड़ी दिलचस्पी से सुनी, मगर बाद में, जब व[illegible]

मेरे पास आयी, तब काफी गमगीन थी। उसे पॉल की बीमारी के बारे में पता चल चुका था। वह रोते हुए कहने लगी, "मैं उससे विवाह करना चाहती थी, क्योंकि वह सच्चे दिल से मुझे चाहता था। लेकिन, इस सर्द समाचार से मेरा आशा-पुष्प मुरझा गया है।"

मैं कुनी की परेशानी समझ सकता था। उसका नवजात प्रेम कुम्हला गया था। पॉल को वह मन तो दे चुकी थी, पर तन देने में उसे डर लगता था। उसका ग्रंतर्द्वंद्व इसी भय के कारण था। वैसे, मेरे प्रति उसका प्रेम ग्रौर विश्वास अभी तक अटूट था।

मैं उठकर अपने अध्ययन-कक्ष में पहुंचा, ग्रौर वहां से मुहर का टूटा हुआ टुकड़ा लेकर लौटा। उसे देखकर कुनी ने पूछा, "क्या आपको मेरी मदद की जरूरत है?" वह टुकड़ों की शर्त को भूली नहीं थी।

"मुझे तुम्हारी मदद की नहीं, खुद तुम्हारी जरूरत है। मुझे तुम्हारी जरूरत पॉल से भी ज्यादा है।"

"सचमुच आपको मेरी जरूरत है?"

"सचमुच! मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

"मगर आपने यह बात मुझसे पहले क्यों नहीं कही थी?"

"इसलिए कि मुझे लगता था कि ऐसा प्रस्ताव तुम्हारे सामने रखना, तुम्हारे प्रति अन्याय होता। लोगों को लगता, मैं तुम्हारी स्थिति का अनुचित लाभ उठाना

दो लघु कविताएं

जिंदगी

सोनचिरैया धूप मेरे आंगन में आती
और वसंत से पूर्व कोकिला-सी है गाती
फुदक-फुदककर
गौरैया-सी इधर-उधर जाती है
और गिलहरी-सी दीवार पर चढ़ जाती है
दोपहरी में पसर गयी वह
अनचाहे मेहमान-सी और शाम तक
सिमट गयी वह कपड़े के थान-सी

पहचान

पहचान मोहताज नहीं होती है
लम्हों की, दिनों की
कई बार पहचानने के लिए काफी
होता है पलक का उठना
कई बार जिंदगी का फैलाव भी
नाकाफी है
कई बार हम पहचानते हैं
एक-दूसरे को ऐसे
जैसे अटका पल्लू
पहचाने कटीले झाड़ को
और कई बार पहचानकर
किसी को हम मिल जाते हैं
फूल में खुशबू की तरह

—किरण गुप्ता
केंद्रीय विद्यालय, गोल मार्केट, नयी दिल्ली

चाहता हूं। लेकिन अब न मुझे लोगों की परवाह है, न उनकी बातों की।"

कुनी ने मुसकराते हुए, पिग्गिन 'अंगरेजी' में मेरे प्रस्ताव का उत्तर दिया, "यश माश्टर ! कैन डू।" (हां, स्वामी, यह हो सकता है)।

कुनी से विवाह करने के बाद इस चीनी कहावत की सचाई मुझ पर प्रकट हो गयी : 'शांति और कोलाहल का स्थान है, आदमी का चिरपरिवर्तनशील मन।' कुनी को अपना बनाकर मेरे मन में स्थायी शांति व्याप्त हो गयी। पर, पॉल को लेकर हम दोनों अपने को अपराधी अनुभव करते थे, यद्यपि हम दोनों के मन में उसके प्रति सद्भावना के अतिरिक्त कुछ और न था। उसने मंदिर के पास ही एक मकान किराये पर ले लिया था। महंत उसे इसी मकान में सपनों की दुनिया में ले जाता था।

एक दिन मैंने पॉल से पूछा, "क्या वाकई तुम्हारे सपने जादूभरे और हृदयग्राही नहीं हैं ?"

"वे वास्तविक जीवन के प्रतिबिंब हैं। मुझे लगता है कि महंत लामा इन सपनों के माध्यम से मुझे अपने विगत जीवन की ही झांकी दिखा रहे हैं। सपने में मैं अपने को बिल्कुल मंगोल ही समझता हूं और तदनुसार ही आचरण करता हूं। कितना विस्तृत है मंगोल देश, निस्सीम क्षितिज को अपनी बांहों में भरता हुआ !"

अगली बार हम दोनों पॉल से मिले, तब उसे और भी अशांत पाया। मझे

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. १२, २. ख, ३. क. कश्मीर का, ख. कन्नौज के यशोवर्मन को, ४. श्री नीलम संजीव रेड्डी। प्र. मं.—श्री मोरारजी देसाई (जनता पार्टी), श्री चरणसिंह (लोक दल), श्रीमती इंदिरा गांधी (कांग्रेस), ५. चौदह वर्ष से कम उम्र के बच्चों के कारखानों में काम करने पर रोक, ६. ४.५ मिलीमीटर, ७. जयपुर संग्रहालय में राजा सवाई माधोसिंह (१८८०-१९२२) ने गंगा-जल रखने के लिए चांदी के दो कलसे बनवाये थे, प्रत्येक को ऊंचाई १६० सें. मी., गोलाई २४३ सें.मी. तथा वजन ३०० कि. ग्रा. से अधिक, ८. ब्रिटिश अभियानकर्त्ता सर रैनल्फ फियनेस तथा चार्ल्स बर्टन लगभग तीन वर्षों की यात्रा के बाद ३० अगस्त, १९८२ को ग्रीनविच पोर्ट लौटे, ९. क. नासेर अल शज्ली (मिस्त्री) ने ८ घंटे ४५ मिनट में (१९७७), ख. रिचार्ड चार्ल्सवर्थ (ब्रिटिश) ने ८ घंटे ५२ मिनट में (जुलाई १९८२), १०. केवल दो रूसी महिलाओं—वेलेंतीना तेरेश्कोवा (१९६४) तथा स्वेतलाना सावित्सकाया (अगस्त १९८२) ने, ११. बोइंग ७५७ द्वारा टोकियो से सीटल (अमरीका), ७९०० कि. मी., ९ घंटे ७ मिनट में (अगस्त १९८२), १२. डाइनासोर।

लगा, लामा द्वारा प्रदत्त सपनों ने उसकी नींद गायब कर दी थी। उसने न हमारा अभिवादन किया, न हमें देखकर कोई हर्ष या उत्साह दिखाया। जाहिर था कि वह अपने स्वप्न-जीवन से इस कदर अभिभूत था कि उसे उस दुनिया के लोगों का कोई खयाल नहीं रह गया था, जिसमें वह जी रहा था। मैंने उससे पूछा, "पिछली बार जब तुमसे बातें हुईं थीं, तब तुम सोलह साल के खराब मंगोल लड़के थे। तब से तुम्हारी क्या प्रगति है?"

"इसके बाद तो और कई साल गुजर गये हैं। मेरी सारी जवानी एशिया में घूमते-घूमते बीत गयी है। रूस और चीन के अलावा, मैं हिमालय-प्रदेश और उत्तरी भागों की यात्रा भी कर चुका हूं। पचीस वर्ष की आयु में मैं सेंट पीटर्सबर्ग पहुंचा, जहां जार ने मुझे सेना में एक उच्च पद प्रदान किया। जार के दरबार में मेरी भेंट कुनी-आंग से हुई। (जैसा कि बाद में मुझे मालूम पड़ा, जो कुनी-आंग पॉल को अपने सपनों में दिखायी पड़ी, वह वास्तव में लामा की प्रेमिका एलिसा-लैक्स थी और जिस 'क्रॉस ऑव अलेग्जैंडर' का जिक्र उसने किया था, वह एलिसालैक्स के पास ही था और उसने वह मुझे दिखाया भी था)। आजकल अपने स्वप्न-जीवन में मैं एक पूर्वी प्रांत का गवर्नर हूं। मैं एक महल में रहता हूं, जिसमें एक जेल भी है, जहां बंदियों पर बड़े जुल्म होते हैं।"

घरेलू उपचार

मूत्र-कृच्छ

मूत्र-कृच्छ रोग में बार-बार पेशाब करने की इच्छा होती है और कष्ट के साथ बूंद-बूंद पेशाब होता है, या बिलकुल नहीं होता। पेशाब करते समय बहुत कष्ट होता है। कुछ विशेष रोगों के कारण यह हो जाता है-जैसे कृमि-रोग, वृक्क-रोग, पथरी, सूजाक, आंव आदि। कारण की चिकित्सा होना आवश्यक है।

निम्नलिखित किसी एक उपाय से लाभ होता है:

(१) छोटी इलायची ५, एक प्याला दूध में उबालकर सुबह-रात पियें।

(२) बारहसींघे का सींग पत्थर पर घिसकर नाभि के चारों ओर लेप करें।

(३) कुशा, काश, मूंज की जड़, ईख और दूब ६-६ ग्राम लेकर दो प्याले पानी में पकायें। चौथाई भाग शेष रहने पर प्रति-दिन सुबह पियें।

(४) १० ग्राम गोखरू, दो प्याला पानी में पकायें, चौथाई शेष रहने पर छान लें, आधा चम्मच जवाखार डालकर सुबह-शाम पियें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा
बी-५/७, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

"अपने स्वप्न-जीवन से सुखी और संतुष्ट हो तुम ?"

"सुखी और संतुष्ट कौन कब होता है ? संतोष न वास्तविक जीवन में मिलता है, न स्वप्न-जीवन में। फिलहाल, मैं कुनी-आंग की विरहाग्नि में जल रहा हूं। लामा का कहना है, वह शीघ्र ही मुझे मिल जाएगी।"

लेकिन, जब कुनी उसके स्वप्न-जीवन में आयी, तब उसका जीवन बड़ा दुःखी और क्लेशपूर्ण बन गया। इस क्लेश का कारण पॉल ने हमें नहीं बताया, मगर स्वप्न-जीवन के उसके वर्णन से यह तो स्पष्ट था कि उसका अपना व्यक्तित्व उसके स्वप्नों के व्यक्तित्व में घुलता और समाप्त होता जा रहा था। वैसे, पॉल की हालत तेजी से बिगड़ती जा रही थी और इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसकी इस हालत की जड़ में उसका यंत्रणादायी स्वप्न-जीवन ही था।

महंत की कल्पना-शक्ति सचमुच अद्भुत थी। कारण, सपनों से जागने पर पॉल को लगता था कि वह वही जि[illegible] जीकर आ रहा है, जो उसने सपने [illegible] महंत की बोध-शक्ति के माध्यम से दे[illegible] थी। स्थिति यहां तक पहुंच गयी [illegible] कि उसने वास्तविक कुनी-आंग को [illegible] पहचानने से इनकार कर दिया था। उ[illegible] लिए सपनों की कुनी (एलिसालैक्स) [illegible] वास्तविक हो चली थी।

एक दिन जब हम दोनों उसे देखने ग[illegible] तब वह चीख रहा था। आंखें समाधि[illegible] व्यक्ति की भांति देखकर भी कुछ न[illegible] देख रही थीं। उसने कष्ट और भय [illegible] अपने होंठों को दांतों से दबा रखा था[illegible] कुनी उसके पास गयी, तब उसने उ[illegible] ऐसे देखा, जैसे किसी दुःस्वप्न से जागा हो[illegible] वह कंपित स्वर में बोला, "कुनी ! मे[illegible] कुनी ! तुम मेरे पास हो न ! मैं पा[illegible] हूं, तुम्हारा अपना पॉल, और तुम कु[illegible] हो, मेरी अपनी कुनी ! इसके अलावा ज[illegible] कुछ है, वह महज सपना है, एक डराव[illegible] सपना !"

फिर, कमजोरी की वजह से व[illegible] आहिस्ता से करवट लेकर सो गया। सो[illegible] समय वह उस थके बच्चे के समान लग रहा था, जो काफी जगने के बाद सोया हो[illegible] धीरे-धीरे यह नींद गहरी ... और गहरी ... हो गयी !

महंत ने उसे गौर से देखा, और आ[illegible] बढ़कर कुनी के कंधे का स्पर्श करता हु[illegible] बोला, "आप लोग अब जा सकते हैं[illegible] खेल खत्म हुआ।"

मूंछ-दाढ़ीवाली महिला से कौन प्रेम कर सकता है ? कौन उसे गृहिणी के रूप में स्वीकार कर सकेगा...? लेकिन बेलजियम हेलेन एंडोलिया के प्रेमियों की संख्या असंख्य थी, हालांकि उसकी दाढ़ी कमर तक लंबी थी। सत्रहवीं सदी की इस महिला से विवाह करने के लिए हजारों मील से चलकर लोग आते थे।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से [illegible] राजहंस द्वारा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

समस्या-पूर्ति—४५

मेला

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है। गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी। आपकी रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार—२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार—१५ रुपये
अंतिम तिथि—२० जनवरी, १९८३

छाया : कृष्णकुमार भार्गव

प्रकाशन

ादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

फरवरी ८३

ली-परिशिष्ट

र की पहली सुबह

ली हृदय असली काम

स्तान टाइम्स प्रकाशन

ENPEE/PZF/118

प्रसिद्ध भविष्यवक्ता, प्रकाण्ड ज्योतिषी, हस्तरेखा विशेषज्ञ एवं सिद्धहस्त तान्त्रिक-मांत्रिक डा० नारायणदत्त श्रीमाली की अनमोल पुस्तकें

पृष्ठ 266

मूल्य 21/- डाकखर्च 4/-

प्रैक्टिकल हिंप्नोटिज्म

- सम्मोहन क्षेत्र का अद्भुत प्रायोगिक प्रमाणिक ग्रंथ, जिसमें हिप्नोटिज्म के मूल सिद्धांतों का सचित्र बेबाक प्रमाणिक विवरण है।
- ग्रंथ में भारतीय पाश्चात्य दोनों विद्याओं का अपूर्व संयोजन होने से पुस्तक प्रामाणिक एवं संग्रहणीय हो सकी है।
- पुस्तक में हिप्नोटिज्म को सरल-सरस ढंग से चित्रों द्वारा समझाया है जिससे साधारण पाठक भी एक अच्छा सम्मोहन विशेषज्ञ बन सकता है।
- पुस्तक में हिप्नोटिज्म के प्रकार प्रयोग, शक्ति [illegible], हिप्नोटिज्म के सिद्धांत, त्राटक, भावना, इच्छा-शक्ति, न्यास, ध्यान, सम्मोहन के तथ्य आदि पर पूर्ण प्रमाणिकता के साथ सचित्र विवरण है।

पृष्ठ 380

मूल्य 24/- डाकखर्च 4/-

मंत्र रहस्य

मंत्र-शक्ति के चमत्कारों का अभूतपूर्व ग्रंथ

- मंत्र, मंत्र का मूल स्वरूप, मंत्र की मूल ध्वनि व उसके सफल प्रयोगों पर एक प्रमाणिक संचित्र पुस्तक।
- असंख्य दुर्लभ मंत्र व उसके प्रमाणिक प्रयोग, जिसके माध्यम से साधक एक सफल मंत्र-शास्त्री एवं ज्ञाता बन सकता है।
- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए अद्भुत एवं आश्चर्यजनक ग्रंथ, जिसके माध्यम से साधक स्वयं के तथा लोगों के [illegible] का दूर करने म समर्थ हो सकता है।
- मत्रों के मूल स्वरूप, मंत्र चैतन्य, मंत्र कीलन-उत्कीलन, मंत्र ध्वनि, मंत्र प्रयोग, मंत्र विनियोग एवं मंत्रों के सफल प्रयोगों के लिए एक प्रमाणिक सचित्र ग्रन्थ।

पृष्ठ 192

मूल्य 18/- डाकखर्च 4/-

तांत्रिक सिद्धियां

- तांत्रिक क्रियाओं से सम्बन्धित समस्त गोपनीय रहस्यों का पहली बार रहस्योद्घाटन।
- दुर्लभ तांत्रिक क्रियाओं का सरस-सरल एवं सचित्र विवरण, जिससे सामान्य पाठक भी लाभ उठा सकता है। मंत्र अध्येताओं, तांत्रिकों एवं साधकों के लिए पथ प्रदर्शक पुस्तक, जिसमें बगला मुखी साधना, तारा साधना, कर्ण पिशचिनी साधना, अष्टलक्ष्मी साधना, सम्मोहन का प्रमाणिक वर्णन-विवेचन।
- तत्र के क्षेत्र में प्रेक्टिकल पुस्तक,। जिसमें तांत्रिक सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग, मार्ग में आने वाली बाधाएं उनका निराकरण व सफलता प्राप्त करने के साधन बताए गए हैं।

अपने निकट के बुक स्टाल पर मांग करें अन्यथा वी० पी० पी० द्वारा मंगाने का पता

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

VANDANA/PM/H-38
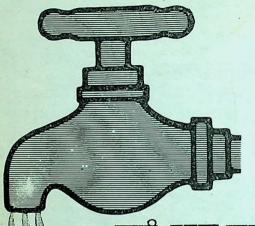
आपकी सेवा में संलग्न

हमारी प्रमुख उपलब्धियां

- जल कर, सफाई कर व जल दरों में बढ़ोतरी किये बिना नागरिकों की बेहतर देखभाल।
- **विकास कार्य :** पीने के पानी और सीवर की सुविधाएं बढ़ाने के लिए 1979-80 की तुलना में अब (1982-83) योजना व्यय दुगुना अर्थात 13.60 करोड़ से 28.00 करोड़ के लगभग।
- **जल प्रदाय में वृद्धि :** अप्रैल 1980 की तुलना में अब 5 करोड़ 50 लाख गैलन दैनिक अधिक पीने के पानी की सप्लाई। इन दिनों कुल उत्पादन 30 करोड़ 80 लाख गैलन दैनिक। दक्षिण दिल्ली को इस वर्ष से एक करोड़ गैलन दैनिक अधिक पानी की सप्लाई।
- **जल कनैक्शनों में वृद्धि :** अप्रैल 1980 से एक लाख नये जल कनैक्शन दिये गये। अब इनकी संख्या लगभग 4 लाख।
- **ग्रामीण जल प्रदाय :** मार्च 1980 तक केवल 93 देहाती गांवों में पीने का पानी था। अब 186 गांवों में नल का पानी उपलब्ध है।
- **कमजोर वर्ग के लिए राहत :** चालू वर्ष (1982-83) में 68 हरिजन बस्तियों में पीने का पानी दिया गया है। 77 अन्य ऐसी बस्तियों में कार्य प्रगति पर है। छठी योजना में ग्रामीण क्षेत्रों में बसी सभी 399 हरिजन बस्तियों को पीने का पानी उपलब्ध करा दिया जायेगा।
- **प्रभावी प्रशासन :** प्रभावी और चुस्त प्रशासन के परिणाम स्वरूप 1979-80 की तुलना में अब राजस्व आय में लगभग दुगनी वृद्धि।

दिल्ली जल प्रदाय एवं मल व्ययन संस्थान

दिल्ली नगर निगम

Newfields

सकल पदारथ हैं जगमाहीं । भाग्यहीन नर पावत नाहीं ।।

भारत ही क्या, विश्व के समस्त श्रद्धालु महानुभावों के लिए भूत, भविष्य, वर्तमान का कुण्डली के आधार पर फलादेश बताने वाला अनमोल ग्रन्थ।

असली, प्राचीन, हस्तलिखित

प्रथम बार प्रकाशित

भृगुसंहिता महाशास्त्र

(भा०टी०)

आज 80,00,00,000 (अस्सी करोड़) भारतवासी ही नहीं, वरन् समस्त विश्व की 5,00,00,00,000 (पांच अरब) जनता में असन्तोष व्याप्त है। कोई धन के लिए चिन्तित है तो कोई संतान के लिए दुखी है। किसी को काया कष्ट है तो कोई दूसरे को फलते-फूलते देख द्वेष की अग्नि में जल रहा है। किसी के पास सांसारिक भोग-वस्तुओं के साथ-साथ धन-संपत्ति का इतना अपार भण्डार है, कि वह स्वयं को असुरक्षित अनुभव कर रहा है। कुछ लोग ऐसे भी देखने में आते हैं जो आत्म-शांति की खोज में इधर-उधर भटक रहे हैं। इन सब के विपरीत अत्यन्त खोज करने पर ऋषियों-मुनियों की तपोभूमि इस भारत में कहीं-कहीं ऐसे महानुभाव भी देखने को मिल सकते हैं, जो त्रिकालज्ञ हैं अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान की बात जानते अथवा बता सकते हैं। यदि किसी व्यक्ति को आने वाले संकट अथवा भूतकालिक भूल का पता चल जाये तो उससे बचाव या प्रभाव को कम करने का प्रयास किया जा सकता है।

प्राचीन काल में जब कि आज की भांति छपाई आदि का प्रचलन नहीं था, हमारे ऋषियों-मुनियों ने ग्रन्थों की रचना करके अपनी शिष्य परम्परा के अनुसार उन्हें अक्षरशः स्मरण कराकर इस ज्ञान भण्डार को आगे बढ़ाया था। तत्पश्चात् ताड़ वृक्ष के पत्तों तथा भोजपत्र आदि पर इन ग्रन्थों को लिखा गया। बाद के कालखंड में विधर्मियों तथा आतंकवादियों ने इन ग्रन्थों को नष्ट करने का सामूहिक तथा योजनाबद्ध प्रयास किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सर्वांगीण पूर्ण ग्रन्थ दुष्प्राप्य हो गये। यदि कहीं पर कोई ग्रन्थ बचा तो उसके भी खंड-खंड हो गये अथवा विदेशी उठाकर ले गये। ऐसे ही दुर्लभ ग्रन्थों में "भृगुसंहिता महाशास्त्र" की गणना होती है, जिसका केवल नाम सुना था। कहा जाता है, किसी समय भृगु ऋषि ने विष्णु भगवान् की छाती में लात मारी जाने पर लक्ष्मी जी ने शाप दिया था कि ब्राह्मण सदा निर्धन रहेंगे। तब भृगु जी ने लक्ष्मी जी से कहा था—"मैं एक ऐसा ग्रन्थ रचूंगा कि जिस किसी के पास वह महाग्रन्थ (भृगुसंहिता) होगा, लक्ष्मी सर्वदा उसका चरण-चुम्बन करेगी।"
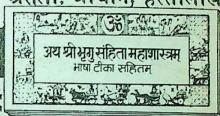
असंख्य कुण्डलियों सहित 20x30/6 (पुराना साइज) खुले पत्राकार 1410 पृष्ठ, सचित्र संपूर्ण 14 खण्ड। न्योछावर **501/-** (पाँच सौ एक रुपये) डाक खर्च 15/-(पन्द्रह रुपये) पृथक। यह कटिंग भेजने पर डाक खर्च माफ। आज ही 51/-(इक्यावन रुपये) एडवान्स भेजकर **450/-**(चार सौ पचास) की वी० पी० पी० द्वारा दुर्लभ ग्रन्थ घर बैठे प्राप्त करें। ग्रन्थ सीमित संख्या में छपा है, अतः क्रमशः सप्लाई किया जायगा।

विदेशी पाठकगण 100 £ (सौ पौंड) या 200 $ (डालर) एडवांस DEHATI PUSTAK BHANDAR, DELHI-6 के नाम पर भेजें।

कलियुग के प्रभाव को कम करने के लिए प्रत्येक सम्पन्न परिवार में इस ग्रन्थ का होना आवश्यक है।

अनेक अल्पज्ञ पंडित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" के असली होने में सन्देह करते हैं। यह ग्रन्थ प्राचीनकाल से श्रवणगोचर होता रहा है। कुछ पंडित एवं ज्योतिषी जिनके पास हस्तलिखित ग्रन्थ का कुछ भाग पाया जाता है, वे कई पीढ़ियों से ग्रन्थ को दिखा, सुनाकर जनता से उनकी कुण्डली का फलादेश बताकर हज़ारों रुपया अथवा मुंहमांगी दक्षिणा तक ले लेते हैं। श्री भृगु ऋषि रचित "भृगुसंहिता" जैसा भूत, भविष्य, वर्तमान काल का पूर्ण विवरण बताने वाला महाग्रन्थ आज तक देखा, नहीं गया था, हां बुज़ुर्गों से नाम ज़रूर सुना था।

निवेदन- संसार में कुछ भी असंभव नहीं। सनातननिष्ठ, आस्थावान् जिनके विचार पूर्णतः सात्विक हैं और भारतीय पौराणिक परम्परा के अनुसार सुख-शांतिपूर्वक जीवन बिताने के लिए यश, धन व वैभव प्राप्त करना चाहते हैं, ऐसे महानुभाव हाथ धोकर तथा मुख-शुद्धि करके इस ग्रन्थ को रेशमी वस्त्र या शुद्ध खद्दर में लपेटकर पवित्र स्थान में रखें। प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक धूप-दीप दें और फिर देखें इसका चमत्कार ! दूसरे का अहित चाहने वाले, कुविचारी, नास्तिक तथा धार्मिक ग्रन्थों में शंका करने वाले अश्रद्धालुजन इस "भृगुसंहिता महाशास्त्र" को मंगाने का कष्ट न करें। अविश्वासी हीरे को पत्थर समझकर खो बैठता है और फिर अपने भाग्य को कोसता है। वी० पी० पी० द्वारा पुस्तक मंगाने का पता

इस घोर कलियुग में भी जिसका भाग्योदय होने वाला है, वह ही यह ग्रन्थ मंगायेगा।

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, देहली-110006
टेलीफ़ोन-261030

प्रकाशक

"यह महाग्रन्थ सर्व-साधारण जनता, व्यापारी, इण्डस्ट्रियलिस्ट तथा सर्विसमैन आदि सभी वर्गों के लिए हितकारी है।"

विशेषांक: अप्रैल
होली भी 'फूल डे' भी।

'कादम्बिनी' के संग्रहणीय विशेषांकों की परंपरा में एक और विशेषांक

सिरफिरों के कारनामे

'कादम्बिनी' के गंभीर अंकों के बाद अब एक बिलकुल हलका-फुलका अंक, जो अपने आप में अनूठा होगा।

सिरफिरों के कारनामे

दुनिया में सिरफिरों की कमी नहीं। उन्होंने देश जला दिये, जातियां नष्ट कर दीं और गधों तथा चूहों-जैसे निरीह जीवों पर मुकदमे चलाये। एक-एक रचना अपने-आप में 'बेहूदी' मिलेगी—हमारी गारंटी।

बानगी के लिए कुछ शीर्षक

दास्तान सिरफिरे अफसरों, लेखकों और फैसला करनेवालों की ० सिरफिरों की वसीयतें ० सनक है बोतलों में संदेश भेजने की।

इस वर्ष होली अठ्ठाइस मार्च को है और मस्ती के इस त्यौहार पर पाठकों को भेंट है यह अनूठा अंक।

अप्रैल अंक-- विशेषांक

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, और उनके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **अंशतः**—क. भाग, ख. किरण, ग. कुछ हद तक, घ. कम।

२. **हताश**—क. अधीर, ख. सुस्त, ग. जिसे कोई आशा न रही हो, घ. बिना सहारे।

३. **सुहृद**—क. निकटस्थ, ख. संबंधी, ग. अच्छे दिलवाला, घ. विनम्र।

४. **तदनंतर**—क. शीघ्र, ख. धीरे-धीरे, ग. बारी-बारी से, घ. उसके बाद।

५. **अनभ्र**—क. गुप्त, ख. अकस्मात, ग. बिना बादलों के, घ. बेजोड़।

६. **मदोन्मत्त**—क. पागल, ख. नशे में चूर, ग. पतित, घ. बलशाली।

७. **यावन्मात्र**—क. थोड़ा, ख. केवल, ग. यथासंभव, घ. जहां तक व्याप्त हो।

८. **पूर्णकाम**—क. जिसने सब काम पूरा कर लिया हो, ख. तृप्त, ग. सबके ऊपर, घ. त्यागी।

९. **अमित**—क. व्यापक, ख. दूर, ग. असीम, घ. प्रिय।

१०. **उद्भासित**—क. दिखायी देने वाला, ख. ढका हुआ, ग. फैला हुआ, घ. प्रकाशित।

११. **अनघ**—क. निष्पाप, ख. नया, ग. चतुर, घ. उदासीन।

उत्तर

१. ग. कुछ हद तक आपका कथन **अंशतः** ठीक है।

२. ग. जिसे कोई आशा न रही हो। यों **हताश** होकर बैठ जाने से काम नहीं चलेगा। (हत+आश)

३. ग. अच्छे दिलवाला, स्नेही (वि.) मित्र (सं.)। **सुहृद** व्यक्तियों (सुहृदों) के सहयोग से काम पूरा हो जाएगा।

४. घ. उसके बाद, तत्पश्चात। पहले अच्छी तरह विचार करो, **तदनंतर** काम करो। (तद्-अनंतर)

५. ग. बिना बादलों के (अन्+अभ्र)। यह कैसा **अनभ्र** वज्रपात हुआ! (आकस्मिक संकट या आघात)

६. ख. नशे में चूर, जिसे किसी बात का बहुत घमंड हो। धन या सत्ता से **मदोन्मत्त** होना अनुचित है। (मद+उन्मत्त)

७. घ. जहां तक व्यापक हो। संसार में **यावन्मात्र** सभी कुछ नश्वर है।

८. ख. तृप्त, जिसकी सब इच्छाएं पूरी हो चुकी हों। इस संसार में **पूर्णकाम** तो विरले ही होते हैं।

९. ग. असीम, बहुत ज्यादा। देश में कोयले का **अमित** भंडार है।

१०. घ. प्रकाशित चमकता हुआ, व्यक्त। इस चित्र में उच्च कोटि की कला **उद्भासित** होती है।

११. ग. निष्पाप, पवित्र। **अनघ** कर्म ही मनुष्य को पुण्य का भागी बनाते हैं। (अन्+अघ)

पारिभाषिक-शब्द

ऐबरोगेट=निराकरण करना
बैगेज=सामान
काल मनी=अविलंब राशि
डेटेड=दिनांकित
डीलिंग क्लर्क=संबंधित लिपिक
डीलिंग्ज=व्यवहार/लेनदेन
ईयरमार्क्ड=चिह्नित
ड्राफ्ट=प्रारूप/मसौदा
ड्राफ्टिंग=प्रारूपण/आलेखन
डाक्यूमेंट=प्रलेख/दस्तावेज

समस्या पूर्ति--४४

रंग किसके लिए

प्रथम पुरस्कार

दूसरों के लिए जन्म अपना हुआ
बचपना बचपने में ही सपना हुआ
रंग किसके लिए है न हम जानते
श्रम को पूजा की मानिंद हम मानते

--परदेशी राम वर्मा

संपदा विभाग, नगर प्रशासन भवन
इंदिरा प्लेस, भिलाई नगर, जिला दुर्ग-१०
(म. प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

आंखों में नहीं सतरंगी सपनों की गमक
होंठों से गायब है लाली की चमक
रंग किसके लिए इतने फिर लिये फिरता हूं
जानता हूं पेट के लिए स्वयं को छलता हूं

--डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

जे-१८८२, चितरंजन पार्क
कालकाजी, नयी दिल्ली

आस्था के आयाम

केथरीन से सरला बहन

५ अप्रैल, सन १९०५ को लंदन में उनका जन्म हुआ। नामकरण किया गया—केथरीन मेरी हाइलामन। सन १९१४-१८ में गलत कानूनी अड़चनों के कारण उन्हें 'शत्रु की पुत्री' करार दिया गया और दंडस्वरूप मिला न केवल सामाजिक बहिष्कार, वरन उच्च शिक्षा पाने पर भी रोक। जीविका के लिए उन्होंने किसी तरह व्यावसायिक कार्यालयों में हिसाब का कामकाज देखने का अवसर जुटाया और शेष समय ग्रामीण दुनिया देखने में बिताना शुरू किया। सन १९२८ में वे भारतीय छात्रों के माध्यम से महात्मा गांधी के विचारों से अवगत हुईं और चार वर्षों में इतना प्रभावित हुईं कि विदेश छोड़कर भारत चली आयीं। फिर कुछ वर्षों तक विद्या भवन, उदयपुर और वर्धा तथा सेवाग्राम में नयी तालीम संबंधी कार्य किया।

सरला बहन

सन १९४७ में वे उत्तराखंड पहुंचीं और तब से जीवन-पर्यंत यही प्रदेश उनका कर्म-क्षेत्र रहा। विलायती सरकार ने उन्हें कारावास का दंड भी दिया, पर उनकी आस्था अटल रही। कौसानी में उन्होंने लड़कियों के लिए नयी तालीम के स्वतंत्र प्रयोग भी किये। बाद में उन्होंने पिथौरागढ़ जिले के धरमधर स्थान में एकांतवास किया और लेखन द्वारा पर्यावरण की समस्याओं की ओर जन-साधारण का ध्यान आकर्षित करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया।

अब लोग उन्हें केथरीन मेरी हाइलामन के नाम से नहीं, 'सरला बहन' के रूप में जानते थे। एक बार गांधीवादी विचारक दादा धर्माधिकारी ने उनसे उनका पुराना नाम पूछा था। उन्हें उत्तर मिला——

'मैं उसे भूल गयी हूं। उसकी जरूरत भी क्या है?'

सन १९७९ में सरला देवी को जमनालाल बजाज प्रतिष्ठान द्वारा पुरस्कृत भी किया गया। गत वर्ष ८ जुलाई को सरला बहन हमारे बीच नहीं रहीं, पर इस देश की स्मृति में वे सदा जीवित रहेंगी।

अतिरिक्त अवकाश के विरोधी

जापान की एक अमरीकी फर्म ने अपने जापानी कर्मचारियों को प्रसन्न करने के लिए सप्ताह में एक दिन का अतिरिक्त अवकाश देने का निर्णय किया, पर जब कर्मचारियों को इसकी सूचना मिली तो उन्होंने इस निर्णय के विरोध में सत्याग्रह कर दिया। फर्म के अधिकारी परेशान हो उठे—कैसे हैं ये कर्मचारी, जो अतिरिक्त अवकाश लेने से इनकार कर रहे हैं ? अंततः उन्होंने कर्मचारियों के नेताओं को बुलाकर, उनके विरोध का कारण पूछा। उत्तर मिला—

'एक दिन का अतिरिक्त अवकाश देकर आप हम पर अपव्यय, मटर-गश्ती आदि की बुराइयां लादना चाहते हैं। हमें अतिरिक्त अवकाश नहीं चाहिए।'

अंततः फर्म के अधिकारियों को निर्णय वापस लेना पड़ा।

चिकित्सा के लिए समर्पित

तीस वर्षीय पीटर लुडविग म्युनिख के एक प्रमुख संगीतज्ञ हैं। दस वर्ष की अवस्था से संगीत सीखना शुरू करके आज वे अपने देश के एक सुपरिचित संगीतकार हैं। लेकिन पीटर लुडविग के व्यक्तित्व की एक और विशेषता है। वे मात्र संगीतकार ही नहीं, संगीत-चिकित्सक भी हैं। तहखाने में स्थित क्लीनिक में वे अत्यधिक असामान्य बच्चों और युवकों के लिए अभिव्यक्ति के नये उपाय रचते रहते हैं, जिनका महत्त्व 'परंपरागत' चिकित्सक भी असंदिग्ध रूप से मानते हैं।

पीटर लुडविग का अपने १३-१६ वर्षीय मरीजों से भाईचारे का रिश्ता है। उनका कहना है, 'अनुशासन तो उत्साह से पैदा होना चाहिए और उसे बच्चों द्वारा स्वयं अपनाया जाना चाहिए।' ●

वचन वीथी

यदि तुम्हें स्वामिभक्त और दिलपसंद सेवक की आवश्यकता है तो अपने सेवक स्वयं बनो। —फ्रैंकलिन

सुधार के बिना पश्चाताप ऐसा है, जैसे छिद्र बंद किये बिना जलयान से जल निकालना। —पामर

उत्तम पुरुषों की यह रीति है कि वे किसी कार्य को अधूरा नहीं छोड़ते। —वीलेंड

सच्ची प्रगति विचारों के एक अनंत सिलसिले के सहारे, अधिक स्वतंत्रता की ओर से जाती है। —वोवी

जहां प्रतिध्वनियां होती हैं, वहां हमें बहुधा खालीपन और खोखलापन मिलता है, हृदय की प्रतिध्वनियों में इसके विपरीत होता है। —बोइज

पहली और आखिरी वस्तु, जिसकी हम प्रतिभा से अपेक्षा रखते हैं, सच्चा प्यार है। —गेटे

हंसनेवाले लखपति दुर्लभ हैं। —कारनेगी

है।" तदंतर उसने राम की कृपा से देह त्यागकर साकेत-धाम प्राप्त किया।

लोकप्रिय तुलसी कृत रामचरित-मानस (अरण्यकांड) में वर्णित है कि शबरी दोनों भाइयों के चरणों से लिपट गयी, उनके चरण धोये। तत्पश्चात अत्यंत रसीले और स्वादिष्ट कंद-मूल और फल लाकर श्री राम को दिये। राम ने बार-बार प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रेमपूर्वक खाया—

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुं आनि
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि

जूठे बेर देने या खाने का संकेत तक भी इन दोनों रामायणों में नहीं है। मेरी लेखक से विनम्र जिज्ञासा है कि किस रामायण में राम द्वारा शबरी के जूठे बेर खाने की बात लिखी हुई है? अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, मंजुल रामायण, तत्वसंग्रह रामायण, रामचंद्रिका आदि अन्य किसी भी रामायण में जूठे बेर खाने का प्रसंग नहीं है।

—श्यामसुंदर बगड़िया, कलकत्ता-१३

शियात्सु

दिसम्बर अंक में प्रकाशित 'दर्द दूर करने की नयी जापानी पद्धति—शियात्सु' सदियों पुरानी भारतीय विधा ही है। यों, विधा का विकास जरूर किया तोकुजीरो नामीकोशी ने 'शियात्सु' नाम देकर।

भारत में इस चिकित्सा-पद्धति का उपयोग सदियों से होता रहा है और आज भी हो रहा है। गांवों, कस्बों और छोटे नगरों में इस चिकित्सा-पद्धति के ज्ञाता अभी भी काफी संख्या में हैं। हमारे छोटे से खुरई नगर में ही ३-४ ऐसे व्यक्ति हैं, जो दबी या मुंदी चोट, मोच, हाथ उतर जाना, गरदन चटखना, सिर-दर्द, कमर-दर्द आदि का उपचार बगैर किसी औषधि के सिर्फ हाथ की अंगुलियों और अंगूठे के द्वारा सफलतापूर्वक करते हैं।

—प्रीतम दास वाधवानी, खुरई (सागर)

अत्याचार-अनाचार

संग्रहणीय दिसम्बर अंक में शम्सुद्दीन के लेख, 'शर्मा-हसन, वहीं हवन, वहीं नमाज' से स्पष्ट है कि आज का धर्म-निर्पेक्षता का नारा कितना थोथा है। साथ ही तथाकथित धार्मिक सद्भाव की बातें, जिसको बढ़ाने के लिए अंतर्जातीय विवाह आदि की बातें की जाती हैं, अर्थहीन हैं। वास्तविकता तो यह है कि यदि धर्म को राजनीति में न घसीटकर व्यक्तिगत स्तर तक सीमित रखें, तो आजकल धर्म के नाम पर होनेवाले अत्याचारों और अनाचारों की समस्या ही नहीं रहेगी।

——विद्या सागर, नयी दिल्ली

राजनीति की शतरंज

'कादम्बिनी' का तंत्र-विशेषांक-२ पूर्व के विशेषांक से भी बढ़कर लगा। इसी अंक में प्रकाशित 'एक मुख्य मंत्री के संस्मरण' बहुत ही विचारोत्तेजक लगे।

चन्द्रेश कुमार जैन, रिषभ देव (राजस्थान)

(ऐसे पत्र हमें और भी मिले हैं। —संपादक)

सम्मान

'कादम्बिनी' के सुपरिचित लेखक, सुप्रसिद्ध कवि एवं समालोचक तथा त्रैमासिक 'आलोचना' के भूतपूर्व संपादक श्री गोपालकृष्ण कौल का गाजियाबाद में नागरिक-अभिनंदन किया गया। अभिनंदन-समारोह के अध्यक्ष थे प्रख्यात कथाकार श्री विष्णु प्रभाकर। समारोह में हिंदी की नयी एवं पुरानी पीढ़ी के अनेक लेखकों ने श्री कौल की साहित्यिक सेवाओं पर प्रकाश डाला। वक्ताओं में प्रमुख थे सर्वश्री अक्षयकुमार जैन, क्षेमचंद्र सुमन, विनोदकुमार मिश्र, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, डॉ. विनय, धर्मेंद्र गुप्त, डॉ. राजकुमार शर्मा, डॉ. शेरजंग गर्ग, अमरनाथ सरस, श्रीमती कमला रत्नम एवं श्रीमती कांता पंत। संयोजक थे श्री हरियंत चौधरी, डॉ. ब्रजनाथ गर्ग एवं श्री हरप्रसाद शास्त्री।

आकाशवाणी के हिंदी-वार्ता विभाग में पच्चीस वर्ष वरिष्ठ प्रोड्यूसर के पद पर कार्य करने के बाद श्री कौल हाल ही में सेवा-निवृत्त हुए हैं।

तंत्र विशेषांक : अपेक्षित प्रस्तुति

तंत्र विशेषांक की अपेक्षित प्रस्तुति हेतु 'कादम्बिनी'—परिवार को हार्दिक बधाई! 'तंत्र-मंत्र'-जैसे अनछुए विषय पर विशेषांक निकालने का साहस 'कादम्बिनी' ने किया और लक्ष्य प्राप्ति में अपेक्षा से अधिक सफलता भी प्राप्त की। तंत्र-मंत्र को अस्तित्वहीन समझनेवालों के विचारों और भावनाओं को 'कादम्बिनी' ने निश्च ही नये आयाम प्रदान किये हैं।

—राकेश दुबे, होशंगा

काल-चिंतन

'कादम्बिनी' के तंत्र-विशेषांक-? प्रकाशित 'काल-चिंतन' हमें मानस की अ गहराइयों में उतारकर रसाभास क में पूर्णतः सफल है। नये वर्ष के अभि में परंपराओं के समारोह का आयो बड़ा ही तीखा प्रयोग है। इस अंक प्रकाशित स्तंभ-सामग्री अभूतपूर्व सर्वाधिक प्रिय रही। बधाई !

—प्रो. हीरालाल विश्वकर्मा, जब

आज की दुनिया का भविष्य सुधर सकता है, तो इसका एक मात्र उ है अध्यात्म, ध्यान एवं योग, जिससे और मस्तिष्क पवित्र होकर सही प्रेक्ष्य में संचालित होते हैं। और, ये दोनों अंक इस मामले में बहुत किये गये हैं।

—शिवस्वरूप गुप्ता, रुद्रपुर (नैनीता

समाधान आसानी से नहीं

'कादम्बिनी' के दिसम्बर '८२ अंक में श्री कीर्तिस्वरूप रावत का मृतात्माओं से संदेश मिलते हैं' लेख ही रोचक लगा। वह जगत कौन-सा जहां मृत आत्माएं रहती हैं, यदि वह ले लेती हैं, तो फिर वह संदेश कैसे हैं? या ये संदेश मनुष्य के मस्ति के अपने ही मनोविकार हैं, जो संकेत बनते हैं। यह सब बड़े जटिल प्रश्न जिनका समाधान आसानी से नहीं सकता।

—दयास्वरूप, ल

जानकारियों से भरपूर

मैं विगत एक वर्ष से 'कादम्बिनी' नियमित रूप से पढ़ता आ रहा हूं। सच पूछें तो नवम्बर '८१ के तंत्र-मंत्र विशेषांक ने मुझ पर इस कदर जादू कर दिया था कि मैं उसी समय से 'कादम्बिनी' पढ़ता व संग्रहीत करता आ रहा हूं।

नवम्बर व दिसम्बर '८२ के तंत्र-मंत्र के दोनों विशेषांक काफी पसंद आये। विशेषांक-२ हमें काफी विलंब से प्राप्त हुआ। खैर ! इन दोनों विशेषांकों को पढ़कर मैंने पाया कि 'कादम्बिनी' ने अपनी एक अलग ही पहचान बनायी है। खास कर मुखपृष्ठ तो काफी आकर्षित करनेवाला होता है।

—अनिल शर्मा, काठमाण्डू (नेपाल)

'कादम्बिनी' के दोनों तंत्र विशेषांकों की तारीफ यहां के काफी लोगों ने की। आपकी तर्ज पर एक पत्रिका का तंत्र-विशेषांक निकला, पर दम कहां !

—मानिक बच्छावत, बीकानेर

तंत्र-विशेषांक की दोनों प्रतियां (नवम्बर तथा दिसम्बर, '८२) पढ़ने का अवसर मिला। दोनों ही अंक तंत्रविषयक सामग्री की बहुलता, विविधता तथा विचित्रता से भरपूर हैं। तंत्र-जैसे गूढ़ विषय की आध्यात्मिक और भौतिक उपलब्धियों के अनेक विशिष्ट आयामों से भारतीय ही नहीं, अपितु भारतीयेतर जनजीवन को भी व्यापक स्तर पर परिचित कराने का आपका श्लाघ्य सारस्वत प्रयास निश्चय ही अद्वितीय है। आपकी संपादन-मनीषा का स्पर्श पाकर 'कादम्बिनी' ने हिंदी-पत्रकारिता में अभिनव युग की सृष्टि की है, इसमें संदेह नहीं।

सबसे अधिक लक्ष्य करने की बात तो यह है कि आपने रहस्यपूर्ण एवं प्रायोगिक तंत्र-कथा के माध्यम से भारतीय जनता में हिंदी पढ़ने और सीखने के प्रति अभिरुचि पैदा करके विपुल हिंदी प्रचार के ऐतिहासिक वातायन का निर्माण किया है।

—डॉ. श्रीरंजन सूर्यदेव, पटना

जम्हूरियत का तिलस्म

जादू हुआ है खत्म,
अब ताली बजाइए
मंदिर, मजार, तंत्र के
अब सदके जाइए
कहते थे जिसे लोकतंत्र
अब कहां रहा ?
अब तंत्रलोक आ गया है
जाग जाइए
सिजदे और बंदगी का
जमाना है आ गया
होमो-हवन में अपना फिर
विश्वास लाइए
अब क्या धरा हुआ है,
सियासत में मेरी जान
बस रोज रात पीर को
खुशबू सुंघाइए

—ईश्वरचन्द्र मिश्र, जबलपुर

वर्ष २३ : अंक
फरवरी, १९

कादम्बिनी

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

स्थायी स्तंभ

कहानी एवं व्यंग्य

कविताएं

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष :
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स, प्रकाशन समूह

सह-संपादक
दुर्गाप्रसाद शुक्ल

उप-संपादक
प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये

—उसने बहता हुआ पानी देखा और वह बहक गया। गंदे तालाब के पास पहुंचते
उसमें सड़ांध आ गयी। कुएं की तलछट में उसने अपनी गरमी खो दी।
—बार-बार दोहराया गया स्वर राग बन गया और फिर रागों में विशेषण
गये। आज तक हमने न तो मल्हार से पानी बरसते देखा और न दीपक राग
दीये जलते देखे।

●●

—सुना बहुत कुछ है; सब भूत के पांव हैं!
—भूत होता हो या न हो, उसके पांव उलटे होते हैं, संस्कार के पहरेदारों का यह
है!
—पानी, तालाब और कुएं के पास पहुंचकर उसी आकार में बदल जाना हमारी संस्
की पोशाक है।
—कथाएं और कथाओं के सहारे हजार रातों का जगना हमारी जीवन-रेखा की स्वर्ण
किरणें हैं।
—एक झूठ बार-बार दोहराया जाए तो सत्य बन जाता है। सत्य नहीं था क्या सदि
तक कि चांद में एक बुढ़िया रहती है और आटा पीसती है। आज भी यह बात
नहीं उतरती कि 'सुंदरी, तुम्हारा स्वरूप चंद्रमा-सा है,' सौंदर्य-बोध में एक प्र
चिह्न लगाना है।

●●

—बहुत कुछ व्यतीत है जो झूठा है, वर्तमान अछूता नहीं, वह भी झूठा इतिहास लि
जा रहा है। अजनबी इतने हैं हम कि अपनी ही पहचान से दूर हैं और शहर में रह
ही जंगली बनते हैं।
—दोष कहां है?
—जिसने भी आदमी की सत्ता को जन्म दिया, उसे जीभ जरूर दे दी। यही जीभ है
मनुष्य को श्रेष्ठ ही नहीं बनाती, वह अन्य संज्ञाओं पर शासक बनने का अधि
भी देती है।

—जीभ यानी बोल, शब्द या अक्षर ! मनुष्य की श्रेष्ठता का एकमात्र आवरण।

—इसी आवरण का परिणाम है कि पानी की सतह पर हम हस्ताक्षर करते हैं, पसरी हुई धूप पर अक्षर लिखते हैं और अनाम अंधेरे को जुगनू की रोशनी देकर नाम की सबसे बड़ी संज्ञा देते हैं !

—हमारी विलासिता और वैभव की सांप-पिटारी इसीलिए तो अनाम रात के नाम लिखी गयी है !

—बहुत कुछ काला, पीला होता है और दिन बहरे हो जाते हैं, रात मुखर हो उठती है !

—रोशनी की बस्तियां सूरज के उजाले में नहीं जगमगातीं, उन्हें चमगादड़ी अंधेरा चाहिए; क्योंकि यहीं से झूठ का इतिहास शुरू होता है।

●●

—ठहरिए तो ?

—सोचा है हमने कभी, हमारा इतिहास कहां से शुरू होता है ? आदम और हौवा हमारे मन के भीतर आज भी नहीं हैं क्या ?

—तो ! कौन था प्रथम पुरुष ?

—कब जन्म लिया धरा ने ?

—किसने सागर पीकर धरती पर घास उगायी ?

—कोई नहीं जानता यह सब ? एक दिये हुए झूठ की मूठ को पकड़कर हमने कुछ सुविधाओं को जन्म दिया : प्रतिबंधों की चौखटें खड़ी कर दीं, समय को दहलीज में बांध दिया, संस्कृति को वरदियां पहना दीं और मनुष्य होने का समूचा संस्कार हमने तारों की चादर ओढ़कर स्वयं पा लिया !

—एक गलती से कितनी गलतियां हुईं ? जब गलतियां होना शुरू होती हैं तो होती जाती हैं, यहां तक कि सत्यता और ईमानदारी भी उससे नहीं बचतीं !

—जहां चाहें कालिख लगा सकते हैं, जहां चाहें उसे चमकाकर पीतल का सोना बना सकते हैं !

—हम मनुष्य हैं न ?

—हमारे पास पारस-मणि है : हमारी जीभ ! जीभ न होती तो ये सब संस्कार न आ पाते !

—यही तो एक गलती है कि हमारे पास जीभ है !

●●

—अब तमाशा देखिए जीभ का !

—जीभ मदारी है !

—जीभ सांप की पिटारी है !

—जीभ संस्कार की राजधानी है !

—सारी सुविधाओं का अगाध भंडार उसी के सहारे टिका है।

—दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, आदि, अनंत, अनादि, ब्रह्म जीभ में कैद हैं !

—कभी सोचा है हमने, आदमी की सबसे बड़ी उपलब्धि यही जीभ है ?

—एक उपलब्धि और उपलब्धियों की सीढ़ियां अपने आप बनाती चलती हैं !

—उसी प्रसंग में कई बातें गढ़ लीं; जैसे दीवार के भी कान होते हैं. एक बात दूसरे से तीसरे तक पहुंचते ही बदल जाती है।

—इसी बदलने के क्रम में हम जो चाहें, कर सकते हैं। सिद्धियों का माध्य हमने पा लिया, असंभव क्या रह गया फिर ?

—फिर शेष क्या है ?

—क्या चाहते हैं हम : हम घोषणा कर रहे हैं, तीसरा महायुद्ध चल रहा है ! अस्वीकार करने का सामर्थ्य है आपमें !

—नहीं न !

—देख लिया, एक झूठ कैसे सत्य बनता है ? हमारी दादी और नानी की परंपरा ने राजकुमारों को घाटियों और वादियों में घुमाया, अब बदलती हुई पीढ़ी सूरज की रोशनी को भी धोखा कहकर वहां बस्तियां बसाने की बात करने लगी है ! वही हुआ न कि भेड़िया आया, भेड़िया आया . . . जब भेड़िया सचमुच आएगा, सब ठाठ धरा रह जाएगा, जब बांध चलेगा बनजारा !

—आओ, तब तब हम झूठ-महलों में हीरे-मोती की चादरें बिछायें, हवा-महल में शीत-लहरों को छोड़ें और पीतल की परतों को सोने का आवरण देकर लोलुप जिज्ञासुओं को शोध करने दें—कभी यहां भी संपत्ति थी !

राजेन्द्र अवस्थी

जो प्राप्त असीम शक्ति का दुरुपयोग करके अपने स्वार्थ के लिए आतंक फैलाने का प्रयास करता है, अपनी ही असीम शक्ति से समाप्त हो जाता है, वही वरदान उसके लिए अभिशाप बन जाता है।

• सुरेशव्रत राय

जीवन में जो अभीष्ट, कल्याणकारी और सुंदर है, वही है 'शिव तत्व'। जो आदि, मध्य और अंतहीन है, निराकार है; विभु, चिदानंद, अद्‌भुत, उमा के साथ रहनेवाले, त्रिनेत्र, नीलकंठ और परम शांत हैं; वह शिव हैं। वही विश्वनाथ नाम से प्रसिद्ध, परम पूज्य भुवनेश्वर, सत्य, ज्ञान, आनंद, निर्गुण, निरंजन, अविनाशी, निरुपाधि और चिदानंदस्वरूप; मन तथा वाणी की सामर्थ्य से परे हैं। शक्ति, माया तथा प्रकृति, जिनकी प्रेरणा से कार्य करती हैं, वह परब्रह्म शंकर हैं। विभिन्न दिशाओं से आकर समुद्र में विलीन होनेवाली नदियों की भांति वेद-त्रयी, सांख्य, योग, पशुपति-मत, अन्य मत-मतांतर अंततः शिवत्व के महासागर से एकाकार हो जाते हैं। विपत्ति, कष्ट देनेवाले को रुलाने के कारण जिन्हें रुद्र कहा जाता है; सूर्य, चंद्र, वायु, अग्नि, जल, आकाश, पृथ्वी, आत्मा उसी शिव का स्वरूप है। वह शिव अविनाशी, चैतन्य, शुद्धस्वरूप है; जहां जो भी है, उसी का स्वरूप व्याप्त है, उससे कोई अलग नहीं; किसी प्रकार भेद नहीं है, आत्मा स्वयं शिव-स्वरूप है।

सगुणात्मक रूप

शैव-भक्तों द्वारा आराध्य का प्रस्तुत सगुण रूप अत्यधिक मोहक एवं सार्थक है—दस सहस्र सूर्यों के समान तेजस्वी, भगवान नीलकंठ सिर पर जटाजूट, ललाट पर अर्द्ध चंद्र, मस्तक पर सर्प-मुकुट धारण

किये हैं। ईशान, घोर, तत्पुरुष, वामदेव और सद्योजात, उनके पांच मुख हैं। तीन नेत्र हैं। बाघंबरधारी शिव के तीन हाथों में जपमाला, शूल, नर-कपाल है, चौथा हाथ खटवांग मुद्रा में है। कहीं-कहीं हाथों में जपमाला के स्थान पर लाल कमल तथा पाश का उल्लेख भी मिलता है।

आधे अंग में अर्धांगिनी अंबिका स्थित होने के कारण जिनका अर्द्धनारीश्वर रूप है, शरीर नीलमणि तथा प्रवाल के समान नील लोहित है, जो कमल पर विराजमान हैं। त्र्यंबक-रूप में जिनके आठ हाथों की कल्पना की गयी है, जिनमें चार हाथों में अमृत-कलश है, दो में मृग-मुद्रा और अश्वमाला तथा शेष दो हाथों से अमृत-कलश को अपने सिर में स्थित चंद्र-कला पर उड़ेल रहे हैं। जिनके शरीर का वर्ण शुभ्र चांदी अथवा स्फटिक-जैसा है, नागों का यज्ञोपवीत धारण किये पद्म-राग-मणि फल तथा मरकट-मणि पत्रों से युक्त वट-वृक्ष के मूल में समासीन दक्षिणा-मूर्ति शिव वंदनीय हैं। शिव परब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं, कल्याणकारी होने के कारण वे ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण एवं महर्षियों के सनातनकाल से सर्वमान्य आराध्य रहे हैं।

शंकर का सगुणात्मक परिवेश अर्थपूर्ण सामाजिक जीवन-दर्शन का प्रतीक है। सामान्यतः त्याज्य, उपेक्षित तथा हेय दृष्टि से अपमानित वर्ग को उन्होंने गले लगाया। भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी आदि शंकर के सान्निध्य में धन्य हो गये, अगम्य हिमखंड अथवा फिर श्मशान, जिनका निवास है, जनजीवन तथा कोलाहल से दूर, भय और उपेक्षा दोनों पर शंकर ने विजय प्राप्त कर ली है, उन्हें कोई भयभीत नहीं करता, अनिष्ट नहीं पहुंचा सकता। विषधर सर्पों को अलंकार, उपनयन के रूप में धारण करनेवाले शिव ही हैं। जिसने हलाहल विष का पान कर लिया, वह कालजयी हो गया। भय पर विजय प्राप्त करनेवाला स्वयमेव अमरत्व प्राप्त कर लेता है।

शिवत्व का मूल-मंत्र

समुद्र-मंथन में प्राप्त रत्नों-जैसे कल्पवृक्ष, अप्सरा आदि के लिए देवताओं तथा असुरों में चील-झपट्टा चलता रहा। अमृत के पीछे तो युद्ध तथा भाग-दौड़ की आंख-मिचौली चलती रही, परंतु हलाहल विष कौन ले? कोई तैयार नहीं, असुरों-सुरों के बीच यह शंकर का ही आत्मोत्सर्ग भाव था, जिसने गरल-पान करके समाज को संकट से बचा लिया। आत्म-बलिदान की त्वरित, निस्वार्थ तथा परमार्थ भावना से प्रेरित आचरण ही है, समाज में शिवत्व का मूल-मंत्र, जो काल को भी पराभूत कर देता है। विषैले सर्प-जैसी बाधाएं, चुनौतियां, जिसके अनुकूल और अलंकरण बन जाती हैं। दृढ़संकल्प, भय-मुक्त स्थिति तथा आत्मोत्सर्ग के कारण शंकर में ही स्वर्गलोक से धरा पर आती विष्णुपदी के वेग-प्रवाह को रोकने की क्षमता थी

अर्द्धनारीश्वर

श्रौर उन्होंने अपने जटाजूट में निरंकुश प्रवाह को रोककर नियंत्रित किया, दिशा दी, जिससे वही देश श्रौर समाज के लिए अमृत बन गया। शिव के हाथों में अमृत-घट का भी शायद यही रहस्य है।

शक्ति एवं तेजस्विता के प्रतीक

मात्र समर्पण का तेजस्विता श्रौर दृढ़ संकल्प के बिना कोई अर्थ नहीं है, बल्कि वह त्याग तथा विनय दुर्बलता का पर्याय बन जाता है, इसीलिए शंकर के पास शक्ति के प्रतीक हैं त्रिशूल खड्ग, पाश, जिन्हें चलाने की आवश्यकता शायद ही पड़ती हो श्रौर तीसरा नेत्र, जिसके खुलते ही काल भी भस्मीभूत हो जाता है, इसे सब जानते हैं। जिनके तांडव-नृत्य से संहार होता है, ऐसे तेजस्वी महापुरुष का रोष पर्याप्त होता है। दक्ष-पुत्री सती के भस्म होने का समाचार सुनकर क्रुद्ध शंकर ने जटा से केवल एक बाल उखाड़ा, जिससे वीरभद्र प्रकट हो गये, जिन्होंने यज्ञ का विध्वंस कर दिया। तारकासुर से त्रस्त देवता जानते थे कि आतंक फैलानेवाले असुर का दमन शंकर-जैसे तेजस्वी का पुत्र ही कर सकता है, परंतु समस्या यह थी कि तपस्या-निमग्न शंकर को कौन तैयार करे? श्रंततः देवता सफल हुए श्रौर शिव-पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया। जिनका डमरू तांडव के साथ प्रलय को आमंत्रण देता हुआ बजने लगता है श्रौर पार्वती की प्रधानता के साथ नृत्य लास्य का रूप ले लेता है, ऐसे नटराज नृत्यशास्त्र के प्रणेता बन जाते हैं। नृत्य-संगीत ही नहीं 'विद्या कामस्तु गिरीशं' कहकर उनकी अर्चना की गयी है।

सर्वमान्य आराध्य

तेजस्विता, महाशक्ति विवेकशून्य होने पर वीर को आततायी बना सकती है। शंकर के मस्तक पर विराजमान अर्द्ध चंद्र विवेक, शांति एवं संतुलन का परिचायक है। पूर्ण चंद्र तो घटने लगता है परंतु अर्द्ध चंद्र बढ़ता ही रहता है, अतः स्थिर, शांत चित्त होकर शंकर भगवान सदैव तपस्या में लीन रहते हैं। उनकी तेजस्विता, संहार-वृत्ति से समाज में कभी अव्यवस्था उत्पन्न नहीं हुई। पार्वती के संयोग से ऐसा होने की संभावना भी नहीं है। पार्वती को अर्द्धांगिनी के रूप में स्थान देकर, शंकर स्वयं अर्द्धनारीश्वर बन गये, जहां तांडव श्रौर लय संयुक्त है। वस्तुतः अर्द्धनारीश्वर की कल्पना बड़ी अद्‌भुत है। शंकर प्रत्येक के हैं, समाज के परस्पर विरोधी समझे जानेवाले वर्गों को साथ लेकर चलनेवाले

हैं, भूत, प्रेत, डाक-पिशाचिनी से लेकर सुर, नर सभी उनका सम्मान-अर्चना करते हैं। एक ओर ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण, अर्जुन उनके भक्त हैं, तो दूसरी ओर अपना मस्तक काटकर चढ़ा देनेवाले रावण के अतिरिक्त बाणासुर, मय, अंधक-जैसे अनन्य भक्तों की कमी नहीं है। जिसे कोई न पूछे, उसे गले लगानेवाले शंकर भगवान हैं। ऐरावत, हंस, मयूर, सिंह को लोगों ने अपना लिया, बैल को कौन पूछे, बस शंकर ने अपना वाहन बना लिया और बैल की भी पूजा होने लगी।

दानी शंकर सम नाहीं

देवों में भी महान, महादेव होने के बावजूद अत्यंत शीघ्र प्रसन्न एवं संतुष्ट होने के कारण शंकर भगवान को आशुतोष कहा गया, 'दानी कहुं संकर सम नाहीं' ठीक ही कहा गया। अनन्य भाव से श्रद्धा-सहित बेल-पत्र चढ़ा देने और एक लोटा जल डाल देने से ही शंकर भगवान तृप्त हो जाते हैं, फिर भोले बाबा से जो चाहे मांग लें। उन्हें यह भी नहीं ध्यान रहता कि क्या मांग रहा है? और क्या दे रहे हैं? इसी चक्कर में भस्मासुर को वरदान देकर धोखा खा गये। अंत में विष्णु ने उनकी रक्षा की। भस्मासुर-प्रकरण तो वस्तुतः उनकी लीला ही थी, जिसकी सीख शाश्वत है। जो प्राप्त असीम शक्ति का दुरुपयोग करके अपने स्वार्थ के लिए आतंक फैलाने का प्रयास करता है, अपनी ही असीम शक्ति से समाप्त हो जाता है, वही वरदान उसके लिए अभिशाप बन जाता है। भस्मासुर से शंकर का स्वभाव नहीं बदला, उनके दरबार से कोई निराश या खाली हाथ नहीं लौटता। तुलसीदासजी के रामचरित मानस को लेकर जब बड़ा झगड़ा हुआ, तब पोथी के प्रथम पृष्ठ पर लोगों को शंकर भगवान के हस्ताक्षर देखकर, चुप हो जाना पड़ा, यह जनश्रुति प्रचलित है। आज भी मात्र 'ओम् नमः शिवाय' जाप करते ही सारे कष्ट भस्मीभूत हो जाते हैं, कामदेव की भांति। विश्वनाथ होने के बावजूद वैभव के प्रति अनासक्ति, अपने को समाज की अतुल संपत्ति का न्यासधारी मात्र मानकर मुक्त हस्त से सुपात्रों को लुटाना औघड़दानी भोले बाबा का स्वभाव है, यही तो है समाज का शिव तत्व, जिसे आत्मसात करके, हम शिवोऽहं का जाप कर सकते हैं।

सर्वगुण संपन्न होने के कारण शंकर भगवान को ठीक ही देवाधिदेव कहा गया। 'शिवोऽहं-शिवोऽहं' तथा 'ओम् नमः शिवाय' का सार्थक जाप तथा अनुशीलन ही जिनसे एकाकार हो जाने का सहज मार्ग है, परमानंद की अनिवर्चनीय स्थिति।

—३६७, अतरसुइया, इलाहाबाद

निर्णय शीघ्र कीजिए; किंतु देर तक सोचने के पश्चात। —बर्नार्ड शॉ

तानाशाह का जनतंत्रवाद

• सुदीप
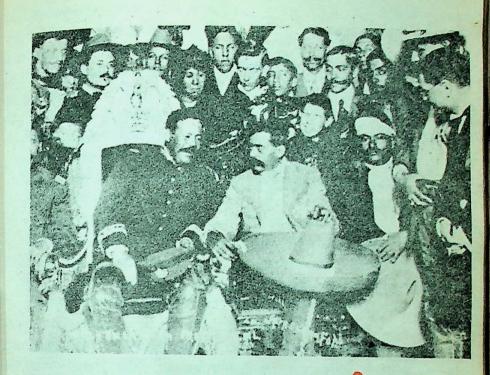
लातीनी अमरीका का इतिहास क्रांतियों, प्रति-क्रांतियों और प्रति-प्रति-क्रांतियों के खून से लिखा गया है। जितनी राजनीतिक उथल-पुथल इस महाद्वीप में पिछले दो-तीन सौ साल में हुई है, उतनी शेष विश्व के हजारों सालों के इतिहास में भी नहीं हुई होगी। अकेले बोलीविया में ही पिछले दो सौ वर्षों में दो सौ से अधिक 'क्रांतियां' हो चुकी हैं। इन क्रांतियों ने जहां कास्त्रो तथा आयेंदे-जैसे नेताओं को सत्तारूढ़ किया, वहीं पेरों-जैसे निर्वाचित नेताओं को सत्ताच्युत होने को भी मजबूर किया। आज यह हालत है कि दक्षिण अमरीका सैनिक तानाशाहों के

ऊपर: पांचो विला (बायें) और एमीलियानो जपाटा (दायें) की मुलाकात

दमन-तंत्र के नीचे बुरी तरह बिलबिला रहा है।

पूरे दक्षिण अमरीका में, आजादी की लड़ाई के लिए, एमीलियानो जपाटा और पांचो विला ने जो यश अर्जित किया है, वह अद्वितीय है। इन दोनों जननायकों ने ही सन १९२० में मेक्सिको को ताना-शाही से मुक्ति दिलवायी थी।

तानाशाह का नाम था जनरल पोरफीरियो डायज, जो अर्द्ध श्वेत, अर्द्ध

जनरल के रूप में नैपोलियन तृतीय की सेनाओं का मुकाबला किया था।

चुनावों में धोखाधड़ी, जेल, नागरिक विद्रोहों के विरुद्ध दमनकारी कार्यवाही —डायज इन चीजों का सहारा हर रोज लेता था। सेना की मदद से वह एक तरह की व्यवस्था भी बनाये रखता था—'पोरफीरियाई व्यवस्था।'

और इस पोरफीरियाई व्यवस्था को मेक्सिको की रूढ़िवादी सामाजिक शक्तियों

एक ओर था सैनिक तानाशाह और दूसरी ओर थे मजदूर और किसान वर्ग के दो जननायक। सैनिक तानाशाह स्वयं को 'जनतंत्रवादी' कहता था, लेकिन उसका शासन जनतंत्र के तमाम सिद्धांतों का हास्यास्पद रूप था। मेक्सिको की संघर्ष-गाथा का एक रोमांचक अध्याय . . .।

इंडियन था—अनेक मेक्सिकोवासियों की तरह। डायज सन १८७६ से सन १९११ तक, यानी ३५ साल तक, सत्तारूढ़ रहा, जिसे किसी चमत्कार से कम नहीं माना जा सकता।

तानाशाह का जनतंत्रवाद

डायज हर मामले में तानाशाह था। अपने विरोधियों को खत्म करने में वह तनिक भी नहीं हिचकिचाता था। दमन, त्रास, धोखा उसके प्रमुख हथियार थे। वैसे वह अपने आपको जनतंत्रवादी कहता था, लेकिन उसका शासन जनतंत्रवादिता के तमाम सिद्धांतों का हास्यास्पद रूप था।

अपनी जवानी में उसने राष्ट्रवादी उदार नेता जुआरेज की सेना के एक

का साथ भी हासिल था। क्रिओल अभि-जात्य का अर्द्ध-सामंती तबका उसका समर्थन करता था। जब भी कोई समारोह होता, तब ये लोग वहां मौजूद रहते और समारोह तो आये दिन होते ही रहते थे।

यह व्यवस्था एक अन्य तत्व के बगैर पूर्ण नहीं हो सकती थी—यानी चर्च। सैद्धांतिक रूप से जुआरेज द्वारा नैपोलियन तृतीय को हराने के बाद लागू किये गये चर्च-विरोधी नियम अब भी जारी थे, सैद्धांतिक रूप से डायज जुआरेज का उत्तराधिकारी था, पर वास्त-विकता यह थी कि जिस तरह उसने अपनी सत्ता के आधार (जिसके चलते वह चुनाव जीत पाया था) जनतांत्रिक

उद्देश्यों को नकार दिया था, उसी तरह उसने चर्च-विरोधी अपने अतीत को भी अस्वीकार कर दिया था। डायज के शासनकाल में भिक्षुगृहों में फिर 'समृद्धि' आ गयी थी और चर्चों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी। सामंतवर्ग सट्टेबाजी में जुट गया था।

मजदूर-आक्रोश का दमन

यों, कृषि-उत्पादनों में भी जबरदस्त बढ़ोतरी हुई, लेकिन सामंत वर्ग, धनी जमींदार यह सारा उत्पादन निर्यात के लिए कर रहे थे। उधर खेतों में काम करनेवाले इंडियन और अर्द्ध-इंडियन मजदूर भूख और बीमारी से मर रहे थे।

सन १९०६ में पहली बार मजदूरों ने आक्रोश प्रकट करना शुरू किया। खान और कारखाना-मजदूरों ने हड़तालें कीं और उन हड़तालों को तोड़ने के लिए सरकार और सामंतों ने कई लोगों को मरवा डाला।

दूसरी ओर खेत-मजदूर भी विद्रोह की बात सोचने लगे थे। गरीबी और भुखमरी ने उनके सामने और कोई रास्ता ही नहीं रहने दिया था। पुलिस भी उन पर जुल्म ढा रही थी। नतीजा यह हुआ कि गांव के गांव—पुरुष, महिलाएं और बच्चे तक हथियार लेकर उठ खड़े हुए। सन १९१० तक यह विद्रोह पूरे मेक्सिको में फैल चुका था।

संकट के इस दौर में उदारवादी वकील मादेरो ने यह घोषणा की कि

एक क्रांतिकारी महिला

पोरफीरियो डायज को सत्ता से हटाकर प्रजातंत्र स्थापित किया जाना चाहिए। विद्रोह को दबाने के खयाल से सेना शस्त्रों को जमा करने लगी, लेकिन हिंसा की घटनाएं बढ़ती ही चली गयीं। विद्रोहियों के पास ज्यादा हथियार नहीं थे। फलत: उन्हें जब भी मौका मिलता, वे सैनिकों के हथियार छीनकर ले जाते।

किसान-मजदूरों की सेना

गांव-देहात में किसान जाग उठा। वह समझ गया था, अब उसका भला होनेवाला नहीं है। किसानों और खेत-मजदूरों ने अपनी सेना बना ली। उत्तर और दक्षिण से वे लोग अपने घोड़ों पर निकल पड़े। वरदी उनकी किसानों-जैसी ही थी—सफेद। उनकी पत्नियां भी उनके साथ थीं, बच्चे भी साथ थे। पत्नियां खाने-पीने के सामान की टोकरियां लेकर चलती थीं और मौका आने पर बंदूक भी उठा लेती थीं। बच्चे पीछे-पीछे घिसटते रहते थे।

इन गरीब और भूमिहीन किसानों को दो प्रभावशाली नेता मिल गये थे—पांचो विला तथा एमिलियानो जपाटा। विला, मूल रूप से, एक तरह का 'डाकू' था, लेकिन गरीब लोगों में उसकी लोकप्रियता का कोई ओर-छोर नहीं था। 'मेक्सिको का रॉबिन हुड' ही कहा जा सकता है उसे।

पांचो विला भी कभी खेत-मजदूर था। उसे भी अन्य गरीब मजदूरों की तरह जमींदार की मार खानी पड़ती थी और हवा फांककर गुजर करनी पड़ती थी; पर उससे यह सब बरदाश्त नहीं हुआ और एक दिन वह जंगल में भाग गया। वहां उसने हथियारबंद लोगों का एक गिरोह तैयार किया तथा अमरीकी सीमांत के निकट के चिहुआहुआ राज्य के गरीब-गुरबों की मुसीबतों को दूर करने के लिए काम करने लगा।

बदले की भावना

विला के बागी होने के पीछे कोई राजनीतिक मान्यता नहीं थी। उसे तो बदले की भावना ही प्रेरित कर रही थी। कभी-कभी उसे गुस्से का दौरा-सा पड़ता। एक बार वह एक कविता सुन रहा था कि एक संवादिया कोई महत्त्वपूर्ण सूचना लेकर आया। संवादिये ने कविता-पाठ में दखल डाल दिया। पांचो ने अपना तमंचा उठाया और यह कहते हुए संवादिये को गोली मार दी कि 'जब पांचो विला कविता सुन रहा हो, तब कवि को बीच में रोकने का हक कि[सी] को नहीं है।' फिर कवि की ओर प[लटते] हुए वह बोला, 'जारी रखो।'

अपने सनकीपन के बावजूद पां[चो] विला कमाल का नेता था। यही वजह [थी] कि मादेरो ने पोरफीरियो डायज [पर] हमला करने के लिए उसी को चुना।

विद्रोह की प्रति[मूर्ति]

पांचो विला के विपरीत एमीलि[यानो] जपाटा आभिजात्य वर्गीय लगता था [—] अपनी आदतों के कारण। वैसे था वह गरीब और सीधा-सादा किसान [ही]।

एमीलियानो जपाटा किसान-वि[द्रोह] का मूर्तिमंत बिंब था। वह हर ची[ज] माफ कर सकता था, देशद्रोह और प[...] को कभी माफ नहीं कर सकता था।

क्रांतिकारियों की [...]

जपाटा के साथियों के चित्र देखकर [...] बात दिमाग में फौरन आती है, [...] एक अजीब किस्म की गरिमा है—[...] तक कि चुस्ती भी है। बंदूक उ[ठाकर] लड़ना, अपने बच्चों के भविष्य के [लिए] अपनी जान दे देना और इसमें गर्व [...] करना—क्रांतिकारियों के खास गुण [...] वे लोग अपनी जमीनें वापस प्राप्त [करने] के लिए लड़ रहे थे। मादेरो ने तो [...] भूमि-सुधारों की बात की थी, लेकि[न ये] लोग जपाटा की सन १९११ में [...] 'आयाला योजना' के अनुरूप सच्चे [भूमि-] सुधारों के लिए निकल पड़े थे।

उनका एक ही नारा था: [...]

मैक्सिको का सैनिक तानाशाह—जनरल पोरफोरियो डायज

उसकी जो उस पर मेहनत करे।' धीरे-धीरे यह नारा पूरे मेक्सिको में फैल गया। नारा फैला, तो संघर्ष भी दिनों-दिन तीव्र होता चला गया।

विजय अंततः उन्हीं की हुई, सन १९१४ में विला और जपाटा की सेनाएं राजधानी मेक्सिको में दाखिल हुईं।

पुनः संघर्ष-पथ पर

वह भी क्या दिन था! विजय के आसार नजर आ रहे थे—लेकिन तब तक दोनों नेताओं की परस्पर भेंट नहीं हुई थी। अपने गौरव के शिखर के वक्त में वे दोनों मिले।

लेकिन राजनीतिज्ञ एक बार फिर उनके सामने आ खड़े हुए, राजनीति के 'उदारपंथी लोमड़' भूमि सुधारों का दिखावा ही करना चाहते थे, विला और जपाटा उनके लिए प्रचार के दो शक्तिशाली हथकंडों से बढ़कर कुछ नहीं थे। दोनों नेताओं का मोहभंग हो गया, विला उत्तर में लौट गया, जपाटा दक्षिण में—और एक बार फिर संघर्ष छिड़ गया।

मेक्सिको के तत्कालीन 'उदारपंथी' भी मूलतः नगरवासी बुर्जुआ लोग ही थे, जिनका जनवादी शक्तियों से कोई सरोकार नहीं था। जन-नेताओं के साथ सत्ता बांटने को वे तैयार नहीं थे। कट्टरपंथी और रूढ़िवादी लोग तो पहले से ही जनवादी शक्तियों के खिलाफ थे—जब उन्हें लगा कि उनका रास्ता साफ है, तब उन्होंने राष्ट्रपति मादेरो की हत्या करवा दी।

अब सत्ताधीशों ने जनक्रांति को कुचलने के लिए ऐसे लोगों को सेना में

असली बात तो यह है कि कम्युनिस्ट पार्टी के टुकड़े हो जाने से उसके साहित्यिक पुछल्ले भी अलग हो गये। कुछ लोग हो गये, प्रगतिवादी, दूसरे लोग चूल्हा-चक्की अलग करके हो गये जन-वादी। जनयुद्ध के राष्ट्रविरोधी नारे के कारण प्रगतिवादी आंदो-लन का जहाज डूब गया था। उससे कोई सबक नहीं लिया गया।

जयपुर में आयोजित प्रगतिशील साहित्य सम्मेलन पर विचारोत्तेजक टिप्पणी।

प्रगतिशील लेखक और जनवादी लेखक—एक प्रश्न चिह्न

● मन्मथनाथ गुप्त

प्रगतिशील लेखक संघ का अत्यंत गौरवमय प्रारंभ महान कथाकार और चिंतक प्रेमचंद के पौरोहित्य में सन १९३६ के अप्रैल मास में, लखनऊ में, हुआ। हम और हमारी तरह सैकड़ों लोग उस समय जेलों में लंबी सजाएं काट रहे थे। हमने वहीं से इस युगांतकारी घटना का अभिनंदन किया और हर्षित-पुलकित हुए कि राजनीतिक क्षेत्र में भगतसिंह और आजाद ने फांसी पर चढ़कर और गोलियों का जवाब गोलियों से देकर प्रगतिवाद का झंडा बुलंद किया तो मनीषी प्रेमचंद ने साहित्यकारों में युग के अनुरूप क्रांति-कारी चेतना फूंकने का बीड़ा उठाया।

सचाई तो यह है कि प्रेमचंद का सारा साहित्य ही इस ओर चुनौतीमूलक शंख-नाद था। उनका प्रत्येक उपन्यास हर तरह के प्रतिक्रियावाद के मुंह पर करारा तमाचा रहा है। तब से यशपाल आदि ने हिंदी में उनकी परंपरा को आगे बढ़ाया और उसमें चार चांद लगाये।

सब मानते हुए भी यह कहना गलत होगा कि सन १९३६ के पहले प्रगति-वादी साहित्यिक धारा नहीं थी। थी, और बहुत तेजी के साथ थी। स्वयं प्रेम-चंद की सारी रचनाएं अप्रैल, सन १९३६

के पहले लिखी जा चुकीं थीं। प्रेमचंद प्रगतिवादी आंदोलन की उपज नहीं थे। वे स्वयं तथा उनका साहित्य उस क्रांतिकारी परंपरा की उपज था, जिसका प्रारंभ चार्वाक और बृहस्पति से होकर कबीर में पहुंचा, जिन्होंने मार्क्स और एंगेल्स के बहुत पहले प्रचलित धर्मों की धज्जियां उड़ाते हुए कहा था——

अरे इन दोउन राह न पाई
हिंदुअन की हिंदुआई देखी
तुरकन की तुरकाई

उन्होंने अपने प्रतिपाद्य विषय को साधारणीकरण के भटकावभरे भंवर में छोड़कर, भ्रांतियों के मगरमच्छों के लिए खाद्य प्रस्तुत करने में ही अपने पुरुषार्थ की पराकाष्ठा नहीं मानी। वे ताल ठोककर सामने आये और कहा—

पाहन पूजे हरि मिले
तो मैं पूजूं पहाड़

स्मरण रहे, उन्होंने मूर्ति-पूजा पर यह प्रहार राममोहन राय और दयानंद से सदियों पहले किया।

अफसोस है कि कबीर अपने इन विचारों के तार्किक उपसंहार तक नहीं पहुंच सके और जैसा कि भारत में सारे क्रांतिकारी चिंतकों का बराबर हश्र रहा, उनका पंथ एक कट्टर संप्रदाय के रूप में अश्मीभूत हो गया।

नील-दर्पण : एक दुःख-गाथा

मैं ब्यौरे में न जाकर यह बता दूं कि सन १९३६ के बहुत पहले, ऐन सन १८५७ के कुछ वर्षों के अंदर दीनबंधु मि 'नील-दर्पण' नाटक लिखकर नील वाले बंगाली-बिहारी किसानों की गाथा जनता के सामने रखी। यह जब्त कर लिया गया, पर वह इतना प्र शाली था कि इसका अनुवाद अंग्रेज़ हुआ, जो इंगलैंड में छपा। बंकिमच इसे बंगाल का 'अंकल टॉम्स केबिन' स्वयं बंकिम ने 'आनंदमठ' लिखा, 'वन्देमातरम' गीत था। यह भी जब्त हुई।

औरों को छोड़िए, सन १९३ उस महान ऐतिहासिक सम्मेलन के दशक पहले क्रांतिकारियों पर लिखा शरतचंद्र चटर्जी का उपन्यास 'प दावेदार' जब्त हो चुका था। उसकी हजार प्रतियां एक महीने में बिक थीं। जब जब्ती का हुक्म आया, तब संस्करण छप रहा था।

जो लोग इतिहास को तोड़-म कर किसी दल के पहिये में जोड़ना हैं, उन्हें तथ्यों से क्या मतलब? स में सज्जाद जहीर के बहुविज्ञापित संग्रह के बहुत पहले क्रांति और प्रग आवाज गूंज रही थी। सज्जाद जहीर सुलझे हुए व्यक्ति थे, पर अजी जिन्होंने सन १८५७ के जमाने में गीत लिखा, उन्हें हम भुला कैसे सक

उन्होंने आजादी की प्रथम में लोगों को ललकारते हुए एक गीत था—

हम हैं इसके मालिक / हिंदुस्तान हमारा
पाक वतन है कौम का/जन्नत से भी न्यारा
ऊपर बरफीला पर्वत/पहरेदार हमारा
नीचे साहिल पै बजता/सागर का नक्कारा
आज शहीदों ने तुमको/अहले वतन ललकारा
तोड़ो गुलामी की जंजीर/बरसाओ अंगारा

हम अजीमुल्ला की कुछ ही पंक्तियां दे सके, पर इसमें शक नहीं कि इकबाल के सामने वह कविता रही होगी, जिसमें से उन्होंने संग्रामी ललकार निकालकर सिर्फ इतना कहा था—

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

पर इकबाल, मजहब के मैले कठ-मुल्लापनवाले पनाले में इस प्रकार बह गये कि वह जिन्ना के साथ पाकिस्तान के गायक होकर मरे। उन्होंने ही लिखा था—

ऐ आबरूद गंगा / वह दिन है याद तुझको
उतरा तेरे किनारे / जब कारवां हमारा

विषय पर लौटते हुए, **'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है'**, जिसे रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह आदि ने बेड़ियां बजाकर भारतभर में फैला दिया, को क्या हम प्रगतिशील कविता नहीं मानेंगे? यह धारणा कि सन १९३६ के पहले भारतीय साहित्य में जहालत का युग था, मूर्खतापूर्ण और अनैतिहासिक है।

जयपुर-सम्मेलन

अब मैं राष्ट्रीय प्रगतिशील लेखक महासंघ के जयपुर में गत २५, २६, २७ दिसम्बर [illegible] को आयोजित [illegible] तृतीय अधिवेशन पर आता हूं। यह तृतीय अधिवेशन किस [illegible] प्रकार था? यदि प्रेमचंद के नेतृत्व में हुए युगांत-

प्रेमचंद

कारी अधिवेशन को हम प्रथम माने तो अधिवेशन में वितरित स्मारिका के अनु-सार जयपुर-अधिवेशन किसी भी दृष्टि से तृतीय नहीं ठहरता। क्या प्रगतिशील होने से गणित भी बदल जाता है?

जयपुर-अधिवेशन में असम से १२, आंध्र से ३, बिहार से ३५, दिल्ली से लग-भग उतने ही, गुजरात से ५, हरियाणा से २२, जम्मू-कश्मीर से २, केरल से ४, मध्यप्रदेश से ७०, महाराष्ट्र से विधिवत एक भी नहीं, पंजाब से प्रतिनिधियों के नाम पर केंद्रीय पंजाबी सभा के कुछ लोग, राजस्थान से २५०, सिंधी की तरफ से कुछ, तमिलनाडु से कुछ, उर्दू की तरफ से अखिल भारतीय उर्दू-सम्मेलन के कुछ साथी, उत्तर प्रदेश से २२, और त्रिपुरा से २ व्यक्ति आये थे। बंगाल और हिमा-चल से कोई नहीं आया था। क्या यह अखिल भारतीय नक्शा पेश करता है?

कहां प्रेमचंद के समय का वह संग-ठन? कहां यह अधिवेशन? नाम के लिए ६०० प्र[illegible]तिनिधि जयपुर में थे, पर ये कौन

थे? अखिल भारतीय ख्याति के केवल ये साहित्यकार वहां थे—नागार्जुन, त्रिलोचन, भीष्म साहनी (सम्मेलन के महासचिव), ताबां (अध्यक्ष), कैफी, अमृत राय (उदघाटन-कर्ता)। क्या भारत में इतने ही प्रगतिवादी हैं? दलित लेखक किस श्रेणी में आएंगे?

डेढ़ ईंट की मसजिद

हां, कई वरिष्ठ अध्यापक थे, कुछ उदीयमान कवि थे। सबसे महत्त्वपूर्ण थे केरल और मध्य प्रदेश के नाटक और नाट्य आंदोलन के लोग, जो जनता से बहुत गहराई से जुड़े थे। मुझे फिर भी यह लगा कि यह महज खानापूरी और डेढ़ ईंट की मसजिद है, जिस पर रोना ही आ सकता है। इसमें कितने लोग प्रतिबद्ध थे, कितने लोग साहित्य को, समाज को परिवर्तित करने में इस्तेमाल कर रहे हैं, कर सकते हैं, मालूम नहीं। जो भाषण सुने, उनमें पारंपरिक के अलावा दंतकटाकटी और तैलाधार पात्र है या पात्राधार तैल है, इस श्रेणी के भाषण अधिक थे। यह दुर्भाग्य है हरेक मतवाद का कि बारीक कातनेवालों का उस पर कब्जा हो जाता है। स्थिर स्वार्थ इसको सहन करता है, क्योंकि उसे ख़ानापूरी करके अपना अस्तित्व और पद बचाना है। क्रांति जाए भाड़ में, समाज में परिवर्तन लाने का सिरदर्द कौन मोल ले? घोषणा-पत्र में सारे दोष अपनी सरकार पर डाल दिये, बाकी अमरी[illegible] पर! ध्यान दिलाने [illegible] भी परिवार-नियोजन को घोषणा में स्थान नहीं मि[illegible]

असली बात तो यह है कि कम्युनि[illegible] पार्टी के टुकड़े हो जाने से उसके [illegible]त्यिक पुछल्ले भी अलग हो गये। कुछ [illegible] हो गये प्रगतिवादी, दूसरे लोग [illegible] चक्की अलग करके हो गये जनवादी[illegible]

सन १९४२ में जनयुद्ध के राष्ट्र-विरो[illegible] नारे के कारण प्रगतिवादी आंदोलन [illegible] जहाज डूब गया था। उससे किसी ने [illegible] सबक नहीं लिया। वही घातक ढर्रा [illegible] है। हजारों लेखक प्रगतिवादी ढंग से [illegible] हैं, पर वे किसी ऐसे संगठन में जाने [illegible] कतराते हैं क्योंकि संस्था में आने से [illegible] लेखन को कोई लाभ नहीं पहुंचेगा। [illegible]पुर से जो घोषणा-पत्र प्रकाशित हु[illegible] वह दल के घोषणा-पत्र की कारबन [illegible] लिपि मात्र था। (प्रकाशकों की ज्या[illegible] के विरुद्ध कुछ कहा जाता या काग[illegible] दाम या पुस्तक पर पोस्टेज के विष[illegible] कुछ कहा जाता तो वह वास्तविकता के [illegible] होता।) इसमें सबसे हास्यास्पद बात [illegible] रही कि समापन-समारोह में सम्मेलन [illegible] सफल बताकर खुशी जाहिर की गयी। [illegible] आत्म-प्रतारणा है। सारे प्रगतिवा[illegible] (जिनमें जनवादी भी हैं) को एक मं[illegible] लाना चाहिए। आगे पहला कदम यह [illegible]

—डी-१४, निजामुद्दीन ईस्ट, नयी दिल्[illegible]

> जंग खा-खाकर [illegible] समाप्त होने [illegible]
> [illegible] घिस-घिसकर मिटना श्रेयस्[illegible]
> —बिशप कम[illegible]

कहानी

टुकड़ा-टुकड़ा आदमी कतरा-कतरा मौत

● कृष्णा

नितिन का बनारस का तबादला सुनते ही शारदा का मुंह सिकुड़ गया था। कहां लखनऊ और कहां बनारस की गंदी पेचदार गलियां . . नितिन की खुशी देखकर तो और भी जलन हो रही थी। कभी बारह बरस पहले नितिन वहां रहा था।

सुधियों के झरोखे से कई बार नितिन ने शारदा को अपना अतीत झंकाया था।

यहीं, इसी शहर में, चौखंभा के पास दूध-विनायक के पड़ोस में नितिन और चच्ची का घर था। कैसे चच्ची ने संकटाजी पर जाकर मत्था टेककर माना था, कि 'पहिल पहलौठी देवर के घर के आंगन में बेटवा देना मैया।' और मैया ने उनकी अर्जी कबूल कर ली, तब अम्मा ने बप्पा से कहा था, 'अब नाम भी जिज्जी ही रख देंगी।' 'न' अक्षर से निकलनेवाले शब्द को चच्ची ने नितिन घोषित किया था। बप्पा बहुत चुप्पा थे, मगर चच्ची को देखकर मुसकराकर कहते थे, 'ई बेटौना तो मम्मी का प्रसाद है।'

बालपन से लेकर नवयौवन की देहरी तक ममता की छांव-बयार देनेवाली चच्ची सचमुच अद्भुत थीं। कई बार अतीत आत्मीयता की मिठास लेकर आंखों में भी पिघला था। दफ्तर के बाद का खाली समय इन्हीं यादों के महाकाव्य का सर्ग बनता जा रहा था। चच्ची ने ही तो अटपटी भाषा को सधे शब्दों से जोड़कर पाटी पुजाने का, अक्षर-ज्ञान कराया था। चच्ची लोग ठाकुर थे। मगर ब्राह्मण होकर भी अम्मा उनके पैर छूती थीं। कौन बैठा था, अम्मा का यहां! दूर-दराज भी तो कोई नहीं था। नितिन के पैदा होने की पिपरी भी चच्ची ने जिठानी के नेग से पीसी थी। कान के बुंदे पाये थे।

जात-बिरादरी, रक्त-संबंध की सीमा-रेखा को पछाड़कर, सीने से लगायी गयी आत्मीयता की बात, अनेक बार बताते-बताते नितिन का अंतर भीगा है। शारदा के मन में कहीं चच्चा और चच्ची की कल्याणमयी, ममतामयी मूर्ति स्थापित होता स्वाभाविक ही है।

दोनों तरफ से धोती की चुन्नट कमर में खोंसे, नीचे से झांकता भदरंग पेटीकोट . . . मन ही मन में नितिन को हंसी आती थी– शायद ऐसी ही ये मां की कोख से भी पैदा हुई होंगी–रोटी बनाती, सुंदरकांड का पाठ करती, अथवा हनुमान चालीसा बड़-बड़ाती हुई . . . चच्चा को तो पंचम स्वर भी गवारा नहीं, लेकिन चच्ची को शायद ईश्वर या मौत ही चुप करा सके, तो बात और है ।

शारदा ने नितिन से बेसब्री से पूछा था, "ए सुनो, तुम तो कहते थे कि चच्चा के बाल-बच्चे भी हैं ?"

"हां-हां, तीन बच्चे हैं। सब अपनी-अपनी जगह सेटिल हैं . . . अच्छा तुमने भला यह बात क्यों पूछी ?"

"पता नहीं नितिन, चच्ची और चच्चा में कोई भी चीज तो कॉमन नहीं है । न सूरत, न सीरत । कभी संग-साथ हंसना-बोलना, सोना-जागना भी साथ-साथ कैसे हुआ होगा ? यही सोचती हूं । तन का साथ, बिना मन मिले . . ."

नितिन हंस दिया, "शारदा, भला तुमने यह कैसे सोचा कि चच्चा का मन नहीं मिला । तीन घंटे में ही तुमने सबकी साइको-एनालिसिस कर डाली ?"

"नहीं नितिन, चलते समय चच्ची ने मुझे आठ चूड़ियां कांच की दीं । 'दुल-हन, हमारी बस यही औकात है ।' यह तो चोट खाया इनसान ही कह सकता है। मेरी बात सुनो, तो तुम चच्ची से पूछकर देख लो । कितनी सुखी हैं ? पता चल जाएगा । जो घर की मालकिन हो, उसकी आधिकारिक सीमा कभी इतनी निरीह नहीं होती । उसका स्वर बेबस नहीं लगता ।"

नितिन को याद आया । चच्ची के पूरे घर के कपड़े छत पर, अलगनी पर सूखते थे । यदि चच्ची न उतारकर लायें और किसी को कपड़ों की जरूरत पड़े तो चच्ची की झाड़-पोंछ चालू । चच्ची सिर झुकाये खिसियानी-सी सब कुछ चुपचाप सुनती रहती थीं । उनके अपने बच्चों ने भी उनका स्तर सिर्फ घर का काम करनेवाली महिला का ही रखा था । नितिन को यह सब कुछ कई बार अपमानजनक लगा था । लेकिन वह कभी इस बात का निर्णय नहीं कर सका कि इस अन्याय की फरियाद वह किससे करे ।

शारदा की बात बुरी जरूर लगी थी, मगर गलत नहीं थी ।

अम्मा के मुंह ही सुना था नितिन ने

कि चच्ची के स्वभाव में थोड़ा हथ-लपकापन है। अम्मां ही बप्पा से बतियाती रहती थीं, "बेचारी जिज्जी, जब दादाजी पैसा-कौड़ी पूछते ही नहीं, तब इधर-उधर गड़बड़-शड़बड़ करके ही काम चलाती हैं। शुरू में मजबूरी रही होगी। अब आदत बन गयी है। उन्हीं पैसों से दुनियाचार समेटती हैं। कोई आया, कोई गया। दुनिया के नेगचार और सामाजिक संस्कार भी, ऊपर से शांति बुआ की सेवा।"

दिन शनिवार था। 'हाफ-डे' की छुट्टी। नितिन दूध-विनायक चला गया।

नितिन को देखते ही सबने एक साथ स्वागत किया। चच्ची ने चटपट एक कप चाय देकर कहा, "बैठ, ... तनी तोहरे हनुमान बाबा से भेंट करके आयी ला।"

"फूटी किस्मत हनुमान बाबा की ..." कहकर शांति बुआ व्यंग्य भाव से खिल-खिलाकर मानो परिहास कर उठीं। नितिन का मन कड़ुआ गया। चाय मानो जहर का घूंट बन गयी। थोड़ी देर सन्नाटा छाया रहा। फिर शांति बुआ उठीं और तैयार होने लगीं। चच्चा भी दस मिनट बाद कुनमुनाये और उठकर कपड़े बदलने लगे। नितिन बिना बोले देखता रहा। चच्चा ने मुसकराकर कहा, "आज हाफ डे था, सो सिनेमा का प्रोग्राम बना डाला। 'मेकबैथ' का अंतिम शो है। चलोगे?"

"नहीं, शारदा से नुमायश जाने को वचनबद्ध हूं," कहकर नितिन फिर चुप्पी में खो गया।

चच्चा और शांति चले गये। ... 'धीरज धर्म मित्र अरु नारी' ... आकर खड़ी हो गयीं।

"चच्ची, यह सब क्या है? ... तो चच्चा कभी फूटे मुंह भी नहीं ... और इस कुलच्छनी को लेकर बाह... जाते देख तुम्हें गुस्सा नहीं आता?"

हंसती चच्ची का चेहरा गरुआ ... थोड़ा रुककर बोलीं, "अगर गुस्सा ... तो क्या करें?"

"इस कुलटा के पेट में खंजर ... खतम कर दो ..."

बातूनी चच्ची जरा भी उत्तेजि... हुईं। मानो दिमाग पर बरफ की ... धरी हो—

"बबुआ जे कुछ तू पूछल चाहत... हम जानित हैं। लजाय के बात नाहीं ... चलअ ऽ ऽ ऽ आज खुल के बतिया... जाए ... पर रोटी तो खावे करवा... थम जा। इहैं तोहार थाली लिहै ... हईं ...।"

चच्ची उठकर चली गयीं। ... की थाली ले आयीं। उनका प्रदोष ... एक ही वक्त खाएंगी, सांझ को।

बड़ी गंभीरता से बोलीं, "... शांति बुआ को खंजर घोंपकर हम ... जातीं, जेल ही न? और तुम्हारे ... तो फिर भी हमें न मिलते। चलो ... कोई आदमी किसी को प्यार क... उसकी कीमत तो देनी ही होती है ... तुम्हारे चच्चा को चाहती हूं। ...

प्यार मुश्किल होता है, पर मुझे उनसे है। वे मुझे नहीं चाहते, न चाहें। कोई जबरदस्ती थोड़े ही है। लेकिन मुझे चाहने से नहीं रोक सकते।

"अपनी सूरत-शक्ल के लिए मैं जिम्मेदार नहीं। रुपया-पैसा, दान-दहेज घरवाले ले गये। तुम्हारे चच्चा को उसकी दरकार नहीं थी। तुम्हारे चच्चा और हमारी सास की सलाह मेरे मैके जाने के लिए थी . . . लेकिन नितिन, पिया की उतारी प्रिया का कहां ठिकाना?" चच्ची की चमकती कटोरियों में पानी भरने लगा था।

थोड़ा रुककर वे फिर कहने लगीं, "हम नहीं गयीं। क्या करतीं जाकर। वहीं हमारे लिए कौन-सा राज-सिंहासन धरा था। एक तो बिटिया की जात, ऊपर से परित्यक्ता। थोड़े दिन लोग बेचारी चच्चू, चच्चू करते, फिर वहां की गृहस्थी समेटते भी घर से लेकर बाहर तक की उपेक्षा और बेचारगी का शिकार होतीं। सच या झूठ। जो पाखंड तीन हजार बरस से स्त्री चमड़ी की तरह धारण किये है न, उसे निकाल फेंकने में भी कई सौ बरस लगेंगे। हंसी-खेल-ठट्ठा नहीं है।"

नितिन चुपचाप टुकुर-टुकुर देखता रहा। फिर जाने कैसे खिसियाना-सा पूछ बैठा," जब ऐसा ही था तब . . . फिर . . . बाल-बच्चे ? . . ." और मानो शर्म और हकलाहट में शब्द डूब गये।

"तुम लजाओ मत नितिन। तुम्हारा सवाल सही है। हमारे और तुम्हारे चच्चा के बीच नव विवाहितोंवाला कोमल-मधुर आंतरिक भाव नहीं था। लेकिन हिंदू-संस्कार अथवा मेरा आत्मविश्वासभरा पागलपन का संयोग कि मन न मिलने पर भी कहीं तन के संयोग ने मुझे उनके बच्चों की मां बना ही दिया। हालांकि, उसके बाद भी उस मातृत्व का महत्त्व किसी ने नहीं माना, मगर मेरा तन-मन तो जुड़ा गया। जो जैसा है उसको वैसा ही मंजूर

करना होगा ।"

नितिन अबूझ-सा मुंह निहारता रहा । चच्ची सधे भाव मानो समझाती रहीं— "बचवा रे, आज तक किसी आदमी को हमने साबुत नहीं देखा । जिंदगी का हर टुकड़ा अच्छा हो या बुरा हमको आकार देता है । तुम तो जानते ही हो, काम के अलावा ऊटपटांग सब कुछ पढ़ती रहती हूं । हिंदी हो या अंगरेजी, धार्मिक 'कल्याण' हो या विमल मित्र का 'साहब बीबी और गुलाम', मुझे तो स्त्री कहीं भी पूर्ण संतुष्ट नहीं दिखी । और नितिन, स्त्री ही क्या, पूरी मनुष्य-जाति का यही हाल है । औरत तो गुलामों की भी गुलाम है . . . भैया, सुख कला-कंद नहीं, कलाकंद की मिठास है, जिसे महसूस कर सकते हैं, पर पकड़ नहीं सकते ।

नितिन कुछ नहीं बोला । थाली-कटोरी चौके में रखकर चच्ची के पैरों पर झुका तो सिर पर हाथ फेरते चच्ची की कटोरियों ने बूंदें टपका दी थीं ।

नितिन जल्दी से दरवाजा खोलकर चला गया । पीछे मुड़कर भी नहीं देखा । लेकिन पीठ पर कहीं कुछ चुभ रहा था ।

तीसरे दिन सोमवार था । चच्चा का फोन मिला, शांति बुआ का हार्ट फेल हो गया । चच्चा का भारी स्वर फोन पर भी महसूस किया था, नितिन ने । मगर जान-बूझकर शारदा के कहने के बाद भी नितिन दूध-विनायक नहीं गया । बल्कि शारदा से बोला था, "शांति के मरने में इतनी देर क्यों हुई ?"

काफी दिन बाद शारदा नहीं मा[नी] तो नितिन को चौखंभा जाना ही पड़ा।

चच्ची अकेली थीं । मगर जोर-[जोर] से ऐसे बड़बड़ा रही थीं, गोया दो-[चार] लोगों से बतकही कर रही हों । नितिन [और] शारदा को देखकर गदगदा गयीं ।

थोड़ी ही देर में चच्चा भी आ [गये]। कैसे न हो गये थे चच्चा ! मानो [शांति] बुआ मरने के साथ बीस-तीस बरस [का] बुढ़ापा उन्हें सौंप गयी थीं । तिरछी [कमर] झुक आयी थी । पैर भी लाठी के [सहारे] खिसक रहा था, कुरता-पैजामा भी [अब] उतना भकाभक सफेद नहीं रह गया [था]। नितिन को अपनी खटिया पर बैठाते [हुए] चच्चा की लाचारगी और उदासी नि[तिन] से छिपी नहीं रह सकी—यादों में उ[भरा] इसी जगह शांति बुआ और चच्चा [बैठ] कर हंसी-मजाक करके खाते-पीते [थे]। एक दिन जब उसने बोतल के साथ गिलास देखे, तब कितना कुढ़ा था । [शांति] बुआ का शराब पीना और चच्चा [का] ठी-ठी करके बे-बात हंसना. . .छि: [उसका] मन विरक्त हो उठा था ।

चच्चा ने क्या कुछ कहा, नितिन [नहीं] सुन सका । उठते हुए सिर्फ सुनायी [दिया] था कि 'खाना खाकर जाना दोनों ज[ने]।'

नितिन ऊपर चला गया । चच्ची [अपने] स्वभावानुसार कुछ अनाप-शनाप शारदा [को] सुनाये जा रही थीं । शारदा सुन रही [थी]।

नितिन को देखकर चच्ची बोलीं

"नितिन, जब से शांति मरी हैं, तोहार चच्चा सचमुच रंडुआ होइगै। शांति के साथ बोल बतियाय कै बखत कटत रहा। अब विधवा मेहरारू की नांई मूंड़ डारै पड़े देखकर हमार जिऊ करछत है। का करी हमारे हाथै मां तो कुछौ है नाहीं। तू हईं आय जावा कर मोर बबुआ! इनकर जिनगी तो अधि-याय गयी है रे. . . ।"

"तुम्हारे लिए भी कभी किसी ने सोचा ऐसा?"

शारदा के सवाल पर भी चच्ची हतप्रभ नहीं हुईं, सहज भाव से बोलीं, "बचवा रे, सौदा हम खरीदली है तब पैसवा हमहीं तो देब। हे बचवा, ई जो जिनगानी की कथरी रही है न, वहिमां से हम अपनी खुशी की चिंदी उखाड़के, थिगली-थिगली जोड़के चुनरी बनौले हई।"

चच्ची अब भी बोल रही थीं, "देखो, दुनिया एके क्लैप्टोमेनिया कहत है। पर हम ईलाज काहे कराई? ई हमका जिनगी का सुख जो देत है। सुख कै ऐसनै टुकड़ा लै लइके हम जिंदा हई रे बचवा. . . ।"

नितिन और शारदा आंगन में आये तो चच्चा कह रहे थे—"इसको तो वेर्बल डायरिया है। कोई भी भला मानुस कैसे आने की हिम्मत करे।"

बाहर सड़क पर निकलकर शारदा ने कहा था—"नितिन, पुरुष होते हुए भी चच्चा, चच्ची से जीत नहीं सके। चच्ची की दिलेरी अजेय है. . . ।"

नितिन की आंतरिक दृष्टि देख रही थी पगलिया चच्ची की पूनम-सी टिकुली... मातृत्व और नारीत्व के गौरव का जीवंत प्रतीक अथवा जीवन का ओढ़ाया गया कफन. . .नितिन निश्चय नहीं कर पा रहा था। चुप्पी को तोड़ते हुए शारदा ने पूछा था, "क्या सोच रहे हो?"

फिर खुद ही कहने लगी, "नितिन, मैं अपने विश्लेषण को स्पष्ट करते हुए कहना चाहती हूं, ये चच्ची कितनी सुंदर हैं। बहुत सुंदर. . . .पता नहीं, तुम्हारा सौंदर्य-बोध क्या कहता है, पर मेरी दृष्टि धोखा नहीं खाती . . .।" नितिन फिर भी चुप ही रहा . . . अभिव्यक्ति के लिए हमेशा ध्वनि शायद अनिवार्य नहीं होती . . .।

—डी-२/३१५, पंडारा रोड, नयी दिल्ली

नकली हृदय : असली का...

● डॉ. मैट क्ला...
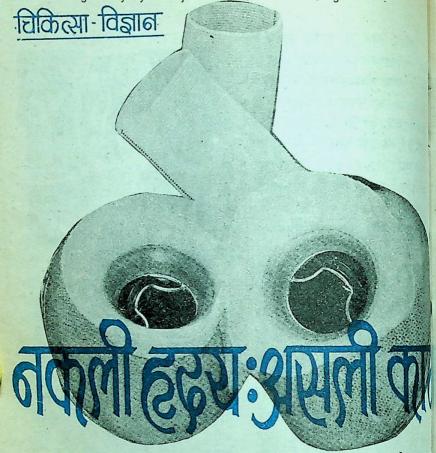
उसकी जिंदगी फिसलती जा रही थी। छह साल पहले एक रहस्यमय जीवाणु-संक्रमण का शिकार हो जाने से, बार्नी क्लार्क के हृदय की पेशियां फूलकर लटक गयी थीं। उसके बीमार हृदय से रक्त का प्रवाह कमजोर पड़ गया था। सप्ताहभर से क्लार्क मृत्यु के झूले में झूल रहा था। तब ऊटा मेडिकल सेंटर यूनिवर्सिटी के शल्य-चिकित्सकों ने सीटल के उपनगर के निवासी, इकसठ-वर्षीय, सेवानिवृत्त, वृद्ध दंत-चिकित्सक को जीवन का एक अपूर्व अवसर प्र... किया। उन्होंने क्लार्क के क्षीण हृदय... निकालकर उसके स्थान पर चमक... प्लास्टिक तथा अलुमिनियम से निर्मित... करण लगा दिया। किसी मनुष्य के श... में पूर्णतया कृत्रिम हृदय के प्रत्यारोपण... यह पहली घटना थी।

अनिश्चय में झूलता जी...

क्लार्क बहादुर और विचारशील व्य...

एक नर्स ने जीवाणुरहित, नीले कपड़े में लिपटा एक बंडल शल्य-चिकित्सकों को दिया, जिस पर अंकित था, 'त्वक-निर्मित नलियों से युक्त पूर्णतः कृत्रिम हृदय,संख्या--१' । इसके अंदर 'जार्विक-७' नामक कृत्रिम हृदय था। मनुष्य के शरीर में पूर्णतया कृत्रिम हृदय के प्रत्यारोपण की पहली घटना का विवरण प्रस्तुत है मैट क्लार्क, जेफ. बी. कोपलैंड, डेनियल शेपिरो, पामिला अब्रामसन, मैरी हेगर तथा रिचार्ड सैंडजा द्वारा

डॉ. विलियम सी. डि व्रीस, रोगी क्लार्क के साथ

था। वह जानता था कि चिकित्सा-जगत के इतिहास की रचना करनेवाली इस घटना में क्या-क्या खतरे निहित थे । प्रक्रिया आरंभ होने से पूर्व क्लार्क ने अपनी पत्नी ऊना लॉय का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "प्रिये ! संभव है, मैं तुम्हें दोबारा न देख पाऊं। अतः मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूं कि तुम एक कुशल और जिम्मेदार पत्नी रही हो।"

इसके बाद, उसका हृदय और भी अधिक तेजी से डूबने लगा। तुरत उसे ऑपरेशनवाले कमरे में ले जाया गया। उसका वक्ष खोलकर उसका हृदय निकाल दिया गया और उसके स्थान पर अड़तीस-वर्षीय डॉ. विलियम सी. डि व्रीस ने कृत्रिम हृदय लगा दिया, जो बार्नी क्लार्क की छाती में धड़कने लगा।

अभूतपूर्व घटना

चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र की यह अपूर्व घटना प्रथम मानव-हृदय-प्रत्यारोपण की पंद्रहवीं वर्षगांठ के ठीक एक दिन पूर्व घटित हुई थी। हृदय रोग-चिकित्सा के क्षेत्र में यह एक शानदार सफलता थी।

मनुष्य-शरीर में कृत्रिम हृदय के परीक्षण के लिए क्लार्क असंदिग्ध रूप से उचित व्यक्ति था। डॉ. व्रीस के अनुसार, 'वह इतना बूढ़ा था कि उसके हृदय का प्रत्यारोपण संभव नहीं था। कोई औषधि ऐसी नहीं थी, जो उसके काम आ सके।

उसके सामने मृत्यु की प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं था।' इसके साथ ही दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि क्लार्क, यंत्र पर आधारित जीवन प्राप्त करने से होनेवाले समस्त मनोवैज्ञानिक प्रभावों का सामना करने की दृष्टि से भी सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति था।

समय आ गया है

क्लार्क, सन १९७७ में सेवानिवृत्त होने के बाद, अन्य चीजों के अलावा गोल्फ के प्रति अपने शौक में जोर-शोर से लिप्त हो गया था। लेकिन तीन वर्ष पूर्व वह, संभवतः कुछ समय पूर्व लगे विषाणु-संक्रमण के कारण हृदय-संकुचन की बीमारी से ग्रस्त हो गया था।

विश्वविद्यालय में कृत्रिम हृदय लगे हुए बछड़े को देखने के बाद क्लार्क ने निश्चय किया कि वह भी कृत्रिम हृदय लगाये जाने का अनुरोध करेगा। उसके पुत्र गैरी का कहना है, 'वह जानते थे कि उनकी मृत्यु सन्निकट है। इसलिए ऑपरेशन सफल हो या असफल इसकी परवाह किये बिना वह अपना योगदान करना चाहते थे।' २७ नवम्बर को उसकी दशा और भी बिगड़ गयी। उसने डॉ. डि व्रीस को फोन करके कहा, "समय आ गया है।" सोमवार को उसने अपनी पत्नी के साथ वापस साल्ट लेक सिटी की उड़ान की और उसे हैलिकोप्टर से अस्पताल ले जाया गया। साक्षात्कार और परीक्षणों के उपरांत उससे ग्यारह पृष्ठीय अनुमति-पत्र पर हस्ताक्षर करने को कहा गया। इसमें उसने स्वीकार किया कि ऑपरेशन तकलीफ देह होगा, यह संभव है कि यांत्रिक कृत्रिम हृदय उसके जीवन की अवधि बढ़ा पाने में सफल न हो पाये, और यदि वह बढ़ा भी पाता है, तब भी यह उपकरण उसे हार्दिक, सक्रियतापूर्ण जीवन प्रदान नहीं कर पाएगा।
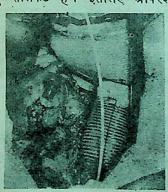
उसका ऑपरेशन गुरुवार को प्रातःकाल होना था, किंतु अचानक उसकी हालत बिगड़ गयी। उसका रक्तचाप खतरनाक हद तक कम हो गया और

क्लार्क के वक्ष में धड़कता कृत्रिम हृदय

डॉ. जार्विक
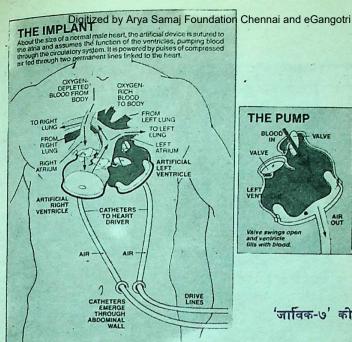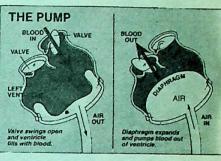
'जार्विक-७' की कार्य-प्रणाली

हृदय की गति खतरनाक ढंग से अनियमित हो गयी। डॉ. डि व्रीस ग्रौर उसके सहयोगियों ने तय किया कि वे इंतजार नहीं कर सकते थे ग्रौर तुरत उसे ग्रॉपरेशन के कमरे में ले जाकर उसे संज्ञा-शून्य कर दिया गया। शल्य-चिकित्सक के अनुसार वह इतना दुर्बल था कि उसे ग्रॉपरेशन-पूर्व की ग्रौषधियां भी नहीं दी जा सकीं।

अठारह इंची चीरा

डि व्रीस ने पास घिर आये चौदह शल्य-चिकित्सकों, हृदय-विशेषज्ञों, नर्सों तथा तकनीशियनों के साथ रात के साढ़े ग्यारह बजे ग्रॉपरेशन शुरू किया। उसने क्लार्क की छाती में अठारह इंच का चीरा लगाया। वक्ष-अस्थि को चीरते हुए उसने पसलियों को इधर-उधर फैला दिया। रोगी का हृदय सामान्य से दोगुने आकार का था ग्रौर इतना मुलायम ग्रौर पिलपिला था कि डॉक्टरों को भय था कि कहीं वह शल्य-क्रिया के दौरान रक्त-प्रवाह बनाये रखने-वाली 'मशीन' के जोड़े जाने से पहले ही बंद न हो जाए। किंतु लगाते ही मशीन ने शरीर की मुख्य धमनी एग्रोरटा तथा दक्षिण प्रकोष्ठ ग्रौर हृदय के ऊपरी प्रकोष्ठ में लगी नलियों द्वारा रक्त-संचार करना शुरू कर दिया।

इसके पश्चात, डि व्रीस ने रक्त-संचार के मुख्य स्रोतों—दायें ग्रौर बायें हृदय-प्रकोष्ठों को काटकर अलग कर दिया, क्योंकि वे बेकार हो चुके थे।

एक नर्स ने जीवाणुरहित नीले कपड़े में लिपटा हुआ एक बंडल शल्य-चिकित्सकों को दिया, जिस पर ग्रंकित था, "त्वक-निर्मित नलियों से युक्त पूर्णतः कृत्रिम
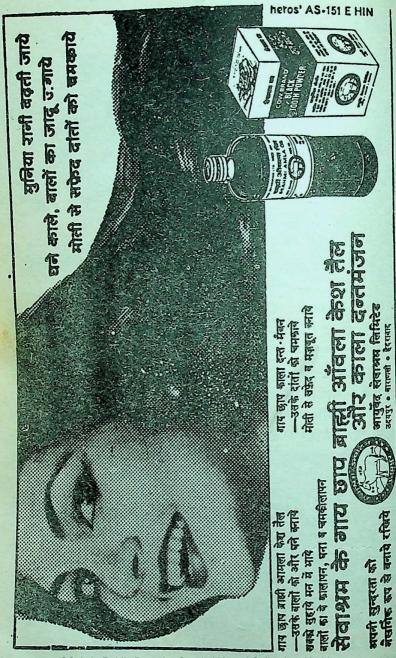
हृदय, संख्या-१"। इसके अंदर 'जार्विक-७' नामक कृत्रिम हृदय था। इसका आकार मानव-हृदय के समान ही था तथा इसमें पॉलियूरिथेन प्लास्टिक तथा अलुमिनियम से निर्मित दो खोखले प्रकोष्ठ थे। प्रत्येक प्रकोष्ठ में लचीले प्लास्टिक की एक झिल्ली लगी थी।

हृदय-प्रत्यारोपण के लिए डि व्रीस ने, एओरटा धमनी तथा पल्मोनरी शिरा के साथ यथास्थान रखे गये, क्लार्क के ही हृदय के दोनों उपद्वारों के साथ डेक्रॉन की आस्तीनों की सिलाई करके, उनके ऊपर दो यांत्रिक निलय लगा दिये।

चेतना लौट आयी

चार बजकर नौ मिनट पर 'हार्ट-लंग-मशीन' बंद कर दी गयी। अब क्लार्क का जीवन पूर्णतया 'जार्विक–७' की सहायता से चलने लगा। डि व्रीस के अनुसार उसका रक्तचाप एक अठारह वर्षीय व्यक्ति के समान था। बढ़ते रक्त-प्रवाह के साथ-साथ क्लार्क के फेफड़ों और उदर में जमा हुआ द्रव गायब होने लगा। परीक्षणों से पता चला कि उसके यकृत में भी सुधार हो रहा था। प्रातःकाल ७ बजे क्लार्क को 'इंटेंसिव केअर यूनिट' में स्थानांतरित कर दिया गया। वहां उसे एक श्वास-यंत्र की सहायता प्रदान की गयी। दोपहर तक वह पूर्ण जागृत और चेतनावस्था में आ चुका था। गले में लगी नली के कारण वह बोलने में तो असमर्थ था, किंतु उसने अपनी पत्नी को पहचानते हुए सिर हिलाया और संकेत से ही डॉक्टरों को यह बताया कि उसे दर्द नहीं हो रहा था।

योजना के सूत्रधार

वर्षों तक लगातार खोजों और तैयारियों के बाद क्लार्क का यह ऑपरेशन संभव हो सका था। ऊटा परियोजना के सूत्रधार, ऊटा विश्वविद्यालय के कृत्रिम अंग कार्यक्रम के अध्यक्ष, इकहत्तर वर्षीय चिकित्सक डॉ. जे. विलियम कॉफ थे। उन्होंने क्लीवलैंड क्लिनिक में, प्रत्यारोपित हो सकनेवाले हृदय के बारे में अध्ययन शुरू किया था। सन १९६७ में ऊटा आने पर, डॉ. कॉफ और उनके सहयोगियों ने पशुओं पर परीक्षण करके वायु-चालित हृदयों का विकास कर लिया था। सन १९७१ में डॉ. कॉफ के दल में, डॉ. जार्विक भी आ मिले और अपने प्रारूप पर कार्य आरंभ कर दिया। डॉ. जार्विक ने बायोमेर नामक एक लचीले पदार्थ की तहों से युक्त एक झिल्ली का प्रारूप तैयार किया। साथ ही उसने निलयों के लिए ठोस अलुमिनियम का आधार तैयार किया, जिससे कि वायु का निस्सरण रोका जा सके। ऊटा केंद्र के बाड़े में बछड़ों में ये हृदय-प्रत्यारोपण सफल रहे थे और एक लॉर्ड टेनीसन नामक जानवर तो 'जार्विक-५' नामक हृदय की सहायता से पूरे २६८ दिनों तक जीवित रहा।

क्लार्क के वक्ष में प्रत्यारोपित कृत्रिम हृदय से इस बात का पता लग सकेगा कि यह मनुष्य के शरीर में कितने समय

तक काम करता है। बछड़ों में इससे एक समस्या उत्पन्न होती है कि झिल्ली के ऊपर चूने की परत जम जाती है, लेकिन प्राय: वयस्क बछड़ों में ऐसा नहीं होता है। डॉ. जार्विक को आशा है कि मानव-शरीर में भी यह समस्या उत्पन्न नहीं होगी।

प्रयोगात्मक उपयोग

कृत्रिम हृदय पहले भी प्रत्यारोपित हुए हैं। हाउस्टन स्थित टैक्सास हार्ट इंस्टिट्यूट के डॉ. डेंटन कूले ने ऐसे ही उपकरण का प्रयोग सन १९६९ में तथा गत वर्ष, दो गंभीर रूप से बीमार रोगियों के लिए किया था। दोनों ही रोगी कई दिन तक जीवित रहे, किंतु प्रत्यारोपण की प्रक्रिया के कारण उत्पन्न हुई उलझनों के कारण उनकी मृत्यु हो गयी।

डि व्रीस ने खाद्य एवं औषध प्रशासन की अपेक्षा के अनुसार जून, सन १९८० में विश्वविद्यालय की शोध-समिति के सम्मुख 'जार्विक-७' के प्रयोग की अनुमति के लिए आवेदन प्रस्तुत किया। अगले वर्ष उसे अनुमति दे दी गयी, किंतु केवल उन्हीं रोगियों के लिए, जिनका हृदय रक्तसंकुलता के कारण निष्क्रिय हो गया हो और जो ऑपरेशन करने के योग्य न हों तथा जो बिस्तर में आराम करते समय भी विशिष्ट लक्षणों से युक्त हों। कृत्रिम हृदय-रोपण के प्रत्याशी का १८ वर्ष से अधिक आयु का होना आवश्यक है, साथ ही वह मानव-हृदय के प्रत्यारोपण के योग्य भी नहीं होना चाहिए। इसके अलावा साल्ट लेक सिटी में ही इतनी दूरी पर रहना भी उसके लिए आवश्यक है कि उसे ४५ मिनट में ही कार द्वारा अस्पताल पहुंचाया जा सके।

सुरक्षात्मक उपाय

ऊटा के चिकित्सक-दल को आशा है कि क्लार्क अपने बड़े आकारवाले उपकरण के साथ सामंजस्य स्थापित करके पर्याप्त गतिशील जीवन व्यतीत कर सकेगा। वह अपने हृदय-परिचालक को एक कमरे से दूसरे कमरे तक लाने-जाने में असुविधा महसूस नहीं करेगा और यात्रा के समय आवश्यकता पड़ने पर गाड़ी में भी लाद सकेगा। जब क्लार्क अस्पताल से अपने घर पहुंच जाएगा, तब परिचालन-प्रणाली को उसके कमरे की किसी दीवार के झरोखे में सुविधाजनक रूप से स्थापित किया जा सकेगा। सुरक्षा-उपायों में एक यह भी है कि हवा के दबाव में कोई परिवर्तन आ जाने पर एक बजर की आवाज स्वतः ही बंद हो जाएगी और वायु फेंकनेवाले उपकरण इस इकाई को बिजली बंद हो जाने पर भी कम से कम २४ घंटे तक चालू रख सकेंगे।

मिलान, इटली की मारिया फ्रैंतिन्नो ३६ वर्ष तक युद्ध में मृत पति के समाचार से विधवा की तरह रही, पर अचानक पुलिस ने खबर दी कि वह विधवा नहीं है और उसका पति सैकड़ों मील दूर एक जरमन युवती के साथ मजे में है।

मां की सेवा के बिना पुण्य नहीं

• विनोद टिक्कू

विश्व में ऐसे अनेक मुस्लिम संत हुए हैं, जिनका बहुत कम उल्लेख मिलता है। उनके विषय में या तो हम जानते ही नहीं अथवा बहुत कम जानते हैं। इसको दृष्टि में रखकर हम यहां प्रसिद्ध मुस्लिम संतों के जीवन के कुछ विशेष प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत कर रहे हैं--

महात्मा जाफर बहुत प्रसिद्ध संत थे। कुरान के गूढ़ तत्वों को समझाने में वे अद्वितीय थे। उनका सारा जीवन त्याग और तपस्या में ही बीता। यही कारण था, लोगों की उनमें अगाध श्रद्धा थी।

उस समय अरब का खलीफा मंसूर था। जब उसने महात्मा जाफर की अत्यधिक प्रसिद्धि सुनी, तब उसे उनसे बड़ी ईर्ष्या हुई और उसने उन्हें मारने के लिए पकड़ मंगवाया। सभी दरबारियों ने खलीफा को ऐसा कुकर्म न करने की चेतावनी दी, पर अभिमानी खलीफा न माना।

किंतु जैसे ही तपस्वी सादिक आये, उनके तेजस्वी मुखमंडल का न जाने खलीफा पर क्या प्रभाव पड़ा कि वह अपनी सुध-बुध ही भूल गया। उसने बड़े आदर के साथ उनका स्वागत-सत्कार किया। उन्हें ऊंचे आसन पर बिठाया और स्वयं नतमस्तक हो उनके सम्मुख बैठा। सभी दरबारी, खलीफा के इस परिवर्तन पर आश्चर्यचकित थे।

आखिर खलीफा ने महात्मा सादिक से पूछा, "मैं आपकी क्या सेवा करूं?"

सादिक बोले, "बस, आगे से कभी मुझे बुलाकर मेरे तप में खलल न डालना।"

तपस्वी की इस बात से खलीफा बड़ा लज्जित हुआ। उसने उनसे क्षमा मांग ली और उन्हें आदरपूर्वक विदा किया।

दी हुई चीज

एक बार एक व्यक्ति के रुपयों की थैली

गुम हो गयी। उसने गलती से महात्मा सादिक को चोर समझकर पकड़ लिया। सादिक ने उस व्यक्ति से पूछा, "तुम्हारी थैली में कितने रुपये थे?"

"एक हजार।" उसने उत्तर दिया।

सादिक ने इतने ही रुपये अपनी ओर से उस व्यक्ति को दे दिये। कुछ समय बाद असली चोर पकड़ा गया, तब वही व्यक्ति सादिक के रुपये लौटाने आया। तपस्वी ने यह कहकर, "मैं दी हुई चीज वापस नहीं लेता", अपने रुपये लेने से इनकार कर दिया।

उपकार

अबुस्मान हयरी खुराशान के निवासी थे। उनका जन्म एक ऊंचे घराने में हुआ था, किंतु बचपन से ही ईश्वर में आस्था होने के कारण उनका मन सांसारिक कामों में नहीं लगता था। उन्होंने अपना पूरा जीवन खुराशान में धर्म-प्रचार करने में बिताया।

उनके बचपन की एक घटना है। एक बार वे मदरसा (स्कूल) जा रहे थे। उनके तन पर कीमती कपड़े थे। रास्ते में उन्हें एक गधा दिखायी दिया, जिसकी पीठ पर एक गहरा घाव था और कुछ कौए उसमें अपनी चोंचें मार रहे थे। देखकर उन्हें बड़ी दया आयी। उन्होंने अपनी पगड़ी उतारकर उसके घाव पर बांध दी और अपना कीमती शाल उसे ओढ़ा दिया।

चित्त-निरोध

एक दिन एक व्यक्ति ने उनसे पूछा, "महाराज, मेरी जबान तो ईश्वर का जाप करती है, पर मन इस ओर नहीं लगता। मैं क्या करूं?"

अबुस्मान ने उत्तर दिया, "भाई, तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि एक इंद्रिय वश में आ गयी। जब एक इंद्रिय वश में हो गयी, तब एक दिन मन भी वश में होगा ही!"

मां की सेवा

एक बार एक युवक मक्का की यात्रा के बाद महात्मा अबुस्मान से मिलने आया। उसने उन्हें सलाम किया, पर उन्होंने उसका सलाम मंजूर नहीं किया और बोले, "तुमने यह यात्रा अपनी मां को दुःखित अवस्था में छोड़कर की है। अतः तुम्हें इसका फल नहीं मिलेगा।"

महात्मा की यह बात सुनकर उस युवक को बड़ा पश्चात्ताप हुआ। वह तुरंत वहां से लौटकर अपनी मां की सेवा में जुट गया। कुछ समय बाद अपनी मां का देहांत हो जाने पर वह वापिस अबुस्मान के पास आया। उन्होंने बड़े स्नेह से उसे अपने पास रख लिया। आगे चलकर वह युवक उनका प्रिय शिष्य हुआ।

दान का नतीजा

महात्मा अब्बास बड़े ज्ञानी और वैरागी थे। तत्वज्ञान में तो वे सिद्धहस्त थे। वे अपना पेट टोपियां सींकर पालते थे। वह एक टोपी की सिलाई के दो पैसे लेते, जिनमें से एक पैसा किसी जरूरतमंद को दान देकर दूसरे पैसे से अपना निर्वाह करते थे।

तपस्वी अब्बास का एक धनवान शिष्य था। उसने अपने धन में से कुछ हिस्सा दान के लिए अलग रख छोड़ा था, किंतु दान की विधि नहीं जानता था। इस संबंध में अपने गुरुदेव से पूछने पर उसे उत्तर मिला, "दान सदा सुपात्र को देना चाहिए।"

"जाओ, जो आदमी तुम्हें सबसे पहले मिले, यह मोहर उसी को दे देना।"

धनी शिष्य ने वह मोहर सबसे पहले मिले आदमी को दे दी और यह देखने के लिए कि वह व्यक्ति क्या करता है, उसके पीछे हो लिया। उस व्यक्ति ने एक सुनसान जगह पर जाकर अपनी झोली खोली और उसमें से एक मरे हुए पक्षी को निकालकर बाहर फेंक दिया। यह देखकर उस धनी पुरुष को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उस व्यक्ति के पास जाकर बोला, "क्यों भाई, यह तुमने क्या किया?" वह व्यक्ति बड़ी दीनता से कहने लगा, "मेरे घर के लोग सात दिन से भूखे हैं। भीख मांगना मुझे कतई पसंद नहीं। अतः विवश होकर मैंने यह मरा हुआ पक्षी उठा लिया था। अब जबकि मुझे आपने एक मोहर दे दी, मुझे इस पक्षी की कोई जरूरत नहीं।"

यह सब बातें उस धनिक ने लौटकर अपने गुरु को कह सुनायीं। सुनकर अब्बास अपने शिष्य को समझाते हुए बोले, "तुमने अपना धन अवश्य गलत तरीकों से कमाया होगा, तभी तुम्हारे दान का गलत नतीजा निकला। न्याय से कमाये हुए मेरे इस धन ने एक गरीब आदमी को गलत राह से बचा लिया।"

—मसीतवाली गली, ऊना
(हिमाचल)

वह कौन थी?

न्यायमूर्त्ति एच. आर. खन्ना ने एक मुकद्दमे का जिक्र किया कि किसी मुकद्दमे के दौरान प्रतिवादी पक्ष के वकील ने एक गवाह को सवाल पूछकर कुछ इस तरह परेशान किया—

वकील : क्या यह सच है कि आप एक औरत के साथ रहते हैं?

गवाह : जी हां, यह सच है।

वकील : लेकिन, वह आपकी पत्नी नहीं है।

गवाह : जी हां, वह मेरी पत्नी नहीं है।

वकील : वह आपकी मां भी नहीं है।

गवाह : जी हां, वह मेरी मां नहीं है।

वकील : वह आपकी लड़की भी नहीं है।

गवाह : जी, वह मेरी लड़की नहीं है।

वकील : न ही आपकी बहन?

गवाह : जी नहीं?

यहीं पर वकील ने सवाल-जवाब बंद करते हुए कहा 'मुझे और कुछ नहीं पूछना।'

तभी न्यायधीश ने गवाह से पूछा "आखिर वह है कौन?"

गवाह : जी, वह मेरी दादी है।

—श्याम शर्मा

खून और खून में अंतर होता है

• **निरंजन वर्मा**

उन दिनों मैं मध्य भारत - विधान-सभा में विरोधी दल का नेता था। बात सन १९५४-५५ की है। उस समय चंबल के बीहड़ क्षेत्र के डाकू-सरदार मानसिंह की चर्चाएं विदेशी पत्रों तक में होती रहती थीं।

उस क्षेत्र के इतिहास से मैं परिचित था। मुगल शासक भी उस पर अपना पूर्ण प्रभाव स्थापित नहीं कर पाये थे। यही नहीं, मराठा शासकों तक को इस क्षेत्र ने चुनौती दे रखी थी, पर ग्वालियर के शासक माधवराव सिंधिया ने उन पर बड़प्पन की छाप बैठाकर, उन्हें चंदेरी की जरीयुक्त पगड़ी और दुपट्टे की भेंट दे-देकर अपनी राज-भक्त प्रजा बना लिया था।

राज्यों की समाप्ति के पश्चात इन लोगों की गतिविधियों में फिर वृद्धि हो गयी थी। कांग्रेस सरकार ने इस बागी मनोवृत्ति का पता लगाने और उसे दूर करने के लिए ग्वालियर के एक कांग्रेसी नेता की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया था। तत्कालीन एक आइ. ए. एस. कलक्टर श्री ओक उसके सचिव नियुक्त किये गये थे।

कमीशन ने उस क्षेत्र का दौरा किया और कुछ तथ्यों पर प्रायः समझौता होने-वाला ही था कि एकाएक बात बिगड़ गयी। बात यह हुई कि जब कमीशन एक गांव में चारपाई पर बैठकर गवाहियां ले रहा था, उसी समय एक हरिजन नेता वहां आ गया। वह वहीं एक खाट पर बैठ गया। बस, संवेदनशील ठाकुर उस स्थान से उठकर चले गये। कहने की आवश्यकता नहीं कि कमीशन को क्षेत्रीय जनता का पूरा सहयोग नहीं मिला और उसकी रिपोर्ट केवल खानापूरी बनकर रह गयी।

विधान-सभा में चर्चा

मानसिंह की ख्याति काफी फैली होने के कारण विधान-सभा में भी वह प्रायः चर्चाओं का विषय रहा करता था। उन चर्चाओं में, मैं भी कभी-कभी भाग लेकर अपने सुझाव देता था।

मानसिंह के विषय में यह ज्ञात था कि वह चंबल के घनघोर बीहड़ों में, संगीनों के घेरे में दोपहर के भोजन के पश्चात लेटकर, दैनिक समाचार-पत्रों को बंचवाया करता था। इस प्रकार उसे विधान-सभा की कार्यवाहियों का पता चलता रहता था।

विधान-सभा में हमारा दल सरकारी मान्यता प्राप्त विरोधी दल था। उसमें भिंड जिले के लहार राज्य के राजा साहब श्री

सम्मिलित थे। उनका मानसिंह के यहां कभी-कभार आना-जाना रहता था।

एक दिन उसने राजा से पूछा, "राजा! ये निरंजन वर्मा को है?" राजा ने मेरा संक्षिप्त परिचय दे दिया। इस पर उसने कहा, "जा नेता को हमारे पास तो कभी ले आउ।"

सबका खून एक-सा नहीं

जब राजा साहब की मानसिंह से बातचीत हो रही थी, तब एक नवयुवक शिक्षक रोता हुआ मानसिंह के सामने लाया गया। उसे दो डाकू पकड़े हुए थे। आते ही वह मानसिंह के पैरों पर गिर पड़ा।

यह शिक्षक किसी कम्युनिस्ट खेमे में पला, पास के किसी ग्राम के ब्राह्मण का पुत्र था। सफेदपोश होने के कारण मालदार समझकर डाकू उसे पकड़ लाये थे। उसके गिड़गिड़ाने पर मानसिंह ने उस पर दया दिखलायी और उसके साथ कोई क्रूर व्यवहार न किये जाने का आदेश दिया। अगले दिनों में डाकू-दल उसे अपने साथ अवश्य लिये फिरता रहता था। शायद कुछ फिरौती की इच्छा रही हो।

कभी-कभार मानसिंह उससे भी समाचार-पत्र पढ़वाया करता था। अतएव मानसिंह के पास आते-जाते वह कुछ-कुछ भय-मुक्त और ढीठ हो चला था। उसे वह 'दाऊ' कहकर भी पुकारने लगा था। वामपक्षी झुकाव का था ही वह, अतएव उसने एक दिन मानसिंह से पूछा, "दाऊ! ब्राह्मण, ठाकुर, कोरी, चमार सब में एक-सा ही खून

मानसिंह

है, फिर आप इनमें भेद-भाव क्यों करते हो?"

दाऊ ने उत्तर दिया, "खून तो सब में एक-सो लाल रंग को है, पर उनमें फरक जरूर है। वो फरक हम सूरत देख के चीन्ह लेत हैं।"

शिक्षक ने कहा, "अरे दाऊ! इसी फरक ने तो देश का सत्यानाश कर रखा है।"

मानसिंह ने कहा, "मास्टर! जब खून एक-सो होत है, तब कोई कायर और कोई मरद काहे होत है?" (क्यों होता है?)

"ये फरक तो आप बूढ़े, पुराने लोगों ने बना रखा है," शिक्षक ने कहा।

मानसिंह ने उसके चेहरे की ओर आंखें गड़ाकर कहा, "तो तू जे फरक देखन चाहे है। तो हम तोकों काहू दिन बता देंगे।"

बात समाप्त हो गयी और मास्टर चला गया। उसी दिन से डाकुओं की आपस की गुप-चुप बातचीत से शिक्षक को पता चल गया कि दाऊ उससे नाराज हैं और कुछ अनिष्ट होनेवाला है। बस उसी

वक्त से उसका खाना-पीना छूट गया।

एक दो दिन बाद चंबल के बीहड़ों में डाकुओं का मुकाबला करने के लिए भारत-प्रसिद्ध 'ऋेक कंपनी' भेजी गयी। डाकू-दल भी मुकाबला करने को तैयार हो गया। ऐसे समय में प्रायः फिरोतीवाले व्यक्ति को साथ नहीं रखा जाता। अतएव कुछ डाकू उस शिक्षक को आदेश के लिए मानसिंह के पास ले आये।

मानसिंह ने उसे देखकर समझ लिया कि यह वही खून के फर्कवाला शिक्षक है। उसके आते ही मानसिंह ने कहा, "मास्टर! आज खून को फरक देख लेउ।" संगीनों को मोरचों पर लगी हुई देखकर मास्टर के होश तो पहले ही उड़ चुके थे। शरीर का रंग पीला पड़ गया। मृत्यु साक्षात सामने खड़ी थी।

खून-खून में फर्क

मानसिंह ने एक डाकू से कहा, "तो मास्टर को आज निपटाय देउ।" शिक्षक गिड़गिड़ाने लगा। अपने बच्चों और वृद्ध माता-पिता की दुहाई देने लगा।

उसी समय पता चला कि 'ऋेक कंपनी' अपने दूसरे मोर्चे संभाल रही है। अब मानसिंह ने उसके साथ उपहास करना शुरू कर दिया। उसने एक डाकू से कहा, "मास्टर के हाथ में छुरा मारकैं वाको खून निकार लेउ। और अपने हाथ में छुरा मारकैं अपनो खून निकार लेउ दोइ खूनों को पतो मास्टर कूं लग जाय।"

नंगे छुरे को देखकर शिक्षक बेहोश हो गया। उसको चेतना आने पर मान-सिंह ने कहा,' तैंने फरक देख लओ? ते कायर खून ने तेरी आंखें मिचवादीं, औ जाको मरद खून है सो जापै कोई अ नहीं भओ। जोही खून को फरक होत।'

कुछ घंटों के बाद उसे खाना खि कर, उसके मां-बाप और बच्चों से मिल के लिए, हमेशा के लिए छोड़ दिया।

इस घटना को सुनाने के बाद रा साहब ने मुझसे पूछा, "वर्माजी आप द से मिलना चाहते हो क्या?"

मानसिंह से मिलने की निश्चय मेरी बहुत इच्छा थी, अतः मैंने उन प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

शाम को मैंने तत्कालीन गृह-मं श्री नरसिंह राव दीक्षित से इसका जि करते हुए कहा कि मैं मानसिंह से मिल चाहता हूं। दीक्षितजी ने मना तो न किया पर सावधान अवश्य ही किया डाकुओं से मिलने में एक ही खतरा कि वे जरा सा-शक होने पर गोली म देते हैं। मुझे इसका रत्तीभर भी सं नहीं था। मैं उस बहादुर वृद्ध से मिल का कार्यक्रम बना ही रहा था कि चला, मानसिंह को धोखे से मार डा गया है।

—विदिशा (म.प्र

नम्रता के बिना सद्गुणार्जन है; क्योंकि ईश्वर नम्र हृदयों में निवास करता है।

—इरेस

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

मौत से लड़ाई कब तक

मंजु कुमारी, मुजफ्फपुर : मैं २२ वर्षीया छात्रा हूं। तीन साल पहले अचानक किसी हादसे ने मुझे आत्महत्या के लिए मजबूर किया था, तब मैंने कांच के टुकड़े बारीक बनाकर पानी के साथ खा लिये। डेढ़ वर्ष से मैं काफी परेशान हूं; स्वास्थ्य दिन ब दिन गिर रहा है, पर जीने की इच्छा प्रबल हो रही है, लगता है।वही कांच, पूरे शरीर में कांटों की तरह चुभ रहा है। छाती-दर्द और पेट-दर्द का एक चक्र-सा चलता रहता है। मैं घुट-घुटकर मौत की गिरफ्त में आ रही हूं . . . मैं मरना नहीं चाहती। डॉ. साहब ! जीने का कोई उपाय बतायें।

आपने जो कांच के टुकड़ों के चुभने की बात लिखी है, वह कोरा भ्रम है। कांच के टुकड़े तो मल के द्वारा निकल ही चुके थे। हां, आप मानसिक रूप से विक्षिप्त रहती हैं, और पहले ऐसी ही चिंता के कारण आत्महत्या का प्रयास कर चुकी हैं। आप पर आपकी कुछ घटनाएं हावी हो रही हैं, जो कि आपको भयभीत करती हैं। आपको उनसे मुक्ति पानी होगी। या तो किसी विश्वसनीय व्यक्ति से मन का बोझ बांटें अथवा किसी मनोचिकित्सक से मिलें। मृत्यु की बात मन से निकाल दें।

पत्नी को भूल गया

राजकिशोर गोस्वामी, दतिया : मैं पच्चीस वर्ष का हूं, सिंचाई विभाग में काम करता हूं। मेरी एक शिकायत है कि मैं किसी भी वस्तु को कहीं भी रखकर भूल जाता हूं और घंटों सोचने के बाद ही याद कर पाता हूं। पिछले दिनों मैं अपनी पत्नी को साथ लेकर रोग के इलाज के लिए ग्वालियर गया और वापस आते समय उसे वहीं भूल आया। घर आकर जब बच्चों ने मम्मी के बारे में पूछा, तब मैं पुनः पत्नी को लेने (दतिया से ग्वालियर) गया। मेरा कोई इलाज बताइए?

भूलने की प्रवृत्ति प्रायः अंतर्मुखी व्यक्तित्व के लोगों में होती है तथा वे हर समय अपने ख्यालों में ही खोये रहते हैं, फिर भी प्रायः देखा गया है कि जिस वस्तु के प्रति हमारी रुचि है, उसे हम नहीं भूलते। लगता है, आप पत्नी के प्रति उपेक्षा-भाव रखने लगे हैं। अतः आपको इस ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए तथा

अपने आपको सिर्फ ख्याली दुनिया के हवाले नहीं करना चाहिए। 'याद' सही करने की अभी तक कोई ऐसी दवाई नहीं, है। विटामिन 'बी कांपलैक्स' की कमी से भी कभी-कभी यह लक्षण देखे जाते हैं। आप संतुलित भोजन करें।

परेशान मन

अ. ब. स., नेपाल : मेरी आयु सोलह वर्ष की है। मैं हर समय प्यार की बातें सोचता हूं। यह भी सोचता हूं कि जिससे विवाह करूंगा, वह कैसी होगी! मन परेशान रहता है, जिससे पढ़ाई नहीं कर पाता। डॉक्टर साहब, कृपया कोई उपाय सुझायें।

इस उम्र में यह खयाल सहज ही आते हैं, लेकिन स्वयं पर नियंत्रण रखें तथा सोच लें कि बिना पढ़ाई व किसी रोजगार के कोई भी लड़की जीवन में नहीं आ पाएगी। इस उम्र में ही पढ़-लिखकर अपने कैरियर का चुनाव करने की जिम्मेदारी हर छात्र पर होती है। आप यदि सिर्फ ख्यालों में खोये रहेंगे, तो औरों से पिछड़ जाएंगे तथा हीनता की भावना के शिकार हो जाएंगे।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

डरावनी शक्ल कैसे ?

एम. एच. कमाल, चंपारण : पिताजी को दौरे पड़ते हैं, दौरा पड़ने से पहले वह दिमागी उलझन व तनाव महसूस करते हैं ... उनकी यह हालत मुझे बहुत परेशान करती है। इधर पिछले तीन वर्षों से मैं भी परेशान हूं। सब कुछ व्यर्थ-सा लगता है। लगता है, एक इतिहास दोहराया जा रहा है। जबड़ा बैठा जा रहा है, जीभ सटी-सटी-सी है, आवाज लटपटाकर निकलती है। इसकी वजह से या तो धीरे बोलता हूं या बहुत तेजी से, हालांकि मैं काफी खूबसूरत था, पर अब मेरी शक्ल डरावनी होती जा रही है, क्या करूं ?

जो लक्षण आपके पिताजी के दौरे के आपने लिखे हैं, वह मिर्गी के हैं। आपके पिता की दशा का आप पर अप्रत्यक्ष रूप से काफी प्रभाव है। उनकी इस स्थिति का इलाज संभव है। आप अपने पिताजी का इलाज करवायें, ताकि आपको इस तनाव से मुक्ति मिले।

आपने इतिहास दोहराने की बात लिखी है, उसे DEVAJU PHENOMENON कहते हैं। आप भी स्नायुरोग विशेषज्ञ के पास जाएं और ई. ई. जी. करवायें। शेष लक्षण डिप्रेशन के ही हैं।

घरेलू उपचार

मूत्र-स्तंभ (मूत्र-अवरोध)

मूत्राशय में मूत्र संचित हो, किंतु विशेष कारण से निकल न सके, इस कारण बेचैनी, तंद्रा, मूर्च्छा, आदि होने लगती है। पेट में अफारा आने लगता है और रोगी को घबराहट होने लगती है। मूत्र त्याग करने की इच्छा होते हुए भी मूत्र बाहर नहीं आता है।

इसके लिए निम्नलिखित उपचार करना चाहिए—

(१) टब में गरम पानी भरकर रोगी को कमर तक बैठायें।

(२) कलमी शोरा को पानी में घोलकर उसमें कपड़ा भिगोकर मूत्राशय पर रखें।

(३) कंबल से मूत्राशय पर सिकाई करें।

(४) मिट्टी ५० ग्राम, कलमी शोरा १० ग्राम मिलाकर पानी में घोलकर मूत्राशय पर लेप करें।

(५) आंवले के चूर्ण को पानी में पीसकर नाभि के चारों ओर लेप करें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा,
बी-५/७, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

मृत-सा महसूस करना

ओमप्रकाश गोयल, बांकुड़ा (प. बंगाल): मेरी उम्र तेईस वर्ष है। माता-पिता की इकलौती संतान हूं। पिछले तीन वर्षों से बेहद तकलीफ में हूं ... हर वक्त लगता है, मैं नहीं हूं। खासकर ऐसा लगता है कि शरीर का ऊपरी भाग नहीं है .. अचानक सब कुछ भूल जाता हूं ... कुछ याद नहीं रहता। एकदम मृतक-जैसा हो गया हूं। शाम के बाद, रात को तो सारा वातावरण बहुत अजीब लगता है। डॉक्टर साहब, कृपया कुछ सुझायें!

आपने जो विवरण दिया है—इसे 'डि पर्सनलाइजेशन सिंड्रोम' कहा जाता है। आप अपने व्यक्तित्व से कभी भी प्रसन्न नहीं थे तथा दूसरों का व्यक्तित्व आपको प्रभावित करता रहा। आपमें आत्मविश्वास की कमी तथा हीनता उत्पन्न होने लगी। ऐसी मनःस्थिति से ही आप इस दशा को पहुंचे हैं। इसका इलाज शीघ्र करायें, अन्यथा यह गंभीर रोग बन सकता है। इलाज के लिए शारीरिक व्यायाम, तेल-मालिश, दौड़ व अन्य लोगों के साथ खेल, स्वीमिंग आदि में भाग लिया करें। हीनता की भावना से स्वयं उबरने की कोशिश करें, ताकि आपमें आत्मविश्वास जगे।

वह परिश्रम, जिससे कोई उपयोगी फल न निकले, नैतिक पतन का कारण होता है। —जॉन रस्किन

अमरीका में युवा रचनाकार कठिनाइयों के बीच

जेनी एने का पता :
JAYNE ANNE PHILLIPS,
68, WELD HILL STREET,
JAMAICA PLAIN,
MASS. 02130. U.S.A.

जेनी एने फिलिप्स—अमरीका की नयी पीढ़ी की एक अग्रणी लेखिका। गौर वर्ण, छरहरा बदन, किशोरियों-जैसी अल्हड़ता। वह लेखिका कम, कॉलेज-छात्रा अधिक लगती हैं, शायद उम्र के कारण। उन्होंने जीवन के अभी उनतीस-तीस वसंत ही देखे हैं।

पिछले दिनों वह 'कादम्बिनी'-कार्यालय में संपादकजी से मिलने आयी थीं।

जेनी यों तो मूलतः कथाकार हैं, पर वह कविताएं भी लिखती हैं। इस प्रश्न के उत्तर में कि 'क्या लेखन-प्रतिभा आपको विरासत में मिली है या अपने परिवार में आप पहली लेखिका हैं?' जेनी ने हमें बताया कि 'मेरी दादी चुपके-चुपके कविताएं लिखा करती थीं। वैसे अपने परिवार में मैं पहली लेखिका हूं।'

"एक कहानी आप कितने दिनों लिख लेती हैं?"

"एक या दो पृष्ठ की कहानी लिखने के लिए दो सप्ताह से चार सप्ताह का समय लग जाता है। मैं एक-एक वाक्य, एक-एक शब्द पर ध्यान देती हूं। कहानी लिखने के बाद मैं उसे छह मास के लिए रख देती हूं। छह मास बाद उसे फिर पढ़ती हूं।"

"अमरीका में किसी लेखक को, एक रचना या कहानी पर कितना पारिश्रमिक मिल जाता है?"

"यह रचना की लंबाई और लेखक के यश पर निर्भर करता है। जैसे 'न्यूयार्कर' 'अटलांटिक' पत्रिकाएं प्रसिद्ध लेखक को, नये लेखक की तुलना में काफी ज्यादा पारिश्रमिक देती हैं। यह राशि डेढ़ हजार से दो हजार डॉलर तक हो सकती है। कमर्शियल (व्यावसायिक) पत्रिकाएं लेखक

को ज्यादा पारिश्रमिक देती हैं।

"छोटी और स्थापित पत्रिकाएं पचास डॉलर तक देती हैं। कुछ पत्रिकाएं तो लेखकों को कुछ नहीं देतीं।"

"क्या अमरीका में कोई लेखक केवल लेखन पर ही जीवित रह सकता है?"

"बहुत कम लेखक हैं, जो केवल लेखन के बल पर ही जिंदा हैं। मैं इस मामले में भाग्यशाली हूं, क्योंकि मैं बोस्टन यूनिवर्सिटी में कथा-लेखन का प्रशिक्षण देती हूं। इसलिए मुझे लेखन के सहारे जीवित रहने की आवश्यकता नहीं है। आम तौर पर अमरीका में युवा रचनाकारों को काफी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

"'न्यूयार्कर'-जैसी पत्रिकाएं प्रयोगवादी रचनाओं को जरा भी स्थान नहीं देतीं। यों, आज अमरीका में प्रयोगवादी रचनाएं काफी अच्छी लिखी जा रही हैं। कुछ पत्रिकाएं प्रेम, सेक्स, आदि विषयों पर एक पंक्ति भी नहीं छापतीं। वे 'क्लासिक' रचनाओं के प्रकाशन पर ही जोर देती हैं। तात्पर्य यह कि वे परंपरागत रीति से निश्चित 'आदि' और निश्चित 'अंत' वाली रचनाएं ही प्रकाशित करती हैं।"

"अमरीका के युवा रचनाकार अपनी पुरानी पीढ़ी से कितने प्रभावित हैं?"

"यह व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करता है। अपनी रचनाओं के बारे में मैं कहूंगी कि उनमें कहीं जिंदगी का अतीत झांकता है, तो कहीं वर्तमान। पाठक इन पात्रों में स्वयं को खोज लेता है।"

अमरीकी कहानी

संतुष्टि

● जेनी एने फिलिप्स

वह मेरी सबसे अच्छी मित्र थी। हम दोनों सप्ताह के अंत में साथ-साथ सोया करते थे। वह शहर में रहती थी। मेरा घर उसके घर से कुछ दूरी पर था। मैं अपने घर में लेटकर भी जागता रहता था तथा उसके पिता को गुसलखाने में आते-जाते देखा करता था और उसकी पदचाप को घर बैठे ही सुना करता था। गलियों में से गुजरनेवाली कारों की रोशनी दीवार पर पड़ती रहती थी।

हालोवीन (होली के त्योहार-जैसा एक त्योहार) में हम बूढ़ों की तरह कपड़े पहना करते थे। वह मेरे मुंह पर कोयला पोत दिया करती थी और अपने मटमैले दांतों को निपोरकर जोर से हंसा करती थी। दक्षिणी छोर की ओर जानेवाली गलियों में से गुजरते हुए, हम अपने चेहरों को अपने हैटों में छिपा लिया करते थे और लंगड़ों की तरह टांग घसीट-घसीटकर और उचककर चला करते थे। तंग गलियों में औरतें, जिनके बाल चौकोर कपड़ों में बंधे होते थे, बचे-खुचे खाने को अपने कूड़ा डालनेवाले थैलों में डाला करती थीं। वहां केवल प्रकाश की छाया ही दिखायी देती थी। हम बेरूरी की बंद

दुकानों की खिड़कियों पर साबुन के झाग फेंका करते थे। मैंने उन बेकरी चलाने-वाली औरतों के नाम भी नोट किये थे। उनके नाम थे—विथिलिमिना, चौराल्टे वैरा मैक। इन औरतों के गालों पर तरह-तरह के धब्बे थे तथा उनकी स्कर्ट्स में सेफ्टीपिन लगे हुए थे। मरफी की दुकान में जो रेकॉर्ड्स लगे रहते थे, उनके विज्ञापनों में जिन औरतों की तसवीरें होती थीं, उन्हें हम बहुत गौर से देखा करते थे। हम उन लड़कियों को भी घूरा करते थे, जो लिपस्टिक के विज्ञापन के लिए होंटों पर लिपस्टिक पोतकर लिपस्टिक का प्रदर्शन किया करती थीं और उनकी आंखें घूरती हुई-सी प्रतीत होती थीं।

अब ठंड हो चुकी थी। पुरानी बेकरी से परे, घर अब और दूर हो चुके थे। कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया था। उन्होंने हमारी ओर भागना शुरू कर दिया, लेकिन उनके गले में बंधे पट्टों से उन पर काबू पा लिया गया। हमें उनसे भय लग रहा था, लेकिन जब उनके गलों में पड़े पट्टों को अचानक खींचा गया, तब वे चुप हो गये। झाड़ियों के समीप एक घर में से एक रेडियो से एक 'गॉसपल शो' की आवाज आ रही थी। रेडियो कह रहा था—'मेरे भाइयो और बहनो! एक 'बैनर' के नीचे आ जाओ, हर रास्ता क्राइस्ट से जाकर मिलता है। तुम जो भी प्रार्थना करते हो, जीसस उसे अपने मधुर अंधकार में अवश्य सुन लेता है।'

एक बूढ़ी औरत कुरसी पर बैठी कुछ-कुछ ऊंघ रही थी। और यंत्र-चालित-सी बैठकर रेडियो पर आ रहे 'गॉसपल शो' का अपनी गरदन हिलाकर समर्थन कर रही थी। हम बाहर खड़े होकर टंगे हुए दरवाजे के 'स्क्रीन' से उस औरत को देख रहे थे। अचानक उस बूढ़ी औरत की गरदन उठी तथा उसने हमें हैटों के अंदर छिपे हुए देख लिया।

उस औरत की आंखें उसकी पलकों के काफी अंदर धंसी हुई थीं। वह धीरे-से उठी और मेज को खिसकाते हुए रेडियो पर झुक गयी। रेडियो से आवाज आ रही थी—'हमें हमारा रक्षक, हमारा भगवान (लार्ड) मिले।' दरवाजे पर आकर उसने लकड़ी के एक नुकीले टुकड़े को उठाया तथा मजबूती से पकड़ लिया। हमारे पास कागज के थैले थे। 'क्या है?' 'क्या है?' कहती हुई वह बाहर ऐसे निकली, जैसे कि वहमी बूढ़े करते हैं। उसके शरीर से बासी 'चीज' (पनीर) की-सी दुर्गंध आ रही थी। मैंने देखा, हम असहाय से एक पोर्च में खड़े थे। "कुत्तो, इन दुष्ट खरगोशों को मार डालो" ... वह बुदबुदायी, "... और उन्हें उठाकर इधर ले आओ" ... उसके बाद उसने अपने हाथों से अपने बालों को जोर से झटका दिया और दोबारा घर के अंदर चली गयी। उसके बाल जो नीचे आ गये थे, उनको वह मोड़ रही थी कि उसका थाल नीचे गिर गया। नीले उजाले में खड़ी होकर वह अपने लकड़ीनुमा हाथों

को अपने लंबे बालों में घुमाती रही। वह फिर हमको भूल गयी। और मेज की तरफ बढ़कर फिर प्रार्थना करने लगी —"यह 'लॉर्ड' (भगवान) है। तुम अपने पवित्र हाथों को उठाओ और प्रार्थना करो कि वह हमारी रक्षा करे। उसे सुनने में शर्म न करो, वह भगवान ही तुम्हारी परेशानियों को दूर कर सकता है।" उसने अचेतन अवस्था में अपने हाथों को मक्खन के एक बरतन में डाला तथा तुरंत उनको बाहर निकाला, तब तक उसके हाथ चिकने हो चुके थे। उसके पश्चात शांत भाव से उसने अपने उन्हीं हाथों से अपने बालों में कंघी कर दी। फिर उसने एक नृत्य कर रही, लड़की की तरह अपने सिर को हिलाया और प्रश्न की मुद्रा में खड़ी हो गयी। वह फिर बुदबुदाने लगी, "... 'लॉर्ड' (भगवान) को अपने हाथों में समेट लो। ईश्वर हमेशा तुम्हारे पास है। अगर तुम्हारी आत्मा उसकी शक्ति में घुल जाए, तो मन को अवश्य शांति मिल जाती है।"

मैं खिड़की के साथ छिप गया . . . फिर मैंने खिड़की पर झुककर देखा, वहां कुछ नहीं था। मैंने इबादत की, और कांच पर क्रॉस का निशान बना दिया। इस सबके बावजूद अंदर अब भी बूढ़ी औरत दरवाजे के पास खड़ी थी और हवा की तरह झूल रही थी। (ईश्वर उसकी रक्षा नहीं कर पा रहा था)।

(अनुवाद : प्रभा भारद्वाज)

विडंबना

पक्की सड़क के
कच्चे मकान का सच
तिरस्कृत अट्टहास से
सरसराती कारों की
अबोध विडंबना है

सुरंग

धुंध के आलिंगन में
सड़क
अंतहीन सुरंग बन गयी

आदत

पतझड़ के बाद
पत्तों की चरमराहट का
शोर गूंज रहा है
पैरों को रौंदने की
पुरानी आदत है

गणित

शून्य में मस्तिष्क का गणित
कुछ आज के लिए घटाना
कुछ कल के लिए जोड़ना
अतीत का वर्तमान से भाग देकर
भविष्य का शेषफल निकालना

—रेणु राजवंशी

नवम एशियाई खेलः हार के कारण

हमारे देश में खिलाड़ियों का सम्मान नहीं है

● कृष्णकुमार भार्गव
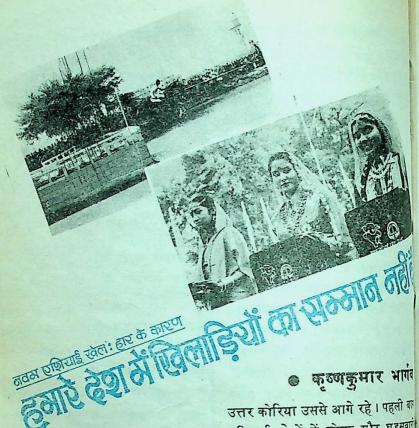
नवें एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन पहले से बेहतर था, लेकिन पदक जीतने के मामले में वे १९७८ के बैंकाक-एशियाई खेलों के मुकाबले पिछड़ गये। विशेषकर एथलेटिक्स में भारत को बैंकाक में आठ स्वर्ण-पदक मिले थे, लेकिन इस बार उसे केवल चार स्वर्ण-पदक मिले। भारत ने ३३ देशों में पांचवां स्थान प्राप्त किया। चीन, जापान, दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया उससे आगे रहे। पहली बार एशियाई खेलों में गोल्फ और घुड़सवारी के मुकाबले कराये गये थे। इन दोनों में ही भारत को उम्मीद से ज्यादा सफलता मिली।

घुड़सवारी में चार में से तीन स्वर्ण-पदक भारत के जांबाज घुड़सवारों ने जीते। इसके अलावा एक रजत और एक कांस्य-पदक भी जीता। चौथा स्वर्ण-पदक कुवैत ने हासिल किया। व्यक्तिगत जंपिंग में कुवैत की तीन किशोरियों ने स्वर्ण, रजत और कांस्य तीनों पदक जीते। पाकिस्तान ने नेजाबाजी का रजत

ऊपर के चित्र: घुड़सवारी-प्रतियोगिता (बायें) तथा पदक लिये युवतियां (दायें)

घुड़सवारी की व्यक्तिगत 'शो जंपिंग' में तीनों पदक जीतनेवाली कुवैती टीम

और इराक ने कांस्य-पदक हासिल किया। गोल्फ में टीम और व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं के स्वर्ण-पदक भारत ने जीते। भारत के गोल्फ-खिलाड़ी को व्यक्तिगत मुकाबलों का रजत-पदक भी मिला। दो कांस्य-पदक जापान ने और एक रजत-पदक दक्षिण कोरिया के खिलाड़ियों ने जीता। फुटबाल, साइकिलिंग वालीबाल, तीरंदाजी, टेबलटेनिस, बास्केटबाल, हैंडबाल, जिमनास्टिक्स और तैराकी में भारत का प्रदर्शन बहुत ही खराब रहा। उसे एक भी पदक नहीं मिला। केवल एक कांस्य-पदक वाटरपोलो प्रतियोगिता में भारत ने जीता।

हार के कारण

भारत पदक जीतने में क्यों पिछड़ा, इसके कई कारण रहे। मास्को ओलंपिक में स्वर्ण-पदक जीतने और फिर एक और प्रतियोगिता में पाकिस्तान को हराने के बाद तथा दो वर्ष की लंबी तैयारी से यह उम्मीद की जा रही थी कि हाकी के फाइनल में भारत पाकिस्तान से जीत जाएगा। पहला गोल भी भारत ने किया। लेकिन उसके बात तो ऐसा लगा, जैसे मैदान में भारत की नहीं, बल्कि नौसिखिया खिलाड़ियों की कोई टीम खेल रही थी।

इस पराजय का सबसे प्रमुख कारण यह था कि जिस प्रशिक्षक ने लंबे समय तक टीम को तैयार किया, उसे एशियाई खेलों से कुछ ही महीने पहले बदल दिया गया। जो खिलाड़ी पूरी तरह से स्वस्थ और तैयार नहीं थे, विशेषकर राजेंद्र सिंह और मीर रंजन नेगी, उन्हें फाइनल में खिलाया गया। मेरविन फर्नांडीज जिनका स्थान नियमित रूप से राइट इन रहता है, उन्हें बदलकर 'लेफ्टविंग' में भेज दिया गया। क्योंकि वहां किसी और खिलाड़ी
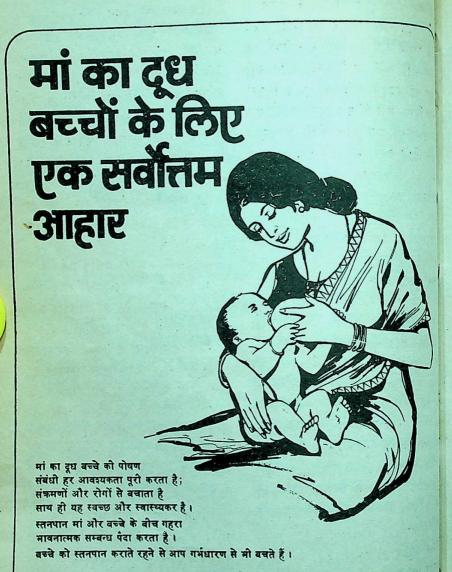
मां का दूध
बच्चों के लिए
एक सर्वोत्तम
आहार
मां का दूध बच्चे की पोषण
संबंधी हर आवश्यकता पूरी करता है;
संक्रमणों और रोगों से बचाता है
साथ ही यह स्वच्छ और स्वास्थ्यकर है।
स्तनपान मां और बच्चे के बीच गहरा
भावनात्मक सम्बन्ध पैदा करता है।
बच्चे को स्तनपान कराते रहने से आप गर्भधारण से भी बचते हैं।
आपका बच्चा जब तक ठोस आहार लेने के
योग्य न हो जाए उसे स्तनपान कराएं।
davp 82/314

को लेना था। सेंटर फारवर्ड के स्थान के लिए कोच और मैनेजर आखिरी समय तक निर्णय नहीं कर पाये। नतीजा यह निकला कि कोई भी खिलाड़ी अपने सही खेल का प्रदर्शन नहीं कर पाया। पूरी टीम बिखर गयी और पाकिस्तान को एक के बाद एक सात गोल करने का खुला मौका मिल गया। जब तक टीम के चयन में पक्षपात चलता रहेगा, पिता और धर्मपिता का बोलबाला रहेगा और खिलाड़ियों को तनाव में खेलना पड़ेगा, तब तक भारत हाकी में कोई आशा नहीं कर सकता।

मुक्का मारते समय दया !

मुक्केबाजी में भारत के लिए कम से कम तीन स्वर्ण-पदक जीतने की आशा की जा रही थी। तीन मुक्केबाज फाइनल में भी पहुंचे, लेकिन केवल एक कौरसिंह ही सफल रहे। विदेशी विशेषज्ञों का कहना था कि भारतीय मुक्केबाजों में जीतने की इच्छा-शक्ति की कमी है। वे हर तरह से दूसरे देशों के मुक्केबाजों से बेहतर हैं, लेकिन शायद मुक्का मारते समय उन्हें कुछ दया आ जाती है। इतनी-सी कमी को वे अगर दूर कर लें, तो एशियाई खेलों में ही नहीं ओलंपिक में भी उनका प्रदर्शन बेहतर हो सकता है।

जमकर मुकाबला नहीं

टेनिस में भारत को स्वर्ण-पदक जीतना चाहिए था। नंदन बाल को वरीयता सूची में पहले नंबर का खिलाड़ी माना गया। लेकिन यहां भी नंदन बाल समेत अन्य भारतीय खिलाड़ी जमकर मुकाबला नहीं कर सके। इच्छा-शक्ति की कमी और अंत तक संघर्ष करते रहने के लिए शारीरिक शक्ति उनमें नहीं थी। महिलाओं की टीम में राष्ट्रीय चैंपियन अनु पेशावरिया को सिंगल्स में नहीं खिलाना बिलकुल भी समझ में नहीं आया। इंडोनेशिया, चीन और दक्षिण कोरिया के खिलाड़ियों ने जिस साहस का परिचय दिया, उसे देखते हुए लगता है कि टेनिस में भारत का भविष्य अंधकारमय है।

शहरी अखाड़े कब तक ?

कुश्ती में भारत के पहलवानों का प्रदर्शन आशा के अनुरूप नहीं रहा। जापान और ईरान ने दस में से सात स्वर्ण-पदक जीते। दो स्वर्ण पाकिस्तान ने लिये। भारत को केवल एक स्वर्ण-पदक मिला। भारत को यदि कुश्ती में अपनी स्थिति सुधारनी है, तो उसे देहातों के अखाड़ों में पहलवानों के लिए आधुनिक सुविधाओं का प्रबंध करना होगा। शहरी अखाड़े ज्यादा समय तक साथ नहीं देंगे। यह बात इन एशियाई खेलों में साबित हो गयी है।

वजन उठाने की प्रतियोगिता में भारत का प्रदर्शन निराशाजनक ही कहा जाएगा। इसमें भारतीय प्रतियोगियों को कठिन परिश्रम की जरूरत है। युवाओं को आगे आना होगा। सबसे अधिक पदक जीतनेवाले चीन के प्रतियोगियों में अधिक-तर या तो छात्र थे या फिर शारीरिक

सौ किलोग्राम वर्ग-कुश्ती में स्वर्ण-पदक विजेता भारतीय पहलवान सतपाल सिंह कुश्ती संघ के संरक्षक श्री कृष्णकुमार बिड़ला को अपना पदक दिखाते हुए

फिलीपींस के ... दंपति मारियाना ... और स्टीव ...
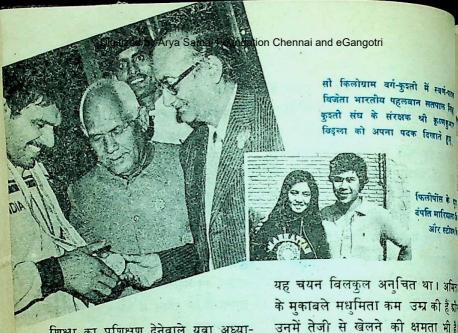
शिक्षा का प्रशिक्षण देनेवाले युवा अध्यापक।

सराहनीय प्रदर्शन

बैडमिंटन में भारत को आशा से अधिक पदक मिले। सैयद मोदी, लेरोय डीसा और प्रदीप गंधे का प्रदर्शन सराहनीय कहा जा सकता है। महिलाओं में कंवल ठाकुर सिंह यदि थोड़ा भी और अच्छा खेलतीं, तो मिक्स्ड डबल्स में रजत पदक मिल सकता था। महिला सिंगल्स में राष्ट्रीय चैंपियन मधुमिता गोस्वामी के स्थान पर अमिता कुलकर्णी को खिलाया गया। यह चयन बिलकुल अनुचित था। अमिता के मुकाबले मधुमिता कम उम्र की हैं और उनमें तेजी से खेलने की क्षमता भी है।

आत्मविश्वास की कमी

एक और महत्त्वपूर्ण कारण, भारतीयों की पराजय का, यह रहा कि खिलाड़ियों में आत्मविश्वास की कमी है। अभी हमारा समाज खिलाड़ियों का सम्मान करना नहीं सीखा है। देश में जब तक हम खिलाड़ियों को सम्मान और प्रश्रय नहीं देंगे, तब तक हम खेल में तरक्की की आशा नहीं कर सकते।

—मनहरण निवास, बी. एच. ४...
शालीमार बाग, दिल्ली-११००३...

नैनसी ऐस्टर ने प्रख्यात पत्रकार विन्स्टेन रेनॉल्डस से कहा, "सुना है, आपने कोई बहुत बढ़िया पुस्तक लिखी है। आप उसे अपने हस्ताक्षर करके मुझे भेंट करें।"

"किताबें इसलिए लिखी जाती हैं कि उनको लोग खरीदकर पढ़ें, न कि वह मुफ्त बांटी जाएं।"

"नहीं! मैं अपने दोस्तों की लिखी हुई किताबों को कभी खरीदती नहीं।"

दूसरे दिन उन्होंने एक पुस्तक पर यह लिखकर भेज दिया, "लेडी ऐस्टर! आपको बधाई कि आपकी लायब्रेरी में यह शानदार किताब रहेगी। वरना आपकी लायब्रेरी तो बोगस किताबों से ही भरी पड़ी है।"

—दुर्गाशंकर त्रिवेदी

विशाल जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 'एशियाड–८२' के उद्‌घाटन का आनंद लेते हुए देश-विदेश के संवाददाता और अन्य लोग।

संसार की पहली सुबह
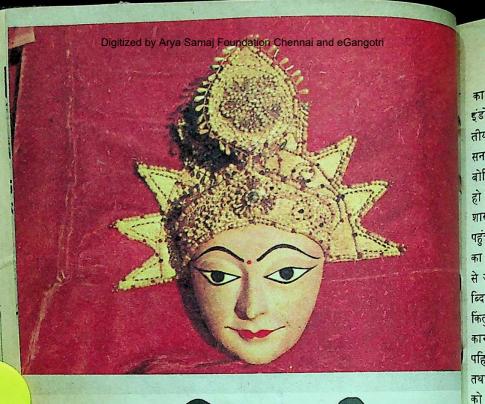
कल्पना कीजिए, पर्वतों से भरे एक नन्हे द्वीप की, जो नारियल एवं ताड़ वृक्षों से आच्छादित है, जिसकी इंच-इंच भूमि पर घने धान के खेत हैं, खेत, जो पर्वतों को समतल कर बनाये गये हैं। इन खेतों को, सागर से मिलने को आतुर जलधाराओं द्वारा बनायी गयी गहरी घाटियां, हर कुछ मील पर विभाजित करती हैं। इस द्वीप में छोटे-छोटे मंदिरों से घिरे, पुआल और फूस के छप्परवाले गांव हैं। फिर कल्पना कीजिए, इस गांव में रहनेवाले निवासियों की, जो सुंदर जाति के लोग हैं। लगता है वे सीधे काठमांडू-घाटी से चले आये हैं—वही नाक-नक्श, वही सुंदर, संतुलित गठी देह! अंत में कल्पना कीजिए—ये लोग हि... और सुंदर नक्काशी किये, बहुमंजि... मंदिरों में, जो पाटन और भाटगांव ... मंदिरों-जैसे ही हैं, पूजा करते हैं। ... बाली है—वह मनमोहक द्वीप, जिसे ... बार जवाहरलाल नेहरू ने 'संसार ... सुबह' कहा था।

इंडोनेशिया गणतंत्र में १३,६७७ ... हैं। इनमें एक है—बाली। दो ह... वर्गमील के क्षेत्रफल एवं तेइस लाख जनसंख्यावाला यह द्वीप देश का दूसरा

का सबसे बड़ा घना बसा द्वीप है। इंडोनेशियाई द्वीप विशेषकर जावा, भारतीय प्रभाव में ईसवी सन १०० में आये। सन ४०० तक पश्चिमी जावा तथा बोर्नियो पर हिंदू राजाओं की सत्ता स्थापित हो चुकी थी और श्रीविजय तथा मातरम् शासनों के साथ इनकी शक्ति शीर्ष पर पहुंच गयी थी। बाली, जावा के हिंदू राज्य का हिस्सा था और मजापहित राज्य के नाम से जाना जाता था। ये राज्य कई शताब्दियों तक सुचारु रूप से चलते रहे, किंतु मुस्लिमों के निरंतर आक्रमणों के कारण अंततः सत्ता-च्युत हो गये। मजापहित के पतन के ही साथ, राजा पुरोहितों तथा कलाकारों सहित अपने समूचे दरबार को साथ लेकर बाली चला गया। इस प्रकार उसने बाली द्वीप में समूची संस्कृति का प्रत्यारोपण किया, जो तब से आज तक फूलती-फलती चली आ रही है। बाली के पंच्चानवे प्रतिशत निवासी हिंदू धर्म के मतावलंबी हैं। परंपरा के अनुसार, बाली में हिंदू धर्म को चार महर्षि लाये—भारत से अगस्त्य तथा मार्कंडेय और जावा से कुतुरान तथा द्विजेंद्र।

आकाश में तैरती मछलियां

हमारा इंडोनेशियाई विमान 'गरुड़' देनपासर हवाई अड्डे पर देर से पहुंचा। विमान उतरते समय खिड़की से बाहर झांकते हुए मुझे ऐसा विश्वास होता रहा कि हम कहीं केरल के आसपास उतर रहे हैं और यह अनुभूति हवाई अड्डे से लेकर आलीशान 'ओबराय बाली बीच' होटल की पंद्रह किलोमीटर की यात्रा के समय और गहरी हुई, जिसमें नारियल के हजारों पेड़ तथा चावल के खेत पड़े। लहलहाते खेतों में, पक्षियों को दूर भगाने के लिए कपड़े के सैकड़ों बिजूके फड़फड़ा रहे थे और नीले आकाश में दो-तीन मीटर लंबी कई पतंगें उड़ रही थीं। ये

पतंगें मछली तथा अजगर की आकृतियों की थीं और ऐसी विचित्र अनुभूति करा रही थीं कि हम समुद्र की तलहटी पर किसी अद्भुत देश में हैं और अपने ऊपर तैरती मछलियों को देख रहे हैं।

बाली इंडोनेशिया के सत्ताइस राज्यों में से एक है। उसके गवर्नर डॉ. इदा मगुस मंत्र विद्वान हैं और उन्होंने ही हाल में भगवद्गीता का बाली भाषा में अनुवाद

किया है । उस शाम जब मैं उनसे मिलने उनके घर जा रहा था, तब मुझे शहर के चौराहे पर एक विशाल और सुंदर शिल्प में ढली, कमल पर खड़ी चतुर्मुख शिव की मूर्ति दिखायी दी । यह मूर्ति बाली-निवासियों के उस रुझान की ओर संकेत करती थी, जिसके अंतर्गत उन्होंने ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव के मूर्ति-प्रतीकों को एकीकृत किया और शताब्दियों तक हिंदू धर्म को एक शालीन तथा अनूठे आदर्श के रूप में विकसित किया

अगले दिन हम वैसाकिह स्थित बाली के पवित्रतम तीर्थ 'मदर टेंपिल' देखने गये । वैसाकिह तीन हजार मीटर लंबे ज्वालामुखी पर्वत माउंट अगुंग (अग्नि) की ढलान पर बसा हुआ है । संपूर्ण इंडोनेशिया में ज्वालामुखी पर्वत तथा पर्वतीय द्वीपों की श्रेणियां हैं । ये ज्वालामुखी समय-समय पर फटते रहते हैं और वस्तुतः, जब हम वहां थे, तब बाली से दो हजार मील की दूरी पर दो ज्वालामुखी फटने की स्थिति में थे । जब मैंने वैसाकिह नाम सुना, तब मैंने अनुमान लगाया कि यह नाम हिंदू मास वैशाख से संबंधित है, किंतु यह हिंदू धर्मग्रंथों में वर्णित महान सर्प 'वासुकि' पर आधारित निकला । वासुकि का उल्लेख करते हुए श्रीकृष्ण ने गीता के दशम अध्याय में कहा है **'सर्पाणां अस्मि वासुकि'**—अर्थात सर्पों में मैं वासुकि हूं । यह विस्मयकारी बात है कि, मेरी जानकारी में, भारत में केवल एक ही स्थान पर वासुकि की पूजा की जाती है, वह स्थान है, जम्मू क्षेत्र का भदरवाह का प्राचीन राज्य ।

मंदिरों में मूर्ति-पूजा

बाली और भारत के मंदिरों में एक प्रमुख अंतर है । बाली में मूर्ति-पूजा नहीं होती, क्योंकि वे ईश्वर के 'अचिंत्य' अथवा 'अव्यक्त' रूप की पूजा में आस्था रखते हैं । यद्यपि स्वयं मंदिर के द्वारों और तीर्थों में द्वारपालों की सुंदर शिल्प में ढली मूर्तियां हैं, किंतु वास्तविक पूजा ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव के द्योतक तीन आसनों की होती है ।

सौभाग्यवश हम मुख्य तीर्थ पर पहुंचे जहां पूजा चल रही थी । लगभग तीन सौ स्त्री, पुरुष तथा बच्चे अनेक किलोमीटर की दूरी से समुद्रतट के गांव से आये हुए थे । महिलाओं ने केशों में फूल गूंथे हुए थे । वे सब प्रांगण में बैठे थे और गांव का पुजारी तथा उसकी पत्नी पूजा कर रहे थे । मंत्रोच्चार तथा पूजास्थली की ओर समय-समय फूल बिखेरने के पश्चात पुजारी ने मिनट तक घंटा बजाया और प्रत्येक व्यक्ति ने सिर पर हाथ जोड़कर पुजारी के प्रार्थना की । इसके बाद पारंपरिक अभिषेक (श्रद्धालुओं पर जल छिड़कना) चरणामृत का वितरण हुआ । तत्पश्चात उन लोगों का दल अपने घर लंबी यात्रा के लिए ढलान से उतरने लगा वैसाकिह मंदिर की मुख्य तीर्थ

वैशाख पूर्णिमा के अवसर पर होती है, जब बाली तथा इंडोनेशिया के अन्य भागों से लाखों लोग वहां पूजा करने आते हैं। सन १९४३ में ज्वालामुखी के फटने से पच्चीस हजार लोगों की मृत्यु हो गयी थी, किंतु आश्चर्यजनक बात यह है कि यह मंदिर उस दुर्घटना से सर्वथा अछूता रहा, केवल प्रवेश-द्वार पर ही कुछ प्रभाव पड़ा। उसकी अब मरम्मत की जा रही है।

'पेडंडा' और 'पामकू'

हर गांव में एक पुजारी होता है, जिसे 'पेडंडा' कहा जाता है और हर तीर्थ-स्थल पर मंदिर का एक पुजारी होता है, जिसे 'पामंकू' कहते हैं। गांव का पुजारी—स्त्री अथवा पुरुष-ब्राह्मण ही होता है, किंतु मंदिर का पुजारी चारों जातियों में से किसी भी जाति का हो सकता है। मंदिर विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं के नाम पर हैं, किंतु मुख्य पूजास्थली में कभी कोई मूर्ति नहीं होती।

अधिकतर गांवों में, बस्तीवाले मैदानों में चौला देवी ब्रह्मा–विष्ण के मंदिर होते हैं तथा श्मशान के निकट शिव-दुर्गा के मंदिर होते हैं। बाली भाषा में मंदिरों को 'पुर' कहा जाता है और वे पवित्र वट-वृक्षों के निकट बनाये जाते हैं, जबकि जावा में हिंदू मंदिरों को चंडी कहा जाता है।

बाली : अतीत का इतिहास

बाली नौ राज्यों में बंटा हुआ था, जिनमें

से एक महाराजा था, जिसका नाम देवी अगुंग कलुंग कुंग था। यात्रा के दौरान हमारा 'गाइड' बाली के राजनयिक विभाग का एक युवा अफसर था, जिसका नाम था परमार्थ केसुमा। उससे बातचीत करते समय मुझे लगा कि बाली भाषा संस्कृत के उतनी ही निकट है, जितनी कि स्वयं कई भारतीय भाषाएं। उनके यहां अभिवादन के लिए 'ओम् स्वस्ति अस्तु', समुद्र के लिए 'सागर', ज्वालामुखी के लिए 'अगुन पर्वत', फूल के लिए 'पुस्प', खाने के लिए 'भोजन', सांड के लिए 'नंदक' तथा गाय के लिए 'नंदिनी' आदि शब्द हैं और सप्ताह के दिवसों के नाम भी संस्कृत पर आधारित हैं। एक रोचक पक्ष, जिससे भारत तथा बाली के सांस्कृतिक संपर्कों की जानकारी मिलती है, बाली भाषाओं में दिशाओं के नामकरण का है। उत्तर, पूर्व तथा दक्षिण के अति-

रिक्त बाली में पश्चिम के लिए 'वराता' शब्द प्रयुक्त होता है। भारत, निस्संदेह, बाली के पश्चिम में पड़ता है।

हिंदू नामों का बाहुल्य

स्वयं 'बाली' शब्द के उद्भव के संबंध में थोड़ा-सा मतभेद है। संभवतः यह 'बलि' शब्द से बना है। इस बात की भी अधिक संभावना है कि इसका संबंध पौराणिक हिंदू राजा बालि से हो। मैं समझता हूं, इसका संबंध पुराणों में वर्णित राजा बलि से भी हो सकता है, जिसे विष्णु के वामन-अवतार ने पाताल में भेज दिया था। जावा तथा बाली, भारत के लिए भौगोलिक दृष्टि से पाताल ही हैं, क्योंकि वे विषुवत् रेखा के धुर दक्षिण में स्थित हैं। बाली और वस्तुतः इंडोनेशिया के अन्य मुस्लिम भागों में भी संस्कृतनिष्ठ नाम पाये जाते हैं। लड़कियों के नाम 'पुष्पावती, 'चंद्रावती', 'कुसुमावती' तथा 'पद्मावती' आदि हैं, जबकि लड़कों के नाम 'महेन्द्र,' 'राजेन्द्र,' तथा 'योग' आदि हैं। बाली में दूकानों के नाम भी इतने आकर्षक हैं कि इन्हें दिल्ली के कनाट सरकस में सहजता से अपनाया जा सकता है। ये नाम हैं—'राज यमुनो,' 'एक लिंग', 'सूर्य कंचना,' 'देवी सीता, ' 'धर्म सूत्र'।

वापसी में हमने कुछ कारखाने भी देखे, जिनमें बाली की उत्कृष्ट कलात्मक वस्तुएं बनायी जाती हैं।

रामायण——लोकप्रिय कथानक

रामायण निस्संदेह, वहां का सबसे लोकप्रिय कथानक है, किंतु बहुत-से प्र… महाभारत से लिये जाते हैं। रामा… निश्चित रूप से अब तक लिखे गये स… धिक प्रभावशाली महाकाव्यों में से… होगा। श्री राम और देवी सीता की क… कथा का प्रभाव संपूर्ण दक्षिण-पूर्व एशि… में गूंजता चला आ रहा है और बाली में… यह पूर्ण वैभव के साथ दिखायी देता है… बाली की कला में, पांडव प्रमुखता के… प्रस्तुत हुए हैं। बाद में जावा में, ह… मुस्लिम 'गाइड' ने एक रोचक बात… यह बतायी कि पांच पांडव मनुष्य… पांच इंद्रियों का, प्रतिनिधित्व करते… माने जाते हैं——नकुल शारीरिक इं… का, सचदेव वायवी इंद्रिय का, अ… इच्छा का, भीम विचार का… युधिष्ठिर बौद्धिक इंद्रिय का। ज… भारत में भीम अपनी शक्ति के… जाना जाता है, वहां इंडोनेशिया में, ते… शताब्दी में भीम की संस्कृति, मनुष्य… बौद्धिक शक्ति के प्रतिनिधि के रू… विकसित हुई। दूसरा प्रसंगांतर यह है… जहां भारत में, शकुनि को, कौरवों… पक्षधर, दुष्ट प्रतिमा के रूप में जाना… है, वहीं इंडोनेशिया में द्रोणाचार्य को… के रूप में वर्णित किया जाता है।… यह जावा राज्य की ब्राह्मण-क्ष… शत्रुता का द्योतक है। जावा के राज… क्षत्रिय वंश का आधिपत्य रहा है।

धार्मिक स्व…
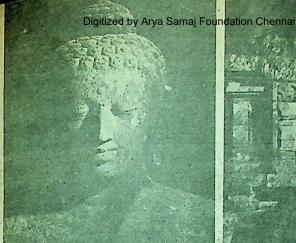
यह रोचक बात है कि यद्यपि इंडोने…

बोरोबोदुर स्मारक
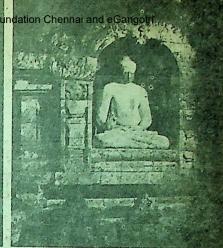
मुस्लिम-बहुल राज्य है, तथापि वहां हिंदू धर्म सहित अन्य धर्मों को पूरी स्वतंत्रता है। वस्तुतः, बाली में हिंदुओं की सांस्कृतिक थाती को विकसित करने के सुनियोजित प्रयास हो रहे हैं। इसमें हिंदू धर्म के अध्ययन के लिए एक संस्थान की स्थापना करना भी सम्मिलित है। इस संस्थान के सोलह सौ छात्र तीन विभागों में विभक्त हैं। ये विभाग हैं—धर्म और संस्कृति, धर्म और समाज तथा धर्म और शिक्षा। इस संस्थान में पूर्व-स्नातक से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक पांच वर्ष का अध्ययन-कार्यक्रम उपलब्ध है और बाली भाषा के अतिरिक्त इसमें इंडोनेशिया भाषा तथा संस्कृत भी पढ़ायी जाती है। शुल्क तथा सरकारी अनुदानों से इसे आर्थिक सहायता मिलती है और इससे भारत तथा इंडोनेशिया के बीच सांस्कृतिक संबंध बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

विश्व के सुंदरतम तट

बाली में विश्व के कुछ सुंदरतम समुद्रतट हैं और इसकी वास्तुकला ने एक दुर्लभ पवित्रता को बचाये रखा है। एक ऊंचे होटल के अतिरिक्त, जिसके लिए अधिकारियों को खेद है, सरकार ने आश्वासन दिया है कि सभी नयी इमारतों को बाली की पारंपरिक वास्तुकला से समरूपायित किया जाएगा।

दो महानतम स्मारक

जहां बाली मनमोहक है—विशेषकर हमारी सांस्कृतिक थाती में रुचि रखनेवाले यात्रियों के लिए, वहीं इंडोनेशियाई द्वीप-समूह के सांस्कृतिक हृदय, जावा में हिंदू वास्तुशिल्प की वास्तविक शोभा विद्यमान है। यह वही जगह है, जहां आठवीं तथा नवीं शताब्दी में हिंदू साम्राज्य स्थापित तथा पुष्पित-पल्लवित हुए और जहां शैलेंद्र तथा संजय ने अपने विशाल राज्य स्थापित किये, और जहां आज भी विश्व के महानतम स्मारकों में से दो स्मारक—'बोरोबोदुर' तथा 'प्रमबानन'

खड़े हुए हैं। पहला विश्व के विशालतम बौद्ध स्मारकों में से एक है और दूसरा, अंगकोर के बाद दक्षिण-पूर्व एशिया का विशालतम हिंदू मंदिर है। ये दोनों तीस वर्षों के अंतराल में बने थे—बोरोबोदुर सन ८२४ में तथा प्रमबानन सन ८५६ में। ये दोनों योगजकार्ता की प्राचीन राजधानी के निकट बने हैं, जहां बाली से हवाई यात्रा द्वारा एक घंटे में पहुंचा जा सकता है।

योगजकार्ता पहुंचने पर तीन विशाल ज्वालामुखी पर्वत-चोटियां दिखायी देती हैं, जिनमें से प्रत्येक चोटी तीन हजार मीटर से भी अधिक ऊंची है। इनमें से सबसे ऊंची चोटी 'महामेरु' हिंदुओं की पवित्र पर्वत-चोटी है। बोरोबोदुर (भद्र विहार), जहां शहर से एक घंटे में पहुंचा जा सकता है, एक मनोहर स्मारक है। यह एक विशाल मंडप के आकार में बनाया गया है और इसमें बुद्ध की ३६८ से कम प्रतिमाएं नहीं हैं। प्रत्येक प्रतिमा घंटे की आकृति के स्तूप में बंद है, जो स्मारक के केंद्र पर वृत्ताकार शृंखला में एक विशाल स्तूप बनाते हैं। चढ़ाई के कई लंबे डग भरकर अंततः सबसे ऊंचे चबूतरे पर पहुंचना होता है, जहां सुखद मंद हवा के झोंके सहलाते हैं और वहां से महामेरु की मनोरम झांकी दिखायी देती है। स्मारक की भव्य ऊंचाई तथा अद्भुत आकृति और इसके चारों ओर बने महाभारत तथा रामायण के चित्र इसे विश्व-स्तर के महत्त्व का बना देते हैं। निरंतर भू[illegible] के कारण नष्ट हुए बोरोबोदुर स्मा[illegible] के पुनर्निर्माण तथा पुनरुद्धार के [illegible] इंडोनेशियाई सरकार को 'यूनेस्को' [illegible] विशेष आर्थिक सहायता दी है।

प्रमबानन मंदिर का प्रांगण [illegible] अर्थों में अधिक मनमोहक है। यह भी [illegible] के आकार में बना है और इसका [illegible] मुख्य मंदिर भगवान शिव को सम[illegible] है तथा सहायक मंदिर विष्णु तथा ब्र[illegible] को समर्पित हैं; पांच छोटे मंदिर [illegible] दर्जनों पूजा-स्थल—सभी एक वि[illegible] प्रांगण में हैं। मुख्य मंदिर अ[illegible] आकर्षक है और तंजावूर के बृहदी[illegible] मंदिर का मुकाबला करता है। यह [illegible] भूकंपों से बुरी तरह नष्ट हो गया था, [illegible] यह सचमुच हर्ष की बात है कि [illegible] नेशियाई सरकार ने इसका कार्यक्रम [illegible] हाथ में लिया है।

महान शंकराचार्य ने भारत के [illegible] कोनों में चार तीर्थ स्थापित करके [illegible] की आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक [illegible] को पुनर्स्थापित और सुदृढ़ किया [illegible] निश्चित रूप से, हमें अपनी ([illegible] आध्यात्मिकता को पूरी पृथ्वी [illegible] पहुंचाने के लिए विश्व के हर [illegible] में चार विशाल हिंदू तीर्थ स्थापित [illegible] चाहिए। और यदि ऐसा हो जाए [illegible] पुनर्निर्मित प्रमबानन निश्चित [illegible] इनमें से एक होगा।

—३, न्याय मार्ग, नयी दिल्ली

कहानी

अपने अपने द्वीप

● कुंथा जैन

सुना था और गुना था कि संसार एक असीम अगाध सागर है। संसार को पार किया है, किसी ने ? किया है तरण-तारण भगवान ने। यह भी कहा जाता है कि उसका आसन और दर्शन, हृदय में झांकने से मिलता है। तब अपने हृदयों में झांककर कितनों ने उन्हें पाया, कितनों ने उनके दर्शन किये ? पता नहीं।

एक अथाह आकुलता अकेलेपन के क्षणों में ऐसे घेर लेती है-जैसे ऐसे सागर में धकेल दी गयी हूं, जिसका आर-पार नहीं। पर अचानक हाथ-पैर समेट, पूरी शक्ति से पानी की तहों को चीरती-धकेलती, सतह पर तैर आती हूं और अपने नन्हे द्वीप की धरती पर पैर टिका, जिंदगी की सांस लेती हूं। अथाह, अगम सागर लरजता है, गरजता है और मैं अपने द्वीप के टिमटिमाते दिये की लौ को हाथ की ओट ले, बलने देती हूं, जलने देती हूं, ज्योतित रखती हूं। यह शक्ति ही भगवान का दर्शन है, शायद !

जाड़ों के दिन थे। दोपहरभर, कुछ देर धूप में, कुछ देर छाया में बैठे-बैठे घर के काम निपटाये थे। अब संध्या होने को थी। अपने नये बने घर की छत पर खड़ी, मुंडेर पर कोहनी टिकाये, खयालों में डूबी हुई थी और इरादा कर रही थी कि जल्दी नीचे उतरूं, कि आसमान में क्षितिज पर डूबता सूरज मेरी निगाहों में जड़ गया।

घोसलों की ओर उड़ते पक्षियों के दल मेरी आंखों में समा, दिल को बांध गये। यह सूरज मेरे द्वीप का है और ये पक्षी मेरे द्वीप के आकाश के। मेरे द्वीप की धरती पर उगे वृक्षों पर ये बसेरा लेने जा रहे हैं। मैं इनसे जुड़ी हूं—इतना सब सोचने के एहसास में क्षण दो क्षण भी न लगे होंगे कि नीचे से आवाज आयी, "बहू, ऊपर ही बैठी रहोगी क्या? सुरेंद्र आता ही होगा। उसे चाय-वाय नहीं पिलानी है?"

मैं जैसे सोते से जागी। सिर पर पल्ला डालते हुए बोली, "आयी जी," और झटपट नीचे उतरी। चाय मेज पर लग चुकी थी—नाश्ता, बेनी महाराज ने बना लिया था। बड़ी ननद, जो इलाहाबाद से आयी हुई थीं, अम्माजी के पास बैठी थीं। छुटकू भय्या कॉलेज से आ चुके थे। सुरेंद्र के आने का इंतजार था। वह आये, चा[illegible] पी गयी, गपशप हुई, फिर मैं और सुरेंद्र अ[illegible] कमरे में चले गये।

हमारे कमरे की सजावट बिलकु[illegible] आधुनिक है। बहुत आरामदायक, बढ़ि[illegible] और शानदार। हमारे कमरे में अपना टी. वी. सैट था, जिसे खोले रखने का सुरें[illegible] को बहुत शौक था। प्रोग्राम जो भी आ र[illegible] हो, टी. वी. ऑन रहे। छुटकू का कमर[illegible] आंगन के पार, सामने था और अम्मा[illegible] का थोड़ी दूर हटकर, दायीं ओर कोने में[illegible] ननदजी अम्माजी के कमरे में ही ठहर[illegible] हैं, जब से बाबूजी गुजरे हैं। वे अप[illegible] जिंदगी में ठेकेदारी से इतना रुपया क[illegible] कर रख गये थे कि बेटे-पोतों को इस दि[illegible] में अधिक संघर्ष की आवश्यकता न पड़े[illegible] सुरेंद्र को तो इंजीनियरिंग करायी थी—सो वे अच्छी, नामी प्राइवेट फर्म में नौक[illegible] करते थे।

उस दिन टी. वी. पर पिछले [illegible] हुए कवि-सम्मेलन के कुछ अंश दिख[illegible] जा रहे थे। सुरेंद्र को कविता से [illegible] लगाव है, इसलिए उनका ध्यान उस [illegible] नहीं था। मैं भी टी. वी. की ओर [illegible] किये, सुरेंद्र के कपड़े अलमारी में [illegible] रही थी, कि यकायक एक स्वर सुना[illegible] मेरे कान खड़े हो गये। एक परिचित [illegible]

कानों में पड़ा और घूमकर देखा, तो एक परिचित चेहरा भी झलका ।

स्वाति के मोती रहें हम
द्वीप के तट पर चमकते
ज्वार की लहरों में उछलें
आ गिरें भू पर दमकते

अनायास मुंह से निकला, "अरे ये तो..."

उसके बाद कमरे में कुछ नहीं हुआ । किसी का ध्यान मेरी तरफ और मेरे कहने पर नहीं गया । कवि-सम्मेलन के बाद, अनेक प्रोग्राम और हुए, पर मेरे दिमाग में वही लाइनें घूम-फिरकर गूंजती रहीं ।

रात को खाना खाकर मैं और सुरेंद्र बाहर टहलने चले जाते हैं । आज भी गये । कभी-कभी यकायक रस में भर आते हैं सुरेंद्र । रास्ते के एक अंधेरे मोड़ पर अचानक मुझे गोद में भरकर भागने से लगे । मैं हक्का-बक्का । सामने से एक अजनबी को आते हुए, और बिजली के खंभे को पास देख, सुरेंद्र ने मुझे गोद से उतार खड़ा किया । मेरे दोनों कंधों पर हाथ रख, सामने खड़े हो बोले, "एक खुश-खबरी है ।"

"क्या ?" मैंने पूछा ।

"इस बार कंपनी के काम से मैं पेरिस जा रहा हूं ।" सुनकर मेरा दिल धक से रह गया ।

शादी हुए केवल डेढ़ साल हुआ था ।

मैं इस बीच में केवल एक हफ्ते के लिए ममी-पापा के पास बनारस हो आयी थी और एक बार दो दिन के लिए बड़ी बहन के पास लखनऊ । उनके लड़के का जनेऊ था । सुरेंद्र भी मेरे साथ वहां गये थे ।

धड़कते दिल को संभालते हुए पूछा, "कब ?"

"बस, एक हफ्ते बाद ।" सुरेंद्र ने उमंग-भरे ढंग से कहा ।

"इतनी जल्दी !"

"मेरा पासपोर्ट तो है ही बना हुआ, करना ही क्या है, थोड़ी बहुत तैयारी ... ।"

"तो मैं ?"

"अरे, तुम अम्मा के पास ! १५-२० दिन लगेंगे और क्या ?"

"क्या मैं बनारस न हो आऊं, इस बीच ? मुझे यहां तुम्हारे बिना . . . ।"

"पगली ! अम्मा हैं, छुटकू भय्या हैं, जीजी और सब । पापा-मम्मी के पास तो

सारी उम्र रही हो। अब यहां भी तो रहना सीखो।" सुरेंद्र ने आंखों में झांकते हुए प्यार से कहा।

इस पूरे डेढ़ साल में मैं ससुराल में रहना सीख गयी थी, पर सुरेंद्र के बिना रहने की सोचकर मुझे अकुलाहट हो आयी। इस घर में मेरी सत्ता सुरेंद्र के चारों तरफ घूमती थी। केंद्र-बिंदु न होगा, तो किसके चारों तरफ समय का चक्कर लगाऊंगी।

सुरेंद्र फ्रांस चले गये। मैंने मन को दृढ़ किया कि सचमुच इसी घर में अपने को रमाऊंगी। अम्मा, जीजी, छुटकू भय्या, सब मुझे प्यार करते थे। घर का काम-काज, अम्मा, ननदजी, और मित्र-बंधुओं का आना-जाना, ताश जमना, सिनेमा देखना, सब व्यस्त रखता। फिर भी संध्या आते-आते एक खालीपन लिपट जाता, तन-मन से। एक अजीब उदासी गहराई में से उठ, उमड़-घुमड़ करती। और, मैंने चेतन स्तर पर जाना कि इस प्रतीति का सीधा संबंध सुरेंद्र के घर पर न होने से हो, ऐसा नहीं था . . . हां, अब वह अनुभूति और अधिक तीव्रता से आकुल करती थी।

सुरेंद्र के वापस आने में पांच दि
शेष थे। इन १०-१५ दिनों ने मुझे, अ
अंतरंग को अकेलेपन में खोजने का
और अपनी अकारण उदासी की चेत
को सजग बनाये रखने का अवसर दिया।
अनमनेपन को सब पर उजागर कर दे
की हिचक भी इस आड़ के सहारे दूर हो
गयी कि जब पति विदेश में हो, तब पत्
का कुछ उदास और खोये रहना अस्वा-
भाविक नहीं है।

पड़ोस का मकान अकसर बंद ही
रहता है। उसके मालिक श्रीमान
श्रीमती अपने परिवार के साथ इंगलैं
के शहर बरमिंघम में रहकर व्याप
करते हैं और हर वर्ष एक बार भा
भी आकर महीना दो महीना गुजा
हैं। मेरी शादी के बाद भी वे दोनों पति-
पत्नी एक बार आये थे। उनका मांजी
साथ बहुत प्रेम-भाव था। काफी आ
जाना रहता था। पिछली बार जब आ
थे, तब मेरे लिए बढ़िया शिफोन की सा
और उससे मैचिंग कॉस्टयूम ज्वेलरी
सैट भी दे गये थे। उनकी लायी हुई ची
को पहनना सुरेंद्र को बहुत भाता है।
भी बताया था सुरेंद्र ने कि उनका
लड़का है, जो बचपन से सुरेंद्र का मि
है। वह अब इंगलैंड में ही किसी कॉले
पढ़ रहा है। यह भी जिक्र किया था
जाने क्यों, उसकी रुचि भाषा-विज्ञा
है और वह वहां रहते हुए भी हिंदी
संस्कृत का अध्ययन गंभीरता से कर

है। पिता व्यापारी हैं, सो बेटे की इस रुचि पर गौरव का अनुभव करते हुए भी, वे सोचते रहते थे कि व्यापार कौन संभालेगा!

अब उस पास के मकान में सफाई हो रही थी। छोटे बाबू आनेवाले हैं, ऐसा सेवासिंह चौकीदार ने बताया। दोपहर को, मांजी ने घर में खास खाना भी बनाने को कहा, क्योंकि कई साल बाद सुरेंद्र का, इंगलैंड में पढ़नेवाला, मित्र अजय आ रहा था। उसके खाने-पीने का इंतजाम एक महीने के लिए हमारे ही यहां रहेगा, क्योंकि वह अकेला ही आ रहा था।

दोपहर को अजय बाबू हमारे यहां खाना खाने आये। मां और जीजी को झुककर प्रणाम किया . . . मुझसे भी बहुत आत्मीयता से नमस्कार किया। बार-बार सुरेंद्र को पूछते हुए, मुझे 'भाभी-भाभी' संबोधित किया। हम प्रथम बार मिले थे, किंतु अजय के आने से घर में एक ताजगी और स्फूर्ति-सी अनुभव हुई। वह बड़ी सहजता से घरभर में घूम रहा था। अपने आप रसोई में आकर मेरे साथ थाली परोसने लगा। गिलासों में पानी भरकर सबको दिया। एक आनंद और रोमांच की लहरें मेरे अंदर हिलोरें लेने लगीं। मेरा सब कुछ हलका हो आया। मैंने महसूस किया कि न सिर्फ मैं, बल्कि, सारा घर-जैसे उसके चारों तरफ की हवा में सांस लेकर खिला-खिला हो आया है।

अगली शाम के लिए हम सबने प्रोग्राम बनाया कि नदी पर चलकर बोटिंग करेंगे। कुछ फल-नमकीन, मिठाई व थरमस में चाय ले जाकर नाव में ही चाय, नाश्ता करेंगे। चाय-नाश्ते की तैयारी कराने अजय चार बजे आ गया। आनन-फानन में सबने मिलकर-जुलकर आधे घंटे में सामान पैक किया और पांच बजे नदी में नाव पर सब पहुंच गये। बारी-बारी से सबने चप्पू हाथ में पकड़े। अजय ने चप्पुओं को साधकर बोटिंग करने का ढंग सिखाया। मांजी ने सूरज छिपते समय भजन गाये। हम सबने कुछ फिल्मी गाने एक साथ मिलकर गाये। अजय ने अंगरेजी गाने सुनाये। नाचते-कूदते, हंसते-खिलखिलाते घर पहुंचे। रात के नौ बजे थे। खाना खाया, गप-शप की। सोते समय मैं बदन से थकी, लेकिन मन में हलकी-फुलकी थी। कब नींद में गुम हो गयी, पता ही नहीं चला।

एक दिन दोपहर को अजय ने अपने हाथ से खाना बनाकर हम सबको खिलाया, अपने घर पर बुलाकर। वहीं बैठे-बैठे शाम की चाय पी। फिर रेकॉर्ड सुने, जिनमें कुछ वे थे, जो अजय इंगलैंड से लाया था और कुछ वे, जो

विशेष भारतीय संगीत के चुने हुए, अजय खरीदकर लाया था, इंगलैंड ले जाने को। अजय ने सबको न जाने कैसे अपने चारों ओर चिपका लिया था। रात को सोते समय मेरी आंखों के सामने दिनभर के दृश्य उभरते-मिटते रहते। संगीत की धुनें गूंजती रहतीं, बातचीत की चहक चिड़ियों-सी सुहानी, अवचेतना में बोलती रहती।

अजय चला गया, सुरेंद्र वापस आये।

जीवन-क्रम अपनी लीक पर वापस हो, चिकनी पक्की सड़क पर शहर की ऊंची उठती इमारतों से घिरा, मोटे कालीनों और डनलप के गद्दों में धंसा, चांदी-सोने की झनझनाती धुन पर अट-पटा नृत्य करता चल पड़ा . . .।

सूरज डूबता है, कि मैं छत पर जा पहुंचती हूं। पैरों में जैसे पंख लग जाते हों। सुरेंद्र के घर वापस आने तक वह अंतराल, मेरा बिलकुल अपना निजी बंधु बन, हाथ खींचकर मुझे छत की मुंडेर के सहारे ला खड़ा कर देता है। सूरज की लालिमा सूरज के गोले से दूर होती-होती फैलती है। धीरे-धीरे हलकी-गुलाबी, फिर हलकी-मंदी होती। सोने की नदी में भरे, गहरे नीले पानी से उभरते हलके नीलाभ, श्वेत पर्वत। पर्वतों के शिखर पर उगते-नन्हे सितारे। और फिर सब गुम हो जाता। टिमटिमाते बस नन्हे-नन्हे सितारे। . . .

पश्चिम की ओर उगता संध्या-सितारा। वह औरों से अधिक चमकीला लगता। उसको अपलक देखते रहना मन को भा गया था। जैसे उसे देखे बिना, नीचे के कमरों में वापस आना होगा ही नहीं। कभी-कभी लगता, सितारे गीत गा रहे हैं और आकाश-गंगा में स्थित एक छोटे-से द्वीप के इर्द-गिर्द चक्कर काटते, गाने के शब्द, मुझे स्पष्ट सुनायी देते। वही गुनगुनाती मैं नीचे उतर आती . . .

स्वाति के मोती रहें हम
द्वीप के तट पर चमकते
ज्वार की लहरों में उछलें
आ गिरें भू पर दमकते

साथ ही साथ पास के मंदिर में होती आरती के घंटों की ध्वनि और बीच-बीच में झांझों की आवाज कान में पड़ती . . . जि . . जी . . . वि . . . षा, जि . . . जी . . . वि . . . षा; जिजीविषा . . . जिजीविषा . . . जिजीविषा, जिजीविषा।

—ए-२६, निजामुद्दीन (पश्चिमी),
नयी दिल्ली-११००१३

गम में इनसानों के किरदार बदल जाते हैं
गम बुरी शय है कि मेयार बदल जाते हैं

—सलीम खतौलवी

★

गलियों में उसकी कुछ न मिला कब्र के सिवा
अब आर्ज़ू का शहर बदलना पड़ा मुझे

—नूरजहां सर्वत

अलकनंदा का अघोरी वैज्ञानिक था!
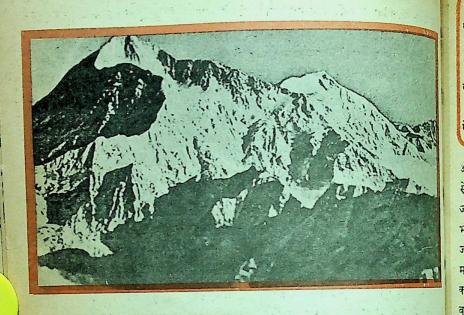
● आचार्य विनयमोहन शर्मा

'अघोर विद्या' बड़ी रहस्यमयी है, जिसका ग्रंथों में क्वचित ही उल्लेख मिलता है। भारत के योगियों और स्वामियों में भी यह विद्या कठिनता से समझी जाती है। यह गुह्य मार्ग है, जो सूर्य-विज्ञान से संबंधित है। मैंने सूर्य-विज्ञानी योगी विशुद्धानंदजी के काशी में सन १९२७-२८ में दर्शन किये थे। वे गंधबाबा के नाम से जाने जाते थे। वे सूर्य की किरणों के द्वारा पदार्थ-परिवर्तन कर सकते थे। हिंदू विश्वविद्यालय के प्रवक्ताओं (प्रोफेसरों) ने भी उनकी इस शक्ति की परीक्षा की थी। वे स्वर्गीय गोपीनाथ कविराज के गुरु थे। उनमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर तुरंत पहुंचने की अद्भुत शक्ति भी थी।

जिस अघोरी का वर्णन स्वामी राम ने किया है, वे श्रीनगर (गढ़वाल) के

प्रख्यात समालोचक एवं लेखक आचार्य विनय मोहन शर्मा ने प्रस्तुत लेख में अलकनंदा के अघोरी के संबंध में नयी जानकारी दी है। उनके अनुसार, " 'कादम्बिनी' के तंत्र-विशेषांक में श्री कमलेश शुक्ल ने अलकनंदा के अघोरी का वर्णन किया है। उन्होंने स्वामी राम के ग्रंथ का उल्लेख करते हुए अलकनंदा के अघोरी को शव-भक्षी बताया है, परंतु स्वामीराम ने जिस अघोरी का वर्णन अपने ग्रंथ 'लिविंग विद हिमालियन मास्टर्स' (गुरुओं के साथ प्रवास) में किया है, वह लोगों की दृष्टि में अघोरी अवश्य था, पर साथ में वैज्ञानिक भी था। वह पदार्थों के परिवर्तन पर अनुसंधान कर रहा था।" ...

आगे एक पहाड़ी पर रहते थे। वे लोगों से मिलते-जुलते नहीं थे। उनकी विचित्र जीवन-चर्या के कारण लोग भी उनसे भय खाते थे। यदि कोई उनके निकट जाने का प्रयास करता, तो वे उसे पत्थर मारकर भगा देते थे। परंतु पत्थर किसी को लगता नहीं था। स्वामीराम निकट-वर्ती ग्राम के एक पंडित को लेकर, उनके पास गये। संध्याकाल था। अघोरी बाबा पंडित को देखते ही बोल उठे—"तू तो परोक्ष में मुझे गालियां देता था और अब यहां प्रणाम करता है।" जब पंडित ने लौटने का प्रयास किया, तब बाबा ने उसे रोका और आदेश दिया, "जा नदी से मेरे लिए पात्र में जल भरकर ले आ।" जब पंडित जल भरकर लाया, तब बाबा ने उसके हाथों में चाकू देकर कहा, "देख, वहां नदी के पानी पर एक शव तैर रहा है, उसे किनारे पर खींच ला और उसकी जंघा और पिंडली की मांस-पेशियों को काटकर मेरे लिए थोड़ा मांस ले आ।" पंडित यह सुनकर कांप उठा और आज्ञा-पालन करने से कतराने लगा। अघोरी बाबा ने भयानक रूप धारण कर कहा, "यदि तू शव का मांस लेकर न आया, तो मैं तेरी बोटी-बोटी काट डालूंगा और तेरा मांस खाऊंगा। बोल, तुझे क्या पसंद है?" घबराया हुआ पंडित नदी पर गया और अघोरी ने जिस प्रकार आदेश दिया था, उसी प्रकार उसने उसका पालन

स्वामी राम

किया। शव का मांस काटकर ले आया और उसे बाबा के सम्मुख रख दिया। बाबा ने फिर उसे आदेश दिया, "मांस के टुकड़ों को मिट्टी के बरतन में रख, उसे आगी (आग) पर चढ़ा और उसका मुंह ढंक दे।" उन्होंने यह भी कहा, "तू जानता नहीं, यह युवा संन्यासी राम भूखा है और तुझे भी तो खाना है।"

अब वह मानव नहीं

अघोरी बाबा का यह आदेश सुनकर स्वामी राम और पंडित दोनों घबरा गये। दोनों ने कहा, "बाबा, हम तो शाकाहारी हैं।" बाबा चिढ़-से गये और बोले, "क्या तुम समझते हो, मैं मांसाहारी हूं। मैं शुद्ध शाकाहारी हूं।"

दस मिनट के पश्चात बाबा ने पंडित से कहा, "जा आगी पर चढ़ी हांडी ले आ।" फिर उन्होंने चौड़े पत्ते दोनों के सामने बिछा दिये। बाबा गुफा में गये और मिट्टी के तीन सकोरे ले आये। स्वामीराम और पंडित दोनों बड़े सकपकाये। फिर पंडित राम से धीरे-धीरे फुसफुसाने लगा, "अब तो मेरा जीवित रहना संभव नहीं लगता।" बाबा ने पंडित की ओर देखकर कहा, "उठ, हांडी का भोजन परोस।" जब पंडित ने हांडी का मुख खोला और स्वामी राम का सकोरा भरने लगा, तब दोनों यह देखकर भौंचक्के रह गये। परोसी गयी वस्तु मांस के टुकड़े नहीं थे, वह तो पनीर और शक्कर के बने रसगुल्ले थे।

राम मन-ही-मन कहने लगे कि बाबा के साथ आते समय मैं रसगुल्लों पर ही विचार कर रहा था। सकोरों की ओर लक्ष्य कर अघोरी बोले, "देखो, इसमें मांस कहां है ? यह तो शुद्ध मिठाई है।" राम और पंडित ने बाबा की मिठाई का जी भरकर सेवन किया। हांडी में जो शेष था, उसे बाबा ने पंडित को गांववालों को बांटने को दे दिया। पंडित तो अपने गांव की ओर चला गया, परंतु स्वामी राम अघोरी बाबा के पास ही रातभर रहे। ध्यान करने के पश्चात दोनों ने शास्त्र पर चर्चा की। राम ने बाबा से कहा, "आप मृत प्राणियों का मांस खाकर इस तरह का जीवन क्यों जी रहे हैं।" बाबा ने कहा, "तुम उसे मृत शरीर क्यों कहते हो, वह मानव नहीं रह गया है, वह तो एक पदार्थ है, जिसका उपयोग नहीं हो रहा है। मैं जिस तरह उस शरीर का उपयोग

> **राम मन ही मन कहने लगे कि बाबा के साथ आते समय मैं रसगुल्लों पर ही विचार कर रहा था। सकोरों की ओर लक्ष्य कर अघोरी बोले,"देखो इसमें मांस कहां है ?"**

करता हूं, उस तरह उसमें कोई खतरा नहीं है। मैं वैज्ञानिक हूं, प्रयोग कर रहा हूं। पदार्थ (Matter) और ऊर्जा (Energy) के मध्य क्या संबंध है—यह जानने का प्रयत्न कर रहा हूं। पदार्थ के एक रूप का दूसरे रूप में परिवर्तन पर प्रयोग कर रहा हूं। प्रकृति मेरी गुरु है। वह कई रूप धारण कर रही है। मैं तो पदार्थों को परिवर्तित कर उसी के नियम का पालन कर रहा हूं।"

"लोग मुझे अघोरी समझकर मुझसे डरते हैं। मुझे गंदा आदमी समझते हैं। मैं मुर्दा-मांस खाकर जी रहा हूं।"

रेत के कण बादाम हुए

बाबा का बाहरी व्यवहार इसलिए उग्र था, क्योंकि वे अपने प्रयोगों में किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं होने देना चाहते थे। स्वामी राम ने देखा—बाबा ने पत्थर की चट्टान को शक्कर की चट्टान में बदल दिया। उन्होंने स्वामीजी को कई प्रकार के पदार्थ-परिवर्तन के प्रयोग बतलाये। उन्होंने रेत के कणों को बादाम और काजू में परिवर्तित कर दिखाया। वे विज्ञान के पदार्थ-परिवर्तन के नियम से पूर्णरूपेण परिचित थे। सभी नाम-रूपों में पदार्थों का संयोजक-नियम काम करता है, जिसका पूरा ज्ञान वैज्ञानिकों को नहीं हो पाया है। वेदांत और प्राचीन शास्त्रों की मान्यता है कि सभी पदार्थ एक तत्व के ही भिन्न नाम-रूप हैं। दो पदार्थों के रूपों को समझना कठिन नहीं है, क्योंकि उनका स्रोत एक ही है। जब पानी ठोस रूप धारण करता है, तब बर्फ कहलाता है। जब वह उबलकर वाष्पित होना चाहता है, तब भाप बन जाता है। छोटे बालक यह नहीं समझ पाते कि ये तीनों रूप एक ही पदार्थ हैं। बाबा ने **'पदार्थ-परिवर्तन'** की वैज्ञानिक प्रक्रिया स्वामी-राम को समझायी, जिससे उन्हें संतोष हो गया।

विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रकार के आविष्कार हो रहे हैं। पदार्थ-परिवर्तन के प्रयोग को बाबा सर्वथा स्वाभाविक मानते थे। उन्होंने स्वामी राम के सम्मुख उन्हें सिद्ध कर दिया था। भारतीय दर्शन का 'अद्वैतवाद' क्या वैज्ञानिक नहीं है?

—ई-६/एम. आई. जी. ७, अरेरा कॉलोनी, भोपाल—१४

जब चोरी की बात चलती है, तब विश्व रिकार्ड चीनी लोगों के पास ही रहता है। रातोंरात लोहे के एक कारखाने को उखाड़कर ले जाना, अभी तक और कहीं संभव नहीं हो पाया है। हेंमश में हुई इस चोरी में सिर्फ भीत की ईंटें रह गयी थी। ब्रिटेन में सबसे बड़ी चोरी १९३९ में हुई थी, जिसमें सिर्फ दो व्यक्तियों ने रातोंरात एसेक्स के एक कारखाने से १२० फुट ऊंची चिमनी को उड़ा लिया था।
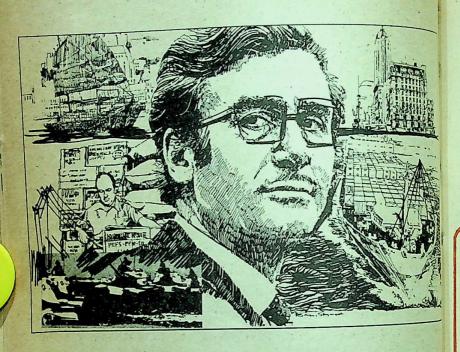
कूट-संदेशों का रहस्य

● एस. रघुनाथ

हर देश अपने राजनयिक, सैनिक तथा अन्य महत्त्वपूर्ण रहस्यों की रक्षा बड़ी मुस्तैदी से करता है। और उनकी गुप्तता बनी रहे, इसके लिए संकेत-लिपि या कूट-लिपि का उपयोग किया जाता है। क्या कूट-लिपियों की कुंजियां खोज निकाली जा सकती हैं? क्या ऐसी भी कोई कूट-लिपि हो सकती है, जिसकी कुंजी खोज निकालना सर्वथा असंभव हो?

व्यापारिक संदेशों में भी कूट-संकेतों का उपयोग संभव है। एक ही शब्द के तार-संदेश 'खुशी' का अर्थ 'आज के भाव

पर २,००० टन लोहे की छीलन खरीद लो' हो सकता है। इस कूट-संदेश में गोपनीयता के अलावा संक्षिप्तता का भी गुण है, जिससे तार के खर्चे में भी बचत हो जाती है। ये संकेतार्थ या संकेत-क्रम 'कोड' कहलाते हैं।

कोड का इस्तेमाल चाहे व्यापारिक उद्देश्य के लिए हो, अथवा गोपनीय सरकारी, सैनिक-जानकारी भेजने के लिए, उसकी एक विशेष कुंजी होना जरूरी है। कुंजी मालूम हो, तो कोड के संदेश का अर्थ कोई भी बूझ सकता है—फिर भले था। अपने निबंध 'एडवांसमेंट ऑव लर्निंग' में उसने कहा है, "वही लिपि सचमुच कूट है, जो इस तथ्य को भी गुप्त रख सके कि उसमें कोई रहस्य छिपा है।" वैसे शत-प्रतिशत गोपनीयता तो लगभग असंभव है; क्योंकि ऐसा कोई कोड नहीं होता, जो पर्याप्त समय और साधनों की मदद से तोड़ा न जा सके। इसलिए कूट-संदेश और गूढ़-लिपि के हर अन्वेषक की यह कोशिश रहती है कि कुंजी को खोजना अधिक से अधिक कठिन और समय-साध्य कैसे बनाया जाए।

अमरीका में उनतालिस रेडियो-स्टेशन एक साथ एक विश्व-प्रसिद्ध मुक्केबाज से साक्षात्कार प्रसारित कर रहे थे...लाखों क्रीड़ा-प्रेमी उसे बेहद चाव से सुन रहे थे, पर किसी को पता न था कि मुक्केबाज के भाषण में एक गुप्त संदेश भी छिपा है!

आजकल व्यापार से लेकर, सरकारी कामकाज तक में गुप्त संदेश भेजने के लिए संकेत-लिपि या कूट-लिपि का उपयोग किया जाता है। कैसे तैयार की जाती हैं, ये अबूझ लिपियां! ...

ही उस कोड में दस से लेकर एक लाख तक शब्द भी क्यों न हों, जैसे अकसर राजनयिकों या सैनिक कमांडरों के संदेशों में होते हैं। कोड की गोपनीयता इस पर निर्भर होती है कि उसकी कुंजी ऐसी हो, जिसे कोई अनधिकृत व्यक्ति खासकर शत्रु —आसानी से खोज निकाल न सके, यानी कोड को 'तोड़' न सके।

रहस्यों से भरी कूट-लिपि

प्रसिद्ध अंगरेज विचारक-लेखक फ्रांसिस बेकन विश्व के महान कूट-लेखकों में से

ये कोड इतने महत्त्वपूर्ण होते हैं कि उन्हें तीन-तीन 'कॉम्बिनेशन'-वाली सेफों में रखा जाता है। नौसेना में तो उनके साथ सीसा या लोहा बांधकर रखा जाता है, ताकि आकस्मिक संकट उपस्थित होने पर उन्हें समुद्र में डुबाया जा सके। वैसे कोई कोड शत्रु के हाथों में पड़ भी जाए, तो उसका कोई खास महत्त्व नहीं होता, क्योंकि आजकल कोड की कुंजी थोड़े-थोड़े समय बाद, कई बार तो चौबीस घंटे के भीतर ही, बदल दी जाती है।

भाषण में छिपा गुप्त संदेश

रेडियो के आगमन से जहां गुप्त संदेश भेजना कठिन हो गया है, वहीं कुछ लाभ भी हुए हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध के दिनों की बात है। अमरीका में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिवाले एक भूतपूर्व हेवीवेट का रेडियो-साक्षात्कार उनतालिस रेडियो-स्टेशनोंवाले एक प्रसारण-संस्थान से प्रसारित होना था। अमरीका, कनाडा और अन्य देशों के लाखों क्रीड़ा-प्रेमी उसे सुन रहे थे। इस अवसर का लाभ उठाकर अमरीकी सरकार ने उस भाषण के जरिये एक गुप्त संदेश भेजा, जिसे कोई भी बुद्धिमान श्रोता समझ सकता था। बशर्ते उसे पता हो कि यह एक गोपनीय संदेश है।

मुक्केबाज ने जो खास शब्दावली इस्तेमाल की थी, उसका सामान्य भाषा में अनुवाद करने पर यह अर्थ निकलता था :

'एस–११२-एस. एस. क्वीन एलिजाबेथ आज रात सैकड़ों हवाई जहाज लेकर हेलिफैक्स रवाना हो रहा है।'

न तो उस मुक्केबाज को, न उस कार्यक्रम के आयोजकों को और न रेडियो-स्टेशन के ही किसी कर्मचारी को पता था कि यह कोई गुप्त संदेश है। असल में इसे केवल परीक्षण के तौर पर, यह देखने के लिए भेजा गया था कि क्या अमरीका के शत्रु इसे पकड़कर इसका उपयोग कर पाते हैं ? अब तो यह युक्ति प्रतिदिन दुहरायी जा रही है।

यह सोचना सहज है कि गुप्त संदेश भेजने के लिए सरकारें रेडियो के बजाय समुद्री तार (केबल) का उपयोग क्यों नहीं करतीं ? समुद्री तार रेडियो-प्रसारण से अधिक सुरक्षित हो सकता है, किंतु पूर्ण रूप से सुरक्षित तो वह भी नहीं है। पिछले विश्व-युद्ध में जरमन पनडुब्बियां समुद्र में बिछे केबलों के साथ कई किलोमीटर तक अपनी ओर से बिजली के तार के कुंडल (कॉयल) फंसा देती थीं और समुद्री-तार द्वारा भेजे जा रहे संदेशों को पकड़ लेती थीं।

कमरा नं. चालीस

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने प्रसिद्ध इंजीनियर सर आर्थर यूइंग के नेतृत्व में पचास चुनिंदा कूट-लिपिकारों की टोली रेडियो-संदेश पकड़ने के लिए तैनात की गयी थी। शाही नौसेना मुख्यालय के कमरा नं. चालीस में बैठकर ये लोग दिनभर में शत्रु के २,००० तक संदेश पकड़ते थे और चालीस घंटे के भीतर ही उन्हें बूझ भी लेते थे।

उदाहरणार्थ, नौसेना मुख्यालय को उन्होंने यह सूचना भेजी कि जरमन जहाजी बेड़ा अरक्षित समझे जा रहे पूर्वी ब्रिटिश-तट पर आक्रमण करने को निकल चुका है। इस तरह ब्रिटिश जल-सेना के एडमिरल जेलिको और एडमिरल बीटी को जटलैंड के ऐतिहासिक समुद्री युद्ध के लिए तैयार करने का श्रेय कमरा नं. चालीस को ही है।

एक बार अमरीका से दो संदेश वहां आयें। इनमें से एक हम मूल रूप में रोमन लिपि में दे रहे हैं, ताकि उनके कोड को समझने में आसानी हो। पहला संदेश यों था:

"President's embargo ruling should have immediate notice. Grave situation affecting international law. Statement foreshadows ruin of many neutrals. Yellow journals **unifying national** excitement immensely."

वास्तव में इस संदेश में दी गयी सूचना यह थी:

"Pershing sails from New York, June 1."

कमरा नं. चालीस के सयानों ने इसे पकड़ा कैसे? उत्तर है, मूल संदेश के प्रत्येक शब्द का प्रथम अक्षर लेकर वाक्य बनाने से। आप स्वयं आजमाइश कर लीजिए। (इसमें न्यूयार्क का संक्षिप्त रूप एन. वाइ. उपयोग किया गया है। ग्रौर 'आइ' अक्षर को एक की संख्या माना गया है।)

यह उदाहरण उस प्रणाली का है, जिसे 'क्रम-परिवर्तन' के नाम से जाना जाता है। इसमें वाक्य के अक्षरों का 'मूल्य' नहीं बदलता, यानी 'ए', 'ए' बना रहता है ग्रौर 'बी', 'बी'। केवल अक्षरों का क्रम इस तरह बदल दिया जाता है कि कोई अन्य व्यक्ति वाक्य का अभिप्रेत अर्थ न जान पाये। सही क्रम केवल संदेश भेजने ग्रौर पानेवाले को ही पता होता है।

कोड बनानेवाले कई बार 'दुहरी कुंजी प्रतिस्थापन' का सहारा लेते हैं। इसमें एक लाभ यह है, यह पता लग जाने पर भी कि संदेश में कुछ अक्षरों की बार-बार आवृत्ति हो रही है, कुंजी खोजने-वाले को कोड को सुलझाने में कोई मदद नहीं मिलती। इस तरह के कोड का एक सामान्य उदाहरण यह है:

A B C D E F G H (सामान्य)
b c d e f g h i (कूट-लिपि)

कूट-लिपि वर्णमाला के किसी भी अक्षर से शुरू की जा सकती है। जिन्होंने पो की 'गोल्ड बग' कहानी पढ़ी है, उन्हें याद होगा कि उसकी कूट-लिपि को संदेशों के अक्षरों की पुनरावृत्ति की कमोवेशी के आधार पर ही बूझा गया था।

सत्रहवीं शताब्दी की मशहूर 'विजनेर' प्रणाली अक्षर-प्रतिस्थापन पर आधारित थी। सन १८६३ तक इस प्रणाली को बूझा नहीं जा सका था। यदि संकेत-शब्द लंबा हो या पूरा वाक्यांश ही संकेत-शब्द हो, तो कूट-संदेश को बूझना सचमुच ही कठिन हो जाता है।

स्वीडन के इंजीनियर हैजेलिन ने एक मशीन का आविष्कार किया, जो रोमन लिपि में लाखों प्रतिस्थापन-क्रम तैयार कर देती है। संदेशों को कूट-लिपि में बदलने की ऐसी मशीनें कूट-लिपिज्ञों के लिए सिर-दर्द बन गयी हैं।

—३५२, दादाभाई नौरोजी रोड, बंबई-१

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।
—संपादक

१. **एक** दंपती (पति-पत्नी) के चार पुत्र हैं, जो सभी विवाहित हैं और उनमें से प्रत्येक के तीन बच्चे हैं। बताइए, इस परिवार में कुल कितने सदस्य हैं?——

क. १४, ख. १८, ग. २२, घ. २४।

२. **क्षेत्रफल** के अनुसार अफरीका महाद्वीप के दो सबसे बड़े देशों के नाम बताइए ?

क. सूडान, ख. जाइरे, ग. मिस्र, घ. अलजीरिया।

३. १९८२ में असाधारण संख्या में ग्रहण पड़े थे। उनकी कुल संख्या कितनी थी?—

क. ४, ख. ५, ग. ६, घ. ७।

४. **प्रथम** स्वतंत्रता - संग्राम (१८५७) का पहला शहीद कौन था?—

क. तांत्या टोपे, ख. रानी लक्ष्मीबाई, ग. मंगल पांडे, घ. आशुतोष लाहिड़ी।

५. क. **भारतीय** वायुसेना की स्थापना कब हुई थी?—

ख. भारतीय वायुसेना के अंतिम ब्रिटिश तथा प्रथम भारतीय प्रमुखों के नाम बताइए।

६. क. **हमारे** देश में नागरिक उड्डयन का प्रारंभ कब हुआ?

ख. सबसे पहली उड़ान किसने की थी?

७. **दुनिया** में अब तक गेहूं का रेकॉर्ड उत्पादन कब हुआ है?

८. **भारत** में विदेशी सहयोग से दो अन्य सुपर-ताप बिजलीघरों का निर्माण होने वाला है। वे कहां और किसके सहयोग से बनेंगे?

९. **हाल में** किस देश में एक महत्त्वपूर्ण चौराहे का नाम 'नेहरू स्क्वायर' रखा गया है?

१०. **हिंद** महासागर के जहाजों का धरती पर लगे टेलीफोन से संपर्क स्थापित करने के लिए किस अंतरिक्ष-यान को विषुवत-रेखा के ऊपर स्थायी कक्षा में कायम किया गया है?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

पांडुलिपियां बटोरना उनका शौक था!

• बलराम श्रीवास्तव

स्वर्गीय राय कृष्णदास

हिंदी-विकास के पिछले दस दशकों से जुड़े राय कृष्णदास का कुल पीढ़ी-दर-पीढ़ी मुगल-दरबार से संबद्ध था। अपार संपत्ति के साथ सुरुचिपूर्ण संस्कृति विरासत में मिली थी। उनकी मातामही भारतेंदु के कुल की थीं। पिता थे, राय प्रहलाददास और माता—चंपा कुंआरि। राय कृष्णदासजी का घर का नाम 'भैयाराज' था। ये बचपन में इतने अस्वस्थ रहते थे कि मातामही ने पढ़ाना-लिखाना बच्चे के सिर पर अनुचित बोझ लादना समझा। वे कहतीं, "जरूरत क्या है, पढ़ाने-लिखाने की। नौकर-कारिंदे हैं। जमींदारी का हिसाब-किताब देख लेंगे।"

लगातार की टोका-टोकी इस कदर बढ़ी कि कक्षा सात पास करते-करते उनकी स्कूली पढ़ाई बंद हो गयी।

रुग्ण-शरीर बिस्तर पर पड़े-पड़े करें क्या? मन नहीं मानता था। फलतः उनकी रुचि चित्रकला की तरफ गयी और उन्होंने मुगल-शैली के ज्ञात अंतिम उस्ताद राम प्रसाद का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। सन १९०६ में उन्होंने मुगल-चित्रों और अन्य कला-वस्तुओं का संग्रह आरंभ कर दिया। कुछ स्वस्थ होने पर शिक्षा का क्रम भी आरंभ हुआ। अजमेर के प्रिंस कालेज के अवकाश-प्राप्त शिक्षक हरिकृष्ण थत्तेजी नियमित रूप से उनके घर आते और संस्कृत-अंगरेजी की शिक्षा देते। कवि-गोष्ठियों में भी राय साहब का मन रमता था। वे अकसर गोष्ठियों में जाते थे और चुपके-चुपके व्रजभाषा में काव्याभ्यास भी करते थे। आरंभिक कविताएं वे 'दुलारे रामचंद्र' के नाम से करते थे।

'व्रज-रज' का प्रकाशन

आधुनिक हिंदी-साहित्य के तृतीय उत्थान

के काव्य-संग्रहों में 'व्रज-रज' काफी सराहा गया। (भूल से अनेक इतिहास-ग्रंथों में इस पुस्तक का नाम 'व्रज-रत्न' छपा है।) इसमें व्रज-भाषा में 'व्रज-रज' के प्रति भक्तिपूर्ण भावोद्‌गार हैं। 'व्रज-रज' के प्रकाशन (सन १९१८) के पूर्व भी उनका एक काव्य-संकलन 'उपवन' नाम से प्रकाशित हुआ था।

समय के साथ काव्य-परिपाटी में भी बदलाव आया। व्रज-भाषा भी बदली, लेकिन समय के साथ न चल सकी। उसकी तुलना में खड़ी बोली काफी उठ खड़ी हुई। काशी में 'प्रसाद' और प्रेमचंद्र की धूम थी। दोनों सगे भाई की तरह राय

स्वर्गीय राय कृष्णदास व्यक्ति नहीं, 'संस्था' थे। सर्वप्रथम उन्होंने ही 'साहित्य-संग्रहालय' की न केवल कल्पना की थी, वरन उसे साकार भी किया था। किशोरावस्था से ही उन्हें एक चाव था—हिंदी-साहित्यकारों की पांडुलिपियां बटोरना, उनके स्मृति-चिह्न एकत्रित करना...।

साहब के चहेते थे। मैथिलीशरण गुप्त आजीवन राय साहब के अनन्य रहे, लेकिन उनकी खड़ी बोली की काव्य-धारा अलग थी। राय साहब पर 'प्रसाद' का आरंभिक प्रभाव विशेष था। स्वयं प्रसादजी भी राय साहब से प्रभावित थे। उनका प्राच्य विद्या और इतिहास का ज्ञान प्रसादजी के काम आता था। 'प्रसादजी'

राय कृष्णदास ९ वर्ष की अवस्था में

ने 'अजातशत्रु' की भूमिका राय कृष्णदासजी से लिखवायी थी। राय साहब के निधन पर शोक व्यक्त करने आयीं 'प्रसादजी' की पत्नी ने बस इतना ही कहा था, "वे दिन, वे लोग!" मात्र इतने ही शब्दों में उस युग का पूरा इतिहास उनकी आंसूभरी आंखों से उमड़ पड़ा था।

खड़ी बोली की काव्य-यात्रा

राय साहब की खड़ी बोली की काव्य-यात्रा लगभग सन १९१२ में आरंभ हुई। तब से उनकी जो कविताएं 'इन्दु', 'सरस्वती', 'प्रतिमा' और 'माधुरी' आदि हिंदी की प्रतिनिधि-पत्रिकाओं में छपीं; उनका संकलन सन १९२७ के आसपास 'भावुक' शीर्षक से पुस्तक-रूप में प्रकाशित हुआ।

हिंदी कविताओं की गेयता और नाटकों की अभिनेयता पर उन दिनों एक प्रश्न-चिह्न लगा था। कई छायावादी कवियों ने अपने गीतों को स्वर-लिपियों के

साथ पेश किया। 'प्रसाद' के नाट्य गीतों में भी यही प्रयोग हुआ, किंतु उसमें पहल राय साहब ने ही की थी। 'भावुक' के कुछ गीतों की स्वर-लिपियां मुनीम लक्ष-मणदासजी ने राय साहब के लिए तैयार की थीं।

संपत्ति और विपत्ति

सन १९०४ में उनके पिता गोलोकवासी हुए। मात्र बारह वर्ष की उमर में पिता से वंचित होकर वे पारिवारिक संपत्ति को लेकर विपत्तिग्रस्त भी हो गये थे। पिता जब जीवित थे, तब मुकदमे के संबंध में अपने वकील और मित्र मोती-लालजी के पास जाते, तो अपने साथ राय कृष्णदास को भी लेते जाते। इस प्रकार उनकी इलाहाबाद की पहली यात्रा नौ वर्ष की अवस्था में हुई थी। वे जवाहर लाल नेहरू से तीन वर्ष छोटे थे और दोनों बालसखा के रूप में आजीवन बने रहे। पिता की इच्छा भी थी कि वे प्रयाग में पढ़ें। किंतु यह सब क्रम उनकी (पिता की) मृत्यु से भंग हो गया। पूरी संपत्ति 'कोरट' हो गयी। 'कोरट' से संपत्ति की मुक्ति के लिए मोतीलालजी ने बड़ा प्रयास किया। राय कृष्णदासजी की इच्छा थी कि 'कोरट' छूटने के बाद वे इलाहाबाद में ही बस जाएं, दारागंजी मस्ती में ढल जाएं, लेकिन काशी तो काशी ही है, कौन छोड़ता है!

राय कृष्णदासजी ने बहुत कुछ भोगा और बहुत कुछ गंवाया पर उन्होंने पाया था भावुक मन, और आस्थावान मा[...] का जीवन। सन १९१२ से सन १९[...] के बीच लिखी गयी उनकी छाया[...] कविताओं में रवींद्र-शैली की कोरी [...] कता नहीं थी, बल्कि उनमें भोगी [...] का यथार्थ ही था। प्रसाद का 'आनंद[...]' उनका प्रेरणा-स्रोत था, फलतः दुःख [...] सुख की सह-अनुभूति, मात्र आनंद, [...] और आस्था में उनका विश्वास [...] उनमें सब कुछ गंवाने में भी कुछ न [...] पा लेने की फकीराना अलमस्ती [...]

कर्मयोग पर आ[...]

फकीराना अलमस्ती में डूबे रहने के बा[...] कर्म पर उनकी आस्था थी। 'निपुण[...]' में वे लिखते हैं, 'दुःख से उद्विग्न होकर [...] निश्चय किया कि ऐसे जीवन से [...] अच्छा है। मेरे हृदय ने कहा, 'मैंने [...] करने का प्रण लिया है', और आज [...] पवित्र शिव कर्ममय जीवन मि[...] और उन्हें सचमुच ही ऐसा जीवन [...] निधन के दिन भी उन्होंने पूजा-[...] गीता के कर्मयोग पर भाष्य लिखा। [...] मुच, उन्होंने कभी काम बंद नहीं कि[...] 'साधना' के एक गद्यगीत में 'काम [...] करने का समय' में काम बंद कर[...] समय का अनुमान करते हुए वे कह[...] "पर यह हो कैसे सकता है, क्या [...] निरंतर कर्मशील प्रवृति में कोई भी [...] अकर्मण्य रह सकता है।"

उनके जीवन में 'काम बंद [...] का समय' सन १९६८-६९ में ए[...]

श्री:
भानुकुल भानु भगवान रामचन्द्र मेरे सरबस एक
आपनोई एक ध्यान है।
नाथ, सदा मेरी एक तोही सों वानो है जो
जुरै विधौं हूं इतनो सो
वरदान दे।
मायो इहि देस, पथ आरजा न खायो इतें
राही नव कर्म प्रति
याको अभिमान
पाइ पारब्रह्म ई को पारब्रह्म होउ तऊ
मानव ही मानों तोहि ऐसो
मोहि ज्ञान दे।

पक्षाघात (१९६९) के बाद बायें हाथ से लिखी एक भक्ति-रचना

आया। पक्षाघात हुआ। हृदय प्रभावित हुआ। अचेत हुए। कोई नहीं जानता था कि बचेंगे। जान बची तो चिकित्सकों ने पूर्ण विश्राम की सलाह दी, लेकिन घर के लोग भी नहीं जानते थे कि वे कैसा विश्राम कर रहे थे। हाथ की अंगुलियां पक्षाघात से प्रभावित थीं। कलम नहीं पकड़ सकते थे। शायद दायां हाथ बेकार ही हो जाए, इस आशंका से उन्होंने चुपके-चुपके बायें हाथ से लिखने का अभ्यास किया। बच्चों की तरह गोल-मोल, एक-एक अक्षर को बारबार लिखना शुरू किया और फिर, उनका संकल्पित मन बाजी मार ले गया। वे फिर लिखने लगे।

'आर्टफूल और फितरती'

मातृभाषा हिंदी और राष्ट्र के प्रति प्रेम उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग था। उनकी किसी भी राजनीतिक दल और विचार-धारा के प्रति प्रतिबद्धता नहीं थी, राष्ट्रीय आंदोलनों के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति रही। राय साहब के संकलन में क्रांतिकारियों के दुर्लभ पत्र और अन्य स्मृति-चिह्न आदर का स्थान पाये हुए हैं। प्रतापगढ़ निर्वाचन-क्षेत्र से सर सी. वाई. चिंतामणि विधान-सभा के लिए खड़े हुए थे। स्वराज्य पार्टीवालों ने उन्हें पराजित करने का एक ही उपाय सोचा—उनके विरुद्ध राय कृष्णदास को खड़ा किया जाए। इस संबंध में मोतीलाल नेहरू ने एक आत्मीय पत्र राय साहब को लिखा। कुछ पंक्तियां उस पत्र की इस प्रकार हैं—'तुम आर्टफूल और फितरती हो, राजनीति से तुम्हारा क्या सरोकार? . . . फिर भी बात मान जाओ।'

गांधीजी का प्रभाव

राय साहब– जैसा 'आर्टफूल' आदमी सक्रिय राजनीति से तो कतरा गया, किंतु साहित्यिक 'फितरत' से बाज नहीं आया। सन १९१९ के बाद की कहानियों में दासता के दुःख के, स्वराज्य के प्रति

आस्था के स्वर मुखर हैं। गांधीजी से उन दिनों कौन नहीं प्रभावित था। राय साहब उन दिनों 'सूट-बूटधारी' अच्छे-खासे अंगरेज-जैसे थे। नागरी प्रचारिणी के 'कला-भवन' में गांधीजी को ले जाने का प्रयास हो रहा था, लेकिन गांधीजी ने एक शर्त लगा दी—वे तब 'कला भवन' में प्रवेश करेंगे, जब राय साहब 'साहबी' छोड़, खद्दर का व्रत लेंगे। बिना क्षणभर देरी किये, अंगरेजी वेशभूषा का परित्याग कर वे धोती-कुरते पर उतर आये। तब से उनके घर में जीवनपर्यंत खद्दर के अलावा अन्य वस्त्र वर्जित हो गये।

खड़ी बोली-गद्य के उन्नायक

कृतिकार के रूप में राय साहब को बड़ा सम्मान मिला। खड़ी बोली-गद्य के उन्नायकों में वे महत्त्वपूर्ण माने गये। इस निमित्त उन्हें नागरी प्रचारिणी सभा से 'वाचस्पति' और साहित्य-सम्मेलन से 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधियां मिलीं। राय कृष्णदासजी ने—'साहित्य-संग्रहालय' की कल्पना भी की थी। व्यक्तिगत संकलनों में या ग्रंथालयों में प्राचीन पोथियों का संग्रह एक बात है, किंतु एक संग्रहालय की अवधारणा में साहि[त्य] संकलन सर्वथा विशिष्ट बात है, संप्रति अन्य किसी भाषा के संदर्भ [में] नहीं कही जा सकती। यह राय साहब [की] मौलिक कल्पना थी, जिसे चरितार्थ [करने] में वे किशोरावस्था से लगे थे। हिंदी [के] साहित्यकारों से उनकी पांडुलिपियां [एकत्र क]रना और उनके स्मृति-चिह्नों का संग्रह करना, उनका एक पुराना काम [था।] आज उनके 'कला-भवन' में उनके प्रयास से सहस्राधिक पत्र और लगभग [...] हजार पांडुलिपियां संग्रहीत हैं।

महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा [संपा]दित 'सरस्वती' की मुद्रण के लिए प्रस्तु[त] की गयी प्रतियां भी यही हैं। हिंदी [के] पुराने अखबार और पत्र-पत्रिकाएं, [जो] अन्यत्र दुर्लभ हैं—राय साहब के संग्रह में मिल जाएंगे।

वे स्वयं कृति थे, दूसरों की कृति का आदर करते थे। सत्साहित्य के प्रकाश[न] के लिए उन्होंने अपनी पूंजी से 'भा[रती] भंडार' की स्थापना की थी।

—ओल्ड एफ/३, जोधपुर कॉलो[नी]
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराण[सी]

'मनुष्य कभी नहीं मर सकता है,' दक्षिण अफरीका के क्रिश्चियन बार्नार्ड का [कहना] है, 'यदि हम यह खोज पायें कि मनुष्य के शरीर की कोशिकाएं अपने-आप कैसे पुनर्[जीवन] प्राप्त कर सकती हैं। यह कोशिकाएं अधिकतम पचास बार पुनर्जीवन प्राप्त कर [सकती] हैं और उन्हें हमेशा जीवित रखा जा सकता है।'

गांव: जहां तैयार किये जाते हैं घुड़दौड़ के घोड़े

● कुमार राकेश प्रधान

बंबई के महालक्ष्मी इलाके में अचानक चहल-पहल बढ़ गयी है। कार की कतारें सीधे, एक ही दिशा में मुड़ती जा रही हैं। ट्रेन से उतरकर भीड़ बस एक ही ओर उमड़ती चली जा रही है—महालक्ष्मी रेसकोर्स की ओर।

भारत में घुड़दौड़ का आयोजन करनेवाली संस्था का नाम है—'रॉयल वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब लिमिटेड'। वैसे तो घुड़दौड़ हमारे देश में बंबई, कलकत्ता, मद्रास, पूना, बंगलोर आदि जगहों में आयोजित की जाती है, पर बंगलोर और बंबई की रेस अनुपाततः ज्यादा लोकप्रिय मानी जाती है। भारत का पहला प्रमुख घुड़दौड़-क्लब कलकत्ता में बना था।

जहां रेस के घोड़े तैयार किये जाते हैं

रांची से एक सौ बीस किलोमीटर दूर गुमला के पास एक छोटा-सा गांव है—मांझा टोली। बिहार और मध्यप्रदेश को

ऊपर: घुड़दौड़ का एक दृश्य

दो भागों में बांटती हुई शंख नदी की तराई में बसे इसी गांव में दो पहाड़ों के बीच है—'छोटानागपुर स्टड', जिसके मालिक हैं, एक अंगरेज श्री एम. जे. ग्रिफिथ। उनकी पत्नी श्रीमती इम्तियाज फिरोजा ग्रिफिथ इस 'स्टड' की मैनेजर हैं। इस 'स्टड' की नींव सन १९६५ में इन्हीं दोनों ने मिलकर रखी थी। अश्व-प्रेम ने ही इन दोनों का परिचय कराया, जो क्रमशः प्रणय में परिणत हुआ और चार वर्षों बाद वे परिणय-सूत्र में बंध गये।

"'स्टड' क्या है?" एक सुलभ-सी परिभाषा जानने के लिए, मैं सीधे प्रश्न पर आ जाता हूं।

"'स्टड'...? रेस के लिए जो घोड़े होते हैं, उन्हें हम तैयार करते हैं...विभिन्न नर और मादा घोड़ों को मिलाकर बेहतर नस्ल तैयार की जाती है और उन्हें पाल-पोसकर रेस जीतने लायक बनाया जाता है... मतलब 'अस्तबल' ही कहिए!" आगे वे बताती हैं, "जब घोड़ी बच्चा देती है, तब उसकी भी जन्मकुंडली बनती है। पर उसकी उम्र की गणना १ जनवरी से होती है, जैसे किसी बच्चे का जन्म ३१ दिसंबर '८१ को हुआ, तो वह १ जनवरी, '८२ को एक दिन का होगा, पर घोड़ों की जन्मकुंडली के अनुसार उसकी उम्र एक साल गिनी जाएगी। जन्म चाहे किसी भी तारीख को हो, पहली जनवरी को उसकी उम्र में एक साल की वृद्धि हो जाती है..., अजीब परंपरा है न? ...हमारी यह कोशिश रहती है कि बच्चे वर्ष के प्रारंभ में ही पैदा हों!"

"रेस के लिए उपयुक्त घोड़ों की ... क्या है?"

"रेस में दो साल से बड़े घोड़े ही ... सकते हैं।"

"आइए, आपका 'स्टड' देखें।" वातावरण बोझिल होता देखकर, मैंने ... से उठते हुए कहा।

सबसे पहले हम भंडार में गये, ... एक ब्लैक बोर्ड पर हर घोड़े का ... और उसकी खुराक अंकित थी। यह ... के हिसाब से बदलती रहती है। ... खुराक में जई (६० प्रतिशत) ... (२० प्रतिशत), चना (५ प्रतिशत) ... इसके अलावा १५ प्रतिशत रासाय... दवाएं। दवाओं में मुख्यतः विटा... 'बी' और 'डी' के लिए 'मैक्टोवाइट' ... कैलशियम के लिए चूना-पानी दिया ... है। यही खाना इन्हें दिनभर में तीन ... दिया जाता है। सप्ताह में दो बार ... भी दी जाती है।

"घोड़ों की औसत उम्र?" ... ऊंचाई से भी कुछ ऊंचे घोड़े की पीठ ... हाथ फिराते हुए मैंने पूछा।

"भारत में अठारह वर्ष है, पर ... औसत पच्चीस वर्ष है..., पांच साल ... उम्र के बाद मादा गर्भवती होती है ... इसका गर्भकाल ग्यारह महीने का ... है... एक बार में सामान्यतः एक ... जनती है।"

"घोड़ों की दिनचर्या क्या है?"

"सुबह सात बजे ये व्यायाम के लिए ले जाये जाते हैं। वहां से सात बजे आकर, इन्हें भोजन दिया जाता है... फिर हौज में भरे विशेष पानी से नहलाया जाता है, वहीं पर इनकी पिंडलियों और घुटनों की मालिश होती है। इसके लिए हमारे पास विदेशी 'स्पेशलिस्ट' हैं। दिन में दस बजे इन्हें भोजन दिया जाता है और ये अपने विश्रामागार में विश्राम करते हैं। अपराह्न ३ बजे इन्हें फिर मैदान में ले जाकर विचरण हेतु, छोड़ दिया जाता है। अंधेरा होने के पहले इन्हें लाकर साफ-सुथरे हवादार कमरों में बंद कर दिया जाता है और भोजन के बाद हरी घास दी जाती है।" श्रीमती ग्रिफिथ हमें बताती हैं।

रेस कोर्स में

लगभग तीन किलोमीटर में फैले इस 'स्टड' की सैर करके जब हम लौटते हैं, तब टेबल पर चाय हमारा इंतजार कर रही थी। "आइए, चाय पी जाए" कहती हुई श्रीमती ग्रिफिथ चाय बनाने लगती हैं।

चाय के बाद वे एक बड़ा-सा एलबम लेकर आती हैं, जिसमें हैं विभिन्न मुद्राओं में अंकित घोड़ों की बड़ी-बड़ी तसवीरें। वे सबका परिचय कराती जाती हैं, "यह है—'डेनस्टम्' ... बहुत फुरतीला। 'मिस टेक', चार दिन पहले इसकी मृत्यु हो गयी। यह है 'मिड नाइट काउब्वाय', सन १९७५ में 'इनविटेशन कप' जीतकर इसने रेस की दुनिया में तहलका मचा दिया था। इसने डर्बी भी जीती है, रेस का हर शौकीन इसका नाम अवश्य जानता है ... यह है 'व्हिसप्रिंग ग्रास' ... यह 'मिस बंगाल' और यह है 'चित्रदूत' ...।"
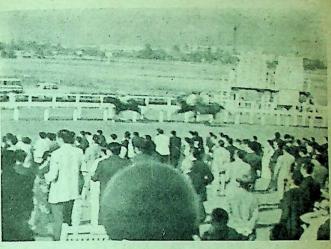
"विशुद्ध हिंदी नाम !" मैं चौंक पड़ता हूं।

"हां, इसका जन्म दीवाली के अगले दिन हुआ था। मेरे एक मित्र आये थे। उन्होंने बताया कि उस दिन वे लोग चित्रगुप्त भगवान की पूजा करते हैं ... और हमने इसका नाम 'चित्रगुप्त' रख दिया, पर हमारे 'न्यूमरोलॉजिस्ट' के हिसाब से यह ठीक नहीं बैठा। अतः इसे बदलकर 'चित्रदूत' कर दिया ... वैसे हिंदी नामों

का प्रचलन अब बढ़ता जा रहा है। 'पांचजन्य', 'सुनंदा', 'बड़े मियां' आदि ने काफी प्रसिद्धि कमायी है।"

तभी कमरे में एक वृद्ध सज्जन अपनी हिटलर-कट मूंछों के साथ प्रवेश करते हैं।

"मेरे पिताजी हैं, मिस्टर तय्यबजी" श्रीमती ग्रिफिथ उनसे परिचय कराती हैं। वे मुझसे बड़े तपाक से मिलते हैं। फिर एक प्रश्न के उत्तर में वे अपनी बेटी के अश्व-प्रेम की कहानी सुनाते हैं, "सन '६५ की बात है। उस समय ये महज १४-१५ साल की रही होगी। कलकत्ता में कान्वेंट फाइनल में थी . . . घुड़सवारी का शौक तो था ही! हमने घोड़ा भी पाल रखा था—'स्वीटी'। एक दिन मेरे एक मित्र आये, उन्होंने वह घोड़ा खरीदने की ख्वाहिश जाहिर की। आर्थिक आवश्यकता ने हमें 'ना' नहीं करने दिया, हमने उसे बेच डाला। चार दिन भी नहीं बीते होंगे कि फिरोजा ने रोना-धोना मचा डाला। हारकर हमने उस मित्र के घर की राह पकड़ी। जंगली पगडंडियां होते हुए हम 'टांड गांव' पहुंचे, तो वहां रात हो आयी थी। एक झोपड़ी में हमने रात गुजारी, और सुबह होते ही हम उस मित्र के यहां पहुंचे। 'स्वीटी' को देखते ही फिरोजा उससे दौड़कर लिपट गयी। और फिर उसकी भावभीनी हिनहिनाहट, और फिरोजा के चुंबनों की बौछार . . . मेरी आंखों में भी आंसू आ गये।" उन्होंने आगे बताया कि इसी इलाके में मि. ग्रिफिथ से उन लोगों की पहली मुलाकात हुई थी। वे भी एक 'स्टड' के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश में थे। फिरोजा को एक हमख्याल मिला। दोनों ने अपनी योजना को आगे बढ़ाया। शंख नदी की तराई में जंगल का यह बड़ा-सा हिस्सा खरीद लिया गया, फिर पेड़ कटवाये, ... बनवाये, विदेशों से 'सैंब' घास मंगायी, घोड़ों के लिए क्रीड़ा-गृह बनवाया। ... के लिए मकान भी बना। इन चार ... तक फिरोजा उसी टांड गांव में ही ...

"यह व्यवसाय आपकी नजर में..." मैं विषय बदलने के लिए श्रीमती ग्रिफिथ से पूछता हूं।

"जी हां, अति प्रशंसनीय है। खासकर उनके लिए जिन्हें इसका शौक है, उन्हें काफी फायदेमंद सिद्ध हुआ है।"

"घुड़दौड़ में तो हजारों, लाखों का वारा-न्यारा होता है, कई लोग लखपति भी बने हैं, कई घरों को उजड़ते हुए भी देखा गया है . . . इस शौक को बढ़ावा देना क्या अनुचित नहीं है?"

वे क्षणभर चुप रहती हैं। फिर कहती हैं, "अन्य शौकों की तरह, बस, यह भी एक शौक है . . . हां, महंगा अवश्य है।"

—पोस्ट बैग-१०, जी. पी. ओ. रांची

इस प्रकार कार्य करो कि तुम्हारी प्रवृत्तियों का सिद्धांत संपूर्ण विश्व के लिए नियम बनाया जा सके।
—कांट

कहानी

दुरवांत

भीमसिंह सुबह से ही पथरौटी आंगन में घिस-घिस करता अपनी कुल्हाड़ी को धार दिये जा रहा था। धीरे-धीरे उसके चारों ओर भीड़ लगती जा रही थी। थर-थर कांपते हृदयों के लिए वही अभयदाता अवलंब बना हुआ था।

"क्या हुआ यदि जान भी चली जाए ? मैं मौत से नहीं डरता !" वह कुल्हाड़ी की धार को अंगुलियों की नोक से परखता हुआ, भीड़ को सुनाते हुए भी-जैसे स्वयं में ही मग्न बड़बड़ा रहा था।

"यदि वे छुरे-पिस्तौल से पूरे हुए तो ?" एक सूखे चेहरेवाले मरियल-से युवक ने कांपती आवाज में आशंका प्रकट की।

● बलवंत मनराल

यह सुनकर भीमसिंह ने कुल्हाड़ी घिसना छोड़, उस युवक की ओर हिकारत से देखा और फिर झुंझलाहटभरे व्यंग्य-स्वर में कहा, "वारे, माई के पूत ! खूब कही तूने भी। देख रे भइया, वो देख . . . क्या है ?"

उधर पास ही तेल-पिलाई लाठी पड़ी थी, लंबी, मोटी ऐसी कि चौड़े पंजों की ही पकड़ में आये, "लाठी के वो हाथ दिखाऊंगा कि—यह गया छुरा, उधर छिटकी पिस्तौल !"
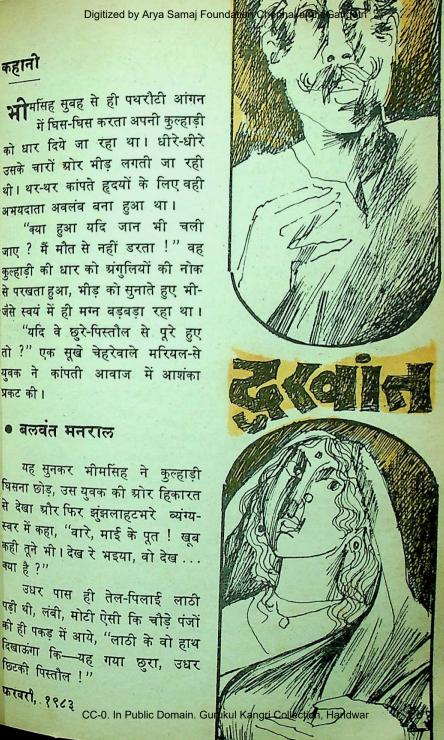
भीमसिंह का साभिनय कथन प्रभावी सिद्ध हो रहा था। अपने आस-पास जमे लोगों के जमघट पर उसने एक दृष्टि डाली और फिर स्वर में पहले अवरोह, बाद में आरोह उत्पन्न करता हुआ बोला, "हां भइया रे, अगर दूर से ही ठांय-ठांय बंदूक चलायें तो बात दूसरी ! फिर भी दो-चार गोली से तो मैं मरनेवाला नहीं, आगे राम मालिक।"

सुनकर जिनके हौसले पस्त थे, उन जवानों में भी जान आने लगी थी।

"क्या हुआ यदि जान भी चली जाए ? मैं मौत से नहीं डरता !" वह कुल्हाड़ी की धार को अंगुलियों की नोक से परखता हुआ, भीड़ को सुनाते हुए बड़बड़ा रहा था . . .

"तो ठाकुर, हमें भी अपने पीछे समझ लो," एक जवान ने उत्साहपूर्ण स्वर में कहा। समर्थन में अनेक आवाजें उठीं, "हां-हां, हम भी !"

●●

पिछली शाम की बात है।

गांव का नाई बनवारी हांफता-कांपता पहुंचा था। पैदल ससुराल की ओर जाता हुआ, आधे रास्ते से ही बदहवास-सा वापस लौट आया था। प्रधानजी के घर के आगे मुड़ा-तुड़ा-सा वह आंखें . करके बैठ गया था। अपने चौतरे . बैठे प्रधानजी गांव के कुछ लोगों के . गपशप कर रहे थे। सबसे पहले . दृष्टि बनवारी पर पड़ी, 'अरे, क्या . रे बनवारी ?' कहते हुए वे छलांग ल. तुरंत बनवारी के पास पहुंचे।

'क्या हुआ ? क्या हुआ ?' कहते . अन्य लोग भी आ पहुंचे।

'क्यों रे, ज्यादा चढ़ा ली है क्या' कहते हुए प्रधानजी ने बनवारी . झिझोड़ा। बनवारी कुछ न बोला, . फटी-फटी आंखों से गुमसुम ताकता र.

बड़ी मुश्किल से बनवारी के . से बोल फूटे थे, 'ससुराल जा रहा था घरवाली को लेने . . . रा. . . रास्ते में . खूंखार चार आदमी, आदमी नहीं डाकू ! . . . हां जी, डाकू ही थे। लाल . आंखें कपाट पर चढ़ी हुईं, मोटे- . काले भुजंग ! डरावने, दैत्य-से।' . फिर उसकी आंखें पलटने लगीं। . लुढ़कने को था कि किसी ने स. किसी ने मुंह में पानी डाला, आंखों . छींटे मारे, चेहरे पर हवा की।

बनवारी ने डरी-सहमी आंखों . चारों ओर देखा। फिर संयत . सलीके से बैठ गया।

'तो फिर क्या हुआ ? क्या . डाकुओं ने ? . . . तेरा उस्तरा . गये क्या ?' प्रधानजी ने हंसी के . कहा, लेकिन उनके कथन में आ.

उत्सुकता का भाव भी था।

'उनमें से एक ने मेरा टेंटुआ कसकर पकड़ लिया, दूसरे ने तलाशी ली। मेरे पास निकलना ही क्या था, सिवा उस्तरा-कैंची-साबुन की टिक्की के ? उनमें से एक धमकाता हुआ बोला कि कल रात तेरे गांव में आएंगे। गांववालों से कह देना, सारा माल-मत्ता पहले से निकाल-कर रखें। वरना...'

यह सुनकर सब सकते में आ गये।

आनन-फानन यह खतरनाक खबर गांव में फैल गयी थी, हर एक की जबान पर यही बात थी।

पौ फटने से पहले ही प्रधानजी पट-वारी को साथ लेकर पुलिस बुलाने के लिए पास के कस्बे की ओर चल दिये थे। गांववाले फिर भी चिंतामुक्त नहीं हुए। न जाने क्या होगा, आज की रात ?

●●

भीमसिंह बेसब्री से इंतजार कर रहा था, आज की रात का। पहले एक स्कूली लड़के ने देखा, फिर देखते ही देखते सारे गांव में खबर फैल गयी—भीमसिंह तड़के सबेरे से ही कुल्हाड़ी पर धार दे रहा है। कहता है कि सारा गांव भीतर दुबका रहे या भाग जाए, पर वह डाकुओं से लोहा लेगा। दस को मारकर मरेगा।

बस, क्या था ? डूबते हुओं को जैसे कोई नाव दीख गयी हो और सारे उस आश्रय से स्वयं को रक्षित अनु-भव करने लगे हों। भीमसिंह के चारों

ओर भीड़ लग गयी थी।

भीमसिंह साथ देने को उत्सुक जवानों को शाबाशी देते हुए अपनी वीरता की धाक जमा ही रहा था कि पंडित दीनचंद्रजी धीमे स्वर में कह बैठे, "शायद, शाम तक पुलिस भी आ जाए। प्रधानजी गये हैं लेने को।"

भीमसिंह को इस वीरत्व-प्रसंग में पुलिस के नाम को घसीटना जंचा नहीं, अतएव वह झुंझलाकर बोला, "पंडितजी, आप तो, बस शंख-घंट ही बजाते रहे जिंदगी-भर, आपको क्या मालूम? पुलिस तो आएगी कल, जब रातभर में किसी के घर कुछ नहीं बचेगा, मर्द वे होते हैं, जो अपनी 'रकछा' खुद करते हैं।"

जोश में आकर एक स्कूली लड़के ने नारा लगा दिया, "भीमसिंह भाईजी की!"

"जय! जय!..." कई नन्हे-मुन्नों का स्वर मिलने से जय-जयकार की आवाज गूंजती हुई दूर-दूर तक फैल गयी।

सब मिलकर डाकुओं का सामना करें—यह बात दिमाग में तो आती थी, पर जबान पर नहीं। मुंह से बोल नहीं फूट पाते थे। जबान खुश्क हो जाती थी।

अपनी जय-जयकार सुनकर भीमसिंह का सर तन गया था। वह मन ही मन सोचने लगा था—क्या इस जय-जयकार की आवाज सात घर दूर, अपने आंगन को झाड़ती पार्वती के कानों में पड़ी होगी? जरूर पड़ी होगी, इतने सारे बच्चे एक साथ चिल्लाये थे, पूरी ताकत से, [illegible] विश्वास ने उसके चेहरे पर एक [illegible] चमक पैदा कर दी थी।

... कुछ रोज पहले की बात [illegible] पार्वती से उसने मीठे स्वर में पूछा [illegible] "पार्वती!... एक बात बताएगी?"

उत्तर में पार्वती ने कुछ कहा [illegible] मुसकराती हुई झुकी-तिरछी नजरों [illegible] उसे ताकने लगी थी, जैसे उससे आगे [illegible] और सुनने की प्रतीक्षा कर रही [illegible] उसके इस अंदाज से प्रोत्साहित हो [illegible] अपना प्रश्न दुहराया था, 'कुछ पूछूं [illegible] साफ-साफ जवाब देगी ना?' पार्वती [illegible] अपनी बड़ी-बड़ी पलकें उठाकर [illegible] और देखा था और फिर शरमीले [illegible] में इजाजत देते हुए कहा था, '[illegible] क्या पूछना है?'

भीमसिंह जो पूछना चाहता [illegible] उसे सीधे-सीधे कहने में उसे संकोच [illegible] रहा था, अतएव बात को घुमाकर [illegible] पूछा था, 'सच बताना, तुझे कैसे [illegible] अच्छे लगते हैं?'

पार्वती पहले न जाने क्या सम[illegible] लजा-सी रही थी, लेकिन इस प्रश्न [illegible] खासकर भीमसिंह की हिचकिचाहट [illegible] भांपकर वह अपने स्वभावानुरूप [illegible] बेबाक हो गयी थी, 'मुझे?... मुझे [illegible] बहादुर आदमी पसंद हैं। डरपोक [illegible] का तो मैं मुंह तक न देखूं।'

पार्वती की बेबाकी से उसकी [illegible] खुल गयी तो उसने भी मुंहफट [illegible]

पूछ डाला था, 'मेरे बारे में तेरा क्या खयाल है ?'

शरारती हंसी के साथ पार्वती ने खनकते हुए स्वर में कहा था, 'तुम्हारे-जैसा डरपोक तो गांव में एक भी नहीं !'

सुनकर उसे धक्का लगा था, 'क्या कहा ? मैं डरपोक हूं ?' उसने इतनी जोर से अपनी मुट्ठी कसी थी कि अंगुलियां दर्द करने लगी थीं।

पार्वती अपनी राह चली गयी थी और वह अपमान-बोध से तिलमिलाता हुआ खड़ा का खड़ा रह गया था...

'तो पार्वती, सुनी तूने मेरी यह जय-जयकार ? है कोई मेरा-सा बहादुर गांव में ?'—भीमसिंह ने जैसे मन-ही-मन पार्वती तक अपना संदेश पहुंचाया.. 'पार्वती ! तेरे खातिर क्या-क्या नहीं करना पड़ा मुझे ? और यह सब भी तो तेरे लिए ही है। अब बोल पार्वती, क्या अब भी तू मुझे दुरदुराती रहेगी ?, ऐसा बहादुर आदमी तुझे और कौन मिलेगा ?'...

पार्वती अब निश्चय ही उसकी होगी, अपनी इस विजय पर बौराता हुआ वह मन-ही-मन जैसे स्वयं ही अपनी जय बोलने लगा था।

दिन बीत गया। रात उतर आयी। उसकी भीमसिंह को उत्कट प्रतीक्षा थी। उसके लिए यह रात आतंकपूर्ण थी, लेकिन. उसके लिए यही रात स्वयंवर की वेला थी। उसकी बहादुरी का प्रमाण

बननेवाली इस रात के बाद ही तो उसके गले में वर-माला पड़नेवाली थी।

अंधेरा गहराते ही वह अपने एक कंधे पर गदा की तरह कुल्हाड़ी धरे, दूसरे हाथ में कसकर पकड़ी लाठी को ठक-ठक पथरौटी आंगनों में बजाते हुए बड़ी मुस्तैदी से गांवभर का चक्कर लगाने लगा था। यह बात दूसरी थी कि वह चक्कर काटते हुए पार्वती के आंगन में अपने कदम बहुत छोटे कर लेता था, बीड़ी सुलगाने, सुस्ताने के बहाने कुछ देर को ठहर जाता था, ऊंचे स्वर में साथियों से बतियाने लगता था। झरोखे से झांकती पार्वती की मोहक मुख-छवि निहारकर उसके मन में, चांदनी की

उजास छा जाती थी। उसका जी करता था कि उसी के आंगन में रात पूरी काट दे लेकिन लोक-लाज भी तो थी।

इसी बीच कस्बे से पुलिस भी आ गयी थी। भीमसिंह पूर्ववत डटा रहा, "पुलिस का क्या भरोसा ? बहादुर खुद पर भरोसा रखते हैं।" उसने अपने साथियों से कहा।

आधी रात बीत चुकी थी। पार्वती के आंगन में पहुंचकर भीमसिंह ने देखा कि झरोखे के पट बंद हो गये थे। डाकुओं के आतंक के कारण सारा गांव जगा हुआ है, फिर पार्वती-जैसी सुंदर लड़की की आंखों में नींद कैसे आ सकती है ? उसने सोचा, लाठी की ठक-ठक कई बार जोर से की। पार्वती फिर अपने झरोखे पर प्रकट हो गयी थी। भीमसिंह ने सोचा, उसके भरोसे ही वह इतनी निश्चित है कि उस डरावनी रात में भी झरोखे के पट खोले इस तरह बाहर झांक रही है, जैसे कोई तमाशा देख रही हो। उस झरोखे को ही लक्ष्य कर उसने ऊंची आवाज में अपने साथियों से कहा, "भइया, देख लिया ना ! पुलिसवाले तो प्रधान के घर के एक कोने में चारपाई पर पसरे आराम से बीड़ी फूंक रहे हैं। वे तो सरकारी चाकर ! उनको क्या पड़ी है, कोई जीये या मरे, गांव की औरत-लड़की की इज्जत से उन्हें क्या मतलब ?...डाकुओं का मुकाबला तो हमको ही करना है।"

यह सुनकर मानों उसने पार्वती के आगे पुलिस को व्यर्थ और स्वयं को परम उपयोगी सिद्ध कर दिया था।

सारे गांव ने वह रात कंपित हृदय सशंकित मन से आंखों पर काटी। डाकू नहीं आये। सबकी जान में जान आयी। ईश्वर के नाम पर की गयी मनौतियों को पूरा करने के वचन दुहराये जाने लगे थे।

चिड़ियों की चहचहाहट शुरू हो गयी थी। पूर्व दिशा में लालिमा उभरने लगी थी। इधर भीमसिंह अपनी मूंछों पर ताव देता हुआ पार्वती के आंगन के सामने से गुजरता ऊंचे स्वर में अपने साथियों से कह रहा था, "देखा, डर गये डाकू। हिम्मत के आगे तो भूत भी भागते हैं। उनको मालूम पड़ गया होगा कि यहां तो मुकाबले पर कई जवानों के साथ भीमसिंह डटा हुआ है।"

भीमसिंह की आवाज सुनते ही उजली भोर की भांति पार्वती अपने दुमंजिले के झरोखे पर उग आयी थी और सुबह के सूरज की तरह चम-चम चेहरेवाले भीम-सिंह की ओर तिरछे नयनों से ताकती हुई मुसकान की उजियारी बिखराने लगी थी। कुछ क्षण के लिए भीमसिंह ठिठककर देखता ही रह गया। उसे पार्वती की इस मुसकान में सराहनापूर्ण प्रीति-भाव की झलक दिखायी पड़ी।

डाका चाहे नहीं पड़ा, पर पुलिस तो पुलिस ! रातभर ऊंघती पुलिस-टुकड़ी अब सजग हो गयी थी। प्रधानजी के घर पर कई लोटे दूध गटगटाने के बाद उनका काम अब तेजी से शुरू हो गया था।

गांव में पूछताछ जारी थी—'डाकू किसे मिले थे? कहां, किस समय मिले थे? डाकुओं का हुलिया क्या था?' —रिपोर्ट दर्ज करानेवाले प्रधानजी को खासी आव-भगत करनी पड़ी थी।

खास पूछताछ के लिए बनवारी नाई को पुलिस अपने साथ ले गयी। थाने पहुंचकर भी बनवारी ने पहले तो वही घटना बार-बार दुहरायी, जो उसने गांव-वालों को सुनायी थी, लेकिन बाद में वह कड़ी पूछताछ से घबरा गया। डाकुओं का ठीक से हुलिया तक नहीं बता सका। —कभी कुछ तो कभी कुछ।

पुलिस तो वह, जो जमीन में दफन वाल को निकालकर उसकी भी खाल निकाले। थानेदार ने गरजकर कहा, "गेंडासिंह! इसे गरमागरम प्रसाद चखाओ और फिर इसे हवालात में बंद कर दो—इस तरह के बयान देता है, जैसे डाकू नहीं, बल्कि बहुरुपिये उसके सामने स्वांग रचाने आये हों।"

पुलिस की गालियां और डंडे बड़े करामाती निकले ... उस पर बनवारी-पर लगाया गया यह आरोप कि वह खुद भी डाकुओं से मिला हुआ जान पड़ता है। पहले डाकुओं का दूत बना और फिर उनको सचेत कर आया होगा कि गांव में हथियारबंद पुलिस पहुंचनेवाली है, इसीलिए डाकुओं ने इरादा बदल दिया होगा।

बस क्या था, पुलिस-प्रसाद बनवारी को हजम नहीं हुआ। उसने सब-कुछ उगल दिया।

एक रोज पहले जिस भीमसिंह की जय-जयकार पूरे गांव में गूंज रही थी, उसी को आज पुलिस पकड़कर ले जा रही थी। सारा गांव उसके नाम पर थू-थू कर रहा था।

भीमसिंह का सिर झुका हुआ था। गांव से बाहर जानेवाली मुख्य सड़क पर जाने के लिए जब उसे पुलिस के साथ पार्वती के मकान के पास से गुजरना पड़ा, तब उसका सिर और अधिक झुक गया। पार्वती का खिल्ली उड़ाता स्वर उसे याद हो आया, 'झूठे! डरपोक! गप्पी!'

पार्वती दुमंजिले पर उसी झरोखे से सटी खड़ी थी। जब तक भीमसिंह झुका सिर लिए नयन-सीमा से ओझल नहीं हो गया, तब तक वह गुमसुम उसी ओर टकटकी लगाये रही। भीमसिंह की भांति ही उसका चेहरा भी निस्तेज पड़ गया था। बेचारा! आखिर उसने यह सब-कुछ उसी के लिए तो किया था।

यदि झुका सिर उठाकर भीमसिंह झरोखे पर खड़ी पार्वती को देखने की बेशरमी कर लेता, तो वह देख पाता, उसकी सहानुभूति से डबडबायी आंखों को!...यह सुख भी उसके भाग्य में कहां? दो दिन में ही सारा खेल चौपट हो जाने के बाद अब वह ऐसा दुःसाहस कैसे कर सकता था, किस बूते पर?

—सी-४-डी/१३ ए, जनकपुरी, नयी दिल्ली

वेदों की रचना में विश्वामित्र का योगदान

● डॉ. रामसरूप 'रसिकेश'

प्राचीन भारत में अनेक विश्वामित्र हुए हैं। एक विश्वामित्र ने राजा सत्यव्रत त्रिशंकु को शरीर-सहित ही स्वर्ग पहुंचाने का प्रयास किया तथा उसके पुत्र ने सत्यवादी हरिश्चंद्र की बड़ी कड़ी परीक्षा ली। दूसरे विश्वामित्र ने मेनका से शकुंतला को जन्म दिया, जो दुष्यंत की पत्नी और भरत की जननी बनी। तीसरे विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को धनुर्वेद की शिक्षा दी तथा स्व-यज्ञ की रक्षा करायी, और भी कुछ विश्वामित्र हुए हैं, यहां हम उन विश्वामित्र के संबंध में चर्चा करेंगे, जिन्होंने और जिनके पूर्ववर्ती तथा परवर्ती संबंधियों ने ऋग्वेद के पूरे तृतीय मंडल की रचना की।

ऋग्वेद के तृतीय मंडल में कुल ६२ सूक्त (मंत्र-समूह) हैं, जिनमें से ४७ तो विश्वामित्र-रचित हैं, शेष १५ उनके दादा कुशिक, पिता गाधि (वागाथिन) तथा पुत्रों द्वारा प्रणीत हैं।

इस मंडल में कुल ६१७ मंत्र हैं, जिनमें से ४९३ विश्वामित्र रचित हैं तथ १२४ उनके वंशजों द्वारा। यहां प्रश्न किया जा सकता है कि कुशिक, गाधि आदि तो कन्नौज के क्षत्रिय शासक थे, उनके वंश विश्वरथ (विश्वामित्र का ब्राह्मण बनने पूर्व का नाम) को कविता करने की क सूझी? उत्तर इसका यह दिया गया है कि ए बार विश्वरथ स्व-दल-बल सहित वसि के आश्रम के पास जा पहुंचे। वसिष्ठ विश्वरथ का ऐसा राजसी ठाठ-बाट आतिथ्य किया कि वे दंग रह गये। विश्व रथ को जब विदित हुआ कि यह स वसिष्ठ की कामधेनु की कृपा का फल है तब उन्होंने कामधेनु लेनी चाही। ज वसिष्ठ ने इनकार कर दिया, तब विश्वर ने उसे बलपूर्वक छीनना चाहा। उ समय उस कामधेनु से ऐसे योद्धा उत्प हो गये, जिनके सामने विश्वरथ की से को मुंह की खानी पड़ी। विश्वरथ क अनुभव हुआ कि क्षात्र-बल से भी ब्राह्म

बल बड़ा होता है, इसलिए उन्होंने तप व स्वाध्याय से ब्राह्मणत्व प्राप्त किया और राजा विश्वरथ से महर्षि विश्वामित्र बन गये।

ऋग्वेद : स्तुति-मंत्रों का ग्रंथ

यह सर्वविदित है कि ऋग्वेद मुख्यतः ऋचाओं (स्तुति-मंत्रों) का ग्रंथ है। उसमें उपदेश तो बहुत ही कम है, देवताओं से धन, संतान, स्वास्थ्य, दीर्घायु, युद्ध-विजय आदि के लिए की गयी प्रार्थनाएं ही अधिक हैं। विश्वामित्र ने स्वरचित ४५ सूक्तों में से १८ तो इंद्र देवता की स्तुति में रचे, १२ अग्नि-देव की और शेष १५ मित्र, वरुण, पूषा, उषा, सविता आदि की स्तुति में।

इंद्र देवता के सूक्त

पौराणिक युग में तो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव हमारे प्रधान देवता बन गये, परंतु वैदिक युग में इंद्र ही वास्तविक देवराज थे, जिनकी स्तुति-प्रार्थनाओं से ऋग्वेद का चतुर्थांश पूर्ण है। ठीक भी है, कृषि-प्रधान देश में बिजली और वर्षा के देव से अधिक कौन पूज्य हो सकता था? यह बात अलग है कि विष्णु के अवतार श्री कृष्ण ने आकर व्रजवासियों को इंद्र की पूजा छोड़कर गोवर्धन की पूजा करने की प्रबल प्रेरणा दी। इसमें आश्चर्य या संकोच की कोई बात नहीं, क्योंकि व्यक्तियों के समान जातियों के जीवन में भी उतार-चढ़ाव हुआ ही करते हैं तथा समय की मांग को देखते हुए, होने भी चाहिए। इंद्र विषयक कुछ मंत्र इस

विश्वामित्र

प्रकार हैं:

(क) युद्ध में सहायता के लिए प्रार्थना

मशुनं हुवेम मघवानभिद्रधस्मिन् भरे नृतयं वाजसातौ। श्रृण्वतमुग्रमूतये समत्सु घ्यन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥

(ऋग्वेद ३।३०।२२)

अर्थात, 'हम अन्नप्रदायक, संग्राम में पुकार सुननेवाले, युद्धों में शत्रु-नाशक, वैरी-संपत्ति के विजेता, सुखकारी, ऐश्वर्य-युक्त, सर्वोत्तम नेता इंद्र को पुकारें।'

(ख) सोम-पानार्थ निमंत्रण

तिष्ठा हरी रथ आयुज्यमाना याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ। पिवास्यन्धो अभिसृष्टो अस्मे इन्द्र स्वाहा ररिमा ते मदाय।

(ऋग्वेद ३।३५।१)

अर्थात, 'हे इंद्र! तनिक ठहरो। तुम्हारे रथ में घोड़े जोड़े जा रहे हैं। हमारे समीप ऐसे आओ, जैसे वायु देवता स्व-अश्वों पर

आते हैं। हमने तुम्हारी प्रसन्नता के लिए सोम की आहुतियां दी हैं। हमारी प्रार्थना सुन उनका पान करो।'

नदियों से वार्तालाप

ब्राह्मण बनने के बाद विश्वामित्र पिजवन राजा के पुत्र सुदास के पुरोहित बने तथा पर्याप्त दान-दक्षिणा पाकर सतलुज-ब्यास के संगम पर पहुंचे। संयोगवश नदियों में बाढ़ आयी हुई थी और लुटेरे पीछा भी कर रहे थे। संकट की उस घड़ी में विश्वामित्र और नदियों में जो सुंदर संवाद हुआ, वह ऋग्वेद के तीसरे मंडल के ३३वें सूक्त में सुरक्षित हैं। पहले तो नदियों ने नीची होने में कुछ आनाकानी की, किंतु अंत में वे दयार्द्र होकर नीची हो गयीं और विश्वामित्र अपने रथ व छकड़ों सहित पार पहुंच गये। यह घटना सहज ही उस कथा की याद दिलाती है, जिसमें हजरत मूसा मिस्र से लौटते समय समुद्र पार कर गये थे। इस सूक्त के पांचवे मंत्र में विश्वामित्र ने अपने को 'कुशिकस्य सूनुः' अर्थात राजा 'कुशिक का पुत्र' कहा है, किंतु परवर्ती साहित्य से प्रमाणित होता है कि वे कुशिक के पुत्र नहीं बल्कि पौत्र थे। वह मंत्र द्रष्टव्य है—

गमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप
मुहूर्तमेवैः।
प्रसिधुमच्छा वृहती मनीषा वस्युरह्वे
कुशिकस्य सूनुः॥

(ऋग्वेद ३। ३३। ५)

अर्थात, 'हे जलपूर्ण नदियो! मुझ विश्वामित्र के सोमनिष्पादक वचन पर विश्वास कर मुहूर्तभर अपनी गति रोक दो। रक्षा का इच्छुक, कुशिक का पुत्र (वंशज) मैं तुम्हारी भारी स्तुतिपूर्वक प्रार्थना करता हूं।'

इस रोचक घटना व मंत्र का उल्लेख आज से लगभग ३,००० वर्ष पूर्व महर्षि यास्क ने अपने अमर ग्रंथ 'निरुक्त' में किया है। ऋग्वेद ३। २६। १, ३ में भी विश्वामित्र ने अपने परिवार के लोगों के लिए '**कुशिवास : कुशिकेभिः।** अर्थात, 'कुशिकवंशी' शब्द का प्रयोग किया है।

उषा-वर्णन

सुकवि तो कुरूप पदार्थों में भी सौंदर्य खोज निकाला करते हैं, फिर भला सहज सुंदरी उषा विश्वामित्र की कल्पना को कैसे प्रभावित न करती? अनेक वैदिक ऋषियों के समान इन्होंने भी ऋग्वेद, तृतीय मंडल के ६१वें सूक्त की रचना उसी की स्तुति-प्रार्थना के लिए की। निदर्शनार्थ एक मंत्र दर्शनीय है—

अच्छा वो देवीभुषसं विभार्णी प्र वो भरह
वं नमसा सुवृक्तिम्।
ऊर्ध्वंमधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना
रुरुचे रण्वसंहक॥

(ऋग्वेद ३। ६१। ५)

अर्थात, 'हे स्तोताओ! यह शोभमान देवी उषा तुम्हारे लिए ही चमक रही है। तुम इसकी नमस्कार-पूर्वक स्तुति करो। इस मधुवर्षिणी का प्रकाश ऊंचे द्यौलोक में फैल गया है। यह सुंदरी स्व-ज्योति

से सब लोकों को जगमगा रही है।'

गायत्री-गायक विश्वामित्र

इसी प्रकार विश्वामित्र ने शेष सूक्तों में मित्र, वरुण, पूषा, सोम, सविता आदि अनेक देवों की स्तुति-प्रार्थनाएं की हैं। सविता (उदीयमान सूर्य) से संबंधित गायत्री-मंत्र तो सर्वाधिक पवित्र और सर्व-वेद-सार ही माना जाता है तथा हम लोग उसका श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन अनेक बार जप करते हैं।

यह मंत्र अन्य वेदों में भी निबद्ध होने से इसे 'गायत्री-मंत्र' तथा सवितृ-देव से संबंधित होने के कारण 'सावित्री गायत्री' भी कहते हैं। इसकी महत्ता का विशेष कारण यह है कि इसमें सविता देव से उत्तम तेज तथा प्रखर बुद्धि की कामना की गयी है। वह मंत्र तथा उसका अर्थ इस प्रकार है—

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो योनः प्रचोद्यात ।

(ऋग्वेद ३।६२।१०, यजुर्वेद ३।३५ ५०, सामवेद १४६२)

अर्थात—'हम सब सविता देव के श्रेष्ठ तेज का ध्यान करें, जो देव हमारी बुद्धियों को सुकार्यों में प्रेरित करें।'

ऊपर हमने संक्षेप में विश्वामित्र के वैदिक काव्य के भावों और विचारों की ही झलक प्रस्तुत की है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज से सहस्रों वर्ष पूर्व एक तेजस्वी राजा ने, परवर्ती गौतम तथा वर्धमान के समान, राज-पाट को त्याग-कर तप-त्याग द्वारा ब्राह्मणत्व प्राप्त किया और ऐसी सुंदर काव्य-रचना की, जो संसार के प्राचीनतम धार्मिक ग्रंथ ऋग्वेद में भी संकलित की गयी।

—डी-१४१, राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली-६०

अमरीका के दो रेलवे स्टेशन कॉनकार्ड और बोस्टन के बीच सफर करते हुए दो व्यक्तियों ने जुआ खेलना शुरू किया लेकिन दोनों में से किसी ने भी छोटा होना नहीं चाहा—शो हो न सका और यह खेल आज भी जारी है। सन १९०९ में आरंभ होकर यह एक हाथ आज भी दो व्यक्तियों के हाथों में है। हालांकि, इस खेल को आरंभ करनेवाले दोनों व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी है। जीवित खिलाड़ियों में से एक जॉर्ज गुडस्पीड इस खेल में ४१ वर्षों से शामिल हैं और दांव में लगे पैसों की रखवाली भी करते हैं।

●

"हम फ्रिज खरीद तो लें, पर उसका भुगतान कैसे करेंगे, यह भी सोचा है तुमने !"

"ऊहं, फिर वही 'कनफ्यूज' करनेवाली बात ! मैं कितनी बार समझा चुकी हूं कि एक साथ दो समस्यायों को सुलझाने से कभी लाभ नहीं होता। भुगतान की बात पर बाद में बात कर लेना !" पत्नी ने कहा।

व्यंग्य

नेता अनंत कथा अनंता

● डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी

दल को बार-बार लिखने से 'दलदल' हो जाता है। देश में राजनीतिक दल इतने बन चुके हैं कि राजनीतिक क्षेत्र में 'दलदल' हो गया है। वर्णमाला के अधिकांश अक्षर विभिन्न दलों के नाम-करण-संस्कार करने में काम आ चुके हैं। पार्टियों का 'मैन्यूफैक्चरिंग' चालू है और यही रफ्तार रही तो शेष अक्षर भी काम आ जाएंगे।

रामलीला और रासलीला करने-वालों की अगणित पार्टियां हैं। सभी रामलीला करनेवाले धनुष-यज्ञ, सीता-हरण, ताड़का-वध, लंका-दहन तथा भरत-मिलाप आदि लीलाएं दिखाते हैं। रास-लीला करनेवाले माखन-चोरी, चीर-हरण, उद्धव-लीला, कंस-वध आदि का प्रदर्शन करते हैं। प्रत्येक मंडली का एक स्वामी होता है। सभी विभिन्न प्रकार के मुखौटे लगाते हैं, विचित्र वेशभूषाएं धारण करते हैं और लीलाएं दिखाकर अपनी रोजी कमाते हैं।

फिल्म बनानेवाली कंपनियां भी नयी-नयी तरह की फिल्में बनाती हैं, फार्मूले लगभग एक से हैं। नायक-नायिकाएं भी सुपरिचित हैं। फिल्में भी धन कमाने के उद्देश्य से बनायी जाती हैं। ये भी समाज-सुधार अपना उद्देश्य घोषित करती हैं। कुछ फिल्में 'हिट', कुछ 'सुपरहिट' और कुछ 'फ्लाप' हो जाती हैं। प्रसिद्ध अभि-नेता अथवा अभिनेत्री को इसलिए आधार बनाते हैं कि फिल्म 'हिट' हो जाए।

राजनीतिक पार्टियां भी नेता-आधा-रित होती हैं। नेताओं तथा अभिनेताओं की इतनी 'डिजाइनें' हैं कि व्यक्ति गिनते गिनते असमंजस में पड़ जाता है। दोनों का ही काम अपने को उस रूप में प्रदर्शित करना है, जो वे वास्तव में नहीं हैं; वा

से वे बातें करनी, जिनसे उनका कुछ लेना-देना नहीं है; प्रत्यक्ष में वे आचरण करना, जिनका उनके जीवन से दूर का भी रिश्ता नहीं है। अनेक कार्यों में नेता और अभिनेता जुड़वा भाइयों-जैसे लगते हैं।

नेता यदि जनता में अपनी लोकप्रियता का दम भरता है तो अभिनेता की लोकप्रियता का भंडार किसी प्रकार कम नहीं है। सभी भाषाओं के सभी पत्र

एवं पत्रिकाएं अपने मुख-पृष्ठों पर इनकी छवियां संजोकर ही अपना जन्म सफल बनाती हैं। दोनों ही प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करते हैं, सही टैक्स न ये देते हैं, न वे देते हैं। दोनों ही इतने व्यस्त रहते हैं कि इन्हें समय पर 'रिटर्न' भरने की याद ही नहीं रहती। पढ़ाई-लिखाई भी दोनों के लिए अनिवार्य नहीं है। साधु की जाति नहीं पूछी जाती, उसी प्रकार नेता तथा अभिनेता के पूर्व-जीवन का ब्यौरा जानना आवश्यक नहीं समझा जाता।

दक्षिण के कुछ अभिनेता राजनीति में घुसपैठ कर गये हैं, कुछ घुसने की तैयारी में हैं। नेताओं का कहना है, 'हमारे अंगने में तुम्हारा क्या काम है ?' अभिनेता कहते हैं, 'घर हमने ले लिया है तेरे घर के सामने।' फिल्मों में अभिनेताओं की अलग-अलग 'इमेज' होती हैं। कुछ प्रेम-मार्ग के पथिक माने जाते हैं, कुछ हाथापाई करने के कुशल खिलाड़ी होते हैं, कुछ रक्तिम नेत्रों से दर्शकों के दिलों को हिलाने की क्षमता रखते हैं, कुछ भांड़ों तथा विदूषकों का अभिनय करने में निपुण माने जाते हैं।

राजनीतिक नेता भी अनेक डिजाइनों के होते हैं और उनकी छवियां भी किस्म-किस्म की होती हैं। डॉक्टरों में कुछ सामान्य रोगों का इलाज करते हैं, कुछ आंख, नाक, दांत, कान आदि के रोगों के विशेषज्ञ होते हैं। नेताओं में भी कई किस्में होती हैं—

डी-लक्स नेता सबसे ऊंची किस्म

का होता है। इसका कारोबार उतना ही व्यापक पैमाने पर होता है, जितना किसी बड़े व्यापारी का। इसकी शाखाएं देश के कोने-कोने में पायी जाती हैं।

किसान-नेता किसानों की बीमारियों के 'स्पेशलिस्ट' होता है। यह आवश्यक नहीं है कि वे स्वयं खेती करते हों। वे किसान भाइयों को जीवित अवस्था में ही स्वर्ग दिखाने के आश्वासन देकर अपना राज-नीतिक हल चलाते हैं।

मजदूर-नेता हड़ताल करवा देने में सिद्धहस्त होता है। आवश्यक नहीं है कि उसके किसी दूर के रिश्तेदार ने भी फावड़ा चलाया हो किंतु यह माना जाता है कि उसका जन्म प्रत्येक मजदूर को एक कार तथा एक बंगले का स्वामित्व दिलाने को ही हुआ है।

विद्यार्थी-नेता कुलाधिपति की खाट खड़ी करने का विशेषज्ञ होता है। वह इस-लिए सर्वप्रिय होता है कि विद्यालय तथा विश्वविद्यालय को अधिक से अधिक समय तक बंद करवाकर सभी कर्मचारियों को 'कंपलीट रेस्ट' प्रदान कराता है तथा 'हार्ट-अटैक' ग्रौर 'रक्त-चाप'-जैसी बीमा-रियों से बचाता है। सिनेमा तथा बसवालों की अकड़ को भी निकालकर उन्हें अनु-शासित बनाता है।

धार्मिक नेता अधिकतर शरीर से स्वस्थ पाया जाता है। उसके मुखारविंद से अधिकतर वे शब्द सुनने को मिलते हैं, जो शब्दकोष में विराजमान हैं किंतु दैनिक जीवन में उपयोग में नहीं लाये जाते।

अध्यापक-नेता विद्यार्थियों का उद्धार करने के अतिरिक्त अन्य सब कार्य करने में निपुण होते हैं। इनमें से अधिकांश को बुद्धि का अजीर्ण होता है। इनका प्रिय रस चुनाव-रस होता है।

असंतुष्ट नेता वह माना जाता है, जो कुरसी पर बैठ चुका हो किंतु कुरसी की कोई-सी टांग टूट जाने से कुरसी पर से

गिर पड़ा हो अथवा जिसकी कुरसी पर बैठने की साधना की अवधि पार हो चुकी हो। ज्ञापन का 'ड्राफ्ट' बनाने में ग्रौर उस पर अधिक से अधिक हस्ताक्षर कराने में यह 'विशेषज्ञ' माना जाता है।

उत्सव-नेता को आप प्रायः उद्घाटन करते, विद्यालयों के वार्षिक उत्सवों में मुख्य अतिथि का आसन ग्रहण करते, किसी धर्मशाला अथवा सार्वजनिक शौचालय की नींव धरते, अथवा किसी संस्कृत-पाठशाला में पुरस्कार-वितरण समारोह

की अध्यक्षता करते पाएंगे। इस किस्म का नेता हंसी-खुशी के समारोहों में जाना पसंद करते हैं, जहां उपद्रव होने की संभावना हो, वहां से बचते हैं।

साहित्यिक नेता किसी एक भाषा का चूरन बनाकर उसकी गोलियां बांटते फिरते हैं। अभिनंदन-समारोह, पुस्तक-विमोचन, स्वर्गीय साहित्यकारों के जन्म-दिवस अथवा मृत्यु-दिवस आदि की अध्यक्षता करते हैं और सब स्थानों पर, एक 'पेटेंट' भाषण देते हैं कि दिवंगत साहित्यकार की स्मृति में एक स्मारक बनाया जाए तथा उसकी अप्रकाशित कृतियों का एक संग्रह सरकार द्वारा प्रकाशित किया जाए।

चंदा-नेता चंदा जमा करने का 'स्पेशिलिस्ट' होता है। इसकी तीन उप-जातियां होती हैं, लाखों रुपये जमा करनेवाले हजारों रुपया जमा करनेवाले तथा सैकड़ों रुपये जमा करनेवाले। परीक्षाओं में उपयोग में लायी जानेवाली श्रेणियों की भांति ये चंदा-चयन के क्षेत्र में प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी तथा तृतीय श्रेणी में रखे जा सकते हैं। राजनीतिक पार्टियों में प्रथम श्रेणी के विशेषज्ञों को विशिष्ट सम्मान प्रदान किया जाता है। उनकी बात पार्टी-नेता भी ध्यान से सुनता है और चुनाव-विजय-युद्ध में उसको महाबली का दरजा दिया जाता है।

चमचा नेता किसी न किसी बड़े नेता के आसपास मंडराते रहते हैं, उसकी चमचागीरी करते हैं, उसके चुनाव में जी तोड़कर परिश्रम करते हैं, साथ में अपने छोटे-छोटे कार्य कराते रहते हैं, जैसे राशन की दुकान ले लेना, मिट्टी के तेल का डिपो खोल लेना, इलाके के थानेदार पर रोब डाल देना, बैंक से छोटा-मोटा 'एडवांस' ले लेना, आसपास की किसी सार्वजनिक जमीन पर कब्जा कर लेना आदि। एक तरह से ये नेतागीरी के खुदरा व्यापारी
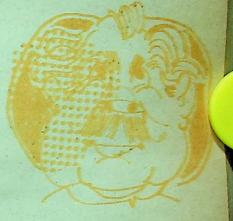
होते हैं।

दलबदल नेता बहुत चतुर किस्म की नस्ल का होता है। वो गिरगिट की तरह रंग बदलता है। इस किस्म के नेता वैसे ही होते हैं, जैसे व्यापार में 'सुखसाजी' पार्टनर होता है। ये सुख के साथी होते हैं। इनमें से कुछ तो ऐसे 'विशेषज्ञ' हो गये हैं कि एक दिन में चार-चार बार दल-बदल करते पाये गये हैं। ये भाग्यशाली माने जाते हैं, धन तथा पद दोनों का आनंद पूर्णरूपेण प्राप्त करते हैं।

स्वयंभू नेता विचित्र किस्म के नेता होते हैं। वे जीवनभर अपने आप को नेता समझते रहते हैं। इसकी तनिक भी चिंता नहीं करते कि इस संसार का कोई भी जीवित मनुष्य अथवा पशु उनको नेता मानता हो। वे इसी खयाल में मगन रहते हैं कि उन जैसे हीरा-नेता की परख करनेवाला कोई जौहरी इस पृथ्वी पर पैदा ही नहीं हुआ।

टुटपूंजिया नेता छोटे-छोटे पदों से अपनी नेतागीरी की इच्छा की पूर्ति कर लेता है। किसी स्कूल का मैनेजर बन जाना, किसी कॉलेज की प्रबंध-समिति में घुस जाना, किसी मंदिर या धर्मशाला की चौधराहट ले लेना आदि-आदि।

नेता अनंत हैं, नेताओं की कथा अनंत है। स्वयंसेवकों का अभाव है वे ब्लैक-मार्केट में भी उपलब्ध नहीं। चुनाव के दिनों में अच्छी कीमत पर मिलते हैं। स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व नेता कम थे, कार्यकर्ताओं की संख्या अधिक थी। निःस्वार्थ सेवा करनेवाले स्वयंसेवक इतिहास की वस्तु बन गये हैं। अकबर की पंक्तियां याद आ रही हैं—

नेताओं की धूम है
और फालोअर कोई नहीं
सब तो जनरल हैं
मगर आखिर सिपाही कौन है?

—१३/७, शक्तिनगर दिल्ली-७

इनके भी बयां हैं जुदा जुदा

कौन मुझसे पूछता है रोज इतने प्यार से
काम कितना हो चुका है, वक्त कितना रह गया!

—हसन नईम

हर शख्स राह पर है, कोई हमसफर नहीं
इस दौर में किसी को किसी की खबर नहीं

—मुशीर झनझानवी

रास्तो! क्या हुए वो लोग, जो आते-जाते
मेरे आदाब पे कहते थे कि 'जीते रहिए'

—अजहर इनायती

गया था दिन के उजाले में नक्दे-जां लेकर
अजीब शहर था! कोई भी जागता न मिला

—सगीर अहमद सूफी

प्यास बढ़ने लगी मुसाफिर की
दूर दरिया कोई नजर आया

—मखमूर सईदी

खुदा आसमानों पे तनहा है शायद
चलो चलके उसको हिफाजत करें

—महेश मंजर

किसलिए सबको अजब बोझ लगा सर अपना
लेके पहुंचा जो मैं हाथों में कटा सर अपना

—मनमोहन तल्ख

इस आस में कि खुद से मुलाकात हो कभी
अपने ही दर पे आप ही दस्तक दिया किये

—राजनारायण राज

पोर्टलुई में स्थापित डॉक्टर मणिलाल मगनलाल की कांस्य प्रतिमा →

मारीशस की स्वतंत्रता के सेनानी

● डॉ. धर्मेन्द्र प्रसाद

'नौसेरवां' नामक जहाज में डरबन से बंबई आते हुए ३० अक्तूबर, १६०१ को महात्मा गांधी मारीशस की राजधानी पोर्टलुई पहुंचे। उनका जहाज १६ नवम्बर तक वहीं लंगर डाले रहा। इस अवधि में गांधीजी ने मारीशस के भारतीयों की दशा का अध्ययन किया। वहां बंधुआ श्रमिकों के जीवन पर अपेक्षाकृत कम अंकुश थे। उनमें राजनीतिक चेतना भी थी। वस्तुतः अनेक श्रमिक लघु कृषक बन गये थे। कुछ तो चीनी की कोठियों के स्वामी भी बन गये थे, परंतु अधिकांश कोठियों पर अभी फ्रेंच सामंतों का अधिकार था, जहां श्रमिकों के साथ गुलामों-जैसा व्यवहार किया जाता था। कठिन परिश्रम करने पर भी उन्हें नित्यप्रति यातनाएं दी जाती थीं। पोर्टलुई के ताहेर बाग में १३ नवम्बर को एक सार्वजनिक सभा में महात्मा गांधी ने मारीशस के चीनी-उद्योग की अपूर्व सफलता में भारतीयों की अनन्य भूमिका की चर्चा की थी। उन्होंने इस बात पर गहन दुःख भी प्रकट किया था कि बदले में भारतीयों को दुर्भाग्यपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ रहा था।

श्वेत सामंतों के अत्याचार

स्वदेश पहुंचकर गांधीजी ने २७ दिसम्बर को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता-अधिवेशन में दक्षिण अफरीका तथा मारीशस में भारतीयों की दशा पर एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था, जिसमें श्वेत सामंतों द्वारा उन पर किये जा रहे अत्याचारों की कहानी कही गयी थी। कांग्रेस ने मारीशस में स्थानीय संगठन की स्थापना करने का निश्चय किया, परंतु तत्काल कुछ भी नहीं किया जा सका। महात्मा गांधी के लिए संभव नहीं था कि दक्षिण अफरीका में उलझाव के बीच समय निकालकर मारीशस के लिए अधिक कुछ कर सकते। अतएव उन्होंने अपने एक मित्र युवा बैरिस्टर डॉ. मणिलाल मगनलाल को मारीशस भेजा। प्रवासी भारतीयों के

न्यायोचित अधिकार के लिए संघर्ष करना मणिलाल के जीवन का मिशन था। जन-साधारण उन्हें 'मणिलाल डॉक्टर' कहता था। आज भी मारीशस में उन्हें इसी नाम से आत्मीयतापूर्वक स्मरण किया जाता है।

गांधीवादी रणनीति

मणिलाल अक्तूबर, १९०७ में मारीशस पहुंचे तथा द्वीप में केवल चार वर्ष तक ठहरे थे। परंतु यह छोटी अवधि मारीशस के राजनीतिक इतिहास में संस्मरणीय सिद्ध हुई। इसी समय श्रमिकों के मुक्ति-आंदोलन की ठोस आधारशिला रखी जा सकी तथा उठाये रहते थे। वे स्वावलंबी कार्यकर्ता थे। स्वयं की सुख-सुविधा की उन्हें कभी भी चिंता नहीं रहती थी।

उन दिनों द्वीप में पूर्णतः सामंती दबदबा था। भारतीय कृषकों द्वारा दिये गये गन्ने को चीनी की कोठियों में कम तौला जाता था। इस व्यापक ठगी के विरुद्ध आवाज उठाने का किसी में साहस नहीं था। भारतीय श्रमिकों को द्वीप में परिचय-पत्र लेकर चलना पड़ता था, अन्यथा उन्हें जेल भेज दिया जाता था। एक दिन की अनुपस्थिति के लिए

वे महात्मा गांधी के निर्देश पर अच्छी-खासी चलती वकालत छोड़कर स्वदेश से हजारों मील दूर, समुद्र-पार मारीशस गये थे और तब से प्रवासी भारतीयों के, चाहे वे मारीशस में जा बसे थे, या फिजी में, न्यायोचित अधिकार के लिए संघर्ष करना उनके जीवन का एकमात्र ध्येय बन गया था। ये थे युवा बैरिस्टर डॉक्टर मणिलाल मगनलाल, जिन्हें जनसाधारण 'मणिलाल डॉक्टर' के नाम से पुकारता था।

एक ऐसी सामाजिक संरचना की ओर मारीशस बढ़ने लगा, जिसमें प्रवासी भारतीय, जिनके बल पर सन १८१० में अंगरेजों ने उस द्वीप को जीता था, अपने अधिकारों का उपयोग कर सकते थे। मणिलाल की रणनीति पूर्णतः गांधीवादी थी। वे सार्वजनिक सभाएं करते, जोशीले भाषण देते, विविध मांगों के प्रस्ताव पास करते, व्यक्तियों एवं समाज की ओर से आवेदन-पत्र अधिकारियों के सम्मुख प्रस्तुत करते तथा समाचार एवं सूचना-पत्रों के माध्यम से जनता का मनोबल ऊंचा

दो दिन की मजदूरी काट ली जाती थी। जिन शर्तों के अंतर्गत ये श्रमिक भारत से लाये गये थे, फ्रेंच सामंतों ने उन सभी शर्तों को ताक पर रख दिया था और स्वेच्छानुसार नये-नये नियम बना लिये थे। भारतीयों को अपनी सामाजिक एवं धार्मिक प्रथाएं निभाने की पूरी स्वतंत्रता नहीं थी। कोठियों में प्रातःकाल हाजिरी लेते समय उन्हें गालियां दी जातीं तथा मारा-पीटा जाता था। सहनशीलता की सीमा टूटने पर अनेक श्रमिकों ने आत्म-हत्याएं कर ली थीं।

द्वीप की जनसंख्या में दो-तिहाई भारतीय थे, परंतु विधानसभा एवं नगर-परिषद में उनका प्रतिनिधित्व नहीं था। श्रमिकों के प्रति कोई सज्जन सहानुभूति भी नहीं दिखला सकते थे। जरमनी में जन्मे फ्रांसीसी डॉ. आदोल्फ द प्लेवित्ज अपने श्वसुर की कोठी की देखभाल करने मारीशस आये थे। उन्होंने श्रमिकों के प्रति सहानुभूति दिखलाना आरंभ किया। फलस्वरूप पोर्टलुई के सार्वजनिक स्थल पर

बेंत से उनकी पिटाई कर दी गयी।

आयोग की नियुक्ति

इस प्रकार के वातावरण में पीड़ित भारतीयों के पक्षधर बनकर मणिलाल मारीशस गये थे, परंतु उन्होंने अपने कार्य को एक महान नेता के समान पूरा किया। विश्व-जनमत भी मारीशस के भारतीयों की दुर्दशा के प्रति सहानुभूति-पूर्वक आकर्षित हुआ। अंततः समस्याओं की जांच हेतु सर फ्रैंक स्वेथेनहम की अध्यक्षता में ब्रिटिश शासन ने एक रॉयल कमीशन नियुक्त किया।

यह कमीशन १८ जून, १९०९ में मारीशस पहुंचा। स्थानीय नेता के अभाव में मणिलाल ने ही कमीशन के सम्मुख भारतीय समुदाय की वकालत की थी। यह एक अपूर्व अवसर था। कमीशन के सम्मुख मणिलाल ने भारतीयों का पक्ष बड़ी कुशलता एवं असाधारण नैतिक बल के साथ प्रस्तुत किया था। फ्रेंच सामंतों ने श्रमिकों को डरा-धमकाकर कमीशन के सामने गवाही देने से रोकने का भरपूर प्रयास किया, परंतु मणिलाल द्वारा निर्मित नवीन राजनीतिक वातावरण में गंभीर धमकियों के बावजूद काफी संख्या में भारतीय श्रमिक एवं कृषक गवाही देने आये।

उस समय मणिलाल के लिए यह वस्तुतः प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था, जब कमीशन ने उनसे कहा कि वे इस

दोषारोपण के लिए सुबूत उपस्थित करें कि लघु कृषकों के चीनी की कोठियों में गन्ने कम तौले जाते हैं। तब कोठी के मालिकों के भय से कोई सुबूत पेश करने को तैयार नहीं हो रहा था। दैवयोग से एक कृषक आगे आ गया। क्वार्टर मिलिशियां ग्राम के निवासी जयपाल मराज ने मोन-द-जे-अलमा कोठी के उदाहरण प्रस्तुत कर उपरोक्त दोषारोपण की सच्चाई में कमीशन को विश्वास दिला दिया।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार एवं महात्मा गांधी संस्थान, मारीशस के संचालक डॉ. के. हजारीसिंह के मतानुसार, "जयपाल मराज को काफी साहस संचित करना पड़ा होगा, क्योंकि उन्होंने कमीशन के सामने एक ऐसी कोठी की अनियमितताओं का पर्दाफाश किया था, जो उस समय के सर्वाधिक प्रभावशाली राजनीतिज्ञ मिस्टर हेनरी लेकलियाज़ों की थी।" बदले में मिस्टर लेकलियाजों ने क्वार्टर मिलिशियां के थानेदार को कहकर जयपाल मराज को थाने में बुलवाया तथा स्पष्टीकरण मांगा। कमीशन को स्वभावतः यह अनुचित लगा कि उसकी कार्यवाही में इस प्रकार पुलिस हस्तक्षेप करे। भारतीयों के प्रति किये जा रहे अत्याचार की कथा से कमीशन अब सहमत हो गया था। फलस्वरूप कमीशन ने एशियाइयों को विधानसभा एवं नगर-परिषद में समुचित प्रतिनिधित्व देने की जोरदार सिफारिश की थी।

अत्याचार एवं शोषण के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए मणिलाल ने द्वीप में पहुंचते ही 'श्री हिन्दुस्थानी' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया था। इसके मुख्य-पृष्ठ पर 'व्यक्तियों की स्वतंत्रता, मानव समाजों में बंधुत्व तथा जातियों में समानता,' आदर्श वाक्य के स्थान पर छपता था। इस पत्र में बहुधा लिखा जाता था कि 'दूसरों की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप किये बिना प्रत्येक व्यक्ति को स्वेच्छापूर्वक जीवनयापन की स्वतंत्रता है। चूंकि प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का ही रूप है तथा उसका वास्तविक लक्ष्य अध्यात्म-साधना है, अतएव किसी भी व्यक्ति अथवा जाति को यह नैतिक अधिकार नहीं है कि वह दूसरे को गुलाम बनाये, उस पर प्रभाव स्थापित करे तथा निजी स्वार्थ के लिए उसका शोषण करे।'

मारीशस के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण अफरीका महादेश के लिए, जो १८वीं तथा १९वीं सदी में गुलामों के व्यापार का सर्वाधिक बड़ा बाजार बना दिया गया था, और जहां अफरीकी एवं एशियाई जनता को अपमानजनक ढंग से क्रमशः 'क्रियोल' एवं 'कुली' कहा जाता था; यह सब किसी क्रांतिकारी दर्शन से कम नहीं था। आरंभ में यह पत्र गुजराती तथा अंगरेजी में और बाद में हिंदी तथा अंगरेजी में प्रकाशित हुआ था।

फ्रेंच पूंजीपतियों ने मणिलाल के

विरुद्ध सर्वदा षड्यंत्र किये। कई बार उनसे अभद्र व्यवहार किया गया। उन पर ईंट, पत्थर, टमाटर और अंडे फेंके गये। कतिपय भारतीयों ने भी स्वार्थ-वश पूंजीपतियों का साथ दिया, परंतु मणिलाल ने धैर्य नहीं खोया। गांव-गांव पहुंचकर वे सामंती शोषण के खिलाफ आंदोलन चलाते रहे। इसी बीच सन १६११ के प्रारंभ में वे महात्मा गांधी से मिलने दक्षिण अफरीका गये। कुछ महीने बाद जब वे वापस आये, तब मारीशस के सामाजिक जीवन में शांति थी। उनके आंदोलन को बुनियादी लक्ष्यों की प्राप्ति हो गयी थी। अतएव २३ दिसंबर, १६११ को वे मारीशस से चले गये।

अब मणिलाल डॉक्टर फीजी में प्रवासी भारतीयों के सहायतार्थ गये। तीस वर्ष बाद जब मारीशस के भारतीय, देश की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाने लगे थे, तब वे पुनः मारीशस आये। निवर्तमान प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने तब उनका स्वागत करते हुए द्वीप के लोगों की भावना को इन शब्दों में व्यक्त किया था, "महाभारत के योद्धाओं के समान दीर्घ काल के बाद आप वापस आये हैं और यह संपूर्ण देश आपके चरणों पर है।" सन १६५६ में जब उनकी भारत में मृत्यु हुई, तब मारीशस के लोगों ने कृतज्ञतापूर्वक उनके असाधारण कार्यों को स्मरण किया था, जिनके फलस्वरूप उन्हें राजनीति की सीढ़ी पर प्रथम सुर-क्षित पग रखने का अवसर मिला था। पोर्टलुई के कंपनी-बाग में उनकी एक कांस्य प्रतिमा लगायी गयी है, जिसके पादपीठ पर लिखा है, 'वे पीड़ित लोगों के हमदर्द थे तथा उनकी सेवा करते थे।' इस प्रतिमा में पूर्व देशीय स्वाभिमान सहित सिर ऊंचा किये उन्हें दिखलाया गया है। वे यहां एक अमर बैरिस्टर के समान दीखते हैं, जो पोर्टलुई की बहु-जातीय जनता और इस नगर में पहुंचने-वाले अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों को निरंतर स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं समानता के पावन सिद्धांत की मानों व्याख्या कर रहे हों।

—जिला पुरातत्त्व संघ, मंडला, म. प्र.

फ्लोरिडा (अमरीका) के एक व्यवसायी ग्रांट जी. वैल्स ने सोचा कि चलो रियो-डी-जेनिरो में छुट्टी मना आयें। कार्यालय की छत पर हेलीकॉप्टर खड़ा था हवाई अड्डे तक छोड़ आने के लिए। जैसे ही वैल्स साहब हेलीकॉप्टर में चढ़े कि उनके हाथ में लगा ब्रीफ केस न जाने कैसे खुल गया? ब्रीफ केस का खुलना था कि डॉलरों के सैकड़ों नोट हवा में तैरकर सड़क पर दूर-दूर तक बिखर गये। राहगीरों ने उन नोटों को इकट्ठा करने में मदद तो की, लेकिन कई राहगीरों ने उन नोटों को वैल्स साहब को देने के बजाय, अपनी जेबों के हवाले किया और अपनी राह ली। वैल्स को यात्रा स्थगित करनी पड़ी, और दोबारा बैंक जाना पड़ा। जब वह दोबारा हेलीकॉप्टर पर चढ़े, तब उन्होंने भली-भांति देख लिया था कि ब्रीफ केस ठीक तरह से बंद तो है कि नहीं।

नृत्यनिपुण पिशाच

• प्रो. श्रीरंजन सूरिदेव

आचार्य संघदासगणी (अनुमानतः ईसा की तृतीय-चतुर्थ शती) द्वारा प्राकृत-गद्य में रचित महान कथा-ग्रंथ 'वसुदेवहिंडी' भारतीय संस्कृति का महाकोष है। 'वसुदेव-हिंडी' का अर्थ है : कृष्ण के पिता वसुदेव की हिंडन-यात्रा या परिभ्रमण की कथा। इसमें वसुदेव ने सौ वर्षों तक संपूर्ण भारत का भ्रमण किया है और लंबी यात्रा से लौटने पर अपने बेटों-पोतों को यात्रानुभव या आत्म-कथा सुनायी है।

'वसुदेवहिंडी' को गुणाढ्य की पैशाची-भाषा में श्लोकबद्ध 'बृहत्कथा' (जो अब लिखित रूप में प्राप्य नहीं है) का जैन रूपांतर माना जाता है। संघदासगणी ने भारतीय संस्कृति के वर्णन-क्रम में लोक-रूढ़ियों या जन सामान्य विश्वासों पर भी कथा के माध्यम से प्रभूत प्रकाश डाला है। भूत, बैताल, राक्षस, पिशाच आदि पर विश्वास करना उस युग की लोक-संस्कृति का एक अंग था। संघदासगणी ने अन्य देव-योनियों के अंतर्गत भूत, बैताल, यक्ष, राक्षस, पिशाच, किन्नर, किंपुरुष, महोरग आदि का विशिष्ट वर्णन किया है, जिसमें लोक-संस्कृति के अनेक मूल्यवान पक्ष उद्भावित हुए हैं। जैनागमों में उन भूत, पिशाच आदि को 'व्यंतर' देवों की श्रेणी में रखा गया है।

बत्तीस पत्नियों का वरदान

'वसुदेवहिंडी' में भूत-गृहों (प्रा. : भूतघर) का प्रसंग भयोत्पादक वातावरण के विका[स] के क्रम में उपस्थित किया गया है। भू[त] शरणागत रक्षक और दयालु होते थे और स्वप्न में वरदान भी देते थे। कथा है कि वेश्या से वंचित धम्मिल्ल जब अगडद[त्त] ('अगड़धत' शब्द इसी का परवर्ती विका[स] है) मुनि को प्रणाम करके चला, तब रा[स्ते] में उसे भूतघर मिला। उस समय स[ंध्या] हो चुकी थी। धम्मिल भूतघर में प्रवि[ष्ट]

हुआ और तपस्या से दुर्बल होने के कारण वह वहीं सो गया। तभी भूतघर के देव ने स्वप्न में उससे कहा कि तुम आश्वस्त रहो। तुम्हें बत्तीस पत्नियां प्राप्त होंगी, जिनमें कुछ तो विद्याधरियां, कुछ राजकुमारियां और कुछ वणिक-कन्याएं होंगी।

एक अन्य कथा में उल्लेख है कि वसंततिलका गणिका की मां ने चारुदत्त को योगमद्य पिलाकर बेहोश कर दिया था और उसी हालत में उसे भूतघर में डलवा दिया था। उस समय भूतों के द्वारा जान से मार डाले जाने का लोक-विश्वास प्रचलित था। इसलिए, षड्यंत्रकारिणी गणिका-माता ने मूर्च्छित चारुदत्त को भूतघर में डलवा दिया था, ताकि उसके मर जाने पर भी लोग यही समझें कि भूत ने उसे मार डाला।

शरणागत-रक्षक : भूत

इसी प्रकार, भूत के द्वारा की गयी शरणागत-रक्षा की भी एक कहानी है, जो काफी मनोरंजक है: एक ब्राह्मण था। बहुत उपाय करने पर उसकी ब्राह्मणी के एक पुत्र हुआ। उस गांव में एक राक्षस रहता था, जिसके भोजन के निमित्त कुल-क्रमागत रूप से प्रत्येक घर से एक पुरुष अपने को निवेदित कर देता था। जब उस ब्राह्मण-पुत्र की बारी आयी, तब ब्राह्मणी भूतघर के पास जाकर रोने लगी। भूत को उस पर दया हो आयी। उसने प्रकट होकर शरण में आयी ब्राह्मणी से कहा, "मत रोओ। मैं तुम्हारे पुत्र की रक्षा करूंगा।" जब ब्राह्मण-पुत्र ने अपने को राक्षस के लिए प्रस्तुत किया, तब भूत ने उसे वहां से अपहरण कर एक पहाड़ की गुफा में ले जाकर रख दिया और उसकी सूचना ब्राह्मणी को देकर वह अदृश्य हो गया। किंतु होनी को कौन टाल सकता है? गुफा में रहनेवाला अजगर उस ब्राह्मण-पुत्र को निगल गया। इस प्रकार, इस कथा में भावी की प्रबलता को दर्शाया गया है तथा भूत को दयालु एवं शरणागत-रक्षक देव के रूप में चित्रित किया गया है।

पर्यटक-मन : बैताल

बैताल से संबद्ध एक कथा इस प्रकार है: एक दिन, रात के समय चंपापुरी (प्राचीन अंग-जनपद : वर्त्तमान बिहार का भागलपुर एवं कोशी-प्रमंडल) में वसुदेव अपनी विद्याधरी पत्नी गंधर्वदत्ता के भीतरी घर में बिछावन पर आंखें मूंदे पड़े थे, तभी वे किसी के हाथ के स्पर्श से चौंक उठे

और सोचने लगे कि हाथ का यह स्पर्श तो अपूर्व है। यह गंधर्वदत्ता के हाथ का स्पर्श नहीं मालूम होता। मणिमय दीपक की रोशनी में जब उन्होंने आंखें खोलीं, तब एक भयंकर रूपधारी बैताल दिखायी पड़ा। वसुदेव सोचते ही रहे, 'सुनते हैं; बैताल दो प्रकार के होते हैं—शीत और उष्ण। जो बैताल उष्ण होते हैं वे विनाश के लिए शत्रुओं के द्वारा नियुक्त होते हैं। शीत बैताल व्यक्ति को नित्य कहीं ले जाता है और फिर वापस ले आता है।'

इसके बाद बैताल वसुदेव को बल-पूर्वक खींच ले चला। बैताल उन्हें गंधर्व-दत्ता के गर्भ-गृह से बाहर ले गया। सभी दासियां सोयी दिखायी पड़ीं। बैताल ने 'अवस्वापिनी' विद्या से उन्हें गहरी नींद में सुला दिया था। इसलिए, पैर से छू जाने पर भी वे जागती नहीं थीं। सदर दरवाजे पर पहुंचकर बैताल बाहर निकला, लेकिन उसने किवाड़ नहीं लगाये। उसके बाहर निकलते ही किवाड़ के दोनों पल्ले आपस में मिल गये और दरवाजा अपने-आप बंद हो गया!

बैताल वसुदेव को श्मशान-गृह में ले गया। वहां उन्होंने एक मातंगवृद्धा को कुछ बुदबुदाते हुए देखा, जिसने बैताल से कहा, "भद्रमुख! तुमने मेरा काम पूरा कर दिया, बहुत अच्छा किया।" इसके बाद बैताल ने वसुदेव को वहीं छोड़ दिया और हंसते हुए अदृश्य हो गया।

इस कथा से स्पष्ट है कि बैताल कई प्रकार के होते थे। उस युग में तंत्र-साधना करनेवाले तांत्रिक स्त्री-पुरुष किसी को वशंवद बनाने के लिए बैतालों को नियुक्त करते थे। वे बैताल नींद में सुला देने, अंतर्हित होने आदि की विद्याओं से संपन्न होते थे। साथ ही, बैताल से आविष्ट व्यक्ति उसकी आज्ञा के पालन में विवश हो जाते थे।

नृत्य-निपुण पिशाच

संघदासगणी ने राक्षस-पिशाच आदि की आकृति और भूतों के रूप-रंग, आयुध और पहनावे के साथ ही उनके द्वारा मध्य-रात्रि में किये जानेवाले नृत्य का भी वर्णन किया है। कथा है कि एक बार आधी रात के समय वसुदेव अचानक जग पड़े और अपनी बगल में सोयी किसी अज्ञात सुंदर स्त्री को देखकर सोचने लगे कि मुझको छलने के लिए कोई राक्षसी या पिशाची तो नहीं आ गयी है! फिर सोचा, वह भी संभव नहीं है; क्योंकि राक्षस या पिशाच तो स्वभावतः क्रूर और भयंकर रूपवाले, साथ ही प्रमाण से अधिक मोटे होते हैं।

एक दूसरी कथा में भूतों के परिधान और आयुधों तथा नृत्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है—एक बार राजा मेघरथ देवोद्यान की ओर अपनी रानी प्रियमित्रा के साथ निकला और वहां वह उसके साथ यथेच्छित रूप में रमण करने लगा। उसी क्रम में वह वहां अशोक-वृक्ष के नीचे मणि-कनक-खचित शिलापट्ट पर बैठा। तभी बहुत सारे भूत वहां आये। वे अपने हाथों

में तलवार, त्रिशूल, भाला, वाण, मु
और फरसा लिये हुए थे। शरीर
उन्होंने भस्म लपेट रखा था। उनके
भूरे और बिखरे हुए थे। उन्होंने गले
अजगर लपेट रखा था। उनके पैर,
और मुंह बड़े विशाल थे। उन्होंने
चूहे, नेवले और गिरगिट के कर्ण-फूल
रखे थे। वे बार-बार अनेक प्रकार से
रूप बदल रहे थे। उन भूतों ने राजा
रथ और रानी प्रियमित्रा के आगे
और वाद्य के गंभीर स्वरों के साथ
किया।

इस प्रकार, शास्त्र-गंभीर कथा
संघदासगणी द्वारा 'वसुदेवहिंडी' में विभि
देवयोनियों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत कि
गया है, जिसमें उनकी न केवल क
चेतनामूलक रचनात्मक प्रतिभा प्रतिबिम्बि
हुई है, अपितु उनके द्वारा किये गये
और ब्राह्मण-परंपरा के लोक-विश्वासों
समेकित तलस्पर्श अध्ययन का मर्म
रूपायित हुआ है।

—संपादक : 'परिषद्-पत्रि
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना

एक भिखारी ने अपने साथी भिखा
से एक संपादक के घर की ओर इशा
करते हुए कहा: "भूलकर भी कभी
घर में भीख मांगने मत जाना। इसे
प्रकट करने की आदत पड़ी हुई है।"

पंख जल गये ममता की आग में

• नवीन नौटियाल
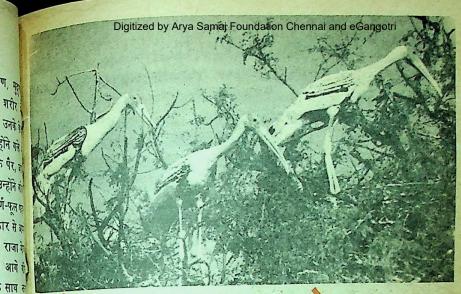
स्टोर्क या चमरघेंच उन प्रवजनकारी पक्षियों में है, जिनको लेकर दुनियाभर के पक्षी-विज्ञानी अतिरिक्त रुचि लेते हुए शोधरत हैं।

अलग-अलग अंचलों में इस अद्‌भुत पक्षी को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। श्वेत ग्रीवावाला लकलक या गलगल, खुली चोंचवाला घोंघिल, सतरंगे परोंवाला जांघिल और हंस की तरह श्वेत पक्षी को जन-भाषा में गबर कहते हैं।

ममता की वेदी पर

जान लियो ने अपने संस्मरणों में एक स्टोर्क-परिवार के बारे में इस कहानी का जिक्र किया है—कई वर्षों से एक स्टोर्क-परिवार एक ऊंचे मकान के ऊपर घोंसला बनाकर रह रहा था। एक दिन मूसलाधार बारिश के बीच इस घोंसले पर बिजली गिर पड़ी। लकड़ियों से बने घोंसले में आग लगनी ही थी। नन्हे-नन्हे बच्चों के बीच भयाक्रांत मादा भी बैठी थी। बच्चे इस लायक नहीं थे कि उड़ सकते, और वात्सल्यमयी मां को यह गवारा न था कि अपने बच्चों को जलता छोड़ अपनी जान बचा ले। परिणाम यह हुआ कि वह भी अपने बच्चों के संग जल मरी।

आम तौर पर यह पक्षी झेंपू होता

है और जल्दी ही किसी के मकान या छज्जे पर अपने नीड़ का निर्माण करने को राजी नहीं होता। लेकिन किसी तरह अगर यह एक बार इसके लिए तैयार हो जाए और घोंसला बना ले तो फिर निश्चित रूप से कई पीढ़ियों तक इस घरौंदे में रहता रहेगा। अगर छोड़ना ही पड़े, तो वह इस तरह का निर्णय तब ही लेगा, जब कोई वास्तविक खतरा सिर पर आ पड़े। समय बीतने के साथ-साथ इसके लकड़ी की डंडियों-सींकों से बने घोंसले का आकार क्रमशः बढ़ता ही जाता है। यहां तक कि इसकी ऊंचाई कई फुट तक हो जाती है।

सधी हुई उड़ान

स्टोर्क की भव्य उड़ान इतनी सधी हुई होती है कि शायद दुनिया में दूसरा कोई भी पक्षी उड़ने के मामले में इसका मुकाबला नहीं कर सकता। इस जलचर-पक्षी के साथ प्रकृति ने एक [illegible] अन्याय किया है—अन्य पक्षियों [illegible] तरह चहकने की सामर्थ्य [illegible] पक्षी में नहीं होती। [illegible] प्रकार यह पक्षी [illegible] घटनाओं का मूक [illegible] भर बनकर रह जाता है। [illegible] इससे क्या ? वह अपनी वेढब [illegible] को ही चिमटे की तरह चटचटाते [illegible] अपनी इस कमी को पूरा कर लेता है। [illegible] जब वह अपनी लंबोतरी चोंच को चटच[illegible] हुए तीखी आवाज करता है, तब हर [illegible] का ध्यान खींच लेता है।

आम तौर पर इसकी ऊंचाई [illegible] ५ फुट तक होती है। अब तक पक्षी-वि[illegible] नियों ने इसकी लगभग बीस प्रजा[illegible] खोज निकाली हैं। मूल रूप से स्टोर्क [illegible] यूरोप का वासी है, परंतु असह्य [illegible] पड़ने पर अपनी जान बचाने के [illegible] भारत या इसी के समान अपेक्षा[illegible] गरम इलाकों में शरण लेता है।

झीलों, तालों और नदियों के कि[illegible] मिलनेवाले इस बदसूरत जीव की [illegible] बेहद गंदली और अनाकर्षक होती [illegible] इस पक्षी के बारे में कई प्रकार के [illegible] विश्वास प्रचलित हैं। कुछ लोग यह मा[illegible] हैं कि इसका सिर फोड़कर एक खास [illegible] का पत्थर—जहर-मार—हासिल [illegible] जा सकता है। लेकिन इस तरह की [illegible] करनेवाले यह भी कहते हैं कि [illegible] इसका सिर इसके मरने के बाद फोड़ा [illegible]

तो ऐसी कोई भी दवा नहीं मिल पाएगी।

अगर स्टोर्क को किसी तरह पाल लिया जाए, तो यह बड़ा दिलचस्प जीव साबित होता है। जब वह मालिकों के बच्चों के साथ पकड़न-पकड़ाई का खेल खेल रहा होता है तो हर देखनेवाला इसकी खेल-भावना की दाद देता है। पर, शायद मनुष्य का खेल-भावना नाम की शह से विश्वास उठ चुका है। अगर जरा भी खेल-भावना उसमें बाकी होती, तो वह इस दुर्लभ पक्षी का खात्मा करने के लिए इस कदर हाथ धोकर न पड़ा होता! आज भी चोरी-छिपे स्टोर्क का शिकार जारी है। शायद, इसकी परिणति इसके संपूर्ण विनाश के रूप में होगी।

—१५-राजपुर रोड, देहरादून-१

छाया : डा. शंभुनाथ राय

'हे प्रिये ! आजकल वल्लभाएं सिरों में कदंब के नवीन परागों से युक्त तथा केतकी के फूलों की मालाएं रचकर धारण करती हैं।' प्रिय अपनी प्रेयसी को संबोधित करके 'मेघदूत' में वर्षा-ऋतु का वर्णन करता है। इसी तरह के अनेक वर्णन कालिदास व जयदेव की रचनाओं में केवड़े के बारे में मिलते हैं। यही तो वे वन-पुष्प हैं, जिन्हें जनसाधारण उनके प्राकृतिक रूप में शृंगार एवं मांगलिक कार्यों में प्रयोग करता है, जबकि संभ्रांत वर्ग इसके अनेक परिवर्तित एवं कृत्रिम रूपों पर रीझा हुआ है। बहुत कुछ चंदन-जैसा ही केवड़ा भी भारतीय संस्कृति के मूल से जुड़ा है। आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में इसका प्रयोग होता आ रहा है। किस सीमा तक इसका वर्णन व उपयोग प्राचीन साहित्य और समाज का अंग रहा है, यह इस तथ्य से लक्षित होता है कि संस्कृत भाषा में केवड़े के अठारह पर्यायवाची हैं। जो अत्याधिक रोचक हैं, वे हैं—सूची या सूचिकापुष्प, क्रकचच्छद : (क्रकच-आरा), धूलिपुष्पिका, कण्टदला, स्थिरगंधा तथा इंदुकलिका।

पर अत्यधिक प्रचलित नाम है केतकी। अन्य भाषाओं में इसके नाम इस प्रकार हैं---हिंदी, उड़िया, मराठी व गुजराती में केवड़ा, उड़िया में केतकी भी, बंगाली में केया या केवड़ी; तेलुगु में मुगली, केतकी या गजांगी, तमिल में तजै या तलै, कन्नड़ में क्यादगी, मलयालम में कैंदा, अरबी में कादी, सिंहली में वीटा केपिया, निकोबारी में लेरम, मलय में पंदान तथा कोंकणी में कवास।

केवड़ा, जिसकी सुगंध और सौंदर्य की चर्चा कालिदास और जयदेव-जैसे कवियों ने अपने काव्यों में की है। केवड़ा केवल शृंगार ही नहीं, चिकित्सा-कार्यों के लिए भी उपयोगी माना जाता है। लेखक कर्नाटक राज्य में उप-अरण्यपाल हैं। प्रस्तुत लेख में उन्होंने केवड़े से संबंधित उपयोगी जानकारी दी है . . .

केवड़े की मंजरी पर सोता है सांप

● डॉ. शोभनाथ राय

यही वे भूभाग हैं, जहां पर केवड़े के गुम पाये जाते हैं।

केवड़े का पेड़ पश्चिम में मारीशस से पूर्व में पॉलीनेशिया तक पाया जाता है। यह अफरीका, भारत, आस्ट्रेलिया व हिंद और प्रशांत महासागरों के द्वीपों पर मिलता है। यह पैंडेनेसी-परिवार का पेड़ है और इसका लैटिन नाम 'पैंडेनस' है, जो मलय भाषा के 'पंदान' शब्द पर आधारित है। अंगरेजी में इसे 'स्क्रूपाइन' या 'दलदल का अनानास' कहते हैं। केवड़े का मूल स्थान पूर्वी द्वीप-समूह माना जाता है। इसकी विश्व में ढाई सौ प्रजातियां हैं और उनमें से छत्तीस भारत में पायी जाती हैं। यह एक पृथक लिंगी पौधा है अर्थात नर और

केवड़े की नर पुष्प-कलिका

केवड़े का मादा पुष्प, जो फूल बन चुका है
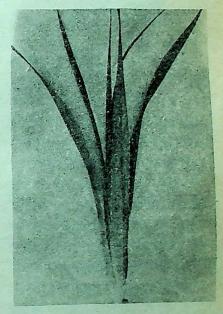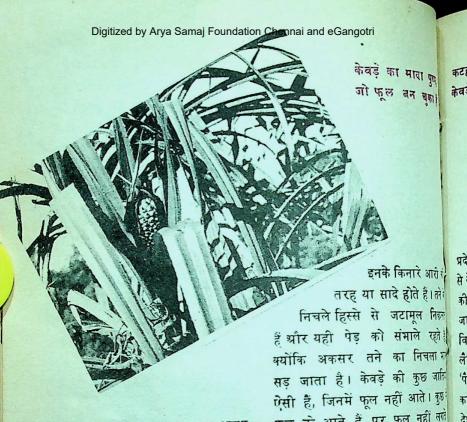
मादा फूल अलग-अलग पेड़ों पर लगते हैं। नर तथा मादा पेड़ों के गुम अकसर अलग-अलग पाये जाते हैं। एक गुम में एक प्रकार के पेड़ बहुतायत से मिलते हैं। यह इस कारण भी हो सकता है कि इसका संवर्धन वानस्पतिक होता है। केवड़े की शृंगारिक प्रसिद्धि नर फूलों की मंजरियों से ही है। यह पेड़ अपने ढंग का निराला होता है तथा अभेद्य झाड़ियों के झुरमुट से लेकर छोटे पेड़ के आकार-जैसा होता है। तलवार-जैसी लंबी पत्तियां तने के सिरों पर गुच्छे के रूप में लगती हैं।

इनके किनारे आरी की तरह या सादे होते हैं। तने के निचले हिस्से से जटामूल निकलते हैं और यही पेड़ को संभाले रहते हैं, क्योंकि अकसर तने का निचला भाग सड़ जाता है। केवड़े की कुछ जातियां ऐसी हैं, जिनमें फूल नहीं आते। कुछ में फूल तो आते हैं, पर फल नहीं लगते। श्रीलंका में एक ऐसी जाति है, जिसकी पत्ती कस्तूरी-जैसी सुगंधवाली होती है, पर उसमें शायद ही कभी फूल लगे हों, फल तो अब तक देखा ही नहीं गया है। इसकी एक जाति सुंदर धारीदार पत्तियों वाली होती है। केवड़े के फूल, डालों के सिरों पर कोश में बंद मंजरी के रूप में लगते हैं। इनकी मनोहारी सुगंध तो सर्व विदित है, पर खासी पर्वतमालाओं और बंगाल के कुछ भाग में एक ऐसी जाति पायी जाती है, जिसके फूल अप्रिय सुगंध वाले होते हैं।

हमारी पर्वतमालाओं और [illegible]

कटहल सरीखा
केवड़े का फल

प्रदेश में समुद्रतट से लेकर बारह सौ मीटर की ऊंचाई तक केवड़ा पाया जाता है। इसकी वह प्रजाति, जिससे विश्वविख्यात इत्र व जल प्राप्त होता है, लैटिन भाषा में 'पैंडेनस फैसिकुलैरिस' या 'पैंडेनस ग्रोडोरैटिमस' कहलाती है। यह काफी सघन उगनेवाला पौधा है और हमारे देश के तटवर्ती प्रदेश तथा अंडमान द्वीप-समूह पर इसके गुम बहुतायत से पाये जाते हैं। इस प्रजाति का पेड़ पांच-छह मीटर की ऊंचाई तक उग सकता है। उड़ीसा के कुछ हिस्सों तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में, जौनपुर व गाजीपुर में, इसकी खेती इत्र व जल के लिए की जाती थी, पर अब कद्रदानों की कमी तथा कृत्रिम सुगंधियों की होड़ में बेचारा केवड़ा पीछे छूटा जा रहा है! अब जौनपुर में, जो मुगलकाल से ही (संभव है, उसके पूर्व से भी) इत्र के लिए विख्यात था, केवड़े की खेती नहीं होती। देश की समूची उत्पत्ति का नब्बे प्रतिशत केवड़ा उड़ीसा के गंजम जिले में होता है। यहीं पर देश के विभिन्न भागों से इत्रफरोश अपने कारीगरों को भेजकर इत्र व जल तैयार कराके मंगवाते हैं। इसके इत्र व जल का विशेष कारोबार कन्नौज, बरहामपुर, जौनपुर, गाजीपुर तथा कुंभकोणम में होता है।

केवड़े में फूल प्रायः वर्षा ऋतु के प्रारंभ में ही आते हैं। यों, नीची जमीन पर कुछ पेड़ों में इक्के-दुक्के फूल सालभर आते रहते हैं। इसे पेड़ों की डालियों या अंतर्भूस्तरियों (सकर्स) से उपजाया जाता है। तीन-चार साल में पेड़ मझोले

कद का हो जाता है। एक मौसम में एक पेड़ में तीस-चालीस मंजरियां लगती हैं। नर पेड़ की ही पुष्प-मंजरियां उपयोगी होती हैं। वैसे तो नर एवं मादा, दोनों तरह के फूलों की पुष्प-कोपलें (ब्रैक्ट्स) एक-जैसी ही सुगंध देती हैं, पर नर फूल कुछ विशेष तरह का होता है। मादा फूल कुछ कटहल या अनानास-जैसा होता है, और वही आगे चलकर फल बनता है।

धार्मिक व सांस्कृतिक पक्ष

धार्मिक अनुष्ठानों एवं केश-विन्यास में केतकी पुष्प का उपयोग सर्वविदित है। कोंकण प्रदेश में नागपंचमी, कृष्ण-जन्माष्टमी तथा गणेशोत्सव में केवड़े के फूल का बड़ी ही श्रद्धा से उपयोग होता है।

कुछ लोकोक्तियों के अनुसार केवड़े के गुम में विषधर का निवास होता है। कोंकण में कहा जाता है कि सांप केवड़े की सुगंध से मोहित होकर इसकी मंजरी पर फन रखकर सोता है, पर इसका कोई प्रत्यक्षदर्शी मुझे अब तक नहीं मिला है।

अपरिमित विविधता

केवड़े की प्रजातियों में अपरिमित विविधता है। विविध उपयोग के लिए इसकी विविध प्रजातियां उगायी जाती हैं। इसकी पत्तियों का प्रयोग छप्पर, चटाई, पंखा, झोला, टोपी आदि बनाने के लिए किया जाता है। पत्तियों के रेशों से रस्सी तथा बोरे बनाते हैं। कुछ द्वीपों पर केवड़े की एक जाति को फलों के लिए उगाया जाता है। कहीं-कहीं पर इसकी कलियों और कोंपलों का प्रयोग खाने के लिए कि[illegible] जाता है। इसकी जड़ों में मिट्टी को बां[illegible] की शक्ति होती है, अतः इसका प्र[illegible] भूसंरक्षण के लिए भी किया जाता है।

शृंगार से औषधि त[illegible]

केवड़े की मंजरी का पानी के [illegible] आसवन कर और भाप को चंदन के [illegible] या शुद्ध द्रव्य पैराफिन पर उतारकर [illegible] बनाया जाता है। चंदन के तेल पर उता[illegible] हुआ इत्र मूल्यवान होता है। हमारे दे[illegible] में इसका तेल नहीं बनाया जाता।

केवड़े को आयुर्वेद में कफ नाड़ी [illegible] विकार में गुणकारी, सौख्यकारी त[illegible] मधुर गुणोंवाला माना गया है। पत्ति[illegible] का उपयोग कोढ़, चेचक, खुजली त[illegible] हृदय और मस्तिष्क की व्याधियों में गु[illegible] कारी माना गया है। फूलों को केश-दुर्गं[illegible] नाशक, मदनोन्मादक मानते हैं। इस[illegible] पराग-कण कान और सिर के दर्द में लाभ[illegible] कारी होते हैं। इसी तरह पुष्प-शाख [illegible] अर्क पशुओं के गठिया में लाभकारी हो[illegible] है। तेल और इत्र को उत्तेजक तथा श्वा[illegible] विकार में लाभकारी माना गया है[illegible] सिर-दर्द तथा गठिया में भी तेल [illegible] इत्र का प्रयोग करते हैं। इसकी मंज[illegible] को शक्तिवर्धक माना जाता है!

—उप-अरण्यपाल, कारवार-५८१३[illegible]

> **जो नेकी का प्रेमी है, उसके हृदय [illegible] देवताओं का वास है और वह भगवा[illegible] के साथ रहता है।**
>
> —एमर्[illegible]

उपन्यास-अंश

डॉ. भगवतीशरण मिश्र

कैसा लगता है ? कैसा लगता है, जब वर्षों से संजोयी मान्यताएं और आकांक्षाएं पेड़ों के पीले पात की तरह एक-एककर झरने लगती हैं ? कैसा लगता है, जब वर्षों का पाला विश्वास केले के छिलके की तरह परत दर परत छिलने लगता है, जैसे आप सचमुच पतझड़ के पेड़ की तरह नंगी हुई जा रहीं हों, गरमी की नदी की तरह निरावरण। ऐसा ही लग रहा था सुषी को। उस घड़ी को वह हजार-हजार बार कोस रही थी, जिसमें उसने सागर से पुनः मिलने का निर्णय लिया था। नहीं, कोई भी निर्णय इस तरह भावनाओं के उद्रेक के बीच नहीं लिया जाता। शीघ्रता सदा घातक होती है। अगर उसे परत दर परत खुलने का अहसास होता, तो वह कभी सागर के आमने-सामने होने की गलती नहीं करती।

"मन को नहीं बांधो, तो मन तुम्हें भटकाएगा ही। दिवा-स्वप्नों की मरीचिका के पीछे भागता, मरुभूमि का मृग बन आया तुम्हारा मन, फिर तुम्हें कहीं का न छोड़ेगा। भटका-भटकाकर वह समाप्त ही कर देगा तुम्हें, लुभावने सपनों की सुनहली रेत में।"

क्या कुछ कहे जा रहे थे प्रोफेसर सागर ! कुछ समझ नहीं पा रही थी सुषी। क्यों उसके भूत को इस तरह आवरणहीन करने पर उतारू थे वह ?

आखिर, इसी सबके लिए तो उसने उनसे मिलना नहीं चाहा था ? अमृत-बूंदों की तलाश में आये किसी तृषित को जहर के घूंट पीने को क्यों बाध्य होना पड़ता है बार-बार ? आखिर, यही नियति है-क्या उसकी ? गत कई वर्षों से तो यही घटता रहा है उसके साथ लगातार।

"आप बहुत निष्ठुर बन रहे हैं ? आखिर, इस भाषण के लिए तो मैं नहीं आयी थी आपके पास ?"

टेढ़ी-सी एक मुसकान खिल उठी है प्रोफेसर सागर चौधरी के होंठों पर। मुंह से कुछ नहीं बोलने पर चेहरे का रंग और आंखों से झांक रही वितृष्णा-मिश्रित उपेक्षा बहुत कुछ कह जाती है।

"आप नहीं बोलते कुछ। आना बुरा लगा शायद ? अजमेर आयी थी, सोचा, आबू आकर आपसे मिल ही लूं। कैसी चल रही है आपकी यह रिसर्च ?"

"मेरी बात छोड़ो। कॉलेज से छुट्टी ली है कुछ आराम करने के लिए। रिसर्च तो बहाना है।"

"तो आपको भी आराम की जरूरत पड़ गयी ?" वह आंखों में चमक भरकर पूछती है।

वह कुछ उद्विग्न-से होते हैं। फिर कुछ सोचकर जोड़ते हैं, "केवल बाहर भागनेवाला ही आराम नहीं खोजता। भीतर चलते-चलते भी आराम की जरूरत महसूस होने लगती है।"

अब उसके मुसकराने की बारी है, पर मुसकान है कि उभरती ही नहीं। पैंतीस की उम्र भी क्या होती है? पर लगता है, इसी उम्र में कई जिंदगियां भोग चुकी है सुषी। राह-किनारे मिले मित्रों की तरह मुसकान भी साथ छोड़ गयी उसका, वह नहीं जानती। कॉलेज के दिनों में वह खिलखिलाकर हंसने के लिए बदनाम थी। पर अब पता नहीं, हंसे कितने वर्ष गुजर गये।

"भीतर चलने की तो आपकी आदत पुरानी है। अगर आप इस तरह अंतर्मुखी नहीं होते तो . . . ?"

"तो तुम बाहर भागने को विवश नहीं होतीं। यही न ?" वह बीच ही में जोड़ते हैं, तो उसे बुरा नहीं लगता। वह जानती है कि उसके भटकाव के मूल में सागर का अंतर्मुखी होना ही नहीं है। बाहर तो वह भागती ही, सागर की जगह कोई और पुरुष होता तब भी। उच्छृंखल सरित-प्रवाह को जब पहाड़ों के प्राचीर नहीं बांध पाते, तब राह की चट्टानें कितनी देर बाधा बन सकती हैं ?

"तुम्हारी महत्त्वाकांक्षाओं की दौड़ समाप्त हुई, सुषी ?"

क्यों पूछते हैं सागर, यह बात ? वह जानती है, वह अपने को और

अधिक छल नहीं सकते । और, न सुषी ही, अब पीछे मुड़कर देखने को है। चली है। काफी चली है सुषी, गत बारह वर्षों में। एक युग ही तो निकल गया चलते। न जाने कितने उद्देश्यहीन भटकाव। असंख्य छल। आत्मवंचना और बहुत कुछ ! अब उलटी यात्रा संभव है क्या ? नदी मुड़ी है पीछे को पर्वत की ओर ? सच, निचाई ही खींचती है नदी को, नारी को भी !

क्या-क्या सोचने लगी है सुषी ? पर, वह आयी ही यहां क्यों, माउंट आबू के इस होटल 'वैली-व्यू' में ? था कुछ ऐसा, जो उसे खींच लाया। लोग कहते हैं, आशा बड़ी चीज है। सब कुछ छूट जाए और इसकी डोर हाथ में रहे, तब विश्वास टूटते-टूटते भी नहीं टूटता। विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी कहीं से चमकी आशा की एक किरण प्राणों में नया उत्साह भर देती है।

"बहुत कठोर बन रहे हैं न आप ? ये बातें हमारे बीच शोभती हैं क्या ? आखिर हम पति-पत्नी बननेवाले थे !" वह किसी तरह पूछती है।

"पति-पत्नी ?" आश्चर्य से भर आये हैं वह। "कैसे पति-पत्नी ? कौन किसका पति, कौन किसकी पत्नी ? . . . और उन सबका क्या होगा, जो इन पांच वर्षों के दौरान तुम्हारे जीवन में आये ? उनके साथ के संबंधों को क्या नाम दोगी, कैसे परिभाषित करोगी उन्हें ?" उसकी आंखों में सीधे देखते हुए बोले हैं वह।

"सागर ?" सहसा आसमान से गिरी है वह। सच, ऐसी निर्दयता की अपेक्षा नहीं थी उसे, "किन संबंधों की बात कर रहे हो ? किनके साथ के रिश्तों को नाम देना चाहते हो ? क्या पता है तुमको उन रिश्तों का ? केवल कही-सुनी बातों को ही आधार मानकर विष घोलना चाहते हो न, मेरे जीवन में। . . . अपने भी ?"

"हा ! हा ! हा ! हा ! !" जोर से हंस पड़े हैं सागर। क्या हो गया है इनको ? कैसा भारी परिवर्तन ? इतना खुलकर तो वह कभी हंसते नहीं थे। इनका अंतर्मुखी व्यक्तित्व आज ऐसा बहिर्मुखी कैसे हो आया ? पांच वर्षों ने

दिल्ली परिवहन निगम

(भारत सरकार का संस्थान)

* हमें मदद दें ताकि हम आपकी और अच्छी सेवा कर सकें।
* बसों में यात्रा करते समय महिलाओं, वृद्धों एवं विकलांगों के प्रति शिष्टाचार का वर्ताव करें।
* बसों की प्रतीक्षा करते समय व बसों में प्रवेश करते समय सदैव 'क्यू' बनायें।
* बसों में केवल उचित द्वारों से ही प्रवेश एवं निकास करें।
* बसें सार्वजनिक सम्पत्ति हैं। इनका आप ध्यान रखें और ये आपका ध्यान रखेंगी। हम आपको आपके गंतव्य स्थान तक सुरक्षित पहुंचाए इसके लिए हमारी सहायता कीजिए।
* बस में प्रवेश करने से पहले किराया तैयार रखें जिससे अन्य यात्रियों को असुविधा न हो।
* छेड़खानी व जेबकतरी को रोकने में हमें सहयोग प्रदान करें।
* बिना टिकट कभी भी यात्रा न करें।
* हमारा उद्देश्य आपकी बेहतर सेवा करना है। डी. टी. सी. विकलांगों एवं नेत्रहीनों को निःशुल्क पास प्रदान करती है।
* क्या आप जानते हैं कि डी. टी. सी. का किराया देश में न्यूनतम है?
* हमने आपकी हर सम्भव तरीके से सहायता के लिए विभिन्न बस स्टापों पर १००० से भी अधिक ट्राफिक सुपरवाईजर्स व गाइड्स तैनात किये हैं। कृपया उनकी सेवाओं से समुचित लाभ लें।

बहुत कुछ बदल दिया है इस आदमी में। सदा अपने में सिकुड़ा-सिमटा रहने-वाला यह व्यक्ति आज सहसा इतना समझदार और समर्थ कैसे दीखने लगा है? हिल गयी है सुषी अंदर से। सच, क्या आर-पार देख गये हैं वह उसके? उसका सब कुछ जानते हैं न वह? बीते वर्षों के एक-एक दिन, घड़ी-पल का इतिहास! सच, क्या कुछ भी छिपा नहीं पाएगी वह उनकी पारदर्शी होती आंखों से? क्या पश्चात्ताप के क्षणों में जलकर उसने जो निर्णय लिया है, उसे कार्यान्वित करना उसके वश की बात नहीं? सच, नहीं हो सकता उसका अब पीछे लौटना? पांच वर्षों का अंतराल सचमुच बड़ा होता है न? कैसे घुमा देगी वह काल-चक्र को उलटा? बहुत निष्ठुर है समय-देवता! शायद, सामने के इस सागर से भी अधिक! हे भगवान!

कहां बदला है, सुषी में बहुत कुछ? इन पांच वर्षों के दौरान एक दिन भी भूल पायी है क्या वह सागर को? अपनी महत्त्वाकांक्षा की आंधी में सूखे पत्ते की तरह भले ही वह उड़ती-बिखरती रही है, पर प्रतिकूल हवा के हर थपेड़े ने तो सागर की याद जगायी है उसके मन में। जिस तरह डोर से जुड़ी पतंग आसमान की हर ऊंचाई को इसलिए निःशंक मापती है कि नीचे किन्हीं मजबूत हाथों में उसका अस्तित्व सुरक्षित है, उसी तरह वह निर्द्वंद्व और निर्भीक भाव से मुक्त जीवन

"... हर बात का सुबूत नहीं हुआ करता सुषी। हर घड़ी का साक्ष्य नहीं मिलता। सही साक्षी तो वही हैं, जिन्होंने तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा की आग को हवा दी..."

जीती रही है, इसी विश्वास से कि जरूरत की घड़ियों में सागर का संबल तो उसे प्राप्त है ही। पर, उसे क्या पता था कि यह सब एक सुखद स्वप्न से अधिक नहीं था कि जिस मिट्टी को वह चट्टान समझ रही थी, वह रेत की तरह लगातार उसके पैरों के नीचे से खिसकती जा रही थी। और, आज जब वह अपने चट्टानी आधार पर वापस आने के लिए सोच रही थी, तो वहां एक भयावह खाई के सिवा कुछ नहीं था।

"तुम्हें सुबूत चाहिए, सुषमा?" वह फिर बोले हैं, "पांच वर्षों की इस अवधि में तुमने किन आंधियों को अपने अंदर समेटा उसका सुबूत, अथवा इस अवधि में तुमने कितने और किनके जज्बातों के गले घोंटे, उसका सुबूत, अथवा तुम्हारी स्वच्छंद मनोवृत्ति और दुर्दांत मनोकामना ने इस बीच कितनी मोहक, पर अंधी गलियों की खाक छानी, उसका सुबूत? किस बात का सुबूत चाहिए, सुषी? हर बात का सुबूत नहीं हुआ करता। हर घड़ी का साक्ष्य नहीं मिलता। सही साक्षी तो

वही हैं, जिन्होंने इस बीच तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा की आग को हवा दे, तुम्हें वास्तविकता की ओर से आंखें मोड़ने को विवश किया, जिन्होंने तुम्हारे बनते नीड़ के तिनके-तिनके को अनजानी हवाओं के हवाले किया, जिन्होंने अभ्यस्त हाथों से तुम्हारे सपनों के शीशमहल के कांच-कांच को तोड़, अपने मन के सपनों में रंग भरा, जिन्होंने बेदर्दी की सीमा को पारकर किसी की बसती आकांक्षाओं की दुनिया को उजाड़ा। जिन्होंने तुम्हें सब्ज-बाग दिखाया और इसके पहले कि उस बाग में कोई फूल खिले, कोई कली चटके, कोई कोयल कूके; उस बाग के पात-पात को नोच फेंका। यह दुनिया बड़ी निष्ठुर है, सुषमा! नहीं चेतीं तो तुम्हें पूरी तरह समाप्त करने में इसे समय नहीं लगेगा। पर, तुम पर इन सब बातों का प्रभाव भी कितना पड़ने को है अब?

"कोई सुबूत नहीं है मेरे पास, मान लो यही। मुझे किसी सुबूत की जरूरत भी नहीं। इस मुलाकात का आभार मानता हूं मैं, पर अधिक आभारी होऊंगा, अगर भविष्य में तुम इस आनंद से वंचित ही रखो मुझे। मैंने तुम्हारे प्रस्ताव को तब भी ठुकराया था, अब तो हमारे-तुम्हारे रास्ते पूरी तरह मुड़ गये हैं, विपरीत दिशाओं में। इन्हें जोड़ने का मिथ्या प्रयास न करना ही श्रेयस्कर है दोनों के लिए। नहीं लौटती है नदी पीछे की तरफ, नहीं देखती है नारी भी पलटकर। तुम जानती हो, इस बात को अच्छी तरह। लौट जाओ, सुषमा, लौट जाओ। बहुत देर हो चुकी। लौट जाओ अपने सपनों और आकांक्षाओं की उसी लुभावनी दुनिया में। यथार्थ बहुत कड़वा होता है, बड़ा दुःखद। संघर्षों की यह दुनिया नहीं है तुम्हारे लिए। किसी नये क्षितिज पर कोई अजन्मा प्रभात, प्रतीक्षारत है। वरण कर लो, उसी विहान को तुम। छोड़ दो इस अभिशप्त प्रोफेसर को, इस निर्जल कांतार के किनारे। मत चिंता करो उसकी तृष्णा, उसकी प्यास की। अपनी राह बढ़ जाओ तुम। रेत पर चरण-चिह्न उगते हैं, मिट जाते हैं। अमिट कर दो तुम अपने पग-चिह्नों को किसी अनंत राजपथ पर! साकार कर लो अपने सपनों को। नहीं सहयोगी बन सकता मैं महत्त्वाकांक्षाओं की तुम्हारी इस अंधी दौड़ में! पहले भी मैं विवश था, आज भी हूं। माफ कर दो मेरी इस विवशता-निरीहता को, कह लो कायरता को ही, पर मत पलटो किसी वक्री पाप-ग्रह की तरह मेरे जन्म-चक्र के केंद्र-बिंदु में।" (लेखक के 'नदी नहीं मुड़ती' शीर्षक उपन्यास का एक अंश)

—संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
रेल-मंत्रालय, रेल-भवन, नयी दिल्ली-१

मादकता की दशा तात्कालिक आत्म-हत्या है; जो सुख वह देती है, वह केवल नकारात्मक है, दुःख की क्षणिक मात्र विस्मृति।
—बर्टेंड रसेल

किस्सा अंधियारपुर का उजियारपुर का

• लक्ष्मीनारायण वशिष्ठ

अंधियारपुर का सुखीराम शरीर से लेकर आत्मा तक कर्ज से दबा है। निर्दयी साहूकार मालिकराम है, जो गांव के किसानों का शोषण करता है। उसका मुनीम मुंशीराम बही में पचास के पांच सौ कर देता है। सुखीराम बंजर में बीज बोकर जुआ खेलता है, खेतों में पसीने का अर्घ्य चढ़ाता है और अंकुरित बीजों को देखकर फूला नहीं समाता। उसे विश्वास है कि वह जुए में जीत जाएगा। सौभाग्य से वर्षा भी अच्छी हो जाती है। गांव के युवा ददरिया गाते हैं—

आजाबे आजाबे आजाबेना
अमरइया के तीर गोरी आजाबेना

दूसरी ओर महिलाएं बांस के डले में लकड़ी की डंडी पर तीन सुए बिठाकर उसके चारों ओर नाचती हुई सुआ-गीत गाती हैं।

'लुए लजावो थान संगी' की थिरकती हुई धुन के साथ धान की कटाई होती है। खलिहान में फसल आते ही उस पर मालिकराम का अधिकार हो जाता है और सुखीराम के सपने, सपने ही रह जाते हैं। गांव का गांधीवादी फगुआ पंडित सुखीराम के दुःख से द्रवित हो जाता है। वह युवा शक्ति को नवोदित सूर्य की किरणें लाने का आह्वान करता है। अध्यापक कनछेदी लाल मालिकराम की चापलूसी को ही नौकरी समझता है और स्कूल की ओर कोई ध्यान नहीं देता। सुखीराम की निराशा को तोड़ता हुआ एक आशा-गीत परदे के पीछे से उभरता है—

जिनगी के बाजी हारे झन जावेगा
सुन मोरे संगी, सुन मोरे मितवा

अर्थात, हे मित्र! जिंदगी की बाजी इतने शीघ्र मत हार। अभावों से जूझता हुआ सुखीराम चिरनिद्रा में लीन हो जाता है ... और तब, अभ्युदय होता है युवा शक्ति का। सोनहा बिहान की प्रथम रश्मि लेकर आता है युवा अध्यापक सोमेश्वर। वह ढहते हुए स्कूल को संवारता है और कनछेदी लाल तथा मालिकराम दोनों के षड्यंत्र को विफल कर देता है। बच्चों में प्रेम, सहानुभूति तथा स्वावलंबन की भावना भरता है, और बच्चों के साथ गाता है यह राष्ट्रगीत—

अंगना मां भारत माता के
सोन के बिहानियां ले चिरंयां बोले

ऊपर : सोनहा बिहान के दो दृश्य

श्री चंद्राकर

और इस प्रथम किरण को शक्ति मिलती है जवारा से। नव दुर्गा में जवारा शक्ति का प्रतीक माना जाता है। अंततः व्यथित मालिकराम पश्चात्ताप करता है। और शोषित समाज से माफी मांग लेता है ... और अंधियारपुर बन जाता है, उजियार-पुर। चारों ओर शांति, सुख, आनंद छा जाता है। तभी उभरता है यह मिलन-गीत—

बैरी बैरी मन मितान होगेरे
हमार देश का बिहान होगेरे

...और तब मनती है होली। गरीब-अमीर सब एक रंग में रंग जाते हैं। शत्रुता, मित्रता के रंग में सराबोर हो जाती है।

यह कथानक है, छत्तीसगढ़ की परंपरागत संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के लिए एक आंदोलन के रूप में मंचित किये जा रहे नाटक 'सोनहा बिहान' का। 'सोनहा बिहान' का अर्थ है—स्वर्णिम सवेरा।

छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक सुषमा और संस्कृति अनूठी है। वनराजि तथा गिरि-राजों की ऐसी मनोहारी दृश्यावलियां अन्यत्र दुर्लभ हैं। भोले आदिवासी और उनके रीति-रिवाजों पर कई विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा है। फिर भी, कोई समग्रता से कुछ नहीं कह सका; क्योंकि 'ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैननि, त्यों-त्यों खरी निकस-सी निकाई।' अबूझमाड़ में आज भी पाषाण-युग के चिह्न आदिवासियों में देख सकते हैं आप। यहां के त्योहार-उत्सव, जन्म, मरण, विवाह सब स्वच्छंद, सरल तथा निष्कपट होते हैं। जादू-टोने से घिरा यह भूखंड अभी भी विकास की संभावनाएं गर्भ में छिपाये है। एक-एक आवरण हटाते जाइए, अंत नहीं आ पाएगा।

सांस्कृतिक प्रदूषण

पर बाहर से जो व्यापारी व नौकर-पेशा पहुंचे हैं, वे उनका शोषण तो कर ही रहे हैं, साथ ही उनकी संस्कृति को भी दूषित कर रहे हैं। धीरे-धीरे शहरी सभ्यता उन पर हावी होती जा रही है और उनका मूल रूप विकृत होता जा रहा है। डॉ. महेन्द्रदेव वर्मा एवं रायबहादुर हीरालाल की रचनाओं पर आधारित इस नाटक के प्रस्तोता हैं—दाऊ महासिंह चंद्राकर। उनके अनुसार 'सोनहा बिहान' का प्रमुख उद्देश्य है—छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक पुनर्जागरण।

साठ-सत्तर कलाकार लेकर दाऊ महासिंह चंद्राकर ने इस नाटक को प्रभावपूर्ण बना दिया है। कथानक तो छत्तीसगढ़ की क्षीण होती हुई संस्कृति का है ही, गीत भी प्रत्येक ऋतु और पर्व के हैं। विशेषता यह है कि सभी गीत लोकधुनों पर आधारित हैं—सुआ-गीत, करमा, ददरिया, मड़ई-गीत, जबारा-गीत आदि। मांदर (मृदंग) इनका प्रमुख वाद्य है।

—व्याख्याता, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उपरांय, दतिया, म.प्र.

जापान का बद्री-केदार : फूजी पर्वत

• पूर्णेन्दु जैन

परिवार में सबसे पहले जगनेवाली जापानी गृहिणी खिड़की से सबसे पहले उस परदे को हटाती है, जहां से फूजी पर्वत को देखने की संभावना होती है। अकसर सुबह-सुबह मां अपने बच्चों को यह कहकर जगाती है—

'आऽ फूजी सान गा मियेता, ओकिनासाई' (उठो, वह देखो, फूजी पर्वत दिखायी पड़ रहा है।) और बच्चे फूजी पर्वत का नाम सुनते ही बिस्तरों से कूद पड़ते हैं। सरदी के मौसम में उषाकाल के प्रदूषण-मुक्त वातावरण में तोक्यो के कई हिस्सों से हिमाच्छादित फूजी पर्वत की चोटी दिखायी पड़ती है।

जापान की राजधानी तोक्यो से करीब १२५ किलोमीटर पश्चिम की ओर स्थित, प्राकृतिक छटा को उजागर करने-वाला फूजी पर्वत न सिर्फ जापानियों के लिए बल्कि विदेशों से आये अनेक पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है।

भारतीय संस्कृति का परिचय

जापान में बौद्ध धर्म के माध्यम से पहुंचायी गयी भारतीय संस्कृति का परि-चय तब मिला, जब मैंने कई जापानियों

को सुबह-सुबह फूजी पर्वत को हाथ जोड़ते देखा।

जापान का यह पर्वत ऊंचाई के दृष्टिकोण से शायद इतना महत्त्वपूर्ण न हो, क्योंकि इसकी ऊंचाई मात्र ३,७७६ मीटर है। फिर भी जापान की यह सबसे ऊंची पर्वतशृंखला है। इसकी नुकीली बनावट भी मनोरम एवं लुभावनी है। जापान और फूजी पर्वत एक दूसरे के पर्यायवाची जान पड़ते हैं।

बुलेट ट्रेन से तोक्यो से ओसाका की ओर जाते समय फूजी पर्वत का सौंदर्य अत्यंत मनोरम एवं अद्वितीय जान पड़ता है। इसके सौंदर्य का निखार अप्रैल के महीने में चरम सीमा पर पहुंचता है, जब बरफ से ढंके फूजी पर्वत की तराई में चारों ओर हलके गुलाबी रंग के चेरी के फूल अपने पूरे यौवन पर होते हैं।

सबसे अधिक पर्यटक

ग्रीष्म ऋतु (जुलाई एवं अगस्त) में फूजी पर्वत, प्रत्येक वर्ष लगभग चार लाख पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करता है। विश्व के किसी अन्य पर्वत पर दो महीने के दौरान शायद ही इतने पर्यटक जाते हों।

पर्वत की ऊंचाई को दस स्तरों में विभक्त किया गया है। पहले पांच स्तर अर्थात १,२०० मीटर की ऊंचाई तक पक्की सड़क का निर्माण कर दिया गया है, जिसके माध्यम से मोटर गाड़ियों द्वारा यह दूरी तय की जा सकती है। बाद की लगभग २,४०० मीटर की ऊंचाई सभी को पैदल चलकर पूरी करनी पड़ती है। आमतौर पर युवा वर्ग जो, 'ट्रेकिंग' या 'हाइकिंग' के दृष्टिकोण से पर्वतारोहण करता है, वह अपनी यात्रा 'शिशुओं का प्रांत' की समुद्री सतह से शुरू करता है।

पुराने समय से जापानियों की यह धारणा रही है कि सभी को जीवनकाल में एक बार इसकी यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

सामूहिक यात्राएं

सामंत-युग में सभी जापानियों की यह हार्दिक इच्छा होती थी कि फूजी पर्वत की यात्रा करनी है, किंतु तब जापान के लोग आर्थिक रूप से इतने संपन्न नहीं थे। इसके निराकरण के लिए व्यक्तियों ने आपस में मिलकर समुदायों का निर्माण किया। वे प्रायः चंदा इकट्ठा करके संग-

फूजी पर्वत की कठिन यात्रा

फूजी पर्वत का पांचवां स्तर

ठित समूह के रूप में फूजी पर्वत की यात्रा पर निकलते थे। यात्रा आरंभ करने से पूर्व सभी सदस्यों को शुद्धिकरण-समारोह में हिस्सा लेना पड़ता था। बदन पर श्वेत वस्त्र, एक हाथ में लाठी एवं दूसरे में बत्ती, कमर में घंटी लटकाये लोग यात्रा का प्रारंभ करते थे। वे मार्ग-दर्शक के पीछे 'निर्लिप्तता शुद्धिकरण का मार्ग-दर्शक है' का मंत्रोच्चारण करते हुए, शिखर की ओर बढ़ते जाते थे। जापानियों की फूंजी पर्वत में आस्था, शायद प्रकृति-पूजा का प्रतीक है। आज भी इस पर्वत की चोटी घाटी में बसे सेनेगन मठ की धरोहर है।

महत्त्वपूर्ण क्रीड़ा-क्षेत्र

आज इसका महत्त्व सिर्फ अध्यात्म तक ही सीमित नहीं है। जनसाधारण के लिए यह एक मनोरंजन एवं स्वास्थ्य-लाभ का साधन भी माना जाने लगा है। तोक्यो की गरमी से राहत पाने के लिए हजारों की संख्या में लोग हाकोने, आतामी एवं फूजी पर्वत के समीप बसे पांच झीलों के आसपास कैंपिग के लिए आते हैं। फूजी पर्वत की पैदल यात्रा के पश्चात हाकोने एवं आतामी स्थित गरम गंधक के कुंडों में स्नान स्वास्थ्यवर्धक है।

आजकल एक ओर जहां सामंती युग की आध्यात्मिक समूह-यात्रा के प्रचलन की समाप्ति हो रही है, वहां दूसरी ओर क्रीड़ा-क्षेत्र के रूप में इसका महत्व बढ़ता जा रहा है।

सबसे वृद्ध यात्रियों को पुरस्कार

फूजी पर्वत की यात्रा करनेवाले वृद्ध व्यक्ति ऊपर पहुंचकर एक रजिस्टर में अपना नाम, पता, उम्र लिख देते हैं। वर्ष के अंत में सबसे ज्यादा उम्रवाले दो व्यक्तियों को पारितोषिक दिया जाता है।

प्रत्येक वर्ष जुलाई में युवा वर्ग के लिए पर्वतारोहण-प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। सन १९७९ में ही फूजी योशिदा शहर से शुरू होकर १८ किलोमीटर लंबी एवं २,६०० मीटर ऊंची यात्रा को तय करने का अधिकतम समय निश्चित कर दिया गया है।

फिर भी जनसाधारण पर्यटकों के लिए तो फूजी पर्वत की यात्रा का आनंद धीरे-धीरे पैदल चलकर पूरा करने में है। वे शिखर तक पहुंचने के पूर्व कई स्तरों पर बने शिविरों में रात्रि व्यतीत करते हैं।

—सी-१/२४, सफदरजंग स्कीम,
नयी दिल्ली-११००१६

• डॉ. ओदोलेन स्मेकल
(चेकोस्लोविया के
हिंदी विद्वान एवं कवि)

नयी पहचान

सागर शब्दातीत
परास विशाल
लहरें उत्ताल

लहर-लहर में
अनगिन गीत
लहराते सप्राण
लहर-लहर में
अहो! नयी पहचान
थकित मुसकान!

असीम व अपार
सागर गहरा
ओर-छोर दिग्दिग्
विस्मय ठहरा

अतल व गंभीर
थाह नहीं पायी
हर भोली पहचान
हर मोहक मुसकान
एक अनिर्वच गान

दृगों में गहरायी
कौन जाने
कितनी समायी?

राहें

वे धूप धुली
पथिकों से
कुछ बहुत अवश
कहना चाहें

वे तपन भरी
पथिकों के सामने
खोल-खोल दें अपनी
धूमिल बाहें

अवश पथिक
डगमग पदचिह्न
छोड़ जाते
अथवा
यादों की छांहें

ओ मेरी परी!

एक और
नव्य घड़ी
अविकल
जादू भरी
दे मुझे कली
देती ही रह
प्रतिपल
मधु भरी
ओ मेरी परी!

—CHARLES UNIVERSITY,
CELETNA-20, PRAGUE,
CZECHOSLOVAKIA

गजल

चांदनी उदास है

फूल हैं कुम्हला गये या चांदनी उदास है
मन यूं है घुट रहा जैसे आकाश है

गलियारे सड़कों पर मजमा अंधेरों का
अंतस्तल में फिर भी छाया उजास है

तमाम उम्र की खुशियां सिमट गयी क्षण में
कैसी यह जिंदगी और कैसी प्यास है

जीने की हसरत में गलत और सही क्या
अपना दर्शन है और अपना विश्वास है

अनगिन आदर्शों के गढ़े गये किस्से
पर करें अमल खुद यह किसको अवकाश है

मजबूरी जीने की मरकर भी जीते हैं
झूठी इज्जत खातिर बिकती हर सांस है

—सविता
आभा धाम, सोनपुर, सारण (बिहार)

गीत

कब पुकारा न था!

हमने कब रास्तों से हटाये कदम
हमने कब मंजिलों को पुकारा न था
फिर भी नजदीक आकर पलटना पड़ा
तेरी जानिब से कोई इशारा न था

सरपरस्ती कभी रास आयी नहीं
राजदां भी सितारों में गुम हो गये
फूल गुलशन में लाखों खिले तो मगर
हमको महफिल सजाना गवारा न था

अपनी बरबादियों की कसम है तुझे
दिल मेरे मुसकरा यूं न आंसू बहा
हम तो लाचार थे तीर खाया किये
दोस्तों की वफा का सहारा न था

कतरे-कतरे में तेरी झलक देखते
जिंदगी के समंदर में बहते रहे
तुझको पाने की ख्वाहिश मुसलसल रही
अपनी किस्मत में लेकिन किनारा था

खाक छानी है भटका किये दरबदर
तेरी चाहत का दामन संभाले हुए
अब भी हैं आस की लौ जलाये हुए
सब्र का कौन कहता है चारा न था

हिज्र का जहर पीते रहे रातदिन
हम कि किस्तों में जीते रहे रातदिन
तेरे आगे भी दामन पसारा नहीं
इश्क पर आंच आये गवारा न था

नीला आकाश तारों की माला लिये
जगमगाता चमकता रहा रात भर
हमने ढूंढ़ा बहुत हमने खोजा बहुत
अपनी किस्मत का कोई सितारा न था

—शुभा वर्मा
ए-३५, चितरंजन पार्क, नयी दिल्ली-१९
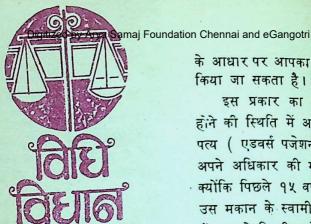
मकान पर दावा

लक्ष्मीचंद जैन, जोधपुर : हमने ग्राम खारा-बेरा पंचायत क्षेत्र में एक मकान पंद्रह वर्ष पहले खरीदा था। चूंकि, गांव में किसी के पास पट्टा आदि नहीं है, अतः हमने उस व्यक्ति से न बिक्रीनामा लिखवाया और न कीमत प्राप्त करने की रसीद ही ली। अब पंचायत द्वारा सभी मकानों के पट्टे बनाये जा रहे हैं। उस व्यक्ति ने पंचायत में यह दावा किया है कि उसने यह मकान नहीं बेचा है, फलतः यह मकान उसका ही है। उस व्यक्ति के पास भी मकान की मिल्कियत के संबंध में कोई दस्तावेज नहीं है क्योंकि, अब तक गांव में मकानों पर अधिकार मकान में रिहायश (पजेशन) से माना जाता रहा है। इस स्थिति में अब क्या वह व्यक्ति मकान का पट्टा अपने नाम से बनवा सकता है, जबकि मकान में हम पंद्रह साल से रह रहे हैं, यानी 'पजेशन' हमारे पास है।

मकान की खरीद का प्रमाण आपको देना होगा, और इस प्रकार का प्रमाण उपलब्ध न होने पर, मकान खरीद लेने के आधार पर आपका स्वामित्व स्वीकार किया जा सकता है।

इस प्रकार का प्रमाण उपलब्ध न होने की स्थिति में आप विरोधी आधिपत्य (एडवर्स पजेशन) के आधार पर अपने अधिकार की मांग कर सकते हैं, क्योंकि पिछले १५ वर्ष से लगातार आप उस मकान के स्वामी के रूप में रह रहे हैं। इसके विपरीत कोई अवरोध किसी ने उपस्थित नहीं किया और सभी स्थानों पर आप अपने को उस संपत्ति का स्वामी घोषित करते रहे हैं।

संपत्ति पर अधिकार

कमला देवी, नालंदा : मैं अपने मां-बाप की एक मात्र संतान हूं। मेरे मां-बाप अपने छोटे भाई यानी मेरे चाचा के साथ रहते थे। मेरे पिताजी व माताजी दोनों ही स्वर्ग सिधार गये, जिसकी मुझे समय पर सूचना नहीं दी गयी। हां, तेरहवीं में सम्मिलित होने के लिए मैं आमंत्रित की गयी। अंतिम संस्कार मेरे चाचाजी द्वारा ही किया गया। मैं अब पिताजी की संपत्ति में से अपना हिस्सा लेना चाहती हूं, परंतु मेरे चाचाजी बंटवारा नहीं करना चाहते। बतलाएं कि मुझे क्या करना चाहिए?

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ——रामप्रकाश गुप्त

अपने मां-बाप की संपत्ति पर आपका अधिकार है। आपकी दादी यदि जीवित हों, तब उनका भी हिस्सा बनता है। आप अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए कार्यवाही कर सकती हैं। आपके चाचा को आपकी संपत्ति रखने का कोई अधिकार प्रतीत नहीं होता। पिताजी की संपत्ति में अपने हिस्से की घोषणा के साथ-साथ आप अपने हिस्से के बंटवारे के लिए भी न्यायालय की शरण ले सकती हैं।

पत्नी को पीटने की सजा

रामेश्वर निलगड़े, खंडवा : दो साल पहले मेरे और मेरी पत्नी के बीच मारपीट हो गयी, जिससे मेरे ऊपर धारा-३०७ पर मुकद्दमा चला। ससुर के कहने पर पत्नी ने मेरे खिलाफ गवाही दी। बाद में मैं अपनी पत्नी व बच्चों को मनाकर घर ले आया। इसके बाद मुझे सात साल की सजा हो गयी। इस समय मैं जेल में सजा भुगत रहा हूं। क्या, अब उच्च न्यायालय में हमारा राजीनामा हो सकता है? पत्नी व बच्चे अब भी मेरे घर पर ही हैं।

उच्च न्यायालय में अब राजीनामा होना संभव नहीं है। आपको जो सजा मिली है, वह तो काटनी ही पड़ेगी। हां, अब केवल एक ही मार्ग है कि आप या आपकी पत्नी भारत के राष्ट्रपति को सजा माफ करने के लिए आवेदन कर देखें। आवेदन-पत्र में अपनी परिस्थिति का वर्णन करते हुए अपने पुराने कृत्य पर पछतावा व्यक्त करें। और साथ ही भविष्य में इस तरह की घटना न दोहराने का वचन भी दें। शायद, आपकी पत्नी व बच्चों पर रहम खाकर महामहिम राष्ट्रपति आपका आवेदन स्वीकार कर सजा माफ कर दें।

रामप्रकाश गुप्त

संपत्ति मेरे नाम कैसे हो?

प्रदीप कुमार, मुरादाबाद : मैं २२ वर्षीय युवक हूं। मेरी मौसी १५ वर्ष पहले मुझे मेरी मां से लेकर आयी थीं और उन्होंने ही पालकर मुझे बड़ा किया। मौसी ने मुझे विधिवत गोद नहीं लिया है। मौसी अपना मकान और संपत्ति मुझे देना चाहती हैं, लेकिन मौसाजी का छोटा भाई ऐसा नहीं चाहता। कोई उपाय बताइए, जिससे मकान और संपत्ति मेरे नाम हो जाए तथा मौसाजी के छोटे भाई का कोई डर न रहे।

संपत्ति का स्वामी अपनी चल या अचल संपत्ति किसी को भी दे सकता है। इसके लिए गोद लिया जाना आवश्यक नहीं है। मौसा या मौसी, जो भी संपत्ति के स्वामी हों, वह आपको अपनी संपत्ति दान (गिफ्ट) कर सकते हैं। इसके लिए आपको उनसे दान-पत्र लिखा लेना चाहिए। अचल संपत्ति के दान-पत्र का नियमानुसार पंजीकरण भी करा लेना चाहिए। यदि किसी कारणवश वह अपनी संपत्ति

अपने जीवन-काल में न देना चाहें, तब वसीयत लिखाकर पंजीकरण करा लेना चाहिए।

छुटकारा कैसे मिले ?

क. ख. ग; होशंगाबाद : मैं ३२ वर्षीय एक सरकारी कर्मचारी हूं। पंद्रह साल के वैवाहिक जीवन में आज तक कभी भी हम दोनों में नहीं बनी। इसीलिए कोई बच्चा भी नहीं हुआ। हम दोनों में न बनने का कारण पत्नी की अतिबुद्धिहीनता है। वह हमेशा मेरे मन को ठेस पहुंचाती रही है। प्रेम और विश्वास तो कतई नहीं है। एक बार उसने मुझे यह कहकर बदनाम कर दिया कि मैंने दूसरी शादी कर ली है। मैं उससे तलाक चाहता हूं, जबकि वह तलाक नहीं चाहती। उसका कहना है कि 'न मैं खुद जिऊंगी न तुम्हें जीने दूंगी।' छुटकारे का कोई उपाय बताइए।

पति-पत्नी में परस्पर प्यार व सद्भावपूर्ण व्यवहार अति आवश्यक है। जब आपके बीच में ऐसा नहीं है और आपकी पत्नी आपके मन को ठेस पहुंचाने के साथ-साथ आपको बदनाम भी करती है, इन बातों को आधार बनाकर आप तलाक के लिए आवेदन कर सकते हैं। न्यायालय में आपके आरोप प्रमाणित होने पर आपको तलाक मिल सकता है।

रुपया वसूल करना है

विजयचंद्र चौधरी, पूर्णिया : हमारी फर्म के साथ एक पार्टी पांच-छह साल से व्यापार कर रही थी। इस सिलसिले में लेन-देन चलता रहता था। लेन-देन की कोई पक्की लिखा-पढ़ी नहीं है। उस पार्टी ने एकाएक व्यापार बंद कर दिया। हमारा कुछ रुपया उसकी तरफ बाकी है, जिसे देने में वह आनाकानी कर रही है।

आप अपना हिसाब तो रखते ही होंगे। माल उधार देते समय आपने व्यापारी से हस्ताक्षर नहीं कराये, परंतु फिर भी कोई बिल आदि तो बनाया होगा। यदि माल कहीं बाहर जाता होगा, तब रेल या मोटर ट्रांसपोर्ट की बिल्टी आदि बनायी होगी। बकाया रकम की मांग का नोटिस देकर दावा कर दें। यह अवश्य देख लें कि केवल तीन वर्ष की अवधि की रकम का ही दावा किया जा सकता है। दावे के साथ बिल, बिल्टी तथा अपने हिसाब की नकल आदि लगा दें। मौखिक साक्ष्य भी न्यायालय में उपयोगी रहेगा। ●

अफरीका में आज भी आदमी की हत्या इसलिए भी की जाती है कि उसके मांस से ऐसी औषधि का निर्माण किया जाता है, जो अलौकिक शक्ति-संपन्न मानी जाती है। इसके लिए जीवित व्यक्ति के शरीर से मांस, चरबी और रक्त को कुछ जड़ी-बूटियों के साथ जंतुओं के सींग में भरकर रख दिया जाता है।

इस औषधि का उपयोग रोजगार पाने, धन-दौलत बढ़ाने तथा राज-सत्ता पाने की इच्छा-पूर्ति के लिए किया जाता है। इस औषधि के निर्माण का ज्ञान परंपरा में विरासत में मिलता है, जिसे अत्यंत गुप्त रखा जाता है। —संध्या बनर्जी

"मेरे पति फूलों के बड़े शौकीन हैं," ससुराल से पहली बार मायके आने पर कमला ने अपनी सहेली को बताया।

"कैसे ?"

"क्योंकि, वे अकसर रात को नींद में बड़बड़ाते रहते हैं--चंपा, चमेली, कुसुम..."

"डाकू-उन्मूलन ! ऐसी गलती न करना हजूर ! यदि डाकू नहीं रहेंगे, तब पुलिस-आतंक से हमें कौन बचाएगा !"

व्यंग्य-चित्र : ल. अशोक

प्रेमी एक अरसे से विवाह की बात टाल रहा था। एक दिन प्रेमिका ने [illegible] पकड़ते हुए पूछा, "सच-सच बताओ, तुम मुझसे विवाह कब करोगे ?"

"बस, अपने परिवारवालों को मना लूं।"

"पर तुम्हारे परिवार में कौन-कौन ऐसे लोग हैं, जो इस विवाह के लिए तैयार नहीं हैं ?"

"मेरे बीवी-बच्चे !"

★

घर में अतिथि महोदय भोजन कर रहे थे। अचानक छोटे बच्चे ने कहा, "मम्मी, यह तो मछली है ?"

"हां, बेटे !"

"पर, मुरगा कहां है ? पापा तो कह रहे थे कि वे आज एक मुरगा फांसकर ला रहे हैं", बेटे ने मासूमियत से पूछा।

—श्रद्धा मीना

★

"प्रदर्शनी में हम सिर्फ आपके ही बनाये चित्र देखते रहे," एक युवती ने चित्रकार से कहा।

"धन्यवाद ! पर यदि आप दूसरों की कलाकृतियां भी देखतीं, तो मेरी कला के गुण और भी स्पष्ट हो जाते !"

"सच तो यह है कि दूसरों के चित्रों के सामने भीड़ बहुत लगी थी।" उस युवती ने कहा।

—पूनम टंडन

एक युवक ने अपने दोस्त से कहा, "बहुत-सी लड़कियां ऐसी हैं, जिन्हें शादी करना पसंद नहीं।"

"तुम्हें कैसे पता ?"

"मैं उनसे पूछ जो चुका हूं।"

★

"तो तुम अपनी पत्नी को छोड़कर आये हो ? भगोड़े हो !"

"आपने मेरी पत्नी को देखा होता, तब आप मुझे भगोड़ा नहीं, शरणार्थी कहते सा'ब।"

★

एक युवती ने अपनी सहेली से कहा, "मैं जब भी शादी करूंगी, तब किसी बदसूरत व्यक्ति से ही करूंगी।"

"भला क्यों ?" सहेली ने पूछा।

"इसलिए कि कोई औरत उसकी ओर आकर्षित नहीं होगी और फिर अगर वह मुझे छोड़कर चला भी गया, तब मुझे कोई अफसोस नहीं होगा।"

★

एक महिला चिढ़कर अपने पति से बोली, "शादी से पहले मैं तुम्हें एक बहादुर और साहसी व्यक्ति समझती थी। मुझे क्या पता था कि तुम इतने कायर हो ?"

"हां, मेरे मित्रों का भी यही खयाल है।" पति ने मुसकराते हुए कहा

★

"हरेक सफल कवि के पीछे एक औरत होती है।"

"हां, और उस औरत के पीछे होती है, उस कवि की पत्नी।" —राजकुमार जैन

पक्ष

उनकी चांद निकलती देखकर
पत्नी ने कहा
"जीवन का शुक्ल पक्ष
शुरू तो हुआ !"

अर्थशास्त्र

शब्द और अर्थ का क्रम यही
शब्द को अर्थ दे पायें तो
शब्द भी आपको अर्थ देंगे ही

संबंध

तुम्हारे संग जीवन बीता यों
जैसे रावण की
अशोक-वाटिका में सीता हो !

क्रमशः

विरह में तुम्हारे
बौराई भटकने लगी
सूखकर कांटा हुई
आंख में खटकने लगी

क्रम

ठंड की ठिठुरती शाम में
उनका पछताना
शर्म से पानी होना
पानी से बर्फ—
बर्फ-सा ठंडा हो जाना

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

साहित्यालोचकों ने इस तथ्य को निर्विवाद रूप से स्वीकार कर लिया है कि इलाचंद्र जोशी एक मनोवैज्ञानिक कथाकार हैं। कुछ समीक्षकों का तो यहां तक दावा है कि विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों की अवतारणा करने के लिए ही उन्होंने उपन्यासों की रचना की . . . उन्होंने अपनी रचनाओं में मनोविज्ञान का साग्रह प्रयोग किया। आदि-आदि . . .।

इन्हीं आलोचना-प्रत्यालोचनाओं पर

इलाचंद्र जोशी:
मुझे तो मनोविज्ञान संस्कार से मिला है

● डॉ. मधु जैन

मैं उनके विचार जानने हेतु उनके घर जा पहुंची। दिसंबर का महीना। प्रातः दस बजे बाहर लॉन में कुरसी डाले वह धूप का आनंद लेते हुए किसी चिंतन में मग्न थे। मुझे देखते ही बोले, "आओ बैठो ! मैं अभी मनस्तत्व के संबंध में विचार कर रहा था।"

"अच्छा ! मैं भी मनस्तत्व के संबंध में आपके विचार जानना चाहती हूं। आपकी दृष्टि में मनस्तत्व क्या है ?"

"मनस्तत्व अत्यंत सूक्ष्म, तथापि सर्वानुभूतित तथ्य है। मनुष्य का व्यक्तित्व केवल उसके शारीरिक अनुभवों तक ही सीमित नहीं रहता। साधारण शिक्षित व्यक्ति भी यह महसूस करता है कि मानव का मन हर समय उसके व्यक्तित्व पर हावी रहता है, और यह भी कि वह मन उसके व्यक्तित्व का प्रधान उपकरण है। इस मन के बिना उसका अस्तित्व प्रायः नहीं के बराबर है।

"यह दूसरी बात है कि आध्यात्मिक दृष्टि से देखने पर कभी-कभी मन का अस्तित्व व्यक्तित्व से अलग एक विजातीय तत्व के रूप में सामने आने लगता है। हमारे प्राचीन योगियों का तो यहां तक कहना है कि मन व्यक्तित्व के निरंतर ऊर्ध्वोमुखी विकास के मार्ग में उसे चिर-प्रगतिशील बनाने के बजाय व्यक्तित्व को कुंठित और खंडित करते रहने के प्रयास में निरंतर प्रयत्नशील रहता है।

"इसलिए, सच्चे योगी मन को पग-पग पर परास्त करने के प्रयास में

प्रतिक्षण सचेष्ट रहते हैं। उन लोगों का तो यहां तक कहना है कि जब तक मन को संपूर्ण व्यक्तित्व से एक विषैले कृमि या गंदे कूड़े की तरह जड़ से निकालकर अलग न कर दिया जाए, तब तक मनुष्य की उर्ध्वोमुखी विकास-क्रिया सिद्ध नहीं हो सकती है। इसलिए मन के बजाय वह बुद्धि या विवेक के अनुशीलन में निरंतर उद्यमशील रहना ही श्रेयस्कर मानते हैं। वह कहते हैं कि अकलुष सत्य के सम्यक दर्शन के लिए बुद्धि ही व्यक्ति की सहायक हो सकती है, मन नहीं।"

वह धारा-प्रवाह बोल रहे थे।

मैंने जिज्ञासा व्यक्त की, "यदि मन को ही मनुष्य के व्यक्तित्व से अलग कर दिया जाए, तो फिर उसके व्यक्तित्व और जीवन का अर्थ ही क्या रह जाएगा?"

"आप ठीक कहती हैं। मैं स्वयं भी कट्टर सिद्धांतवादी आध्यात्मिक नहीं हूं, और न जीवन को आध्यात्मिक चश्मे से देखना पसंद करता हूं, क्योंकि मैं जीवन को अध्यात्म से बहुत ऊंचा मानता हूं।"

मैंने मूल प्रश्न पर आते हुए पूछा, "किसी उपन्यास या कहानी में मनस्तत्व का समावेश आप क्यों आवश्यक समझते हैं?"

"मनुष्य के व्यक्तित्व और उसके जीवन को भी ठीक-ठीक समझने के लिए मनस्तत्व ही एकमात्र सुलभ साधन है। मनुष्य के उलझे और जटिल चक्र का तनिक-सा भी सटीक परिचय हमें

इलाचंद्र जोशी नहीं रहे

हिंदी के प्रख्यात कवि, उपन्यासकार, आलोचक एवं पत्रकार पं. इलाचंद्र जोशी का ८० वर्ष की अवस्था में गत १४ दिसंबर को इलाहाबाद में निधन हो गया।

१३ दिसंबर, १६०२ में अल्मोड़ा के मल्ली दन्या गांव में जन्मे जोशीजी ने १३ वर्ष की अल्पायु से ही लिखना शुरू कर दिया। अपने प्रथम काव्य-संग्रह 'विजनवती' से वे साहित्याकाश में उभरे और फिर 'घृणामयी', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'निर्वासित', 'मुक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'जिप्सी', 'जहाज का पंछी' तथा 'ऋतु-चक्र'-जैसे उत्कृष्ट कथा-साहित्य के माध्यम से हिंदी-जगत में छा गये। श्री जोशी मनोविश्लेषण-परक कथा-साहित्य के कुशल शिल्पी एवं अग्रणी उपन्यासकार थे।

वह 'धर्मयुग', 'संगम' तथा 'भारत' के संपादक रहे। सन १६७८ में उत्तर प्रदेश सरकार के हिंदी संस्थान ने उन्हें १५ हजार रुपये का विशेष साहित्यकार पुरस्कार प्रदान किया था और सन १६७६ में प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें 'साहित्य वाचस्पति' की सर्वोच्च उपाधि।

'कादम्बिनी' - परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि। —संपादक

नहीं प्राप्त हो सकता, यदि हम मन की उलटी-सीधी गतिविधियों का सही-सही परिचय प्राप्त करने के लिए किसी कथा-त्मक या अन्य साहित्यिक रचना में मनो-विश्लेषण का सहारा न लें। केवल डॉय-लॉग या बाहरी घटनाचक्रों के वर्णन से जीवन की वास्तविकता का बोध नहीं किया जा सकता।

"मनुष्य की, प्रत्येक साधारण से साधारण क्रिया, गतिविधि या चिंतन में भी मन की संचालिका-शक्ति का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है, इसलिए कोई भी श्रेष्ठ और सच्चा कलाकार मन के सम्यक विश्लेषण के बिना एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता।"

प्रभाव फ्रॉयड का

"आलोचकों का विचार है कि आपकी रचनाओं पर फ्रॉयड के सिद्धांतों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है?"

"यही तो उनका सबसे बड़ा भ्रम है। फ्रॉयड तो एक टुच्चा और तुच्छ मनोविश्लेषक है। उसकी लोकप्रियता का कारण पाठकों की सस्ती मानसिकता और मानवेतर पशु-प्रवृत्तियों का अनुचित लाभ उठाया जाना है। इससे तो यह बेहतर होता कि फ्रॉयड मानव की जटिल मनोवृत्तियों की उलझन में न पड़ चिम्पां-जियों और उनसे निम्न स्तर के वानरों के मनोविश्लेषण की ओर प्रवृत्त होता।

"मनुष्य के मन की उच्चतम विक-सित प्रवृत्तियों को समझने के लिए केवल उसकी चेतना में अवशिष्ट पशु प्रवृत्ति[illegible] उनकी निम्नतम कोटि की शारीरि[illegible] क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का बोध क[illegible] से ही उसके मन की श्रेष्ठ प्रवृत्तियों [illegible] विश्लेषण कदापि नहीं हो सकता, जैसा [illegible] फ्रॉयड ने अपने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धां[illegible] में प्रतिपादित किया है।

"हमारे अध्यात्मवादियों ने मान[illegible] मन के निराकरण की आवश्यकता [illegible] जो बल दिया है, उसके बावजूद मैं [illegible] मानता हूं कि मन, आदिम-प्रकृति [illegible] मनुष्य को अत्यंत महत्त्वपूर्ण और श्रे[illegible] देन है। . . . फ्रॉयड ने प्रकृति-प्रदत्त [illegible] परम महत्त्वपूर्ण देन के साथ बहुत अनुचि[illegible] और आपत्तिजनक खिलवाड़ किया है। [illegible] आज के भटके हुए मनुष्यों के सुधा[illegible] वादी शिक्षक नहीं, बल्कि एक प्रतिहिं[illegible] शैतान के रूप में मेरे सामने आता है।"

वातावरण की उप[illegible]

"व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक वाट्सन [illegible] संबंध में आपके क्या विचार हैं?"

"वाट्सन का मनुष्य के संबंध में [illegible] कहना कि मनुष्य केवल वातावरण [illegible] उपज है और जैसा वातावरण होता [illegible] वैसा ही उसके चरित्र का निर्माण होता [illegible] बहुत बड़ी मूर्खता या अज्ञान की बात है[illegible] वाट्सन को इस बात का पता [illegible] नहीं है कि मनुष्य की जन्मजात [illegible] रीय जीवन-शक्ति कितनी बड़ी, ग[illegible] व्यापक और उदात्त है। मनुष्य के भी[illegible] उसके अंतर्जगत के मूल में ऐसे [illegible]

निहित हैं, जो उसका सीधा संपर्क ईश्वर से बनाये हुए हैं। इसलिए मनुष्य की चेतना प्राकृतिक नियम से स्वयं अपने जीवन का प्रगतिपथ बनाती रहती है। हमारे एक प्राचीन नीतिकार ने कहा है, **'यस्य नास्ति स्वयंप्रज्ञा अपर : तस्य करोति किम्।'** यानी, जिसे स्वयं अपनी प्रज्ञा का बोध नहीं है, कोई दूसरा उसे उसका बोध कैसे करा सकता है ?"

"मेरा मत यह है कि मनोविश्लेषिक कथा-साहित्य के शोधार्थियों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे इन रचनाओं की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की खोज में माथा-पच्ची करें। यदि उक्त रचनाओं में उनको मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं व सिद्धांतों का सुस्पष्ट मानचित्र सहज रूप में सामने नहीं आता, तो गहरी शोध व खोज-बीन करने पर भी कोई उपलब्धि नहीं हो सकेगी, क्योंकि मुझे तो मनोविज्ञान संस्कार से मिला है।

"मुझे तो आश्चर्य होता है, जब कोई यह कहता है कि मेरी रचनाओं के भीतर की मनोवैज्ञानिकता उसकी समझ में नहीं आयी। इसका कारण, मैं यह बताता हूं कि आप मेरे मनोवैज्ञानिकता के पीछे निहित किसी अज्ञात सिद्धांत की खोज में उसी तरह भटक जाते हैं, जिस तरह हिमालय की किसी कंदरा में साधना करते किसी साधक का मन तब भटक जाता है, जब कोई कस्तूरी मृग उस गुफा के निकट से होकर गुजरता है और फिर किसी महारण्य में खो जाता है। बहुत सोच-विचार के बाद साधक यह समझ पाता है, कि वह गंध कहीं बाहर से न आकर उसके अंतर से ही निकलकर उसकी सांस के भीतर एकरूप हो रही है,"... कहते हुए वह उठ खड़े हुए।

– द्वारा आर. एस. जैन,
१७५/३, विवेक विहार आवास विकास कालोनी, पीली भीत रोड, बरेली

दाढ़ी बढ़ाने का राज

इलाहाबाद में हिंदी साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन में हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री विद्यानिवास मिश्र मिले, तो उनकी दाढ़ी देखकर हर किसी की उत्सुकता बढ़ी। मैं पूछ बैठा, "क्या राज है, जो आपने दाढ़ी बढ़ा ली है !"

वह बोले, "यह वर्ष टंडनजी की शताब्दी का वर्ष है। मैंने सोचा कि राजर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु कम से कम उनकी परंपरा में दाढ़ी तो बढ़ा लूं।"

इस पर आचार्य केसरी कुमार ने कहा, "नहीं, मुझे ऐसा लगता है कि उत्तर-प्रदेश सरकार ने उर्दू को जो द्वितीय राजभाषा का दरजा दे दिया, इसीलिए आपने दाढ़ी बढ़ाकर उसके महत्त्व को स्वीकारा है !"

यह सुनकर वहां बैठे हर व्यक्ति के मुंह से ठहाका फूट पड़ा और मिश्रजी भी उसी ठहाके में शामिल हो गये।

—शंकरदयाल सिंह

चार पठनीय उपन्यास

हुजूर दरबार

लेखक : गोविन्द मिश्र, प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली-२; मूल्य : अड़तीस रुपये ।

आजादी के छत्तीस साल बाद भी अपने देश में हालात बहुत कुछ वैसे ही हैं, जैसे स्वतंत्रता से कुछ समय पूर्व की पृष्ठभूमि पर लिखे गये उपन्यास 'हजूर दरबार' में दर्शाये गये हैं। रजवाड़ों की राजसी जिंदगी और आम आदमी की अकुलाहटों का मिला-जुला माहौल इस उपन्यास में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। विंध्य प्रदेश की एक रियासत (काल्पनिक) के अंतिम महाराजा रुद्रप्रताप सिंह के वैभवपूर्ण जीवन की अस्ताभा का अंकन करते हुए कथाकार ने रजवाड़ों की आभिजात्य मनोवृत्ति को भी पृष्ठांकित करना चाहा है। खरे नामक पात्र के माध्यम से जनता का पक्ष भी उभरा है और सिर्री राजा, रबैल ... दीवान छोटेलाल आदि-आदि पात्रों ... व्यापक परिवेश भी पाठकों की पकड़ ... आता है। पर, तीन सौ पैंतीस पृष्ठों ... इस वृहदाकार उपन्यास द्वारा ... लेखक क्या कहना चाहता है—स्पष्ट ... नहीं हो पाता। कभी-कभी तो ऐसा ... सास होता है, जैसे वह रजवाड़ों के ... को ज्यादा अच्छा मानता हो।

तीसरा देश

लेखक : रमाकांत, प्रकाशक : सा... प्रकाशन, ३५४३, जटवाड़ा, दरिया... नयी दिल्ली-२; मूल्य : पंतालीस रु...

माधवी और रोहित की कथा ... माध्यम से रमाकांत ने इस उपन्यास ... आज के घुटते-धुंधयाते मनों का भी चि... कन किया है। यूं माधवी प्राध्यापिका ... और रोहित भारत संरकार का सेक्रेटरी ... बाद में माधवी भी भारत सरकार ... सचिवालय में नियुक्ति पा जाती है, ... दोनों त्रस्त हैं—अपनी-अपनी स्थिति ... में असंतुष्टि की अग्नि में झुलसते हु... अपने भीतर की यह असंतुष्टि बाहर ... दबावों से जूझने से भी है, और कुछ न ... पा सकने की अपनी निरीहता से ... अपने को 'मिसफिट' महसूसता हुआ रोहि... का रंज रोष का रूप अख्तयार करता है ... '... जहां मैं 'मिसफिट' हुआ, ... 'मिसफिट' ही रहूंगा। मशीन का पु... मशीन से विद्रोह नहीं कर सकता और ... वह उसे बदल ही सकता है। उसे ...

एक पुर्जा बने रहना होगा।' और फिर उसी का निष्कर्ष आज की ट्रेजडी को अपनी तरह से रेखांकित करता है—'हां, इस स्थिति के विरुद्ध लड़ा जा सकता है, लेकिन इस लड़ाई का ही कोई अर्थ नहीं रह गया।'

अनवरत मूल्य-ह्रास आज की नियति है, तो आज का आदमी कहां पांव टिकाये? उसे जो दोहरा द्वंद्व झेलना पड़ रहा है, उसका दस्तावेजी बयान रोहित-माधवी का यह आख्यान है। यहां संघर्ष न रोटी के लिए है, न रोजी या रोमांस के लिए, वरन पूरी व्यवस्था बदलने के लिए है।

ज्यों मेहंदी के रंग

लेखिका : मृदुला सिन्हा, प्रकाशक : सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-६, मूल्य : पच्चीस रु.।

विकलांगता की समस्या को लेकर लिखा गया मृदुला सिन्हा का यह उपन्यास अपने ढंग का पहला है। दद्दाजी उर्फ डॉ. अविनाश का विकलांगों के प्रति किया गया सेवा-कार्य किसी मंदिर या मस्जिद के निर्माण से ज्यादा महान है। शालिनी की स्वीकृति मानो समाज के सदाशयी पक्ष की स्वीकृति है। शालिनी भी अपने पांवों को खो चुकी है, पर दद्दाजी और शर्माजी की सेवा-भावना के कारण ही उसे पायल झनकारते पांव मिल जाते हैं। डॉ. अविनाश स्वयं भी विकलांग हैं, पर उनकी सेवा-भावना और कार्यक्षमता को देखते हुए कोई उनके विकलांग होने का अनुमान भी नहीं कर सकता। उपन्यास आदर्शवादी ढंग-ढर्रे का है, पर विकलांग जीवन की समस्या को समीप से स्पर्श करने के कारण सार्थक है।

अर्थांतर

लेखिका : चंद्रकांता, प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-६, मूल्य : पच्चीस रुपये।

'अर्थांतर' और 'अंतिम साक्ष्य' दो लघु उपन्यासों को एक ही जिल्द में प्रकाशित किया गया है। दोनों ही उपन्यासों में अलग-अलग आहत नारी-मन का चित्रण किया गया है। कम्मो और मीना की चरित्र-सृष्टि औरत की असहायता और कातरता को रेखांकित करती है। 'अर्थांतर' की कम्मो का विभक्त मन कभी सत्य की ओर, तो कभी विजय की ओर खिंचता है, फिर भी उसे चैन नसीब नहीं होता। अर्थवत्ता की तलाश में आखिर कम्मो को अपने भीतर से ही निर्णय लेना होता है कि वह खंडों में बंटकर भी जिएगी, क्योंकि जीना हर स्थिति में महत्त्वपूर्ण होता है।

'अंतिम साक्ष्य' की मीना भी जिजीविषा की खातिर ही हर दुःख और विपत्ति को झेलती है। वह पीछे मुड़कर नहीं देखती क्योंकि, वह जानती है कि कटना, जुड़ना, जख्मी होना, सभी अनिवार्य हैं जीने के लिए। लेखिका को आज के हालातों में जी रही नारी के अंतर्द्वंद्वों को उजागर करने में खासी कामयाबी मिली है।

—विश्वंभर अरुण

दो कविता-संग्रह

जंगल से गुजरता शहर

कवयित्री : डॉ. शशि शर्मा, प्रकाशक : तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली; मूल्य : पच्चीस रुपये।

डॉ. शशि शर्मा का कविता-संग्रह निश्चय ही उन सारे कविता-संग्रहों से अलग अपनी पहचान बनाता है, जो पिछले दो-तीन वर्षों में प्रकाशित हुए हैं। इसमें सहज ढंग से उन तमाम स्थितियों, विषमताओं, नैराश्य और अंतर्द्वंद्वों को उद्भासित किया गया है, जो आज के युवा मानस और विशेष रूप से आधुनिक भारतीय नारी की समस्याएं हैं। इन कविताओं में मात्र पारिवारिक परिवेश ही नहीं है, एक वृहत्तर पीठिका पर समाज तथा राजनीतिक मसलों पर भी दृष्टिपात किया गया है, किंतु ये विषय कहीं भी आरोपित प्रतीत नहीं होते। कवयित्री उनको वहीं तक संस्पर्शित करती है, जहां तक वह उसके मन को आंदोलित करते हैं।

डॉ. शशि शर्मा की ये कविताएं उनको एक ऐसा गौरव तो प्रदान करेंगी ही, जो एक काव्य-व्यक्तित्व का निर्माण करता है, और उस अलगाव को भी ध्वनित करता है, जो किसी अच्छे कवि के लिए अपेक्षित है।

——जगदीश चतुर्वेदी

पतझर-पतझर : सावन-सावन

कवि : राजेन्द्र शर्मा 'राजन', प्रकाशक : मेघदूत प्रकाशन, ३।८८८, जनक नगर, सहारनपुर-२४७००१; मूल्य : बारह रुपये।

'गीत को अनेक प्रकार से व्याख्यायित किया जाता रहा है, लेकिन यह सच ही है कि 'मन के मौन की सबसे मुखर और लयात्मक अभिव्यक्ति का नाम गीत है।' लेकिन, क्या लय को ही गीत का सब कुछ मान लिया जा सकता है? शायद नहीं। गीत को गुनगुना लेना एक अलग बात है और उसे जीना बिलकुल ही अलग। लगता है कवि द्वारा इन गीतों को गुनगुनाया तो गया है, लेकिन जिया नहीं गया।

दो कहानी-संग्रह

दीवारें ही दीवारें

लेखक : भीमसेन त्यागी, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली—२; मूल्य : बीस रुपये।

'दीवारें ही दीवारें' भीमसेन त्यागी की ग्यारह कहानियों का संग्रह है। त्यागी की ये कहानियां जीवन के छोटे-छोटे संदर्भों को लेकर लिखी गयी हैं। उत्तर प्रदेश का ग्रामीण-जीवन और उसकी सांस्कृतिक-चेतना इन कहानियों में सर्वत्र विद्यमान है, इसलिए इनके पात्र अपनी विश्वसनीयता एवं सहजता कभी नहीं खोते। संग्रह की पहली कहानी, 'खूंटे' से लेकर अंतिम कहानी 'अपना-अपना दर्द' तक में कहानीकार ने लोक-जीवन के सूक्ष्म अध्ययन का परिचय दिया है। अतः इन कहानियों को वृहत्तर सामाजिक-जीवन के संदर्भों से काटकर नहीं देखा जा सकता।

पहली रपट

लेखक : जगदीश चंद्र, प्रकाशन : राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी मार्ग, नयी दिल्ली—२; मूल्य : चौबीस रुपये।

जगदीश चंद्र का यह पहला कहानी संग्रह है। ये सभी कहानियां पंजाब की

धरती की गंध देती हैं। इन कहानियों में मानवीय मूल्यों के विघटन की तसवीर जहां एक ओर कथाकार ने प्रस्तुत की है, वहीं दूसरी ओर आज के जीवन की विसंगतियों से पीड़ित, पर संघर्षरत मनुष्यों की सृष्टि भी की है। 'पहली रपट' की पंद्रह कहानियों में 'पुराना घर', 'पुच्चू', 'गूंगी', 'अलग-अलग नंबर,' 'आधा टिकट', आदि कहानियां महत्त्वपूर्ण हैं, जो शिल्प की दृष्टि से भी उल्लेखनीय हैं।

—भारत यायावर

विविध

हिंदी-उपन्यास-साहित्य में दांपत्य-चित्रण
लेखिका : डॉ. उर्मिला भटनागर, प्रकाशक : अर्चना प्रकाशन, जयपुर; मूल्य : पिचहत्तर रुपये।

यह एक शोध-प्रबंध है, जिसमें १९वीं शताब्दी के प्रमुख चर्चित उपन्यासों को लेकर उनमें चित्रित दांपत्य के विभिन्न रूपों का विश्लेषण किया गया है—जैसे मन से बंधे हुए दांपत्य, अखंड दांपत्य, खंडित दांपत्य, परिवेश में बंधे हुए दांपत्य आदि। प्रेमचंद-पूर्व उपन्यासों की अपेक्षा प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में चित्रित दांपत्य अधिक प्रयोगात्मक एवं मुक्त हो गया था। जीवन के बदलते मूल्यों के धरातल पर दांपत्य के नैतिक रूप को कहां तक और कितना वहन किया जा सकता है—जैसे प्रश्नों पर विचार किया गया है। अंत में नेमिचंद जैन की उक्ति को कि—'स्त्री-पुरुष संबंधों की या विवाहित दंपत्तियों की कोमलता और उनका मानसिक धरातल ——जैसे नष्ट होता जा रहा है... जब दंपत्तियों का मिलन आध्यात्मिक मि[illegible] परिणत नहीं हो जाता, दांपत्य-जीवन [illegible] सफलता दुर्लभ है,' लेखिका ने नि[illegible] रूप से प्रस्तुत किया है। इस रूप में [illegible] के मूल विश्वास और समानता के [illegible] हारिक धरातल को ही समाप्त कर [illegible] गया है, जबकि दांपत्य-जीवन की [illegible] समस्याएं इन्हीं धरातलों के अभाव [illegible] उपजती हैं। अध्यात्म के धरातल [illegible] लौकिक दांपत्य शेष रहता है, इसमें [illegible] है। शोध के निष्कर्ष अस्पष्ट हैं।

हरियाणा गौरव-गाथा
कवि : राज्य-कवि उदयभानु हंस, प्र[illegible] शक : शिशिर प्रकाशन, भिवानी (ह[illegible] याणा); मूल्य : चालीस रुपये।

आज हिंदी-जगत में श्री उदयभानु [illegible] का नाम किसी परिचय का मोहताज [illegible] है। प्रस्तुत काव्य-कृति में वैदिक [illegible] से लेकर अब तक की हरियाणा की [illegible] झांकियों का सजीव चित्रण काव्य [illegible] माध्यम से किया गया है। स्वतंत्रता के [illegible] हरियाणा में हुई असाधारण प्रगति [illegible] हरियाणा के ऐतिहासिक स्वरूप को [illegible] वाला यह ग्रंथ एक काव्यमय दस्ता[illegible] है। अपने प्रकार की यह एक अनु[illegible] अभिनव कृति है। इसमें शैली कहीं-[illegible] इतिवृत्तात्मक हो गयी है, लेकिन कवि [illegible] अपनी काव्य-प्रतिमा द्वारा इसे रोच[illegible] प्रदान की है।

—धनंजय [illegible]

ज्योतिष
आपकी पश्नावलियों का विश्लेषण ११

नीचे दिये खाली जन्म-चक्र को भरकर भेजिए। हमारे ज्योतिर्विद आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे। हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं। क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे। प्रविष्टि–११ का उत्तर यदि उस अंक में न मिले तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है। आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें। एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे। अगले अंक में प्रतीक्षा न करें।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान'-जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए। प्रविष्टि की अंतिम तिथि २० फरवरी '८३।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि पोस्कार्ड पर ही चिपकाकर भेजिए। लिफाफे में भेजी गयी प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

. . . . यहां से काटिए . . . .

११

नाम . . . .

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख में) . . . . . . महीना . . . . सन . . . .

जन्म-स्थान . . . . जन्म-समय . . . . .

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा . . . .

पता . . . .

आपका एक प्रश्न . . . .

. . . .

. . . . यहां से काटिए . . . .

इस पते को ही काटकर पोस्कार्ड पर चिपकाएं

संपादक (ज्योतिष विभाग–प्रविष्टि–११), 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

मुस्कान से सजा!
मार्टन का मजा!!
कोकोनट कुकीज़ ● लेक्टो बोनबोन्स
● टाफीज ● कोकोनट क्रन्च और सॉफ्ट
सेंटर्ड स्वीट्स ● पीपरमींट रोल्स
● मिनीपोप्स.
MORTON
SWEETS OF DISTINCTION
मार्टन कन्फैक्शनरी
एण्ड मिल्क प्रोडक्टस फैक्ट्री
पो० मढ़ौरा (जिला : सारन),
बिहार.

नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

सिने जगत की नवीनतम प्रवृत्तियां

● विशेष प्रतिनिधि

नयी दिल्ली के सीरी फोर्ट प्रेक्षा-गृह में आयोजित नवम भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह न्यूनाधिक रूप से एक सफल आयोजन के रूप में स्मरण किया जाएगा। भारतीय अंत-र्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह को सन १९७४ में विश्व के छठवें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह के रूप में मान्यता मिल चुकी है। शेष पांच फिल्म-समारोह बरलिन, फ्रांस, कारलोवी वेरी, मास्को और तेहरान में आयोजित किये जाते हैं। यों—तेहरान में पिछले कुछ वर्षों से कोई अंत-र्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह नहीं हुआ है।

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोहों का अपना महत्त्व है। वे सांस्कृतिक विचारों,

सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'स्वर्ण मयूर' किसी भी फिल्म को नहीं

नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह में प्रतियोगिता वर्ग एवं लघु फिल्म वर्ग, दोनों में किसी भी फिल्म को सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'स्वर्ण मयूर' के उपयुक्त नहीं समझा गया। यह पहला अवसर है, जब किसी भी फिल्म को 'स्वर्ण मयूर' पुरस्कार नहीं दिया गया।

'रजत मयूर' : (प्रतियोगिता वर्ग) : सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए : सोवियत फिल्म 'ओपेन हार्टस' के निर्देशक अलेक्सई मेल्लिकोव को। सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए : अभिनेत्रियों में 'ओपेन हार्ट्स' की अभिनेत्री मारिना स्तारिख को। अभिनेताओं में मिस्र की फिल्म 'बस ड्राइवर' के अभिनेता नार्ल एल शेरिफ को।

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार : भारतीय फिल्म 'चोख' को

रजत पुरस्कार : (लघु चित्र वर्ग) सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए। चेक फिल्म 'लेब्रिंय ऑव द् वर्ल्ड' के निर्देशक मिलान मिलो को।

विशेष पुरस्कार : भारतीय फिल्मों' गिफ्ट ऑव लव' एवं 'फेसेस ऑफ्टर द् स्टार्म' को। निर्णायक-मंडल ने निदशकों, छायाकारों, अभिनेताओं और तकनीशियनों की विशिष्ट उपलब्धि के लिए 'द् ग्रे फाक्स' (कनाडा) और 'एवलांश' (बलगारिया) की विशेष सराहना की।

रजत मयूर' से पुरस्कृत

अभिनेता नार्ल एल शेरिफ

धारणाओं के आदान-प्रदान का महत्त्व-पूर्ण मंच सिद्ध हुए हैं। वे जाति, धर्म, भाषा की दीवारों और भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर विभिन्न देशों के फिल्म-निर्माता-निर्देशकों, फिल्म-समीक्षकों और फिल्म-प्रेक्षकों को परस्पर निकट लाने की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे फिल्म-जगत की नवीनतम प्रवृत्तियों का भी परिचय कराते हैं।

भारत में पिछले आठ अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह इन वर्षों में आयोजित किये गये थे—सन १९५२, १९... १९६५, १९७४–७५, १९७७, १९... और १९८१।

नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह में प्रतियोगी वर्ग में ये फिल्में प्रदर्शित की गयी थीं—लोनली हार्ट्स (आस्ट्रेलिया), इन लव विद जैकब (चेकोस्लोवाकिया), द ब्लीडिंग स्टेच्यू (यूनान), द राइट टु होप (हंगरी), मुतावो...

'ओपेन हार्ट्स' का एक दृश्य

बाहिया (इराक), द हंट (श्रीलंका), बस ड्राइवर (मिस्र), एवेलांश (बुल्गारिया), द मैन ऑन द वाल (संघीय जरमन गणराज्य), द साइलेंस ऑव द डीप (रूमानिया), टेंडर मर्सीज (अमरीका), द क्रॉस ओवर (बंगलादेश), मर्डर स्टेप बाई स्टेप (सीरिया), द ड्राइव टु विन (चीन), पेपर हार्ट (स्पेन), साइन ऑव द बीस्ट (फिनलैंड), त्रिस्ट इन द ऑफ्टरनून (मलयेशिया), क्वैक (पोलैंड), चोख (भारत), द एंड ऑव द ट्रिप (बेल्जियम), इंडिया डॉटर ऑव सन (ब्राजील), ग्रेफादस (कनाडा) ओपन हार्ट्स (सोवियत संघ) और द वायस (इटली)।

पुरस्कारों का निर्णय करनेवाले निर्णायक-मंडल के सदस्य थे—सर्वश्री लिंडसे एंडरसन (ब्रिटेन) अध्यक्ष, थामस गुटरैज आलिया (क्यूबा), आबिद मोहम्मद

'रामसेस एंड द ड्रीम' का एक दृश्य

नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह के जूरी एक बैठक में

'लोनली हार्ट्स'

'इलिप्पथायम' के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए अदूर गोपाल कृष्णन

बनती हैं। तीसरी दुनिया के देशों में वह निश्चयतः अग्रणी देश है। नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह में भाग लेने आये अनेक विदेशी प्रतिनिधियों ने चर्चा के दौरान इस तथ्य को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया।

यद्यपि कई कारणों से यह नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह राजधानी के सिने-प्रेक्षकों में किसी विशेष उत्साह और उल्लास की सृष्टि नहीं कर पाया, तथापि इस आयोजन में प्रदर्शित कुछ फिल्में निस्संदेह नये कीर्तिमान की रचना करनेवाली थीं। (नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह में प्रदर्शित फिल्मों की चर्चा अगले अंक में)

'कथा' का एक दृश्य
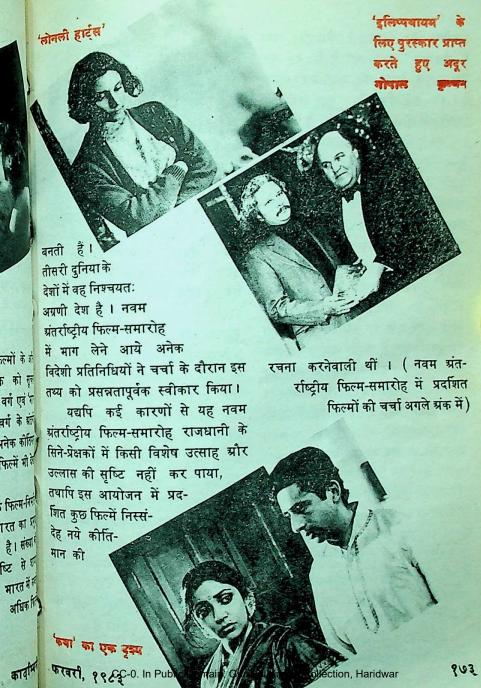
हरप्रीत कौर, आगरा: ब्लैक होल क्या है, वैज्ञानिकों का विचार है कि यह एक दिन संपूर्ण विश्व को नष्ट कर सकता है। क्या यह संभव है ? क्या अभी तक किसी ऐसे होल का पता चला है ?

ब्लैक होल—जैसा कि नाम से विदित है—यह एक साधारण मनुष्य के मन में भ्रांति पैदा करता है, यह कोई छिद्र नहीं, बल्कि एक तारा है जो इतना संकुचित हो गया है, कि इससे इसकी सघनता बढ़ गयी है। इसकी सघनता तथा आकर्षण-शक्ति इतनी ज्यादा है कि इससे उत्सर्जित होनेवाला प्रकाश स्वयं इसी में विलीन हो जाता है। फलस्वरूप इसको किसी दूरबीन से भी नहीं देखा जा सकता है, इसी वजह से इसका नाम ब्लैक होल पड़ा। इससे संबंधित दिलचस्प बात यह है कि यह दुनिया का सबसे सघन और सबसे छोटा तारा है, परंतु इसकी आकर्षण शक्ति इतनी अधिक है कि यह अपने आसपास की सब वस्तुओं को हड़प करता चलता है। इस गुण की वजह से इसकी परिधि में आनेवाली कोई वस्तु इसके आकर्षण से बच नहीं सकती, इसके अलावा न तो यह फट सकता है न ही यह खत्म हो सकता है, । यह तो केवल बढ़ ही सकता है, और इसके बढ़ने की प्रक्रिया को कोई शक्ति रोक नहीं सकती। यही वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है।

ब्लैक होल के अंदर क्या है और इसके भीतर क्या प्रक्रिया हो रही है; यह वैज्ञानिकों के लिए गुत्थी बना हुआ है। इसकी उपस्थित का भान इसकी आकर्षण शक्ति के द्वारा ही होता है।

हाल में ही एक ब्लैक होल का पता चला है। इसकी विशेषता इसके चारों तरफ 'एक्स-रे' विकिरण है और इसका नाम 'सिग्नस एक्स-रे' है। इसका पता एक 'एक्स-रे' कृत्रिम उपग्रह (सेटेलाइट) द्वारा पता चला है। यह एक बड़े तारे (सुपर-स्टार) के पास है और व्यस्त है अपने साथी को निगलने में। इस सुपर स्टार से निकलनेवाली गैस को पीने में लगा हुआ है। सुपर स्टार गैस जैसे ही ब्लैक होल के चारों तरफ जाती है, वैसे ही आपस में वे टकराते हैं। इससे उत्पन्न ऊर्जा तीव्र 'एक्स-रे' का विकिरण करती हैं। वह दिन दूर नहीं जब यह सुपर-स्टार ब्लैक होल में विलीन हो जाएगा।

ब्लैक होल का अनुमानित आकार सूर्य से तीन गुना है। देखने में छोटा मगर यह पूरी-की-पूरी गैलेक्सी को [illegible] में सक्षम है।

अपर्णा, दिल्ली : कस्तूरीमृग कहां पाया जाता है और क्यों इसकी महत्ता है ?

कस्तूरीमृग नामक पशु मृगों के अंग्युलेटा (Ungulata) कुल की [illegible]

मास्किफरस नामक प्रजाति का जुगाली करनेवाला सींग रहित चार पावोंवाला प्राणी है। प्रायः हिमालय पर्वत के २,४०० से ३,६०० मीटर तक समुद्र-तल से ऊंचे स्थानों पर रहता है। यह तिब्बत, नेपाल, इंडोचीन, साइबेरिया, कोरिया, कांसू आदि के पहाड़ी भागों में पाया जाता है। इसके खुरों और नखों की बनावट इतनी छोटी, नुकीली और विशेष ढंग की होती है कि बड़ी फुर्ती और तेजी से भागते समय भी इसकी चारों टांगें चट्टानों के छोटे-छोटे किनारों पर टिक सकती हैं। नीचे से इसके खुर पोले होते हैं। इसी से पहाड़ों पर गिरनेवाली रूई-जैसे हलके हिम में भी ये नहीं धंसते और कड़ी से कड़ी जमी बर्फ पर भी नहीं फिसलते। इसकी एक-एक कूद १५ से २० मीटर लंबी होती है। इसकी श्रवण-शक्ति बहुत तीक्ष्ण होती है। पेट और कमर के निचले भाग लगभग सफेद ही होते हैं और बाकी शरीर कत्थई भूरे रंग का होता है। कभी-कभी शरीर का ऊपरी रंग सुनहरी झलक लिये या नारंगी रंग का दिखता है। इनके शरीर पर खूब घने बाल रहते हैं। बाल सीधे और कठोर होते हुए भी स्पर्श करने में बहुत मुलायम होते हैं।

कस्तूरीमृग का आर्थिक महत्त्व है। कस्तूरी मृग के शरीर पर सटा कस्तूरी का नाफा ही उसके लिए मृत्यु का दूत बन जाता है। औषधि के लिए यह महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

सुषमा शर्मा, भोपाल : यूक्लिड कौन था और क्यों इनका नाम प्रसिद्ध है ?

यूक्लिड (Euclid), ग्रीक गणितज्ञ थे जो ईसा से लगभग ३०० वर्ष पूर्व हुए। ऐसा कहा जाता है कि प्लेटो के शिष्यों से ही एथेंस में इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की थी। यह टोलेमी प्रथम (Tolemy) के, (जिसने ईसा से ३०६ वर्ष पूर्व से २८३ वर्ष पूर्व तक राज्य किया था) समकालीन थे। यूक्लिड का सबसे बड़ा ग्रंथ उसका एलीमेंट्स है, जो १३ भागों में है। इससे पहले भी बहुत से गणितज्ञों ने ज्यामितियां लिखी थीं, परंतु उन सब के बाद जो ज्यामिति यूक्लिड ने लिखी उसकी बराबरी आज तक कोई नहीं कर सका। यूक्लिड ने नयी उपपत्तियां दीं। उपपत्तियों के क्रम भी बदल दिये, जिससे पुरानी उपपत्तियां सब बेकार हो गयीं। उसने उस समय तक के सभी अनुसंधानों को अपनी पुस्तक में दे दिया था। १६ वीं शताब्दी में बहुत लोगों ने ज्यामितियां लिखीं परंतु कोई ऐसी नहीं लिखी गयी, जो यूक्लिड ज्यामिति से अच्छी हो। लेखक केवल रूप ही बदल पाये। यूक्लिड ने कुछ अन्य ग्रंथ भी लिखे हैं—१. डाटा, २. भाग, ३. ऑप्टिक्स, ४. फेनोमिना ५. गाने की कला पर भी पुस्तक लिखी (गान-विधा) ६. भ्रांतियां दूर करना (नौसिखियों के लिए) बहुत सारे ग्रंथ अभी खोजने बाकी हैं।

चलते चलते एक प्रश्न और

राजन राहू, कोटा : मनुष्य भोजन क्यों करता है ?

शोषण के लिए . . . !

ज्योतिष समस्या और समाधान

९

'कादम्बिनी' के लोकप्रिय स्तंभ—'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' का पाठ[कों] ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक नौ के लिए हमें काफी संख्या में पाठ[कों] की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्न का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठि[]नाइयां थीं। अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों [की] समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, सुपरिचित ज्योतिषाचार्य—डॉ. आचार्य कुसुम[]

सतीश मनमोहन दास गुजराती, इंदौर

प्रश्न—मेरा कारखाना उन्नतिकारक रहेगा या नहीं तथा मेरी शादी कब होगी?

उत्तर—आपके ग्रहयोग के अनुसार आपको सूर्य, मंगल एवं राहु शुभ नहीं हैं और अभी चलित में राहु अशुभ फलदायक है। जुलाई के बाद सुधार होगा और सन १९८४ में शादी का योग है।

शिवाजी भक्तवत्सल, आगरा

प्रश्न—जीवन में तरक्की का समय कब से है?

उत्तर—आपके ग्रहयोग के अनुसार पिछले चार-पांच वर्ष काफी परेशानी के बीते हैं। ३६ वर्ष की आयु तक समय सामान्य ही रहेगा, ३७ वें वर्ष से आपका पूर्ण भाग्योदय है।

शांतिदेवी, कानपुर

प्रश्न—क्या मेरे पेट में अल्सर है?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार सूर्य, राहु, शनि एवं केतु आपको शुभ नहीं है[ं]। पंचम, अष्टम और द्वादश भाव भी ठी[क] नहीं है, अतः काफी दिनों से आपका स्वा[]स्थ्य ठीक नहीं है। अल्सर के लिए डॉक्टर[ी] राय लें।

निर्मलकुमार धींग, रतला[म]

प्रश्न—किसी व्यवसाय में सफल[ता] नहीं मिलती। कौन-सा व्यवसाय ठी[क] रहेगा और कब-से?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार आप[के] द्वादश, चतुर्थ, अष्टम एवं दशम भाव शु[भ] नहीं हैं। गोचर के अनुसार राहु अ[] प्रतिकूल फल दे रहा है। सन १९८४[] सफलता मिलेगी। आपको मेडिकल स्टो[र] जमीन तथा कपड़े के व्यवसाय में सफल[ता] मिलेगी। लोहा या मशीनरी हानिकर है[]

राम मोहन गुप्ता, अली[गढ़]

प्रश्न—नौकरी का विघ्न कब [दूर] होगा?

उत्तर—आपकी जन्मकुंडली के अनुसार लग्न, अष्टम एवं दशम भाव गोचर के अनुसार शुभ नहीं है। सन १९८३ के अंत तक बाधा रहेगी। उसके बाद समय उत्तम रहेगा।

अखिलेश, कोटा

प्रश्न—मां कई वर्षों से अस्वस्थ चल रही हैं?

उत्तर—आपके ग्रहयोग के अनुसार आपके मातृ स्थान में राहु पड़ा है, इसके साथ ही शनि एवं केतु अच्छे नहीं हैं। गोचर में भी राहु अभी प्रतिकूल है। अतः वे पूर्ण स्वस्थ्य नहीं रह पाएंगीं, किंतु सितम्बर, १९८३ से स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार अवश्य होगा।

नरेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

प्रश्न—नौकरी में मानसिक, वित्तीय सुख तथा पदोन्नति की आशा कब तक करूं?

उत्तर—आपके ग्रहों का अध्ययन किया। राहु, केतु एवं सूर्य शुभ नहीं हैं। उपरोक्त सभी इच्छाएं आपको ४० वर्ष के बाद प्राप्त होंगी। ४२ वर्ष की आयु के बाद आपको अधिक सफलता का योग है।

दीवान रामचंद्र कपूर, वाराणसी

प्रश्न—राहु में मंगल का अंतर कैसा रहेगा? मृत्यु-योग तो नहीं है?

उत्तर—बुध, गुरु एवं चंद्र की स्थिति को देखकर ऐसा लगा कि आप स्वयं भी दैवज्ञ हैं। मंगल, सूर्य के साथ धन भाव में पड़ा है, शनि भी साथ है और राहु द्वादश भाव में है। इन दिनों गोचर के अनुसार शनि भी तुला में है। अतः वर्ष कष्टकारक है।

मोहन सिंह, हल्द्वानी, नैनीताल

प्रश्न—वकील हूं किंतु दूकान करना चाहता हूं, वह कब तक संभव है?

उत्तर—आपकी जन्म-कुंडली के अनुसार आपको शनि, राहु एवं केतु शुभ नहीं पड़े हैं इसलिए आप अभी तक किसी भी कार्य में व्यवस्थित नहीं हो पाये हैं। सन १९८५ से दूकान अवश्य होगी। मेडिकल स्टोर, सौंदर्य प्रसाधन तथा मिष्ठान्न भंडार ठीक रहेगा। भूमि या मशीनरी के व्यवसाय से बचें।

कुमारी नीहारिका, कानपुर

प्रश्न—बालिका अभी तक बोल नहीं पाती। कब तक बोलने लगेगी?

उत्तर—बालिका का ग्रहयोग शुभ नहीं है। शनि, सूर्य, राहु एवं केतु अशुभ हैं। आठ वर्ष की आयु तक कोई संभावना नहीं है, उसके बाद आशा की जा सकती है। डॉक्टर को दिखाइए।

श्याम बाबू कस्तूरचंद गुप्ता, नागपुर

प्रश्न—भविष्य में पदोन्नति की आशा कब है?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार सन १९८५ में आपकी पदोन्नति की पूर्ण आशा है। फिर भी आप लहसुनिया धारण करें क्योंकि केतु अभी अवरोधक है।

कुमारी शोभा, पनवेल (महाराष्ट्र)

प्रश्न—विवाह कब तक? वर के

घर का स्तर कैसा होगा ?

उत्तर—ग्रह योग के अनुसार शुक्र बुध एवं सूर्य अच्छे नहीं हैं। सप्तम भाव भी शुभ नहीं है, अर्थात सामान्य है। विवाह का योग सन १९८४ तक है। वर का स्तर अच्छा होगा। सुख मिलेगा।

भरतसिंह, जोधपुर

प्रश्न—एम. ए. पास बेरोजगार हूं; नौकरी या व्यवसाय में से क्या होगा तथा कब-से ?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार शनि, राहु, गुरु, मंगल एवं सूर्य अच्छे नहीं हैं। दशम भाव भी अच्छा नहीं है। जून, १९८४ के बाद अच्छा समय आरंभ होगा। स्व-तंत्र व्यवसाय अनुकूल रहेगा। सर्विस नहीं।

देवनारायण मिश्र, सुल्तानपुर

प्रश्न— पारिवारिक कलह-स्थिति कब तक सुधरेगी ?

उत्तर—पंचम भाव लग्न एवं अष्टम ठीक नहीं हैं। इसलिए प्रारंभ से ही संघर्ष रहा है। आगे भी थोड़े बहुत मतभेद रहेंगे। सन १९८५ से सुधार का योग है।

संगीता गौड़, उज्जैन

प्रश्न—मेरा वैवाहिक जीवन कब तक सुखी होगा ? क्या नौकरी का योग है ?

उत्तर—आपके ग्रहयोग के अनुसार

आपको सूर्य, शनि, राहु एवं केतु नेष्ठ हैं। राहु सप्तम में कर्क का, नीच का है। यही कलहकारक है। थोड़े मतभेद आजीवन रहेंगे। नौकरी का योग २७ वें वर्ष में है।

राजू, गोरखपुर

प्रश्न—मैं फिल्म-अभिनेता बनना चाहता हूं। क्या मैं सफल हो पाऊंगा?

उत्तर—आपकी कुंडली के अनुसार आपको शनि, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र एवं केतु ठीक नहीं हैं। साथ ही ग्रहयोग भी है। इसलिए आप अपने लिए मात्र सामान्य जीवन की कल्पना करें।

दर्शनदयाल, आगरा

प्रश्न—रोजगार में हानि कब तक और कैसे समाप्त होगी?

उत्तर—शनि, गुरु एवं चंद्र अच्छे नहीं हैं। सन १९८५ से आपका अच्छा समय प्रारंभ होगा। स्वाभाविक रूप से कार्य होने लगेंगे तथा रोजगार में सुधार होगा। तब तक सामान्य समय है।

कुमारी पल्लवी, पालनपुर (गुजरात)

प्रश्न—मेरे हर कार्य में बाधा क्यों आती है? इसके लिए क्या करूं?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार शनि एवं राहु शुभ नहीं हैं। यही ग्रह आपके कार्यों में अवरोधक हैं। सन १९८३ के अंत तक यही स्थिति रहेगी। सन १९८४ से सुधार आएगा। गोमेद का नग धारण करें।

—३१४३, सेक्टर ३७-डी, चंडीगढ़

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ग. २. क. ९, ६७, ४९९ वर्गमील, घ. ९, १९, ५९५ वर्गमील, ३. घ. (४ सूर्यग्रहण, ३ चंद्रग्रहण), २२०६ ई. में पुनः ऐसा होगा, ४. ग., ५. क. ८ अक्तू. १९३२ (विगत ८ अक्तू. को स्वर्ण-जयंती मनायी गयी), ख. क्रमशः एयर मार्शल जी. ई. गिब्स तथा एयर मार्शल सुब्रतो मुखर्जी (८ नव. १९६० को टोकियो में मृत्यु), ६. क. १५ अक्तू. १९३२, ख. जे. आर. डी. टाटा ने, बंबई से कराची (विगत १५ अक्तू. को नागरिक उड्डयन की स्वर्णजयंती पर श्री टाटा द्वारा कराची से बंबई तक की पुनः उड़ान), ७. १९८१ में ४६ करोड़ मीट्रिक टन (१९८२ में ४० लाख टन अधिक का अनुमान), ८. रेंढ़ सु. ता. बि., ब्रिटिश सहयोग से, क्षमता १,००० मे. वा., विंध्याचल परियोजना, सिंगरौली क्षेत्र में, सोवियत सहयोग से, क्षमता १,२६० मे. वा., ९. सोवियत रूस, १०. इंटलसैट वी–ई. (२८ सितं. १९८२ को केप केनावराल, अमरीका से छोड़ा गया), ११. कुत्ता

मानव में ठीक उतनी ही प्रदर्शन-प्रियता रहती है, जितनी कि उसमें बुद्धि की कमी होती है।

—पोप

कुछ उनके बारे में

हर आदमी के लिए एक पत्नी का होना बहुत जरूरी है!

क्यों?

क्योंकि इतनी सारी गलत बातें घटित होती रहती हैं कि.....

आदमी सारी जिम्मेदारी सरकार पर नहीं डाल सकता!

पूरी रात बाहर रहे! अब किसलिए आए हो घर में?

चाय-नाश्ते के लिए!

औरतें अपनी उम्र में से कुछ वर्ष घटाकर ही बताती हैं, घटे हुए शेष वर्षों को दूसरी औरतों की उम्र में जोड़ देती हैं।

मैं आपकी लड़की के वजन के बराबर सोना दूंगा, उसकी शादी आप मुझसे कर दें!

तो मुझे कुछ समय दीजिए... अपनी बेटी का वजन बढ़ाने के लिए!

बॉस के घर गए थे! क्यों झूठ बोलते हो? तुम्हारे बॉस अभी पांच मिनट पहले ही यहां से गए हैं.

तुम कहते हो कि मैं उस लड़की से शादी कर लूं, जिसके साथ शामें गुजारता हूँ! यह भी तो सोचो कि फिर शामें किसके साथ गुजारा करूंगा?

इस अंक में हम पाठकों को परिचित करा रहे हैं, अनिल कुमार पांडेय से। इनकी पांचों रचनाओं में समय की परिधि और उसके केंद्र में स्थित आदमी की मनःस्थिति की सार्थक अभिव्यक्ति हमें देखने को मिलती है। यहां प्रस्तुत हैं, इनकी पांच चुनी हुई कविताएं।

—संपादक

आदमी इस शहर का

अटकता / भटकता / बहलता
उलझता / सुलझता / झुलसता
भागता / टहलता / ठिठकता
फिसलता / थिरकता / बहकता /
आदमी
(इस शहर का)
खाता है / रोज-बरोज नियम से
अपने को / तिल-तिल
और 'डाइजेस्ट' करता है / बिना उकारे
गोली के सहारे
जहर फैलता है / कैंसर-सा
नतीजन / एक दिन
सोता है सोचकर / उठेंगे कल
किंतु / खिसक लेता है दबे पांव
चुपके से / बिना बोले
साथ लिये / धुंधला धुंए-सा मन
अवशेष में छोड़ जाता है
रुपहली / कसैली / विषैली
ढेर-सी कड़ुवाती यादें

यथार्थ

सावन भादों की रात
और ये अनवरत बरसात
कच्ची भीत की खोलती जाती है
पर्त पर पर्त
थरथराती / ढहती दीवार का
धचाक-धचाक स्वर
भंग कर रहा है / नीरवता को
एक अनजानी-सी दहशत समाती है
सीने में
लगाती है प्रश्न चिह्न / कि—
अब क्या होगा?
ठीक उसी तरह जैसे
कंपकपाता / जूझता हुआ यथार्थ से
अपने ही कंधों पर खुद को ढो रहा हूं मैं

धुआं

हर रोज धुआं पीता हूं
जिंदगी का
जिंदगी / जो सुलगती गीली लकड़ी है

नीम की
जलती नहीं / आंच नहीं देती है
दम फूल-फूल जाती है / फूंकते फूंकते
लेकिन फिर भी
सिर्फ वे सुलगती हैं
मुनाफे में ढेर सारे धुएं के गुल्म पीता हूं
और बिंदास जीता हूं

आग

ईश्वर जाने कैसे
जंगल में बांस की कोठियों से
फूटी चिनगारी
चिनगारी बदली आग में
आग से उठे शोले
नतीजा / सामने था
सारा जंगल भर गया आग से
शेर की खाल ओढ़े
भेड़िया मांद में ही था
भागता है तो शेर नहीं कहलाएगा
और न भागे तो / मांद में जल जाएगा
फिर भी
भेड़िया तलाश में / कर रहा है ताक-झांक
कि मौका लगे तो भाग लूं
भाड़ में गया शेरपन

धर्म

झुंड की झुंड / ढेर सारी भेड़ें
जिन्हें हांकता है / अकेला चरवाहा
लाठी से
एक के पीछे एक / गिरती जाती हैं
खड्डे में
बेजान लाशों की मानिंद
उठाती नहीं सिर / लट्ठ के भय से
बुद्धि कुंद हो जाती है / मार के भय से
संत्रास से मुक्ति दिलाने के लिए
जगानी है चेतना
भड़कानी है आग / दिलों में विद्रोह की
वक्त की पुकार पर
शहादत ही धर्म है

—अनिलकुमार पाण्डेय
१४/२, जूही कॉलोनी, कानपुर-१४

आत्म-कथ्य

जन्म—१ जनवरी, १९५६

"कभी-कभी दिल के किसी कोने से एक आवाज उठती है, जो शक्ति देती है जूझने की, वही कभी-कभी कागज पर भी उतरती है, कविता के रूप में।"

संप्रति—निजी संस्थान में कार्यरत।

● के. ए. दुबे 'पद्मे

मेष (चु, चे, चो, ल, ली, ले, लो, अ)

आर्थिक प्रगति का वर्ष है। जो लोग बेरोजगार हैं, उन्हें वर्ष के प्रारंभ से २० मार्च तथा २१ सितम्बर से २० नवम्बर के मध्य अपनी संपूर्ण शक्ति का उपयोग रोजगार प्राप्त करने की दिशा में करने से लाभ मिलेगा। प्रमोशन, नया व्यापार, नयी नौकरी आदि की दिशा में भी प्रयास करने पर सफलता मिलेगी। आर्थिक प्रयास भी सफल रहेंगे। १६ फरवरी से २७ मार्च के मध्य शारीरिक कष्ट, दुर्घटना, तथा अचानक अर्थहानि के प्रति भी सतर्क रहें। १५ जुलाई से राहु द्वितीय भाव में होगा, जिस कारण राजनीतिक लाभ उठाने के प्रयास में सफलता मिलेगी। राजनीति में प्रवेश करने के लिए भी उत्तम समय होगा। ४ अगस्त से १६ सितम्
के मध्य मंगल के कारण पारिवारिक
व्यावसायिक रूप से परेशानी की स्थि
का सामना करना पड़ सकता है। या
भी करनी पड़ सकती है। स्थानांतर
मकान, विवाद की स्थिति से मानसि
रूप से पीड़ा की स्थिति आ सकती है
१८ अक्तूबर से २० दिसम्बर के म
संतान, शिक्षा, प्रतियोगिता के प्रति अव
सतर्कता बर्तें, परेशानी की स्थिति
सामना करना पड़ सकता है। १७ नव
से शनि उदय होगा जो कि रोजी-रो
मांगलिक कार्य, प्रतिष्ठा, प्रमोशन
की दिशा में किये जा रहे प्रयासों में
लता देगा।

ग्रह स्थिति : गुरु वृश्चिक में, शनि तुला में, राहु मिथुन में, केतु धनु में, ८ से बुध मकर में, १२ से शनि वक्री तथा सूर्य कुंभ में, १६ से मंगल मीन में। १७ से शुक्र मीन में।

वृष (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू, बो)

१३ फरवरी तक मांगलिक कार्य की दिशा में किये जा रहे प्रयासों में सफलता देगा। प्रियजन मिलन। संतान के दायित्व-विवाह, शिक्षा, नौकरी आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयासों में सफलता मिलेगी।

६ अप्रैल तक शिक्षा की दिशा में किये जा रहे प्रयासों में सफलता मिलेगी। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। बनायी गयी योजना को कार्यरूप में परिणित करने पर सफलता मिलेगी। रचनात्मक लेखन, शोध, कला, संगीत आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयोग सफल होंगे। नवीन व्यवसाय की योजना को साकार रूप देने में सफलता मिलेगी। यात्रा के प्रयास में भी सफलता मिलेगी।

१४ मार्च से १४ अक्तूबर के मध्य पारिवारिक रूप से अप्रिय समाचार मिल सकता है। भावुकता में कोई निर्णय न लें, अपयश की स्थिति आ सकती है। विदेश-यात्रा के प्रयास में सफलता मिल सकती है। स्थानांतरण का प्रयास भी सफल हो सकता है। १ जुलाई से ६ अगस्त के मध्य तथा १७ नवम्बर से ३० दिसम्बर के मध्य आर्थिक प्रतिष्ठा, परिवार, व्यवसाय आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे।

१४ अक्तूबर से १७ नवम्बर के मध्य स्वास्थ्य व प्रतिष्ठा के प्रति सतर्क रहें।

मिथुन (क, की, कू, के, को, घ, छ, ह)

३ मार्च से ४ अप्रैल तथा १९अगस्त से १० नवम्बर के मध्य का समय उपलब्धियों का समय होगा। प्रमोशन, कीर्ति, धन, परिवार, व्यवसाय आदि के वृद्धि के प्रयास सफल होंगे। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त की दिशा में पूरी शक्ति से प्रयास करने पर निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। धन, संपत्ति के संबंध में किये गये प्रयास भी फलीभूत होंगे। शिक्षा, विदेश-गमन के प्रयास भी सफल हो सकते हैं। रचनात्मक लेखन, साहित्य, कला, व्यापार आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयोग सफल होंगे। १६ फरवरी से २७ मार्च एवं ६ अगस्त से ९ सितम्बर तथा १९ नवम्बर से ३१ दिसम्बर के मध्य परेशानियों का सामना करना पड़ सकता

है। इन दिनों में मंगल की स्थिति कष्ट-प्रद रहेगी। परिवार, स्वास्थ्य, धन, प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय के प्रति सचेत रहना हितकर होगा। विवाद एवं झगड़ों की स्थिति कष्टप्रद हो सकती है।

१५ जुलाई से राहु, लग्न से हटकर बारहवें घर में चला जाएगा। अशांत मन में शांति का संचार होगा। भय की स्थिति समाप्त होगी। मन में विश्वास-वृद्धि होगी। राजनीतिक व्यक्तियों के लिए सुखद परिवर्तन होगा। अपने उद्देश्य पूर्ति में राहु का परिवर्तन हितकर होगा

कर्क (ही हू, हो, हे, डा, डी, डू, डे,

१६ फरवरी से १८ जून एवं सितम्बर से ६ नवम्बर के मध्य का सफलता का उत्तम समय होगा। क्षेत्र में भी प्रयास करेंगे, आशा

पर्व एवं त्योहार

१ फरवरी—भौमवती चतुर्थी, ४—स्वामी रामानंदाचार्य जयंती, ५—जानकी जयं ८—विजया एकादशी व्रत, १०—प्रदोष व्रत, ११—महाशिवरात्रि, १२—अमाव १७—गणेश चतुर्थी-व्रत, १९—वसंत ऋतुपर्व २१—दुर्गाष्टमी, २३—एकादशी २५—प्रदोष व्रत, २६—पूर्णिमा।

राशियां और प्रभाव—शनि के वक्री हो जाने से सिंह, मकर, कुंभ, वृष राशियां वि प्रभावित होंगी। व्यापार में मंदी का रुख आ सकता है। तिलहन, तेल, कोयला, लोहा व्यापारियों के लिए परेशानीदायक स्थिति से सचेत रहना चाहिए। आर्थिक मामले जोखम न लें। पारिवारिक रूप से भी कुछ उलझनें आ सकती हैं। मंगल, शुक्र, मीन रा में होंगे। कोई अप्रिय घटना विश्व में घट सकती है। दांपत्य जीवन में कलह की स्थि मंगल एवं शुक्र प्रधान व्यक्तियों को विशेष सचेत रहना चाहिए।

से शांति कैसे करें?—

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

प्रातःकाल हनुमानजी के चित्र या मूर्त्ति के सम्मुख दीपक जलाकर इस मंत्र का १०८ जाप करें। ४५ दिनों तक करने पर आपको मंत्र का प्रभाव दिखेगा। राशियों का कुप्रभ भी क्षीण होगा। ध्यान रहे कि हनुमानजी की उपासना में मादक वस्तुएं वर्जित हैं

तुम कहां हो इसका कोई महत्त्व नहीं, पद से तुम्हारी शोभा नहीं है, अपितु तुमसे पद की शोभा है और वह तभी, जबकि तुम्हारे द्वारा महान और श्रेष्ठ कार्य हो।
—पैट्रिक

सफलता मिलेगी। धन, संपत्ति, नया व्यापार, नौकरी, प्रमोशन, कीर्ति, सम्मान, पुरस्कार, पारिवारिक सुख-शांति आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। नयी नौकरी या बेरोजगार व्यक्तियों को इस समय का पूरा-पूरा उपयोग करने से लाभ मिल सकता है। उच्च शिक्षा, विदेश-गमन का भी प्रयास सफल हो सकता है। मांगलिक कार्य संतान के दायित्व-पूर्ति का प्रयास भी सफल रहेगा।

१९ जून से ५ अगस्त के मध्य शारीरिक कष्ट, आर्थिक हानि, व्यावसायिक परेशानी, स्थानांतरण, पारिवारिक उलझनों आदि की स्थिति, मंगल बारहवें होने के कारण आ सकती है। क्रोध एवं भावुकता में निर्णय लेना हितकर नहीं होगा। ६ अगस्त से १८ सितम्बर के मध्य मंगल नीच राशि में रहेगा। पारिवारिक, स्वास्थ्य एवं व्यावसायिक उलझनों की स्थिति से बचने का प्रयास करें।

सिंह (म, मी, मू, मे, मो, ट, टी, टू, टे)

१५ फरवरी से २७ मार्च व ५ अगस्त तथा १९ सितम्बर से ६ नवम्बर का समय किये गये प्रयासों में सफलता देने वाला है। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार प्राप्ति की दिशा में सफलता मिल सकती है। मकान, संपत्ति बनाने का प्रयास सफल हो सकता है। पारिवारिक दायित्व की पूर्ति में सफलता मिलेगी। लेखन, साहित्य, कला, शोध, प्रमोशन, नयी नौकरी, नया व्यापार आदि की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। स्थानांतरण एवं पुरस्कार प्राप्ति की संभावना। धन, प्रसन्नता तथा प्रतिष्ठा देनेवाला समय होगा।

१६ फरवरी से २६ मार्च के मध्य स्वास्थ्य, दुर्घटना, अर्थहानि, स्थानांतरण, व्यवसायिक उलझनों की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

६ अगस्त से १९ सितम्बर के मध्य संपत्ति, शिक्षा, विदेश गमन, स्थानांतरण के प्रयास में जहां सफलता मिलेगी, वहीं पर विवाद, झगड़े तथा पारिवारिक सदस्य, उच्च अधिकारी के कारण मानसिक क्लेश की स्थिति का सामना भी करना पड़ सकता है।

१६ जुलाई के पश्चात राजनीतिक लाभ उठाने के प्रयास, उच्च अधिकारी, विभागीय अधिकारी से लाभ के प्रयास में भी सफलता मिलेगी।

कन्या (टो, प, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे, पो)

२० मार्च से ३ अप्रैल, ९ जून से २८

जुलाई, १९ अगस्त से २२ अक्तूबर तथा २६ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक का समय उत्तम है। इस अवधि में नौकरी, व्यापार की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार प्राप्ति की दिशा में किये गये प्रयासों में सफलता मिल सकती है। रचनात्मक शोध, लेखन, साहित्य, ज्योतिष, तंत्र, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयोगों में सफलता मिल सकती है। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति में भी सफलता मिलेगी। शिक्षा, प्रतियोगिता, पुरस्कार आदि की दिशा में सफलता मिल सकती है। आर्थिक समृद्धि, पदोन्नति आदि के क्षेत्र में पूरी शक्ति से प्रयास करें सफलता प्रतीक्षा कर रही है।

३ मार्च से २० मार्च, १ अप्रैल से ८ जून, २८ जुलाई से १८ अगस्त तथा १० नवम्बर से २८ दिसम्बर के मध्य स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, धन, व्यवसाय, परिवार के प्रति सतर्क रहें। मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा का सामना भी करना पड़ सकता है। नौकरी तथा व्यापार के प्रति उपेक्षा न बरतें, सजगता ही हितकर होगी। क्रोध, भावुकता, विवाद की स्थिति कष्टप्रद हो सकती है।

१५ जुलाई से राहु नवम भाव में आयेगा। अचानक लाभ की स्थिति आ सकती है। रुका हुआ धन, पदोन्नति, प्रतिष्ठा लाटरी आदि की भी संभावना है।

(शेष राशियां अगले अंक में)

ज्ञान - गंगा

दाक्षिण्यमौषधं स्त्रीणां दाक्षिण्यं भू- पर

दाक्षिण्यरहितं रूपं निष्पुष्पुष्पमिव काननम्

उदारता स्त्रियों के लिए औषध है, परम भूषण है। उदारतारहित रूप वैसे ही है, जैसा पुष्पविहीन वन।

को जनस्य फलदस्य न स्यादभिमुखो जनोभवति भूयिष्ठं स्वजनोऽपि विपर्यये।

फल देनेवाले पुरुष के लिए कौन अनुकूल नहीं हो जाता? विपरीत होने पर स्वजन भी पराया है।

वैरस्य रूपमेतद्धि भेदं याति मुहुर्मुहुः सन्धीयमानमपि यत्क्लिन्नाम्बरमिवाशयम्

वैर का रूप कुछ ऐसा होता है कि बार-बार संधि करने पर भी भेद उत्पन्न हो जाता है, जैसे पुराना कपड़ा बार-बार सीने पर भी फटा करता है।

विदुषां वदनाद्वाचः सहसा यान्ति नो बहिः यातारचेन्न परांगयान्ति द्विरदानां रदा इव।

विद्वानों के मुख से सहसा बातें बाहर नहीं निकलतीं और यदि कहीं निकलीं ही तो हांथी के दांत की तरह कभी परावर्तित नहीं होतीं।

लक्ष्मीविनयंभूषणाम्।

—विनय लक्ष्मी का भूषण है।

—प्रस्तोता : महर्षि कुमार पा...

रत्नावली रही उड़ावत काग

• बुलाकी शर्मा

"तुलसीदास कुछ नहीं है, वह तो केवल रत्ना के शब्दों का चमत्कार है।" डॉ. रांगेय राघव ने अपने उपन्यास 'रत्ना की बात' में स्वयं गोस्वामी तुलसीदास से ये शब्द कहलवाये हैं। इन शब्दों में जैसे तुलसी का संपूर्ण जीवन समा गया है। एक सामान्य गृहस्थ, कथावाचक ब्राह्मण एवं स्त्री के प्रति हद से ज्यादा अनुरक्त 'रामबोले तुलसी' को रामचरित मानस सरीखे विश्वविख्यात महाकाव्य का रचयिता, राम का परम भक्त एवं 'महाकवि गोस्वामी तुलसीदास' बनानेवाली और कोई नहीं, उनकी पत्नी रत्नावली ही थी।

कहते हैं—तुलसी पत्नी को बेहद प्यार करते थे। एक बार उनकी अनुपस्थिति में वह मायके चली गयी और वे विरह से अवश हो गये। वर्षा-जल से भरी नदी को पार करके आधी रात को अपनी ससुराल के सामने हाजिर हो गये। कपाट बंद थे। किंवदंती है कि खिड़की से एक सांप लटक रहा था। कामातुर तुलसी सर्प को पकड़कर अंदर चले गये।

अपने पति को अर्द्धरात्रि में अपने सम्मुख देखकर रत्नावली अचंभित हो गयी। उसने कुछ नाराजगी से कहा—

"अस्थि-चर्ममय देह मम, तासों ऐसी प्रीति ऐसी होती राम सौं, होति न तो भवभीति।"

रत्ना के ये शब्द तुलसी के हृदय में गहरे उतर गये। उन्हें आंतरिक दृष्टि प्राप्त हो गयी। तत्क्षण उनका दांपत्य-प्रेम राम-भक्ति में परिणत हो गया। वे सर्वस्व परित्याग कर काशी कूच कर गये। मोह-माया को विस्मृत करके तुलसी राममय हो गये।

सांसारिक सुखों का त्याग

रत्ना ने निजी सुखों की आहुति देकर अपने पति को साधारण गृहस्थ मे महाकवि-पद दिलवाया, लेकिन उसे इसके बदले बहुत कष्ट झेलने पड़े। सत्ताइस वर्ष की युवावस्था में ही वह परित्यक्ता का अभिशप्त जीवन ढोने के लिए विवश हो गयी। आज भी परित्यक्ता को समाज का शिकार होना पड़ता है, उस समय—आज से चार शताब्दी पूर्व, परित्यक्ता के रूप में रत्नावली को कितनी उपेक्षा सहनी पड़ी होगी—कल्पनातीत है।

पति द्वारा घर छोड़कर चले जाने पर उसने सारे सांसारिक सुखों को त्याग दिया और वह संन्यासिनी का-सा जीवन व्यतीत करने लगी। पति के ईश्वरानुरागी बन जाने का उसे हार्दिक संतोष था,

साथ ही एक अफसोस बराबर उसके हृदय को पीड़ा देता रहा कि उसने पतिदेव को कहीं गलत तो नहीं कह दिया था। पति-देव उससे रुष्ट तो नहीं हैं। वे पुनः उससे मिलने के लिए आएंगे भी या नहीं।

हम रत्नावली के संबंध में इतना ही जानते हैं कि वह महाकवि तुलसी की पत्नी थी और तुलसी उसके शब्दों से बिंधकर संसार से बिरत हो गये। वह अपने दर्द को शब्दों में पिरोना भी जानती थी, पति के विरह ने उसे कवयित्री बना दिया था, यह बहुत कम लोगों को ज्ञात है।

दो सौ एक दोहे

तुलसी संवत १६०४ में परिव्राजक बनकर घर से निकले थे। वह तब से लेकर संवत १६५१ में इस संसार से कूच करने तक संन्यासिनी का जीवन व्यतीत करती रही। उसने ४७ वर्ष तक परित्यक्ता-जीवन ढोया। पं. रामदत्त भारद्वाज ने अपनी पुस्तक 'रत्नावली' में लिखा है कि उस विरहणी ने २०१ दोहे रचे और इनमें उसका पश्चाताप मुखर हुआ है।

उसका दोष इतना ही था कि दांपत्य-प्रेम के समय उसने असावधानीवश भगवद्-प्रेम की चर्चा छेड़ दी थी। वह कहती है—

सुभहु वचन अप्रकृत गरल,
रतन प्रकृत के साथ।
जो मो कहं पति प्रेम संग,
ईस प्रेम की गाथ।।
हाइ सहज ही हौं कही,
लह्यो बोध हिरदेस।
हौं रत्नावलि जचि गई,
पिय-हिय काच विसेस।।

वह बराबर अपराध-बोध से ग्रस्त है। वह पतिदेव से क्षमा मांग रही है और उनकी प्रतीक्षा में बेचैन है—

छमा करहुं अपराध सब,
अपराधिनी के आय।
बुरी भली हों आपकी,
तजउ न, लेउ निभाय।।

वह पति को वचन दे रही है कि वह

रत्ना ने निजी सुखों की आहुति देकर अपने पति को साधारण गृहस्थ से महाकवि का पद दिलवाया, लेकिन उसे इसके बदले बहुत कष्ट झेलने पड़े।

कभी उन्हें उपालंभ नहीं देगी कि वह उसे छोड़कर क्यों चले गये थे? वह बिल्कुल मौन रहेगी—

नाथ रहौंगी मौन हौं,
धारहु पिय जिय तोस।
कबहुं न देऊं उराहनो,
दऊं न कबहुं दोस।।

पति-वियोग ने उसे सब ओर से निर्लिप्त बना दिया है। पति-दर्शन के लिए उसका मन व्याकुल है—

असन बसन भूसन भवन,
पिय बिन कछु न सुहाइ।
भार-रूप जीवन भयो,
छिन-छिन जिय अकुलाइ।।

उसके लिए पतिदेव के खड़ाऊं ही जीवनाधार है—

पति-पद सेवा सौं रहत,
रतन पादुका सेइ।
गिरत नाव सौं रज्जु,
तेहि सरित पार करि देइ।

पति की निष्ठुरता ने उसे निराश कर दिया। पति-दर्शन को बावरी वह अपने को हत्भाग मानने लगती है। वह अपने को धिक्कारती है कि उसके वचनों ने पति को वैरागी बना दिया और वह अपनी करनी का फल भोगती हुई उनके इंतजार में कौए उड़ा रही है——

कहां हमारे भाग अस,
जो पिय दर्शन देइ।
वाहि पाछिली दीठि सों
एक बार लषि लेइ।।
धिक मो कहं मो वचन लगि
मो पति लह्यौ विराग।
भई वियोगिनि निज करनि,
रहूं उड़ावति काग।।

उसकी दृष्टि में नारी के लिए पति ही सर्वस्व है। वही औरत का सच्चा श्रृंगार है। जिसका पति पास है, वह सबसे ज्यादा सौभाग्यशालिनी है—

पिय सांचो सिंगार तिय,
सब झूठे सिंगार।
सब सिंगार रत्नावली,
इक पिय बिनु निस्सार।।
पति गति पति वित मीत पति,
पति सुर गुर भरतार।
रत्नावलि सरवस पतिति,
बंधु पंथ जग सार।।

नारि सोइ बड़भागिनी,
जाके प्रीतम पास।
लषि-लषि चष सीतल करै,
हीतल लहै हुलास।।

वह स्त्री के लिए पति को ही अंतिम शरण मानती है। पति ही धन, मित्र, देवता, गुरु, बंधु, पूज्य है। संसार में वही सार है, लेकिन उसका सर्वस्व उससे बहुत दूर संन्यासी की भांति रहता है। उसकी पीड़ा दमयंति और सीता ही महसूस कर सकती हैं, अन्य के वश में नहीं है, क्योंकि उन्होंने भी पति-वियोग की पीड़ा सही है—

को जाने रत्नावली
पिय वियोग दुष बात।
पिय बिछुरन दुष जानती,
सीय दमंती मात।।

रत्नावली के दोहों में काव्य-कौशल का परिचय भी मिलता है। अपने पति का नाम वह कितने चातुर्य से प्रकट कर रही है:—

जासु दलहि लहि हरषि,
हरि हरत भगत-भव रोग।
तातु दास-पद-दासि ह्वै,
रतन लहत कत सोग।।

(जिसके पत्ते को प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करके भगवान जन्म-मरण रूपी रोगों को दूर कर देते हैं, उस (तुलसी) के दास (तुलसीदास) के चरणों की दासी होकर तू क्यों शोक करती है?)

एक पंथ दो काज

श्रीराम उसके पति के और पति उसके

DELHI ELECTRIC SUPPLY UNDERTAKING
(MUNICIPAL CORPORATION OF DELHI)

दिल्ली विद्युतप्रदाय संस्थान द्वारा नागरिकों की बेहतर देख-भाल

ट्रांसफार्मेशन क्षमता द्विगुणित

* **नए सब स्टेशन्स** : सात नए ६६ के वी तथा छः ३३ के वी सब-स्टेशन स्थापित किए गए। ३५००० नए सर्विस कनेक्शन्स प्रदान किए गए।
* **जगमगाती दिल्ली** : वर्तमान दो लाख पांच हजार स्ट्रीट लाइट प्वाइण्ट्स में ८००० और नए प्वाइण्ट्स की वृद्धि की गयी।
* **प्रदूषण नियन्त्रण** : प्रदूषण के नियंत्रणार्थ इ. प्र. स्टेशन की सभी पांचों इकाइयों में ई. एस. पी. उत्थापित किए गए।
* **रिंग रेलवे के लिए ५ एम वी ए बिजली उपलब्ध कराई गयी।**
* **कमजोर वर्गों के लिए विशेष रियायतें** : ३६ हरिजन बस्तियों का विद्युतीकरण किया गया। बतौर सर्विस लाइन प्रभार ७५) तथा बतौर प्रतिभूति जमा ७५) की रियायती दर पर घरेलू कनेक्शन प्रदान किए जा रहे हैं। यदि परिवार की आय ४०००) प्रति वर्ष से कम है तो ये प्रभार किस्तों में लिए जाते हैं। किसी तरह का विकास प्रभार नहीं लिया जाता है।
* **पुनर्वास कालोनियों का विद्युतीकरण** : सभी पुनर्वास कालोनियों का विद्युतीकरण कर दिया गया है।
* **ग्राम्य विद्युतीकरण** : शत प्रतिशत ग्राम्य विद्युतीकरण के लक्ष्य की उपलब्धि वाला दिल्ली राष्ट्र का प्रथम क्षेत्र है साथ ही यहां ३१९ नलकूप कनेक्शन्स भी प्रदान किए गए।
* **ब्रेकडाउन्स की त्वरित मरम्मत हेतु** : वी एच एफ सेट्स प्रदान किए गए हैं।
* **परिष्कृत बिलिंग प्रणाली** : कुछ कालोनियों में स्व-आकलित-बिलिंग प्रणाली तथा कम खपत वाले घरेलू उपभोक्ताओं से समरूप दर (फ्लैट-रेट) लेने के प्रस्तावों पर गम्भीरता से विचार किया जा रहा है।
* **नई जेनरेटिंग इकाइयां** : ६७.५ एम डब्ल्यू प्रत्येक की दो नई जेनरेटिंग इकाइयों के उत्थापन का प्रस्ताव क्लीयरेन्स/मंजूरी हेतु योजना आयोग के पास पड़ा हुआ है।
* **एशियाड भावना कायम रहे** : डेसु एशियाड के दौरान विकसित भावना को कायम रखेगा तथा समुचित वोल्टेज पर अबाध विद्युत आपूर्ति प्रदान कर अपनी इकाइयों का सहयोग देगा।

३(२)/८३/पीआर/४२२१
दिनांक : ६.१.८३

दिल्ली परिवहन निगम की भावी योजनाएं

यशवंत सिन्हा, अध्यक्ष, दिल्ली परिवहन निगम

दिल्ली परिवहन निगम की भावी योजनाओं के संबंध में 'निगम' के विशेष पदाधिकारी (उप महाप्रबंधक, यातायात) श्री विजय कपूर ने बताया—

दिल्ली में निगम की बसों में प्रतिदिन ३५ लाख यात्री यात्रा करते हैं।

५५० पूरे रूट हैं, जिनमें १८ से १९ कि. मी. का एक रूट है। यानी हर रूट पर जानेवाली बस को अपने प्रारंभिक स्टेशन से अंतिम स्टेशन तक लगभग १९ कि. मी. तय करने आवश्यक हैं।

एशियाई खेलों के दौरान दिल्ली परिवहन निगम ने जिस तत्परता का परिचय दिया, उसके लिए ५,१०० बसों की व्यवस्था की गयी थी। ४,६०० बसें निगम की थीं और शेष बसों का इंतजाम उत्तर प्रदेश और हरियाणा राज्य के परिवहन निगमों ने किया था।

'दालवी समिति' के अनुसार सन १९८५ तक ५,००० से ज्यादा बसें दिल्ली की सड़कों पर नहीं चलनी चाहिए।

विजय कपूर विशेष पदाधिकारी, दिल्ली परिवहन निगम

ज्यादा बसें होने से सड़कों पर अधिक भीड़-माड़ हो सकती है। उप-महाप्रबंधक विजय कपूर का कहना है कि हमने केवल ३३५ डीलक्स बसें ही रूटों पर चलायी हैं। शेष साधारण बसें हैं। ५,००० बस-स्टापों में से १,५०० स्टापों पर यात्रियों के लिए शेड्स हैं।

एशियाई खेलों के दौरान दिनभर के लिए दो रुपये की पास-व्यवस्था की गयी थी, उसका जनता ने खूब फायदा उठाया। २५० लाख टिकट बिके थे। भविष्य में भी इस तरह की व्यवस्था की योजना परिवहन निगम के पास है। यात्रियों की सुविधा के लिए पूरी दिल्ली में १२ ऐसे मुख्य स्थान (नाडेल बिंदु) बनाये जा रहे हैं, जहां से दिल्ली के किसी भी स्थान के लिए बस की सुविधा होगी। मुख्य-मुख्य बस स्टापों के नाम चार्ट पर लिखे होंगे। एशियाई खेलों के दौरान जिस तरह की सुविधा परिवहन निगम ने दी, उसी तरह की सुविधा बराबर बनाये रखने का आश्वासन भी पदाधिकारी ने दिया। ●

नयी दिल्ली नगर पालिका

कूड़ेदानों के शौकीन नागरिक

पी. एस. भटनाग

देश की राजधानी दिल्ली के नये हिस्से को एशियाई खेलों के दौरान रात-दिन सजी-संवरी रखने का काम नगर पालिका का था। दिल्ली को इतना खूबसूरत रखनेवाले प्रशासक श्री पी. एस. भटनागर ने एक भेंट में बताया :

नयी दिल्ली नगर पालिका ने एशियाई खेलों के लिए तालकटोरा स्वीमिंग पूल व शिवाजी स्टेडियम को तैयार करवाया था। साथ ही बाराखंभा रोड और रणजीतसिंह मार्ग को जोड़नेवाले पुल (फ्लाईओवर) का निर्माण भी करवाया।

स्टेडियम तक पहुंचने के लिए १३ मुख्य सड़कें चौड़ी की गयीं और सड़कों के बीच सजाने के लिए तरह-तरह के उपाय किये गये।

बिजली की सप्लाई को निरंतर बनाये रखने के लिए २४ उप-केंद्रों का आधुनिकीकरण किया गया। इन केंद्रों में ३ मुख्य बल्क केंद्र थे और २१ साधारण केंद्र। बल्क केंद्रों में बेयर्ड लेन, तिलक मार्ग, मोतीलाल नेहरू मार्ग और बापूधाम हैं। शेष २१ केंद्र बड़े होटल, आवास कॉलोनियां और सरकारी भवन थे। इसी प्रकार पालिका ने कनॉट प्लेस सहित ८० चौराहों पर सोडियम लैंप लगाये हैं। इस कार्य में १२० ला रुपये का खर्च हुआ। इसी प्रकार पानी व्यवस्था करने में २९० लाख रुपये किये गये।

समाज कल्याण के लिए तीसरे यर नवयुग स्कूल की स्थापना लक्ष्मी नगर में की गयी। ३० लाख रुपये लागत से मुख्य पार्क व झील का नि ब्रिगेडियर होशियार सिंह मार्ग पर गया।

पालिका ने नागरिक स्वास्थ्य ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक शौचाल में सफाई की कड़ी व्यवस्था की थी। स्थानों पर साबुन व नेपकिंस की सुवि भी दी गयी।

प्रशासक श्री भटनागर से यह जाने पर कि यह सारी व्यवस्थाएं भी देंगे ? वे बोले, "व्यवस्था हो सकती है, जब नागरिक भी हमारे सहयोग करें। नगर में कूड़ेदान व सुविधाएं कुछ ही समय तक रह थीं। जगह-जगह से कूड़ेदान उठाकर अपने घरों को ले गये।"

दिल्ली जल प्रदाय एवं मल व्ययन संस्थान

गंगा का पानी दिल्ली को

ऋषिदेव कपूर

दिल्ली जल प्रदाय एवं मल व्ययन संस्थान के उपायुक्त श्री ऋषिदेव कपूर ने दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में हो रही संस्थान की गतिविधियों की जानकारी इस प्रकार दी :

दिल्ली जल प्रदाय एवं मल व्ययन संस्थान आजकल ३०.८ करोड़ गैलन दैनिक जल का उत्पादन कर रहा है। यानी सन १९८० से जल के उत्पादन में साढ़े पांच करोड़ गैलन दैनिक जल की वृद्धि की गयी।

दिल्ली के नगर-क्षेत्रों में जल की प्रति व्यक्ति उपलब्धता ५५ गैलन प्रतिदिन है। सन १९५८ में जब नगर निगम का निर्माण हुआ था, तब दिल्ली में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन जल की उपलब्धता लगभग ३० गैलन थी।

वितरण-प्रणाली में सुधार

पानी सप्लाई में दबाव की जांच, अवरोध दूर करने तथा रिसाव को रोकने के लिए विभिन्न स्थलों पर, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, विशेष दस्ते नियुक्त किये गये। वितरण-प्रणाली के अंतिम छोर तक स्थित कॉलोनियों को पानी की सप्लाई पहुंचाने के लिए जलाशयों से नयी पाइप लाइनें डाली गयीं। सन १९८२-८३ के अंत तक सभी दिल्ली के गांवों में नल का पानी पहुंचाने की योजना है। इसलिए देशभर में दिल्ली ऐसा पहला नगर होगा, जहां के सभी दिल्ली के गांवों में नल का पानी पहुंचा दिया जाएगा।

दिल्ली में पानी की खपत को पूरा करने के लिए जो उपाय किये जा रहे हैं, उनमें शाहदरा में १० करोड़ गैलन दैनिक क्षमता के जल उपचार संयंत्र तथा नये रैनी कुओं का निर्माण-कार्य सम्मिलित है। शाहदरा जल उपचार संयंत्र को अपर गंगा नहर से कच्चा पानी उपलब्ध कराया जा रहा है। २३० लाख रुपये की अनुमानित लागत पर मुरादनगर से शाहदरा तक २८०० मि. मी. व्यास की लाइन बिछायी जा चुकी है। चालू वित्तीय वर्ष में इस संयंत्र के प्रथम चरण से संबंधित कार्य पूर्ण करने के लिए प्रयास किये जा रहे हैं।

दो और रैनी कुओं का निर्माण अगले वर्ष पूर्ण हो जाएगा। शेष दो निर्माणाधीन हैं। इसी प्रकार १९८४-८५ तक रोहिणी परियोजना के प्रथम चरण के लिए ८० से ९० लाख गैलन दैनिक पानी की आवश्यकता का अनुमान है।

क्या पहचान है अच्छे कालीन की !

एस. के. कोचर

कालीन मनुष्य की सभ्यता और उसके सुसंस्कृत होने का प्रतीक माने जाते हैं। कालीन-कला का विकास सबसे अधिक ईरान में हुआ और विश्व में भी ईरान के बने कालीन ही सबसे ज्यादा पसंद किये जाते हैं।

ईरानी शैली के कालीन पसंद किये जाने का बुनियादी कारण कालीन की 'पायल' (भरावट) की सघनता तथा पीछे के 'बैक' का दृढ़ होना है। कालीन की गुणवत्ता और विभिन्नता इस बात पर तय की जाती है कि कालीन के एक इंच में कितनी गांठें हैं तथा भरावट की सघनता क्या है? बुनावट में जितनी अधिक गांठें होंगी, कालीन उतना ही अधिक टिकाऊ माना जाएगा।

ईरानी कालीन की एक विशेषता यह भी होती है कि पैरों की रगड़ से इस पर अंकित कृति धुंधली होने की बजाय और अधिक निखरती है। भारत में बने ईरानी शैली के कालीन विश्वभर में पसंद किये जाते हैं क्योंकि ये 'क्वालिटी' में ईरानी कारपेट के ही बराबर होते हुए भी सस्ते होते हैं। भारत में सरकार कालीन-निर्माताओं को पर्याप्त सहायता दे तो वे विश्व-निर्यात के बाजार में ... जाएंगे।

हस्तनिर्मित कालीनों की अपेक्षा म... से बने कालीन सस्ते पड़ते हैं, इसलिए ... मशीन से बने कालीन ही अधिक खरीदते ...

देश में हस्तनिर्मित कालीनों ... 'कोचर कारपेट' एक प्रमुख नाम है ... उत्पादन-दर अधिक होने के कारण ... हम कीमत पर नियंत्रण रख पाते हैं।

कालीन उद्योग के विकास हेतु ... कार को ग्रामीण क्षेत्रों में इस उद्योग ... प्रशिक्षण-केंद्र खोलने चाहिए तथा ... के स्थानीय लोगों को प्रशिक्षित कर ... उद्योग में लगाना चाहिए। इससे स्था... लोगों को रोजगार मिलेगा, और ... महानगरों की ओर नहीं भागेंगे। उ... खनीय है कि इस उद्योग के विका... लिए बिजली आदि कुछ नहीं चाहिए ... कालीन उद्योग में अस्सी प्रतिशत ... 'लेबर' की ही है, शेष बीस प्रतिशत ... की कीमत होती है। इसके लिए प्र... होनेवाला 'लूम' भी लगभग ५०० रुपये ... आ जाता है और इस कला-उद्योग से ... कर्मी घर बैठे ही कम से कम १२०० ... प्रतिमाह तक कमा सकता है।

२—हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित
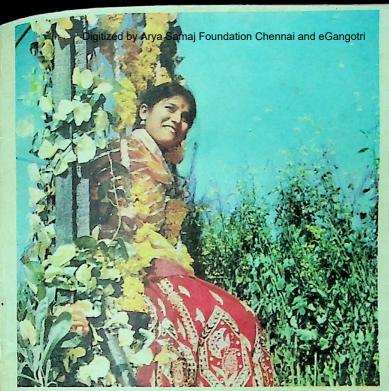
समस्या-पूर्ति--४६

बहार हैं

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है। गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी। आपकी रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार—२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार—१५ रुपये
अंतिम तिथि--२० फरवरी, १९८३

छाया : विद्या व्रत

दम्बिनी
रतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

संत बौराया है!

क लालची पेड़

सदा आगे ही आगे
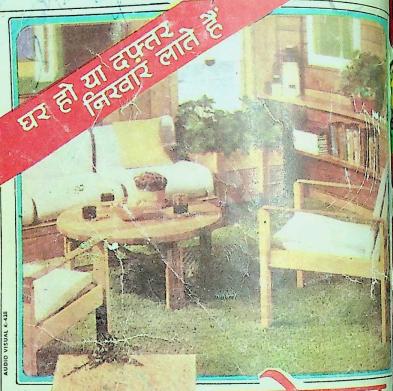
नवें एशियाई खेलों का शानदार आयोजन करने के लिए भारत को दुनिया भर से बधाई सन्देश प्राप्त हो रहे हैं।

बड़े-बड़े स्टेडियम देखते ही देखते तैयार कर लिए गए। रंगीन दूरदर्शन के माध्यम से अपने देश के भी और अन्य देशों के भी लाखों-करोड़ों लोगों ने इन खेलों का भरपूर आनन्द उठाया। इन सब कार्यों को सुचारु रूप से सम्पादित करने के लिए कम्प्यूटरों, इलेक्ट्रानिक एक्सचेंजों, माइक्रोवेव और उपग्रह प्रणाली जैसे नवीनतम वैज्ञानिक साधनों का उपयोग अत्यन्त कुशलतापूर्वक किया गया।
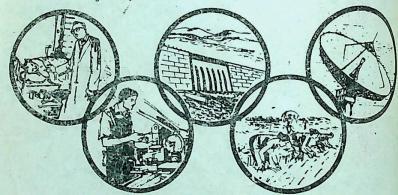
यह इस बात का बड़ा सुन्दर उदाहरण है कि मिले-जुले प्रयास और कठिन परिश्रम से कितनी बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

यदि हम इसी भावना और उत्साह से काम करें तो राष्ट्र के विकास के अन्य क्षेत्रों में भी इतनी बड़ी सफलता क्यों नहीं प्राप्त कर सकते?

आइए हम सब मिल कर एक सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण में जुट जाएं।

सुखी जीवन के लिए सिंडिकेट बैंक गाइड

	पिता की सारी कमाई खर्च करो	जीवनभर के लिए मासिक आय	पैसा जुए में बरबाद	अब आप सेवा-निवृत्त सुखी जीवन बिता सकते हैं	सिंडिकेट बैंक को धन्यवाद
पैसा कमाने का गरकानूनी रवैया	अपना घर बनाइए, स्कूटर लीजिए		आपकी दैनिक बचत के लिए		सामाजिक सुरक्षा डिपॉज़िट
जेल की सजा हो सकती है	एक अमर डिपॉज़िट योजना बनाइए	महाजनों से पैसा उधार माँगिए	पिग्मी डिपॉज़िट	अपनी घरेलू ज़रूरतों की योजना बनाइए	और आपको संपत्ति का प्रबंध करना पड़ेगा
विकास कैश सर्टिफ़िकेट	आकर्षक लाभ प्राप्त होता है		बचत की रकम तेज़ी से बढ़ाता है		बहुत ज़्यादा शराब पीने की आदत है
दोस्तों से उधार लीजिए		हमारे प्रगति कैश सर्टिफिकेट		आप जीवनभर कर्जदार रहेंगे	
फिक्सड डिपॉज़िट में पूंजी लगाइए	एक बुरी आदत		ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अच्छी शुरूआत	अपने परिवार और समाज के लिए खतरा हैं	क्युमुलेटिव डिपॉज़िट शुरू कीजिए
सिंडिकेट बैंक में पधारिए		एक बचत खाता खोलिए		दूसरों पर अधिक निर्भर रहिए	

maa (s) SB 8

मुनिया रानी बढ़ती जाये
घने काले, बालों का जादू जगाये
मोती से सफ़ेद दांतों को चमकाये
गाय छाप ब्राह्मी आमला केश तैल
—उसके बालों को और घने बनाये
सबको सुहाये मन में भाये
बालों का ये कालापन, घना व चमकीलापन
गाय छाप काला दन्त-मंजन
—उसके दांतों को चमकाये
मोती से सफ़ेद व मज़बूत बनाये
सेवाश्रम के गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तैल
और काला दन्तमंजन
अपनी सुन्दरता को
नैसर्गिक रूप से बनाये रखिये
आयुर्वेद सेवाश्रम लिमिटेड
उदयपुर • वाराणसी • हैदराबाद
COW BRAND
BLACK
TOOTH POWDER
BRAHMI AMLA OIL
heros' AS-151 E HIN

• ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **कमनीय**—क. अर्द्ध-गोलाकार, ख. विलासमय, ग. सुंदर, घ. बहुत कम।

२. **प्रत्यागत**—क. शीघ्र आनेवाला, ख. लौटा हुआ, ग. जिसके आने की आशा हो, घ. पुनर्जीवित।

३. **उत्क्रोश**—क. शोरगुल, ख. क्रोध, ग. रिश्वत, घ. पीड़ा।

४. **फलागम**—क. फलों का भंडार, ख. फल आना, ग. फल की इच्छा, घ. प्रतीक्षा।

५. **आत्मवत्ता**—क. अहंकार, ख. अपनापन, ग. आत्म-नियंत्रण, घ. गौरव।

६. **तेजोराशि**—क. तीव्रता, ख. विद्युलता, ग. भारीपन, घ. प्रभा-पुंज।

७. **सारभूत**—क. परिणाम, ख. मुख्य, ग. बीता हुआ, घ. प्रबल।

८. **एकीभाव**—क. अकेला, ख. एक ही विचार, ग. घनिष्ठ मेल, घ. अलग।

९. **प्रमथन**—क. विप्लव, ख. अच्छी तरह मथने की क्रिया, ग. गड़बड़ी, घ. उत्पीड़न।

१०. **कालचक्र**—क. प्रलय, ख. तीनों काल, ग. समय का चक्र, घ. परिवर्तन।

११. **स्तवन**—क. पूजा, ख. स्तुति, ग. रोकथाम, घ. मंत्र।

१२. **आदिम**—क. जर्जर, ख. शुरु का, ग. बूढ़ा, घ. जो बदला न जा सके।

१३. **कुलकानि**—क. सभी, ख. सबसे ऊंचा, ग. कुल की मर्यादा, घ. बुरे लक्षण।

उत्तर

१. ग. सुंदर, मनोहर। कितना **कमनीय** कानन है! (संज्ञा-**कमनीयता**)

२ ख. लौटा हुआ। विदेश से **प्रत्यागत** का यथोचित सत्कार करो। (सं.-**प्रत्यागमन**)

३. क. शोरगुल, हल्ला-गुल्ला। जरा-सी बात पर ऐसा **उत्क्रोश** अशोभनीय है। (**क्रोश**=चीत्कार। **आक्रोश**=निंदा)

४. ख. फल आना। तुम तो वृक्षारोपण के साथ ही शीघ्र **फलागम** की अपेक्षा करने लगे। (फल+आगम)

५. ग. आत्म-नियंत्रण, चेतना, स्वस्थ-

चितता। **आत्मवत्ता** से सेवा का मार्ग प्रशस्त होता है।

६. घ. प्रभा-पुंज, भारी प्रतिष्ठा, शौर्य, कांति। वीरों की **तेजोराशि** सर्वत्र व्याप्त है।

७. ख. मुख्य, असली। **सारभूत** तत्त्व को ग्रहण करो।

८. ग. घनिष्ठ मेल, साहचर्य। सच्चे भक्त का परमात्मा में **एकीभाव** हो जाता है।

९. ख. अच्छी तरह मथने की क्रिया। शास्त्रों के **प्रमथन** से ज्ञानवृद्धि होती है।

१०. ग. समय का चक्र, बदलती परिस्थितियां। **कालचक्र** सदैव गतिशील रहता है।

११. ख. स्तुति, प्रशंसा। इष्टदेव का **स्तवन** करने से आत्मबल बढ़ता है।

१२. ख. शुरू का, पहला, पुरातन। मनुष्य किसी न किसी रूप में **आदिम** युग से अपना नाता जोड़े हुए है।

१३. ग. कुल की मर्यादा। ऐसा कार्य न करो जिससे **कुलकानि** को आंच आये।

पारिभाषिक-शब्द

ऐक्सीड = मान लेना / शामिल होना
ऐक्सेशन = पदारोहण / अधिमिलन
बैरियर = नाका / शुल्कद्वार
कैल्कुलेशन = गणना / परिकलन
कैल्कुलेटर = गणक / परिकलक
डेड वेट = कुल भार
इनडेमनिटी = क्षतिपूर्ति
पोर्ट = पत्तन
हारबर = बंदरगाह

समस्या पूर्ति—४५

मेला

प्रथम पुरस्कार

आशाओं के शीशमहल में
सतरंगी सपनों का रेला
अरमानों की सजी दुकानें
भटके ये मन एक अकेला
क्या देखें दुनिया के मेले
ये जीवन खुद है एक मेला

—राजीव माथुर
सीनियर परसोनेल एक्जीक्यूटिव
वैम ऑर्गेनिक केमिकल्स लि०, गजरौला
(मुरादाबाद)

द्वितीय पुरस्कार

युगों-युगों से लगा हुआ है यह दुनिया का मेला
कोई रोकर रैन बिताये कोई हंसकर खेला
धन्य वही है पुण्य कमाये जो मेले में आकर
सजे-धजे इस रंग-मंच से जाता पात्र अकेला

—गिरिधर गोपाल गट्टानी
मेन रोड, बैरसिया (भोपाल), म प्र.

आस्था के आयाम

सबसे बड़ी कृपा

गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए नागेश भट्ट वाराणसी में आर्ष साहित्य का अध्ययन ग्रौर अनुवाद करने में संलग्न थे। गुरु ने उनसे कहा था, 'वत्स, धर्म ग्रौर संस्कृति का पतन ग्रौर पराभव हो रहा है। ऐसे में आर्ष साहित्य का पुनरुद्धार करना आवश्यक है। यही सच्ची ईश्वर-भक्ति भी होगी।'

नागेश भट्ट गुरु की आज्ञा के पालन में जुट गये। निर्धनता ग्रौर अभावों की आंधी के मध्य भी उनकी साधना का दीप अकंपित जलता रहा।

नागेश भट्ट की ख्याति महाराष्ट्र में, पेशवा बाजीराव तक भी पहुंची। उन्होंने निश्चय किया, वाराणसी-यात्रा के दौरान वे नागेश भट्ट के अवश्य दर्शन करेंगे।

उन्होंने ऐसा किया भी।

वाराणसी में जब बाजीराव नागेश भट्ट से मिलने गये, तब वे पुस्तकों के ढेर के मध्य, पीठ झुकाये बैठे कुछ पढ़ रहे थे। चारों ग्रोर निर्धनता छायी थी। इतने बड़े विद्वान, फिर भी इतने निर्धन! पेशवा ने विनम्रतापूर्वक कहा, "आचार्य, अनुमति हों तो आपके लिए आर्थिक व्यवस्था कर दूं। ऐसा कर, मैं स्वयं को भाग्यशाली मानूंगा।"

नागेश भट्ट का ध्यान टूटा। पेशवा की ग्रोर देखा। उन्हें पहचाना। फिर कहा, "महाराज, एक सूत्र की व्याख्या करने में ग्रंथों के संदर्भ ढूंढ़ने में सहायता कर दें। यही आपकी सबसे बड़ी कृपा होगी।"

पेशवा का सिर श्रद्धा से झुक गया।

गायिका का संकल्प

कार्यक्रम की प्रमुख गायिका के पूर्व, लोगों के अनुरोध पर उन्हें अपना गायन प्रस्तुत करना पड़ा था। लेकिन उपयुक्त संगत के अभाव में उनका गायन श्रोताग्रों को प्रभावित नहीं कर पाया। एक श्रोता ने उनका उपहास भी किया। वे बेहद व्यथित हुईं। रातभर सो न सकीं। ग्रंततः उन्होंने संकल्प किया—'यदि गायन-कला में नाम न किया तो जीवन व्यर्थ समझूंगी।'

वे थीं, सुप्रसिद्ध गायिका केसर बाई केरकर!

सचमुच, केसरबाई केरकर ने गायन-कला में श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम किया। वे उस समय के प्रख्यात गायक खां साहेब अल्लादिया खां से संगीत सीखना चाहती थीं। पहले तो अल्लादिया खां ने उन्हें शिष्या बनाने से साफ इनकार कर दिया। बोले, "मेरा गायन केसरबाई के गले में नहीं चढ़

पाएगा।" पर वे अपनी धुन की पक्की थीं। उनकी लगन देखकर खां साहेब को उन्हें शिष्या बनाना ही पड़ा। एक-एक तान, एक-एक अलंकार, पलटे को उन्हें बीस-बीस दिनों तक 'रटना' पड़ता। दिन-रात रियाज। केसरबाई बीमार-सी हो गयीं, लेकिन उन्होंने अभ्यास न छोड़ा। फलतः खां साहेब का भी शिष्या पर विश्वास बढ़ा।

केसरबाई केरकर कहा करती थीं, "एक-एक राग पर मैं छह-छह महीने मेहनत करती। अंत में तंग आकर खां साहेब कहते, 'बाबा, दूसरा राग ले' पर मैंने अपने गुरु से कभी नहीं कहा, 'खां साहेब, आप मुझे वह राग सिखाइए।' मैं उनसे राग का नाम भी नहीं पूछती थी। सोचती थी, कहीं वे स्वयं को अपमानित न अनुभव करें।"

केसरबाई कहा करती थीं, "मैंने गुरु से कभी तर्क-वितर्क नहीं किया। वे जो भी सिखाते, मनोयोग से उसे ग्रहण करती। और आज के श्रोता हैं कि कहते हैं, 'गायन के पूर्व केसरबाई राग का नाम बतायें'।"

एक अनोखा स्कूल

जियूगाकुएन, एक ऐसा स्कूल, जहां छात्र ही सारी व्यवस्था संभालते हैं। यह स्कूल जापान की राजधानी टोक्यो से कुछ मील दूर स्थित है। इसकी खूबी यह है कि कार्यालय का काम हो या बागीचे की देखभाल, प्रशासन का मामला हो या बैंक की व्यवस्था का—सारा कार्य तेरह से अठारह वर्ष की वय के छात्र ही देखते हैं।

इस स्कूल की स्थापना का श्रेय एक दार्शनिक-शिक्षाविद मोनोको हानी नामक महिला को है। वे 'फूजी नो तोमो' नामक एक पत्रिका भी प्रकाशित करती थीं। उनका एक स्वप्न था—बच्चों के लिए एक ऐसा स्कूल खोला जाए, जिसमें सामान्य विषयों के अलावा जीवनोपयोगी अन्य आवश्यक बातों की भी शिक्षा दी जाए। उन्होंने अपने पति योशी काजू हानी से अपने इस स्वप्न की चर्चा की। वे भी उत्साहित हुए और पति-पत्नी ने मिलकर सन १९२१ में प्रथम 'जियूगाकुएन' की स्थापना की। सन १९२३ में आये भूकंप के कारण टोक्यो की अन्य इमारतें ध्वस्त हो गयीं, लेकिन हानी-दंपति के स्कूल की इमारत बच गयी। पर टोक्यो के पुनर्निर्माण के सिलसिले में इस इमारत को ले लेने का प्रस्ताव रखा गया। फलतः हानी-दंपति ने अपनी पत्रिका में लोगों से धन की अपील की। लोगों ने मुक्त हस्त से दान दिया और उसी की सहायता से हानी-दंपति ने टोक्यो से कुछ मील दूर भूमि लेकर फिर से नया स्कूल स्थापित किया।

आज 'जियूगाकुएन' जापान की शिक्षा-पद्धति को नयी दिशा देनेवाला स्कूल सिद्ध हो रहा है। ●

तानाशाह का जनतंत्रवाद

'कादम्बिनी' के फरवरी-अंक में 'तानाशाह का जनतंत्रवाद' शीर्षक लेख पठनीय था। यह लेख पढ़कर 'चाणक्य' छद्म नाम से पं. नेहरू द्वारा लिखे गये एक लेख की याद आ गयी। यह लेख नेहरूजी ने अपने पुनः कांग्रेसाध्यक्ष चुने जाने पर एक चेतावनी के रूप में लिखा था। उनके लेख का आशय यह था कि कहीं जनता से मिलनेवाला अपार स्नेह और भरपूर समर्थन उन्हें 'तानाशाह' न बना दे। फिर उन्होंने आशा व्यक्त की थी कि नेहरू कभी तानाशाह नहीं बन सकेंगे। 'तानाशाह का जनतंत्रवाद' लेख से हमें यह भी सीख मिलती है कि तानाशाही के खिलाफ संघर्ष सतत जारी रखना चाहिए।

—श्याम शर्मा, बुलंदशहर

नकली हृदय : असली काम

'नकली हृदय : असली काम' लेख जानकारी से पूर्ण था। यों, इस विषय पर मैंने और भी पत्रिकाओं में लेख पढ़े लेकिन वे अपूर्ण प्रतीत होते थे। शायद इसलिए कि लेखकों ने उन्हें और पत्रिकाओं में प्रकाशित विवरण के आधार पर लिखा था। 'कादम्बिनी' में मनुष्य के शरीर में पूर्णतया कृत्रिम हृदय के प्रत्यारोपण की पहली ऐतिहासिक घटना की विशद जानकारी पढ़कर मेरा यह पूर्व विश्वास और भी दृढ़ हो गया कि 'कादम्बिनी' नये एवं महत्त्वपूर्ण विषयों ही नहीं, घटनाओं पर भी हमेशा आधिकारिक सामग्री देती है।

—डॉ. विजयशंकर शर्मा, नागपुर;

इस लेख के संबंध में हमें इन पाठक-पाठिकाओं के पत्र भी प्राप्त हुए हैं—अशोक मलिक, कलकत्ता; अर्जुन कुमार वंजारा, रायपुर; वसंत खिरवडकर, यवतमाल; कमलेश मिश्र, इटारसी; सुनयना भटनागर, आगरा।

केवड़े की मंजरी

'केवड़े की मंजरी पर सोता है सांप' शीर्षक लेख से केवड़े पर नयी जानकारी मिली। केवड़े को अब तक मैं मात्र इत्र के लिए ही उपयोगी समझती थी, पर लेख से पता चला कि वह अनेक रोगों के निवारण में भी सहायक हो सकता है।

—शोभा तिवारी, लखनऊ

रत्नावली की कथा

'रत्नावली रही उड़ावत काग' लेख संत कवि तुलसीदासजी की पत्नी रत्नावलि की व्यथा-कथा का दस्तावेज ही था।

कितनी पीड़ादायक मनःस्थिति में रत्नावलि ने ये पंक्तियां लिखी होंगी :

को जाने रत्नावली
पिय वियोग दुख बात
पिय बिछुरन दुख जानतो
सीय दमंती मात

संतकवि तुलसीदास पर अनेक शोध-प्रबंध प्रकाशित हो चुके हैं। क्या कोई शोधार्थी रत्नावलि के साहित्य पर शोध करने आगे आएगा ?

—मधूलिका सिंह, पटना

कब तक जलेंगी तरुण फसलें

'कादम्बिनी' एक लंबे समय से दहेज-जैसी सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करके एक मूल्यात्मक उद्देश्य का निर्धारण करती रही है । नववर्षांक में 'कब तक जलेंगी तरुण फसलें' निबंध इसी का परिचायक है। दहेज की विध्वंसक आग की लपट में आये दिन कोई न कोई भारतीय नारी जलकर खतम हो रही है। वास्तव में दहेज एक विनाशक प्रवृत्ति का ही दूसरा रूप बन गया है।

आवश्यक बात यह है कि दहेज की बढ़ती मनोवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए प्रत्येक स्तर पर एक व्यापक एवं विस्तृत आंदोलन का श्रीगणेश किया जाए, ताकि लोगों की मानसिकता में बदलाव आ सके। धीरे-धीरे ही सही लेकिन यह सब कुछ होना समय की मांग है ।

—सुमन कुमार सिंह, सुपौल (सहरसा) ;

इन दोनों लेखों के संबंध में हमें इन पाठक-पाठिकाओं के भी पत्र प्राप्त हुए हैं :

अशोक बजाज, नयी दिल्ली; संतोषकुमार, मुजफ्फरपुर; सुशांत कुमार डे, मुंगेर; कुशलेन्द्र श्रीवास्तव 'कुशल', गाडरवारा; रामानुज अग्रवाल, चिरमरी; राकेश दुबे, बंबई; कमलेश कुमार बंनाडा, लाल सोट (राजस्थान); टीका प्रसाद नम्बूद्री, जोशीमठ (जिला चमोली, उ. प्र.); डॉ. रवीन्द्र कुमार, पटना।

हिंदी-विभाग, रांची विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सृजन-प्रक्रिया-संगोष्ठी में हिंदी के अनेक प्रतिष्ठित लेखकों, कवियों, कहानीकारों ने भाग लिया। चित्र में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री अज्ञेय भाषण करते हुए दिखायी दे रहे हैं।

प्रगतिशील लेखक और जनवादी लेखक—एक प्रश्नचिह्न

'कादम्बिनी' के फरवरी, १९८३ के अंक में 'प्रगतिशील लेखक और जनवादी लेखक—एक प्रश्न चिह्न' लेख में सही मुद्दों को उठाया गया है । अपनी-अपनी पार्टी, अपनी-अपनी प्रगतिशीलता इस मानसिकता ने प्रगतिशील लेखन को काफी नुकसान पहुंचाया है । पार्टी की राजनीति के अनुसार प्रगतिशीलता के मानक बदल देना और अपने वैचारिक आधार विदेशों में खोजना कौन-सी प्रगतिशीलता है ? पार्टी के घोषणा-पत्रों और साहित्यिक रचनाओं में अंतर न करने अथवा अंतर करने की स्थिति में घोषणा-पत्र के नारों को ही साहित्य घोषित करने की मानसिकता सही प्रगतिशीलों को एक जुट करके एक संगठन में लाने में बाधा पहुंचाती रही है ।

'प्रगतिशील लेखक और जनवादी लेखक' इस प्रकार का वर्गीकरण करना सर्वथा अवांछनीय है । प्रगतिशील लेखन को सबसे बड़ा खतरा उसके फतवेबाजों से है। रचना में जन-जीवन की धड़कन ही उसकी प्रगतिशीलता की पहली और बड़ी पहचान हो सकती है ।

—अश्विनी कुमार गोयल, काठमांडू (नेपाल)

'कादम्बिनी' के फरवरी, १९८३ के अंक में 'प्रगतिशील लेखक और जनवादी लेखक—एक प्रश्न चिह्न' लेख पढ़ा । इसमें लेखक ने स्थिति का बहुत सही आकलन किया है । प्रगतिशीलता किसी दल-विशेष की धरोहर नहीं है, न हो सकती है । विडंबना यही है कि दलीय विचारधारा और कार्यपद्धति को ही प्रगतिशीलता का मानदंड माननेवाले लोगों के चलते, सही प्रगतिशीलता की पहचान ही धूमिल होने लग गयी और प्रगतिशील लेखक संघ भी टूटकर दो खेमों में बट गया । जनवादी लेखक संघ इसी का प्रतिफलन है ।

—संदीपसिंह गौर, जबलपुर

'कादम्बिनी' के मूल्य में वृद्धि

कागज, पोस्टेज और छपाई आदि में निरंतर वृद्धि के कारण 'कादम्बिनी' के प्रत्येक अंक में हमें बहुत घाटा उठाना पड़ रहा है । उस घाटे की पूर्ति संभव तो नहीं है, लेकिन हम चाहते हैं कि हमारे पाठक उसका थोड़ा-सा भार तो उठाएं । इसलिए विवश होकर अप्रैल के अंक से 'कादम्बिनी' के मूल्य में हमें ५० पैसे की वृद्धि करनी पड़ रही है। 'कादम्बिनी' का प्रत्येक अंक नया और विशेषांक की तरह होता है। हम उसका स्तर उसी तरह बनाये रखेंगे। हमें विश्वास है, हमारे कृपालु पाठक पचास पैसे का भार आसानी से वहन करने में हिचकेंगे नहीं ।

—संपादक

वर्ष २३ : अंक
मार्च, १९

कादम्बिनी

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

स्थायी स्तंभ

कहानियां एवं व्यंग्य

कविताएं

सार-संक्षेप

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

सह-संपादक
दुर्गाप्रसाद शुक्ल

उप-संपादक
प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये

—कैक्टस !

०

—मुझे कैक्टस लगाने का शौक है । जहां जाता हूं, कैक्टस की जातियों और नस्लों की तलाश करता हूं । उन्हें लाता हूं—कभी खरीदकर, कभी मांगकर और कभी चुराकर।

—एक समय था, मेरे बाग में कैक्टसों की दर्जनों जातियां और नस्लें थीं । धीरे-धीरे वे सब सड़ते गये और अब केवल कुछ बेशर्म तरह के कैक्टस बचे हैं ।

—परेशान हूं, कैक्टस-जैसा जंगली पौधा देखभाल के बावजूद सड़ता जा रहा है !

—हां, जबसे लोगों ने गुलाब की खेती शुरू कर दी है, कैक्टस शरमाने लगे हैं !

०

—प्रश्न प्रतिद्वंद्विता का है : दोनों में कांटे होते हैं, दोनों खूबसूरत भी होते हैं !

—कैक्टस को सहज गम्य रूप से नागफनी भी कहा जाता है । नागफनी किसानों और खेतिहर मालिकों की रक्षक है ! उसकी बाड़ी तारों से भी ज्यादा मजबूत होती है। उसे कोई तोड़ नहीं सकता ।

—कई नागफनियों में मैंने खूबसूरत फूल भी देखे हैं !

—शहरी हवाओं में नागफनी के फूल शायद उड़ जाते हैं । यहां लगे कैक्टस शायद ही फूल देते हों ।

—बात क्या है ?

—नाम का असर तो नहीं है : कैक्टस और नागफनी के बीच कहीं यह अंतर तो नहीं आ गया ?

०

—सोचना मुश्किल है ।

—गुलाब की खेती से कम नुकसान नहीं हुआ ।

—सुगंधवाले देशी गुलाबों में आयात किये गये विदेशी गुलाबों की कलमें लगाकर फूलों
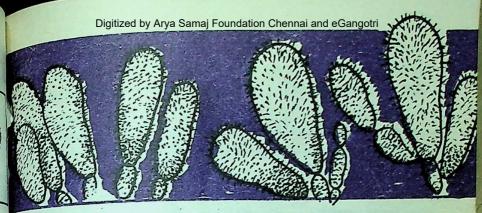
का आकार तो बढ़ाया जा रहा है, उनकी भारतीयता समाप्त हो रही है।

—आयातित गुलाब सुगंधहीन होते हैं !

—हमारी संभ्यता पर भी संभवतः आयातित कलई चढ़ने लगी है।

—विदेशी तत्वों की सुरक्षा हमारा कर्त्तव्यबोध हो गया है। परिणाम यह हुआ है कि हमारे भीतर ही भेंदिये उभर आये हैं।

—इन भेंदियों की नस्लें गुलाब-जैसी हैं ! हमें सम्हालना होता है, खाद देना पड़ता है और ये मजे से केंचुए की तरह मनमाने पनप रहे हैं !

—गुलाब ने हमारे पेट में कीड़े पैदा कर दिये हैं।

—जलवायु और मौसम को यदि ललकारा जाएगा तो बादल फटेंगे ही, गाज गिरेगी और सूरज अपना धरम छोड़कर किसी और देश को तप्त करेगा।

—जलवायु और मौसम धरती और आकाश के बीच ही नहीं पनपते, वे हमारे भीतर भी पनपते हैं।

—उनसे ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। वही हमारे धर्म को निर्धारित करते हैं !

—धर्म मंदिरों और घंटियों के बीच ही नहीं होता; वह तो धर्म के नाम पर हमारे संतोष की चेतना है !

—मंदिर की घंटियां क्षणिक आस्था की मात्र प्रतिध्वनियां हैं !

—मंदिर के पवित्र प्रांगण से बाहर निकलते ही गुलाब और नागफनी के कांटे हमारे भीतर फिर उभर आते हैं।

—वास्तव में धर्म मनुष्य की आत्मा का स्वर है और उसके व्यक्तित्व का परिचायक है।

—धर्महीन शरीर दुराचार की ओर प्रवृत्त होता है ! परिणाम—हत्याएं, लूट-खसोट और मनुष्य की मनुष्य से दूरी !

—तब हर आदमी का खून एक-सा नहीं रह जाता।

—विधर्मी केंचुए पेट में घुसकर खून पीने लगते हैं और शरीर को पीला बनाते हैं।
—ऐसी स्थिति में जोंक चिपकाने की जरूरत है, जो सड़ा-गला खून पीकर अपने को तृप्त कर ले ।
—प्रकृति ने कुछ जीव-जंतु ऐसे बनाये हैं, जो परोपकार के लिए स्वयं गरल-खून पीकर ही जीवित रहते हैं। दुष्ट वे नहीं हैं, उनकी नस्लों को खत्म नहीं करना चाहिए।

०

—धर्म !
—धर्म हमारा धीरज है ।
—धर्म हमारी आत्मा है !
—धर्म हमारा व्यक्तित्व है !
—धर्म हमारी संस्कार-परंपरा को उजागर करता है ।
—धर्म गुलाब का फूल नहीं है कि नजर पड़ते ही तोड़ने की इच्छा हो जाए !
—धर्म की सुरक्षा नागफनी है !
—नागफनी-धर्म हमारी मनुष्यता को मानवता का अमृत्व देता है !

०

—परेशान हूं मैं, अमृत्व देनेवाले वही कैकटस (या नागफनी) अब सड़ते जा रहे हैं।
—उन्हें न पानी की जरूरत है, न उपजाऊ धरती की । तब भी वे रह नहीं पाते।
—धर्म के लिए भी तो कुछ नहीं चाहिए, वह मात्र संकल्प के साथ जी सकता है !
—गुलाब की तरह अब लोग धर्म की भी चोरी करने लगे हैं और फूल तोड़कर मात्र कांटे वहां छोड़ जाते हैं !
—तब प्रतिद्वंद्विता दो कांटों के बीच हुई न ?
—जो रक्षक-कांटा है, उसे सुरक्षा के आयाम नहीं चाहिएं ।
—जो कांटा दिखावटी सौंदर्य को पालता है, वह पालने के श्रम का मूल्य चाहता है।
—धर्महीनता ने मूल्यहीन बना दिया है हमें । कहां से पढ़ाएंगे हम मूल्य को, जब मूल्यों की रक्षा ही हम नहीं कर सकते।

—कैंकटस !

—तुम्हारा दोष नहीं है, मैं शिकायत कैसे करूं तुम्हारे सड़ने की, जब गुलाब की खाद के कीड़े हमारे भीतर पनपने लगे हैं !

—मैं तब भी अपना मोहभंग नहीं होने दूंगा—कैंकटस लगाता रहूंगा तब तक, जब तक नकली गुलाबों की नस्ल खतम नहीं हो जाती !

—उसके खत्म होते ही धर्म और मूल्यों का उदय होगा। उनकी रक्षा के लिए हमें तब नागफनी की जरूरत पड़ेगी। ऐसा अवसर नहीं आने देंगे हम कि हमें नागफनी की तलाश के लिए भी आयोग बैठाना पड़े !

—मैं हर देश, हर धरती और हर मूल्यों के कैंकटस की खेती करता रहूंगा—खरीदकर, मांगकर या चुराकर !

—मेरा श्रम व्यर्थ नहीं होगा क्योंकि समय हर 'टकराव' को अजगर की तरह तोड़ देता है।

राजेन्द्र अवस्थी

वचनवीथी

अच्छे विचारों पर यदि आचरण न किया जाए, तो वे अच्छे स्वप्नों से बढ़कर नहीं हैं। —एमर्सन

मैं वह नहीं चुनूंगा जिसे बहुत-से लोग चाहते हैं; क्योंकि मैं साधारण जीवों के साथ कूदना और बर्बर समूह में सम्मिलित होना नहीं चाहता। —शेक्सपीयर

अग्नि स्वर्ण की परीक्षा करती है और प्रलोभन सच्चे मानव की। —फेबर

अंतरात्मा अथवा भावना के विषय में प्रथम विचार सर्वोत्तम हैं; समझदारी के विषय में अंतिम विचार सर्वोत्तम हैं। —रॉबर्ट हॉल

मुझे अधिक पसंद है कि लोग मुझे सीख देते हुए मुझ पर हंसें, अपेक्षा इसके कि वे मुझे कुछ भी लाभ पहुंचाये बिना मेरी प्रशंसा करें। —गेटे

वसंत बौराया है

• डॉ. शरद कुमार
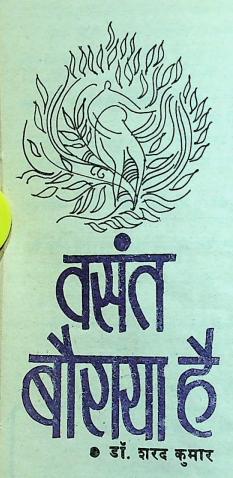
वसंत हमेशा से एक प्रेरक ऋतु के रूप में माना जाता है। मौसम की अनुकूलता के कारण मनुष्य निरोग रहते हैं और स्वस्थ मनुष्य एक स्वस्थ ऋतु की प्रतीक्षा करते हैं। वसंतोत्सव इसीलिए हास-परिहास-उल्लास और व्यंग्य-विनोद के वातावरण में आदिकाल से मनाया जाता रहा है।

वसंतोत्सव को मदनोत्सव भी कहा गया है। मदन का अर्थ काम है और काम हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। प्रयाग संग्रहालय में एक मूर्ति है, जिसमें मदन-क्रीड़ा का मनोहारी अंकन है। उसे आपान-गोष्ठी का दृश्य कहा गया है। पुरुष और स्त्री आमने-सामने बैठे हैं। स्त्री अपने दाहिने हाथ को ऊपर उठाये हुए और उसमें मधु-पात्र लिये हुए है। पात्र ढका है, ताकि वह पवित्र बना रहे। बायें हाथ से वह पुरुष का आलिंगन कर रही है। पुरुष भी एक हाथ में मधु-पात्र लिये हुए है। उसके दूसरे हाथ में वंशी है। वंशी राग और अनुराग का प्रतीक है। इसी वंशी की ध्वनि पर राधा भी मोहित हुई थी। शिल्पी ने अपनी कुशलता से हमारी पूरी संस्कृति को इस मूर्ति में अंकित कर दिया है। ऐसी ही मूर्तियां चंदेलकालीन राजाओं ने बनवायी थीं। वे खुजराहो व बुंदेलखंड में पर्याप्त रूप से देखने को मिलती हैं। इनमें दृश्य और उनकी क्रीड़ाएं अलग हैं, लेकिन सभी का एक ही अभिप्राय है—आनंदभाव। मदनोत्सव वास्तव में कामदेव की पूजा है। कामदेव को एक सुकुमार लेकिन बलिष्ठ और अनाड़ी व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पटना और प्रयाग के संग्रहालयों में कामदेव के कई रूप देखने को मिलते हैं।

शिल्पियों के साथ-साथ कवियों ने भी वसंत को ऋतुराज कहा है। जंगल में खिले हुए पलाश के लाल फूल अंगारों

की तरह आधे दहके हुए हैं और आधे काले हैं। पूरा जंगल उस समय उजाड़ होता है। केवल पलाश के लाल फूल ही अग्नि-ज्वाला की तरह दहकते हुए दिखायी देते हैं। कितने सहज भाव से स्वयं प्रकृति ने मनुष्य की वासना और उल्लास को रूप दिया है। प्रसाद ने इसे 'अंतरिक्ष के मधु-उत्सव' के रूप में देखा है। प्रकृति के सुकुमार कवि पंत ने लिखा है—

रंगों में भर उर की लाली
अधर पल्लवों में रच डाली
सौरभ की चल अलकें मादल
फूल धूलि में लिपटा मृदु तन

आज हम सुकुमार मौसम के बीच में हैं और समय है कि उसका स्वागत करें। हमारे 'पुरुष पुरातनों' ने वसंत को जिन नाना-विध रूपों में देखा है, उनकी छवि आज भी मन को आनंदित करती है।

ये पंक्तियां 'रजत-शिखर' की हैं और कवि के मन के उल्लास को प्रकट करती हैं। महाकवि निराला ने तो जैसे एक टेर लगायी थी—

'दूत अलि ऋतुपति के आये।'

यह परंपरा आधुनिक काल तक निरंतर चलती आयी है और कोई भी कवि वसंत से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। कठोर शीत के बाद, भीषण गरमी आने के पहले, बीच का सुरम्य मौसम आखिर किसे प्रभावित नहीं करेगा?

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिक सत्ता के साथ हमेशा जुड़ा रहा है। वसंत-जैसे मौसम में वह सब कुछ भूलकर समवेत उत्सव मनाने में शामिल हो जाता है। इसी अवसर पर आमों में मंजरियां आती हैं, जो भविष्य के उस फल का प्रतीक है, जिसे फलों का राजा कहा गया है। खेतों में गेहूं और चने के पौधे अपनी बालियां और मेंटियां फोड़ देते हैं, यह एक दूसरे हर्ष का समय है एक किसान के लिए, जब उसे आभास होता है कि उसकी मेहनत में बीज निकल आये हैं और कुछ समय बाद वह पकेंगे। इसी पकने की आशा में वह होली जलाता है और बालियों और मेंटियों को भूनकर नये अन्न का स्वाद चखता है। आदि-वासियों में तो 'नवान्न' नाम से एक पूरा

डाली-डाली आया बसंत

पल्लव-पल्लव छाया वसंत

पर्व ही मनाया जाता है। भारत-जैसे कृषि-प्रधान देश के लिए इससे अच्छा अवसर नहीं हो सकता। यहां की अस्सी प्रतिशत जनता केवल खेतों के सहारे सांसें लेती है; खेत की वही उपज केवल उनकी ही नहीं, शहर की बीस प्रतिशत जनता का भी पेट भरती है।

इसीलिए वसंत एक ऐसा उत्सव है, जिसे गांव और शहर दोनों ओर मनाया जाता है। इसके साथ होली पर्व को जोड़कर उल्लास की एक दूसरी सृष्टि मनुष्य ने अपने आसपास कर ली है। वह होली क्या जिसमें गाली न हो। गाली देने का यह अधिकार छोटे-बड़े सबको समान रूप से प्राप्त है। ऐसा कब होता है कि अपने से अधिक वय के व्यक्ति या अधिक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति को भी छोटा आदमी गालियां देकर उसे हास्य-विभोर कर दे। वर्ष में यही एक समय आता है, जब गालियां भी मीठी लगती हैं, इसलिए वसंत बौराता भी है और गदराता भी है। ऐसे महिमा-मंडित मौसम की जितनी अभ्यर्थना की जाए, कम है।

हम अब एक मशीनी युग में प्रवेश कर गये हैं, तब भी हमसे यह मौसम छूटकर दूर नहीं जा सका। दूसरे देशों में भी वसंत उल्लास का समय होता है। यह अलग बात है कि वहां वसंत के आने का समय हमसे अलग होता है। यह भी एक आश्चर्य है कि वह कभी आये और कहीं भी आये मनुष्य की मूल चेतना उसे पकड़े बिना नहीं रहती। समूचे यूरोप में रंग-बिरंगे मेले और समारोहों को वसंत के समय देखा जा सकता है। अफरीका की जंगल में रहनेवाली जातियां भी पीछे नहीं हैं, बल्कि वह हमसे भी आगे बढ़कर नृत्य और गीतों में अपने को आत्म-विभोर कर लेती हैं। आस्ट्रेलिया और अमरीका-जैसे देशों में रंग-बिरंगी नौकाओं में शराब के प्यालों के साथ इस ऋतु का स्वागत किया जाता है। यही एक ऐसा समय है, जहां मशीनी-सभ्यता ने भी आदमी को जीवित रखा है।

इस दृष्टि से आधुनिक सभ्यता अब भी अपनी पुरातनता को नहीं छोड़ पायी। लगता है, एक परंपरा बनी हुई है और कोई धागा है, जो सिलसिलेबद्ध समय को अपने साथ खींचता चला जाता है। हम ऐसे ही सुकुमार मौसम के बीच में हैं और समय है कि उसका स्वागत करें। हमारे 'पुरुष पुरातनों' ने वसंत को जिन नाना-विध रूपों में देखा है, उनकी छवि आज भी मन को आनंदित

फागुन की मस्ती : बरसाने की होली

करती है—

● वसंत को मदन महीप का बालक कहा गया है। बालक वसंत के जन्म पर उसका जिस प्रकार आदर-सत्कार किया जाता है, जिस प्रकार के लाड़-प्यार के साथ उसका पालन-पोषण किया जाता है, उसका वर्णन रीतिकालीन काव्य में सांगरूपक के माध्यम से किया गया है। 'पृथ्वीराज की वेलि' में भी इसी प्रकार का वसंत वर्णन मिलता है।

● ब्रज में कृष्ण के संसर्ग से सदा ही वसंत बना रहता है। वृंदावन प्रफुल्लित रहता है, पक्षि-समूह मुग्ध और उन्मत्त बना रहा है। कुंज-कुंज में भौरे गुंजार करते रहते हैं और आम्र-मंजरियां मद-संचार करती रहती हैं।

● वसंत ऋतु विरहिणी की व्यथा को नाना भाव से उद्दीप्त करती है। वासंती समीर, चंदन, चांदनी सभी तो उसके विरह-ज्वर को तीव्रतर करते हैं।

● विरहिणी के लिए वसंत ऋतु और उसमें भी होली का पर्व विशेष रूप से पीड़ाप्रद होता है। वह तो अतःपुर में रहती है, इतनी गनीमत है; अन्यथा वनों और उद्यानों की छवि देखकर वह दग्ध हो उठती है, 'हे सखी ! वसंत का तो नाम भी मत लो !'.....परंतु यह सब चलेगा कबतक ? उस दिन (होली को) जब सखियां केसर-नीर भरेंगी और अबीर खेलेंगी, उस प्रणयिनी की क्या दशा होगी !

● वसंत ऋतु में विरहिणी की दशा अजीब है—रजत-ज्योत्स्ना, चंदन, त्रिविध समीर आदि विरहिणी के शरीर को दोगुना जला रहे हैं। ●

इस शती के प्रारंभ में रूस के एक गणतंत्र लाटाविया में कुछ रोचक डाक-टिकटें छपी थीं। ये डाक-टिकटें कागज की कमी के कारण बेकार फौजी नक्शों के पीछे की ओर के खाली स्थान पर छापी गयी थीं और इन पर इस राज्य का राष्ट्रीय प्रतीक भी मुद्रित था।

*

आयरलेंड के 'लाफ ओरल' नामक स्थान के पास रहनेवालों को कपड़ों की सफाई के लिए साबुन की आवश्यकता ही नहीं होती, क्योंकि वहां के पानी में 'कार्बन ऑव सोडा' की मात्रा इतनी अधिक होती है कि कपड़े उसमें धोने से वैसे ही साफ हो जाते हैं।

मनोभावों की अभिव्यक्ति में मुख का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके तीन भाग होते हैं—होंठ, दांत और जीभ। इनके मुख्य रूप से दो कार्य होते हैं—खाद्य व पेय पदार्थों को समुचित ढंग से पेट में पहुंचाना तथा व्यक्ति को शब्द के उच्चारण की क्षमता प्रदान करना, जिसके माध्यम से वह अपने मनोभावों को प्रकट करता है।

आपका चेहरा सौंदर्य की पहचान

• ऋषि गौड़

मुख की बाह्य संरचना में होंठों का प्रमुख स्थान है। चेहरे की आकृति, आकर्षण एवं सौंदर्य बहुत कुछ इन्हीं पर निर्भर है। इनकी बनावट एवं गति से व्यक्ति के व्यक्तित्व का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है:

होंठों की बनावट

जिन लोगों के होंठ अत्यधिक विस्तृत

एवं स्थूल हों, वे भोग-विलास एवं तामसिक प्रकृति के होते हैं। अविकसित बुद्धि होने के कारण प्रायः वे गलत निर्णय ले बैठते हैं। इसके विपरीत अत्यधिक संकुचित होंठ व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता को प्रकट करते हैं। उनमें जीवन के प्रति कोई उत्साह नहीं रहता।

दीर्घ होंठवाले व्यक्ति बातूनी, विलासी, आत्म-प्रदर्शनकारी एवं भावुक होते हैं। कहीं-न-कहीं उनमें अहंकार की भावना भी छिपी होती है। यदि निचला होंठ अधिक दीर्घ अथवा लटका हुआ हो, तब वह व्यक्ति की मूर्खता और उसकी मानसिक दुर्बलता को प्रकट करता है।

बहुत-से व्यक्तियों के होंठ प्रायः खुले रहते हैं, वे उन्हें बंद नहीं कर पाते। ऐसे व्यक्ति मूर्ख एवं मानसिक रूप से दुर्बल होते हैं।

हमें समाज में असामान्य एवं वक्र होंठवाले व्यक्ति भी देखने को मिल जाते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः विकट एवं कुटिल

स्वभाव के होते हैं। वैसे उनमें परिस्थितियों से जूझने एवं जटिल कार्य करने की अद्भुत क्षमता होती है।

कुछ लोगों के होंठ गोलाई लिये हुए होते हैं। ऐसे व्यक्ति रहस्यात्मक प्रकृति के होते हैं। वे अपने हृदय की बात को सरलता से स्पष्ट नहीं करते। ऐसे व्यक्ति तंत्र-मंत्र एवं भूत-प्रेतों में भी विश्वास रखते हैं।

होंठों का वर्ण और स्निग्धता

शुष्क होंठ अच्छे नहीं होते, वे व्यक्ति के गुणों में कमी तथा अवगुणों में वृद्धि कर देते हैं। प्रायः ऐसे होंठ शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता और हीनभावना के सूचक होते हैं।

श्वेत वर्णवाले होंठ व्यक्ति में खून की कमी को प्रकट करते हैं। ऐसे व्यक्ति अस्वस्थ, चिड़चिड़े और निराशावादी होते हैं; जबकि श्यामल, खुरदरे व कठोर होंठ व्यक्ति की तामसिक प्रकृति के द्योतक हैं।

जिन व्यक्तियों के होंठ रक्तिम हों, वे कर्मठ, साहसी, दृढ़निश्चयी एवं महत्त्वाकांक्षी होते हैं। उनमें उत्तेजना व जोश स्वाभाविक है। गुलाबी होंठवाले व्यक्ति स्वस्थ एवं सुलझे विचारों के होते हैं।

समरूप, स्निग्ध, रक्तिम अथवा गुलाबी होंठ, जो देखने में सुंदर और आकर्षक लगते हों, व्यक्ति के उदार, स्नेही और कलात्मक स्वभाव को प्रकट करते हैं। यदि स्त्रियों के ऐसे होंठ हों, तब इन गुणों में और भी वृद्धि हो जाती है।

होंठों की गति

होंठों की बनावट ही नहीं, वरन उनकी गति भी व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र को उजागर करती है।

होंठों के खुलने से पूर्व की स्थिति है, उनका स्पंदन। जिस व्यक्ति के होंठ स्पंदन करते हों, उसके बारे में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह या तो अति आनंद अथवा दुःख की स्थिति में है या फिर किसी गहन विचार में

डूबा हुआ है। ऐसा व्यक्ति प्रायः भावुक एवं कल्पनाशील होता है।

यदि कोई व्यक्ति अपने निचले होंठ को दांतों से दबाता अथवा काटता हो, तब यह स्थिति उसकी मानसिक व्यग्रता और अस्थिरता को प्रकट करती है।

दूसरों से ईर्ष्या अथवा घृणा करनेवाले व्यक्ति या तो अपने होंठों को दायें या बायें कर मुंह बिचकाते हैं, या फिर अपना निचला होंठ आगे निकालकर बुरा-

सा मुंह बना देते हैं। ऐसे व्यक्ति अहंकारी और आत्म-प्रदर्शनकारी होते हैं।

बहुत-से व्यक्ति बातचीत करते समय अपने होंठों को गोलाई में कर लेते हैं, इसके साथ ही मुंह से इस प्रकार रुक-रुक-कर हवा निकालते हैं, मानों वे सीटी बजा रहे हों। उनको देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि वे या तो किसी विचार में डूबे हैं या फिर किसी समस्या का समाधान ढूंढना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति रहस्यात्मक प्रकृति के होते हैं।

जिन व्यक्तियों के होंठ वार्ता करते समय जंगली सूअर की भांति आगे व ऊपर की ओर उठते हुए प्रतीत हों, वे निम्न स्तरीय होते हैं। उनमें बुरे लोगों के साथ बैठने और गंदी चीजें खाने की आदत पड़ जाती है। ऐसे व्यक्ति असभ्य और अविकसित बुद्धि के होते हैं।

संयमी, गंभीर, बुद्धिमान, शिष्ट एवं व्यवहारकुशल व्यक्ति आवश्यकतानुसार संतुलित रूप से अपने होंठों को गति प्रदान करते हैं।

दांतों से पहचान व्यक्तित्व की

वैसे तो दांतों का प्रमुख कार्य है—भोजन को चबाकर उसे तरल रूप प्रदान करना; इसके अतिरिक्त वे शब्दोच्चारण एवं सौंदर्य-वृद्धि में भी सहायक होते हैं। इनका अधिकांश भाग मसूढ़ों में अदृश्य रहता है, किंतु हमारे अध्ययन का विषय इनका ऊपरी (दृश्य) भाग है, जो होंठों के खुलते ही हमें दिखायी पड़ता है।

दांतों की बनावट

जिन व्यक्तियों के दांत विषम और बेडौल होते हैं, वे प्रायः अव्यावहारिक, मानसिक रूप से व्यग्र और अस्थिर स्वभाव के होते हैं। उनके जीवन की गति-विधियां खाने-पीने अथवा मौज करने तक ही सीमित रहती हैं। इसके विपरीत समरूप पंक्तिबद्ध, सुंदर एवं आकर्षक दांतोंवाले व्यक्ति स्वस्थ, सभ्य और विकसित मस्तिष्क के होते हैं।

यदि किसी के ऊपरी दांत अधिक लंबे हों, जो निचले होंठों को दबाते हों, उन्हें देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह व्यक्ति तामसिक एवं पाशविक प्रवृत्ति का है। इसके विपरीत निचले लंबे दांत, जो ऊपरी होंठ को दबाते हों, व्यक्ति के छली, कपटी एवं क्रोधी स्वभाव को प्रकट करते हैं।

बहुत-से व्यक्तियों के दांत सफाई करने के पश्चात भी पीले या मटमैले रहते हैं। ऐसे व्यक्ति या तो उदर-रोग

से पीड़ित रहते हैं, या फिर मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं । उनमें मानसिक दुर्बलता और अस्थिरता अधिक होती है ।

यदि व्यक्ति सामान्य स्थिति में दांत किटकिटाकर बातें करता हो, तब समझिए कि वह अपनी बात को प्रकट नहीं करना चाहता, किंतु दूसरों की सारी बातें जान लेने का इच्छुक है। ऐसे व्यक्ति अधिकतर स्वार्थी होते हैं।

जिह्वा और व्यक्तित्व

मुख का तीसरा महत्त्वपूर्ण भाग जिह्वा है, जो शब्दोच्चारण, रसास्वादन एवं खाद्य-पदार्थों को पेट में पहुंचाने की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी बनावट, वर्ण और गति से भी व्यक्तित्व का विश्लेषण सुगमता से किया जा सकता है ।

जिह्वा की बनावट

जिन व्यक्तियों की जीभ छोटी, मोटी एवं स्थूल होती है, वे आलसी, भाग्यवादी एवं अविकसित मस्तिष्क के होते हैं। स्त्रियों की ऐसी जीभ उनकी झगड़ालू एवं शंकालु प्रकृति की द्योतक है । इसके विपरीत अत्यधिक लंबी व पतली जीभवाले व्यक्ति स्वादिष्ट भोजनप्रिय, वाक्चतुर महत्त्वाकांक्षी और सक्रिय मस्तिष्क के होते हैं।

सामान्य रूप से लंबी, पतली व नुकीली जिह्वा सब प्रकार से श्रेष्ठ होती है। ऐसी जिह्वावाले व्यक्ति व्यवहार-कुशल, सक्रिय एवं विकसित मस्तिष्क के होते हैं।

जिह्वा के वर्ण से भी व्यक्ति के स्वभाव एवं रोग आदि के विषय में बहुत कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

शुष्क जिह्वा, चाहे वह किसी भी आकार की हो, व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता की द्योतक है । श्वेत वर्ण की जिह्वा व्यक्ति में खून और उसकी अस्वस्थता को प्रकट करती है । उपयुक्त दोनों प्रकार की जिह्वा-वाले व्यक्तियों में चिड़चिड़ापन एवं नैराश्यभाव अधिक होता है । श्यामल जिह्वावाले व्यक्ति तामसिक प्रकृति के होते हैं। उनमें मादक द्रव्यों का सेवन और निम्नस्तरीय कार्य करने की आदत पड़ जाती है । पीली अथवा मटमैली जिह्वा को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि व्यक्ति उदर अथवा पीलिया रोग से पीड़ित है । रक्तिम जिह्वा व्यक्ति की कर्मठता, साहस, दृढ़

निश्चय एवं उसकी महत्त्वाकांक्षा की प्रतीक है; जबकि गुलाबी जिह्वावाले व्यक्ति स्वस्थ, व्यवहारकुशल और विकसित मस्तिष्क के होते हैं। सौंदर्य एवं कला के प्रति भी उनका रुझान हो सकता है।

ललाट का महत्त्व

मस्तक की संरचना के अंतर्गत हम मुख्य रूप से उसकी ऊंचाई, चौड़ाई व उभार आदि का अध्ययन करते हैं।

ऊंचाई के दृष्टिकोण से कम ऊंचे मस्तकवाले व्यक्ति मूर्ख व अविकसित मस्तिष्क के होते हैं। उनके स्वभाव में काफी अस्थिरता होती है। वे सदैव दूसरों की आलोचना में लगे रहते हैं। इसके विपरीत ऊंचा, उन्नत एवं कोमल मस्तक व्यक्ति के संयम, गंभीरता एवं उसकी प्रबल विचारशक्ति को प्रकट करता है। ऐसे मस्तकवाले व्यक्ति अध्ययनशील व मननशील होते हैं तथा वे विभिन्न विषयों के प्रति रुचि रखते हैं।

जिन व्यक्तियों के मस्तक सामान्य रूप से कम चौड़े हों, वे अव्यावहारिक और संकुचित विचारों के होते हैं। इसके विपरीत चौड़े मस्तकवाले व्यक्ति बुद्धिमान, विचारक, व्यवहारकुशल और विकसित मस्तिष्क के होते हैं।

यदि मस्तक की ऊंचाई व चौड़ाई दोनों ही अधिक हों, तब ऐसे विस्तृत ललाटवाले व्यक्ति बुद्धिमान, विद्वान, ऐश्वर्यवान एवं यशस्वी होते हैं। इसके विपरीत कम ऊंचाई व चौड़ाईवाला संकुचित मस्तक, व्यक्ति के संकु[illegible] विचारों को प्रकट करता है।

मस्तक के उभार भी अध्ययन [illegible] लिए महत्वपूर्ण हैं। इनकी तीन स्थिति[illegible] हो सकती हैं—पहली उन्नत, दूसरी अवनत और तीसरी सीधी व सपाट।

उन्नत (नीचे से ऊपर तक आगे [illegible] और गोलाई में झुके हुए) मस्तक[illegible] व्यक्तियों की उनकी स्मरण-शक्ति [illegible] तीव्र होती है। अच्छी सूझ-बूझ के [illegible] वे शीघ्र ही सही निष्कर्षों पर पहुंच [illegible] हैं तथा अपने कार्यों में सफलता [illegible] करते हैं। इसके विपरीत अंदर की [illegible] धंसे हुए अवनत मस्तकवाले व्य[illegible] अविकसित मस्तिष्क के होते हैं।

बहुत-से व्यक्तियों का मस्तक [illegible] व सपाट होता है। ऐसे व्यक्ति साम[illegible] बुद्धि के होते हैं। उनका सामा[illegible] दायरा भी सीमित होता है।

कपोल (गा[illegible]

जिन व्यक्तियों के कपोल (गाल) शुष्क, निस्तेज एवं गड्ढों से युक्त हो[illegible] हैं, वे प्रायः अस्वस्थ और मानसिक [illegible] से चिंतित रहते हैं। वे इतने अ[illegible] एवं चिड़चिड़े होते हैं कि जरा-जरा[illegible] बात पर आक्रोशित व आक्रामक [illegible] जाते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः अ[illegible] जीवन व्यतीत करते हैं। इसके विप[illegible] अत्यधिक मांसल व चिकने गालों[illegible] व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य [illegible] खाना-पीना और मौज करना है।

गालोंवाले व्यक्ति आर्थिक रूप से संपन्न एवं भोगी-विलासी होते हैं।

सामान्य रूप से मांसल, चिकने एवं कांतियुक्त गाल इस बात के द्योतक हैं कि व्यक्ति स्वस्थ एवं विकसित मस्तिष्क का है। उसमें दूसरों को प्रभावित करने एवं नेतृत्व की अच्छी क्षमता होती है।

वर्ण के दृष्टिकोण से श्वेत गालोंवाले व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप सें दुर्बल होते हैं। प्रायः वे निराशा एवं हीनग्रंथि के शिकार रहते हैं।

गालों का पीला रंग पित्त-विकार एवं पीलिया-जैसी बीमारी को प्रकट करता है। कभी-कभी रक्त अशुद्ध हो जाने के कारण बहुत-से व्यक्तियों के गालों का रंग श्यामल अथवा मटमैला हो जाता है तथा उनके चेहरे पर काली झांइयां एवं धब्बे भी पड़ जाते हैं। ऐसे व्यक्ति तामसिक प्रकृति के होते हैं।

रक्तिम वर्ण के गाल अच्छे स्वास्थ्य एवं अधिक शक्ति के सूचक हैं। ऐसे व्यक्ति कर्मठ, साहसी व महत्त्वाकांक्षी होते हैं। उनमें क्रोध व उत्तेजना की प्रवृत्ति अधिक होती है। गालों का गुलाबी रंग अच्छे स्वास्थ्य और विकसित मस्तिष्क का द्योतक है। ऐसे व्यक्ति कर्मठ, साहसी व महत्त्वाकांक्षी होने के साथ-साथ उदार, सहनशील, बुद्धिमान और व्यवहारकुशल होते हैं।

स्त्रियों एवं पुरुषों के गालों के अध्ययन में काफी समता है, किंतु एक

महत्त्वपूर्ण अंतर यह भी है कि गालों पर बाल पौरुष के प्रतीक हैं, वहीं रोम-रहित कपोल नारी-सुलभ गुणों के द्योतक हैं। रोमयुक्त कपोल स्त्रियों को अधिक स्वतंत्र एवं उच्छृंखल बना देते हैं

—नौरंगाबाद, धामपुर, जिला बिजनौर (उ. प्र.)

बर्मा में पार्दोक नामक एक ऐसा पौधा होता है, जो वर्षा ऋतु से पहले उगता है। प्रायः ऐसा देखने में आया है कि जब इस पौधे के फूल खिलते हैं, तब उसके चौबीस घंटे के अंदर वर्षा होने लगती है।

★

यह अविश्वसनीय है कि आदमी का शरीर पारदर्शी हो, लेकिन चीन के हसीह हसुआ नामक व्यक्ति का शरीर पारदर्शी था।

बढ़ते हुए शीतयुद्ध और निःशस्त्रीकरण की होड़ के संदर्भ में गुट-निरपेक्ष देशों की भूमिका पहले से ज्यादा अहम हो गयी है। नयी दिल्ली में आयोजित गुट-निरपेक्ष सम्मेलन के अवसर पर विशेष लेख—

सन १९८१ में दि
में आयोजित गु
निरपेक्ष राष्ट्रों के
विदेशमंत्री सम्मे
में श्रीमती गांधी

गुट-निरपेक्ष देशों का सातवां सम्मेलन देखें क्या होता है?

• माधुरी निगम
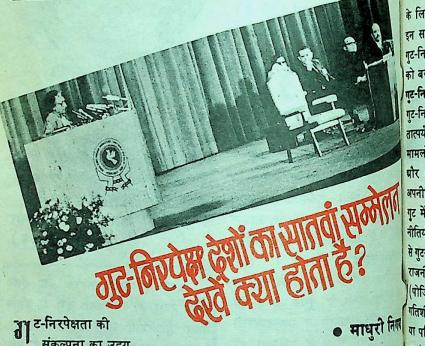
गुट-निरपेक्षता की संकल्पना का उदय

सन १९४०-५० के दशक में, विश्व में दो बड़ी शक्तियों के ध्रुवण के फलस्वरूप हुआ। द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व में दो बड़ी शक्तियां उभरकर सामने आयीं—अमरीका और सोवियत रूस। ये दोनों देश एक दूसरे के लिए, साथ ही विश्व के लिए भी चुनौती बन गये। इनमें परस्पर शीतयुद्ध की लहर फैलने लगी।

इस समय द्वितीय विश्वयुद्ध के फलस्वरू संपूर्ण विश्व के छोटे राष्ट्रों में आर्थि संकट फैला हुआ था। साम्राज्यवादी उ निवेशों में उपनिवेशवाद के विरुद्ध प्रति क्रिया आरंभ हो चुकी थी। सन १९ में भारत स्वतंत्र हो गया था तथा एशि अफरीका और कैरिबिया के राष्ट्र भी ही उपनिवेशवाद के जाल से बाहर

गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के विदेश-मंत्रियों के सम्मेलन का प्रतीक चिह्न

के लिए कसमसा रहे थे। अतः इन सभी विकासशील देशों में गुट-निरपेक्षता की संकल्पना को बल मिला।

गुट-निरपेक्षता क्या है?

गुट-निरपेक्षता से तात्पर्य है अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी स्वतंत्र नीति और कार्यक्रम जारी रखना तथा अपनी निजी नीतियों पर चलना। किसी गुट में शामिल होने का अर्थ होगा, उसकी नीतियों को स्वीकारना। नेहरूजी के विचार से गुट-निरपेक्षता या निर्गुट राष्ट्र एक ऐसी राजनीति का प्रचार-प्रसार है, जो सक्रिय (पोजिटिव) सुनिश्चित (डेफिनिट) और गतिशील (डाइनेमिक) है। यह नकारात्मक या परिवर्तनहीन नहीं। यह केवल आदर्श या 'यूटोपियन' भी नहीं होता है।

भारत की देन

भारत गुट-निरपेक्ष आंदोलन के संस्थापकों में से एक है। यहीं इस संकल्पना का जन्म हुआ। स्वतंत्र होने के पूर्व ही, सितम्बर, १९४६ को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सर्वप्रथम गुट-निरपेक्ष नीति का बीज बोया। उन्होंने कहा कि गुलाम होते हुए भी हम विश्व के निवासी हैं और हमें अपने हित में संगठित होने का अधिकार है। उनका प्रस्ताव था कि जहां तक संभव हो, हम एक-दूसरे के विरोधी गुटों की राजनीति से दूर रहें। अतीत में इन्हीं के कारण विश्वयुद्ध हुआ था। नेहरूजी के इस प्रस्ताव से स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश-नीति की घोषणा करने के पूर्व उन्होंने अमरीका और रूस के मध्य प्रच्छन्न शीतयुद्ध को भांप लिया था। वे किसी विशेष सिद्धांत का प्रतिपादन करना नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि भारत सभी सिद्धांतों के प्रति अपनी आंखें और कान खुले रखे, ताकि किसी छोर की हवा उसके पैरों को उखाड़ न
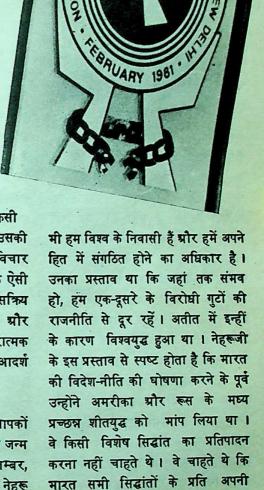
जवाहरलाल नेहरू

सके। सन १९४९ में उन्होंने अपनी नीति निर्धारित की। सन १९५५ में उन्होंने सुझाव दिया कि हमारी विचार-धारा समाजवाद अथवा समाजवाद-विरोधी जिहाद में कहीं भी ठीक नहीं बैठती। उनके विचार से जो केवल समाज-वाद अथवा समाजवाद के विरोध में ही सोचते हैं, वे बुरी तरह से भटक सकते हैं और कभी अपने लक्ष्य पर नहीं पहुंच सकेंगे। विश्व में रहने और सोचने के विभिन्न तरीके हैं, उन्होंने सह अस्तित्व और राजनीतिक शांति पर बल दिया।

तृतीय महायुद्ध विश्व-जीवन के लिए कितना घातक और भयंकर होगा, उसकी कल्पना मात्र ही भयावनी थी। इसीलिए उन्होंने भारत को किसी गुट में शामिल न होने की सलाह दी। उनके विचार से भारत किसी गुट में न रहकर अन्य गुटों के मध्य संभावित संघर्षों को दूर कर मैत्री और शांति बनाये रखने में सहायक होगा। उनके विचार से न्यूक्लियर (परमा[illegible] युग में केवल ऐसी ही नीति [illegible] होनी चाहिए। यह राष्ट्र और [illegible] समुदाय दोनों के लिए हितकर [illegible] होगी।

गुट-निरपेक्ष सम्मेलन एक [illegible] गुट-निरपेक्ष देशों का पहला शिखर सम्मे-लन सन १९६१ में बेलग्रेड में हुआ था। इसमें २५ देशों ने भाग लिया था। मार्शल टीटो, नेहरू, नासिर, एनक्रुमा, [illegible] सुकार्णो इसमें उपस्थित थे। यह सम्मेलन मानव-इतिहास के अत्यंत ही नाजुक [illegible] में हुआ था। इस सम्मेलन के प्रमुख निष्कर्ष थे —विभिन्न आर्थिक और सामाजिक प्रणालियोंवाले राष्ट्रों में परस्पर शांतिमय सहजीवन और सह-अस्तित्व की परम आवश्यकता—जिससे शीतयुद्ध, परस्पर युद्ध और संघर्ष से बचा जा सके। सम्मेलन में यह समझा गया कि साम्राज्यवाद की जड़ें कमजोर हो रही हैं और एशिया, अफरीका तथा लेटिन अमरीका में उपनिवेशवाद धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है। इसमें विचार किया गया कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा इनकी भौतिक और सांस्कृतिक प्रणालियों की उन्नति की जाए।

द्वितीय सम्मेलन सन १९६४ में काहिरा में हुआ। इन दो सम्मेलनों के बीच के समय में दो महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटित हुईं। सन १९६३ में अणु परीक्षण पर आंशिक प्रतिबंध लगाया गया, जिससे

दोनों महाशक्तियों के संबंधों में कुछ स्थिरता और शांति स्थापित हुई। दूसरे, सन १९६२ में भारत-चीन-संघर्ष से सदस्यों को चिंता और निराशा हुई। फिर भी भारत ने अपनी इस निजी समस्या से शिखर सम्मेलन की कार्यवाही में किसी प्रकार का गतिरोध नहीं आने दिया और सम्मेलन की कार्यवाही सफल रूप में संपन्न हुई। इसमें भारतीय प्रतिनिधि-मंडल का प्रतिनिधित्व श्री लालबहादुर शास्त्री ने किया।

हुआ। उन्होंने समस्त गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों का आह्वान किया कि वे संगठित होकर अधूरे आर्थिक और राजनीतिक आंदोलन को पूरा करें। सम्मेलन ने इस घोषणा को स्वीकृत कर आर्थिक सहयोग और समन्वय की भावना को विशिष्टता प्रदान की।

लुसाका सम्मेलन के बाद अंतर्राष्ट्रीय मंच पर बहुत से नये परिवर्तन हुए। पूर्व-पश्चिम के वैमनस्य में उपशमन हुआ और महाशक्तियों के मध्य का तनाव कम हुआ। इस बीच रूस और चीन के

टीटो नासिर सुकार्णो एवं सादात

सम्मेलन की तीसरी बैठक सितम्बर १९७० में लुसाका में हुई। इसमें भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन मूलभूत समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया, जिनसे आंदोलन की प्रगति में बाधा पहुंचती है। उन्होंने आंदोलन को नये रूप में प्रोत्साहित किया। उनका विचार था कि महाशक्तियों ने गुट-निरपेक्ष भावना को भी मान्यता नहीं दी और न विश्व से उपनिवेशवाद अथवा रंग-भेद (जाति-वर्ग-भेद) ही दूर

बीच संघर्ष आरंभ हुआ और चीन तथा अमरीका में समझौता होने से विश्व-संबंधों और गुट-निरपेक्ष आंदोलन पर प्रभाव पड़ा।

सम्मेलन की चौथी बैठक अल्जीयर्स में हुई। इसमें ७४ सदस्यों, एक दर्जन से अधिक प्रेक्षकों और ३ यूरोपीय अतिथि देशों ने भाग लिया। इसमें विकसित धनी देशों तथा विकासशील निर्धन देशों के आर्थिक असंतुलन को ठीक करने पर पुनः जोर दिया गया। इस सम्मे-

लन में पहली बार राष्ट्रों के प्राकृतिक साधनों तथा कच्चे भौतिक पदार्थों के राष्ट्रीयकरण के अधिकार का समर्थन किया गया और बहुदेशीय निगमों के क्रियाकलापों पर आक्षेप किया गया।

तीन वर्ष बाद सन १९७६ में पांचवां गुट-निरपेक्ष सम्मेलन कोलम्बो में हुआ। यहां भी श्रीमती इंदिरा गांधी ने शांति के निरंतर विस्तृत होनेवाले क्षेत्र में गुट-निरपेक्ष राजनय की बदलती भूमिका पर बल दिया।

सितम्बर, १९७९ में नयी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की खोज में हवाना में छठवां सम्मेलन हुआ। इसमें विकासशील देशों के सामूहिक रूप में स्वावलंबी बनने और आर्थिक संकटों को दूर करने की मूल संकल्पना का समर्थन किया गया।

सातवां गुट-निरपेक्ष सम्मेलन मूलतः गत सितम्बर बगदाद में होना था। इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने इसके लिए पूरी तरह तैयारी भी की थी, परंतु ईरान-इराक युद्ध ने यह संभव न होने दिया। अंततः गुट-निरपेक्ष देशों के समन्वय ब्यूरो ने तय किया कि सातवां गुट-निरपेक्ष सम्मेलन दिल्ली में हो। सम्मेलन का अध्यक्ष मेजबान देश होता है; अतः भारत इसका अध्यक्ष है और अगले तीन वर्षों तक अध्यक्ष बना रहेगा।

समस्याओं के घेरे में

आज इस आंदोलन का स्थान और भी महत्त्वपूर्ण है। महाशक्तियों की सैनिक शक्ति और अस्त्रों के भंडार और विराट हो गये हैं। हिंद महासागर ... पश्चिमी देशों की स्थिति ज्वलंत ज्वाला-मुखी बनी हुई है।

ईरान और इराक की लड़ाई पिछले तीन वर्षों से चल रही है इसी प्रकार फिलिस्तीन की समस्या का हल खोजना है, साइप्रस की समस्याओं को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

अफगानिस्तान से सोवियत सेना की वापसी पर भी सभी देश एकमत नहीं हैं! दक्षिण अफरीका में नामीबिया की स्थिति भी दुःखमय है, यह दक्षिण अफरीका की रंग भेद पर आधारित है।

हिंद महासागर की स्थिति विस्फोटक है। यह महाशक्तियों की स्पर्धा का क्षेत्र बना हुआ है।

दक्षिण पूर्व एशिया में कम्पूचिया की समस्या के बारे में दिल्ली में पहले ही घोषित किया गया था कि इसका पूर्ण राजनीतिक समाधान होना चाहिए और विदेशी सेनाओं को वहां से शीघ्रातिशीघ्र हटा लेना चाहिए। यहां अब फिर से कम्पूचिया का स्थान खाली रखने की आग भड़क उठी है।

देखना यह है कि इस सातवें सम्मेलन में गुट-निरपेक्ष देश कितना योग देते हैं और सफलता का कितना श्रेय भारत को मिलने जा रहा है।

—४०६, एशिया हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली

फ्रांसीसी कहानी

आतंक

• चार्ल्स लुई फिलिप

वह एक बड़ा ही भयानक हादसा था। ज्युरिख में हेनरी लेटिंग को पहुंचे, ज्यादा समय ही नहीं हुआ था कि उसे इस हादसे का सामना करना पड़ा।

हेनरी लेटिंग शाम की गाड़ी से ज्युरिख आया था। टैक्सी द्वारा वह अपने होटल पहुच गया। यह एक आरामदेह होटल था और उसकी सिफारिश गाइड-पुस्तकों ने भी की थी। हेनरी ने भोजन किया और यात्रा की थकान मिटाने के लिए कमरे में जाकर लेट गया।

हेनरी लेटिंग ज्युरिख देखने आया था। यहां पहुंचने के पहले नगर देखने को वह काफी उत्सुक भी था, परंतु किसी नगर में आगमन की संध्या को यात्रियों की ललक कुछ कुंठित हो जाती है। नगर देखने का उत्साह कुछ ठंडा पड़ जाता है। यह भी हो सकता है कि उनके पास समय काफी होने के कारण वे आराम करना पसंद करते हैं, बस; नगर से केवल यह अपेक्षा रखते हुए कि वह बना रहे। हेनरी लेटिंग की भी मनःस्थिति कुछ ऐसी ही थी। वह अपने होटल के कमरे में पलंग पर लेटा हुआ था। उसने अपने सिगरेट केस से एक सिगरेट निकाला। यह सिगरेट वह ज्युरिख में पीने जा रहा था, यही उसके लिए पर्याप्त था। सांत्वना का यही भाव लिये, उसने सिगरेट केस पलंग के पास पड़ी छोटी टेबल पर रख दिया।

सिगरेट जलाकर उसने अभी तीली फेंकी ही थी कि वह दुश्चिंता या सतर्कता से ग्रस्त हो गया। क्या यह जलती तीली दरी पर गिरकर आग नहीं भड़का देगी? हेनरी लेटिंग नीचे की ओर झुका, वास्तव में तीली अभी बुझी नहीं थी। वह उसे पैर-तले कुचलने के लिए उठने और स्लीपर पहनने का उपक्रम कर ही रहा

था कि अकस्मात, क्रूर परिस्थितिवश, उसके लिए तीली बुझाना जरूरी नहीं रहा।

सर्वथा स्पष्ट, सभी चार अंगुलियां और अंगूठा, इकट्ठे एक साथ लिये हुए, एक हाथ, जो पलंग के नीचे छुपा हुआ था, निकला, उठा, नीचे आया, उसने तीली को दबाया और लौ को बुझा दिया।

शुरू में हमारा दिमाग केवल आंखों-देखी घटना को ही समझता है। पहला विचार जो हेनरी लेटिंग को आया, वह उसी क्रिया से संबंधित था, जो अभी-अभी उसकी आंखों के सामने संपन्न हुई थी। 'जब तुम अपना हाथ किसी जलते हुए पदार्थ पर रखते हो, तो जलने का खतरा मोल लेते हो। इस हाथ के मालिक ने खतरे से बचने की क्या तरकीब की होगी?' हेनरी लेटिंग ने अपने आप से पूछा, फिर स्वयं उत्तर भी दे लिया, 'निश्चित रूप से इस आदमी ने अपनी अंगुलियां अपनी लार से गीली की होंगी।'

सहसा उसे ध्यान आया, मेरे पलंग के नीचे कोई आदमी है!

तब धीरे-धीरे, शब्दशः, उसे विचार आया—

'वह इस प्रतीक्षा में है कि मुझे नींद आ जाए और वह मेरी हत्या कर डाले और मुझे लूट ले।'

जब उसने इस विचार के शब्दों से प्रत्येक को समझ लिया, तौल लिया, एक प्रकार से छूकर देख लिया, तो हेनरी लेटिंग के दिमाग में कोई विचार आ ही नहीं सका। उसके

विचारों का स्थान एक भयानक मौन ने ले लिया, जो कमरे में अचानक प्रविष्ट होकर, वहां व्याप्त हो गया और कमरे का, उस आदमी से भी अपेक्षाकृत अधिक भयानक अंग बन गया, जो पलंग के नीचे उपयुक्त समय की प्रतीक्षा में था । इस भयानक मौन का आघात हेनरी लेटिंग पर ऐसा हुआ, मानो उसके सिर पर चोट पड़ी हो । वह जैसे एक लंबी नींद से जगा । उसे एक ऐसी बात याद आयी, जो वह एक लंबे अरसे से भूला हुआ था। उसने अपने-आप से कहा, 'ओह हां, वह समय आ गया है। मैं भूल गया था कि मुझे किसी दिन अवश्य मरना है ।'

और जब उसने अपना थूक निगला, तो उसके घृणास्पद स्वाद से उसे आश्चर्य हुआ, ऐसा स्वाद, जो उसे लगा कि हमेशा-हमेशा उसके गले में रहेगा ।

'आज रात मेरी हत्या की जानी है !' उसने आतंकित होकर सोचा ।

ऐसा लग रहा था, जैसे उसकी ग्रास-नली में स्वयं उसके शव का स्वाद हो । वह उसे सहन नहीं कर सका । भयभीत मनः स्थिति लिये हुए वह कमरे की प्रत्येक वस्तु गौर से देखने लगा। एक तरह से वह उनकी गिनती करने लगा।

भयंकर निराशा द्वारा मृत्यु की अटलता के विचार का स्थान लिये जाने में पूरे दस मिनट लगे । वह सोच रहा था, 'हे प्रभु ! मुझ पर यह क्यों बीत रही है ? इस क्षण ज्युरिख में क्यों आया ।' उसके मन में तरह-तरह के ख्याल आ रहे थे। वह इसी कमरे में आया ? वह पासवाले कमरे में हो सकता था । सौ बात की एक बात, पलंग पर लेटने से पहले उसके नीचे झांककर देख लेने की बात उसने क्यों नहीं सोची ?

'ओह ! मैंने ही गजब की गड़बड़ की है ।' उसने अपने-आप से कहा ।

उसने अपने-आप से यथा-संभव संघर्ष किया । सर्वप्रथम, अपने बचाव के लिए केवल वही उदास विचार उसके सामने आये, जो उस मनुष्य के मस्तिष्क में आते हैं, जो भ्रांतिवश मारा जानेवाला हो ।

'पर मैंने कुछ भी नहीं किया है, वह अपने-आप से चिल्लाकर कहना चाहता था, क्योंकि मृत्यु का विचार हमारे मन में अनिवार्यतया दंड की भावना से जुड़ा होता है ।

नहीं, उसने कुछ नहीं किया था। वह निर्दोष था। उसे अपनी नितांत निर्दोषिता का पूरा अहसास हुआ। वह एक बहुत अच्छा आदमी था। इस कदर अच्छा था कि वह उस डाकू से भी नाराज नहीं था, जो उसके पलंग के नीचे छिपा हुआ, उसे इतना बड़ा भारी नुकसान पहुंचाना

चाहता था। हां, वह उससे नाराज हो सकता था। परंतु निश्चय ही, वह आदमी उसे नहीं जानता था। वह उससे चिल्ला-कर कहना चाहता था, 'यह मैं हूं, हेनरी लेटिंग, जिसकी तुम हत्या करने जा रहे हो। तुम एक गलती कर रहे हो, कोई मेरे-जैसे व्यक्तियों को नहीं मारता।'

वह उसका मित्र बन सकता था। यह धन का अभाव ही है; जिसके कारण लोग अपराध का पेशा अपनाते हैं। हेनरी लेटिंग के पास धन था।

'सुनो! मैं जानता हूं कि तुम मेरे पलंग के नीचे हो। मुझे कोई नुकसान मत पहुंचाओ और मैं तुम्हें सब-कुछ दे दूंगा, जो मेरे पास है। मैं तुम्हें ज्यादा भी दे दूंगा। तुम नहीं जानते, मैं कौन हूं? तुम यह भी नहीं जानते कि मेरी क्षमता क्या है? यदि जो कुछ मेरे पास है, वह तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं है, तो देखो, मैं तुम्हें वचन देता हूं, मैं वापस पेरिस जाऊंगा और एक बार वहां पहुंचने पर, मैं तुम्हें कोई भी रकम, जो तुम तय करना चाहो भेज दूंगा।'

हेनरी लेटिंग को उससे नाराज होने का कतई साहस नहीं हुआ, इस भय से कि कहीं उसका गुस्सा उफन न पड़े। वह उसके प्रति कृतज्ञ भी था कि उसने कोई शोर नहीं मचाया था और तीली पर हाथ की निःशब्द गति द्वारा ही उसका ध्यान आकर्षित किया था।

परंतु शीघ्र ही कुछ ऐसा घटित हुआ, जिसे घटना कहा जा सकता है। आशा के प्रतिकूल एक आकस्मिक, हत कोमल करुणा की भावना उसके घिर आयी।

उस भावना ने उसे गले से उसके मुंह में प्रविष्ट हो गयी, लेटिंग ने उसका प्रवाहित होना किया, वह उससे पूरित हो गया। नहीं जान पाया कि उसका उद्रेक हुआ? वह करीब-करीब चिल्ला पड़ा, 'हे प्रभु! मैं बच गया!'

उसने पर्याप्त समय लिया उसे निश्चित रूप से सफलता मिले, हर छोटी बात को नियमित किया; वह सही स्थान निश्चित किया, वह अपने पैर रखेगा। उसने अपने से यह भी कहा कि वह अपने पलंग की की मूठ पर अपना बायां हाथ रखे हर चीज तैयार थी, भय की कोई नहीं थी।

हेनरी लेटिंग बैठ गया और सबसे पहले ऐसे लोगों की नकल की, अकेला होने पर जोर से बतियाने के होते हैं।

वह निश्चय ही अपने-आप से परंतु मुख्यतया इस रीति से कि वह सब व्यक्तियों द्वारा आसानी से सुना सके, जो उसके कमरे में छिपे हुए

उसने कहा, "मैं भी कैसा मूर्ख हूं मुझे विश्वास है कि मैं बाहर जाकर हूं और अपनी ताली दरवाजे

छोड़ आया हूं।"

वह उठ खड़ा हुआ। कोई भी उसके गले की ओर नहीं लपका। दूसरा आदमी निस्संदेह अपने-आप से खुश हो रहा होगा कि जान बची।

हेनरी लेटिंग ने जल्दी नहीं की, ताकि उसकी गतिविधि की ओर ध्यान आकर्षित न हो।

फिर वह सावधानी से दरवाजे तक गया। उसे खोला। फिर चिल्ला उठा, "बचाओ! मार डालेगा! आओ! जल्दी दौड़ो!"

इसके पहले कि वह चिल्लाना बंद करे, दस आदमी उसको घेरकर खड़े हो गये। वह आवश्यकता से अधिक ही चिल्लाया था।

उन्होंने उस आदमी को पलंग के नीचे पाया। उन्हें उसे खीचकर निकालना पड़ा, क्योंकि उसने उनके प्रयत्नों को सरल बनाने के लिए कोई हरकत नहीं कीं। उसका मुंह पीला पड़ गया था, पर उसकी आंखों में चमक थी।

उस समय होटल में मौजूद महिलाओं ने उसे पीटा।

उस होटल के मालिक ने उसे पहले कभी नहीं देखा था। पुलिसवालों ने उसके हथकड़ी लगा दी। जब उसे जेल की ओर ले जाया जा रहा था, तब प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षित होने के बावजूद कांप रहा था।

—रूपांतरकार: सत्यनारायण पुरोहित

दीपिकाएं

आंसू

हजार पीड़ाओं की
अभिव्यक्ति!
आंसू की
एक
बूंद!

—मिथिलेश्वर वैष्णव

नारी

नारी
धरती-सा फर्ज निभाती है
और अपने अंक में
समुद्र-जैसी विशाल ममता को समेटे
आकाश हो जाती है

मृगतृष्णा

सुख की कल्पना
इंद्र-धनुष के रंगों-जैसी
मृगतृष्णा

—प्रेमकिशोर 'पटाखा'

समझ

मैं
पत्थर की पूजा
इसलिए कर रहा हूं
कि
आदमी को
नहीं समझ पा रहा हूं

—मदन देवड़ा
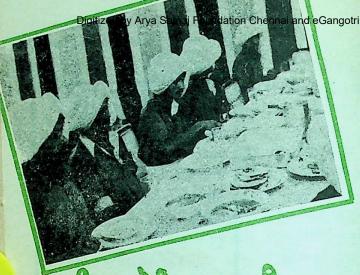
विश्राम की ... भोजन-कक्ष में ... प्रदेश के भील...

तंबुओं का गूंजता शहर

• रजनी मा...

उस दिन ठंड अपेक्षाकृत कम थी। रिज रोड का वीरान और जंगली इलाका ढोल, मजीरों और स्त्री-पुरुषों के स्वर से-जैसे सोते से जाग गया था। अलग-अलग टेंट और फिर उनमें रहनेवाले लोगों के लिए सभी तरह की व्यवस्... आखिर दूरदराज जंगलों से और रा... से जो भी स्त्री-पुरुष आये थे, राजधानी...

नृत्य में मग्न लक्ष द्वीप के नर्तक

लक्ष द्वीप की ताना लि...

मेहमान थे। उनके बिना भारतीय गण-राज्य का महिमा-मंडित समारोह बेजान रहता है। आंध्र से लेकर मणिपुर और नागालैंड के गहनतम क्षेत्रों से आये इन आदिवासियों को अपने देश की राजधानी का वैभव देखने को मिल जाता है। लगभग छह सौ स्त्री-पुरुष और फिर उनकी लगभग पंद्रह दिन तक व्यवस्था, कोई साधारण बात नहीं है।

टेंटों के बीच से गुजरते हुए हम मिले भानुशंकर गहलोत से, जो एक मिडिल स्कूल में हेड मास्टर हैं। उनके साथ भील आदिवासियों का एक दल आया है। यह दल धार के पास गडगोरी गांव का है, यह गांव धार से इक्यानवे किलोमीटर दूर है। गिलेट के गहने पहने और रंग-बिरंगे कपड़ों में सजी भील स्त्रियां उतनी ही मजबूत और ताकतवर थीं, जितने पुरुष! हमने नाच का नाम लिया नहीं कि वे ढोल लेकर बाहर निकल आये और नाचने लगे।

उन्हें यहां सोने के लिए पलंग, ओढ़ने को रजाई-कंबल व हीटर दिये गये थे। यह सब उनके लिए एक सपना नहीं, तो क्या है? इन आदिवासियों ने जब गणतंत्र दिवस पर मागेरिया नृत्य प्रस्तुत किया, तो सचमुच दर्शक देखते ही रह गये थे। वैसे भी भीलों की दुनिया की अपनी सभ्यता है और अपने किस्से हैं।

बोली—'महल', लिपि—'ताना'

इस बार लक्ष-द्वीप से भी एक दल आया था। लक्ष द्वीप में छोटे-छोटे सत्ताइस द्वीप हैं, जिनमें केवल दस द्वीपों में लोग रहते हैं। बाकी खेती के काम आते हैं। सारे द्वीपों को मिलाकर केवल बत्तीस किलो-मीटर का क्षेत्र बनता है। यह दल मिनी-क्वाय द्वीप का है और खेरी जाति के चौदह पुरुष इसमें आये थे। इन्होंने रंग-बिरंगी टोपियों, लाल रंग के पाजामे और रंगीन ढोलकों के साथ 'लावा' नृत्य प्रस्तुत किया।

मणिपुर की लोक नर्तकी

पारंपरिक वेशभूषा में मणिपुर के नर्तक-नर्तकी

इनके नेता थे मोहम्मद कोया, जो पहली बार दिल्ली आये हैं। उन्होंने बताया कि लक्ष द्वीप की बोली को 'महल' कहते हैं और उर्दू-जैसी लिपि को 'ताना' कहा जाता है। 'ताना' केवल हाथ से लिखी जाती है, इसलिए किसी भी विषय की किताब एक ही होती है। छपाई की कोई व्यवस्था वहां है नहीं। श्री कोया ने बताया कि लक्ष-द्वीप में केवल मुसलमान रहते हैं। उनमें 'कोया' उच्च श्रेणी, 'मालमी' मध्यम श्रेणी और 'मेलाचारी' निम्न-श्रेणी के लोग हैं। हर गांव में एक सामूहिक घर होता है, जहां सामाजिक संस्कार और सभाएं की जाती हैं। इन घरों को 'बयामिद' कहते हैं। पूरे द्वीप की आबादी केवल ४०,२३७ है। अधिकांश लोग मछुएं हैं और पुरुषों से स्त्रियों की संख्या अधिक है। लावा नृत्य विशेष अवसरों पर, जैसे ईद आदि में, प्रस्तुत किया जाता है। खुले मैदान में गोल चक्कर में नाचते हुए इन रंग-बिरंगे आदमियों को देखकर, मा माहौल ही बदल गया।

नाचने लगा सारा मै

दादर और नागर हवेली के नर्तकों के अपनी बहार थी, नाच का नाम था ' और थाली', दौड़िया जाति के आदि-वासियों में स्त्री और पुरुष दोनों भाग ले हैं। एक तरफ एक आदमी दुल्हन को गरदन पर बैठाये खड़ा है, दूसरी ओर दूसरा आदमी दूल्हे को बैठाये खड़ा है। औरतें, मराठी औरतों की तरह लांगदा साड़ी पहने, आदमी ढोल और पीतल की परात के साथ एक गोले में, कमर के पीछे हाथ फंसाये नाचने लगे, तो प्रतीत हुआ—रवींद्र रंगशाला का सारा मैदान ही उनके साथ नाचने लगा है।

आदिम पुरुष की सच्चा

आदिवासियों की दुनिया विचित्र है। हमारी शहरी सभ्यता से दूर इन भोले-भाले आद-मियों के साथ बातचीत करने पर प

राजस्थान की आदिवासी बालाएं नहीं, कॉलेज की लड़कियां

धार (म. प्र.) की एक भील लोक-नर्तकी

उस पूरे 'नाच-गांव' में असम, केरल, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम, उत्तर प्रदेश और पंजाब के भंगड़ा नाचनेवाले बहादुर, सबसे मिलकर हमारा पूरा दिन बीत गया और हमें पता भी नहीं चला। इनमें आपस में दोस्ती गहरी हो गयी, पत्र कितना लिखते होंगे, हम तो नहीं जानते, लेकिन विदाई के समय इनका फूट-फूटकर रोना और बिछुड़न की बिवाइयों का फटना, इस बात का प्रतीक है कि यह देश कितने ही राज्यों में बटा हो, इसकी आत्मा एक है।

चला कि आदिम पुरुष की सच्चाई क्या रही होगी। आंध्र प्रदेश के आदिवासियों को ही देखिए, ये झटराई पुट्टा गांव के हैं। उनकी जाति है—कोंड कुमारी। उनमें कई लड़कियां और आठ आदमी हैं। विशाखापट्टम से साठ मील दूर बस से जाने के बाद एक मील पैदल चलना पड़ता है। बिजली वहां है नहीं, तब भी जो आदिवासी वहां आये थे, उनमें से कई दसवीं, बारहवीं जमात तक पढ़े थे। कहा जाता है, दक्षिण में हिंदी नहीं बोली जाती। ये धड़ल्ले से हिंदी बोल रहे थे।

जनसंपर्क अधिकारी मेजर बहादुर सिंह के साथ हम उस कैंप में नहीं, बल्कि लगता था, किसी गांव में आ गये हैं, जहां अलग-अलग सड़कें ही नहीं, गलियां भी हैं। सभी पंद्रह राज्यों के आदिवासी वहां एक साथ देखने को जब मिले, तब हर राज्य की अपनी छवि उभरकर सामने आ गयी और तब एक पूरे देश का नक्शा भी जीवंत हो उठा। बहुत बड़ा रसोई घर, जिसमें बाईस रुपये की कीमत का भोजन उन्हें दिया जाता है। उन्हें पहनने को पोशाक भी मिलती है। लौटकर जब ये अपने गांव जाएंगे तो क्या इनका दिमाग चक्कर खाने से बचेगा?

दूल्हे की तैयारी (दादर नगर हवेली)

दादर नगर हवेली के नृत्य-मग्न लोक नर्तक

लोभी का अंत

दो लोमड़ियां—एक बूढ़ी, एक जवान रात को दड़बे में घुसकर मुरगियों को चटकारने लगीं। जवान ने खूब सारी मुरगियों पर पंजा साफ किया। मगर बूढ़ी विचारवान थी, वह कल के लिए भी कुछ बचाये रखना चाहती थी।

जवान सहेली को उपदेश देती हुई बूढ़ी बोली, "बेटी, अनुभव ने मुझे सयानी बनाया है। मैंने बहुत दुनिया देखी है। सारा दड़बा उजाड़ देना ठीक नहीं। यह तो भंडार है, हम रोज आकर अपनी जरूरत का भोजन ले लिया करेंगी।"

ज़वान लोमड़ी ने कहा, "मैं तो आज ही सबको खा जाना चाहती हूं। फिर आठ दिन तक निश्चित होकर सोऊंगी और यहां वापस लौटना मूर्खता की बात भी होगी। दड़बे का मालिक टोह में बैठा होगा और हमें मार डालेगा।"

उनका मतभेद एकदम बुनियादी था। दोनों अपनी मति के अनुसार चलीं। जवान लोमड़ी बुरी तरह भकोसकर अपनी मांद में जा लेटी, जहां पेट फट जाने से मर गयी। बूढ़ी लोमड़ी अगली रात को अपनी आवश्यकता का खाना लेने भंडार पर पहुंची, तो घात में बैठे दड़बे के मालिक ने कुल्हाड़ी के एक ही वार से उसे सीधे परलोक भेज दिया। सच है, जवानी के भोगों की भूख अमिट है, तो बुढ़ापे का लालच अंतहीन है।

प्रस्तुति : राकेश कुमार रूसिया

"संगीता ओ संगीता !"

"अभी आयी, जरा चुनरी तो ले आऊं।" राजस्थान की ये सोलह लड़कियां हैं, जिन्होंने 'घूमर' नृत्य दिखाया, लेकिन निराशा इसलिए हुई कि ये सब लड़कियां कॉलेज में पढ़ती हैं। तो भई ये आदिवासी कहां से हो गयीं? क्या राजस्थान की सरकार को अपने ही राज्य के आदिवासियों का ज्ञान नहीं है? सच पूछिए तो हमें अच्छा नहीं लगा। ये शहरी लड़कियां आखिर शहरी हवाओं से ही तो आक्रांत रहेंगी। यही बात हरियाणा के दल की भी थी। उसमें भी सब पढ़े-लिखे लोग 'धमाल' नाचने के लिए आये थे। अब इन आदमियों और लड़कियों की पढ़ाई का नुकसान नहीं होगा क्या?

उस पूरे 'नाच–गांव' में असम, केरल, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम, उत्तर प्रदेश और पंजाब के भंगड़ा नाचने वाले बहादुर, सबसे मिलकर हमारा पूरा दिन बीत गया और हमें पता भी नहीं चला। इनमें आपस में दोस्ती गहरी हो गयी, पत्र कितना लिखते होंगे, हम तो नहीं जानते लेकिन विदाई के समय इनका फूट-फूटकर रोना और बिछुड़न की बिवाइयों का फटना इस बात का प्रतीक है कि यह देश कितने ही राज्यों में बटा हो, इसकी आत्मा एक है।

—६४१, डबल स्टोरी फ्लैट्स,
नया राजेंद्र नगर, नयी दिल्ली-११००६०

बहुत से व्यक्ति लेटे हुए हैं। किसी के चेहरे पर, किसी के कान पर, किसी के मस्तक पर, किसी के हाथ-पैरों पर तो किसी के घुटनों पर तीन-तीन इंच लंबी सूक्ष्म सूई लगी हैं। चेहरे पर पीड़ा नाम मात्र को भी नहीं।

जी . . .! क्या कहा आपने . . . कहां जादू-टोने की दुनिया में ले आये हमें ? क्या सोचने लगे आप ! यह दृश्य किसी तंत्रशाला का नहीं, अपितु राजधानी स्थित सफदरजंग अस्पताल के एक्यूपंक्चर क्लि-

एक्यूपंक्चर चमत्कार सुइयों का

● **डॉ. यतीश अग्रवाल**

निक का है। एक्यूपंक्चर से अनेक प्रकार के तंत्रिकीय रोग, पेशी-कंकाल रोग, त्वचा-रोग, श्वास-रोग, मानसिक-रोग, हृदय-रोग, सभी रोगों का उपचार होता है, वह भी बिना किसी औषधि के, केवल सुइयों के सहारे।

चीन : एक्यूपंक्चर का जनक

एक्यूपंक्चर का जन्म चीन में ५००० वर्ष पूर्व हुआ। उन दिनों चीन में चिकित्सक की भूमिका पुजारी ही निभाते थे। यह देखा गया कि शरीर के किसी क्षेत्र में तीर या भाला लगने से घायल योद्धा कोई पुरानी लंबी बीमारी से छुटकारा पा लेता था। उदाहरणार्थ योद्धा के पैर

एक प्राचीन कांस्य प्रतिमा, जिस पर 'एक्यूपंक्चर' के लिए उपयोगी बिंदु दर्शाये गये हैं।

एक्यूपंक्चर - ज्ञान का विस्तार ! आस्ट्रिया के डॉक्टरों को एक्यूपंक्चर-चिकित्सा की विधि समझाते हुए चीनी डॉक्टर

सुइयों से दर्द का उपचार। एक्यूपंक्चर ऐसी चिकित्सा-विधि है, जिसका आविष्कार पांच हजार वर्ष पूर्व हुआ था। चीनी विशेषज्ञों की मान्यता है कि इस पद्धति में, ऑपरेशन के बाद रोगी जल्दी सामान्य हो जाता है। भारतीय वैज्ञानिक भी एक्यूपंक्चर के रहस्यों को उजागर करने में प्रयत्नशील हैं।

में घाव होता और वर्षों से चला आ रहा, उसका सिर-दर्द छू-मंतर हो जाता। घुटने के किसी विशेष भाग में तीर चुभता और उसका पुराना जिगर का रोग दूर हो जाता। पुजारी-चिकित्सकों के सम्मुख घायल योद्धाओं के जब बहुत से ऐसे अनुभव आये, तो उनकी जिज्ञासा जगी। उन्होंने अध्ययन किया, तो पाया कि शरीर की सतह पर कहीं तीर के चुभने भर से कोई एक अंग स्वयं ही स्वस्थ हो जाता है। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि रोग का दूर होना इस तथ्य पर निर्भर नहीं कि घाव कितना गहरा है, बल्कि सही स्थान पर सुई का चुभना भर रोग को दूर करने के लिए काफी होता है। इन्हीं अनुभवों की देन है—एक्यूपंक्चर चिकित्सा-पद्धति।

सुइयों का दर्द दवा हो जाता है

प्रारंभ में चिकित्सक-पुजारी रोग के उपचार में पैनी की गयी अस्थियां, नुकीले पत्थर और बांस के टुकड़े उपयोग में लाते थे। हां, उच्च घरानों के व्यक्तियों के लिए यह उपयुक्त नहीं पाये गये। अतः सोने और चांदी की सुइयों का निर्माण किया गया। व्यवहार के दौरान एक और तथ्य भी उभरकर सामने आया। सुई से शरीर के कुछ विशेष बिंदुओं पर केवल इंच के दसवें हिस्से भर बेधने से ही रोग का उपचार किया जा सकता है। और हां, जैसे-जैसे इस पद्धति का विकास हुआ, नुकीले पत्थरों और पैनी की गयी अस्थियों

का स्थान स्टेनलेस की सुइयों ने ले लिया। आजकल भी इन्हीं सुइयों का उपयोग किया जाता है। उपचार के लिए रोगी को पंद्रह मिनट से एक घंटे तक सुइयां लगाकर बैठना पड़ता है। यह क्रिया कई बार दुहरायी जाती है। रोग के उपचार के लिए कितनी "सिटिंग' की आवश्यकता है, यह रोग और उसकी अवस्था पर ही निर्भर करता है।

कितना रहस्यपूर्ण और रोचक है, सुई का त्वचा पर लगना और साथ ही लंबी बीमारी या असाध्य रोग का ठीक हो जाना। वस्तुतः इससे भी अधिक विस्मयजनक हैं, इस पद्धति के पीछे छिपे पुरातन विचार। परंपरागत चीनी विशेषज्ञों के अनुसार हमारे शरीर में निरंतर एक अलौकिक जीवन-शक्ति का प्रवाह बना रहता है। यह जीवन-शक्ति, जिसे पुरातन विशेषज्ञों ने 'ची' की संज्ञा दी है, शरीर की सभी कोशिकाओं, ऊतक अंग और तंत्र में से होकर गुजरती है। इसका प्रवाह त्वचा पर भी है। परंपरागत मत के अनुसार त्वचा का शरीर के सभी अंगों और तंत्रों से सीधा संबंध है। उनका विचार है कि शरीर का स्वस्थ होना 'ची' के प्रवाह पर निर्भर करता है। 'ची' को कहीं जरा-सी भी बाधा मिलने पर प्रभावित अंग अस्वस्थ हो जाता है।

आरोग्य : विरोधी शक्तियों का संतुलन

प्राचीन ग्रंथों में एक और विचार भी प्रस्तुत किया गया है। उसके अनुसार
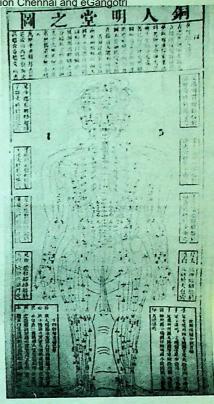
एक्यूपंक्चर से संबंधित, चीन में प्राप्त, एक प्राचीन रेखा-चित्र

हमारे शरीर में 'चीन' और 'येंग' नामक परस्पर दो विरोधी क्रिया-शक्तियों का वास है। हमारा स्वास्थ्य इन दोनों क्रिया-शक्तियों के संतुलन पर निर्भर करता है। एक के क्षीण होने पर दूसरी प्रबल हो जाती है और शरीर में रोग उत्पन्न हो जाता है।

पुरातन विशेषज्ञों के अनुसार शक्ति 'ची' के प्रवाह में अथवा चीन-येंग के संतुलन में अगर कोई विकृति आ जाए, तो

भी उन्हें सामान्य बनाया जा सकता है और रोग से सहज ही छुटकारा पाया जा सकता है। इसके लिए आवश्यकता है केवल त्वचा के कुछ विशेष संतुलन बिंदुओं को सुइयों द्वारा बेधने की। त्वचा पर ऐसे आठ सौ संचालन बिंदुओं का वर्णन चीन के पुरातन ग्रंथों में दिया गया है। इन्हें एक्यूपंक्चर बिंदु कहा जाता है और प्रत्येक बिंदु का किसी न किसी अंग या तंत्र से सीधा संबंध है। आधुनिक वैज्ञानिक एक्यूपंक्चर की क्षमता को स्वीकारते हैं, पर इसका मूल आधार क्या है, उन तथ्यों को ढूंढ़ने में वे प्रयत्नशील हैं।

एक परीक्षण में शरीर की विद्युत-प्रतिरोधकता मापी गयी, तो ज्ञात हुआ कि त्वचा पर ऐसे बहुत से बिंदु हैं, जिनकी वैद्युत प्रतिरोधकता (इलेक्ट्रिकल रेजिस्टेंस) शरीर की सामान्य वैद्युत-प्रतिरोधकता से दस से बीस प्रतिशत कम है। आश्चर्य तो इस बात पर है कि शरीर में ऐसे ८०० बिंदु ही पाये गये और ये परंपरागत एक्यूपंक्चर बिंदु के बिलकुल अनुरूप हैं। लेकिन रोग निवारण में इनकी क्या महत्ता है, यह अभी तक ज्ञात नहीं हो पाया है।

प्रतिरोधक शक्ति से रोग निवारण

आधुनिक वैज्ञानिकों का विचार है कि एक्यूपंक्चर की रोग-निवारण-क्षमता का सीधा संबंध तंत्रिकाओं और धमनियों के ऊपर पड़नेवाले प्रभाव से है। परीक्षणों में पाया गया है कि एक्यूपंक्चर बिंदुओं को क्रियाशील करने पर धमनियों में रक्त का बहाव बढ़ जाता है। साथ ही साथ तंत्रिकाओं में भी कुछ जैविक रसायनों की उत्पत्ति होती है। संभवतः इन परिवर्तनों से ही एक्यूपंक्चर अपना असर दिखाता है। 'कंट्रोल' परीक्षणों में अथवा विपरीत स्थिति में, एक्यूपंक्चर बिंदुओं को सक्रिय करने के बाद जब तंत्रिकाओं को 'लोकल ऐनेस्थेटिक' द्वारा प्रभावहीन बना दिया गया तो पाया गया कि एक्यूपंक्चर अपना पूरा असर नहीं दिखा पाता। तंत्रिकाओं के साथ-साथ कुछ परीक्षणों में अब रक्त-वाहिकाओं को भी बांध दिया गया, तो ज्ञात हुआ कि एक्यूपंक्चर की क्षमता पूर्णतः समाप्त हो गयी। शोध-कार्य से यह जानकारी भी प्राप्त हुई कि एक्यूपंक्चर रक्त की प्रतिरोधक कोशिकाओं (लिंफोसाइट) की मात्रा में वृद्धि करता है। इसी तथ्य से इस विचार का उद्भव भी हुआ है कि संभवतः एक्यूपंक्चर की आश्चर्यजनक रोग निवारण क्षमता शरीर की प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने पर ही आश्रित है।

एक ओर जहां एक्यूपंक्चर के पीछे छिपे रहस्य विवाद के विषय बने हुए हैं, तो दूसरी ओर इसका उपयोग रोग निवारण के क्षेत्र से अलग अन्य क्षेत्र में भी प्रारंभ हो गया है। यह है, संवेदनाहारी (एनीस्थीक्रिया) का क्षेत्र।

रोगी अपने पूरे होशो-हवास में लेटा है। शरीर के कुछ हिस्सों में एक्यूपंक्चर

सुइयां लगी हुई हैं और शल्य-चिकित्सक उसके प्रॉस्टेट, आमाशय, तिल्ली, थायरोएड, लैरिंग्स या नेत्र या मस्तिष्क का ऑपरेशन कर रहे हैं, बिना कोई संवेदनाहारी औषधि दिये।

एक्यूपंक्चर : संवेदनाहारी

आधुनिक संवेदनाहारी औषधियों एवं तरीकों की अपेक्षा एक्यूपंक्चर संवेदनाहारी का अपना विशेष महत्त्व है। इस विधि की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि शल्य-चिकित्सा संपन्न होने के बाद रोगी पर कोई भी पार्श्व प्रभाव नहीं होता। आधुनिक संवेदनाहारी के उपयोग में संभावना यह रहती है कि रोगी का रक्तचाप कम न हो जाए। ऐसा एक्यूपंक्चर के साथ कतई नहीं होता। चीनी विशेषज्ञों की मान्यता है कि इस पद्धति में ऑपरेशन के बाद रोगी जल्दी सामान्य हो जाता है।

हमारे-जैसे विकासशील देश में तो यह प्रणाली संवेदनाहारी के रूप में और भी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि एक्यूपंक्चर संवेदनाहारी के रूप में कैसे उपयोग किया जा सकता है, उसमें ऐसी क्या क्षमता है, जिससे वह रोगी की पीड़ा-संवेदना हरण करने में समर्थ हो जाता है! यह अभी शोध-कार्य का विषय बना हुआ है। हर्ष होगा आपको यह जानकर कि भारतीय वैज्ञानिक भी इन रहस्यों को उजागर करने के प्रयास में पीछे नहीं हैं। नयी दिल्ली स्थित यूनिवर्सिटी कॉलिज ऑव मेडिकल साइंसेज के फिजिऑलॉजी विभाग के प्रोफेसर और देश के विशिष्ट चिकित्सा-वैज्ञानिक डॉ. के. एन. शर्मा और उनके कुछ सहयोगी भी इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। विभिन्न प्रयोगशालाओं में हुए परीक्षणों से एक तथ्य अवश्य ही उभरकर सामने आया है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि एक्यूपंक्चर अपना प्रभाव मस्तिष्क में संवेदनाहारी रसायनों की उत्पत्ति करके दर्शाता है। ये संवेदनाहारी रसायम चिकित्सा-जगत में न्यूरोट्रांसमिटर के नाम से जाने जाते हैं। ये न्यूरोट्रांसमिटर, जिनमें एडो ऑरफीन और 'एनकेफलीन' प्रमुख हैं, एक पीड़ा संवेदनाहारी औषधि मॉरफीन के समान हैं।

सफदरजंग अस्पताल में भी अब विशेषज्ञ डॉ. अभिजीत भट्टाचार्य के अंतर्गत एक्यूपंक्चर का यह रूप प्रयोग लाया जा रहा है। यहां दांत की शल्यक्रिया और नसबंदी के ऑपरेशन में एक्यूपंक्चर प्रणाली संवेदनाहारी के रूप में काफी हद तक सफल हो रही है।

—१८/१०, सी. पी. डब्ल्यू. डी. फ्लेट्स
साकेत, नयी दिल्ली-११००१६

वर्जीनिया (अमरीका) में सन १८२७ में एक ऐसा बालक जन्मा था, जिसके जन्मते समय ही पूरे दांत थे और जब वह १०१ वर्ष की आयु में सन १९२८ में मरा, तब भी उसके वही पूरे के पूरे ३२ दांत मौजूद थे।

नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह

घटिया फिल्में: अव्यवस्था के दायरे

• दुर्गाप्रसाद शुक्ल

पचास से अधिक देशों की लगभग एक सौ पचास फिल्में। प्रतियोगिता वर्ग में चौबीस और लघु चित्र वर्ग में नौ लेकिन इन दोनों वर्गों में किसी भी फिल्म को श्रेष्ठता का पुरस्कार 'स्वर्ण मयूर' नहीं। यह रही, भारत के बहुचर्चित नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह की उपलब्धि। नयी दिल्ली के ऐतिहासिक सिरी फोर्ट-प्रेक्षागृह में तीन जनवरी से सत्रह जनवरी तक आयोजित यह समारोह न तो निर्णायक-मंडल की अपेक्षाओं को पूरा कर सका, न फिल्म-प्रेमियों, समीक्षकों और फिल्म-निर्माण में लगे विविध लोगों को संतुष्ट।

उम्मीदों पर पानी

यह फिल्म-समारोह आम सिने-दर्शक में भी कोई उत्साह जागृत नहीं कर पाया। इसके एक नहीं, अनेक कारण हैं। पहले फिल्म-समारोह में प्रदर्शित फिल्मों का लेखा-जोखा लिया जाए—

तीन से सोलह जनवरी तक, अधिक से अधिक फिल्में देखने की कोशिश में, निहायत भागदौड़ के बाद, जितनी फिल्में हमने देखीं (और काफी देखीं), उसके बाद हमें निराशा-सी हुई। अधिकांश फिल्में मध्यम श्रेणी की थीं। यद्यपि किसी फिल्म की कहानी सशक्त थी, तो किसी का अभिनय-पक्ष प्रबल और कई फिल्में तकनीक की दृष्टि से उत्कृष्ट थीं, तथापि इनमें से कोई भी फिल्म सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार

क्या कारण, है कि नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह में कोई भी फिल्म सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार—'स्वर्ण मयूर'—नहीं प्राप्त कर सकी। क्यों निराशाजनक रहा यह प्रतिष्ठा प्राप्त फिल्म-समारोह।

के उपयुक्त थी, हमें नहीं लगा। और, सत्रह जनवरी को पुरस्कार-घोषणा के समय, हमारी निराशा और निष्कर्ष की पुष्टि की, निर्णायक-मंडल के अध्यक्ष, ब्रिटिश फिल्म निर्माता लिंडसे एंडरसन ने। पुरस्कारों के निर्णय की घोषणा करते हुए उन्होंने कहा, "बड़े खेद के साथ यह कहना पड़ रहा है कि समारोह में प्रदर्शित किसी भी फिल्म में न तो अभिव्यक्ति की सशक्तता थी, न 'थीम', विषय-वस्तु- की महत्ता और न प्रस्तुतिकरण की मौलिकता, फलतः कोई भी फिल्म 'स्वर्ण मयूर' पाने का दावा नहीं कर सकी।"

चयन-प्रक्रिया : पुनर्विचार आवश्यक

भारत में ही नहीं, शायद दुनिया के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोहों के इतिहास में भी शायद यह पहला अवसर था, जब किसी फिल्म को सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार के उपयुक्त नहीं समझा गया।

ऐसा क्यों हुआ ? इस प्रश्न का उत्तर भी लिंडसे एंडरसन ने अपने भाषण में दिया। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता के लिए फिल्मों का चयन करने की पद्धति पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए।

राजनीतिक, आर्थिक और क्रीड़ा के क्षेत्र में 'तीसरे विश्व' को संगठित करने की नीति अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह में भी अपनायी गयी, फलतः तीसरे विश्व की फिल्मों पर ही विशेष जोर दिया गया। यह कोई अनुचित भी नहीं है, लेकिन जैसा कि लिंडसे एंडरसन ने कहा था कि अंतर्राष्ट्रीय समारोह के लिए हीन स्तरवाली फ़िल्मों के चुनाव से तीसरे विश्व की फिल्मों को प्रोत्साहन और समर्थन नहीं मिल सकेगा। एंडरसन का कहना था, "तीसरे विश्व के सिनेमा को 'संरक्षण' देने की आवश्यकता नहीं है। उसे प्रोत्साहन और सहायता देने की जरूरत है। अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में हीन स्तर की फिल्में स्वीकार करने से यह लक्ष्य पूरा

नहीं होगा।"

प्रतियोगिता वर्ग में पहले इक्कीस फिल्में थीं, बाद में तीन और फिल्में जोड़ी गयीं। इनमें सोवियत संघ की 'ओपेन हार्टस', मिस्र की 'बस ड्राइवर', अमरीका की 'आन द् गोल्डन पांड' और 'मिसिंग', इटली की 'द् वॉयस', पश्चिम जरमनी की 'द् मैन ऑन द वॉल', पोलैंड की 'द् क्वेक', श्री लंका की 'द् हंट', सूचना वर्ग में फ्रांस की 'लॉ बोम', जापान की 'लव केन मेक ए रेन बो', वेस्ट इंडीज की 'गर्ल फ्रांम इंडिया', टर्की की विवादास्पद 'योल', लघु चित्र (प्रतियोगिता वर्ग) में चेकोस्लोवाकिया की 'लेब्रेरंथ ऑॅव द् वर्ल्ड', भारत-फ्रांस की 'द् इंडियन मिरर' और भारत की 'फेसेस ऑफ्टर द् स्टॉर्म' एवं 'गिफ्ट ऑॅव लव' कुछ उल्लेखनीय फिल्में थीं।

सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए 'ओपेन हार्टस्' की नायिका मारिना स्टारिख को 'रजत मयूर' दिया गया। नायकों में यह पुरस्कार 'बस ड्राइवर' के नायक नालं एल. शेरिफ को मिला। यों, व्यक्तिगत तौर पर, हमें 'द् क्वेक' के नायक जेर्जी बिस्जेस्की का अभिनय अधिक मर्मस्पर्शी और प्रभावपूर्ण लगा था।

अपेक्षाएं पुरस्कृत

निर्णयक-मंडल ने भारतीय फिल्म 'चोख' को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया। 'चोख' के संबंध में पहले से ही यह चर्चा थी कि उसे कोई न कोई पुरस्कार अवश्य मिलेगा। फिल्म-समारोह में प्रदर्शित फिल्में तीन वर्गों में विभाजित की जा सकती थीं। एक वे, जो शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ थीं। स्वाभाविक था कि ऐसी फिल्मों में हिंसा और सेक्स का भी पुट था। ऐसी फिल्मों में 'अमोक' (मोरक्को), 'इंडिया डॉटर ऑॅव सन' (ब्राजील), 'द् हंट' (श्री लंका), 'ऑल ओवर' (बंगला देश) का उल्लेख किया जा सकता है। दूसरी वे फिल्में थीं जिनमें राजनीति-प्रेरित दमनपूर्ण स्थितियों के प्रति विद्रोह था। इनमें 'सिसेलिया' (क्यूबा), १९२२ (यूनान), 'मैन ऑन

केवल आलोचना ही की जा सकती है।

समारोह के आयोजन की केवल आलोचना ही की जा सकती है। दिल्ली में मुझे जबरन फिल्में देखने का अच्छा अवसर मिलेगा, यही सोचकर मैं यहां आया था। दुर्भाग्य से फिल्मों के चयन का स्तर काफी कमजोर था। यह एक दुखद तथ्य था, मेरे लिए भी और समारोह के लिए भी।

स्पष्ट है कि समारोह के आयोजन के बारे में बुद्धिमत्तापूर्वक नहीं सोचा गया। इसका एक प्रमुख कारण यह था कि किसी ने इस प्रश्न पर विचार ही नहीं किया कि फिल्म-समारोह का स्वरूप कैसा हो? जब कि इस बारे में शुरू में ही स्पष्ट धारणा होनी चाहिए। मुझे बताया गया कि पश्चिमी देश फिल्में ही नहीं भेजेंगे। ऐसा सोचना कोई मायने नहीं रखता। आप यहां बैठे-बैठे कैसे अच्छी फिल्में पा सकते हैं? आपको उनकी खोज करनी पड़ेगी। उनके निर्माताओं को फिल्में भेजने के लिए राजी करना पड़ेगा। और, आज जैसे हालात हैं, यहां फिल्में भेजना कोई मूल्य नहीं रखता।

—लिंडसे एंडरसन,
(अध्यक्ष, निर्णायक-मंडल)

द वॉल' (पश्चिमी जरमनी) शामिल की जा सकती हैं।

कुछ फिल्मों में बदलते जीवन-मूल्यों के कारण टूटते व्यक्तियों की मनःस्थितियों का चित्रण था।

सुपर मैन : समीक्षक

अब फिल्म-समारोह की व्यवस्था के बारे में। फिल्म-समारोह में पत्रकारों और प्रतिनिधियों के लिए सिरी फोर्ट प्रेक्षा-गृह में प्रातः आठ बजे से रात नौ बजे तक फिल्मों के लगातार प्रदर्शन की व्यवस्था थी। इसके अलावा दो अन्य सिनेमागृहों में फिल्में देखने की व्यवस्था थी। मेडिकल इंस्टीट्यूट के आडीटोरियम में १६ एम.

सिरी फोर्ट का ऐतिहासिक महत्व

सन १२९६ में सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के शासक बनने के शीघ्र बाद मुगलों ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को लूटा। अलाउद्दीन की स्थिति इतनी मजबूत नहीं थी कि वह इस आक्रमण का प्रतिरोध कर सकता। वह यह नहीं चाहता था कि दिल्ली को दोबारा लूटा जाए। इसलिए सन १३०४ में उसने सिरी के मैदानी क्षेत्र में परकोटेवाले नगर का निर्माण किया। इस मैदानी क्षेत्र का बहुत सामरिक महत्त्व था, क्योंकि पुरानी दिल्ली की रक्षा करनेवाली सेनाएं यहां ही ठहरती थीं। कुतुब मध्यकालीन भारत की पहली और सिरी फोर्ट दूसरी राजधानी थी।

सिरी कुतुब मीनार के लगभग पांच किलोमीटर उत्तर-पूर्व में है। कई दृष्टि से यह पुरानी दिल्ली का विस्तार ही था। शीघ्र ही इसने परकोटे और सात दरवाजों वाले एक समृद्ध नगर का रूप ले लिया। इसके सभी शाही महलों, भव्य भवनों और बड़े बाजारों में अलाउद्दीन का 'कासरी हजार सत्तार महल' सबसे ज्यादा प्रसिद्ध महल है। अलाउद्दीन के उत्तराधिकारी इस महल में अपने दरबार लगाया करते थे। तुगलक वंश के शासन की स्थापना के बाद सिरी फोर्ट का महत्त्व काफी कम हो गया था और अंततः तैमूर की सेना ने इसे लूटा।

एम. की फिल्में प्रदर्शित की जा रही थीं और मावलंकर हॉल में 'इंडियन पैनोरमा' के अंतर्गत चुनी हुई भारतीय फिल्मों के प्रदर्शन का कार्यक्रम था। समारोह के अधिकारियों ने फिल्म-समीक्षकों को 'सुपर मैन' ही समझा होगा, तभी तो एक अखबार के लिए अहस्तांतरणीय एक 'पास' देकर उन्होंने 'कवरेज' की उम्मीद की थी। यह एक 'दुष्कर कार्य' था, कारण सिरी फोर्ट अपने-आप में शहर से काफी दूर था। यों, बसों की निःशुल्क व्यवस्था थी, पर उनका लाभ लोग उठा पाये होंगे, संदेह है।

हमारा सुझाव है कि भविष्य में ऐसे समारोहों में अलग-अलग स्थानों के लिए हर अखबार को अलग-अलग हस्तांतरणीय 'पास' अखबारों या पत्रिकाओं के नाम से दिये जाएं न कि व्यक्ति-विशेष के नाम से, ताकि सभी फिल्मों की 'कवरेज' हो सके। अभी होता यह है कि प्रतियोगिता वर्ग की फिल्में ही आकर्षण का केंद्र बनी होती है और 'पास' के अभाव में भारतीय और विदेशी सिंहावलोकन की फिल्में वस्तुतः उपेक्षित रह जाती हैं।

उपेक्षा के धब्बे

फिल्म-समारोह में समय-समय, पर प्रेस कांफ्रेंस भी आयोजित की जाती रहीं। ये प्रेस कांफ्रेंस पूरी व्यवस्था पर 'धब्बा' थीं, कारण इनमें पत्रकारों, फिल्म-समीक्षकों को नितांत उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया—एक कप चाय भी उनके लिए नहीं जुटायी जा सकी।

ठिठुरती व्यथा-कथा

इसी तरह सिरी फोर्ट प्रेक्षा-गृह में खान-पान की व्यवस्था भी स्तर के अनुकूल नहीं थी। प्रातः आठ से रात नौ बजे तक वहां रहने के लिए विवश लोगों के लिए यह कैंटीन ही एक मात्र 'शरण-स्थल' थी और वहां उन्हें मिलती थीं ठंडी चीजें! ठंडा मौसम, ठंडा प्रेक्षा-गृह और खान-पान की ठंडी वस्तुएं। आश्चर्य है कि पंद्रह दिनों के मध्य, शिकायतों के बावजूद, इस व्यवस्था में सुधार नहीं किया गया। अनेक लोगों ने हमसे इस आशय की व्यथा-कथा कही।

भारत में पहला फिल्म-समारोह सन १९५२ में हुआ था। लेकिन खेद का विषय है कि अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करने के बाद भी भारतीय फिल्म-समारोह का न तो स्वरूप बन पाया है और न उसके पुरस्कारों को केंस या कारलोवी वेरी के फिल्म-समारोहों-जैसी प्रतिष्ठा मिल पायी है। स्वयं देश के फिल्म-उद्योग का भी इस समारोह को व्यापक समर्थन नहीं मिल पा रहा है। इसके कई कारण हैं। फिल्म-समारोह निदेशालय एवं अन्य सरकारी तथा फिल्म-उद्योग के मध्य तालमेल का अभाव, अपने-अपने अहं, अपनी-अपनी हठवादिता और अफसरशाही का रवैया।

आम सिने-दर्शक इस समारोह से वस्तुतः उदासीन ही रहा। इसके दो कारण थे—एक टिकट-दरों में बढ़ोत्तरी दूसरा-

> **हलवाई डेलीगेट !**
>
> प्रशासकीय दृष्टि से फिल्म-समारोह में बेहद गड़बड़ थी। मैंने वहां हर तरह के ऐसे लोगों को देखा, जिनका समारोह से कोई मतलब नहीं था। प्रतिनिधियों और प्रेस के लिए फिल्मों की स्क्रीनिंग के समय जो लोग मौजूद थे, उनमें अधिकांश सरकारी अधिकारी, उनकी पत्नियां बच्चे और चपरासी थे।.. मैं एक चांदनी चौक के एक ऐसे हलवाई को जानती हूं, जिसके पास डेलीगेट का कार्ड था।
>
> **—शमा जैदी 'संडे आबजर्वर' में**

पर्याप्त प्रचार का अभाव।

विदेशी फिल्म देखने के शौकीनों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है। एक वे, जो कलात्मक दृष्टि से बनी, साफ-सुथरी फिल्म देखना चाहते हैं। दूसरे वे, जो ऐसे फिल्म-समारोहों को 'हॉट'-फिल्में देखने का अच्छा अवसर मानते हैं। इस फिल्म-समारोह के संबंध में इन दोनों प्रकार के दर्शकों की मिश्रित प्रतिक्रिया थी। पहली श्रेणी के दर्शकों को 'ऑन द् गोल्डन पांड' बहुत भायी। इसमें हेनरी फोंडा-जैसे कलाकार थे। इस फिल्म में हेनरी फोंडा का अभिनय मर्मस्पर्शी रहा। इसी तरह 'द् वायस' में 'गोंज्या' (मदर टेरेसा का पुराना नाम) का अभिनय करनेवाली अभिनेत्री मारिसा बेल्ली का अभिनय भी प्रभावपूर्ण था। ●

याम हमेलेक अर्थात मृत सागर, जिसमें मछलियां जीवित नहीं रह पातीं। इस मृत सागर में अनेक खूबियां हैं–जैसे उसमें कोई डूब नहीं सकता। उसमें एक ऐसा शैवाल पाया जाता है, जिससे पेट्रोलियम प्राप्त किया जा सकता है। और भी कुछ खूबियां हैं, मृत सागर में।

मृत सागर : असाध्य रोगों का इलाज

● डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

७५ किलोमीटर लंबे तथा १५ किलोमीटर चौड़े फिलीस्तीन के मशहूर मृत सागर का हिब्रू नाम 'याम हमेलेक' है। इसके पूर्व की तरफ जॉर्डन बसा है और पश्चिम की तरफ इस्रायल।

आम समुद्रों में नमक का परिमाण २ से लेकर ३ प्रतिशत तक ही होता है, जबकि मृत सागर में २७ प्रतिशत या उससे भी अधिक परिमाण में नमक मौजूद है अर्थात इसका पानी साधारण समुद्रों की बनिस्बत नौ से दस गुना खारा है। मृत सागर में मौजूद नमक का कुल परिमाण लगभग ४ करोड़ टन है। मगर एक गागर को मृत सागर के जल से भरकर धूप में छोड़ दिया जाए तो पानी के वाष्प बनकर उड़ जाने के बाद गागर में एक-चौथाई से लेकर एक-तिहाई जितना नमक शेष रह जाएगा। मृत सागर के इस परिमाण में खारे होने की वजह से ही मछलियां और अन्यान्य समुद्री जीव आदि इसमें जिंदा नहीं रह सकते।

मृत सागर के जल का आपेक्षिक घनत्व १.१८ है, अर्थात साधारण पानी के मुकाबले इसका घनत्व १.१८ गुना अधिक है। अतः मनुष्य चाहकर भी इस समुद्र में नहीं डूब सकता लेकिन इस समुद्र में तैरने में भी इतनी ही कठिनाई पेश आती है। पर ऊपर छाता खोलकर और पीठ के बल समुद्र की लहरों पर आराम से लेटकर आदमी चाहे तो किताब मजे से पढ़ सकता है।

अगर एक घोड़े को मृत सागर में छोड़ दिया जाए तो मजेदार दृश्य दिखाई देगा। घोड़ा न तो तैर पाएगा और न ही खड़ा रह सकेगा, बल्कि एक तरफ को लुढ़ककर चित्त हो जाएगा।

मृत सागर में पुस्तक पढ़ते तैराक

नमक पर जिंदा जीवाणु

अमरीकी शोधक डॉक्टर वाल्टर स्टोकेनियस ने मृत सागर के पानी के नमूनों के विश्लेषण से उसमें 'हैलोबैक्टीरियम हैलोबियम' नामक एक सूक्ष्म जीवाणु की खोज की है, जो नमक पर ही जिंदा रहता है। इस सूक्ष्म जीवाणु में बैंगनी रंग का एक पदार्थ होता है, जिसे वर्णक या 'पिगमेंट' कहते हैं। इस पिगमेंट में क्लोरोफिल की तरह ही प्रकाश संश्लेषण यानी सूर्य के प्रकाश को ऊर्जा में परिवर्तित करने का गुण मौजूद होता है। अतएव सूरज से ऊर्जा प्राप्त करने की दिशा में इस सूक्ष्म जीवाणु का अहम योगदान हो सकता है। खारे पानी को मीठे पानी में बदलने में भी इस जीवाणु को काम में लाया जा सकता है।

इस सूक्ष्म जीवाणु में जो बैंगनी रंग का वर्णक होता है, उससे मिलता-जुलता वर्णक मनुष्यों की आंखों में भी पाया जाता है। हाल ही में चिकित्सा-विशेषज्ञों ने मानव दृष्टि संबंधी अनुसंधानों में इस जीवाणु के महत्त्व को स्वीकार किया है।

तलाश तेल की

तेल के कुएं मिलने की आशा में इस्रायली वैज्ञानिकों ने मृत सागर के नीचे ३,६६० मीटर की गहराई तक खुदाई की। तेल तो खैर नहीं मिला, पर भूगर्भ वैज्ञानिकों ने 'डनआयला' नामक एक समुद्री शैवाल को खोज निकाला, जिससे पेट्रोलियम प्राप्त किया जा सकता है। कृत्रिम रूप से तालाब तैयार करके मृत सागर के जल से उसे भरकर, उसमें इस शैवाल की खेती बड़े पैमाने पर हो सकती है। पेट्रोलियम देनेवाले इन शैवालों को उगाने में वैज्ञानिक अभी प्रयत्नशील हैं।

मृत सागर के दक्षिण-पश्चिम तक के पास सेडम नामक अंचल में इस्रायल ने एक संयंत्र की स्थापना की है। इस संयंत्र की मदद से इस्रायल पोटाश, मेंग्नीशियम, ब्रोमीन तथा दूसरे उपयोगी रासायनिक यौगिक बड़ी मात्रा में समुद्र से निष्कर्षित कर रहा है। इसी तरह का एक संयंत्र जॉर्डन भी लगाने की सोच रहा है।

मृत सागर के जल में रोगों को ठीक कर देने की चमत्कारी शक्ति मौजूद है। इस बारे में काफी किंवदंतिया रही हैं। आज भी संसार के कोने-कोने से सैकड़ों की तादाद में लोग इसके जल से अपने रोगों के इलाज के लिए आते हैं। इन मान्यताओं के पीछे कोई वैज्ञानिक आधार है या यह लोगों की कोरी श्रद्धा है, इस बारे में कुछ चिकित्सा-विशेषज्ञों ने अनुसंधान किये हैं। सागर तट की मिट्टी के रासायनिक विश्लेषण से उसमें रेडियोधर्मी बेरियम पाया गया है, जो कई असाध्य रोगों के इलाज के लिए कारगर माना जाता है।

—जे-१८८२, चितरंजन पार्क, कालकाजी, नयी दिल्ली-११००१९

बैनामे की समस्या

हरिओम शंकर, अलीगढ़ : एक व्यक्ति ने अपना खेत बेचने के लिए मेरे साथ रजिस्टर्ड इकरारनामा किया था। खेत की कुल कीमत ७२०० रुपये तय हुई थी, जिसमें से ४५००० रुपये बतौर अग्रिम उसे दे दिया। बैनामा ३० जून, १९८२ तक होना था। मैंने मौखिक रूप से कई बार उस व्यक्ति से बैनामा करने के लिए कहा, लेकिन वह बहानेबाजी करता रहा। अंततः उसने ३० जून, १९८२ को बैनामा करने का वायदा किया। मैं बैनामा के लिए रजिस्ट्रार ऑफिस पहुंचा। परंतु वह नहीं पहुंचा। मैंने लिखित रूप में रजिस्ट्रार के समक्ष उपस्थिति अंकित करायी तथा उस व्यक्ति को रजिस्टर्ड नोटिस दिया कि वह बैनामा करने की तिथि नियत करे। उस व्यक्ति ने उत्तर में कहा है कि इकरारनामा में निर्धारित अवधि समाप्त हो चुकी है, अतः वह न तो बैनामा ही करेगा और न ही अग्रिम धन वापस करेगा। उसने यह भी कहा है कि मैंने उसे बैनामा कराने की कोई लिखित सूचना नहीं दी अतः मुझे बैनामा कराने का कोई अधिकार नहीं है। कृपया बतायें कि क्या कानून द्वारा उसे बैनामा करने के लिए विवश किया जा सकता है?

आपने अपनी तरफ से रजिस्ट्री कराने हेतु हर संभव कदम उठाया। रजिस्ट्रार के कार्यालय में रकम लेकर जाना, बार-बार रजिस्ट्री करवाने का आग्रह करना तथा नोटिस द्वारा अपनी इच्छा प्रदर्शित करना आदि इस दिशा में आपके प्रयासों को प्रमाणित करते हैं। आप न्यायालय में दावा करके दूसरे पक्ष को रजिस्ट्री करने के लिए बाध्य कर सकते हैं। इस दावे में आपके द्वारा भेजा गया नोटिस, रजिस्ट्रार के समक्ष की आपकी उपस्थिति आदि को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

गोद बनाम वसीयत

मीरा, उन्नाव : मेरी सहेली को उसकी बुआ ने जन्म के तुरंत बाद ही गोद ले लिया, लेकिन कानूनी कार्यवाही नहीं

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

को थी। स्कूल फार्म में भी पिता के नाम पर फूफाजी का नाम लिखा गया है। फूफा दो भाई हैं। दूसरे भाई के एक लड़का है। क्या वह उनके बाद अपने-आप ही कानूनी तौर पर संपत्ति की हकदार हो जाएगी या उनसे वसीयत करनी पड़ेगी?

गोद अगर कानूनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती, तो वैध नहीं मानी जा सकेगी और भविष्य में परेशानी उठानी पड़ सकती है। भविष्य की परेशानियों के प्रति समय रहते सचेत होकर कार्य-वाही करना उचित रहेगा। इसके दो विकल्प हैं, एक तो यह कि कानूनी तरीके से गोद की रस्म पूरी करवा ली जाए। दूसरे, संपत्ति की वसीयत करा ली जाए।

प्रेम-विवाह

करका, रायसेन : मैं एक लड़की से दस सालों से प्यार करता हूं। हम दोनों शादी करना चाहते हैं पर लड़की के मां-बाप तैयार नहीं। अतः हमें ऐसी सलाह दें कि उसके मां-बाप तैयार न होने पर भी हम शादी कर लें। हम दोनों बालिग हैं, शादी होने के बाद ही उस लड़की के मां-बाप को मालूम चलना चाहिए अन्यथा वे लड़की को कहीं बाहर भेज सकते हैं। क्या हमारे लिए कोर्ट या पुलिस कोई मदद कर सकती है? लड़की हर कदम, उठाने को सदा तैयार है।

न्यायालय या पुलिस की मदद आप किस लिए चाहते हैं? यदि लड़की के मां-बाप उसे जबरदस्ती कहीं रखें, तब तो पुलिस हस्तक्षेप कर सकती है। यदि आपकी आयु कानूनन पूरी है, तब आप सिविल मैरिज कर सकते हैं। इस प्रकार के विवाह की सूचना प्रकाशित की जाती है तथा निकट रिश्तेदारों को भी सूचित किया जाता है। यदि आप दोनों का निश्चय अडिग है, तब तो आप अपने परिवारवालों को भी समझा सकते हैं।

नाम बदलने का कानून

रामनारायण सिंह, दिल्ली : मेरा नाम मेरे प्रमाणपत्रों एवं कार्यालय में राम नारायण सिंह सुपुत्र श्री राधेलाल अंकित है, परंतु समाज में मैं रामनारायण वर्मा के नाम से जाना जाता हूं। मैंने कोर्ट से एफीडेविट बनवा लिया है कि राम-नारायण सिंह व रामनारायण वर्मा एक ही व्यक्ति है, तथा इस आशय की सूचना अपने कार्यालय को भी दे दी है। कृपया परामर्श दें कि भविष्य में कोई कानूनी अड़चन तो नहीं आएगी?

नाम में शुद्धि या परिवर्तन के लिए न्यायालय में शपथ-पत्र के साथ भारत-रक्षा अधि-नियम के अंतर्गत दिल्ली प्रशासन को भी सूचित किया जाना अनिवार्य है। आपको अपने निर्णय के बारे में एक दैनिक समाचार पत्र में जन-साधारण के सूचनार्थ विज्ञापन भी छपवा देना चाहिए। इसके बाद आपका नाम संशोधित हो सकेगा और भविष्य में कोई परेशानी नहीं आएगी।

सुनवाई में विलंब

प्रो. एच. एल. विश्वकर्मा, जबलपुर : मैं एक निजी महाविद्यालय में प्राध्यापक हूं। नौकरी में बीस वर्ष हो चुके हैं। पिछले वर्ष कुछ षड्यंत्रकारी अधिकारियों ने मुझे प्रश्नपत्रों की गोपनीयता भंग करने के झूठे आरोप में फंसाकर निलंबित करा दिया। सवा साल बीत जाने पर भी अभी तक न्यायालय में इस प्रकरण की सुनवाई-प्रक्रिया प्रारंभ नहीं हुई है। मैं व्यर्थ में ही सताया जा रहा हूं। कृपया बताएं कि इस प्रकरण के शीघ्र निर्णय हेतु मैं क्या करूं?

आपके मामले की सवा साल से सुनवाई न होने के कारण आपकी परेशानी उचित ही है। कानून के अनुसार मामले के अन्वेषण अधिकारी पांच वर्ष तक चालान न्यायालय में पेश कर सकते हैं। जल्दी कराने की व्यवस्था कानून में नहीं है। हां, आप संबंधित अधिकारियों को आवेदन देकर यह प्रार्थना अवश्य कर सकते हैं कि मामले की सुनवाई जल्दी की जाए।

मकान-मालिक और किरायेदार

रवि गोयल, सिलीगुड़ी : हमने १९५४ में एक दुकान किराये पर ली थी। अब मकान-मालिक हमें आधी दुकान अपने लड़के के व्यापार के लिए खाली करने के लिए कह रहा है। पिछले ढ़ाई साल से न तो वह भाड़ा ले रहा है, और न हमने ही रेंट-कंट्रोलर के यहां भाड़ा जमा कराया है। वह कभी-कभी मुकदमा दायर कर दुकान छुड़वा लेने की धमकी देता है। क्या वह ऐसा कर सकता है?

आपको किराया कोर्ट में जमा करा देना चाहिए। 'किराया न देने' की वजह से अदालत से दुकान खाली करवाने के आदेश के लिए कार्यवाही की जा सकती है। ●

भगवान भला करे . . .

एक युवक को, जो पहरे के समय सो गया था, मृत्युदंड मिला, किंतु अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने इस दंड की मंजूरी को रद्द कर दिया था। लिंकन ने कहा, "मैं अपने कपड़ों पर इस युवक के रक्त के धब्बे लेकर परलोक नहीं जाना चाहता।"

"यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि एक लड़का जिसका पालन-पोषण खेतों में हुआ है और जिसे शायद रात पड़ते ही सोने की आदत है, पहरा देते-देते सो गया। ऐसे अपराध के लिए, मैं उसे गोली से मारे जाने की आज्ञा नहीं दे सकता!"

इस लड़के को क्षमा कर दिया गया और वह अपनी सैनिक टुकड़ी में वापस चला गया। एक लड़ाई में वह लड़का मारा गया। मृतकों में उसका शव मिला, तो देखा गया, उसने अपनी छाती पर राष्ट्रपति लिंकन का चित्र लगा रखा है और उस पर ये शब्द लिखे हैं, "भगवान राष्ट्रपति का भला करे!"

—वसंत खेड़ेकर

भटकती आत्मा

रात देर तक पढ़ने की मेरी पुरानी आदत है। एक बार मैंने पढ़ाई खत्म कर बाहर झांका तो मुझे घर के सामने ही एक युवती दिखलायी दी। मैंने तेज आवाज में उससे पूछा, "कौन हैं आप?" मेरे प्रश्न का उत्तर न देकर उसने मुझसे पूछा, "क्या मैं अंदर आ सकती हूं?" मैंने कहा, "आइए, क्या बात करना चाहती हैं?"

वह सहज भाव से आकर बैठ गयी। उसने बताया—"मेरा नाम मधु है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मेरे मामले में दिलचस्पी लेकर मेरी सहायता करेंगे। मेरे पति विलासी प्रकृति के हैं। कल रात उन्होंने संपत्ति के लालच में अपने पिता की हत्या कर डाली है। जब मैंने यह बात कोतवाली तक पहुंचाने को कही, तब उन्होंने मुझे शराब पिलाकर मेरी हत्या कर डाली। आप मेरे पति का यह अपराध पुलिस तक पहुंचा दें। मैं समय-समय पर सारे प्रमाण उपलब्ध करा दूंगी।"

मुझे समझते देर नहीं लगी कि यह प्रेतात्मा है। डर के कारण मैं उसकी पूरी बात समझ नहीं पा रहा था एवं उससे आंख भी नहीं मिला पा रहा था। स्थिति को भांपते हुए युवती बोली, "डरें नहीं, मुझे आपसे क्या लेना है? परंतु जब तक हत्यारे पति को सजा नहीं मिलेगी, मेरी आत्मा इसी प्रकार भटकती रहेगी।"

कुछ ही देर बाद एकदम खामोशी छा गयी। मैंने सिर उठाकर देखा—युवती अदृश्य हो गयी थी।

सुबह मैंने इस घटना का जिक्र अधिकारियों से किया। कुछ ही दिनों में पुलिस ने उक्त अपराधी को धर दबोचा। मुझे उम्मीद थी, वह मुझे 'धन्यवाद' देने अवश्य आएगी, पर वह नहीं आयी।

—सतीश उपाध्याय

श्री गांधी आश्रम; खादी भंडार, मनेन्द्रगढ़; सरगुजा (म. प्र.)

मूर्ति खंडित हो गयी!

गत वर्ष, गरमियों की बात है। मैं नित्य की तरह गणेश-पूजा कर रही थी कि अचानक गणेशजी की पवित्र मूर्ति स्वयंमेव टूट गयी। विलक्षण बात यह हुई कि मूर्ति टूटते ही, मेरा तन-मन आंदोलित व व्याकुल हो गया। घर पर मैं उस समय अकेली थी। घबराहट, आघात तथा अशांति के उन क्षणों में मूर्ति-प्रवाह करने मैं एक निकटस्थ दरिया

पर चली गयी। लगभग उसी समय, पड़ोसी ढूंढ़ते हुए वहां आ पहुंचे।

और, फिर मुझे जीवन का सबसे दुःखद समाचार मिला। मेरा इकलौता विवाहित पुत्र, नानक चंद, आकस्मिक व संक्षिप्त बीमारी के बाद, सदर अस्पताल में प्राण त्याग चुका था। यह मात्र संयोग हो सकता है, परंतु मूर्ति टूटने का दर्द अब भी मुझे है।

—श्रीमती विद्या

द्वारा श्री हरिनाथजी शर्मा, आर. एन. स्ट्रीट, जम्मू—तवी

मृत बहन से वार्तालाप

उन दिनों मैं न्यूयार्क से कलकत्ता अपनी वृद्धा मां से मिलने आया था। एक रात दस बजे मुझे पड़ोसिन ने बुलाया और एक लड़की को संभालने के लिए कहा, जिसे हिस्टीरिया का दौरा-जैसा पड़ा था। कुछ देर बाद मैंने देखा कि लड़की के चेहरे पर शांति छा गयी है और वह मुसकरा रही है। फिर मैंने सुना-जैसे वह किसी से धीरे-धीरे बात कर रही है। घर-परिवार की, इधर-उधर की ढेर सारी बातों के बाद मैंने सुना, वह कह रही थी, 'तुमने क्या कहा? कल तुम रात के दस बजे आओगी। ठीक है, आना।'

जैसे ही बात खतम हुई, मैंने देखा कि एक सफेद परछाईं-सी तेजी से घर से बाहर निकली। मैंने उसका पीछा किया लेकिन वह कुछ दूर जाकर गायब हो गयी। मैं तत्काल लौटा, तो पाया कि लड़की को होश आ गया है।

उसकी मां ने बताया कि उसकी समवयस्क २५-२६ वर्ष की चचेरी बड़ी बहन यहीं रहती थी। दोनों में बहुत ही मेल था। कुछ दिनों पहले बड़ी बहन के सीने में अचानक दर्द उठा, जिससे वह मर गयी। तभी से इसे दौरे पड़ने लगे हैं।

मैंने दूसरे दिन लड़की पर निगाह रखी। जब मैंने उसे यह बताया कि आज रात दस बजे उसकी मरी हुई बहन उससे मिलने आएगी, तब उसे मेरी बात पर विश्वास ही नहीं हुआ। खैर, मैं उसके साथ बैठा बात करता रहा। वह बिलकुल सामान्य थी, लेकिन जैसे ही दस बजे उसे एकाएक दौरा पड़ा। वह बेहोश हो गयी और फिर वार्तालाप चालू हो गया। वार्तालाप के दौरान उसे बताया गया कि अमुक व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार है। (दूसरे दिन पता करने से मालूम हुआ कि वह व्यक्ति वास्तव में गंभीर रूप से बीमार है)।

मैं अभी तक नहीं समझ पा रहा हूं कि किसी मृत व्यक्ति की आत्मा किस तरह बातचीत कर सकती है?

—प्रो. विमल मित्र

—८-नंदनपार्क, बेहला, कलकत्ता

'कादम्बिनी' के इस नये स्तंभ के लिए पाठकों से उनके अपने अद्भुत, अलौकिक किंतु प्रामाणिक, संक्षिप्त अनुभव आमंत्रित हैं। —संपादक

इतिहास के मौन साक्षी: पेड़-पौधे

● डॉ. एस. डी. एन. तिवारी

पेड़-पौधों का इतिहास, मनुष्य के इतिहास से कम रोचक नहीं है। भारत में जिस प्रकार अनेक प्रकार के लोग दूर-दूर देशों से आकर बसे हैं, उस प्रकार कम से कम तीस प्रतिशत पेड़-पौधे इस देश में विदेशी हैं। पेड़-पौधे भी साक्षी देते हैं, इतिहास में वर्णित घटनाओं की !

इतिहास का सामान्य अर्थ मनुष्य के इतिहास से लिया जाता है। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा तक तो यह इतिहास विभिन्न राज्यों, राजाओं और उनके युद्धों तक ही सीमित है। ऐसे बहुत कम इतिहास हैं, जो समय के साथ-साथ लिखे गये हों। सब कुछ घटित हो जाने के बाद ही इतिहास लिखा जाता रहा है। इनमें कुछ अपवाद अवश्य हैं। अधिकांश इतिहास तो तत्कालीन समय के कई वर्षों, यहां तक कि सैकड़ों या हजारों वर्षों, बाद लिखा गया है।

एक ही घटना के संबंध में कभी-कभी विभिन्न इतिहासकारों में मतभेद भी रहता है। कुछ घटनाओं के संबंध में तो यह भी संदेह होता है कि क्या इस प्रकार

की घटनाएं यथार्थ में घटी थीं ? यहां तक, रामायण व महाभारत इत्यादि के संबंध में भी प्रश्न-चिह्न लगाये जाते हैं। डॉ. सांकलिया का मत है कि वर्तमान सीलोन रामायण में वर्णित लंका नहीं है। वह शायद जबलपुर के आसपास रही होगी। उनके अनुसार, उस समय बहुत ही अविकसित लोग रहते थे, अयोध्या से लंका जाना संभव नहीं था। डॉ. सांकलिया ने शिलालेखों, गांवों के नामों इत्यादि की साक्ष्य ली है। लेकिन, गांवों के नामों का क्या भरोसा ? अमरीका के फ्लोरिडा में 'वृंदावन' बसा लिया गया है। वहां पेड़-पौधे भी वृंदावन-जैसे लगाये गये हैं। एक हजार वर्ष बाद पुरातत्त्ववेत्ता यदि उसे ही सही वृंदावन कहें, तो आश्चर्य नहीं।

अमलतास, कहीं पूजा, कहीं तिरस्कार

पृथ्वी पर प्राणियों से भी पहले पेड़-पौधे अवतरित हुए। वे मनुष्य के पोषक व पालनहार आरंभ से ही रहे। वे उसे भोजन ही नहीं, दैनिक उपयोग की अन्य वस्तुएं भी प्रदान करते रहे। वर्षों के अनुसंधान के बाद मनुष्य जान पाया है कि कौन-सा पौधा किस काम में आता है। आज दुनिया बहुत छोटी हो गयी है, फिर भी बहुत से पौधे विश्व के एक हिस्से में बहुत उपयोगी माने जाते हैं, तो दूसरे में नितांत निरुपयोगी ! कहीं-कहीं एक देश में ही एक वृक्ष कहीं पूजा जाता है तो कहीं तिरस्कृत होता है, जैसे अमलतास। इस वृक्ष में गरमी में बहुत सुंदर पीले फूल पानी के झारे की फुहार के समान लटकते हैं। उत्तरी भारत में मान्यता है कि यह वृक्ष झगड़ा कराता है, फलतः लोग उसे घरों में नहीं लगाते। केरल में इस वृक्ष के फल धन-धान्य देनेवाले माने जाते हैं। नये वर्ष की रात में गहनों की पूजा होती है और उन पर अमलतास के फूल चढ़ाये जाते हैं। घर के सब लोग बहुत सुबह पहले इसी फूल के दर्शन करते हैं, ताकि सालभर धन-धान्य आता रहे। स्पष्ट है कि केरल के लोग जहां कहीं भी जाएंगे, पूजा के लिए इन फूलों को ढूंढ़ेंगे एवं इन वृक्षों को लगाएंगे। इसी प्रकार जहां भी दक्षिण भारत के लोग बसे, चंदन, नारियल इत्यादि के वृक्ष साथ में ले गये।

यात्रा वृक्षों की

वृक्ष-जातियों का फैलाव विश्व में महाद्वीपों के टूटने, उनके फैलने और जलवायु में उलटफेर इत्यादि के कारण हुआ। वे भी विश्व के किसी कोने में जन्मे थे और प्राकृतिक तौर से वहां से चारों ओर बढ़े। वनस्पति व भूगोल के सिद्धांतों द्वारा उनके फैलने का मार्ग खोजा गया है। अब यदि कुछ पौधे बिना किसी धारा

या रास्ते के मिलते हैं, तो यह शंका होती है कि उन्हें उस स्थान पर पक्षी, वन्यप्राणी या प्रवासीजन ही लाये होंगे। यदि खोज की जाए, तो उनका स्रोत भी मिल जाता है। यहीं पेड़ की किसी स्थान पर स्थिति मनुष्य के इतिहास से जुड़ जाती है।

इंदौर के पास मांडू में खुरासानी इमली के बड़े बेढब व विचित्र वृक्ष देखने को मिलते हैं। इसका एक वृक्ष लखनऊ में भी मिला है। लोगों ने इसे कल्पवृक्ष की संज्ञा दी है। वनस्पति-शास्त्र के अनुसार यह वृक्ष मध्य अफरीका का वासी है। वहां के लोग इस वृक्ष के प्रत्येक भाग का उपयोग करते हैं। कई शताब्दियों पहले अफरीका में वहां के हब्शी पकड़े जाते थे और दास के रूप में अरब के बाजारों में बेचे जाते थे। मुगल बादशाहों ने भी इन दासों को खरीदा और उन्हें अधिकतर जल्लाद का काम दिया था। जब ये हब्शी अधिक संख्या में हो गये, तब उनका अफरीका आना-जाना भी आरंभ हो गया और वे अपने साथ में इस वृक्ष को भी ले आये। जहां-जहां मुगलों की फौजी बस्तियां रहीं, वहां-वहां हब्शी रहे और उन्होंने इस वृक्ष को लगाया।

लंका कहां थी?

लंका कहां थी, इस संबंध में इतिहासकारों और पुरातत्ववेत्ताओं ने बहुत कुछ लिखा है। यहां तक लिखा है कि आज का सीलोन, रावण की लंका नहीं है। वह जबलपुर के पास या बिहार में रही होगी। इस संबंध में पेड़-पौधों की साक्ष्य ली जाए। वे झूठी साक्ष्य नहीं देंगे! प्रायः हर रामायण में यह लिखा है कि लंका में अशोक वाटिका थी। अशोक का वैज्ञानिक नाम सेरेका इंडिका है। इसके कुल में कुल बीस सदस्य हैं, जो अधिकांश सीलोन में पाये जाते हैं। स्पष्ट है, यही उसका घर व जन्म-स्थान है। वहीं से यह चारों ओर बढ़ा। लंका तो लाखों साल पहले भारत उपमहाद्वीप से अलग हो चुकी थी। उसके बाद ही पृथ्वी पर हो रहे विभिन्न प्राकृतिक बलों के कारण जावा, बोर्नियो, सुमात्रा, इत्यादि भारत से अलग हुए। अशोक-कुल के कुछ सदस्य मलाया, जावा, सुमात्रा व बरमा में पाये जाते हैं। भारत में केवल एक सदस्य ही बंगाल और बिहार में पाया जाता है। लाखों वर्ष पूर्व और अभी भी जबलपुर में, जिसके नजदीक डॉ. सांकलिया का लंका होने का संकेत है, अशोक या उसके कुल के सदस्य नहीं पाये गये हैं। इस क्षेत्र में उस समय साल वन का बाहुल्य था। लंका में उसका विवरण ही नहीं दिया गया है, जबकि चित्रकूट में उसका नाम है। तब वृक्षों की साक्ष्य पर लंका तो सीलोन ही होना चाहिए।

जहां तक लंका व भारत के बीच समुद्र की दूरी बढ़ गयी है, वह तो, न के बराबर है। जावा, सुमात्रा तो इनके बीच हजारों मील भारत से दूर हो गये हैं। विचित्र बात यह है कि सीलोन बहुत

छाया : एस. डी. एन तिवा

म हटा है। शायद, वह महाद्वीपों के घटने की रेखा पर है। कन्या कुमारी में बसे लोग अरब व हिंद महासागर के पानी मिलने की रेखा दिखाते हैं और कहते हैं, उसकी सीध, दक्षिण ध्रुव से मिलती है। इसमें कितना सत्य है, कहना कठिन है, पर इस रेखा पर आनेवाले द्वीपों इत्यादि में सबसे कम सरकाव हुआ है।

पेड़-पौधों का इतिहास मनुष्यों के इतिहास से कम मनोरंजक नहीं है। भारत में जिस प्रकार अनेक प्रकार के लोग दूर-दूर देशों से आकर बसे हैं उसी प्रकार कम से कम तीस प्रतिशत पेड़-पौधे इस देश में विदशी हैं, जैसे राय मुनियां (lantaha), टमाटर, गुलमोहर, इत्यादि। जब यह खोज की जाएगी कि वे किस प्रकार इस देश में आये, तब मनुष्य के इतिहास के पन्नों की सत्यता प्रमाणित करने में एक सत्य साक्ष्य और बढ़ जाएगा।

—'समय', प्रोफेसर कालोनी, भोपाल

तांडवित-नृत्य पर डिंडिम प्रवर अशुभ इव भाति कल्यानरासी
महाकल्पांत ब्रह्मांड- मंडल-दवन भवन कैलाश आसीन कासी

अर्थात, 'तांडव नृत्य करते हुए आप सुंदर डमरू को डिमडम डमडिम बजाते हैं। आप भासित तो होते हैं अशुभ, किंतु हैं श्रेयस की मूर्ति, साक्षात शिव। महाप्रलय के समय आप समस्त ब्रह्मांड को भस्म कर डालते हैं। कैलास पर आपका भवन है, और काशीपुर में आप आसन लगाये विराजमान हैं। भक्त-शिरोमणि तुलसीदास ने इन शब्दों में शिव के नृत्य करते रूप की स्तुति की है। शिव संहार के देवता माने जाते हैं, इसलिए उनके द्वारा किया गया तांडव-नृत्य भयंकर माना जाता है। कहते हैं क्रुद्ध पार्वती के रोष को शांत करने के लिए शिव ने तांडव नृत्य किया था। तांडव नृत्य को शिव का प्रिय नृत्य कहा जाता है।

तांडव नृत्य करते हुए शिव की छवि ने कवियों को ही नहीं, चित्रकारों, मूर्तिकारों, और नृत्यकारों को भी प्रेरणा दी और उन्होंने अपनी-अपनी कलाओं में नटराज की विभिन्न भाव-भंगिमाओं को सुंदर अभिव्यक्ति दी है।

छाया : एस. डी. एन तिवा

कम हटा है। शायद, वह महाद्वीपों के घटने की रेखा पर है। कन्या कुमारी में बसे लोग अरब व हिंद महासागर के पानी मिलने की रेखा दिखाते हैं और कहते हैं, उसकी सीध, दक्षिण ध्रुव से मिलती है। इसमें कितना सत्य है, कहना कठिन है, पर इस रेखा पर आनेवाले द्वीपों इत्यादि में सबसे कम सरकाव हुआ है।

पेड़-पौधों का इतिहास मनुष्यों के इतिहास से कम मनोरंजक नहीं है। भारत में जिस प्रकार अनेक प्रकार के लोग दूर-दूर देशों से आकर बसे हैं, उसी प्रकार कम से कम तीस प्रतिशत पेड़-पौधे इस देश में विदशी हैं, जैसे राय मुनियां (lantaha), टमाटर, गुलमोहर, इत्यादि। जब यह खोज की जाएगी कि वे किस प्रकार इस देश में आये, तब मनुष्य के इतिहास के पन्नों की सत्यता प्रमाणित करने में एक सत्य साक्ष्य और बढ़ जाएगा।

—'समय', प्रोफेसर कालोनी, भोपाल

तांडवित-नृत्य पर डिंडिम प्रवर अशुभ इव भाति कल्यानरासी
महाकल्पांत ब्रह्मांड- मंडल-दवन भवन कैलाश आसीन कासी

अर्थात, 'तांडव नृत्य करते हुए आप सुंदर डमरू का डिमडम डमडिम बजाते हैं। आप भासित तो होते हैं अशुभ, किंतु हैं श्रेयस की मूर्ति, साक्षात शिव। महाप्रलय के समय आप समस्त ब्रह्मांड को भस्म कर डालते हैं। कैलास पर आपका भवन है, और काशीपुर में आप आसन लगाये विराजमान हैं। भक्त-शिरोमणि तुलसीदास ने इन शब्दों में शिव के नृत्य करते रूप की स्तुति की है। शिव [illegible] के देवता माने जाते हैं, इसलिए उनके द्वारा किया गया तांडव-नृत्य भयंकर माना जाता है। कहते [illegible] क्रुद्ध पार्वती के रोष को शांत करने [illegible] लिए शिव ने तांडव नृत्य किया [illegible] तांडव नृत्य को शिव का प्रिय नृत्य [illegible] कहा जाता है।

तांडव नृत्य करते हुए शिव की [illegible] ने कवियों को ही नहीं, चित्रकारों, [illegible] कारों, और नृत्यकारों को भी प्रेरणा दी [illegible] और उन्होंने अपनी-अपनी कलाओं [illegible] नटराज की विभिन्न भाव-भंगिमाओं [illegible] सुंदर अभिव्यक्ति दी है!

र्ण नटराज की मूर्ति का

अभी तो नाच जारी है!

• आनन्द दीक्षित

नटराज की मूर्तियों की कल्पना कई प्रकार से की गयी है, क्योंकि पुराणों और स्तोत्रों में अलग-अलग वर्णन मिलते हैं। दो हाथवाले, चार हाथवाले, आठ-हाथवाले और दस हाथवाले नटराज की मूर्तियां हैं। कुछ मूर्तियां प्रभा-मंडलयुक्त हैं। कई असुरों का संहार करने से संबंधित मूर्तियां हैं। लेकिन सबसे लोकप्रिय मूर्ति, दक्षिण के चोल राज्य के जमाने के चार भुजाओंवाले नटराज की है। विश्व के उल्लासमय सृजन के नृत्य और जीव में ब्रह्मांडीय ऊर्जा की अमर धारा की नित्य लीला की, इससे मनोहारी अभिव्यक्ति दुनिया में केवल भारतीय शिल्पी ही कर सका। अपने रंग में मस्त चिदंबर शिव के आनंदपूर्ण नृत्य से ही क्रिया यानी सृष्टि का जन्म और विकास होता रहता है। एक हाथ में डमरू है। दूसरे हाथ में आग है। एक हाथ अभय-मुद्रा में प्राणियों से कहता है, 'डरो मत, अपना काम करते रहो, मैं तुम्हारे साथ हूं।' एक हाथ, उठे हुए बायें पैर की ओर संकेत करता है, मानों कह रहा हो, 'इसकी शरण में रहो, कल्याण होगा।' दाहिने पांव से नटराज अपस्मार, महामोह अथवा अविद्या को दबाये हुए हैं, ताकि भक्तों को उनके चरणों तक पहुंचने में बाधा न पहुंचे। वास्तव में ज्ञान प्राप्त करने, असीम पुरुष का साक्षात्कार करने में, यही तो बाधा है—अपस्मार। अपस्मार 'मिरगी' रोग को भी कहते हैं। अपस्मार से मतलब ऐसी दिमागी हालत,

नटराज

नृत्य-मग्न शिव (१३वीं शताब्दी, वारंगल)

जिसमें स्मृति-वुद्धि काम न करती हो।

अर्द्धनारीश्वर का प्रतीक

नटराज के बायें कान में स्त्री का आभूषण और दाहिने में पुरुष का कुंडल रहता है। यह अर्द्धनारीश्वर का प्रतीक है, जो यही सूचित करता है कि शिव उमा से पृथक नहीं हैं; शक्ति-रूपी छोटी 'इ' से अलग होने पर तो वह शव हैं। शिव के साथ उमा हमेशा लास्य नृत्य करती रहती हैं।

चार हाथोंवाली लोकप्रिय नटराज की मूर्ति के एक हाथ में जो डमरू है, वह सृष्टि के उद्भव का प्रतीक है। सृष्टि का जन्म विस्फोट से, शब्द से हुआ। एक बार **'नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपंचवारं'** अर्थात शिवजी ने नाच के अंत में चौदह बार डमरू बजाया। इसी से १४ शिवसूत्रों का जन्म हुआ, जो उनके शब्द-रूप का विस्तार हैं। संसार शब्द का ही परिणाम है : **'शब्दस्य परिणामो अयं इति आम्नायविदो वदन्ति।'** फिर संसार में कोई भी ज्ञान ऐसा न जो शब्द के बिना प्राप्त हो। 'वा पदीय' में कहा गया है :

'अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भा

प्रत्येक ज्ञान शब्द से अनुविद्ध होता शब्द, घर्षण से पैदा होता है। स्वर-यंत्र का घर्षण हो अथवा किसी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक (लेसर कि के 'ध्वनिहीन' घर्षण सहित) घर्षण पैदा करता है। घर्षण-संघर्ष ही तरह के ज्ञान और अनुभव की अभिव्य करता है। यही शब्द का अर्थ है। के टकराने, मिलने और इशारे शब्द है। टेलिपैथी भी शब्द है, में स्पर्श है।

आमतौर से शिव के तांडव नृत्य रुद्र के रौद्ररूप का प्रलयंकारी नृत्य जाता है। लेकिन यह उन्मादी या नृत्य नहीं है। तंडु (कहीं-कहीं तंडी) मुनि को शिव ने इस नृत्य की शिक्षा

हाथ-पांवों की विभिन्न मुद्राएं—१०८ करण और ३२ प्रकार के अंगहार बताये। भरत के नाट्यशास्त्र में इसकी व्याख्या है। शिव के नृत्य का तांडव नाम, वास्तव में शिष्य के नाम पर पड़ा। कुदरत के खेल, सृष्टि के उल्लासपूर्ण विकास की लीला का नित्य नृत्य ही तांडव है।

शिव नृत्य-सम्राट हैं

आकाश (स्पेस) में गतिमान शक्ति का स्पंदन, सर्जन और विकास ही नृत्य है। नियमित अंग-संचालन से रचना और अभिव्यक्ति ही नृत्य है। यह संपूर्ण विश्व जो शिव का स्थितिकाल है, किसी भी क्षण ठहराव की स्थिति में नहीं है। वह शिव की नित्य नृत्य-लीला से लगातार आंदोलित है। संपूर्ण विश्व शिव का लगातार नाच है, इसीलिए शिव नृत्य-सम्राट हैं। वे मामूली नटराज नहीं, सृष्टि, स्थिति और संहार के मालिक हैं।

नटराज की मूर्ति भारतीय शिल्प की आत्यंतिक कल्पना है। यह विश्व की सृष्टि-विद्या को अभिव्यक्त करती है। नृत्य का जन्म गति है। विश्व गतिशील है। गति नियमित है। सौर-मंडल में पृथ्वी की गति नियमबद्ध है। कालखंड का सिलसिला ही नियम है। इसी को तालबद्ध लयकारी कह लीजिए। नटराज की मूर्ति, जो दुनियाभर के प्रबुद्ध लोगों को एकदम अनजाने, सहजभाव से आकर्षित करती है, उसके पीछे सृष्टि के लयात्मक विकास-तत्व को रूपायित करने की खूबी है।

अर्द्धनारीश्वर
(राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली)

कोई अपने अंदर पहचाने या न पहचाने, यह खूबी, यानी सृष्टि का लयात्मक स्फुरण प्रत्येक जीव और पदार्थ में है, आकार के अनुपात में।

पुराणों और स्तोत्रों से उनकी महिमा को समझ तो लिया, लेकिन बोधगम्य विषय को, नजरों के अंदाज के दायरे में लाने में, भारतीय दिमाग की सूझ-बूझ बड़ी अनोखी रही है। ज्ञानी शिल्पियों ने अपने चिंतन-मनन से उस रूप को पकड़ लिया, जिसका बखान इतनी तरह से और इतने स्पष्ट रूप से प्राचीन ग्रंथों में हुआ। अभी तक सभी पूजते आ रहे थे, उसे शिवलिंग रूप में। जिस दिन शिल्पी ने रूपायित किया उसी लिंग-स्वरूप को लय-गत नटराज के रूप में, वह दिन ब्रह्मांडीय सृजन के दिन से जरूर कुल

मेलजोलवाला होगा। ज्योतिषियोंवाली ग्रह-दशा तो दुर्री-धरती के किसी स्थल की और काल-खंड की निकटवर्ती खगोलीय पिंडों के खींचतान-संबंधों की मामूली डायनमिक ज्यामितिक है।

सृष्टि का तिरोभाव

यों तो नटराज की मूर्तियां बनती रहीं। मनीषी शिल्पी अपनी सृजन-शक्ति, आदि सर्जक की सलामी में लगाते रहे। लेकिन मध्य युग में चोल राजाओं के जमाने में, चिदंबरम (मद्रास के निकट) के अज्ञात-नामा शिल्पी ने नटराज को जिस रूप में ढाल दिया, वह आत्यंतिक बन गया। फिर तो पत्थर और तांबे में उसकी नकल ही, विश्व का जन्म और स्थिति करनेवाले की आराधना बन गयी। संहार भी वही करेगा। लेकिन मानवीय काल-गणना में इतनी दूर है वह समय कि उसका नि... पण एकदम बेकार है। अभी तो ... नाच जारी है और रोज जारी है। ... पृथ्वी के हर स्थल से, हर रोज संध्या-... (प्रदोषकाल) क्षितिज पर शिवजी ना... हैं। सांझ की बेला कहीं न कहीं हर ... है, इसलिए शिव का लीला-नृत्य सदा... है। उसमें रुकावट कहीं नहीं है। ... रुकावट का अर्थ बाधा नहीं, संपूर्ण ... का महाशून्य (ब्लैकहोल ?) में ... महाप्रलय यानी सृष्टि का तिरो... होगा।

शिव की श्रे...

'शिव प्रदोषस्तोत्र' में नटराज की ... लीला का सुंदर वर्णन है, जो पाठ क... वाले भक्तों को आनंदित करता है। ... लोक के श्रेष्ठी लोग और भूतादि सभी ...

महा नटराज शिव

नृत्य के मालिक कुछ मूर्तियों में एक पांव सिर के ऊपर किये हुए हैं। 'ऊर्ध्वजानु' और 'उत्थितवामपाद' वाली मूर्तियां अधिक नहीं हैं। इसके संबंध में रोचक किस्सा है... देवताओं को मजा लेने की सूझी तो शिव-पार्वती को चढ़ा दिया कि दिखाओ कि कौन श्रे... नर्तक है। सजी-धजी उमा ने शिव के सभी नृत्यों की बखूबी नकल करते हुए बराबरी ... जवाब ही नहीं दिया, बल्कि अपने लास्य-अंग के लावण्य से उसी चीज को बेहतर ... आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया। अपने आपको पिटते देख शिवजी ने एक टांग सिर पर रख... नाचकर सबको चकित कर दिया। लज्जावश उमा ने इसका जवाब नहीं दिया। भर... नाट्यम में कुशल दक्षिण की नृत्यांगनाएं यह मुद्रा बना लेती हैं। वे लांग मारकर वि... विधि से साड़ी धारण करती हैं, इसलिए उमावाली लज्जा या बेबसी का प्रश्न नहीं ... होता। शायद एक टांग ऊपर उठाकर नाचने के कारण ही शिव को 'महा नटराज' (दे... 'नटराज-सहस्रनाम') कहा गया है। वैसे निरावरण, निष्कलंक शिव भोलेनाथ भी हैं।

के लोग, रोज शाम को कैलाश पर्वत पर उपस्थित होते हैं और शिवजी का नाच देखते हैं। पूरा ऑर्केस्ट्रा होता है। साजिंदे भी कैसे-कैसे होते हैं। सरस्वती वीणा बजाती हैं, इंद्र बांसुरी बजाते हैं और ब्रह्मा मंजीरा बजाते हैं। लक्ष्मी गीत गाती हैं। विष्णु ताल-वाद्य मृदंग बजाते हैं, जिसके बोल हैं **'धित्तां धित्तां धिमित्रां धिमि धिमि धिमितां धिंधिमी धिंधिमी।'** इस वर्णन में ही शिव का महादेवत्व का दर्जा स्पष्ट है। मंच के हीरो नर्तक के सामने, ब्रह्मा और विष्णु संगतकार, तबलची-जैसी भूमिका अदा करते हैं। ज्ञानियों के लिए तीनों एक ही हैं। छोटे-बड़े का कोई विवाद नहीं है। विष्णु और शिव में कोई भेद नहीं है। हरि और हर एक ही हैं। दोनों एक ही धातु (हृ) का रूप हैं। प्रत्यय भिन्न होने से वर्णगत मामूली फर्क है।

इस पृथ्वी, सौर-मंडल, नक्षत्रलोक, नीहारिका (नेबुला) और विकासमान ब्रह्मांड की सृष्टि और स्थिति की कहानी, अपने अनोखे ढंग से कहनेवाले अठारह मुख्य पुराणों में शिव की ही सबसे अधिक चर्चा है। आखिर वह देवों के देव महादेव जो ठहरे। मोटे तौर पर भारतीय सृष्टि-

काशी विश्वनाथ के स्वर्णमंदिर में विश्वनाथ मूर्ति

विज्ञान के अनुमार शिव की महत्ता इसी से स्पष्ट है कि मनुष्यों के हिसाबवाले करोड़ों-करोड़ों वर्षों का एक दिन ब्रह्मा का माना जाता है, जोकि सौरमंडल का स्थिति-काल है। ब्रह्मा के करोड़ों दिनों का, शिव का एक दिन है, जो नीहारिका का स्थिति-काल है। विष्णु के करोड़ों दिन शिव के मात्र एक दिन में समा जाते हैं। शिव का एक दिन संपूर्ण विश्व (अनंत ब्रह्मांड) का स्थितिकाल है। भारतीय सृष्टि-विज्ञान की काल-गणना के अनुसार वाराह-कल्प के अंतर्गत वैवस्वत मन्वंतर चल रहा है। कलियुग तो उस काल-खंड में पृथ्वी के आकार की तुलना में फुटवाल के बराबर समझना चाहिए।

—द्वारा, दैनिक 'हिन्दुस्तान', नयी दिल्ली-१

अखिल भारतीय सफाई कर्मचारी संघ के अध्यक्ष एक नये कवि के पास पहुंचे और तनिक आक्रोश-भरे लहजे में बोले, "मैंने सुना है कि आजकल हिंदी कविता के नाम पर कूड़ा-करकट लिखा जा रहा है। मैं सफाई कर्मचारी संघ की ओर से इसका विरोध करने आया हूं।"

जोरू का गुला[म]

• कर्त्तारसिंह दुग्ग[ल]

धन्नी-चकरी की लड़की के साथ उसका विवाह तय हुआ था। धन्नी-चकरी की औरतें बड़ी छंटी हुई होती हैं", जो कोई सुनता, यही कहता, "तुम जोरू के गुलाम हो जाओगे।"

लोग कहते, "धन्नी-चकरी की एक काइयां औरत पहले भी इस गांव में ब्याहकर आयी थी। अपने घरवाले से पांव दबवाती थी। बेचारा दोनों वक्त घर का पानी ढोता था। कभी उसकी शलवारें धो रहा होता, तो कभी उसकी रसोई लीप रहा होता। हर साल नया बच्चा जनती और पालने के लिए अपनी सास के हवाले कर देती। क्या मजाल, जो अपनी टीप-टाप में फर्क आने दे। इतने बच्चे पैदा करके भी, थी वैसी की वैसी हट्टी-कट्टी। अपने मर्द को तो कठपुतली की तरह आगे पीछे नचाया करती। सारा-सारा दिन उसकी फरमाइशें पूरी करता रहता। अड़ोस-पड़ोसवाले, दोस्त, रिश्तेदार—सब उसकी ओर देख-देखकर शर्मिंदा होते। 'हाय राम! यह कोई मर्द है! जोरू का गुलाम न हो तो!' हर किसी के मुंह से यही निकलता।"

लेकिन मुक्खा की सगाई हो गयी थी। अपनी मंगेतर को कोई कैसे छोड़ सकता है? उसका पिता वचन दे चुका था। अब कुछ नहीं हो सकता था। और तो और, उन्होंने

आषाढ़ महीने का ब्याह भी निश्चित कर लिया था। 'पुण्य रिश्ता' था। 'दुआठी'-'त्रियाठी' थोड़े ही था कि कोई अड़चन पैदा की जा सके। कहीं कोई बात बनाकर टाल-मटोल की जा सके। 'पुण्य रिश्ते' में कोई घपला कर ही कैसे सकता है?

और फिर सुनने में आया कि लड़की बड़ी सुंदर थी। देखते ही बनती थी, जैसे आसमान से उतरी कोई परी हो। चांद का टुकड़ा। गोरी-चिट्टी, हाथ लगाने से मैली हो जाए, जैसे। कितनी सुंदर ढोलक बजाती थी। टप्पे गाने बैठती, तो सारी-सारी रात गाते हुए न थकती। झूला झूल रही होती, तो पींग से उतरने का नाम न लेती। तालाब में नहा रही होती, तो मछली की तरह घंटों तैरती रहती। 'त्रिजन' में तहलका मचाये रखती। खुश-खुश रहती।

और फिर वह सात भाइयों की एक ही बहन थी। उनके तो चाचा-ताऊ के यहां भी कोई बेटी नहीं थी। बेटे ही बेटे पैदा होते रहे। हर कोई उसे दुलराता रहता, उसके नाज उठाता रहता। क्या मजाल, जो उसके मुंह से निकली कोई बात पूरी न की जाए।

लोगों ने उसका नाम मोरनी रखा हुआ था, क्योंकि वह नाचती जो इतना सुंदर थी। सारे इलाके में उस-जैसा कोई नहीं नाचता था। नित्य नये परिधान पहनती और नाचती। देखनेवाले देख-देखकर न अघाते। यह लड़की कहां यह सब-कुछ सीखती रही थी? ठुमुक-ठुमुक चलती थी, जैसे किसी की पाजेब बज रही हो। बातें करती हुई, आंखों को यूं मटकाती, जैसे जादू कर रही हो। हाथों की मुद्राओं से मानों संकेत कर रही हो। बस, चार अक्षर नहीं पढ़ पायी थी। लेकिन मुक्खा कौन-सा पढ़ा-लिखा था? उसके पेट में भी तो दो अक्षर नहीं पड़े थे। पहले मसजिद का मौलवी जोर लगाकर हार गया। फिर प्राथमिक स्कूल का मास्टर अपना सिर पटकता रहा। मुक्खा के लिए काला अक्षर भैंस बराबर रहा। उसकी खोपड़ी वैसी की वैसी खाली रही, जैसे किसी हुजरे की मीनार हो।

ज्यों-ज्यों मुक्खा की शादी का दिन पास आ रहा था, उसके साथी उसे मशवरे देते रहते। कोई कुछ कहता, कोई कुछ। लेकिन एक बात जो उसका हर दोस्त उसके कानों में फूंकता, वह यह थी कि वह पहले दिन ही ढेरी-चकरीवाली को काबू कर ले। पहली रात ही उसकी ऐसी पिटाई करे कि वह सेंक

करती फिरे। औरत की ठुकाई करना बड़ा जरूरी होता है, ताकि वह अपने खूटे से न हिल सके, अपनी जगह पर टिकी रहे। अपने मर्द के कहने में चले—एक बांदी की तरह।

मुक्खा की शादी खूब धूम-धाम से हुई। एक सौ एक बाराती। लड़कीवालों ने भी कोई कसर नहीं उठा रखी। धन्नी-चकरी-वालों ने पोठोहारियों को खिला-पिलाकर उनकी तौबा करवा दी। बार-बार जिद करके उन्हें दारू पिलायी। तीतर और बटेर; मुर्ग और बकरे, कलिये और पुलाव।

बारात के लौटने से पहले नेजा-बाजी हुई। पोठोहारी इसमें हारे। फिर कुश्ती हुई। पोठोहारी इसमें भी हारे। फिर सुहां में तैराकी हुई। ढेरी-चकरीवालों ने इसमें भी अपने मेहमानों को मात दी। लड़की को डोली में बिठाकर तो ले चले, लेकिन पोठोहारी मन ही मन बड़े लज्जित थे। किसी मुकाबले में तो जीतते। चारों तरफ हार ही रहे थे।

और अब जो लड़की वे ब्याहकर लाये थे, लड़के से बित्ताभर ऊंची थी। फेरों के वक्त झुक-झुककर दूल्हा से कम लंबी लगने की बेकार कोशिश कर रही थी। और फिर जवान कैसी थी, जैसे शादी के जोड़े में समा न रही हो। मुक्खा तो यूं लगता, जैसे किसी शेरनी के पीछे-पीछे कोई मेमना चला जा रहा हो।

रास्ते में, डोली में बैठे हुए, क्या मजाल, जो दूल्हे को अपने पास से हिलने दे रही हो। कभी पानी मंगवा रही तो कभी पिपलामूल। कभी उसके में दर्द है, तो कभी पेट में। कहार मारे शर्म के पानी-पानी हो रहे थे। तो, धन्नी-चकरी की दुलहन को हुए, उनके कंधे जवाब दे रहे थे और उन्होंने यह कभी नहीं देखा-सुना कि कोई नयी-नवेली दुलहन अपने

दूल्हे को यूं नचाती फिरे।

डोली लेकर घर आये, तो मुक्खा के दोस्त बार-बार उसे याद दिलाते "इस हिसाब से तो तू आज भी जोरू का गुलाम और कल भी जोरू का गुलाम।" मुक्खा सुनता और अपनी कमीज के आस्तीन चढ़ाकर बार-बार कहता, "घर तो पहुंचने दो उसको, ऐसा काबू करूंगा कि याद रखेगी।"

और फिर वैसा ही हुआ। सुहाग

रात, हवेली के चौबारे के एकांत कमरे में आधी रात को वह दारू पीकर जा घुसा। कब से इंतजार करते-करते दुलहन की आंख लग गयी थी। कब से उसकी ननदें उसे सेज पर लिटाकर जा चुकी थीं। कब से उसके कान सीढ़ियों में किसी के क़दमों की आवाज का इंतजार कर रहे थे। कब से वह किसी के मीठे

बोलों को सुनने के लिए तड़प रही थी। उसकी सास द्वारा भेजा गया दूध का कटोरा कब से ठंडा हो गया था। पहले गरम से नीम गरम हुआ, उसने सोचा, वह अभी आएगा। वह नहीं आया। फिर नीम गरम से ठंडा हुआ। उसने सोचा, वह अभी आएगा। वह नहीं आया। फिर ठंडे से यख-ठंडा हो गया। बाहर सरदी भी तो कितनी पड़ रही थी। लालटेन में तेल खत्म हो रहा था। लालटेन की लौ मद्धिम होती जा रही थी। उसकी ननदों ने जान-बूझकर लालटेन में तेल थोड़ा-ही डाला था। हमेशा यूंही होता था। हर ननद अपनी भावज के साथ इस तरह का मजाक किया करती थी।

दहेज में आयी उसकी रजाई कितनी गरम थी। कितनी गरम ग्रौर कितनी नरम। बाहर ठंड भी तो कितनी थी। ग्रौर फिर दुलहन को पता भी नहीं चला कि कब लालटेन की बत्ती आप ही आप बुझ गयी। कब उसकी पलकें आप से आप नींद में मुंद गयीं। कब वह बेसुध सो गयी।

उसकी आंख तब ही खुली, जब शराब में बदमस्त लड़खड़ाते कदम, चौबारे में घुसते हुए, मुक्खा ने उसके मुंह पर थप्पड़ दे मारा।

"देखती नहीं, शहजादा आया खड़ा है ग्रौर तू सोयी पड़ी है?" जिस तरह उसे सिखाया गया था, मुक्खा दुलहन को गाली बक रहा था। ग्रौर जब हैरान होकर लड़की उसका स्वागत करने के लिए उठी, मुक्खा ने उसे ठोकर दे मारी। उसी तरह, जैसे उसकी चंडाल-चौकड़ी ने उसे सिखाकर भेजा था। दारू पिलाते रहे ग्रौर कानों में जहर घोलते रहे।

इसके उलट, दुलहन को उसकी सहेलियों ने बताया था कि जब दूल्हा कमरे में कदम रखे, पहली बात यह, उसके पांव पर माथा टेके। उसके चरणों की

धूल को अपनी मांग में लगाये । मुक्खा की बदतमीजी की जरा भी परवाह न करते हुए, दुलहन आगे बढ़कर उसके कदमों में गिर गयी । मुक्खा ने आगे देखा न पीछे ग्रौर ठोकरें, घूसे, थप्पड़ मार-मारकर बेचारी दुलहन का कचूमर निकाल दिया । जहां हाथ पड़ता, पीटे जाता । न मुंह देखता, न पीठ । न कमर देखता, न छाती । दारू में बदमस्त, पीट-पीटकर जब वह थक गया, तब पलंग पर ग्रौंधा जा गिरा ग्रौर पता नहीं, क्या बकते-बकते उसकी आंख लग गयी ।

सारी रौत धन्नी-चकरी की दुलहन अपने दूल्हे का सिर अपनी गोद में लिये बैठी रही । सारी रात उसके बालों से खेलती रही । जब सुबह की पहली किरण खिड़की में से उनके कमरे में आकर पड़ी, तब वह अपने मर्द के मुंह की ग्रोर देख रही थी । दारू पी-पीकर सूजे हुए उसके होंठों को सहला रही थी ।

कुछ देर के बाद उसकी ननदें आ गयीं । वे बाहर खिड़की में से उसे झांक रही थीं । दूल्हे को वैसे का वैसा सोया हुआ छोड़कर दुलहन बाहर निकल आयी । "तुम्हारा बीरन तो रात बड़ी देर करके आया", वह अपनी ननदों को बता रही थी, "अब सोया पड़ा है । सोया रहे, जवानी की नींद भी तो बड़ी गहरी होती है ।"

ग्रौर फिर उसकी ननदें उसे अपने साथ नीचे ले गयीं । दालान में बैठे हुए,

> एक अमीर व्यक्ति को एक युवा लड़की से प्रेम हो गया । शादी से पहले उसने उस लड़की के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने का काम एक प्राइवेट डिटेक्टिव को सौंपा । एक महीने बाद डिटेक्टिव ने रिपोर्ट दी, 'लड़की ऊंचे घराने की है और चरित्रवान है । स्वभाव भी उसका अच्छा है, लेकिन आजकल वह एक ऐसे व्यक्ति के प्रेम में है, जिसका चरित्र संदिग्ध है, तथा वह तस्करी करता है ।'
>
> —राजकुमार जैन

उसकी बड़ी ननद की नजर दुलहन के चेहरे पर जा पड़ी । उसके दायें गाल पर पांच की पांच ग्रंगुलियां खुभी हुई थीं ।

"हाय ! मैं मरी । यह क्या हुआ है ?" वह पूछने लगी ।

"तुम्हारे बीरन ने रात को मुझे चपत दे मारी", दुलहन ने ऐसे प्यारभरे लहजे से कहा, मानो कह रही हो, 'उसने मेरे होंठों को आकर चूम लिया, होंठों को ग्रौर आंखों को । आंखों को ग्रौर गालों को । गालों को ग्रौर ठोड़ी को । ठोड़ी को ग्रौर गले को, गरदन को, कंधों को, छातियों को, एक-एक ग्रंग को, एक-एक जोड़ को ।

"हाय ! मैं मरी !" अब दूसरी ननद उसके गाल को देख रही थी, "भाभी का गाल नीला-पीला हो रहा है ।"

"यह तो कुछ भी नहीं, जरा यह देखो !" ग्रौर फिर दुलहन कभी उन्हें अपनी पीठ दिखाती, कभी जांघ, कभी छातियां,

ज्ञान-गंगा

मृषा वदति लोकोऽयं ताम्बूलं मुखभूषणम् ।
मुखस्य भूषणं पुंसः स्यादेकैव सरस्वती ।।
झूठ ही लोग कहते हैं कि पान मुख का भूषण है। पुरुष के मुख का भूषण केवल वाणी ही है।

वस्तुदोषमनादृत्य गुणान् चिन्वन्ति तद्विदः ।
अपि कण्टकिनि पुष्पे गन्धं जिघ्रन्ति षट्-पदाः ।।
किसी वस्तु के दोष का ध्यान न करते हुए,विद्वान उनके गुणों को ग्रहण कर लेते हैं। भौंरा कांटेवाले पौधे की गंध का उपयोग कर लेता है।

लभन्ते कथमुत्थानमस्थानं गुणिनो गताः ।
दृष्टः किं क्वापि केनापि कर्दमात्कन्दुकोद्-गमः ।।
अनुचित स्थान में गये हुए गुणी जन कैसे उत्थान प्राप्त करेंगे? क्या कहीं किसी ने कीचड़ से कंदुक को ऊपर उछलते देखा है ?

आत्मैव यदि नात्मानमहितेभ्यो निवार-येत् ।
कोऽन्यो हिततरस्तस्मात् यः एनं विनिवार-येत् ।।
यदि अपने आप ही अपने को अहित से नहीं हटाता तो दूसरा कौन बढ़कर हितकारी है, जो उसको हटाये।

—प्रस्तोता : महर्षिकुमार पाण्डेय

कभी गरदन । उसके सारे शरीर पर नील पड़े थे। नील और जमे लहू के निशान। ठोकरें और घूंसे। मुक्के और थप्पड़। उसका अंग-अंग, जैसे कुचला हुआ था।

शराब में बदमस्त मुक्खा ने उसे पीटा भी तो वहशियों की तरह था। इस तरह धुनकर रख दिया था, जैसे रुई की गठरी हो । मार-मारकर उसका भुरकस निकाल दिया था।

और उसकी ननदें देख-देखकर हैरान हो रही थीं । क्या मजाल जो दुलहन के माथे पर एक शिकन तक दिखाई देती हो । इतने लाड़ से, इतने चाव से, इतने प्यार से वह अपनी चोटें दिखा रही थी ।

"लेकिन यह बताओ भाभी! और क्या हुआ ?" सबसे छोटी, सबसे चंचल ननद उससे पूछ रही थी ।

"और तो कुछ भी नहीं हुआ! बस उसने यही किया और फिर उसकी आंख लग गयी ।" दुलहन बोल रही थी, जैसे उसके होंठों में से शहद टपक रहा हो। जैसे कोई गीत के बोल गुनगुना रहा हो। जैसे कोई अपनी सबसे प्यारी आप-बीती सुना रहा हो ।

फैलते-फैलते बात फैल गयी । उस शाम जब उसके साथियों को सारी घटना की खबर मिली, तब वे मुक्खा से कहने लगे, "बेटा ! तुम्हारी किस्मत में जोरू का गुलाम रहना ही लिखा है।"

—पी-७, हौजखास, नयी दिल्ली-११००१६

कृषि-प्रधान देश भारत के लिए यूकिलिप्टस एक खतरनाक संकट का ही पर्याय बनता जा रहा है। एक विश्वविख्यात वानिकी विशेषज्ञ के अनुसार, इस वृक्ष को निर्मूल करना चाहिए अन्यथा कुछ वर्षों में यह धरती की सारी नमी खींच लेगा।

एक लालची पेड़

● ईश्वर दयाल

भारत में आज यूकिलिप्टस वृक्ष की बहुलता और लोकप्रियता को देखकर शायद ही कोई विश्वास करे कि यह आस्ट्रेलिया का आदिवासी वृक्ष है और भारत में इसका प्रवेश मात्र एक शताब्दी से कुछ ही पूर्व हुआ है। जंववादि कुल के इस गगनचुंबी वृक्ष को, सर्वप्रथम सन १८४३ में अंगरेजों ने, उटी की ईंधन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु, नीलगिरि में लगाया था। वहां से यह मैसूर में और सन १९६० के बाद देश के अन्य भागों में फैला। आज तो जंगलों, बड़े बाग-बगीचों और गृह-उद्यानों से लेकर सुदूर देहातों में धान-गेहूं से लहलहाते खेतों की मेड़ों पर भी इसके गगनचुंबी, हरे-भरे वृक्षों की छटा देखी जा सकती है। सड़कों के किनारे शान से सर उठाये सदाबहार, मस्त पेड़ देखे जा सकते है।

यूकिलिप्टस

यूकिलिप्टस ने भारतीय वनस्पति-जगत में प्रवेश कर जितनी तेजी से महत्त्व-पूर्ण स्थान बनाया है और लोकप्रियता प्राप्त की है, उसे देखकर आश्चर्य होता है। इसका कारण संभवतः इसकी जलवायु और वातावरण की विभिन्न स्थितियों में अभियोजन-क्षमता, व्यावसायिक उप-योगिता (शीघ्र बढ़ने और लकड़ी तथा तेल देने के गुणों के कारण) आदि के अतिरिक्त इसमें आरोग्य-क्षमता, सुंदरता आदि अनेक गुणों का आरोपित होना है।

अनेक उपयोगिताएं

यूकिलिप्टस एक सहनशील वृक्ष है। विपरीत वातावरण में भी इसकी अभि-योजन-क्षमता अद्भुत है। यही कारण है कि यह शुष्कतम मरुस्थलियों से लेकर दलदली इलाकों में भी समान रूप से पाया जाता है।

यूकिलिप्टस की करीब ३०० जातियों-प्रजातियों में से लगभग २५ जातियों के पत्तों से तेल निकाला जाता है। शेष जातियां फर्नीचर और इंधन की लकड़ी के लिए प्रसिद्ध हैं। माना जाता है कि यूकिलिप्टस की खेती से प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष १०–१५ हजार रुपये आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं।

इसके आकाश से बातें करनेवाले वृक्ष, दुर्गंध का हरण करनेवाले (दुर्वाष्प-हरण भी इसका एक नाम है) और सभी रोगों को नष्ट करनेवाले माने जाते हैं। आरोग्य-गृहों, अस्पतालों आदि के आस-पास इसके वृक्ष खूब लगाये जाते हैं। यूकिलिप्टस ऑयल की उपयोगिता तो सर्वविदित ही है।

अपने इन्हीं गुणों के कारण यूकि-लिप्टस भारत में वनीकरण के लिए सबसे उपयुक्त करार दिया गया है। वन-विभाग और पौध-संरक्षण केंद्रों ने सारे देश में यूकिलिप्टस उगाने का अभियान छेड़ रखा है। बिहार के जंगलों में बड़े पैमाने पर यूकिलिप्टस के पेड़ लगाये गये हैं। उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में अस्सी हजार हेक्टेयर में, पुराने मिश्रित वनों को काट-कर और नाहन में ६६,८३० साल-वृक्षों को काटकर यूकिलिप्टस के वृक्ष लगाये गये हैं। हरियाणा, गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि में सड़कों के दोनों ओर यूकि-लिप्टस के वृक्ष लगाकर उनका शृंगार किया गया है। खेतिहर किसानों को सलाह दी गयी है कि वे अपने खेतों की मेड़ों पर इसे उगायें। वन विभाग की पौधशालाओं में बड़े पैमाने पर इसके पौधे तैयार कर अल्प मूल्य पर अथवा निःशुल्क वितरण की व्यवस्था की गयी है।

सिक्के का दूसरा पहलू

पर यह सब सिक्के का एक पहलू है। दूसरी ओर भी देखें, आस्ट्रेलिया और इज-रायल में इसे दलदली भूमि के पास दल-दल को सुखाने के लिए लगाया जाता है। आस्ट्रेलिया में यदि कोई जलस्रोत सूखने लगता है, तब उसके आसपास के यूकि-लिप्टस वृक्षों को तत्काल काट दिया जाता

है। इससे वे स्रोत पुनः जलयुक्त हो जाते हैं। यह कोई टोटका नहीं है। कु. मार्जरी साइक्स के अनुसार यूकिलिप्टस विश्व का सबसे अधिक जल पीनेवाला लालची पेड़ है। प्रतिदिन भूमितल से ८० गैलन पानी खींचकर बाहर फेंक देना इसके लिए सामान्य बात है। जल-स्रोत के सूखने में इसका बड़ा हाथ होता है।

भारत में नीलगिरि और तराई-भांवर क्षेत्र में, जहां बड़े पैमाने पर यूकिलिप्टस के पेड़ लगाये गये हैं, उक्त अनुमान की पुष्टि हुई है। नीलगिरि के प्राकृतिक जल-स्रोतों और कुओं में पानी की कमी निरंतर बढ़ती गयी है। तराई के क्षेत्रों में हैंड-पंपों में पानी आना कम हो गया है, कहीं-कहीं तो समाप्त ही हो गया है। ऋषिकेश के आसपास यूकिलिप्टस की बहुलता के कारण भूमि की नमी निरंतर कम होती गयी है।

अध्ययन और शोध की आवश्यकता

बंबई की परिस्थिति की शोधकर्त्री कु. कालयेशी ने विचार व्यक्त किया है कि तराई-क्षेत्र में यूकिलिप्टस लगाने से वहां की जलवायु शुष्क होती जा रही है। पहले मैदानों से चलने वाली लू को तराई की नमी सोख लेती थी और इस तरह घाटियों में शीतल वातावरण बना रहता था। अब यह लू घाटियों से होती हुई सीधी पहाड़ों तक जाने लगी है। फलतः पिंडारी का ग्लेशियर तेजी से पीछे हट रहा है। इससे घाटियों में और मंसूरी एवं नैनीताल में भी तापमान बढ़ने लगा है।

इन तथ्यों के प्रकाश में यूकिलिप्टस उगाने के लिए अभियान चलाने के पूर्व इसके संबंध में गंभीर शोध और अध्ययन की आवश्यकता है। भारत-जैसे कृषि-प्रधान देश की मुख्य समस्या कृषि-उत्पादन में वृद्धि है। इसके लिए मिट्टी में उर्वरा शक्ति को बढ़ाना तथा जल-संसाध्यों, विशेषतया भूमिगत संसाध्यों को सुरक्षित रखना आवश्यक है। कोई भी व्यवसाय, जो कृषि-व्यवसाय को विपरीत रूप से प्रभावित करे, भारत के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता। इसके लिए वानिकी में विश्व-गुरु जरमनी का उदाहरण सामने है। जरमन-विशेषज्ञों की मान्यता है कि यूकिलिप्टस की खेती धरती को नंगा बनाती है। अतएव जरमनी में शंकुधारी औद्योगिक प्रजातियों के वनों के बीच अब चौड़ी पत्तीवाले वृक्ष लगाकर मिश्रित वानिकी का विकास किया जा रहा है।

स्वतंत्र चिंतन आवश्यक

भारत में समस्या यह है कि हम स्वतंत्र चिंतन की अपेक्षा विदेशियों, विशेषतया अंगरेजों के अंधानुकरण पर विशेष बल देते हैं। यूकिलिप्टस के अंधाधुंध प्रचार का एक कारण संभवतः यह भी है कि इस देश में यह अंगरेजों द्वारा लाया गया था। अब आगे शोध की जैसे जरूरत ही नहीं हो। गढ़वाल, कुमायूं, रुहेलखंड, देहरादून और पंतनगर कृषि-विश्वविद्यालय के वन-अनुसंधान अधिकारी

HINDON RIVER MILLS

और विशेषज्ञ यूकिलिप्टस-उत्पादन के जल-स्तर, मिट्टी की उर्वरा शक्ति और कृषि पर पड़नेवाले प्रभावों के संबंध में मौन हैं। इधर यूकिलिप्टस-रोपण-अभियान चालू है। देश के लिए यह प्रवृत्ति घातक है। कालांतर में यह संकट की सृष्टि भी कर सकता है। इस संबंध में, विश्व-विख्यात वानिकी-विशेषज्ञ डॉ. रिचर्ड संत बर्बा बेकर की टिप्पणी महत्त्वपूर्ण है, "भारत में फल और लकड़ी देनेवाले अमरूद, आम, इमली, और बांस, शीशम-जैसे स्थानीय उत्तम वृक्षों के स्थान पर विदेशी यूकिलिप्टस क्यों उगाया जा रहा है? यह रेगिस्तान और दलदल के उप-युक्त है। यदि कोई पेड़ कटना चाहिए तो वह यूकिलिप्टस है। इसे निर्मूल करना चाहिए, अन्यथा कुछ वर्षों में यह धरती की सारी शक्ति खींचकर उसे नंगा कर देगा।"

यूकिलिप्टस की पत्तियां

आज परिस्थिति-विज्ञान और प्रदू-षण का शोर चारों ओर मचा है, लेकिन कल-कारखानों एवं आधुनिक तकनालॉजी के परिप्रेक्ष्य में ही। भूमि-तल और वातावरण पर वनस्पतियों के प्रभाव के क्षेत्र तक भी इसका विस्तार होना चाहिए।

—सर्वोदय महाविद्यालय, गंज-भड़सरा,
वाया-नटवार, रोहतास

पूरे तीस वर्ष तक जार्ज बर्नार्ड शॉ के साथ उनकी सेक्रेटरी के रूप में काम करनेवाली कुमारी ब्लांश पैच ने अपनी आत्मकथा 'थर्टी इयर्स विद जी.बी.एस.' में शॉ से संबंधित कई रोचक किस्से लिखे हैं। वह लिखती हैं—

"बर्नार्ड शॉ की शादी कैसे हुई, इस बारे में कई किस्से प्रचलित हैं। लेकिन जो किस्सा खुद उन्होंने मुझे सुनाया, उसे प्रामाणिक माना जा सकता है। बेहद काम करने और पैर की तकलीफ से लाचार होकर शॉ फिट्जराय स्ट्रीट (लंदन) स्थित कूड़ेदाननुमा कमरे में खटिया पर पड़े थे। इसकी खबर पाकर शार्लट रोम से भागी आयीं। आते ही उन्होंने हाइंडहेड में एक अच्छा मकान किराये पर लिया, दो नर्सें तय की और आकर शॉ से बोलीं कि तुम चलकर वहां रहो, ताकि मैं तुम्हारी तीमारदारी कर सकूं। इस पर उन्होंने शार्लट से कहा, 'पहले जाकर शादी का लाइसेंस ले आओ। तुम्हारी जो स्थिति है उसमें किसी अविवाहित पुरुष को अपने घर पर रखना तुम्हारे लिए असंभव है।' और इस तरह शादी हो गयी।"

—अमिताभ

समुद्री तूफान में फंसे वे नाविक

● अनवर आगेवान

जहाज के मस्तूल पर बनी चौकी पर बैठा खलासी दूरबीन नीचे रखकर जोर से चिल्लाया, "होशियार ! तूफान आ रहा है।"

जहाज के कप्तान फकीर मुहम्मद ने पीतल की तुरही से सूचना देते हुए घोषणा की, "जहाज के सब खलासी सावधान हो जाएं।"

बड़े जहाज पर सब मिलाकर सत्तर नाविक थे। जहाज की डेक पर दोनों ओर कतारें बांधकर सब खड़े हो गये और आंखें फाड़कर दूर-दूर तक देखने लगे।

यह जहाज मोरबी के जागीरदार ठाकुर वाघजी ने बंबई से कराची जाने के लिए किराये पर लिया था। उनके साथ हम्फ्री नामक एक अंगरेज अफसर भी था। ठाकुर साहब के साथी की हैसियत से प्रोफेसर उनवाला सागर की यात्रा पर निकले थे। साथ ही इस यात्रा में और लोग भी थे।

बड़े जहाज के साथ जो नौका जोड़ी गयी थी, उसमें वाघजी तथा उनके साथियों का फुटकर सामान तथा ठाकुर साहब के नौकर थे।

जब तूफान का मुकाबला करना जहाज के लिए कठिन होने लगा, तब ठाकुर ने जहाज के कप्तान फकीर मुहम्मद को बुलाकर कहा, "यदि तुम्हें इस जहाज के साथ बंधी मेरी नौका बोझ लग रही हो तो उसे तुम किसी भी क्षण जहाज से अलग कर सकते हो, समझे।"

एक कठिन निर्णय

कप्तान फकीर मुहम्मद चुप रहा। वह ऐसा कोई निर्णय नहीं करना चाहता

यह कोई काल्पनिक कहानी अथवा आख्यायिका नहीं, बल्कि एक सत्य घटना है। समुद्र-यात्रा पर सर वाघजी ठाकुर के साथ गये हुए साथियों में से एक ने इस आंखों-देखी घटना का रोमांचक वर्णन सुनाया। उस वर्णन पर यह साहसिक कथा आधारित है।

था, जिससे नौका में बैठे अठारह-बीस व्यक्तियों के प्राण खतरे में पड़ते। लेकिन थोड़ी देर बाद जब तूफान की गति और तेज हो गयी, तब ठाकुर वाघजी ने कप्तान फकीर मुहम्मद से कहा, "कप्तान ! मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि तुम नौका को जहाज से अलग कर दो।"

विवश होकर कप्तान फकीर मुहम्मद को उनके आदेश का पालन करना ही पड़ा।

नौका के कप्तान, नथु लंघा ने नौका का लगर टूटते देख, चिल्लाकर कहा, "कप्तान साहब, लंगर तोड़ने के पहले हम लोगों को होशियार तो करना था !"

फकीर मुहम्मद ऊपर-नीचे होनेवाली उस संकटग्रस्त नाव को देखकर भयभीत हो गया था। उसकी आंखें आंसुओं से भर आयीं।

लघा ने फिर कहा, "समुद्री शिष्टाचार को भी क्या तुमने डुबो दिया है ? हमें अपनी जान बचाने का एक मौका तो दो। एक घंटा नहीं, तो आधा घंटा ही रुक जाओ।"

फकीर मुहम्मद आशापूर्ण दृष्टि से ठाकुर को देख रहा था। ठाकुर की आंखों में उसने निर्दय हुक्म की कठोरता देखी। भारी हृदय से कप्तान अपने केबिन में चला गया।

नथु ने अंतिम वार पुकारकर कहा, "कप्तान, दूसरा कुछ नहीं कर सकते, तो कम-से-कम प्राणरक्षक कमंद (बेल्ट) ही फेंक दो, जिससे हममें से कुछ तो बच सकेंगे।"

"प्राणरक्षक कमंद की हमें भी तो जरूरत है, अपनी जान बचाने के लिए"

ठाकुर ने कर्कश स्वर में कहा।

नौका में बैठे लोगों को लगा कि अब डूब मरने का समय आ गया है, वे क्रियाशून्य बन गये।

नयी शक्ति का संचार

नथु लंघा अभी तक अन्यमनस्कता में तैर रहा था, लेकिन जहाज से अलग होते ही उसके शरीर में नयी शक्ति का संचार होने लगा। सागर के साथ जीवन-मृत्यु का दांव खेलनेवाले नाविकों की अटूट शक्ति उसकी आंखों में चमकने लगी।

"हाथ-पर-हाथ धरकर बैठने का समय चला गया, साथियो!" नथु ने आवाज दी, "कुछ लोग नाव का पानी बाहर फेंकना शुरू करें, बाकी लोग मेरे साथ जोर लगायें। पहले हम सब मिलकर मस्तूल को खड़ा कर दें।"

तूफान की रफ्तार धीरे-धीरे बढ़ती चली गयी। नौका सागर की हिलोरों की ताल पर कभी नीचे, कभी ऊपर नाचने लगी। दोनों ओर से पानी की बौछारें उछल-उछलकर नाव को नहला रही थीं।

भंडार-घर से मस्तूल खड़ा करने के लिए खंभे के दो टुकड़े लाये गये। इन दो खंभों के टुकड़ों को कील ठोककर एक बनाया गया, तब तक आधी नौका पानी से भर गयी।

"सब लोग मिलकर इस पानी को बाहर फेंको", नथु ने आदेश दिया। सबने मिलकर कोई दो घंटे के अंदर बाल्टियों से सारा पानी उंडेल दिया।

तूफान में झोंकों के बीच डगमगाती नौका के मध्य भाग में कुशल नाविक मस्तूल गाड़ने में भी सफल हो गये। उनका भी नेतृत्व नथु कर रहा था। फिर सबने मिलकर पतवार को भी मस्तूल के खंभे से बांध दिया।

"अब किसी को भी निराश होने की जरूरत नहीं। अब हमें किसी तरह का खतरा नहीं है", कहते हुए नथु ने पतवार का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। हवा के झोंके से नौका अब धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी।

तूफान की गति भी तेज हो गयी थी। ठाकुर के यहां बेगार करनेवाले चैता ने नौका को पंख फैलाते पक्षी की तरह समुद्र की लहरों पर तैरते हुए आगे बढ़ते देखा, तब संतोष से कहा, "नथु, तुमने हम सबकी आज जान बचायी। मुझे तो कोई आशा नहीं थी जिंदा बचने की। तुम पहाड़-जैसे भारी कलेजे के आदमी हो। शरीर और दिमाग की सारी ताकत निष्क्रिय होने की हालत में, प्रचंड तूफान के बीच, नौका में मस्तूल बांधना किसी ऐरे-गैरे का काम नहीं है, इससे बड़ा साहस और क्या हो सकता है?"

"जहाज के चलन ने हमारे-जैसे आदमी का कारोबार ठप्प कर दिया। हमारे पास नौका चलाने की जो शक्ति मौजूद है, जो हुनर है, उसे कौन देखना चाहता है? किसे उसकी परवाह है? हमारे पास ऐसे-ऐसे खलासी मौजूद हैं,

जिनका काम देखकर अक्ल गुम हो जाएगी।"

चैता कामदार ने नथु की बातों में दिलचस्पी लेते हुए कहा, "नथु भाई, आप कहां के रहनेवाले हैं?"

"मांडवी का हूं।"

"सुना है, मांडवी में बड़े अच्छे जहाज बनते हैं!"

नथु ने अपने चारों ओर अभिमान-पूर्ण दृष्टि डाली। तूफान ने अब प्रलयं-कारी अंधड़ का रूप धारण कर लिया था। फिर भी लहरों के शिखरों पर होती नथु की नौका सुरक्षा से अपना मार्ग तय कर रही थी। आश्वस्त होकर नथु ने कहा—

"मांडवी की नौकाएं तो दुनियाभर में मशहूर थीं। मेरे दादा, परदादा मांडवी में जहाज बनाने का काम करते थे।"

थोड़ी देर के बाद सूर्यास्त हो गया। मगर तूफान था कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। उसकी भीषण लहरों में जहाज कांपने लगा।

तभी इंजन-विभाग में से आवाज सुनायी पड़ी, "लहरों की मार से जहाज का संचारक यंत्र टूट गया है।"

ध्वनि-प्रसारक यंत्र में से कप्तान की प्रतिध्वनि सुनायी पड़ी, "यात्रियो, जीवन-रक्षा के लिए तैयार रहो। नाविको, जीवन-नौका डालने के लिए प्रस्तुत रहो।"

जहाज अब गतिहीन हो गया था। जहाज के भीतरी हिस्से में अब पानी भरने लगा था। थोड़ी देर में जहाज के यात्रियों को पानी बाहर फेंकने के यंत्र की आवाज सुनायी देने लगी। तूफान का प्रलयंकारी गर्जन सबके भीतर मौत की दहशत पैदा कर रहा था। कुछ समय तक चलने के बाद पानी फेंकनेवाली टंकी भी बेकार हो गयी। डेक पर आनेवाली बौछारों का पानी भीतरी भाग में जमा होने लगा। जहाज का अगला हिस्सा पानी के नीचे दबने लगा। प्रोफेसर उनवाला ने कप्तान को देखकर कहा, "तुम्हारा क्या अंदाज है, कप्तान?"

फकीर मुहम्मद ने संत्रस्त नजर से भयभीत लगनेवाले ठाकुर की ओर देखा।

प्रोफेसर ने कप्तान का मौन समझ लिया और धीमे स्वर में कहा, "हां, मुझे भी वैसा ही लग रहा है।"

"प्रोफेसर साहब", थोड़ी देर तक चुप रहकर अचानक कप्तान ने कहा, "आप जरा उस ओर ध्यान से देखें। अंतिम समय में लगता है, जैसे मेरी आंखें मुझे धोखा तो नहीं दे रही हैं?" कप्तान की आवाज में भय की कातरता थी, "मैंने एक नौका देखी है, हमारी जो नौका डूब गयी, ठीक वैसी ही नौका। वह सचमुच की नौका है या उसकी प्रेतात्मा है, मैं कह नहीं सकता?"

"हमने जिस नौका को जहाज से अलग कर दिया, उसका असर आपके दिल पर गहरा पड़ा है", प्रोफेसर उन-वाला ने कहा। बाद में स्वाभाविक तौर से उन्होंने उस दिशा की ओर देखा, जिधर

कप्तान ने इशारा किया था। उनकी आंखें आशा की दीप्ति से चमक उठीं। लहरों की ऊंची सतह पर हिलती-डुलती एक नौका चली आ रही थी।

जहाज के अगले हिस्से में खड़े नाविकों ने एक साथ आवाज लगायी, "नौका! नौका!! देशी नौका है!"

फकीर मुहम्मद की आंखों में नथु की नौका का प्रेत समा गया था। भय-मिश्रित पीड़ा से उसका समूचा शरीर सन्न हो गया। जहाज के एक नाविक को सहायता हेतु झंडी फहराते उसने देख लिया। जहाज की सहायता स्वीकार करने की सूचना-स्वरूप देशी नौका के मस्तूल पर वैसी ही झंडी लहरा उठी।

देशी नौका समीप आते ही उस पर खड़े व्यक्तियों के चेहरे अब स्पष्ट दीखने लगे। नौका निकट आते ही सबने एक-दूसरे को देख लिया। नजदीक आते ही नथु ने आवाज दी, "कप्तान साहब, क्या गड़बड़ है?"

"हमारा इंजन बेकार हो गया है। जहाज का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। क्या आप हमारी सहायता कर सकते हैं?"

"होशियार रहिए। मैं यहां से मजबूत रस्सा फेंकता हूं। उसे पकड़ लें। हमारी नौका जहाज को खींच ले जाएगी।"

आश्चर्यचकित हो कप्तान बोला, "क्या कहते हैं! एक नौका इतने बड़े जहाज को कैसे खींच सकेगी भला? नौका में अतिरिक्त शक्ति नहीं होती। इसलिए वह अधिक वजनवाला जहाज क्यों कर खींच पाएगी?"

"नौका की अतिरिक्त शक्ति की आप बिलकुल चिंता मत करें। आप केवल रस्सा पकड़े रखें। बाकी हम संभाल लेंगे।"

कराची बंदरगाह में पहुंचने पर सब ने नथु लंघा की नौका-संचालन-विद्या की भूरि-भूरि प्रशंसा की। वाघजी ठाकुर ने अपने कुकर्म के लिए सब यात्रियों से क्षमा मांगी और विशेष रूप से नथु लंघा के साहस के उपलक्ष्य में उसका हार्दिक स्वागत कर उसे अनेक अमूल्य उपहार दिये। इसके साथ-साथ हम्फ्री ने जहाज की रक्षा करने के लिए उसे सरकार की ओर से इनाम-इकराम भी दिलवाये।

—द्वारा, आस्था संस्थान,
९८, श्रीमद राजचंद्र मार्ग, घाटकोपर,
बंबई-४०००७७

एक महिला का कहना है, "मेरे पास एक कुत्ता है, जो दिन-भर गुर्राता है। एक तोता है, जो एक ही बात निरंतर रटता है। एक स्टोव है, जो धुआं उगलता है। एक बिल्ली है, जो रातभर घर से बाहर रहती है। भला बताइए, अब मुझे पति की क्या जरूरत?"

हिंदू मासों के नामकरण का आधार

● आचार्य डेंग्वेकर

यह बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि हिंदुओं के बारह माहों के जो नाम रखे गये हैं, उनका आधार क्या है। हिंदुओं का हर कार्य, उनका हर क्रिया-कलाप कहीं न कहीं ज्योतिष से अवश्य ही संबंधित होता है। कर्म-कांड, जन्मोत्सव, अन्न-प्राशन, मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह यहां तक कि मरण के समय भी पंचक इत्यादि का विचार किया जाता है, वह भी ज्योतिषीय पक्ष है। सप्ताह के सात दिनों के नाम भी सात ग्रहों के नाम पर आधारित हैं। हिंदुओं में पुरातन काल से ज्योतिष पर जितनी आस्था रही है संभवतः किसी दूसरी विधा पर इतनी नहीं रही। इसीलिए धर्म-प्राण हिंदू लोग हर कार्य के लिए मुहूर्त देखते हैं। यहां तक कि यात्रा, बीजारोपण, कूप-खनन, फसल की कटाई इत्यादि के समय भी ज्योतिष का आधार लिया जाता है। आयुर्वेद में भी मुहूर्त और नक्षत्र देखकर औषधि-निर्माण एवं औषधि-ग्रहण करने का विधान है। अतः हिंदुओं के बारह माहों का जो नामकरण किया गया है, इसके पीछे भी ज्योतिषीय आधार ही मुख्य है।

वर्ष के बारह माह क्रम से निम्न-

सत्ताईस नक्षत्रों के स्वरूप का चित्र : जिस माह के नीचे जो नक्षत्र दिया गया है, वह नक्षत्र उस माह में सूर्यास्त के बाद देखा जा सकता है।
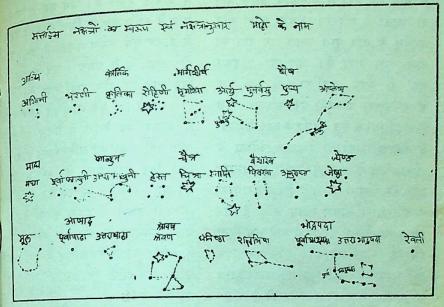
कित हैं; चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्ग-शीर्ष, पौष, माघ एवं फाल्गुन। इसी प्रकार राशि-चक्र में सत्ताईस नक्षत्र होते हैं। उनका क्रम निम्नानुसार है : अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा-फाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पूर्वा-भाद्रपदा, उत्तरा-भाद्र-पदा, एवं रेवती।

महीनों के नाम, नक्षत्रों से

उपर्युक्त सत्ताईस नक्षत्रों को बारह माहों में विभाजित किया गया है और उसी के आधार पर माहों का नामकरण किया गया है। क्योंकि माह बारह हैं और नक्षत्र सत्ताईस। इसलिए एक नक्षत्र के अंतराल से जो नक्षत्र प्राप्त होता है, उस नक्षत्र के नाम पर ही मास का नाम निश्चित किया गया है। फिर भी तीन नक्षत्र अधिक होते हैं। अतः पहले नौ नक्षत्रों में से एक नक्षत्र और अंतिम नौ नक्षत्रों में से दो नक्षत्रों का लोप करके, नक्षत्र और माह की व्यवस्था की गयी है, जो निम्नानुसार है :

अश्विनी से आश्विन, भरणी का लोप करके कृत्तिका से कार्तिक, रोहिणी

के बाद मृगशिरा से मार्गशीर्ष, इसके बाद दो नक्षत्रों के अंतराल अर्थात आर्द्रा और पुनर्वसु के बाद पुष्य नक्षत्र पर पौष का नाम रखा गया है। आश्लेषा छोड़कर मघा से माघ, पूर्वा-फाल्गुनी का लोप करके उत्तरा फाल्गुनी पर फाल्गुन, हस्त के बाद चित्रा से चैत्र, स्वाति के बाद विशाखा से वैशाख, अनुराधा छोड़कर ज्येष्ठा से ज्येष्ठ, मूल के बाद पूर्वाषाढ़ा से आषाढ़ माह की कल्पना की गयी है। उत्तराषाढ़ा के अंतराल से श्रवण नक्षत्र आता है और इस नक्षत्र के नाम पर ही श्रावण नाम दिया गया है। धनिष्ठा और शततारका, इन दो नक्षत्रों के बाद पूर्वा-भाद्रपदा नक्षत्र से भाद्रपद माह की कल्पना की गयी है। उत्तरा-भाद्रपदा एवं रेवती, इन दो नक्षत्रों का अंतर करके सत्ताईस नक्षत्रों को बारह माहों में समाहित किया गया है।

यहां यह प्रश्न उठता है कि जब मासादि का क्रम चैत्र मास से प्रारंभ होता है, तब नक्षत्रों का क्रम अश्विनी अथवा आश्विन मास से क्यों है? इसका आधार यह है कि पूरा राशि-वृत्त ३६० अंशों का है, जिसका भोग सूर्य ३६५ दिनों में करता है। ३६० अंशों को १२ भागों में विभाजित कर १२ राशियों एवं बारह माहों की कल्पना की गयी है। सूर्य एक राशि का करीब एक माह में भोग करता है। एक राशि में सवा दो नक्षत्र रहते हैं। परिणामतः सूर्य बारह माह में संपूर्ण सत्ताईस नक्षत्रों का भोग करके पुनः वर्षारंभ में मेष राशि में प्रविष्ट होता है। अर्थ यह है कि ... माह में राशि-चक्र के जिन सवा दो नक्षत्रों से होकर सूर्य क्रमण करता है, उन्हीं ... दो नक्षत्रों में से प्रमुख नक्षत्र के नाम ... हिंदू माह का नाम रखा गया है।

सायन सूर्य २१ मार्च को उत्तर ... में आकर मेष राशि में प्रवेश करता ... और उसी समय वह अश्विनीगत होता है, किंतु हिंदू सौर मास के अनुसार ... १३ या १४ अप्रैल को वह मेष राशि ... अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करता है। ... अंतर अयनांश के अंतर के कारण ... है, क्योंकि सायन राशि-चक्र से करीब ... तेईस अंश पीछे निरयण राशि-चक्र ... मान्यता है।

नक्षत्रों और मासों का सं...

सौर मास के अनुसार १३ या १४ अ... को मेष राशि और अश्विनी नक्षत्र में ... के प्रवेश के साथ चैत्र माह आरंभ हो... है। सौर मास की मान्यता बंगाल ... भारत के अन्य कुछ प्रदेशों में है। वैसे ... के संबंध में कई मत हैं, जैसे दक्षिण ... अमावस्या के बाद माह का प्रारंभ होता है ... वहीं उत्तरी भारत में पूर्णिमा के बाद ... दक्षिणी मास के प्रारंभ के १५ दिन ... ही माह प्रारंभ हो जाता है। इन्हें ... मास को संज्ञा दी गयी हैं। क्योंकि सूर्य ... ही राशि-चक्र की गणना होती है। ... माहों के नामकरण सायन सूर्य-क्रांति ... अनुसार ही रखे गये हैं। यहां प्रश्न उ... है कि जब अश्विनी नक्षत्र में सूर्य प्र...

करता है, उस समय माह का नाम चैत्र क्यों रखा गया? इसका कारण यह है कि दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण नक्षत्रों को देखा नहीं जा सकता। अतः सूर्यास्त के बाद पूर्व क्षितिज पर जो प्रमुख नक्षत्र उदित होता है, उसी के नाम पर महीने का नाम रखा गया है। यथा चैत्र माह में सूर्यास्त के करीब एक घंटे बाद पूर्व क्षितिज पर, खुली आंखों से बिना किसी दूरबीन की सहायता के, चित्रा नक्षत्र देखा और पहचाना जा सकता है, जिसके नाम पर चैत्र माह का नामकरण किया गया है। वैसे नक्षत्र सूर्यास्त के बाद क्रमशः आकाश में धीरे-धीरे दो घंटे में करीब ३० अंश की गति से पश्चिम की ओर उठते जाते हैं और मध्य रात्रि को मध्याकाश में भी इन्हें देखा और पहचाना जा सकता है।

वैशाख माह में सूर्यास्त के बाद पूर्व क्षितिज पर विशाखा नक्षत्र के उदित होने से, विशाखा से वैशाख माह का नामकरण किया गया है। इसी प्रकार अन्य माहों के नाम भी उस माह में सूर्यास्त के बाद पूर्व क्षितिज पर उदित होनेवाले प्रमुख नक्षत्र के नाम पर रखे गये हैं। इसका क्रम हमने पूर्व में दिया है। नीचे अब हम चित्रादि कुछ नक्षत्रों के स्वरूप का वर्णन करते हैं, जिससे कोई भी व्यक्ति इसे संध्योपरांत देखकर पहचान सकता है। अश्विनी में तीन तारे होते हैं, जो एक त्रिभुजाकार रूप में दिखायी देते हैं। कृत्तिका में छह तारे हैं, जिनमें से पांच तारे धनुषाकार में दिखायी देते हैं और एक तारा कमान के ऊपर दृष्टिगोचर होता है। मृगशिरा—यह मृगाकृति है। इसमें एक खटोले के रूप में चार तारे दिखायी देते हैं और इसके बीच में तीन तारे आड़े दृष्टिगोचर होते हैं।

रातभर में १३ या १४ नक्षत्र खुले आकाश में दृष्टिगोचर हो सकते हैं। शेष नक्षत्र दिन के समय सूर्य के कारण अस्त-प्रायः रहते हैं और देखे नहीं जा सकते।

उल्लेखनीय है कि जो १३ या १४ नक्षत्र सूर्य की उत्तर क्रांति में रात्रि के समय उदित होते हैं, वे जब सूर्य दक्षिण क्रांति में होता है, तब अनुदित भाग में रहते हैं और शेष नक्षत्र जो उत्तर क्रांति में नहीं देखे जा सकते, वे दक्षिण क्रांति में रात्रि के समय देखे जा सकते हैं। २१ मार्च से उत्तर क्रांति एवं २२ सितम्बर से दक्षिण क्रांति का प्रारंभ होता है।

—डेंग्वेकर ज्योतिष-विज्ञान-मंडल,
बुढ़ापारा, रायपुर, (म. प्र.)

सन १९१४ में जरमनी के बूढ़े जनरल हॉसहोफर ने जापान का दौरा किया था। मकसद था, उस महान राष्ट्र की ओर जरमनी की दोस्ती का हाथ बढ़ाना। उन्हें अपने मिशन में आशातीत सफलता मिली। फिर तो जापान और जरमनी के संबंधों में लगातार निखार आता ही गया।

जापान सरकार के आग्रह पर जनरल हॉसहोफर ने जापानियों को जासूसी के कार्यकलापों में प्रशिक्षित करने की बात

विदेश में जासूसी करने के लिए ... वेश अपनाना निहायत जरूरी भी था।

कुछ समय बाद उन्हें एक पुत्र-... प्राप्त हुआ। इंगलैंड में जन्मे इस नवजात शिशु को नियमानुसार ब्रिटिश नागरिक मान लिया गया, हालांकि उसके माता-पिता जापानी थे। नाम रखा गया उसका —सबूरो ताकागी। द्वितीय महायुद्ध में अपने देश और नरेश की खातिर अपनी जान पर खेलकर उसने गुप्तचर-इतिहास

आकाश में उड़ती सोने की सिल्लियां

● धर्मेंद्र गौड़

भी मान ली। फिर तो चुनिंदा लड़के-लड़कियों के अलावा कुछ शादी-शुदा स्त्री-पुरुषों को भी भरती करके जरमनी भेजा जाने लगा। इन्हीं में एक नव-विवाहित जोड़ी थी, जिसे जासूसी की मुकम्मिल ट्रेनिंग देकर जरमनी से इंगलैंड रवाना किया गया। लंदन शहर में खिलौनों की एक छोटी-सी दुकान खोलकर वे वहीं गुजर-बसर करने लगे।

में चार चांद लगाये थे। कुछ अनोखा करने की चाह थी उसमें। सन १९४० में द्वितीय विश्व-युद्ध के प्रारंभिक दौर में सबूरो की आयु बीस वर्ष थी। ब्रिटिश नागरिक होने के नाते उसे तुरंत रायल नेवी में नौकरी मिल गयी। उसने यह काम अपने माता-पिता के सुझाव पर ही चुना था। वैसे, थी ...
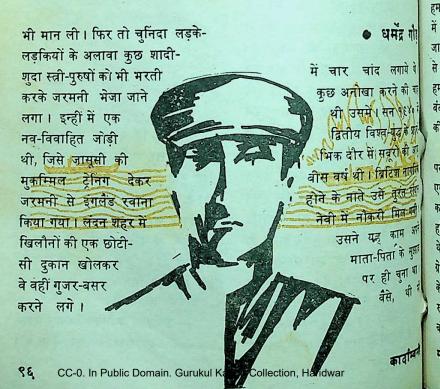
उसकी लगन समुद्री बेड़े के प्रति बचपन से ही। सन १९४२-४३ में जिस समय शाही जापानी फौजें दुश्मन को रौंदती-कुचलती भारत की ओर बढ़ रही थीं, सबूरो की नियुक्ति कराची बंदरगाह पर थी। वह वहीं से कुछ अनोखा कर गुजरने की टोह में दिन-रात एक कर रहा था।

उन दिनों मैं ब्रिटिश गुप्तचर संस्था 'मिनिस्ट्री ऑव इकानॉमिक वारफेयर' में कार्यरत था और पोस्टिंग थी मेरी बंबई में 'डिटेचमेंट फोर्स वन-थ्री-सिक्स' के अधीन। ३२, लिटिल गिब्स रोड पर मलाबार हिल के बीचोंबीच कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना के पुराने बंगले में हमारा दफ्तर था। वहीं नीचे की मंजिल में मैं रहता भी था। पूर्वी युद्ध-क्षेत्र में जापानियों से मोरचा लेने के लिए इंगलैंड से भेजा गया लड़ाई का साजो-सामान, हमारी इस गुप्तचर संस्था के मारफत ही बंबई बंदरगाह पर आता था। उन्हीं दिनों की घटना है।

ब्रिटेन से रवाना होकर, जरमन पनडुब्बियों से बचते-बचाते अंगरेजों का एक जंगी जहाज ९ अप्रैल, सन १९४४ को कराची बंदरगाह पर आ लगा। नये-नये हथियारों के अलावा उस जहाज में लदे थे विस्फोटक पदार्थ—गोला-बारूद, बम ग्रेनेड, टारपीडो शैल, एंटी एयरक्रैफ्ट गनों के गोले, डाइनामाइट छड़ियां, बीस करोड़ रुपये का सोना, आदि। इन्हें कराची और बंबई बंदरगाहों पर उतारना था। लगभग

जलता हुआ बंबई-बंदरगाह

आधी विस्फोटक सामग्री तो कराची बंदरगाह पर ही उतार ली गयी और उस खाली जगह को रुई की ८ हजार ७ सौ गांठें, १२ सौ ड्रम तेल, २ हजार टन इमारती लकड़ी और मछलियों से भरे सैकड़ों टोकरे लादकर भरा गया।

सबूरो तो था ही वर्षों से ऐसे सुनहरी अवसर की तलाश में। उचित समय पर वह भी उसी सामान के साथ छिपकर बैठ गया, जलयान का विध्वंस करने के इरादे से। उस जहाज का नाम 'फोर्ट स्टाइकिन' था और उसके कैप्टेन थे ए. जे. नाइस्मिथ।

बेचैनी के क्षण

१३ अप्रैल, सन १९४४ को बंबई डॉक यार्ड (गोदी) में छोटे-बड़े ५४ जहाज लंगर

डाले खड़े थे। दूसरे दिन १४ अप्रैल को कराची से आकर 'फोर्ट स्टाइकिन' उन्हीं में शामिल हो गया, सुरक्षा के कारण इस जहाज पर कोई खास निशान नहीं लगाया गया था, जिससे पता चलता कि इसमें गोला-बारूद आदि विस्फोटक सामग्री लदी है। इसके आने की सूचना तो हमारी संस्था को पहले ही मिल चुकी थी। सुबह साढ़े आठ बजे कैप्टेन गोडार्ड डॉक-अधिकारियों से मिल भी आये थे। 'डेंजरस गुड्स ट्रेन' (खतरनाक मालगाड़ी) से रवाना करने के लिए अस्सी वैगनों का इंतजाम भी हो चुका था, जिनमें लदवाकर यह विस्फोटक सामग्री मुझे ही कलकत्ता तक पहुंचानी थी। फिर वहीं से वह भेजी जाती खुफिया तौर-तरीके से, पूर्वी युद्ध-क्षेत्र के विभिन्न मोरचों पर।

१४ अप्रैल, सन १९४४। मैं सुबह से ही कुछ अनमना-सा था और बेचैनी महसूस कर रहा था। दोपहर में लंच लेने के बजाय, ग्यारह बजे ही थोड़ी-सी खिचड़ी खाकर लेट गया। फिर मुझे नींद ने आ घेरा। लगभग साढ़े बारह बजे अचानक हुई भीषण गर्जना ने मुझे झकझोरकर जगा दिया। लगा, कि या तो जबरदस्त भूकंप आया है, या फिर दुश्मन ने जोरदार हवाई हमला किया है।

पलंग से उठकर देखा, तो दरवाजों और खिड़कियों के सभी शीशे चूर-चूर होकर गलीचे पर बिखरे पड़े थे। इन्हें देख, मैं समझा कि बगलवाले बंगले के पारसी लड़के की करतूत है, जो अक्सर हमारे [illegible] फल-फूल तोड़ने चला आता था। [illegible] कभी गुलेल से गिलहरियों और चिड़ि[illegible] को भी मारता रहता था। मैं उसके [illegible] चार झापड़ रसीद करने की नीयत [illegible] कमरे से निकलकर हॉल में दाखिल हु[illegible] ही था कि लकड़ी के जीने से खट-[illegible] उतरते हुए हमारे अफसर-इनचार्ज, मेज[illegible] जे. क्यू. वुड, मुझे देखते ही चीखे, "बंगले से बाहर मत जाना। सिवाय एक वाय[illegible] लैस ऑपरेटर के ऑफिस में कोई नहीं है। ऐसा-वैसा अनजान आदमी दाखिल हो, तो देखते ही गोली मार देना।" और, गाड़ी स्वयं ड्राइव करके न जाने कहां गायब हो गये।

जहाज में आ[illegible]

उन्हें गये कुछ ही मिनट बीते होंगे कि दूसरी प्रलयंकारी गर्जना से पूरे बंगले की दीवारें तक हिल उठीं। नौकर-चाकर अपने-अपने क्वार्टरों से बाहर निकल आये। सभी सहमे-सहमे, घबराये हुए थे। कुछ काना-फूसी भी कर रहे थे कि जापानियों ने बंदर[illegible] पर बड़ी जोरदार बमवर्षा की है।

शाम होते-होते मेजर वुड वापस आ गये। तभी पता चला कि डॉक-यार्ड में ५५ जहाज लंगर डाले खड़े थे। [illegible] ही 'बिलरे' जलयान के कैप्टेन रॉय हा[illegible] ने 'फोर्ट स्टाइकिन' के रोशनदान से धुआं निकलते देखा, उसने तुरंत अपने जहाज के एक दूसरे अफसर को यह जानकारी दी। बावजूद इसके कि मामला असाधारण होने

के अलावा विशेष महत्त्व रखता था, उसने इसे नजरंदाज कर दिया।

लंच के बाद जैसे ही गोदी के मजदूर काम पर वापस लौटे, धुआं देखते ही चिल्लाने लगे, "आग लगी है, आग लगी है।" इतना सुनना था कि डॉक पर तैनात फायर ब्रिगेड आनन-फानन में घटनास्थल पर पहुंचा और आग बुझाने में जुट गया। तभी खतरे की घंटी बजी और सभी लोग जलते हुए जहाज की ओर दौड़ पड़े। पूरे तीन सौ आदमी आग बुझाने में लग गये, फिर भी उस पर काबू पाना मुश्किल था।

जहाज़ के कैप्टेन नाइस्मिथ ने डॉक के अफसरों से पहले मछलियां उतारने को कहा। तभी कैप्टेन ओबरेस्ट बोले, "गोला-बारूद भी तो लदा है। क्यों न जहाज को समुद्र की ओर ढकेल दिया जाए!" लेकिन, कैप्टेन नाइस्मिथ तो इतना घबरा गये थे कि कोई निर्णय ही नहीं ले पा रहे थे। फिर, विस्फोटकों की मौजूदगी सूचित करनेवाला लाल झंडा भी तो जहाज पर नहीं लगा था।

भीषण विस्फोट

ऐसी घबराहट के माहौल में एक घंटे से अधिक समय बीत चुका था। दो दरजन फायर ब्रिगेडों को आग की लपटों से जूझते-जूझते भी एक घंटा हो चुका था; मगर, फिर भी, काबू में आना तो दर-किनार, लपटों का रंग पीले से गहरा पीला होता ही जा रहा था। यह इस बात का ठोस प्रमाण था कि आग की लपटें गोला-बारूद

गजल

अब आम आदमी के खुलकर बयान होंगे
यह तय नहीं है फिर भी कुछ तो मकान होंगे

ये प्रश्न आज सबसे इस बीसवीं सदी का
चाकू की नोंक पर ही सब इम्तहान होंगे

दरकी हुई जमीं पर जब खोखले शजर हों
कैसे भला उमर पर पत्ते जवान होंगे

जब जोश में सड़क पर चलने लगें मशालें
जलते हुए शहर के, चेहरे समान होंगे

चर्चा बहुत हुआ है इस बार भी बजट का
इन चंद मुट्ठियों में फिर संविधान होंगे

देंगे वही गवाही, उम्मीद है यहां भी
धरती पे पांव जिनके, सर आसमान होंगे

रोके न रुक सकेगी, आंधी अगर उठी तो
इतिहास के सफे पर खूनी निशान होंगे

—राजकुमारी 'रश्मि'

१५, शांतिनगर, नयी सड़क, ग्वालियर

तक पहुंच चुकी थीं और किसी भी समय प्रलयंकारी विस्फोट हो सकता था।

अपनी जान बचाने की गरज से कर्मचारी इधर-उधर बेतहाशा भागने लगे। तभी भयंकर गर्जना के साथ भीषण विस्फोट हुआ, जिससे आठ-दस किलोमीटर दूर मलाबार हिल, कबाला हिल और नेपियन सी रोड तक की इमारतें एकबारगी कांप उठीं। समुद्र में तूफान आ गया। बंदरगाह में लंगर डाले खड़े सभी ५५ जहाज आग की तेज लपटों का शिकार होकर वहीं डूब गये। डॉक-यार्ड के फाटक के पासवाला पुल तो जड़ से ही उखड़कर चिथड़े-चिथड़े हो गया। सैकड़ों जानें गयीं। हजारों घायल हुए। कई लोग तो हवा में ऐसे उड़े कि कालबादेवी स्थित कॉटन एक्सचेंज बिल्डिंग से ही जा चिपके। 'जप-लांदा' जहाज २०-२५ मीटर ऊपर हवा में उछला और वहीं डूब गया।

आकाश में सोने की सिल्लियां

उस सस्ते जमाने में नेशनल बैंक और हबीब बैंक के शुद्ध सोने का भाव अस्सी रुपये तोला था। उस हिसाब से बीस करोड़ रुपये की सोने की सिल्लियों, रुई की गांठों, लकड़ी के लट्ठों और लोहे के टुकड़ों से भरा आकाश एक हजार मीटर की ऊंचाई तक नजर ही नहीं आ रहा था। मीलों दूर खड़े लोगों ने सोना इतना लूटा, इतना लूटा कि उनकी किस्मत ही बदल गयी। घायलों की संख्या इतनी अधिक थी कि बंबई के सभी अस्पताल पट गये। डॉक्टरों की अपेक्षा कंपाउंडरों और नर्सों तक ने उनके ऑपरेशन किये।

इस विनाश का लाखों टन मलबा हटाने में ही लगातार छह महीनों तक दस हजार आदमी दिन-रात जुटे रहे, जिनमें तीन हजार अंगरेज थे। हजारों आदमी तो मलबे में ही दबकर सड़ गये थे।

यह था, जापानी जासूस सबूरो ताकागी द्वारा किया गया, द्वितीय महायुद्ध का सबसे जबरदस्त 'सेबोटाज' (पूर्व-निर्धारित विध्वंस)। उसने अपने राष्ट्र और शहंशाह की खातिर अपनी जान की बाजी लगाकर अंगरेजों से पूरा-पूरा बदला लिया। कराची से उसके एकाएक गायब होने की खबर 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' के अलावा 'इंपीरियल ब्यूरो' (तत्कालीन केंद्रीय गुप्तचर विभाग) की सभी शाखाओं को दे दी गयी थी, किंतु आज तक तो उस का पता चला नहीं। अंत में यही समझा गया कि यह सब उसी की करतूत थी।

—रूंगटा बिल्डिंग, सिनेमा रोड,
गोरखपुर-२७३००१

वर्जीनिया (अमरीका) की एक नाटक-मंडली बैक्सटर थियेटर, मुद्रा के बजाय कृषि-उत्पादनों का उपयोग किया करती थी। उसने बर्नार्ड शॉ के एक नाटक की रायल्टी सूअर के मांस में अदा करने का प्रस्ताव रखा। शॉ ने प्रस्ताव को ठुकराते हुए लिखा, "क्या आपको यह भी पता नहीं है कि मैं शाकाहारी हूं।"

—अमिताभ

कहानी

• नरेंद्र विद्यावाचस्पति

हां, बीरू बहुत ही अदना-सा आदमी था। अस्पताल का एक ऐसा पीर-बावर्ची-खर-भिश्ती, जिसके बिना वहां का काम न चलता था, इतने पर भी वह वहां सबसे अदना, उपेक्षित और तुच्छ था।

वह जरूरत पड़ने पर अस्पताल में कंपाउंडरी का काम करता, वैसे वह कंपाउंडर नहीं था। वह जरूरत होने पर वॉर्ड और डिस्पेंसरी की सफाई कर लेता था, पर वह वहां का मेहतर नहीं था। वह रोगियों के लिए भोजन-गृह से खाना, स्टोर से दवाइयां, पट्टियां और अन्य सामान ले आता था, पर इस सब काम के लिए अस्पताल में उसकी नियुक्ति नहीं हुई थी।

पता नहीं, कैसे वह उस अस्पताल में आया था। शायद, कभी वह बुखार से छटपटा रहा था। गांव में उसे पानी तक देनेवाला कोई नहीं था। उसके सगे-संबंधी कौन थे, उसे यह कुछ पता न था। बचपन से वह गांव में एक यतीम-अनाथ की तरह रहा और पला था। कभी किसी ने दया की, तो खाना मिल गया। कभी किसी को ख्याल आया, तो उसे पानी के लिए पूछ लिया। उसका बचपन इसी तरह बीत गया था। कभी किसी को जरूरत पड़ गयी, तो वह उसकी बकरियां पहाड़ पर ले जाता, कभी किसी मेहरारू ने कहा, तो वह उसके लिए सोते से पानी ले आता। बदले में जो कुछ रूखा-सूखा

मिल जाता, खा-पी लेता। किसी को दया आ गयी, तो अपनी उतरन पहनने को दे देता। सरदियां अलाव के पास गुजर जातीं और गरमी का मौसम पानी के सोते या चौपाल के पास।

शायद, उसकी जिंदगी गांव में ऐसे ही कट जाती, पर एक बार उसे ऐसा ताप चढ़ा कि उसका शरीर टूट गया। कई घरों के काढ़े और जड़ी-बूटियों के सेवन से भी जब उसका बुखार नहीं उतरा, तब एक शाम वह उस अस्पताल के दरवाजे पर आया और वहीं पसर गया।

अस्पताल के नौकर ने गुहार लगायी थी, "कौन है!"

"मर रहा हूं।"

"तो हम क्या करें? यह कोई खैराती दवाखाना नहीं है, शहर जाओ। डाक्टर को दिखाओ।"

"भइया, शहर किसने देखा है? ... बुखार की एक दवाई दे दो। असीस दूंगा।"

"कौन है?"—एक भारी-भरकम आवाज आयी अस्पताल के डॉक्टर की।

"एक अधमरा, काना, बीमार अपाहिज है," अस्पताल का कर्मचारी चिल्लाया।

डॉक्टर के मेहमान एक बूढ़े डॉक्टर वहां आये हुए थे। शोरशराबा सुनकर वह बाहर आये। अपने आले से उन्होंने उस अपाहिज, काने-से छोकरे की जांच की। हाथ से बुखार का अंदाजा किया, बोले, "चलो, अंदर चलो, मैं तुम्हें दवाई देता हूं।"

वह बड़े डॉक्टर देव एक पुराने चिकित्सक थे। आसपास के गांवों में वह पैदल घूमकर लोगों का इलाज करते थे। मरीजों की दवाई के लिए खुद पैसा जुटाते और जरूरतमंदों की मदद करते। उन्होंने उस अनाथ लड़के को दवाई दिलवायी और उसके खाने-पीने का इंतजाम किया। उस दिन से वह लड़का अस्पताल का बेदाम का ताबेदार बन गया। वह वक्त जरूरत अस्पताल का सब काम करता रहता। बदले में दो समय उसे खाना-खुराक मिल जाती। शायद, सिलसिला ऐसा ही चलता रहता। कई मरीजों के बाद एक दिन डॉक्टर देव उस अस्पताल में फिर आये। वहां उन्होंने भाग-दौड़ करते हुए एक लड़के को देखा। लड़का अस्पताल का हरेक काम

बड़ी तेजी से कर रहा था।

उसी समय खबर मिली कि हॉस्टल में कई लड़के खसरे और गलपेड़ (मम्स) से बीमार हैं। उन बीमार लड़कों में इतनी भी ताकत नहीं थी कि वे स्वयं पैदल चलकर वहां आ जाएं। उस समय स्ट्रेचर या गाड़ी का भी प्रबंध नहीं था कि उन्हें वहां ले आया जाता। अस्पताल के डॉक्टर पशोपेश में थे कि वह लड़का भागकर हॉस्टल पहुंचा। वह बारी-बारी से पीठ पर लाद उन सब लड़कों को ले आया और उन्हें बड़े प्यार से बिस्तरों पर लिटा दिया। डॉक्टर साहब की उलझन सुलझ गयी।

डॉक्टर देव देर तक बड़ी दिलचस्पी से उन लड़कों की चिकित्सा देखते रहे। जब अस्पताल के डॉक्टर अपने काम से फारिग हुए, तब डॉ. देव ने पूछा, "अच्छा डॉक्टर साहब, यह लड़का कौन है? बहुत ही चुस्त और वफादार आदमी है।"

अस्पताल के डॉक्टर हंसे, फिर बोल उठे, "आपने पहचाना नहीं? यह वही लड़का है, जो उस दिन बुखार से तड़प रहा था। तबसे यहीं पर है। काम करता रहता है, खाना-खुराक पा जाता है।"

डॉ. देव ने कहा, "यह तो ठीक नहीं है। जब यह आपका पूरा काम करता है, तब आपका फर्ज है कि इसे कुछ तनख्वाह भी दें। इसे बाकायदा सर्विस में रखिए। कम या ज्यादा, इसे इसकी तनख्वाह मिलनी ही चाहिए।"

अस्पताल के डॉक्टर बोले, "ऐसा कैसे हो सकता है? बजट में इसकी कोई गुंजाइश नहीं है।"

डॉ. देव बोले, "नहीं है, तो गुंजाइश करनी होगी। जब हम इससे काम लेते हैं, हमें इसकी मेहनत की भरपाई करनी ही होगी। आपसे कहते नहीं बनता, तो बड़े डॉक्टर साहब से मैं बात करूंगा।"

सचमुच ही उस दिन से बीरू अस्पताल का मुस्तकिल नौकर हो गया था। शुरू में उसे बहुत कम पैसे मिलते थे। उनकी कोई खास जरूरत भी नहीं थी उसे। हॉस्टल के लड़कों की उतारी हुई ड्रेसों से उसके कपड़ों का काम चल जाता था। खाना और खुराक मरीजों के लिए आये हुए सामान से पूरा पड़ जाता था। वह दिन-

रात अस्पताल में खटता रहता था। तनख्वाह के दिन जब खजांची उसे बुलाते, तब वह रजिस्टर पर अपना अंगूठा लगा देता और हाथ जोड़कर कहता, "मेरा हिसाब कापी में जमा कर लो।"

ऐसे ही कई साल बीत गये। सरदी या गरमी, बरसात हो या अंधड़, वह रात-दिन उस अस्पताल में काम करता रहता। वह अनपढ़ था, एक काला अंक्षर भी वह नहीं पढ़ सकता था, पर उस अस्पताल की डिस्पेंसरी की सभी मुख्य दवाओं से वह परिचित हो गया था। डॉक्टर के निर्देश पर वह बुखार की दवाई दे देता था, चोट पर पट्टी बांध देता था, सेक और पुल्टिस कर देता था। मरीजों के कठिन समय में वह सदा आगे रहता था।

एक दिन की ऐसी ही बात आज भी भुलाये नहीं भूलती। एक लड़का कई दिनों से बीमार था। दिन-रात उसकी तीमार-दारी के लिए उसके साथी लड़कों की ड्यूटी लगा करती थी। पिछली रात को डॉक्टर और तीमारदार सभी बहुत परेशान रहे थे। अच्छी से अच्छी दवा-इलाज, सिर की ठंडी पट्टियां बदलने आदि के बावजूद मरीज की हालत लगातार बिगड़ती चली गयी थी। लगभग सूरज के झुटपुटे के साथ चिकित्सक महोदय ने उस लड़के के लिए उम्मीद छोड़ दी और कमरे से बाहर हो गये। उनकी हिम्मत छोड़ते ही लड़के की मां पछाड़ खाकर गिर गयी। पिता अनाथ और बेबस-से हो गये।

गांव का अनाथ बालक बीरू बीमार हो अस्पताल पहुंचा, तो वह फिर अस्पताल का ही होकर रह गया। . . . जब अस्पताल टूटा और उसे ढेर सारे रुपये मिले तो गांव में मामा-मामी भी पैदा हो गये, लेकिन कितने दिन के लिए . . . !

उस कठिन घड़ी में यह बीरू ही आगे आया था। उसने एक चुस्त लड़के से कहा था, "देखो, एक आखिरी इलाज रह गया है। तुम इसकी हथेलियां रगड़ो और मैं इसके तलवे रगड़ता हूं।"

उसने कुछ लड़कों की मदद से हथेलियां, तलवों और छाती ऐसी तन्मयता और फुरती से रगड़ी कि कुछ ही क्षणों में मृतप्रायः मरीज स्पंदन कर उठा और उसने पीने के लिए पानी मांगा। उस दिन बीरू की मेहनत रंग लायी थी। एक लड़का मौत के मुंह में जाकर वापस लौट आया था।

इस तरह उस अस्पताल के लिए बीरू एक निशानी बन गया था। जब तक यह संस्था चलती रही, उसका वह अस्पताल और उसकी निशानी बीरू चलते रहे। पुराने डॉक्टर देव कई बार उस अस्पताल में आये। उनके आते ही बीरू

उनके पैरों पर पड़कर फिर उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता था। डॉक्टर साहब उससे कहते, "बीरू, अब तुम समझ-दार हो गये हो। अस्पताल का सब काम कर लेते हो। गांव जाकर घर-गिरस्ती जमा लो।"

वह हाथ जोड़कर कहता, "डॉक्टर साहब, घर-गिरस्ती मेरे बस की नहीं है। फिर गांव जाकर क्या करूंगा? मेरा गांव और घर तो यहीं अस्पताल है। इस अस्पताल में लगा रहता हूं। बीमारों की सेवा-टहल ही मेरी गिरस्ती है।"

"तो बीरू, क्या जिंदगीभर यहीं ऐसे ही पड़े रहोगे?"

"अगले टाइम में क्या होगा, इसका पता नहीं डॉक्टर साहब! इतना जरूर चाहता हूं जिस जगह की देहली पर आदमी बना, वहां जब तक रहूं, पूरी नेकनीयती से रहूं। लड़कों के रोग और परेशानी से सदा लड़ता रहूं।"

उसकी बात सुनकर डॉ. देव खुश हुए। उसकी पीठ थपथपायी। चलते हुए बोले, "बीरू, तुम्हें कभी भी जरूरत पड़े तो मेरे पास दौड़े आना।"

●●

पर शायद, इस प्रकार के दौड़ने की बात कभी आयी नहीं। कुछ बरस और बीत गये। आपसी झगड़ों से वह संस्था टूट गयी। वहां केवल इमारतें ही रह गयीं। बचे हुए सब लड़के दूर भेज दिये गये। संस्था टूटने के साथ ही बीरू का भी

उसका सारा पावना दे दिया गया। वह बहुत कहता रहा, "मुझे एक पैसा भी नहीं चाहिए। मुझे अस्पताल में सदा की तरह खिदमत का मौका मिलता रहे, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

पर जब संस्था टूट गयी, जब उसका अस्पताल भी टूट गया, तब अस्पताल के साथ बीरू का काम भी छूट गया। उसे आखिरी हिसाब के साथ वर्षों की कड़ी कमाई की बड़ी रकम मिली। इतनी रकम मिलने की खबर रातों-रात उसके उस गांव भी जा पहुंची, जिसके लोगों ने उसे कभी पूछा भी नहीं था, उसकी कभी कोई खैर-खबर नहीं ली थी।
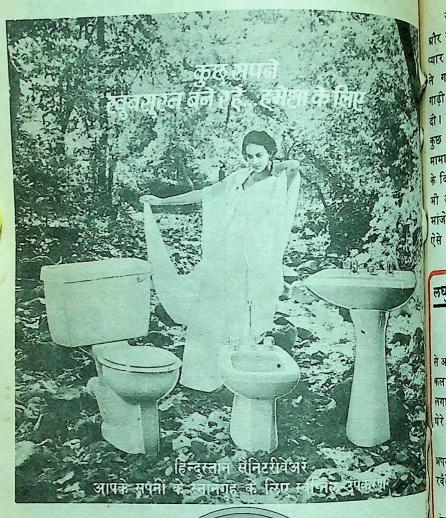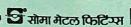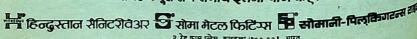
जल्दी ही उसका एक मामा आया और उसकी एक मामी आयी। दोनों बड़े प्यार से उसकी बलैया लेते हुए उसे गांव ले गये। बीरू ने रास्ते में ही अपनी गाढ़ी कमाई अपने मामा-मामी को सौंप दी। दोनों कमाऊ पूत से बहुत खुश हुए। कुछ दिन उसकी खूब खातिर-पूछ हुई। मामा ने एक साथ कई भैंसें ले लीं। शुरू के दिनों में कुछ दूध-छाछ भांजे के हिस्से भी आये, पर जैसे-जैसे दिन बीतते गये, भांजे की सेवा-टहल भी कम होती गयी। ऐसे ही दिन बीते, महीने बीते, बरसात का मौसम आ गया। सावन की एक झड़ी में बीरू ठंड खा गया, उसे तेज बुखार आ गया। वर्षों तक दूसरों की सेवा-टहल और तीमारदारी करनेवाला बीरू अंतिम घड़ी में तेज सरसाम से पगला गया। वह बोला, "डॉक्टर साहब, ठंडे पानी की पट्टी रखता हूं, अभी बुखार चला जाएगा।"

सबकी पट्टी करनेवाला बीरू बड़बड़ाकर सदा के लिए चुप हो गया। उसके सिर पर पट्टी रखनेवाला कोई नहीं आया।

—अभ्युदय, बी-२२, गुलमोहर पार्क, नयी दिल्ली-११००४९

लघुकथा

सम्मेलन

● सीतेश आलोक

सम्मेलन के लिए कलाकार दूर-दूर से आये थे। सबका एक ही दुःखड़ा था—कला के पीछे उन्होंने अपना जीवन लगा दिया, फिर भी अर्थ-संकट उन्हें घेरे है।

बहरे लोगों के देश से आया कलाकार अपनी संगीत-साधना के प्रति लोगों के रवैये से दुःखी था।

अंधों के देश का कलाकार अपनी चित्रकला में बड़े अभूतपूर्व प्रयोग करके हार चुका था।

अनपढ़ लोगों के देश का प्रतिनिधि कलाकार लेखक था। दुनियाभर के साहित्यों का अध्ययन करके उसने इतना लिखा था कि महाभारत तैयार हो जाए।

भूखे लोगों के देश का कलाकार सोने और चांदी के तारों से तरह-तरह के जगमगाते हुए आभूषण बनाता था।

कई दिन तक वैचारिक आदान-प्रदान के बाद उन्होंने मिलकर सभी देशों की सरकारों से अपील की कि वे कलाकारों को जीवन-यापन के लिए मासिक भत्ता दें और जब तक देशवासी कला का सम्मान करना न सीख जाएं, सरकार कलाकारों को बारी-बारी से मानपत्र भेंट करती रहे।

—के-४/१२, मॉडल टाउन, दिल्ली-९

हम सब टूट रहे हैं

संध्याएं आलोक खोजतीं
सूरज डूब रहे हैं
संबंधों की देहरी छूते
हम सब टूट रहे हैं

चातक एक अजाना प्यासा
कब से टेर रहा है
विश्वासों के बादल जाने
कब से झूल रहे हैं

संकट की यह घड़ियां बंधु
काटे नहीं कटे हैं
जाने कितने ही पलाश
आंखों में फूल रहे हैं

दर्द कि इक बनजारा पंछी
रह-रह लौट रहा है
गोरी, पायल, बिंदिया, काजल
किसको ढूंढ़ रहे हैं

—रमेश मेहता
२३५, रिहाड़ी, जम्मू तवी

निचाई

उसे लगा / चीड़ और खजूर
दो पेड़ और भी होते हैं
बरगद के अतिरिक्त
जो बिना पालन-पोषण के
बिना दूसरों के शोषण के
बढ़ते ही चले जाते हैं
खड़े रहते हैं / अपने ही सहारे

हां, शहरों में नहीं दिखते
होते हैं पहाड़ों की ऊंचाई पर
या समुद्र के किनारे
अथवा एकांत में
वे किसी स्वार्थ से जुड़ने
निचाई पर नहीं आते
उन्हें आतुरता भी नहीं होती
कि सब पहुंचे उन तक उन्हें देखें
जिन्हें ललक होती है
वे पहुंच जाते हैं उन तक
मनुष्य की तरह क्षणभंगुर नहीं होते
उनकी ऊंचाई-सी ही
उनकी आयु बहुत लंबी होती है

चुनाव उसका था कि उसने
पहले दोनों पेड़ों को चुना
उनसे जुड़े सारे संदर्भों की
तैयारी के साथ

—स्नेहमयी चौधरी
जी-६, मांडल टाउन, दिल्ली-११०००

राजभाषा की शताब्दी : हम कितना आगे बढ़े ?

अंगरेज लड़े थे हिंदी के लिए

● डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया

प्रायः यह समझा जाता है कि देश की स्वाधीनता के साथ और संविधान में राजभाषा संबंधी व्यवस्थाओं के किये जाने से हिंदी को 'राजभाषा' का पद मिल गया। लेकिन हिंदी में उस समय राजभाषा हो सकने की शक्ति तथा सामर्थ्य का अभाव था, इसलिए उसे उचित विकास के लिए पंद्रह वर्ष का समय दे दिया गया। यह समय बाद में हिंदी-विरोधी आंदोलनों के कारण और आगे बढ़ा दिया गया। संविधान की व्यवस्था के कारण ही केंद्र सरकार के कर्मचारियों को हिंदी पढ़नी पड़ती है। संविधान में जिस भाषा का राजभाषा के रूप में उल्लेख किया गया, उसके पीछे एक दीर्घ परंपरा है। आज की नयी पीढ़ी को जहां यह पता नहीं कि राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी पढ़ना भी स्वराज्य-प्राप्ति की दिशा में महत्त्वपूर्ण माना जाता था, वहां यह भी मालूम नहीं कि अंगरेजी राज्य में भी हिंदी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य था। हिंदी की शक्ति तथा सामर्थ्य के नाम पर क्या-क्या नहीं कहा जा चुका है।

संविधान में हिंदी को 'राजभाषा' का पद मिलने के पीछे लंबा इतिहास है, उसमें न जाकर यहां मात्र इतना उल्लेख्य होगा कि इसके लिए सभी भारतवासियों और सभी धर्मावलंबियों का प्रयास व योगदान है। भारतवासी ही क्या, अंगरेजों ने भी कम प्रयत्न नहीं किया। आज के हम भारतवासियों से तो वह अंगरेज ही अच्छे थे, जो इंगलैंड में रहते हुए अंगरेज सरकार से हिंदी के पक्ष में लड़ते रहे। इनमें सर्वप्रमुख हैं—फ्रेडरिक पिंकाट। ब्रिटिश सरकार से उनकी यह लड़ाई सन १८६८ से प्रारंभ हुई। सन १८८८ में श्रीधर पाठक को लिखे पत्र में उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा कि 'बीस साल पहले मैं एकमात्र योरोपियन था, जिसने सरकार पर हिंदी के बारे में दवाब डाला और दस साल बाद इस नियम के बनवाने में सफल रहा कि भारत जानेवाले अंगरेजों को हिंदी की परीक्षा पास करना अनिवार्य किया जाए।'

आज इस 'अनिवार्य' शब्द से सभी बिदकते हैं। पिंकाट जब इस लड़ाई को

लड़ रहे थे, तब एक ओर ग्रिफिथ ने सन १८७८ की रिपोर्ट में यह बात खोलकर रख दी थी कि 'इस देश की भाषा हिंदी है।' तो दूसरी ओर हिंदी का विश्लेषण-विवेचन कर केलाग ने सन १८७६ में 'हिंदी व्याकरण' प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने यह घोषणा की थी कि 'भारतीय आर्य-भाषाओं में महत्त्व की दृष्टि से हिंदी का स्थान पहला है।' केलाग ने स्तरीय हिंदी के भविष्य की भी इस प्रकार कल्पना की थी कि 'यदि कोई भविष्य बताने का साहस करे, तो वह यह भी कह सकता है कि भविष्य में उत्तर भारत की जो भाषा राजकाज या साहित्य की भाषा बनेगी, वह ऐसी भाषा होगी जो उर्दू की भांति अरबी-फारसी से कम प्रभावित होगी, साथ ही उसमें वर्तमान हिंदी की अपेक्षा संस्कृत व प्राकृत के शब्द भी कम रहेंगे।'

केलाग ने हिंदी भाषा के जिस रूप की कल्पना की थी, उसी रूप को भारतेंदु ने अपनाया और उसे 'नये चाल की हिंदी' से अभिहित किया, जिससे प्रभावित होकर पिकाट ने उन्हें लिखा, 'यह सच बात है कि आपकी हिंदी और हिंदुस्तान सबसे मनोहर है।'

सन १८८१ में ब्रिटिश सरकार ने भारत आनेवाले सिविल सर्विस के उच्च अधिकारियों के लिए हिंदी तथा अन्य किसी भारतीय भाषा का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया। इस संबंध में इंडिया आफिस, लंदन से सिविल सर्विस कमीशन के सेक्रेटरी को आदेश सं. ६७५-८१ जे. पी. दिनांक २-८-१८८१ भेजा गया, जिसमें काफी विस्तार से विवेचन किया गया, और अंत में इन प्रस्तावों को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया।

(नीचे प्रकाशित तालिका देखें)

इंडिया आफिस से भेजे गये प्रस्ताव

प्रेसीडेंसी या गवर्नमेंट	अभ्यर्थी के लिए अनिवार्य भाषा	वैकल्पिक भाषाएं, यदि ली जाएं तो इनाम, मार्क्स से प्रोत्साहित किया जाए
बंगाल का दक्षिणी प्रांत	बंगाली	हिंदुस्तानी तथा कोई एक प्राचीन भाषा
उत्तर-पश्चिमी प्रांत, अवध तथा पंजाब	हिंदी	हिंदुस्तानी तथा कोई एक प्राचीन भाषा
मद्रास	तमिल	तेलुगु तथा कोई एक प्राचीन भाषा
बंबई	मराठी	हिंदुस्तानी तथा कोई एक प्राचीन भाषा
बर्मा	बर्मी	हिंदुस्तानी तथा कोई एक प्राचीन भाषा

इसके साथ ही यह व्यवस्था भी की गयी कि मद्रास जानेवाले अधिकारियों के लिए हिंदुस्तानी के लिए विशेष पुरस्कार दिया जाए।

इस प्रकार सन १८८१ का वर्ष प्रशासन में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के लिए चिरस्मरणीय माना जाना चाहिए।

आगे चलकर इसी आदेश का स्पष्टीकरण करते हुए २६ जनवरी, १८८२ को सिविल सर्विस कमीशन के नाम भेजे गये पत्र में पुनः जोर दिया गया कि मद्रास

कितना आगे बढ़े हैं हम

हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के संदर्भ में यह आदेश कितना अधिक महत्त्वपूर्ण रहा होगा, इसकी ओर ध्यान देकर हमें यह भी देखना चाहिए कि इस बीच हम कितने आगे बढ़े। परीक्षा पास करना, पुरस्कार-इनामों की व्यवस्था तो आज से सौ वर्ष पूर्व ही कर दी गयी थी, आखिर हमने और क्या किया?

सिविल सेवा के अधिकारियों के लिए सन १८८१ में जो निर्णय लिया गया,

अंगरेजों के जमाने में कंपनी शासन के सामने भी महत्त्वपूर्ण प्रश्न सरकारी कामकाज की भाषा का था, वे जानते थे कि प्रशासन में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है, इसीलिए उन्होंने हिंदी के लिए उल्लेखनीय कार्य किया, लेकिन आजादी के बाद इस दिशा में हमने क्या किया है, कितना आगे बढ़े हैं हम?

जानेवाले अभ्यर्थियों को फाइनल परीक्षा में हिंदुस्तानी के लिए विशेष पुरस्कार की व्यवस्था की जाए। इसी आदेश में यह भी स्वीकार किया गया कि हिंदुस्तानी, जो एक प्रकार से समस्त भारत की सार्वदेशिक भाषा है, राजनीतिक दृष्टि से, विशेषतः बंबई में, इतनी महत्त्वपूर्ण है कि उसे कतई छोड़ा नहीं जा सकता। इसी पत्र के अंत में पुनः जोर देकर दोहराया गया कि मद्रास में हिंदुस्तानी के विशेष पुरस्कार की व्यवस्था की जाए, यद्यपि यह वहां की वर्नाक्यूलर नहीं है। और उसी प्रकार बंबई प्रांत में गुजराती के लिए पुरस्कार दिया जाए।

वह एकदम नया नहीं था। ब्रिटिश साम्राज्य ने तो पूर्व परंपरा का निर्वाह किया था, जिसके अनुसार देशी रियासतों में स्थित गवर्नर जनरल के एजेंटों के कार्यालयों में हिंदी में ही काम होता था। 'होम' विभाग में अनुवाद की व्यवस्था थी। जिला स्तर पर स्थानीय प्रशासन के कामकाज में हिंदी अथवा स्थानीय भाषाओं या बोलियों में कार्य होता था। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी नेपाल के साथ पत्र-व्यवहार में हिंदी का प्रयोग किया जाता था।

योगदान गिलक्राइस्ट का

ब्रिटिश सरकार ने कंपनी शासन की नीति को ही अपनाया। कंपनी शासन के

सामने भी महत्त्वपूर्ण प्रश्न सरकारी कामकाज की भाषा का था। उस समय के अधिकारी भी यह अच्छी तरह से जानते थे कि प्रशासन में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए सन १८०० में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की गयी और गिलक्राइस्ट को प्रोफेसर बनाया गया, जिन्होंने बड़े परिश्रम से पहले ही 'ए डिक्शनरी ऑव इंगलिश एंड हिंदुस्तानी', 'ए ग्रामर आव द हिंदुस्तानी लैंग्वेज' तथा 'द ओरियंटल लिंग्विस्ट' पाठ्य-पुस्तक तैयार कर ली थी। गिलक्राइस्ट ने अपने कालेज में लल्लूजी लाल तथा सदल मिश्र को नियुक्त किया और उनसे कुछ पुस्तकें खड़ी बोली में तैयार करवायीं।

गिलक्राइस्ट ने हिंदी के प्रारंभिक स्वरूप को किस प्रकार संवर्द्धित किया, यह अपने में विस्तृत अध्याय है। यहां तो इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि उनके प्रयासों के फलस्वरूप ठीक एक वर्ष बाद ही यह घोषणा कर दी गयी कि 'सन १८०१ से ऐसा कोई भी सिविल सर्वेंट किसी उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर नियुक्त नहीं किया जाएगा, जब तक यह निश्चित न कर लिया जाए कि उसे गवर्नर-जनरल द्वारा बनाये गये कानूनों-नियमों तथा उन भाषाओं का ज्ञान है, जो कि उसके पद से संबंधित कार्यकलाप के लिए आवश्यक हैं।'

गिलक्राइस्ट की सेवाओं के महत्त्व पर एच. एच. विल्सन ने लिखा है कि 'बड़े श्रम और सूझ से गिलक्राइस्ट ने प्रयोगों के नियम निकाले तथा एक स्टैंडर्ड स्थापित किया . . . और हिंदी को अस्थिर तथा लचकीली बोली की स्थिति से ऊपर उठाकर नियमित स्थिरता और एकरूपता दी।'

कालेज की स्थापना-वर्ष में ही कंपनी के २ सितम्बर, १८०० के डिस्पैच में हिंदी-हिंदुस्तानी के संदर्भ में गिलक्राइस्ट की सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी, लेकिन आज की तरह उस समय भी नौकरशाही ने उनके कार्य में पर्याप्त बाधाएं पहुंचायीं, जिससे क्षुब्ध होकर उन्होंने २० जनवरी, १८०२ को लिखा कि 'बाधाओं के कारण मेरा काम महीनों पीछे पिछड़ गया है और योजनाओं के प्रसार में बाधा पड़ी है।' फलतः सन १८०४ में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। बाद में इंगलैंड पहुंचकर भी वह मृत्युपर्यंत हिंदुस्तानी की सेवा करते रहे।

ब्रिटिश सरकार ने एक शताब्दी पूर्व ही सन १८८१ में राजकाज की दृष्टि से हिंदी-हिंदुस्तानी तथा भारतीय भाषाओं का महत्त्व स्वीकार कर लिया था। आज तो हिंदी के पठन-पाठन में अधुनातन पद्धतियां अपनायी जा रही हैं, पाठ्य-क्रम भी तैयार हो रहे हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में यह स्वाभाविक है कि हमें यह भी ज्ञात हो कि आखिर एक शताब्दी पूर्व इन सिविल सर्विस के अधिकारियों को क्या-क्या पढ़ाया जाता था।

इसका उत्तर फ्रेडिरिक पिंकाट के

महादेवी आयी है

मैं दिल्ली गयी थी। उन दिनों जवाहरलाल नये-नये प्रधानमंत्री बने थे। उनसे मिलनेवालों की भीड़ लगी रहती थी। मैंने उनके सचिव से कहा, "मुझे जवाहरलाल से मिलना है!"

"नहीं, नहीं, अभी उनके पास समय नहीं है, देखिए न कितनी भीड़ है। लोग उनसे मिलने के लिए आठ-आठ दिन तक यहां पड़े रहते हैं।" सचिव की बात मुझे बुरी लगी और मैंने गुस्से में उससे कहा, "उनसे जाकर इतना कह दीजिए कि महादेवी आयी है इलाहाबाद से। मेरे पास इतना समय नहीं है कि आठ दिन तक यहां पड़ी रहूं उनसे मिलने।"

सचिव महोदय को शायद लगा कि आगंतुक की अपनी कुछ अहमियत है। उसने भीतर जाकर न जाने क्या कहा कि जवाहरलाल दो-दो, तीन-तीन सीढ़ियां फलांगते हुए नीचे आये और मुझसे पूछने लगे, "क्या हुआ महादेवी? कुछ कह दिया किसी ने? क्या कह दिया?"

"कैसे लोग रखे हैं तुमने, कहते हैं आठ-आठ दिन तक पड़े रहना पड़ता है तुमसे मिलने के लिए! भई मेरे पास तो इतना समय नहीं है। औरों के पास होता होगा।"

जवाहरलाल मुसकरा भर दिये। मुझे हाथ पकड़कर ऊपर ले गये। बैठाया और, अपने हाथ से बनाकर काफी पिलायी।

—महादेवी वर्मा

१ जनवरी, १८८४ के पत्र में मिल जाता है, जो उन्होंने भारतेंदु हरिश्चंद्र को लिखा था—

'सिविल सर्वेंट केवल चार पोथी पढ़ते हैं, अर्थात डॉ. हाल साहब का 'हिंदी रीडर' किल्लोग साहब का हिंदी व्याकरण, मेरा लिखा 'हिंदी मानुएल' और शकुंतला। इन चार पोथियों के अतिरिक्त वे अन्य किसी ग्रंथ को नहीं पढ़ते।'

अंगरेजी शासन में देशी रियासतें तो अंत तक प्रायः भारतीय भाषाओं में काम करती रहीं। जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, इंदौर, ग्वालियर, अलवर, कोटा, बूंदी आदि राजस्थान तथा मध्य भारत के राज्यों के राजकाज की भाषा का माध्यम हिंदी ही रहा। यह बात ठीक है कि हिंदी पर क्षेत्रीय उपभाषाओं का प्रभाव पड़ता रहा। राजाओं को जो पत्र भेजे जाते थे, उनका हिंदी रूप भी साथ जाता था। वस्तुतः राजभाषा की इस परंपरा को ही हमें सन १९४७ के बाद आगे बढ़ाना था। अब भी कोई बहुत देर नहीं हुई। काश, विश्वविद्यालयों के बड़े-बड़े हिंदी विभाग इस प्रकार की बिखरी सामग्री को एकत्र और विश्लेषण कर प्रस्तुत कर सकें, जिससे प्रशासनिक भाषा की अभिव्यक्ति में अधिक से अधिक सहजता, सरलता और सुकरता आ सके।

—प्रोफेसर, हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाएं, लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी-२४८१७९

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

१. **एक** व्यक्ति ३० साल बाद अपनी वर्तमान उम्र से तिगुनी उम्र का हो जाएगा। बताइए, इस समय उसकी उम्र कितनी है?

क. १० वर्ष, ख. १२ वर्ष, ग. १५ वर्ष, घ. २० वर्ष।

२. **'गोंडवानालैंड'** से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में बताइए।

३. **कौन-सा** पर्वतारोही पहली बार शीतऋतु में तथा अकेले एवरेस्ट पर चढ़ने में सफल हुआ?

४. **प्रथम** तथा द्वितीय भारतीय अंटार्कटिका अभियान-दलों के नेताओं के नाम बताइए।

५. **भारत** में यहूदियों की सर्वाधिक आबादी कहां रही है?

६. **अमरीका** में किस व्यक्ति को सबसे पहले जहरीले इंजेक्शन द्वारा मृत्यु-दंड दिया गया?

७. **हमारे** देश में जन्म के समय बच्चे का औसत वजन कितना होता है? क्या वह वांछित है?

८. **गत** वर्ष प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की अमरीका-यात्रा के दौरान उन्हें कौन-सा महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्रदान किया गया था?

९. क. **पाकिस्तान** का राष्ट्रगीत किस प्रसिद्ध शायर ने लिखा है? ख. संगीत की दुनिया में उनकी कौन-सी गजल बहुत लोकप्रिय हुई? उसकी गायिका कौन हैं?

१०. **बंकिमचन्द्र** चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' का (जिससे हमारा राष्ट्र-गान 'वंदे मातरम्' लिया गया है) पुस्तक रूप में सर्वप्रथम प्रकाशन कब हुआ था?

११. **नवें** एशियाई खेलों में भारत को पांचवां स्थान प्राप्त हुआ। बताइए, आठवें एशियाई खेल कहां हुए थे और उनमें भारत का कौन-सा स्थान रहा था?

१२. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

"वैसे तो मेरे कई मित्र हैं, लेकिन मेरा सिद्धांत है कि मैं अपने मित्रों से कभी भी कर्ज नहीं मांगता हूं", एक व्यक्ति ने अपने सहकर्मी से उधार मांगने की गरज से कहा।

"वाह ! तब तो मिलाइए हाथ, आज से हम और आप मित्र हुए !" सहकर्मी ने तपाक से अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा।

*

व्यंग्य-चित्र : नीरद

एक सज्जन ने बस में बैठे अपने सहयात्री से बात करने के इरादे से कहा, "मेरे दादा नेता थे, मेरे पिता भी नेता थे और मैं भी नेता हूं।"

"अच्छा ? तब तो आप खानदानी रोग के शिकार हैं !" कहकर वह फिर से पत्रिका पढ़ने में खो गया।

*

एक चित्र-प्रदर्शनी में एक दर्शक ने चित्रकार से उसके एक चित्र की तारीफ करते हुए कहा, "मुझे आपके सभी चित्रों में केवल यही एक सबसे अच्छा लगा !"

"अच्छा, दरअसल, मुझे भी अपने सभी चित्रों में यही चित्र सबसे अच्छा लगता है। मानव-मन की जटिलताओं का सुंदर चित्रण किया है मैंने इसमें", चित्रकार ने खुश होकर कहा।

"अच्छा ? मैं तो इसे जलेबी का चित्र समझ रहा था", आश्चर्यचकित होकर दर्शक ने कहा !

*

"बेटे, जब तुम मेरे बराबर हो जाओगे, तब क्या करोगे ?" एक बेहद मोटे सज्जन ने अपने पांच वर्षीय

पुत्र से पूछा ।

"जी, पतला होने की कोशिश !'

★

एक महिला अपने पति के 'मेडिकल चेकअप' के लिए उन्हें लेकर अस्पताल पहुंची । डॉक्टर ने पति की जांच की और बाहर आकर पत्नी से कहा, "मैंने आपके पति की भली-प्रकार जांच की । लक्षण अच्छे नहीं हैं ।"

"हां, डॉक्टर साब, खुद मुझे शुरू से ही इनके लक्षण अच्छे नहीं लगते । लेकिन क्या करूं ? आखिर घर का सारा खर्च तो यही उठाते हैं और बच्चों की देखभाल भी ये ही करते हैं ।"

★

"डॉक्टर साहब, इन दिनों सोते समय मेरे खर्राटों की आवाज बहुत तेज हो गयी है, कोई दवा दीजिए, जिससे यह आवाज कम हो सके ।"

"लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि खुद अपने खर्राटों से तुम्हें क्या तकलीफ है ?"

"क्या बताऊं डॉक्टर साहब, खर्राटों की तेज आवाज से कई बार मेरी नींद खुल जाती है ।"

★

एक कवि ने अपनी लंबी-चौड़ी कविता को संपादक की मेज पर पटकते हुए कहा, "मेरा सारा दर्द इस कविता में है ।"

कविता पढ़कर संपादक ने टिप्पणी की, "आपका जो दर्द इस कविता में था, वह अब मेरे सर में आ गया है ।"

—राजकुमार जैन

हंसिकाएं

सम्मिलन

दो दलों का मेल हुआ यों
दाल में ज्यों
कंकर आ मिले हों

उपमा

कभी छोटी लाइन में
कभी बड़ी लाइन में लगे रहते हैं
जिंदगी को इसीलिए
(रेल)-गाड़ी कहते हैं

आदत

मित्र के
नन्हे शिशु को, सगुन में
रुपये देकर उन्होंने देखा
रुपये मुंह के पास ले जाने लगा
हंसकर बोले, "आपका बेटा
अभी से रुपये खाने लगा"

जाग्रति

"धरती को मां क्यों कहते हैं
जरा बताना ?"
बोल उठा बालक
"क्योंकि मां को भी भाता है
चौबीसों घंटे चक्कर लगाना"

यानी

गाइड ने कहा
"सम्मानित अतिथि
जितने भी आते हैं
राजघाट, विजयघाट
यानी, घाट-घाट पर आकर
फूल मालाएं चढ़ाते हैं"

--डॉ. सरोजनी प्रीतम

मंदिर में स्थापित दुर्योधन की प्रतिमा

मंदिर दुर्योधन का

• रघुनाथ पाटिल
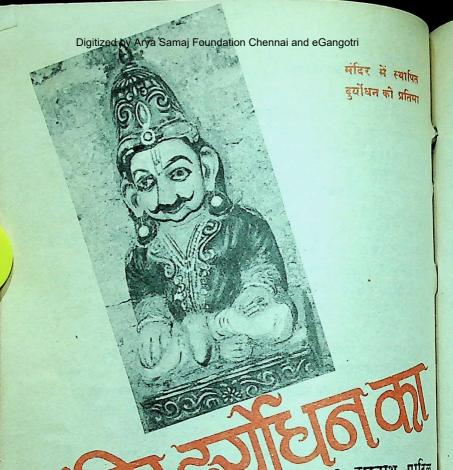
हमारे देश में एक ऐसा भी स्थान है, जहां पर महाभारत के खल-पुरुष दुर्योधन का मंदिर है। वहां उसकी भगवान के रूप में बड़ी भक्ति-भाव से पूजा भी की जाती है।

जिला अहमदनगर के करजत तहसील के भीतर दुरगांव नामका एक छोटा-सा गांव है। इसी गांव के छोर पर एक मंदिर है, जिसे दुर्योधन भगवान का मंदिर कहा जाता है। इस क्षेत्र के लोगों की भगवान दुर्योधन के प्रति अटूट श्रद्धा है। उनका विश्वास है कि वे उनकी मनोकामनाएं बहुत ही जल्दी पूर्ण करते हैं।

प्रत्येक सात वर्ष के बाद आनेवाले अधिक मास में यहां पर बहुत बड़ा मेला

दुरगांव स्थित
दुर्योधन का
मंदिर

लगता है तथा सभी भक्तों को प्रसाद के रूप में भोजन भी दिया जाता है।

अहमदनगर जिला ऐतिहासिक संग्रहालय के निदेशक श्री सुरेश जोशी का कहना है कि संपूर्ण भारत में दुर्योधन की मूर्तिवाला यही एकमात्र मंदिर है।

दुरगांव का यह पत्थरों द्वारा निर्मित मंदिर एक चबूतरे पर बना हुआ है। इस मंदिर की रचना हेमाड़पंथी मंदिरों के समान है। मंदिर के गर्भगृह में दो शिवलिंग हैं। एक शिवलिंग का आकार गोलाकार है तथा दूसरा शिवलिंग चौकोना है।

मंदिर के ऊपरवाले भाग में दुर्योधन भगवान की बैठी हुई अवस्था में मूर्ति विराजमान है। यह मूर्ति दो फुट ऊंची है। पत्थर की बनी इस मूर्ति पर चूना पुता हुआ है तथा वह तैल-रंग से रंगी हुई है। मूर्ति का मुंह पूर्व-दक्षिण दिशा की ओर है तथा प्रवेश-द्वार पूर्व की ओर है। इस का शिखर काफी ऊंचा है। अनुमान है कि इस मंदिर का निर्माण तेरहवीं शताब्दी में हुआ होगा। लेकिन यह मंदिर किसने बनवाया तथा क्यों बनवाया, इस बारे में कोई ठोस जानकारी उपलब्ध नहीं है।

चार महीने बंद

आमतौर पर देवी-देवताओं के मंदिरों के प्रवेश-द्वार रात्रि में ही बंद रहते हैं, लेकिन इस मंदिर की परंपरा ही कुछ अलग है। इसका प्रवेश-द्वार बरसात के पूरे चार माह तक बंद रहता है। बरसात के प्रारंभ में ही यह प्रवेश-द्वार ईंटों तथा पत्थरों से बंद कर दिया जाता है और बरसात का मौसम समाप्त होने के बाद फिर से खोल दिया जाता है। इस तरह भगवान दुर्योधन चार माह कैद रहते हैं! मंदिर चार महीने तक इस प्रकार बंद रखने

महाभारत के खल-पुरुष दुर्योधन का भी मंदिर और उसकी भी भगवान के रूप में पूजा—आश्चर्यजनक है, लेकिन है यह सत्य। देश में एक ऐसा भी मंदिर है, जो दुर्योधन का मंदिर कहलाता है और वहां उसकी भगवान के रूप में पूजा की जाती है।

की परंपरा के बारे में भी यह किंवदंती प्रचलित है कि युद्ध में पांडवों से पराजित होने के बाद दुर्योधन ने अपनी जान बचाने के लिए एक तालाब का आश्रय लिया था। लेकिन तालाब के जल ने दुर्योधन को आश्रय नहीं दिया। परिणामस्वरूप दुर्योधन को मजबूर होकर तालाब से बाहर आना पड़ा। तालाब के इस कृत्य पर दुर्योधन को बहुत ही गुस्सा आया, जो अभी तक नहीं उतरा है। जलवाहक बादलों को देखकर उन्हें आज भी क्रोध आ जाता है। उनकी क्रोधित आंखें देखकर जलवाहक बादल इस क्षेत्र में बिना बरसे ही भाग जाते हैं। अतः दुर्योधन भगवान की दृष्टि इन बादलों पर न पड़े, इसलिए इस मंदिर का प्रवेश-द्वार बरसात के मौसम में बंद रखा जाता है ताकि इस क्षेत्र में भरपूर वर्षा हो।

मंदिर यहीं पर क्यों ?

दुर्योधन का मंदिर यहां पर क्यों बनवाया गया, जबकि ऐतिहासिक या पौराणिक दृष्टि से इस स्थल का दुर्योधन के साथ कहीं कोई भी संबंध नहीं है? इस बारे में इस क्षेत्र में एक किंवदंती प्रचलित है कि दुर्योधन सुभद्रा से विवाह करना चाहता था। बलराम की भी यही इच्छा थी। लेकिन श्रीकृष्ण की सहायता से अर्जुन सुभद्रा को अपने साथ ले जाने में सफल हुए और दुर्योधन की इच्छाओं पर पानी फिर गया। इसी तरह अन्य कई मामलों में भी दुर्योधन को अपमानित होना पड़ा। भविष्य में और अधिक अपमानित न होना पड़े तथा अर्जुन के हाथों परास्त न होना पड़े, इसलिए दुर्योधन ने भगवान शंकर की आराधना की। भगवान शंकर दुर्योधन की आराधना से प्रसन्न हुए तथा उन्होंने दुर्योधन को यह वरदान दिया कि अर्जुन के हाथों से उसकी मृत्यु नहीं होगी और न ही अर्जुन उसे युद्ध में परास्त कर सकेगा।

दुर्योधन ने इसी स्थान पर भगवान शंकर की आराधना की थी। शंकर भगवान ने दुर्योधन को जो वरदान दिया, वह पार्वती को अच्छा नहीं लगा और वह अपने पति से रूठकर राशीन के जंगल में चली गयीं। आज भी वह इसी जंगल में यमाई देवी के नाम से विद्यमान हैं। पार्वती के रूठकर चले जाने पर भगवान शंकर यहीं पर अकेले रह गये।

आगे चलकर दुर्योधन का युद्ध में पराभव हुआ तथा भीम के हाथों वह

सिंधिया का वचन

वीणाकार उस्ताद सादिक अली के पुत्र बंदे अली जितना मीठा गाते, उतनी ही मीठी वीणा बजाते। सन १८९९ में इंदौर के महाराजा होल्कर ने उन्हें दरबार का संगीतज्ञ नियुक्त कर लिया।

इधर ग्वालियर में सिंधिया के दरबार में चुन्ना बाई की धूम थी। कोकिलकंठी थी चुन्ना बाई। महाराजा ग्वालियर को उस पर बड़ा नाज था। सिंधिया और होल्कर का राजनीतिक वैमनस्य वर्षों पुराना था, पर स्वर के घायल लोग वैमनस्य नहीं जानते थे। ग्वालियर के प्रसिद्ध उस्ताद हद्दू खां ने अपनी बेटी का विवाह बंदे अली से कर दिया था।

सिंधिया-दरबार में एक दिन चुन्ना बाई पीलू की ठुमरी गा रही थी। सिंधिया सुधबुध खो बैठे। अपने गले से कंठा उतारकर चुन्ना बाई की ओर फेंका और बोले, "वाह चुन्ना बाई, तुमसे मीठी ठुमरी हिंदुस्तान में कोई नहीं गा सकता।" तभी दरबार में बैठा कोई पारखी खड़ा होकर बोला, "महाराजा, उस्ताद बंदे अली को सुनकर आप निर्णय करते, तो संगीत के प्रति न्याय होता।"

और फिर एक दिन जब सिंधिया-दरबार में उस्ताद बंदे अली ने गाया, तब महाराजा आत्मविभोर हो गये। बोले, "बंदे अली खां, मांगो क्या मांगते हो?"

"हजूर, जो भी कुछ मांगूगा, वह मिलेगा?"

सिंधिया ने सगर्व सिर उठाकर कहा, "हां बंदे अली, जो भी मांगोगे, वही मिलेगा।" बंदे अली सर झुकाकर बोले, "हजूर, फिर मुझे आप चुन्ना बाई को दे दीजिएगा।"

महाराजा सिंधिया क्षणभर को स्तब्ध रह गये। फिर ठंडी सांसें भरकर बोले, "मैंने वचन दिया है, उसे पूरा करना ही पड़ेगा।" और महाराज़ ने चुन्ना बाई उन्हें दे दी। उन्होंने उससे निकाह पढ़वा लिया।

—बाला दुबे

पूर्ण रूप से परास्त हुआ। उसने अपने अंतिम समय में भगवान शंकर का ध्यान किया। इसलिए शंकर भगवान ने दुर्योधन को अपने यहां पर शरण दी। यही कारण है कि भगवान शंकर के मंदिर में ही दुर्योधन को भी विराजमान किया गया।

बिहार तथा उड़ीसा राज्य में कुछ जन-जातियां दुर्योधन को भगवान मानती हैं, ऐसा सुनने में आया है, लेकिन निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं है। दुरगांव में किसी विशेष जाति के लोग भी नहीं रहते हैं। मराठा तथा वंजारी जाति के लोग यहां पर रहते हैं, लेकिन इनमें से दुर्योधन की पूजा कोई भी नहीं करता है।

दुरगांव-जैसे गांव में दुर्योधन का मंदिर पाया जाना तथा दुर्योधन को भगवान के रूप में स्वीकार करना अवश्य ही आश्चर्यजनक है। इस बारे में शोध होना बहुत ही जरूरी है ताकि सही तथ्य सामने आ सके।

—पोलास गली, नया जालना-४३१२०३

सोवियत संघ में निराला का अध्ययन

● डॉ. वीरेन्द्र शर्मा

महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी साहित्य में विराट, भव्य एवं विलक्षण प्रतिभा-संपन्न व्यक्तित्व तथा क्रांतिकारी, युग-प्रवर्त्तक और मानववादी कृतित्व के पर्याय हैं। उनकी समस्त कृतियों में मुक्ति-आंदोलन, सामाजिक उन्नयन तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण के पुनीत संघर्ष में व्यापृत भारतीय जन-मानस का सहज, प्रेरणात्मक चित्रण है। भारत के समान सोवियत संघ में भी निराला का अध्ययन-अध्यापन न केवल अभिनन्द्य भारती का समीक्षात्मक आकलन है, प्रत्युत वह भारत-रूसी साहित्यिक मैत्री की प्रगतिशील यात्रा का निर्मल दर्पण भी है।

रूस में भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के प्रति अभिरुचि की काफी प्राचीन परंपरा है। स्मरणीय है कि अठारहवीं शताब्दी के अंत में प्रसिद्ध रूसी भारत-वेत्ता गेरासिम लेबेदेव ने भारत के साहित्यिक प्रवास के पश्चात हिंदुस्तानी भाषा का व्याकरण लिखा, जो सन १८०१ में लंदन से प्रकाशित हुआ। तदनंतर आर. लैंत्स, ई. पी. मिनायेव, एफ. ई. श्चेरबात्स्की, ए. पी. बरान्निकोव, वी. एम. बेस्क्रोव्नी आदि अनेक ऐसे दिवंगत रूसी विद्वानों का स्मरण हो आना स्वाभाविक है, जिन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य का गहन अध्ययन कर उसे लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत की स्वाधीनता के पश्चात रूसी विद्वानों ने आधुनिक हिंदी साहित्य का विशेष अध्ययन और अनुसंधान करना प्रारंभ कर दिया। सोवियत संघ की राजधानी मास्को से सन १९५६ में आधुनिक भारतीय कविताओं के रूसी अनुवाद का प्रथम काव्य-संकलन 'स्तीखी इंदीस्किख पोयेतोव' (भारतीय कवियों की कविताएं) प्रकाशित हुआ था। ४२५ पृष्ठीय इस

'निराला के काव्य में युग की स्पष्ट झांकी है। निराला प्रारंभ में सौंदर्य, प्रेम तथा विषाद का गान करनेवाले कवि थे लेकिन, अंत में वे क्रांतिकारी रोमांटिक कवि, यथार्थवादी और न्याय एवं अपनी जनता के उज्ज्वल भविष्य के लिए संघर्ष करनेवाले योद्धा बन गये।'

संकलन में निराला की भी १७ कविताओं के अनुवाद संकलित हैं। संकलनकर्त्ता प्रो. ये. पे. चेलिशेव ने संग्रह के प्रारंभ में आधुनिक हिंदी काव्य, उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों एवं कवियों आदि के संबंध में विशद एवं सारगर्भित भूमिका लिखी है। निराला की कविताओं का अनुवाद प्रख्यात रूसी कवि एस. सेवर्त्सेव ने किया है। उसी वर्ष मास्को से प्रकाशित होनेवाली विदेशी-साहित्य से संबद्ध रूसी पत्रिका 'इनस्त्रान्नया लितरातूरा' (विदेशी साहित्य) के ११वें अंक में सेवर्त्सेव द्वारा अनूदित निराला की कविताएं प्रकाशित हुईं।

सन १९५७ में मास्को से दो अन्य काव्यानुवाद-संग्रह प्रकाश में आये—'पोयेती आजी' (एशिया के कवि) और 'वस्तोचनीय अल्मानाख' (प्राच्य संकलन) इन दोनों संग्रहों में भारतीय कविताओं में निराला की कविताओं के अनुवाद भी सम्मिलित हैं।

उसी वर्ष दुशांबे से ताजिक भाषा में प्रकाशित होनेवाले पत्र 'कमूनिस्त ताजिकिस्ताना' के १५ अगस्त के अंक में तथा लतावियन भाषा में विल्न्यूस से निराला की कविताओं के अनुवाद प्रकाशित हुए।

सन १९५८ में एशिया और अफरीका के कवियों के जार्जियन तथा कजाख भाषा में जो अनुवाद तिब्लिसी तथा अल्मा-आता से प्रकाशित हुए, उनमें भी भारतीय कविताओं में निराला की कविताएं थीं।

समीक्षात्मक अध्ययन

इन्हीं दिनों काव्यानुवाद के अतिरिक्त

युगांतकारी महाकवि निराला

निराला-साहित्य के संबंध में समीक्षात्मक विवेचन की ओर भी भारत-वेत्ता रूसी विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ। सन १९५८ में ही मास्को से भारतीय साहित्य के संबंध में समालोचनात्मक लेखों का संग्रह 'लितरातूरी इंदी' (भारत के साहित्य) प्रकाशित हुआ, जिसमें निराला के संबंध में प्रो. ये. पे. चेलिशेव का लेख 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराली-इवो विकलाद् व सोव्रेमेन्नूयू पोयेजी इंदी' (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला —उनका समकालीन हिंदी काव्य में योगदान) संकलित है। साठ पृष्ठीय इस समीक्षात्मक आकलन में निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विविध पक्षों पर अध्ययनपूर्ण, शोधपरक सामग्री सोवियत पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की गयी है।

सन १९५९ में मास्को से रूसी भाषा में एशिया और अफरीका के साहित्यकारों की कृतियों के अनुवाद का संग्रह 'ब्रात्या

व बरवे' (संघर्ष के बंधु) प्रकाशित हुआ, जिसमें सेवर्त्सेव द्वारा अनूदित निराला की कविताएं संकलित हैं। उसी वर्ष तातारी भाषा में प्राच्य कवियों की कृतियों का संकलन कजान से प्रकाशित हुआ, जिसमें निराला की कविताएं संग्रहीत हैं।

सन १९६० में मास्को से निराला के गद्य के संबंध में चुने हुए अंशों का, सचित्र अनुवाद 'अल्का' प्रकाशित हुआ, जिसके अनुवादक वी. याकूनीन तथा आई. सिदोव हैं।

सन १९६१ में निराला की कृतियों के संबंध में दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं, 'पातोक' (धारा) कविताएं तथा नाटक (अनुवादक : एस. सेवर्त्सेव, संकलन व टिप्पणी : ये. पे. चेलिशेव, पृष्ठ : २३१, मास्को) कविताएं—(अनुवादक : एस. सेवर्त्सेव, अशखाबाद, ५वीं पुस्तक, पृष्ठ : ४०)

निराला-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान प्रो. चेलिशेव के अतिरिक्त दूसरे गहनशील तात्त्विक अध्येता वी. पी. याकूनीन ने निराला के गद्य के विषय में एक गवेषणात्मक निबंध लिखा, जो सन १९६२ में मास्को से प्रकाशित पुस्तक 'सोव्रेमेन्नाया इंदीस्काया प्रोजा' (समकालीन भारतीय गद्य) में 'अस्नोव्नीये चेर्ती खुदोजिस्त्वेन्नोय प्रोजी सूर्यकांता त्रिपाठी निराली' (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के गद्य की आधारभूत विशेषताएं) शीर्षक से संकलित हैं। इसमें निराला की गद्य-कृतियों का तत्कालीन सामाजिक परिवेश के आकलन सहित सर्वांग चित्रण है।

सन १९६५ में समकालीन हिंदी काव्य, विशेष रूप से सुमित्रानंदन पंत तथा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के संबंध में प्रो. चेलिशेव की पुस्तक 'सोव्रेमेन्नाया पोएजीया इंदी' (त्रादीत्सी इ नोवातोरस्त्वो व त्वोरचेस्त्वे सुमित्रानंदना पंता इ सूर्यकांत त्रिपाठी निराली)—(आधुनिक हिंदी काव्य—सुमित्रानंदन पंत एवं सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कृतियों में परंपरा और नवीन दिशाएं) प्रकाशित हुई। मास्को से प्रकाशित ३७२ पृष्ठीय इस पुस्तक में छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों, विशेष रूप से पंत और निराला की प्रमुख काव्य-उपलब्धियों का समग्रात्मक विवेचन है। इसके पश्चात मास्को से ही सन १९६८ में प्रकाशित 'लितरातूरी इंदी' (हिंदी साहित्य) पुस्तक में प्रो. चेलिशेव ने अन्य बातों के अतिरिक्त निराला के कृतित्व का उल्लेख किया है।

इसके बाद आधुनिक हिंदी काव्य के विषय में, जो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाश में आया, वह था रूसी भाषा में प्रकाशित 'बीसवीं शताब्दी का भारतीय साहित्य : हिंदी काव्य की कलात्मक प्रवृत्तियां।'

पूरी की पूरी पुस्तक

निराला के जीवन एवं समग्र साहित्यिक कार्य-कलाप के संबंध में एक पूरी की पूरी पुस्तक, जो मास्को में सन १९७८ में प्रकाशित हुई, वह है 'प्राच्य साहित्यकार एवं वैज्ञानिक'—लोकप्रिय प्रकाशनमाला

के अंतर्गत प्रो. चेलिशेव की कृति 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला'। इस पुस्तक का प्रारंभ करते हुए निराला की 'धारा' कविता की कुछ पंक्तियों का उद्धरण देते हुए लेखक ने निराला के ध्येय की ओर संकेत किया है और इस तथ्य की ओर भी संकेत किया है कि निराला को 'महाकवि' और 'युगकवि' कहना केवल सांयोगिक नहीं है; बल्कि साभिप्राय है। उनके काव्य में युग की स्पष्ट झांकी है, युग के हृदय की धड़कन है; युग की आत्मा प्रतिबिंबित है। उनके जटिल कृतित्व-मार्ग का लेखक ने सूत्रात्मक ढंग से इस प्रकार उल्लेख किया है, 'शुरू में वे सौंदर्य, प्रेम तथा विषाद का गान करनेवाले रोमांटिक कवि थे, प्राचीन और मध्यकालीन भारत की धार्मिक तथा दार्शनिक शिक्षाओं में आस्था रखते थे। अंत में वे क्रांतिकारी रोमांटिक कवि. यथार्थवादी और न्याय एवं अपनी जनता के उज्ज्वल भविष्य के लिए संघर्ष करनेवाले योद्धा बन गये।'

युगांतकारी घटना

'जुही की कली' के विशिष्ट महत्त्व के संबंध में चेलिशेव ने कहा है, 'निराला की प्रथम परिपक्व कविता 'जुही की कली' (सन १९१६) संपूर्ण हिंदी-काव्य के विकास में महत्त्वपूर्ण युगांतकारी घटना है, जिसे भारतीय साहित्यकार छायावादी कृतियों की कुंजी मानते हैं। इस कविता में २० वर्षीय कवि पहली बार तत्कालीन काव्य-परंपरा के विरोध में सामने आया। इसी प्रकार 'सरोज-स्मृति' (सन १९३५) हिंदी की शोक-गीत विधा में प्राथमिक रचनाओं में है। लेखक की मान्यता के अनुसार निराला हिंदी काव्य में क्रांतिकारी रोमांटिक प्रवृति के जन्मदाता हैं। उन्होंने हिंदी काव्य-कोश की सृष्टि का विस्तार किया। उनकी कविताएं 'राम की शक्ति-पूजा' और 'तुलसीदास' काव्य-शिल्प की चरमोत्कर्ष-उपलब्धि और सपूर्ण हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण रचनाएं हैं।

भेंट निराला से

सन १९५९ के अप्रैल मास में प्रो. चेलिशेव ने निराला से इलाहाबाद में जो भेंट की उसका अत्यंत भावपूर्ण विवरण इस पुस्तक में है। इस पुस्तक का हाल में ही हिंदी अनुवाद भी प्रकाश में आया है, जिसे राजपाल एंड संस, नयी दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

सन १९८० में अल्मा-आता से रूसी भाषा में एक भारतीय काव्यानुवाद-संग्रह 'गोलसा द्रूजेय' (मित्रों के स्वर) प्रकाशित हुआ, जिसमें निराला की ११ कविताएं सन्निविष्ट हैं। सन १९८१ में प्रकाशित अपनी समीक्षा-कृति 'सोव्रेमेन्नाया इंदीस्काया लितरातूरा' (आधुनिक भारतीय साहित्य) में भी प्रो. चेलिशेव ने निराला के संबंध में विशद विवेचन प्रस्तुत किया है।

—ए-३११, विदेश मंत्रालय आवास
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नयी दिल्ली-१

एक अरबी व्यंग्य

शाह उल्लू संवाद

एक बादशाह था, जो प्रायः सभी पक्षियों की बोलियों का जानकार था। बादशाह की रानियों में सबसे छोटी रानी बेहद सुंदर थी, लेकिन साथ ही वह कुछ सनकी भी थी। वह जो कुछ मांगती, उसे तत्काल पूरा किया जाता था। एक बार सनक में आकर रानी ने बादशाह से मांग की, "मेरे लिए दुनियाभर के सारे पक्षियों की हड्डियों का एक महल बनवा दीजिए।"

बादशाह ने बिना कुछ सोचे-विचारे आदेश जारी करके सभी पक्षियों को राजधानी में बुला भेजा। सभी पक्षी आ गये, लेकिन एक उल्लू को दोबारा, तिबारा, चौबारा बुलवाया गया, तब कहीं आया।

बादशाह ने उल्लू से नाराज होते हुए पूछा, "मैंने तुम्हें पहले भी तीन बार बुलवाया, तुम क्यों नहीं आये ?"

"हे बादशाह, आपने जब-जब बुलाया तब-तब मैं कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार कर रहा था ?"

"अच्छा ! फिर तो हमें भी बताओ, क्या थे वे तुम्हारे महत्त्वपूर्ण प्रश्न ?"

"पहली बार जब आपने बुलाया, तब मैं इस प्रश्न पर विचार कर रहा था कि दुनिया में जीवित प्राणियों की संख्या अधिक है या मरे हुए प्राणियों की।"

"तो इस पर तुमने क्या सोचा ? क्या निष्कर्ष निकाला ?"

"मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि जो भी जीवित हैं, वह एक न एक दिन जरूर मरता है, इसलिए जीवित प्राणियों की अपेक्षा मृत प्राणियों की संख्या अधिक है।"

"दूसरी बार क्या सोच रहे थे ?"

"दूसरी बार मैं इस बात पर विचार कर रहा था कि दुनिया में सूखी जमीन अधिक है या जल से डूबी जमीन ?"

"फिर क्या निष्कर्ष निकाला ?"

"यही कि जल में डूबी जमीन ही अधिक है क्योंकि, जमीन खोदने पर भी जल निकल आता है।"

"और तीसरी बार क्या सोच रहे थे?"

"तीसरी बार, मैं इस बात पर विचार कर रहा था कि दुनिया में महिलाएं अधिक हैं या पुरुष ?"

"क्या निष्कर्ष निकाला ?"

"यही कि महिलाओं की संख्या ज्यादा है, क्योंकि महिलाओं की संख्या में मैंने उन व्यक्तियों की संख्या भी जोड़ दी है, जो महिलाओं की सनकीपन की बातों को बिना सोचे-विचारे मान बैठते हैं।"

—प्रस्तुति : योगेंद्र पुरी

कभी परिहास में भी मित्र को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए। —साइरस

सुकरात रोज नाचा करते थे

● **विट्ठलदास मो**

सुकरात के मत से स्वास्थ्य और सहन-शक्ति स्वयं लक्ष्य नहीं, बल्कि वास्तविक लक्ष्य की, जो सुख है, प्राप्ति के साधन मात्र हैं। और, मानसिक अवस्था ठीक रखते हुए शरीर का संस्कार करना, सुख की दिशा में अग्रसर होना है।

यूनान का यह महान दार्शनिक, जो ईसा से लगभग चार सौ वर्ष पहले हुआ था, स्वास्थ्य के विचार से रोज नाचा करता था। यह बात उसके प्रसिद्ध शिष्य और उत्तराधिकारी अफलातून ने कही है। उसने सुकरात का जो चित्र अंकित किया है, वह हमारी दार्शनिकों के संबंध की साधारण धारणा—अध्ययन कक्ष में बैठे हुए, शरीर की ओर से लापरवाह और बूढ़े बाबा-जैसे तंग सीनेवाले—से बिलकुल भिन्न है। सुकरात यथार्थतः मनुष्य था। उसे अमरीकी कांग्रेस की ओर से दिये जानेवाले सम्मान, पदक या ब्रिटेन के शौर्य-पदक—'विक्टोरिया क्रॉस' के मुकाबले का अथेनियन सम्मान प्राप्त था। वह अपने शिष्यों को मैदान में शिक्षा देता था और जब जीवनपर्यंत लोगों को यह शिक्षा देते रहने के अनंतर कि मनुष्य को प्रत्येक दृष्टि से बड़ा होना चाहिए, वृद्धाव[स्था] में उसकी मृत्यु हुई, तो इस मृत्यु का कारण कोई क्षुद्र रोग नहीं था, जो साधारण[तः] अपनी उपेक्षा करनेवाले वृद्ध व्यक्ति[यों] का प्राणांत किया करता है। नहीं, [उसे] विष देकर मार डाला गया था [और] इसका कारण यह था कि वह उस [युग] के मनुष्यों को तुच्छ, संकीर्ण हृदय [के] नीतिज्ञों के मुकाबले में बहुत बड़ा [दिख] रहा था। अफलातून ने उसके मुक[दमे] और मृत्यु का जो विवरण दिया है, [वह] बहुत मर्मस्पर्शी है और उससे यह स्प[ष्ट] हो जाता है कि सचमुच मनुष्य कित[ना] महान हो सकता है।

प्राचीन यूनान में सुकरात ही ए[क] ऐसा व्यक्ति नहीं था, जो शरीर-संस्कार का हिमायती हो। उन्हीं यूनानियों [से] हमें स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क [के] आदर्श मनुष्य का भव्य विचार प्रा[प्त] हुआ है, पर केवल सुकरात के वचनों [में] पहले-पहल यह विचार ऐसे स्पष्ट रूप [में] व्यक्त मिलता है, जिसका हम समय-सम[य] पर स्मरण दिलाया करते हैं।

नैतिक पहलू

सुकरात की दलील थी कि शुद्ध और सशक्त बने रहने का नैतिक पहलू भी है। वह कहा करता था कि अगर आप बलवान पशु हैं, तो इस तरह का बलवान होने का कोई महत्त्व नहीं है। मानव जीवन का उद्देश्य सुख है, पर जब तक आप अपने मन को संयत कर बाह्य रूप के साथ उसका सामंजस्य स्थापित नहीं करेंगे, तब तक आपको उसकी प्राप्ति नहीं होगी। उसने स्पष्टतः देखा कि मरा हुआ मनुष्य-मनुष्य नहीं केवल शव—निरा शरीर है और इसलिए जीवित मनुष्य का शरीर और मन एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता। आपको उसे अखंड रूप में ही मानना होगा और आप एक की उपेक्षा कर दूसरे का विकास नहीं कर सकते। उसका पहला उपदेश था, 'आप अपने को समझें' और दूसरा था, 'किसी बात में अति न करें, संतुलन बनाये रखें, मिताचारी बनें।' किंतु, उसका मिताचार केवल खान-पान तक ही सीमित नहीं था। वह जीवन के हरेक क्षेत्र में उसका प्रयोग करता था।

अगर वह आपको मानसिक अवस्था ठीक रखते हुए शरीर-संस्कार करते देखता, तो यही कहता कि आप सुख के भागी हैं, कोई आपको बेवकूफ नहीं बना सकता। डॉक्टर, राजनीतिज्ञ, अंधविश्वासी या किसी तरह के अनाड़ी, जो अपना उल्लू सीधा करने की ताक में लगे रहते हैं, आपकी तरफ नजर नहीं उठा सकते। अगर आप अपने शरीर को अनुशासित कर लें और जो कुछ करना चाहते हैं, उससे अच्छे ढंग से कर लें, तो आप समझिए कि आप नैतिक गुणों, साहस, अध्यवसाय, एकाग्रता, सहनशीलता आदि का भी अभ्यास कर रहे हैं। साथ ही वह यह भी कहता कि इसके संबंध की बात मत कीजिए, आगे बढ़िए और कीजिए। जैसाकि हम देख भी चुके हैं, वह जो आदेश देता था, उसका स्वयं भी आचरण करता था।

अति न हो

इसके विपरीत नेपोलियन ने बहुत कुछ जानते-समझते हुए भी अपना शरीर खराब होने देकर परवर्ती जीवन में अपना पतन होने दिया। बाद के अधिकांश चित्रों में उसकी तोंद बढ़ी हुई दीख पड़ती है, और वह समय से पहले ही आमाशयिक रोग

स्वास्थ्य और सहन-शक्ति स्वयं लक्ष्य नहीं, बल्कि वास्तविक लक्ष्य की, जो सुख है, प्राप्ति के साधन मात्र हैं। और मानसिक अवस्था ठीक रखते हुए शरीर का संस्कार करना, सुख की दिशा में अग्रसर होना है।

टू-इन-वन
फोरहॅन्स
डबल एक्शन
टूथब्रश दाँतों की
सफ़ाई के साथ-साथ
आपके मसूड़ों की
मालिश भी करता है
सख़्त नीले
रेशे दाँतों की
सफ़ाई के लिये

से मर गया। उसने अपना अधिकांश समय मस्तिष्क के विकास में लगाया। उसमें मिताचार का अभाव था। वह मानस-दानव था। और, जिस हद तक उसका एकांगी और मूर्खतापूर्ण विकास उसे ले जा सकता था, ले गया। उससे सुकरात का कथन भलीभांति प्रमाणित हो जाता है। उसकी मृत्यु अति करने की मूर्खता का ज्वलंत उदाहरण है, पर उसने अपने आचरण से अपने इस कथन को प्रमाणित कर दिखला दिया कि गतिशीलता ही मनुष्य को महान बना सकती है।' दूसरे शब्दों में महान बनने के लिए आपको अपना शक्ति-चक्र पूर्णतः चालित रखना पड़ेगा। नेपोलियन अपनी गर्हित लटकती हुई तोंद के बावजूद जीवित रहा। इसका मुख्य कारण यह था कि वह शिथिलीकरण की कला में पूर्णतः दक्ष था। हममें से कुछ का तो अधिक शिथिलीकरण होता है और कुछ का जरा भी नहीं। याद रखिए, किसी में भी अति न हो।

राज्य के लिए दृढ़ वैज्ञानिक शासन आवश्यक है। युद्ध और तज्जनित स्थिति ने प्रत्येक देश में इसे स्पष्ट कर दिया है किंतु यह शासन पहले मनुष्य में ही होना चाहिए। सुकरात का कहना है कि राज्य का कर्त्तव्य हम लोगों में जो पाशव-वृत्तिवाले हैं, उनको दबाये रखना है, पर इसमें अति नहीं होनी चाहिए। शासन भी बहुत कठिन न हो, क्योंकि उस अवस्था में वह अत्याचार का रूप ग्रहण कर लेगा। व्यक्ति के संबंध में भी यही बात है। हम अनुशासन के जो नियम प्रयोग में लाते हैं, उनका उद्देश्य वासनाओं को नियंत्रण में रखना है, जिसमें ऐसा न हो कि वे प्रबल होकर हम पर शासन करने लगें।

इसलिए सुकरात कहा करता था कि हम शरीर-संस्कार का जो रूप समझा करते हैं, उससे वह बड़ी चीज है। अगर हम अपना समय अपने को सिर्फ तगड़ा बनाने के लिए शरीर-संवर्धन में लगाते रहें, तो इससे हम सुखी नहीं हो सकेंगे। तगड़ा बदन लेकर आप क्या करेंगे? क्या आप चारों ओर अपना भार डालकर लोगों को रुष्ट करना और 'वृषभकाय' उपाधि प्राप्त करना चाहेंगे? सुकरात का विचार इससे ऊंचा था। उसका कहना था कि स्वास्थ्य और शक्ति, लक्ष्य न होकर वास्तविक लक्ष्य—सुख की प्राप्ति के साधन मात्र हैं और यह सुख उस बूढ़े वीर और दृढ व्यक्ति, जो बहुत बुद्धिमान भी था, के शब्दों में पूर्ण मनुष्य शरीर और मन दोनों के योग से बने नैतिक मनुष्य का व्यापार है।

—आरोग्य मंदिर, गोरखपुर

"हाथी और मच्छर में फर्क?"

"मच्छर हाथी को काट सकता है, लेकिन हाथी मच्छर को नहीं।"

बैंकाक

सोने की हंसिनी
चमकीली
अरुण मंदिरों से
गरुड़ीय गरदन उठा झांकती
स्तूपों की राख में
पन्ने माणिक मूंगे नीलम
टोहती घिरी है
टूटे चीनी रंगीन कांच की जड़ाई से

नदियों नहरों के मटमैले जल में
बजरों पर डोलते घरों में
सपक्ष सर्प चित्रित अमृतबानों
में रेत भरे
बनैली कुमुदिनी के पड़ोस को
कूड़े से पाटते स्यामवासी
बेचते बिकते
नारिकेल कुंजों की छाया में
भगवा हरित रंग रामरजी छतों
पर पोते
खुश हैं

वा (ह) त बाजार में गिरता
भाव चढ़ता
सिक्के का बीज सिपाही डॉक्टर
वकील बैंकर की गरम
मुट्ठी में फूटता
फैलता

अधमुंदी आंखों बुद्ध ले
रहे निरंतर कमल कलियों का नैवे[illegible]
महाभिनिष्क्रमण कर चुके
निर्मित हो चुका उनकी शायित
काया पर भव्य मंदिरागार
महल की बगल में
सुजाता-प्रभु बन बैठे
राजकीय संपदा

राम प्रथम से नवम तक
मनचाही वनवास अवधि
में गेरुए वल्कलधारी रह
होते हैं प्रतिष्ठित
सिंहासन के चौखटे में
बंदूकधारी भरत-पादुका
घुमाता
राज चलाता है
झुके नमित शीश का
सारा बुद्धिबल
दानव-शमन-पूजा में
बहता
नदियां नहरें गंदली
बनाता चला जाता है

—इन्दु [illegible]
हिंदी विभाग, इंद्रप्रस्थ [illegible]
शामनाथ मार्ग, दि[illegible]

दानव-शमन-पूजा

बैंकॉक में स्वर्ण बुद्ध

बैंकॉक की एक गली

सेवार के किनारे घर

छाया : पुष्प धन्वा
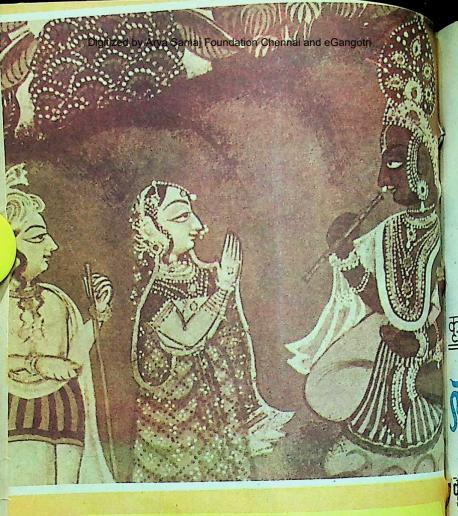
'श्रीकृष्ण' शब्द आत्मा का पर्यायवाची है। आत्मा और कृष्ण एक ही अर्थ में व्यवहृत हुए हैं। सब भूतों में स्थित यह आत्मा अविभक्त है, सर्वत्र है, और एक ही है। इसलिए कृष्ण देवकीनंदन नहीं, पर आप और हम सबकी वह आत्मा है। आत्मा और परमात्मा एक है। देवकीनंदन के जन्म के पहले भी श्रीकृष्ण था, अर्थात् आत्मा और परमात्मा था। वह महाभारत-काल में भी था, आज भी है, और भविष्य में भी रहेगा, क्योंकि वह अजर है, अमर है, अनादि है, सर्वत्र है।

कृष्णं वंदे जगद्‌गुरुम्

लोक कल्याण ही श्रेष्ठ यज्ञ है

घनश्यामदास

● विवेचक : डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

कुछ ऐसा सौभाग्य है मेरा कि संयोग से अकस्मात मुझे ऐसे मूल्यवान-अर्थगर्भित ग्रंथ मिल जाते हैं पढ़ने, रसास्वादन के लिए कि सोचता रह जाता हूं कि मुझ-जैसे लेखक व्यक्ति को ही अनुभव क्यों होते हैं ? अभी हाल में ऐसा ही हुआ। स्वामी चिन्मयानंद ने अंगरेजी भाषा में केनोउपनिषद की व्याख्या-पुस्तक में धर्म की भूमिका दी है। एक शब्द विशेष पर विचार-विनिमय चल रहा था कि सहज ही मेरे मान्य भाई रामनिवास जाजू ने अपनी आलमारी से एक पुस्तक निकालकर मेरे हाथ में रख दी—श्री घनश्यामदासजी बिड़ला कृत 'कृष्णं वंदे जगद्‌गुरुम्'।

भ्रांतियों के घेरे में

हमारी वर्तमान शिक्षा-दीक्षा ने आज दो जबर्दस्त भ्रांतियां हम में फैला रखी हैं।

'कृष्णं वंदे जगद्‌गुरुम्' के सर्जक

पहली भ्रांति है निरे 'ब्रह्मवाद' की, जिसका अर्थ यह लगा लिया गया है कि सब कुछ या तो शून्य है, या माया है। दूसरी भ्रांति है, पश्चिमी छूंछे तर्कवाद की। प्रायः हम लोग कृष्ण, राम, शिव, कथा और चरित-कथाओं को या तो प्रतीक मानकर ही अपना दामन बचाते हैं या तर्क-पांडित्य का लबादा ओढ़कर कृष्ण-जैसे चरित्रों को इतिहास-पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित करके अपना सांस्कृतिक अभिमान सुरक्षित रख सकने का प्रयत्न करते हैं।

मैं अपने छात्र जीवन में इन भ्रांतियों का विवश शिकार रहा हूं। पता नहीं, कैसे इस गहन गुंजलक से मुझे मुक्ति मिली, पर आज भी जब 'कृष्णं वंदे जगद्‌गुरुम्'-जैसी निर्मल वाणी सुनने-देखने को मिलती है तो उसी मुक्ति की याद आ जाती है।

गुंजलक टूटने की प्रक्रिया शुरू हुई थी महामहोपाध्याय श्री गोपीनाथ कविराज की वाणी 'श्रीकृष्ण प्रसंग' से। कृष्ण की पूर्ण सत्ता अखंड और अद्वैत है। इसके अनंत प्रकार हैं। अनंत प्रकार के स्फुरण हैं, कलाएं हैं, अंश हैं। अंश के भी अंश हैं। इन सब के रहने पर भी कृष्ण निष्फल, निरंजन, समत्व, निर्गुण एवं निष्क्रिय है।

यहीं गहन सत्यानुभूति आनंद-जनक सरलता, सहजता के साथ, केवल सीधे-सादे ढंग से 'कृष्णं वंदे जगद्‌गुरुम्' में है। घनश्यामदासजी ने सहज ही बातों ही बातों में अपनी बात शुरू की है। चर्चा छेड़ी है अपने जीवन के कुछ संस्मरणों से, जिनके लिखने के पीछे इनका कोई 'हेतु' नहीं था। पर आगे चलकर, 'मित्रों का आग्रह हुआ कि मैं अपना जीवन वृत्त क्यों न लिखूं ?'

जीवन वृत्त लिखूं तो कौनसे 'मैं' का

जब अपना जीवन वृत्त लिखने चले तो ऐसे कर्म-पुरुष के लिए यह स्वाभाविक ही था कि अपने-आप से साक्षात्कार करें, सहज ही जीवन अस्तित्व के इस बुनियादी प्रश्न के आमने-सामने खड़े हों कि मैं अपना जीवन वृत्त लिखूं तो यह कौन से 'मैं' का ?' क्योंकि 'मैं' की कितनी-कितनी मृत्यु और जन्म हैं। इसी प्रश्न के उत्तर में, खासकर जीवन-चरित्र संदर्भ से श्रीमद्‌भागवत और महाभारत के कृष्ण के जीवन का गहरा प्रसंग जुड़ा। यह बात बिल्कुल सच और स्वाभाविक है कि यदि कोई सच्चा पुरुष (पुरु+ष=अपने पुर का वासी) अपने जीवन को देखने-लिखने चलेगा तो वह वही पाएगा जो घनश्यामदासजी ने पाया है।

निश्चय ही पुरुष जब अपने भीतर देखेगा तो उसे अपना अंधकार ही पहले दिखेगा। यही अंधकार देखते-देखते

अपनी श्यामलता में अशेष अंधकार को आकृष्ट करनेवाले कृष्ण का ही साक्षात्कार, वह पुरुष निश्चय ही करेगा। क्योंकि वह अंधकार ही प्रकाश का (जगद्‌गुरुम्) एकमात्र झरोखा होगा, ऐसे साधक व्यक्ति के लिए।

भक्ति : अभ्युदय का मार्ग

विद्वान लेखक ने भागवत धर्म को नारायणीय धर्म सिद्ध कर भक्ति को अभ्युदय का सरल मार्ग बताया है। इस प्रसंग में बताया है कि नर और नारायण ये दो ऋषि थे। आगे चलकर इन्होंने ही कृष्ण और अर्जुन के रूप में अवतार लिया। इनके अवतार का 'हेतु' भी यही बताया कि इस लुप्त और जीर्ण भागवत धर्म का, अर्थात प्रवृत्ति मार्ग या निष्काम कर्म का, जिसको कर्मयोग भी कहा गया है—जीर्णोद्धार करना।

भागवत धर्म के जनक श्रीकृष्ण हैं। इन्हीं के आधार पर महाभारत और भागवत धर्म की प्रतिष्ठा हुई। इसी प्रकाश में संतों और आदि शंकराचार्य ने भजनों द्वारा जन-धर्म की रक्षा की। बाद में अनेक भक्त संतों ने भक्ति और निवृत्ति पर जोर लगाते हुए भी भागवत धर्म, जो निश्चय ही कर्म और भक्ति का सम्मिश्रण था, उसको जगाया।

लोक कल्याण ही श्रेष्ठ यज्ञ है

भारतीय मनीषा के मूलाधार को घनश्याम दासजी ने बड़ी स्पष्टता और मजबूती से पकड़ा है। धर्म और संन्यास पृथक नहीं है। इसी का दूसरा पक्ष है कि 'लोक कल्याण ही श्रेष्ठ यज्ञ' है। मनीषा के

इस आधारभूत सत्य को, बड़ी मृदु-शिशु भाषा में, मानो अमृत घोलकर उन्होंने समझाया है। अर्जुन ने कहा, "मैं लड़ूंगा नहीं।" और भगवान ने कहा, "कर्म कर। अकर्म से न चिपट।" सच, हमारे पूर्वजों की यही खोज है। कर्म न करने मात्र से मनुष्य कर्म से नहीं छूटता, गीता के हर अध्याय में से लेखक ने उसके सार तत्व को पकड़ा है। गीता के हर अध्याय में कर्मयोग के साथ-साथ श्रीकृष्ण ने भक्ति पर 'भार' दिया है। "जो सारे कर्म मुझमें अर्पण करते हैं, मेरी ही ध्यान, उपासना करते हैं, उनका मैं संसार-सागर से शीघ्र उद्धार कर देता हूं।"

सब कुछ कृष्णमय है

श्री कृष्ण महातत्व की इसी भूमिका पर घनश्याम दासजी ने कृष्ण के चरित्र को जिन कथा-प्रसंगों, घटना-रेखाओं, लीला-रंगों, भावों से देखा है, वह अनुपम है। इसमें जो कहा गया है, वह तो श्रीकृष्ण प्रसंग है ही। पर इससे जो ध्वनित और व्यंजित हुआ है, वही अमूल्य है। श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र को जिस तरह से प्रस्तुत किया गया है—भाषा शैली से लेकर कृष्ण-जीवन-प्रसंगों के चुनाव और प्रस्ताव तक, सब पर विचार करके देखने पर समझ में आएगा कि श्रीकृष्ण स्वरूप के साथ जड़शक्ति का कोई विरोध नहीं।

कृष्ण: माधुर्यमय प्रकाश

सत्य यह है—'कृष्ण ही जगत है।' सब कुछ कृष्णमय है, जिसकी ऐसी भाव-रस भीनी वंदना घनश्याम दासजी ने की है। द्वारिका धाम में श्रीकृष्ण जो स्वयं भगवान हैं उनका प्रकाश पूर्ण है। मथुरा धाम में पूर्णतर है। ब्रजधाम में पूर्णतम है। श्रीकृष्ण सभी अवतार-समूह के बीज स्वरूप हैं। सभी शत्रुओं का वध करके उन्हें गतिमान करते हैं। प्रत्येक के विग्रह में ही कोटि ब्रह्मांड समन्वित हैं। श्रीकृष्ण लीला ही भागवत लीला का अनंत प्रकाश है।

आत्मा (कृष्ण) और परमात्मा काल और स्थान से अबाधित है। इसलिए महापुरुषों की कथा इस विश्व की ही कथा है, ऐसा समझकर हम इस समाप्ति पर उसी कृष्ण की वंदना करते हैं, जो सर्वत्र, हममें है, आप में है। 'कृष्णं वंदे जगद् गुरुम्'

—बिड़ला बिल्डिंग
आर. एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता

काली बिल्ली द्वारा रास्ता काटा जाना हमारी तरह रूस में भी अपशकुन माना जाता है। वहां काली बिल्ली को दुर्भाग्य का प्रतीक माना जाता है।

●

फ्रांस की एक थी-रानी मेरी दी मेदिसी। उसके कपड़ों का कम से कम वजन २५ सेर होता था, क्योंकि उनमें ३९०० मोती व ३००० हीरे गुथे होते थे। और वह इन कपड़ों को एक बार पहनने के बाद दोबारा नहीं पहनती थी।

जाने कहां भटक गया

शायद वहां निशान था लक्ष्मण लकीर का
लिक्खा है धूप ने जहां दोहा कबीर का

दौलत के चक्रव्यूह में अभिमन्यु की तरह
होता रहा है खून निहत्थे जमीर का

ये जिंदगी भी एक लुकाठी है दोस्तो—
सहती रही है भार जो बूढ़े शरीर का

लड़ना है गर तो ढूंढ़ बराबर का आदमी,
तू क्यूं खड़ा है रोक के रस्ता फकीर का

तारीकियों में ढूंढ़ता फिरता हूं मैं उसे—
जाने कहां भटक गया साया शरीर का

—ज्ञान प्रकाश विवेक
६।५०८, निकट सिविल अस्पताल
बहादुर गढ़ (हरियाणा)

शेष बची साध

लालसा देखने भर की
हृदय में जगी
फिर विलीन हो गयी
अब बच रह गया बस
विचारों का सिलसिला
और मूल में
एक प्रश्न . . . निरंतर
खोज रहा समाधान

दो डबडबायी आंखें
निराशाओं का गहरा समंदर
हाथ उठाये सदा देती आशाएं
अपने में सिमटे-शरमाये
व्याकुल अरमान
अपरिमित संभावनाएं
साकार हो पाना
क्या संभव है ?
एकमात्र साध
गुंजलक में एक दूसरे को
कुचल डालने की

—मुकेश चंद्र 'अलख'

३१०, रेंटल फ्लैट
कंकर बाग कॉलोनी
पटना—८०००२०

कहानी

सूर्य ने जब पश्चिम का रुख किया, तो हमीदा अपने शयन-कक्ष में चली गयी। उसका मन किसी और दुनिया में घूम रहा था।

रात के खाने का समय हो रहा था। हमीदा के पिता अकबर काफी देर पहले घर आ चुके थे। वे मगरिब (शाम) की नमाज भी अदा कर चुके थे। उनका आयात-

• कन्हैयालाल गांधी

निर्यात का बहुत बड़ा व्यापार था। घर में पैसे का कोई हिसाब नहीं था। उनकी कमाई पुश्तों तक के लिए काफी थी। अधिक पैसा कमाने की लालसा उनके हृदय में नहीं थी, इसलिए दिन छिपते ही वह घर आ जाते थे और कुछ समय परिवार के साथ व्यतीत करते थे। जब आठ बजने को आये, तब उनके तीनों लड़के और वह स्वयं खाने के कमरे में दाखिल हुए। इतने में उनकी बीस वर्षीया इकलौती बेटी हमीदा भी वहां पहुंच गयी। वह परेशान थी, पर उसने अपनी परेशानियों को पिता पर व्यक्त न होने दिया।

इतनी बड़ी हवेली के एक कोने पर स्थित अपना कमरा आज हमीदा को अधिक अकेला लग रहा था। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था, इसलिए वह बिस्तर पर लेट गयी। दो क्षण के बाद वह फिर उठी। उसने १७ जनवरी, १९७२ का समाचार-पत्र उठाया, जिसे वह संभाल-

कर रखे हुए थी। उसने ढाका से प्राप्त इस समाचार-पत्र को पुनः पढ़ा। मालूम नहीं, पांच पंक्तियों के इस समाचार को आज से पहले वह कितनी बार पढ़ चुकी थी। समाचार इस प्रकार था—'ढाका, जनवरी १५—बंगलादेश युवती-मंडल की प्रधान फातमा बेगम ने बंगला राष्ट्र की महिलाओं की ओर से देश की सेना के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया और कहा कि उनके बलिदान के फलस्वरूप ही मुल्क आजाद हो सका है। उन्होंने
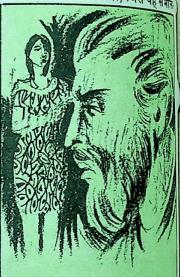
यह भी घोषणा की कि मंडल की अनेक युवतियों ने यह भी निर्णय लिया है कि वे आजादी के इस युद्ध में विकलांग हुए सेनानियों के साथ विवाह करने को तैयार हैं। इसके लिए वे धर्म अथवा जाति-भेद की भी परवाह नहीं करेंगी।'

हमीदा सोचने लगी, 'बंगलादेश की महिलाओं ने जो किया है, वह मैं क्यों नहीं कर सकती? भारत का इतिहास भी नारियों के गौरवपूर्ण कारनामों से भरपूर है। मैं भी इस स्वर्ण इतिहास में एक और कड़ी जोड़ूंगी। यदि जरूरत पड़ी, तब मैं भी धर्म और जाति-भेद के बंधनों की बेड़ियों को तोड़ दूंगी।' उसने समाचार-पत्र तकिये के नीचे रखा, बत्ती बुझायी और फिर बिस्तर पर लेट गयी।

सुबह हुई। फजिर (सुबह) की नमाज पढ़ने के बाद जब दुआ मांगने के लिए हमीदा ने हाथ फैलाये, तब उसने केवल यही दुआ मांगी, 'ए मेरे अल्लाह! मुझे अपने इरादे में अटल रहने की शक्ति प्रदान करना।'

वह दोपहर को ही कॉलेज से घर लौट आयी क्योंकि उसके वालिद दोपहर का भोजन करने घर आते थे और वह अकेले में उनसे बातें करना चाहती थी।

"अब्बाजान, मैं आपसे यह जानना चाहती हूं कि आपने मेरे अर्थ-शास्त्र के प्राध्यापक राजकुमार को क्यों हटा दिया है?" हमीदा ने खाने की मेज पर जब अपने वालिद से यह सवाल पूछा तो वह कुछ चौंक से गये, बोले, "बेटी, तुम जानती हो कि तुम्हारे मौसा ने आपत्ति उठायी थी, अन्य जाति के एक व्यक्ति का इस प्रकार हमारे घर पर आना ठीक नहीं है। महल्ले के लोग भी तरह-तरह की बातें कर सकते हैं। बेटी, कल को मुझे जब तुम्हारा रिश्ता करना होगा, तब यह बातें रास्ते में बहुत बड़ा रोड़ा बन सकती हैं।" यह कहते हुए वह उठ खड़े हुए।

उनके चले जाने के बाद, हमीदा अपने कमरे में चली गयी। उसके मन में आक्रोश की आग और तेजी से भड़कने लगी। वह रह-रहकर यह सोचने लगी, 'मुझ पर यह अविश्वास . . . ! मौसा के कहने मात्र पर राजकुमार और उसके पिता के साथ वर्षों से बने संबंधों को एक-

दम एक तरफ कर दिया गया, जब कि राजकुमार अनेक प्रकार से गुणवान और एक बहुत बड़ा देशभक्त भी है। बंगलादेश के स्वतंत्रता-संग्राम तक वह भारतीय सेना में था। बंगलादेश के युद्ध में विकलांग होने के बाद ही उसने कॉलेज में नौकरी शुरू की है। महल्लेवाले यदि कुछ ऐसी बातें करते हैं, तो राजकुमार को घर आने से रोक देने पर उनकी जबान और खुल जाएगी और मेरा चरित्र निराधार ही संदेह का विषय बन जाएगा।'

आज की रात हमीदा के लिए एक बहुत कठिन निर्णय लेने की रात थी। अब तक वह पिता से तीन बार आग्रह कर चुकी थी कि वह अपना फैसला वापस ले लें और राजकुमार फिर से उनके घर आना शुरू कर दे, परंतु हर बार उसने

पिता के रुख में अधिक रूखापन दे...

सुबह उठकर उसने रोज की न... नमाज अदा की और राजकुमार ... मिलने कूंचा नटवर स्थित उसके घर ... पहुंची। राजकुमार अभी कॉलेज ... गया था। घर में राजकुमार के अतिरि... उसकी मां भी थी। हमीदा को इस ... अपने घर पर आये देखकर राजकु... को आश्चर्य-सा हुआ, "अरे, आज तु... कॉलेज क्यों नहीं गयीं?"

"बस, वैसे ही। आज पढ़ने का म... नहीं था।"

"तुम आज कुछ परेशान-सी न... रही हो। आखिर मामला क्या है?" उसने पूछा और अपने इस प्रश्न के उत्त... में हमीदा की यह तजबीज सुनकर कि वह उससे विवाह करना चाहती है, राज... कुमार स्तब्ध रह गया। कुछ क्षणों के बा... निश्चय रूप से यह जानकर कि उस... सामने कोई स्वप्न नहीं, अपितु एक सत्य... स्थिति है, जो उसके पौरुष को ललका... रही है, वह कुरसी पर सीधा होकर बै... गया। इतने में मां चाय लेकर आ गयी... उसने मां से कहा, "मां, हम दोनों जीवन... साथी बनना चाहते हैं। हमें आपका आशी... र्वाद चाहिए।" मां यह सुनकर आश्चर्य... चकित रह गयी। उसने कहा, "बेटा, ए... अमीर और एक साधारण परिवार के... बीच रिश्ता कैसे टिक सकेगा? हमीदा... इतने आराम में पली है, सुख-सुविधाओं... से रहित इस घर में वह कैसे खुश र...

सकेगी ? और फिर जब उसे तुम्हारी तकलीफ के संबंध में डॉक्टरों की राय का पता चलेगा, तो वह भी वही न करे, जो अनुराधा ने किया है ?"

"मैंने आपको मां कहकर बुलाने का फैसला कर लिया है ।" मां को नम्रतापूर्वक संबोधित करते हुए हमीदा ने कहा, "और ऐसा निर्णय लेने से पूर्व मैंने पूरी तरह सोच-विचार कर लिया है । अब कोई भी बात मुझे अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती ।"

"बेटी, कठिनाई की मात्र कल्पना और वास्तविक कठिनाई में बड़ा अंतर होता है । कल जब गली बोस्तान में रहनेवाली आबादी शोर करेगी या तुम्हारे पिता जब कचहरी जाएंगे, उस समय यदि तुम्हारे कदम डगमगा गये, तब हमें जीतेजी जमीन में गड़वा दिया जाएगा । आज से बीस वर्ष पहले मैं ऐसी एक घटना इसी शहर में देख चुकी हूं ।"

उन्हें बीच में ही रोक हमीदा ने पास में पड़ी मेज पर से तीन कागज उठाये । उन कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करते हुए उसने कहा,' "यह लीजिए मेरे कथन की सच्चाई का प्रमाण । यदि मैं अपने निश्चय से विचलित हो जाऊं या मेरे कारण आप पर कोई आपत्ति आने लगे, तो जो जी चाहे इन कागजों पर लिख लेना ।"

अगले दिन राजकुमार और हमीदा ने कोर्ट में जाकर शादी कर ली । हमीदा कुमारी के स्थान पर गृहिणी बन गयी

और उसका नाम हुआ—कीर्तिलता ।

हमीदा के माता-पिता को शाम तक जब यह सूचना पहुंची, तो उनकी छाती पर सांप लोट गया । उन्होंने रिश्तेदारों और गली-महल्लेवालों को इकट्ठा किया और राजकुमार के घर की ओर नारे लगाते हुए चल दिये ।

अब तक दोनों पक्षों के सामाजिक कार्यकर्ता भी वहां पहुंच गये । उन्होंने हमीदा के बाप को समझाया कि कानून को अपने हाथ में न लें बल्कि कचहरी में जाएं । तीन-चार घंटे की कोशिशों और दौड़-धूप के बाद मामला कुछ ठंडा पड़ा । जुलूस गली बोस्तान को वापस लौट गया ।

लेकिन, दूसरी तरफ हमीदा के माता-पिता और उनके रिश्तेदारों को चैन कहां ?

उनकी लड़की इस प्रकार से चली जाए, यह उनकी बरदाश्त से बाहर था। उसी रात कुछ लोग राजकुमार के घर पहुंचे। उन्होंने राजकुमार, उसकी मां और कीर्ति को कुछ सुंघवाकर बेहोश कर दिया। फिर उन्हें रस्सियों से बांध दिया। उनके मुंह पर भी कपड़ा बांध दिया, ताकि होश आने पर वे आवाज न कर सकें। इसके बाद वे कीर्ति (हमीदा) को कंधे पर लादकर फरार हो गये।

सुबह होश आने पर राजकुमार और उसकी मां से कुछ भी छुपा न रहा कि उनके साथ क्या हुआ है। उनके शोर करने पर महल्ले में फिर से हंगामा बरपा हो गया। भीड़ एकत्र हो गयी। तरह-तरह की बातें होने लगीं। लोग पुलिस पर हर प्रकार के ताने कसने लगे।

इसी दौरान कूंचा नटवर में सूचना पहुंची कि हमीदा के मां-बाप हमीदा और सगे-संबंधियों को लेकर कचहरी रवाना हो गये हैं। उन्होंने हमीदा को कोर्ट में यह बयान देने के लिए राजी कर लिया है कि राजकुमार उसे जबरदस्ती अपने घर ले गया था और उसके जोर-जबर और भय में आकर हमीदा ने राजकुमार से शादी की थी।

यह समाचार मिलते ही हवा का रुख बदल गया। राजकुमार, उसकी मां, और उनके कुछ रिश्तेदार कचहरी के लिए चल दिये। चलने से पूर्व राजकुमार की मां ने हमीदा के किये दस्तखतशुदा तीनों कागज अपने साथ रख लिये।

नगर की शांति-भंग होने की आशंका को देखते हुए अदालत में सबसे पहले हमीदा को पेश किया गया। जैसा कि इस प्रकार के केस में अकसर होता है, हमीदा को कोर्ट-रूम के पीछे मजिस्ट्रेट के विश्राम-कक्ष में अपना बयान लिखित रूप में देने को कहा गया, पर हमीदा के यह कहने पर कि वह अपनी बात कोर्ट-रूम में खुलेआम सबके सामने कहना चाहती है, मजिस्ट्रेट कोर्ट-रूम में आ गये और हमीदा को बयान देने के लिए कहा। जब हमीदा अपना बयान देने के लिए खड़ी हुई तो सामने के कटघरे में राजकुमार था। कोर्ट में सन्नाटा छा गया और कुछ लोग उत्सुकता से और कुछ लोग व्यग्रता के साथ हमीदा के बयान की प्रतीक्षा करने लगे।

मजिस्ट्रेट ने हमीदा से पूछा, "क्या तुमने राजकुमार के साथ विवाह किसी के दबाव में आकर किया, या स्वेच्छा से?"

"आधुनिक नारी मध्ययुगीन साहित्य की अबला नारी नहीं हैं।" मजिस्ट्रेट के प्रश्न के प्रत्युत्तर में कीर्ति ने कहा, "वह सबला है और विज्ञानयुगीन समाज का एक सशक्त अंग है। इसलिए दबाव या भय में आकर राजकुमार के साथ मेरे विवाह करने का कोई प्रश्न नहीं उठता।" हमीदा के इस बयान से हमीदा के पिता के पैरों-तले से जैसे जमीन खिसकने लगी। माथे पर पसीने की बूंदे उभर आयीं।

कीर्तिलता ने आगे कहा, "मैं धर्म को विवाह के मार्ग में दीवार मानने को तैयार नहीं। मैं इनसान को इनसान के रूप में देखती हूं, हिंदू और मुसलमान के रूप में नहीं। मैं वयस्क हूं। मेरी आयु बीस वर्ष हो चुकी है। मैंने जो भी निर्णय लिया है, वह पूरी सूझबूझ के साथ लिया है। मैं अपने निर्णय को इस न्यायालय में दोहरा देती हूं कि 'राजकुमार के साथ मेरा विवाह मेरे अपने प्रस्ताव पर ही हुआ है', और मैं अपने इस फैसले पर अटल हूं, और रहूंगी।"

"क्या तुम्हारी खातिर राजकुमार अपना धर्म-परिवर्तन करने को तैयार है?" अकबर के वकील ने मजिस्ट्रेट से इजाजत पाकर हमीदा को संबोधित करते हुए पूछा।

"राजकुमार वेदांत के ब्रह्म को मानता है और मैं कुरान के तौहीद को। हम दोनों ईश्वर के निराकार रूप में विश्वास रखते हैं। कुरान शरीफ की सूरा ११२ में पैगंबर ने बताया है कि अल्लाह एक, और केवल एक ही है। उसका अस्तित्व हमेशा कायम रहता है। वह न तो जन्म लेता है और न ही उससे किसी का जन्म होता है। उसके समान दूसरा कोई भी नहीं है।" कठोपनिषद और गीता में भी स्पष्ट कहा गया है कि ब्रह्म का प्रतीक आत्मा न तो जन्मती है और न मरती है। इस प्रकार हम दोनों का धर्म पहले ही एक है—चाहे इसे आप इस्लाम कह लें
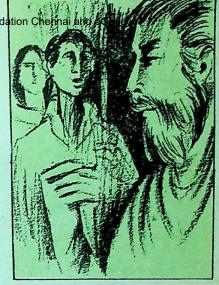
अथवा वेतदांतवादी हिंदुत्व। इसलिए मेरे अथवा राजकुमार के धर्म-परिवर्तन का सवाल ही कहां उठता है?" हमीदा ने कहा।

अपने अगले प्रश्न में वकील ने हमीदा से पूछा, "क्या मैं जान सकता हूं कि इतनी सुंदर होते हुए भी आपने एक निर्धन और विकलांग से अपना रिश्ता जोड़ने का फैसला क्यों किया?"

मजिस्ट्रेट ने फौरन टोका और कहा, "ऐसे प्रश्न पूछने के लिए कोर्ट अनुमति नहीं दे सकता।" परंतु हमीदा के कहने पर कि वह उस प्रश्न का उत्तर देने को तैयार है, मजिस्ट्रेट ने इसके लिए अनुमति दे दी। हमीदा ने कोर्ट को संबोधित करते हुए कहा, "जिस व्यक्ति को आप विकलांग कह रहे हैं, मैं उसे देश के अनन्य भक्त के रूप में देखती हूं। मैं गरीब और अमीर

सभी इनसानों को--इस देश का बराबर धन मानती हूं।"

मजिस्ट्रेट ने राजकुमार से कहा कि यदि इस संबंध में उसे कुछ कहना हो तो वह कह सकता है। अकबर और उनके परिवार को अभी भी तिनके का सहारा शेष था। शायद वे सोच रहे थे कि हो सकता है कि राजकुमार उनकी संपत्ति और गुंडों के पुन: आक्रमण के भय से सहम-कर हमीदा के रास्ते से हट जाए।

"मेरी धारणा है कि जिस मनुष्य ने विवाह की परिपाटी का आविष्कार किया, वह अवश्य ही एक बहुत बड़ा द्रष्टा होगा," राजकुमार ने कहा, "उसमें मानव और उसकी क्रियाओं को आगामी कई हजार वर्षों के परिप्रेक्ष्य में देखने की सामर्थ्य होगी। विवाह दो शरीरों को निकट लाता है। वह मानव कुल के विकासशील जीवन का मूल आधार है। यह स्त्री-पुरुष के निरंतर सहयोग द्वारा मानव-संस्कृति की नींव रखता है। जहां विवाह दो देहों और दो आत्माओं का मेल करता है, वहां यह अंतर्जातीय और अंतर्प्रांतीय संगठन की बुनियादें भी रखता है। कीर्तिलता ने जो कुछ कहा है, मैं उसके बयान की पुष्टि करता हूं।"

मजिस्ट्रेट ने इसके बाद अकबर से कहा, "क्या आपको भी कुछ कहना है?"

"हां," अकबर ने कहा, "राजकुमार के बयान से मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ हूं। मेरे मन में जरा भी संदेह नहीं रहा कि राजकुमार एक बहुत ऊंचा इनसान है। ऐसे नौजवान को मुझे अपना दामाद स्वीकार करने में बहुत बड़ी तस्कीन मिलती है। लेकिन मुझे खुशी होती, यदि हमीदा कीर्तिलता के स्थान पर 'हमीदा राज-कुमार' नाम चुनती।"

अकबर के बयान के बाद, कोर्ट की इजाजत से राजकुमार की मां ने अपना बयान देते हुए कहा, "अकबर ने आज अपने नाम को सबके सामने सार्थक कर दिखाया है। उनके कथन का हर शब्द महान है। मैं राजकुमार और हमीदा की मां की हैसियत से उन्हें यह वचन देती हूं कि उनकी बेटी आज से हमीदा-राजकुमार ही कहलाएगी।

बयानों का तांता समाप्त हो चुका था। मजिस्ट्रेट ने अपना फैसला यों दिया, "कोर्ट नहीं समझती है कि नगर के अमन को अब कोई खतरा है। कोर्ट राजकुमार और हमीदा के बयानों का स्वागत करती है।"

मजिस्ट्रेट का निर्णय सुनते ही हमीदा-राजकुमार ने अपना सिर थोड़ा झुका दिया। गद्गद अकबर की आंखें कुछ भीगी-भीगी-सी थीं। उन्होंने दोनों बच्चों को गले से लगा लिया और आशीर्वाद दिया। अकबर साहब के होठों में कुछ हरकत हो रही थी। मालूम नहीं, आशी-र्वचन निकलते-निकलते असीम भावुकता के कारण रुक रहे थे।

प्रिंसिपल, सालवान स्कूल राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली

दो लघु कथाएं

सहायता

"तुम लोगों के लिए सरकार से कुछ पैसा आया है। जरा इस कागज पर सही करके सब अपना-अपना पैसा ले लो।"

सरपंच की इस बात पर बिरादरी का मुखिया खड़ा हुआ, "बात ये है सरपंच साब कि हम सब मेहनत-मजूरी करके आराम से दो रोटी कमा रहे हैं। अब अगर बिना मेहनत के पैसा यूंही आने लगेगा, तो ये छोकरे आलसी और निकम्मे नहीं हो जाएंगे? इसलिए हमारी विनती है कि, ये पैसा आप गांव के किसी भले काम में लगवा दो।"

मुखिया की बात से सरपंच की आंखों में एक चमक आ गयी। वह जल्दी से बोला, "ठीक है मुखिया, न लेना चाहो तो न सही। लेकिन इसको लौटाने के लिए भी तो सबको सही करना पड़ेगी। इसलिए तुम सभी इस कागज पर जरा जल्दी से सही कर दो या अंगूठा लगा दो..."

और अंगूठे पर सवार सारी रकम सरपंच की जेब में पहुंच गयी।

—मदन देवड़ा

झुकने का कारण

बुढ़ापा खांसता-हांफता, झुककर दोहरी हो गयी कमर को तनिक सीधा करने का असफल प्रयत्न करता हुआ बुरी तरह से छटपटा रहा था।

अकस्मात मृत्यु ने प्रत्यक्ष होकर कहा, "हमारा मिलन तो अटल ही था, फिर तू क्यों भयभीत हो रहा है? शायद तू झुककर मेरी नजरों से बच जाएगा, यह तेरा निरा भ्रम है!"

"मैं तुझसे भयभीत नहीं हूं। तेरा तो स्वागत करने को तैयार बैठा हूं।" बुढ़ापे ने बिलखकर जवाब दिया।

"मेरे झुकने का कारण भी तेरी नजरों से बचने का उद्देश्य नहीं है," फिर बताने लगा बुढ़ापा, "कमर तो मेरी झुक रही है, संसार से लिये हुए अपार ऋण के भार से। मुझे हर समय यह ध्यान रहता है कि संसार से जितना मैंने लिया, उसका शतांश भी चुका नहीं पाया। इसलिए मेरी कमर ऋण-भार से और गरदन ग्लानि से झुकी रहती है।"

—सतीश उपाध्याय

बीत रही है जिंदगी शांत झरने-सी

विशेष संवाददाता द्वारा

"मैं का करूं राम, मुझे बुड्ढा मिल गया," इस तरह के गानों पर नृत्य करनेवाली, अपने समय की, फिल्म-जगत की सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री वैजयंती माला आजकल फिल्मी दुनिया की चमक-दमक से दूर, स्थायी तौर पर मद्रास में रहकर नृत्य-शाला चलाती हैं, जहां भरत नाट्यम नृत्य सिखाया जाता है। वैजयंती माला इस स्कूल की प्राचार्या हैं।

हाल ही में नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म-समारोह में पुरस्कार का निर्णय करने-वाले निर्णायक-मंडल की सदस्या होने के नाते वह कुछ दिन राजधानी में रहीं। एक दिन हमारी बातचीत हुई। उनसे मिलने पर हमने देखा, इतने अरसे के बाद भी वैजयंती माला का रूप-रंग वही है, कहीं कुछ भी अंतर नहीं, लग रहा था। जैसे वक्त का यह अंतराल उनके पास होकर गुजर गया हो, उसने उन्हें जैसे छुआ तक न हो। आज भी वह किसी फिल्म की 'हीरोइन' ही लग रहीं थीं, किंतु फिल्म छोड़ने के बाद शायद एक अंतर आ गया था, उनके व्यवहार में। जहां पहले वह फिल्मी हीरोइन होने पर अपना एक ठसका रखतीं थीं, हीरोइन होने का नाज-नखरा रखतीं थीं, वहां अब उनके व्यवहार में एक मृदुलता थी। हमने अनुभव किया, नितांत घरेलू वैजयंती माला हमसे बात कर रही थीं, कोई हीरोइन नहीं। उनके स्वर में मिठास थी, अपनत्व था।

उनके इस रूप को देखकर जब उन्हें बधाई दी कि 'आप तो अभी भी पहले जैसी ही हैं', तो समीप ही खड़े उनके पतिदेव डॉ. बाली तपाक से बोले, "शी इज बैटर" (वह पहले से अच्छी हैं) इस पर वैजयंती माला ने तुरंत कहा, "इसके लिए 'क्रेडिट' मैं इनको देती हूं।" हमारी चर्चा का विवरण :

प्रश्न : "आपकी अंतिम फिल्म कौन-सी थी ?"

"आखिरी फिल्म 'संघर्ष' थी और सबसे पहली फिल्म थी 'बहार'। इस फिल्मी जीवन में कोई भी फिल्मी जगत का बड़ा नायक नहीं बचा, जिसके साथ मैंने नायिका की भूमिका न की हो। मैं जितने वर्ष भी रही, जमकर रही।"

प्रश्न : "जब आप अपने समय की 'नंबर फिल्मी जीवन छोड़ने का आपने फैसला क्यों किया ?"

"दरअसल फिल्मों में काम करने की भी एक सीमा होती है। यकीन जानिए, फिल्मों को मैंने बहुत ही 'ग्रेसफुली' (सम्मान के साथ) छोड़ा, नहीं तो जिन नायकों के साथ मैं नायिका बनती थी, आज उनकी 'मां' बनती, क्योंकि आज भी देवानंद और दिलीपकुमार-जैसे कलाकार

'बहार', 'देवदास', 'नया दौर', 'मधुमति', 'संगम', 'गंगा जमुना' और 'आम्रपाली'-जैसी 'हिट' फिल्मों की सुप्रसिद्ध नायिका वैजयंती माला आजकल क्या कर रही हैं? 'कादम्बिनी' के लिए उनसे एक दिलचस्प भेंट।

एक' की नायिका थीं, तब अचानक ही शादी करके आपने फिल्म से संन्यास ले लिया। आपको क्या महसूस नहीं होता कि आपकी वह लोकप्रियता अब नहीं रही।

'एवरग्रीन' हैं और नायक के रूप में आ रहे हैं। आनेवाली पीढ़ी मुझे 'मां' के रूप में जानती और मेरी वह 'हीरोइन' की 'इमेज' खतम हो जाती। मुझे उसी वैजयंती माला

नवम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में वैजयंती माला

के रूप में आज की पीढ़ी तक जानती है, फिल्मों को मैंने सही समय पर छोड़ा।"

हमारी फिल्मों में स्वस्थ परंपरा नहीं

प्रश्न : एक बात जहन में उठी है, वह यह कि आपके समय में फिल्मों में कलाकार की पहचान होती थी। जैसे फलां फिल्म में नायक या नायिका ने अच्छा काम किया, फलां नायक-नायिका की फिल्म देखने चलेंगे, तब कहानी ही नायक और नायिका पर आधारित होती थी जबकि आज हिंसा पर अधिक जोर दिया जाता है, ऐसा क्यों ?"

"अब फिल्मों का 'ट्रेंड' ही बदल गया है, वह स्वस्थ परंपरा तो है नहीं। इन सब फिल्मों से युवा पीढ़ी भी बहुत प्रभावित होती है। अपराध भी इसीलिए बढ़ते हैं। मुझे यह परंपरा स्वयं समझ में नहीं आती। दरअसल 'कमर्शियल' फिल्म बनानेवालों को पैसा अधिक मिलता है, फिर उनसे जनता चाहती भी है कि वे ऐसी फिल्म बनाएं, क्योंकि वही 'टेस्ट' भी बन चुका है लोगों का। बहुत कम निर्देशक हैं, जो 'आर्ट फिल्म' बनाते हैं। ऐसी फिल्में अच्छी तो होती ही हैं, साथ ही स्वस्थ परंपरा भी कायम करती हैं।"

फिल्मी अनुभव : चुप्पी

प्रश्न : "अपने फिल्मी जीवन के कुछ अनुभव सुनाइए ?"

इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने अपने पति डॉ. बाली से पूछा कि कौन-सा अनुभव बताऊं ? (हमें समझ में नहीं आया कि फिल्मी प्रसंग पर बाली साहब क्या कहते।

बहार : पहली फिल्म

उनकी चुप्पी देखकर वैजयंती माला खुद ही बताने लगीं कि फिल्म 'बहार' से उन्होंने फिल्मों में प्रवेश किया। इस फिल्म के निर्देशक उनके घर के दोस्त थे। उन्होंने वैजयंती माला की दादी मां से कहकर उन्हें इस फिल्म में काम करने की अनुमति ले ली। इसमें वैजयंती माला ने स्कूल-बालिका की भूमिका अभिनीत की थी। वैजयंती माला ने कहा, "काम करते वक्त बहुत 'थ्रिल' लगा और फिर मैं फिल्मों में आती गयी।"

वैजयंती माला से हमने उनके फिल्मी जीवन के प्रसंग पूछे थे, पर उन्होंने ऐसे प्रसंग सुनाये नहीं।

वास्तव में बाली साहब के सामने ऐसे प्रसंग याद करना ठीक भी कहां होता!

नृत्य के लिए अर्पित जीवन

प्रश्न : "आजकल आप समय कैसे बिताती हैं ?"

"मेरा एक बेटा है, मेरा सारा समय, जो गृहस्थी के बाद बचता है, उसकी देख-भाल में लगाती हूं, हालांकि वह अब बड़ा हो गया है।

"यों, मेरा सारा समय भरत नाट्यम को अर्पित है। मेरा जीवन भरत नाट्यम की शिक्षा में गुजर रहा है। मेरे स्कूल में लड़कियां भरत नाट्यम नृत्य सीखती हैं। भरत नाट्यम के विकास के लिए मैं हर संभव प्रयास करती हूं, जैसे अभी मेरे एल. पी. रेकॉर्ड बने हैं, इसके अलावा भरत

नाट्यम पर मैंने किताब भी लिखी है, ताकि आनेवाली पीढ़ी इस कला को पूर्ण रूप से सीख सके। इसके अलावा मैं टेबिल टेनिस ग्रौर गोल्फ खेलती हूं।

"तमिलनाडू सरकार ने मुझे 'स्टेट आर्टिस्ट' की उपाधि से सुशोभित किया है।"

मूल रूप से बौद्धिक

वैजयंती माला ने कहा, "किसी साहित्यिक पत्रिका के लिए इंटरव्यू देते समय आज मुझे बहुत खुशी हो रही है, क्योंकि मूल रूप से मैं भी बौद्धिक ही हूं। बौद्धिक लोगों के लिए मेरे मन में हमेशा से आदर रहा है। कोई भी 'क्लासिकल म्यूजिक' या 'डांस' की जो मनःस्थिति होती है, उसी स्तर पर हम अपनी कला की चरम सीमा पर पहुंचते हैं। अपने नृत्य में मैं 'रिसर्च' भी किया करती हूं। रागों ग्रौर तालों के सम्मिश्रण को नृत्य में विभिन्न तरह से पेश करती हूं।

"मेरी हार्दिक कामना है कि आज की युवा पीढ़ी भरत नाट्यम को दिलो-दिमाग से सीखे ग्रौर इसकी आत्मा को पहचानकर इसे प्रस्तुत करे। यदि कुछ स्टुडेंट्स मद्रास के मेरे स्कूल में सीखने आते हैं तो मुझे बहुत खुशी होती है। मैं वहां उन्हें निःशुल्क सिखाती हूं। दरअसल भरत नाट्यम की सेवा करना चाहती हूं, मैं। ग्रौर इसमें मेरा इतना अच्छा समय बीतता है कि कह नहीं सकती। मैं विदेश भी जाती हूं अपनी कला प्रदर्शित करने। बस यूं ही जिंदगी बीत रही है, शांत एक बहते झरने-सी।"

वैजयंती माला की सुप्रसिद्ध फिल्में

बहार, मधुमति, आस का पंछी, साधना, नया दौर, ज्वैलथीफ, देवदास, नागिन, संगम, देवता, डॉ. विद्या, साथी, गंगा-जमुना, आम्रपाली, संघर्ष।

वैजयंती माला का पता—

८०, सी. पी. रामास्वामी अय्यर रोड, अलवेस्ट रोड, मद्रास-१८

फ्रांस के उपन्यासकार बाल्जक को आराम और मौज-शौक की जिंदगी जीना पसंद था। जब उसके लिए बहुत सारी संपत्ति छोड़कर उसका चाचा मर गया, तब इसकी सूचना तार द्वारा उसने अपने सभी संगी-साथी और संबंधियों को इस प्रकार दी—'कल सुबह पांच बजे मैं और मेरे चाचाजी अपने-अपने तरीके से, पहले से कहीं अधिक अच्छी तरह जीवन जीने के लिए निकल पड़े हैं।'

●

उक्रेन में कांस्ययुगीन एक बस्ती की खुदाई में तीस फुट लंबी एक पाषाण प्रतिमा मिली। इस पर नाम उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा तीन हजार साल प्राचीन बतायी जाती है और यह प्रतिमा भूदेवी (पृथ्वी मां देवी) की है। यह प्रतिमा प्राचीन स्लाव जाति तथा अन्य जातियों में सर्प-पूजा के प्रचलन को प्रमाणित करती है।

मिलता है नेतृत्व का प्रशिक्षण जहां

• जेसी अशोक सोमानी

'जेसीज' युवा स्त्रियों और पुरुषों का अनूठा अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जिसमें १८ से ४० वर्ष की आयु का कोई भी युवा—रंग, जाति या धर्म-भेद के बिना सदस्य बन सकता है। संस्था में सदस्यों को नेतृत्व का प्रशिक्षण दिया जाता है और उनमें सामुदायिक समग्रता के साथ व्यक्तिगत विकास और उत्तरदायित्व की भावना का बीजारोपण किया जाता है। संस्था के जन्मदाता हेनरी गेजन बीयर हैं, जिन्होंने १३ अक्तूबर, १९१५ को अमरीकी भूमि पर एक रंगीन सपना देखा था, जो आज साकार होकर अंतर्राष्ट्रीय 'जेसीज' के रूप में ९० देशों में फैला हुआ है और लगभग ६ लाख युवा इसके सदस्य हैं। 'जेसीज' समुदाय में सदस्यों को नये नाम से अलंकृत किया जाता है। यहां युवकों को 'जेसी', युवतियों को 'जेसीरेट' एवं तरुणों को 'जूनियर जेसी' कहा जाता है।

'जेसीज' के उद्देश्य

'जेसीज' के अपने कुछ उद्देश्य हैं, यथा—

१. सामाजिक जागरूकता का विकास करना तथा नागरिकता के दायित्वों को स्वीकारना।

२. नेतृत्व-क्षमता के उत्कर्ष के लिए आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यक्तिगत रूप से भाग लेने

वृंदावन 'जेसीज' द्वारा आयोजित (मासिक) बच्चों के लिए टीका-कार्यक्रम का शिविर

भारतीय 'जेसीज' के अध्यक्ष 'वृंदावन जेसीज' के अध्यक्ष को राष्ट्रीय पुरस्कार देते हुए

हुए संकाय की अहं भूमिका अदा करना।

३. व्यक्तिगत तथा सामुदायिक विकासोन्मुखी कार्यक्रमों के नियोजन व कार्यान्वयन में सक्रिय भाग लेना।

४. आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नशील होना।

५. सभी व्यक्तियों में एक दूसरे के प्रति समझदारी, सहयोग एवं सद्भावना बढ़ाना।

मानव जाति की आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यत्मिक उन्नति के लिए युवा क्षमता के सम्मिलित प्रयासों को व्यापक रूप में बढ़ाना तथा उनकी वैयक्तिक योग्यताओं को विकसित करना।

'जेसीज' संगठन-प्रणाली तीन भागों में विभाजित है। स्थानीय संगठन—'लोम', प्रांतीय संगठन—'सोम' तथा राष्ट्रीय संगठन 'नोम' कहलाते हैं।

भारत में 'जेसीज' संगठन की स्थापना सन १९४९ में हुई थी। 'जेसी' भक्तवत्सलम की अध्यक्षता में इसका प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। आज भारत में लगभग ८२५ 'जेसीज' संगठन तथा लगभग ३०,००० सदस्य हैं। १ जनवरी, १९८२ के आंकड़ों के अनुसार भारत में १२३ 'जेसिरेट विंग' तथा ७९ 'युवा जेसीज क्लब' यत्र-तत्र सक्रिय हैं।

हिंदी-अंगरेजी में प्रकाशन

इनका राष्ट्रीय सचिवालय नयी दिल्ली में कार्यरत है। ये हिंदी व अंगरेजी भाषा में 'चैलेंज' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित करते हैं। सन १९८२ में 'पेस-सेटर' (Pace Setter) नाम से 'जेसीज' के विषय में जानकारी देने के लिए पत्रिका प्रकाशित की गयी। 'जेसीज' के प्रमुख प्रकाशन, यथा—क्रियात्मक नेतृत्व, प्रभावी सार्वजनिक भाषण, संसदीय प्रक्रिया तथा सभापतित्व, प्रभावी निर्णय रचना, मानव-संबंध तथा अन्यान्य 'जेसीज' साहित्य हिंदी व अंगरेजी भाषा

में उपलब्ध हैं।

'जेसीज' के प्रमुख अंग-प्रत्यंग

'जेसीज' संगठन की विभिन्न नगरों में शाखाएं हैं। जेसीज इंस्टीट्यूट ऑव इनडिविजूअल डेवेलपमेंट, जिसकी ६ शहरों में शाखाएं हैं। प्रोग्राम इनफॉरमेशन सेंटर, जहां शाखाओं द्वारा प्रेषित उत्कृष्ट कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं का संकलन किया जाता है। 'कैंपमार' व 'लॉग रेंज प्लानिंग कमेटी', जो 'जेसीज' संगठन का संचालन एवं प्रभावी निर्णयों की रूपरेखा की सरंचना एवं संपादन करती है। प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में ६ से १५ तारीख तक संपूर्ण देश में 'जेसीज'-सप्ताह मनाया जाता है। इस समय विविध परियोजनाओं की परिकल्पना की जाती है।

उपलब्धियां

'स्वयं रोजगार प्रयास' कार्यक्रम के अंतर्गत 'जेसीज' ने महत्त्वपूर्ण कदम उठाये हैं। इसमें सिंडीकेट बैंक का सहयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

'प्रतिवेश विकास योजना' के अंतर्गत ग्रामीण अंचल से नाता जोड़ा गया।

आज की जिंदगी की ऊहापोह में 'जेसीज' हमें स्थिरता की सीख देता है। इसका लक्ष्य जीवन के अंधकार, क्लेश, कठिनाइयों और बाधाओं से लड़ाई लड़ना है। 'जेसीज' घनीभूत विश्वास, श्रद्धा, दृढ़ता एवं आस्था के साथ अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक उत्कर्ष के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं।

'जेसीज' की एक शाखा वृंदावन में सन १९७६ से कार्यरत है। यह २६ सदस्यों की छोटी-सी समिति है। छोटी होते हुए भी इस समिति ने अपनी सामर्थ्य से अधिक कार्य किया है। इन कार्यों के मूल्यांकन-स्वरूप इसे कोचीन में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में दो राष्ट्रीय पुरस्कार एवं 'इंदौर '८२ राष्ट्रीय अधिवेशन' में एक राष्ट्रीय पुरस्कार (सर्टीफिकेट ऑव मैरिट) प्राप्त हुए।

——रमनरेती, वृंदावन-२१

क्या सुंदर नहीं हूं ?

बंदी दानव पर युवती को दया आयी। किसी युक्ति से उसने दानव को मुक्त किया। मुक्त होते ही दानव गदगद हो युवती से विनम्र स्वर में बोला, "तुम्हारा यह उपकार मैं कभी नहीं भूलूंगा ! बोलो, इसके बदले तुम्हें क्या चाहिए ?"

युवती सोच में पड़ गयी।

उसे सोच में डूबे देख दानव ने ही पूछा, "क्या, तुम सुंदर बनना चाहती हो ?"

यह सुनकर युवती तिलमिलायी ! उसे गुस्सा आया और गुस्से में ही उसने दो थप्पड़ दानव के गाल पर दे मारे और बोली, "क्या मैं सुंदर नहीं हूं ?"

—व. ले.

तनाव से मुक्ति

• डॉ. सतीश मलिक

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

अपने नियंत्रण में नहीं

पी. डी. जैन, आगरा : मैं ५८ वर्ष का एडवोकेट हूं। पिछले छह वर्षों से इच्छा करती रहती है कि दूसरों पर हमला करूं, चपत या फिर जान से मार डालूं। सोते व्यक्ति पर किसी कठोर चीज से प्रहार करूं—ऐसे विचार बराबर आते रहते हैं। इसलिए मैं अकेला ही सोता हूं।

आत्महत्या के विचार भी प्रबल वेग से आते हैं। कूदकर मरने या तोड़-फोड़ के भी। जीवन में उत्साह नहीं, निराशा ही निराशा है। किसी से कुछ कह भी नहीं सकता। विवश होकर आपको पत्र लिख रहा हूं। उत्तर मिलने की आशा तो नहीं है, फिर भी आपको लिख रहा हूं।

चूंकि आप इस समय निराशावादी विचारों से घिरे हुए हैं, इसलिए आपने सोचा कि आपके पत्र का उत्तर तक भी न मिलेगा। आप स्वयं देख लें, कैसे गलत व निरर्थक विचार हैं आपके। आप 'मृत्यु' के भय से ग्रसित हैं, इसीलिए कभी अपनी तो कभी औरों की हत्या के बारे में सोचते रहते हैं। आप डरते हैं कि वास्तव में आप अपने ऊपर से नियंत्रण न खो बैठें। घबराइए नहीं, वास्तव में ऐसा आप कुछ नहीं करेंगे। यह विचार संघर्षमय अवसाद (Agitated Depression) के हैं, यह एक प्रकार का मनोरोग है। इसका आजकल पूर्ण इलाज संभव है। हमने आपके इलाज का नुस्खा देखा, वह काफी नहीं। आप किसी भी अच्छे मनोचिकित्सक को—आगरा, लखनऊ या दिल्ली में दिखाकर, इलाज करायें।

हर किसी पर मुक्के

गोकुलकुमार किरणदूल (बस्तर) : मैं १८ वर्ष का स्वस्थ युवक हूं। हर दो-चार महीने में नींद के दौरान मुक्के मारने की बीमारी है। हाल ही में रात्रिकालीन यात्रा करते समय, बगल में बैठे एक व्यक्ति की छाती में ऐसा मुक्का मारा कि बस में झगड़ा उठ खड़ा हुआ, बड़ी कठिनाई से छुटकारा पाया। नींद में कई बार अपने भाइयों को भी मारा। एक बार दीवार पर हाथ मारा, तो हाथ में दर्द रहा। यह क्या बीमारी है? डॉक्टर साहब, कृपया मुझे इससे मुक्ति दिलायें।

दिमाग में विकार होने के कारण आपको ऐसा हो रहा है। तुरंत खोपड़ी का 'एक्स-रे'. ई. ई. जी. तथा स्नायु-विशेषज्ञ द्वारा जांच करायें। इसे एक प्रकार की मिर्गी ही समझें, सही इलाज द्वारा आप स्वस्थ हो जाएंगे।

बुआजी का घर

कमलाशंकर दुबे, मिर्जापुर (उ. प्र.): मैं मिर्जापुर पॉलिटेक्निक में अंतिम वर्ष मेकेनिकल इंजीनियरिंग का छात्र हूं और ७ वर्ष से शहर में हूं। मुझे अभी तक याद है, जब पिताजी शहर जाते, तब कैसे चीजों का सारा वर्णन करते। शहर में जहां मैं रहता हूं, वहीं पास में मेरी बुआ का घर है। फूफाजी जिलाधीश हैं। मेरे सारे रिश्तेदार उन्हें कंजूस, लालची, व न जाने क्या-क्या कहते रहते हैं। मेरे पिता भी उनसे झगड़ा कर चुके हैं। मैंने यह सब कई बार बुआजी के घर जाकर परखा तो जरा भी सच न पाया। अपितु इतनी आदर-भावना हो गयी है कि सोते-जागते एक ही बात सामने आती है कि—वह है 'बुआजी का घर।' डॉक्टर साहब ! अब घरवालों से मेरी झगड़ने की इच्छा होती है कि वे बेकार में बुआजी को तरह-तरह की बातें कहते हैं। उनकी सौम्यता मुझे झुका रही है।

आपकी बुआ व फूफा, शहर में बड़े आदमी हो गये, इससे सभी परिवार के लोग उनसे ईर्ष्या करते हैं। अब वे आपसे भी डरते हैं कि कहीं आपको भी वे 'खो' न दें। बुआजी का घर वास्तव में आपके लिए शहरी जीवन व उन्नति का प्रतीक बन गया है। साथ ही उनके साथ मेल-जोल बढ़ाने से आपके 'कैरियर' को फायदा हो सकता है, ऐसा आपका अचेतन मन जानता है। आपको चाहिए कि आप अपनी बुआ के घर की समस्या को मनोवैज्ञानिक ढंग से समझें। जहां से उन्नति आवश्यक है, वहां से आप नाता बनाये रखें।

खून की उल्टी

केदारनाथ, सतना (म. प्र.): मैं ५० वर्ष का एक दुबला-पतला व्यक्ति हूं। अक्तूबर, १९६० में लाल रंग की उल्टी हुई, सोचा खून की है। घबराहट हुई और तब से बेचैनी, अनिद्रा, जीवन से निराशा, मृत्यु का भय, कभी गरमियों में ठंड या ठंड में गरमी व गरमी में भूख का अभाव महसूस होता है। अकेले बाहर नहीं निकल सकता हूं, डर लगता है। सिर-दर्द व चक्कर के कारण, ऐसा लगता है कि जहां बैठा हूं, वह स्थान हिल रहा है। पेट के गोले का, जो पसली से छाती में आ जाता है, कई बार इलाज के बावजूद उपचार नहीं हो पाया। डॉक्टर साहब, कृपया रोग का नाम व उपाय सुझायें। आभारी रहूंगा।

बहुत जोर लगाकर उल्टी में हलका खून आ सकता है, जिसका कोई महत्त्व नहीं होता। फिर भी जांच कराकर तसल्ली कर लेनी चाहिए।

इस समय आपको भयंकर स्नायु अवसाद व काफी डर (Phobia) है। इसने, काफी अरसे से सही इलाज न होने के कारण, लंबी बीमारी का रूप धारण कर लिया है। केवल मनोचिकित्सा के द्वारा ही आप फिर से स्वस्थ हो सकते हैं।

व्यवहार कुशल कैसे

ललित मोहन, यमुना विहार, दिल्ली : मेरे दिमाग में हर समय उठते विचारों के उदाहरण निम्न प्रकार हैं—

मुझे ठंड में मेरी पत्नी कहती है, "सूट या स्वेटर पहन लो" —मैं सोचता हूं, 'आज तो मैं पहन सकता हूं, कल यदि मां-बाप, भाइयों ने मदद न की तो बच्चों की जरूरत कैसे पूरी होगी ?' तंग आकर मन को समझाता हूं, 'सब सही हो जाएगा।' यदि १-२ घंटे पहले अफसर से छुट्टी ले लूं तो सोचता हूं कि कहीं अफसर तबदीली ही न कर दे। कोई उपाय बतायें।

आपको सोचने की आदत पड़ गयी है तथा वह भी ऋणात्मक (negative)। आप साथ ही असुरक्षा की भावना में पड़कर किसी के सामने अपने को 'व्यक्त' नहीं कर पाते हैं। इससे प्रतिरोध सहन करने की भावना को अधिक दबाना पड़ता है। आपको अपनी निराशावादी सोच व प्रवृति भी बदलनी होगी। यह भी असुरक्षा की भावना की ही उपज है, और जो अब एक आदत-सी बन गयी है। आशावादी बनें। अपनी गलत आदतों को सकारात्मक सोच के माध्यम से स्वयं ही बदल दें। यही सही उपाय है। ●

घरेलू उपचार

अश्मरी (पथरी)

विभिन्न कारणों से वस्ति स्थान को वायु दूषित होकर वहां स्थित शुक्र, मूत्र, पित्त तथा कफ को सुखाकर पथरी उत्पन्न कर देती है। इसके कारण नाभि तथा पेड़ू में दर्द होने लगता है। मूत्राशय में अफारा आने से उसके चारों तरफ अत्यंत वेदना होती है। पेशाब कष्ट से आता है तथा बकरे के मूत्र-जैसी गंध आती है तथा मूत्र-त्याग में वेदना होती है।

पथरी रोग का प्रारंभ होते ही चिकित्सा करना आवश्यक होता है। निम्नलिखित किसी एक उपाय से लाभ मिलता है—

(१) एक-एक प्याला गाजर का रस तीन बार दिनभर में पियें।
(२) एक चम्मच प्याज रस के साथ एक चम्मच शुद्ध शहद मिलाकर सुबह-शाम चाट लिया करें।
(३) गन्ना चूसते रहना चाहिए।
(४) एक-एक चम्मच, अजवायन सुबह-शाम पानी के साथ सेवन करना चाहिए।
(५) प्रतिदिन एक प्याला सेब का रस सुबह-शाम पियें।
(६) वरुणे की छाल २५ ग्राम दो प्याला पानी में पकायें चौथाई शेष रहने पर छानकर १० ग्राम गुड़ मिलाकर सुबह व रात पियें।
(७) पेठे का रस आधा प्याला लेकर यवक्षार एक ग्राम तथा गुड़ १० ग्राम डालकर प्रतिदिन पियें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा
बी-५/७, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

कहानी

शाम की नसों में रात की कालिमा जहर की तरह फैलने लगी थी।

शहर की व्यस्त सड़क... कड़ाके की सरदी और ऑफिसर्स कॉलोनी में बिछी होने के कारण, जल्दी ही सुनसान हो गयी थी, सिर्फ दस बजे ही तो। दिन-भर की हलचल सड़क पर से सरककर न जाने कहां सिमट गयी थी।

कोहरा अद्‌भुत रूप से घना होता जा रहा था। सड़क पर जल रही ट्यूबों की रोशनी, किसी सुंदर युवती के चेहरे पर उदासी की तरह सड़क पर छायी हुई थी। घना कोहरा इस रोशनी पर अपने दांत गड़ाये हुए था।

इस सूनी सड़क पर अंबा और मेवली बैठे हुए सरदी के मारे कांप रहे थे। उनके बूढ़े शरीर का मांस कभी-कभी यूं फड़कता मानों डरे हुए खरगोश की खाल कंपकंपा रही हो।

सड़क के दोनों ओर युकलिप्टस के पेड़ लगे हुए थे। बहुत सारे पत्ते, टूट-टूटकर इधर-उधर बिखर गये थे। टूटे हुए पत्ते जमीन पर पड़े-पड़े सूखे और भूरे हो गये थे। ठंडी हवा के पियक्कड़ झोंके जब लड़खड़ाते हुए चलते तो सूखे-भूरे पत्ते, अपनी जमीन से उखड़ जाते। पत्तों की खड़खड़ाहट से अंबा और मेवली दोनों ही चौंक उठते। क्लांत आंखों से 'अपने घर' को तकने लगते। पत्तों की खड़खड़ाहट ही कुछ ऐसी थी कि दोनों को अपने बेटे रमुआ के पैरों की आवाज का भ्रम हो उठता। रमुआ... तो इस वक्त, गरम रजाई में, सो रहा था।

सड़क पर हवा ठंडी थी। रोशनी ठंडी थी। जिस पथरीले फुटपाथ पर वे दोनों बैठे थे, वह भी ठंडा था और मां-

● सत्यपाल सक्सेना

बाप के बीच 'बहू' शीर्षक के मरुस्थल में, रिश्तों के जो कैक्टस उग आये थे... वे भी ठंडे हो गये थे।

अंबा और मेवली, दोनों ही इस गहरी और सुनसान रात में एक ऐसी घोर चुप्पी साधे हुए बैठे थे, जो आंधी के आने से पहले आसमान के होठों पर छा जाती है।

कुछ साल पहले अंबा शरण को बाबू

प्रकोप हो गया था । अब उसके हाथ और गर्दन, हिलने के रोग से ग्रस्त थे । उसकी हड्डियों में भी बुढ़ापे का घुन लग गया था । अंबा के साथ-साथ मेवली के शरीर को भी बुढ़ापा खोखला कर रहा था । उसके हाथ और चेहरे के मांस में दरारें यूं पड़ गयी थीं, जैसे निपट सूखे के कारण धरती जगह-जगह से फट जाती है ।

शरीर से पत्थर बांधे, कहीं बहुत गहरे डूबी हुई थी । अंबा के सवाल को सुन नहीं पायी । वह अर्ध-विक्षिप्त-सी बड़-बड़ा रही थी, "रमुआ को अपने खून की कीमत देकर पाला था । पूरे छब्बीस साल तक अपने हर आराम, हर सुख का गला घोंट-घोंटकर उसे बड़ा किया था... आज उसी बेटे ने घर से बाहर निकाल दिया... कूड़े की तरह सड़क पर

चुपचाप बैठा हुआ अंबा सोच रहा था, 'मैं अपने जीवन में कभी इतना गूंगा नहीं हुआ... कभी नहीं ...। गूंगा... अब भी कहां हूं, सिर्फ बोलभर ही तो नहीं पा रहा...,मन में गरजन हो रही है... कुछ ऐसा इकठ्ठा होता जा रहा है जो बाधाएं तोड़कर बहने के लिए व्याकुल है ।

लंबी चुप्पी को तोड़ते हुए अंबा ने फुसफुसाते हुए कहा, "अब क्या करेंगे मेवा !"

मेवली अपने ही दुःख के समुद्र में,

फेंक दिया ।"

जिस तरह डूबते हुए मस्तूल किसी गहरी लहर के साथ समुद्र में धंसते चले जाते हैं... अंबा भी डूबता जा रहा था । मेवली की बात को बढ़ाते हुए वह बोला, "तुझे कितना नाज था अपने बेटे पर । सोचती थी, जब रमुआ बड़ा हो जाएगा तो इस घने पेड़ की छाया तले सुख से रहा करेगी ।"

मेवली जैसे अपने आप को कोस रही थी, "अगर कभी ऐसा भी सोच

लिया होता कि रमुआ ये भी कर देगा,.. सड़क पर भिखमंगों की तरह बेसहारा बैठा देगा तो....अपने बुढ़ापे के लिए कुछ न कुछ तो कर ही लेते ।"

"अरे इतना ही तंग था तो मुझे निकाल दिया होता सिर्फ मुझे" अंबा ने एक धुंधले पेड़ पर अपनी नजर टिकाते हुए कहा, "इस बेचारी बुढ़िया को भी निकाल दिया ... बुढ़िया मां को ...

जिसने कभी अपनी जान पर खेलकर उसे पैदा किया था...कोई दया नहीं आयी...कोई रहम नहीं आया" बोलते-बोलते अंबा की बूढ़ी आंखों से गरम पानी लुढ़क गया ।

डूबते हुए मस्तूल एक ऊंची लहर में जकड़े, धंसने की बजाय, ऊपर उठ गये थे । "कुछ न कुछ तो करना ही होगा मेवा !" अंबा की आवाज स्थिर बनी हुई थी ।

मेवली ने खोखले स्वर में जवाब दिया, "क्या वापस घर चलें ?"

"घर!!" अंबा के मुंह से ... शब्द ऐसे फिसला जैसे बिजली का ... बल्ब भकक् से फूटता है ।

"हां...घर ।" मेवली का स्वर ... भी निराश था ।

अंबा नितांत हताशा से दुःखी हो... बोला, "कौन-सा घर मेवा ? उस ... में जहां पर बहू हमें कुत्ता समझती है... गली का आवारा कुत्ता...वह घर ... अब छूट गया मेवली...हां..."

कोहरा मेवली के कंधों पर जम ... था । लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी... वह बोली, "कहां जाएंगे रमुआ के बापू... न कोई ठौर...न ठिकाना ।"

"दुनिया बहुत बड़ी है मेवा, कहीं ... कहीं तो सर छिपाने लायक जगह ... ही लेंगें ।"

●

रात गहरी होती जा रही थी ।

सरदी भी बढ़ती जा रही थी। सड़क पर गिरे हुए सूखे पत्ते कब्रों की तरह खामोश पड़े थे। मेवली ने अपनी फटी हुई शाल को ठिठुरते बदन से चिपकाते हुए कहा, "बाकी उमर... कैसे कटेगी अब ?"

अंबा चुप रहा।

"क्या इस बुढ़ापे में हम मेहनत मजूरी करेंगे अब ?"

"और रास्ता भी क्या है मेवा ?"

अंबा ने यूं कहा मानों कोई मेमना मिमिया रहा हो।

डूबते हुए मस्तूल अब न तो समुद्र की गहराई में धंस रहे थे, न उभरकर ऊपर उठ रहे थे। वे तो बस... शांत लहरों के समानांतर तैर रहे थे।

"सुना है... दूर.... किसी एक देस में..." अंबा एक कल्पना लोक में विलीन होते हुए बोला, "एक देश में ऐसी सरकार है... जो बूढ़ों का भार खुद उठाती है। वहां बूढ़ों को रहने के लिए अलग मकान हैं, पार्क हैं, खाने-पीने का इंतजाम है... वहां का बूढ़ा" मेवली ने आह भरी।

"हमारी तरह बेचारा नहीं होता... मेवा।"

"काश ... उस देश में हम भी होते।"

"अपने तो सारे सपने ढेर हो गये मेवा ?"

"हां . . ."

मानो मस्तूल अब डूबने के भय से उबरकर आनंदित हो तैरने लगे थे। मेवली बोली, "याद है . . जब अपना रमुआ छोटा ही था तो तुम्हारी पीठ से लकड़ियों का गठ्ठर उतार देता था, बोरियां उठा लेता था, तुम्हें भाग-भागकर रोटी खिलाता था, बिस्तर लगाता और . . और . . सब्जी तक के बोझ को नहीं उठाने देता था तुम्हें।"

"हां . . हां, याद है मेवा . . जब रमुआ चार-पांच बरस का ही था तो तोतली जबान में तुझसे कहा करता, 'मां दब मैं बदा हों दाउंगा तो तुमे ताम नी तरने दूंगा।"

"हां।"

कुएं में से निकली आवाज की तरह गहरा था, मेवली का स्वर, "तब अपना दुःख किस तरह सिमट जाता था, कुछ भी पता नहीं चलता था . . कितने सुखी थे हम।"

वे दोनों अतीत की गहरी खाई में उतरते जा रहे थे। शायद . . जब एक

नितांत हारे हुए असहाय व्यक्ति को कुछ नहीं सूझता तो वह कल्पनाओं के मिथ्या सुख में अपना समाधान खोजता है। मेवा को हिचकी आयी, "अपने वो दिन उड़ गये रमुआ के बापू, परदेस से आई सोन चिरैया बनकर . . दूर . . कहीं बहुत दूर . . उड़ गये . . "

मेवली इतना ही कह पायी थी कि कुछ दूरी पर सोये एक कुत्ते ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। इस आवाज से जागकर आसपास के दूसरे कुत्ते भी जोर-जोर से रोने लगे। कुत्तों के गले से हू हू ऽ ऽ हू हू ऽ ऽ की डरावनी आवाज ठंडी और सुनसान रात में चारों तरफ फैल गयी। सारा वातावरण इतना डरावना हो रहा था मानो भूत किलकिलाते हुए सड़क पर नाच रहे हों। अंबा और मेवली दोनों कांपते रहे। साथ-साथ अपने को कोसते रहे। एकाएक मेवा का मुंह खुला, "ऐसा बेटा पैदा करने से तो अच्छा था मैं निपूती ही रै जाती।"

"ऐसा न सोच मेवा।" अंबा ने घबराकर कहा, "क्या पता रमुआ अपनी बहू को समझा ही दे और सबेरा होते ही हमें लेने के लिए आ जाए।"

"उंह" मेवली तुनकी, "अगर वो ही किसी करम का होता तो कहने ही किसके थे . . आज की ये बहुएं तो आते ही लड़कों पर जादू कर देती हैं . . लड़के भी तो गाजर के पीछे गधे की तरह भागते रहते हैं . . जैसे कभी कोई चीज देखी ही न हो।"

●

रात कुछ और सरक गयी थी। हवाओं में सन्नाटा कुछ और ज्यादा हो गया था। मेवली के भीतर एक बात चिड़िया की तरह फड़फड़ायी। वह बोली, "ठाकुर साहब मुझे फिर से काम दे देंगे . . आखिर उनके बच्चों को खिला चुकी हूं तो अब उनके पोतों को खिला लूंगी।"

कोई और वक्त होता तो अंबा कहता, "इस बुढ़ापे में तू काम करेगी मेवा; है!" लेकिन इस वक्त वह अपना मन मारकर बैठ गया और बोला, "अच्छा होगा मेवा, अगर ठाकुर साहब तुझे काम पर रख लें। मैं भी श्यामू ठेकेदार के पास जाऊंगा, शायद अपने स्टोर में चौकीदार रख लें।"

मेवली बेचारगी की इस स्थिति पर बहू को कोसने लगी, "मर जाएं उस कलमुंही के सारे घरवाले, जिसने हमें उजाड़ दिया।"

मस्तूल अथाह पानी में फिर एक बार सतह से कुछ ऊपर उठे। किनारा दिखायी पड़ा। अंबा के मन में एक उम्मीद जागी। इस उम्मीद की पुष्टि के लिए उसने कहा, "मेवा! अगर अपना रमुआ सवेरा होते ही हमें लेने को आ जाए तो हम लौटकर वापस चल पड़ेंगे।"

"नहीं! नहीं!!" मेवली अपने आप में कहीं ज्यादा मजबूत होती जा रही थी। वह झुंझलायी, "वापस गये तो हम सचमुच कुत्ते हो जाएंगे . . ऐसे दुत्कारे हुए कुत्ते

जो हर दरवाजे से निराश होकर वापस अपने मालिक के दरवाजे पर दुम हिलाने लगता है।"

अंबा ने दुःख की चरम सीमा से विवेक-हीन होकर अपने होंठ काट लिये। वह समककर बोला, "बस ... कुत्ते ही तो कहलाएंगे न ... तो समझ ले हम आज कुत्ते ही हो गये ... कुत्ते ... समझ ले मेवा समझ ले ... इस खोखले बुढ़ापे में दर-दर की खाक छानने से अच्छा है हम कुत्ते बनकर ... अपनी ही दहलीज पर प्राण दे दें ... अब हमें जीना भी कितना है ?"

अंबा की आंखें फिर पनिया गयीं।

मेवली को लगा ... हां सच तो यही है कि अब उनका कोई नहीं ... उन्हें हर हालत में अब ऐसे ही जिंदगी बितानी पड़ेगी। पति के आंसुओं को पोंछते हुए उसने सांत्वना दी, "अरे इसमें इतना दुःखी होने की क्या बात है रमुआ के बापू, रमुआ के घर ही तो जाएंगे हम। रमुआ ... अपना बेटा ... अपना खून ... ,उसके घर जाने से ..जाने से ... हम कुत्ते ..." आगे मेवली की भी हिम्मत टूट गयी और वह बात को पूरा न कर सकी।

अंबा ने मेवली को अपने जर्जर अंक में भरकर कहा, "समझ ले कुछ नहीं हुआ मेवा ... कुछ नहीं हुआ ... आज से हम अपने नाम बदल लेते हैं, मेरा नाम 'टॉमी' और तेरा नाम 'बिलि' क्यों ठीक रहेगा न ?"

हवा एकाएक तेज हो गयी थी। खामोश पेड़ सांय-सांय करने लगे थे। सड़क पर पत्ते फिर खड़खड़ाने लगे थे। हिलते हुए पेड़ की शाख पर बैठा हुआ एक गिद्ध जोर से चीखा।

अंधेरे की खामोशी को चीरते हुए दूर कहीं चर्च के घंटे ने सुबह के चार बजने की सूचना दी। "दिन निकलने में अब कोई ज्यादा देर नहीं।" मेवली आतुर होकर बोली।

"हां ...लेकिन ... ?" अंबा ने शंका प्रकट की।

"लेकिन क्या ...?"

"मैं सोच रहा हूं, अगर रमुआ आया ही नहीं तो ...

"हां ...सूख गये वृक्षों में पानी का मिलना वैसे भी तो बड़ा मुश्किल होता है, रमुआ के बापू ...हैं ना ?"

अचानक एक मानवाकृति, कोहरे की चादर को चीरती हुई, उन्हें अपनी ओर आती हुई दिखायी पड़ी। कोहरे के अंधेरे में उस धुंधली आदमकद तस्वीर को वे बड़ी व्याकुलता से देखने लगे। वे दोनों मन ही मन प्रार्थना दोहरा रहे थे, "हे भगवान ! ये आदमी रमुआ ही हो ... हमारा रमुआ।"

डूबते मस्तूल बहते-बहते किनारे के पास आ गये थे। उन्हें किनारा साफ दिखायी पड़ रहा था। किंतु अभी भी दोनों में एक फासला था और फासले में थीं ... शांत-गुस्सैल, लेकिन मंद लहरें।

—२, पी. डब्लू. डी. रेस्ट हाउस सिविल लाइन, गुड़गांव

कुछ पठनीय पुस्तकें

ऐसी कृतियां

दो कथा संग्रह

ऐली ! ऐली ! : सुप्रसिद्ध लेखक बलवन्त सिंह के इस कहानी-संग्रह में पाठक को पंजाब के अलमस्त ग्रामीण जीवन की अच्छी छटा देखने को मिलती है । यों, संग्रह में शहरी जीवन की उलझनों को लेकर लिखी गयी कहानियां भी संकलित हैं, तथापि पंजाब की ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कहानियां, जैसे-'ऐली-ऐली', 'एक बात', 'सतरंगा कबूतर', 'कन्यादान', 'पैलां', 'ग्रन्थी' विशेष प्रभावित करती हैं । 'चन्द्र लोक' और 'तृप्ति' अवैध संबंधों की उलझनों को चित्रित करनेवाली कहानियां हैं । इन दोनों के अलावा संग्रह की दो और अन्य कहानियां–'चीता' और 'तीन पत्र' उच्च मध्य वर्ग के वासनाजन्य पतनशील जीवन-मूल्यों को रेखांकित करती हैं। लेखक—बलवन्त सिंह, प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, मूल्य—बाईस रुपये ।

बेटे की बिक्री : ग्रामीण जीवन, विशेषकर पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण जीवन को माध्यम बनाकर सुप्रसिद्ध लेखक विवेकी राय ने अपनी कृतियों में आज के बदलते ग्रामीण परिवेश की विसंगतियों का मर्म-स्पर्शी ही नहीं, विचारोत्तेजक भी, चि[illegible] किया है । इस कथा-संग्रह में [illegible] अठारह कहानियां संकलित हैं । [illegible] कहानियों में हमें मनुष्य के विविध [illegible] के दर्शन होते हैं । 'विद्रोह' का मु[illegible] यदि पिता से विद्रोह कर एक वि[illegible] नववधू से विवाह करने का निर्णय क[illegible] है तो 'बेटे की बिक्री' का माधव[illegible] अपने हितैषी बनारसी बाबू की आ[illegible] पर तुषारापात कर ऊंची बोली पर बि[illegible] के लिए तैयार है । 'दादा कह गये', 'म[illegible] दो चित्र', 'प्लास्टिक के जूते' दिल[illegible] कहानियां हैं । 'इंद्रधनुष' में भाषा [illegible] लालित्य पाठक को बांधे रहता है। लेखक—विवेकी राय, प्रकाशक—प्रभात प्रका[illegible] चावड़ी बाजार, दिल्ली, मूल्य–बीस रु[illegible]

आलोचना

सहज साधना : सन ५०-६० के [illegible] पुराने मध्यप्रदेश की राजधानी [illegible] पुर में शासन साहित्य परिषद द्वारा आ[illegible] हजारीप्रसाद द्विवेदी के चार व्याख्यानों [illegible] एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था [illegible] उनके इन व्याख्यानों का मूल विषय [illegible] 'कबीर और उनकी सहज साधना।' [illegible] से हमें भी आचार्य द्विवेदी के उन भा[illegible]

को सुनने का अवसर मिला था। याद है, आचार्य द्विवेदी ने बिना लिखित 'नोट्स' की सहायता से वे चारों व्याख्यान दिये थे। विषय जितना गूढ़ था, आचार्य द्विवेदी द्वारा उसका विवेचन उतना ही सरल और बोधगम्य। अब दिवंगत आचार्य के वही चारों व्याख्यान कुछ परिष्कृत रूप में पुस्तकाकार रूप में उपलब्ध हैं।

'साधना-केंद्र', 'शब्द-साधना', 'सुरति-निरति' और 'मधुरोपासना' शीर्षक चार अध्यायों में विभाजित इस कृति में आचार्य द्विवेदी ने सहज साधना के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है। प्रथम अध्याय में उन्होंने सहज साधना की पृष्ठभूमि, शिव और जगत, शिव और शक्ति की विवेचना के बाद मानव देह का महत्त्व स्पष्ट किया है। 'शब्द-साधना' शीर्षक अध्याय में वे कहते हैं कि संत कवियों ने शब्द-साधना को प्रेम-भक्ति से जोड़कर एक नीरस और जटिल साधना को सरस और सहज बना दिया था। 'सुरति और निरति' शीर्षक अध्याय में उन्होंने योग, आसन, मुद्राओं, ध्यान, समाधि आदि की विवेचना की है। अंतिम खंड 'मधुरोपासना' से संबंधित है। सारांश में अपनी इस कृति में आचार्य द्विवेदी ने भारतीय अध्यात्म चेतना की क्रमिक परिणतियों और उनकी विभिन्न-साधना पद्धतियों का गहन विश्लेषण करते हुए कबीर की सहज साधना को पाठक के लिए वस्तुतः सहज बना दिया है। लेखक—डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली। —दु. प्र. शु.

टी. एस. इलियट एंड मॉडर्न हिंदी पोयट्री : कोई भी महान चिंतक अथवा रचनाकार समसामयिक साहित्य एवं चिंतन-धारा को निश्चित ही प्रभावित करता है और तत्कालीन रचनाकार जाने या अनजाने उसके प्रभाव को ग्रहण करते हैं तथा यह प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उनकी रचनाओं में उपलब्ध होता है। अंगरेजी में लिखी गयी प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने जिस दृष्टि से जिन हिंदी कवियों (डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन', डॉ. धर्मवीर भारती और गिरिजा कुमार माथुर) की रचनाओं को देखा है, उसमें इलियट के कवि-पक्ष को कम और उसके समीक्षक अथवा समालोचक पक्ष को अधिक दृष्टिगत रखा है। यह आवश्यक नहीं कि हमारे प्रमुख कवियों ने इलियट की रचना-प्रक्रिया अथवा उसके काव्यात्मक दर्शन से कुछ प्रभाव लिया हो, किंतु यह निश्चित है कि अपने समीक्षात्मक निबंधों और टिप्पणियों से इलियट ने आधुनिक काव्य-धारा को एक विशेष मोड़ देने का प्रयास किया और इससे न केवल अंगरेजी बल्कि सभी प्रमुख भाषाओं के कवियों ने अपने दृष्टिकोण-निर्धारण में कुछ न कुछ सहायता प्राप्त की।

ग्रंथ में उपर्युक्त हिंदी कवियों की रचनाओं की समीक्षा के पूर्व कवि और आलोचक के रूप में डॉ. एस. इलियट की भी एक विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की गयी है और इसी समीक्षा के आलोक में यह

देखने का प्रयास किया गया है कि हिंदी के कुछ प्रमुख कवि अपने को किस हद तक समकालीन चिंतनधारा से जोड़ पाये हैं।

लेखक ने अंतिम अध्याय में अपने निष्कर्ष को अत्यंत स्पष्ट रूप में रखा है और इलियट की इन अत्यंत सटीक पंक्तियों को उद्धृत किया है: "प्रश्न अनुकरण और प्रतियोगिता का नहीं है। अब तक जो कुछ रह गया, अथवा अप्राप्य है, उसे बार-बार खोने और प्राप्त करने की प्रक्रिया ही महत्त्वपूर्ण है।" लेखक—डॉ. सी. एम. कुलश्रेष्ठ, प्रकाशक—एलाइड प्रकाशन, दिल्ली, मूल्य—एक सौ पचहत्तर रुपये।

—डॉ. भगवती शरण मिश्र

शब्द-विज्ञान

शब्द-विज्ञान : 'शब्द' भाषा की लघु लेकिन महत्त्वपूर्ण इकाई हैं। वह हवा-पानी-जैसे ही, हमारे जीवन के अंग बन गये हैं लेकिन शब्दों की उत्त्पति, उनकी परिभाषा, उनके वर्गीकरण, आदि के बारे में भाषा-शास्त्रियों एवं भाषा-विज्ञान के छात्रों के अलावा कोई और नहीं सोचता। प्रस्तुत पुस्तक में प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री भोलानाथ तिवारी ने शब्दों का सर्वांगीण अध्ययापन प्रस्तुत कर 'शब्द-विज्ञान' को भाषा-विज्ञान की एक नयी शाखा के रूप में प्रस्थापित किया है। बारह अध्यायों में विभाजित इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में उन्होंने शब्द-विज्ञान के सिद्धांतों की व्याख्या के अतिरिक्त शब्द-रचना, विज्ञान, शब्दार्थ-विज्ञान, शब्दसमूह-विज्ञान, शब्द-ध्वनि-विज्ञान, व्युत्पति-विज्ञान, शब्दकोश-विज्ञान, शब्दप्रयोग-विज्ञान, समाज शब्द-विज्ञान आदि का विवेचन किया है।

यह पुस्तक छात्रों एवं भाषा-शास्त्रियों के लिए महत्त्वपूर्ण है ही, हिंदी के प्रबुद्ध पाठक के लिए भी उपयोगी है। इसके अध्ययन से उसके ज्ञान का विस्तार ही होता है। हिंदी में ही नहीं, संस्कृत में भी विदेशी गृहीत या आगत शब्द किस तरह मूल रूप बदलकर इन भाषाओं के अपने शब्द बन गये हैं, इसकी जानकारी बेहद रोचक प्रतीत होती है। लेखक—भोलानाथ तिवारी, प्रकाशक—शब्दकार, २२०३, तुर्कमान गेट, दिल्ली-६, मूल्य—पैंतीस रुपये।

विविध

प्राचीन भारत में विज्ञान : विभिन्न प्रमाणों द्वारा अब यह बात सिद्ध हो चुकी है कि प्राचीन काल में भारतीयों ने विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में ज्ञान हासिल कर जो निष्कर्ष निकाले थे, वे कपोल-कल्पना नहीं, तथ्यों पर आधारित थे। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक एस. एल. धनी ने प्राचीन भारत में विज्ञान की उपलब्धियों का सप्रमाण विवरण देते हुए सृष्टि विकास के मन्वंतर सिद्धांत की विवेचना की है।

दो खंडों में बंटी इस पुस्तक के प्रथम भाग में पुराण साहित्य की उत्पति एवं उनके महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है, साथ ही प्राचीन युग में विज्ञान की चर्चा के बाद मन्वंतर सिद्धांत की व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। लेखक ने भारतीय काल

गणना के वैज्ञानिक आधारों की भी विस्तृत व्याख्या की है। जगन्नाथ की एक पुस्तक का उद्धरण देते हुए लेखक का कहना है कि पाश्चात्य देशों में प्रचलित मासों के सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर ग्रौर दिसम्बर नाम संस्कृत से लिये गये हैं।

तृतीय खंड में लेखक ने ब्रह्मांड की उत्पत्ति, उसके संहार, जीवोत्पत्ति ग्रौर सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डाला है। प्रकाशक—दिव्य दृष्टि प्रकाशन, ७५४, सेक्टर-८, पंच कूला (हरियाणा), मूल्य—साठ रुपये।

दांपत्य सुख : विवाह के पूर्व वर-वधू की कुंडली मिलाने की प्रथा देश में आज भी लोकप्रिय है। दोनों के जन्म-चक्रों को देखकर, उनके भावी दांपत्य-जीवन के बारे में पता लगाया जाता है। ज्योतिष-विषयक पुस्तकों में इस संबंध में काफी जानकारी मिलती है। डॉ. शुकदेव चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक 'दांपत्य सुख: ज्योतिष के झरोखे में' इस विषय से संबंधित सारी सामग्री एक स्थान पर उपलब्ध करायी है।

नौ अध्यायों में विभाजित इस पुस्तक में वर की कुंडली के प्रमुख दोषों, वधू की कुंडली के प्रमुख योगों आदि की व्यापक जानकारी दी गयी है। विवाह के मामले में मंगलदोष पहले देखा जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में इस विषय के संबंध में व्याप्त भ्रांतियों का भी निराकरण किया गया है। लेखक—डॉ. शुकदेव चतुर्वेदी, प्रकाशक—रंजन पब्लिकेशंस, १६, ग्रंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली, मूल्य—पचीस रुपये। **—सुरेश नीरव**

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ग, २. भूगर्भवेत्ताओं के अनुसार वह बृहत-भूखंड जो करोड़ों वर्ष पूर्व दक्षिण अमरीका, अफ्रीका, भारत, आस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका के मिलने से बना था (बाद में वह पृथक महाद्वीपों में विभक्त हो गया), ३. तंतीस-वर्षीय यासुओ कातो (जापानी), २७ दिसम्बर'८२ को शिखर पर चढ़ने के बाद बर्फ में दबकर मृत्यु (तीन बार पहले भी विभिन्न ऋतुओं में एवरेस्ट अभियान)। ४. डॉ. एस. जेड. कासिम (सचिव, समुद्र-विकास विभाग) तथा डॉ. वी के. रैना (निदेशक, भारतीय भूगर्भ-सर्वेक्षण)। ५. कोचिन (केरल), १९४७ में २,००० संख्या थी, अब अधिकतर इस्रायल चले गये, ६. चार्ली ब्रुक्स (४० वर्षीय, अश्वेत) को हंट्सविले प्रिजन, टेक्सास, हत्या का अपराध, दिसम्बर, १९८२ में, ७. २७०० ग्राम (वांछित ३,७०० ग्रा.), ८. यू थांत पुरस्कार, पूर्व-पश्चिम के बीच सद्भावना पैदा करने में प्रमुख एवं रचनात्मक अंशदान के लिए, ९. क. हफीज, जलंधरी (२१ दिस. ८२ को निधन), ख. 'अभी तो मैं जवान हूं' (गायिका-मलिका पुखराज), १०.१५ दिसं, सन १८८२ ई. (इससे पूर्व 'बंगदर्शन' पत्रिका में धारावाहिक प्रकाशन), ११. बैंकाक (१९७८, सातवां), १२. टेलीफोन।

सुशीलकुमार डोंगरे, हरसूद (म. प्र.) : अणु एवं परमाणु परियोजनाओं में भारी जल (हैवी वाटर) उपयोग में आता है। यह क्या होता है ?

जब द्रव हाइड्रोजन को वाष्पन के लिए रख दिया जाता है, तब अवशेष में बचे हुए हाइड्रोजन समस्थानिक साधारण हाइड्रोजन समस्थानिक से दूने भारी होते हैं। इस भारी हाइड्रोजन समस्थानिक को 'ड्यूटीरियम' कहते हैं। जो जल इस ड्यूटीरियम से बनाया जाता है, उसे भारी जल या 'ड्यूटीरियम आक्साइड' कहते हैं, जिसका गुण साधारण जल के गुण से भिन्न होता है। २५ सें. पर इसका घनत्व १.१०६६ और १०० ग्राम जल में नमक की विलेयता २९.७ ग्राम होती है। इसका क्वथनांक १०१.४२ सें., हिमांक ३.८२ सें. तथा २० सें. पर, श्यनता १,२६० मिलिप्वॉज होती है। ११.६ सें. पर इसका घनत्व सर्वाधिक होता है। रासायनिक अभिक्रिया की दर भारी जल में कम होती है। विद्युद्पार्य स्थिरांक ८०.७ तथा तल-तनाव साधारण जल की तरह ही होता है। नाभिकीय अनुसंधान में न्यूट्रान की गति मंद करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। साधारण जल में भार के अनुपात से ५,००० भाग जल में एक भाग ड्यूटीरियम आक्साइड है, चाहे जल किसी भी स्रोत से प्राप्त किया गया हो। मनुष्य के मूत्र में भी ५,००० के अनुपात में ही साधारण और भारी जल मिलता है। यदि मनुष्य ऐसे जल का उपयोग करे, जिसमें भारी जल अनुपात से अधिक है, तो मूत्र से प्राप्त जल की मात्रा से यह ज्ञात हो जाता है कि भारी जल की शरीर से निकलने की क्या गति है। फिर यह पाया गया कि १५ दिनों के पश्चात भी आधे से अधिक जल शरीर में ही रह जाता है।

मधुसूदन कश्यप, इलाहाबाद: विंशोत्तरी दशा से क्या तात्पर्य है ? इसका उपयोग क्या है ?

ज्योतिष-शास्त्र में अनेक प्रकार की दशाओं का उल्लेख मिलता है, जैसे अष्टोत्तरी, विंशोत्तरी, योगिनी आदि। विंशोत्तरी दशा में १२० वर्ष की आयु मानकर ग्रहों का विभाजन किया जाता है। फिर प्रत्येक ग्रह की दशा की भी एक निश्चित अवधि होती है। उदाहरण के लिए सूर्य की ६ वर्ष, चंद्रमा की १० वर्ष, मंगल की ७ वर्ष, राहू की १८ वर्ष, बृहस्पति की १६ वर्ष, शनि की १० वर्ष, बुध की १७ वर्ष, केतु की ७ वर्ष एवं शुक्र की २० वर्ष की दशा बतलायी गयी है।

जन्म के समय जो नक्षत्र होता है, उसी के ग्रह के आधार पर दशा-निर्णय किया जाता है। जैसे, कृत्तिका, उत्तरा-फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्म होने से सूर्य की दशा मानी जाती है। अन्य नक्षत्रों एवं उनके कारण प्रारंभ होने-वाली दशा का विवरण इस प्रकार है—

रोहिणी, हस्त और श्रवण में जन्म होने से चंद्रमा की दशा।

मृगशिर, चित्रा और धनिष्ठा में जन्म होने से मंगल की दशा।

आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा में जन्म होने से राहू की दशा।

पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपद में जन्म होने से बृहस्पति की दशा।

पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद में जन्म होने से शनि की दशा।

आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में जन्म होने से बुध की दशा।

मघा, मूल और अश्विनी में जन्म होने से केतु की दशा। और भरणी, पूर्वा-फाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में जन्म होने से शुक्र की दशा।

विंशोत्तरी दशा का उपयोग व्यक्ति के शुभाशुभ समय की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

शोभा पांडे, वर्धा: मैंने कई परिचितों से 'वर्तनी' के संबंध में जानकारी प्राप्त करनी चाही; पर निराशा ही हाथ लगी। कृपया कुछ जानकारी दें।

'किसी भाषा में कोई शब्द (सार्थक) किसी वर्णमाला में जिस रूप में लिखा जाता है, उसे वर्तनी कहते हैं।' वर्तनी की यह व्याख्या प्रसिद्ध भाषा-विज्ञानी डॉ. भोला-नाथ तिवारी ने की है। वर्तनी में मुख्यत: दो बातों का समावेश होता है, एक—शब्द (सार्थक) विशेष के लेखन में किन-किन लिपि-चिह्नों का प्रयोग किया जाए। दो—उनका क्रम क्या हो।

'वर्तनी' शब्द का संबंध संस्कृत की 'वृत्' धातु से है, जो अनेकार्थी है। 'वर्तनी' शब्द के प्रसंग में 'वृत' धातु का अर्थ है—'आगे बढ़ना', गति करना'। इसी से 'वर्त्म' शब्द भी बना है। इसका अर्थ है—'सरणि' या 'रास्ता'। 'वर्तनी' संस्कृत का मूल शब्द नहीं है। वृत् धातु+मणि प्रत्यय से संस्कृत में 'वर्त्मनि' शब्द बना है, जिसका अर्थ 'रास्ता', 'सड़क' तथा 'सरणि' आदि है।

हिंदी में 'वर्तनी' के संबंध में अभी तक कोई समान नीति नहीं अपनायी जा सकी है। एक ही शब्द को लेकर मत-वैभिन्य है।

मुहम्मद यासीन, लखनऊ: पिछले दिनों एक लेख में 'जल-खेती' शब्द पढ़ा। लेख में उसके संबंध में विशेष जानकारी नहीं थी। कृपया कुछ बतायें।

सीधे-सादे शब्दों में, समुद्र तथा ताजा जल स्रोतों से खाद्य, यथा—पौधे, मछली आदि प्राप्त करने की विधि को 'जल-खेती' कहते हैं। जल-खेती के माध्यम से जल में होनेवाले पौधों, भिन्न प्रकार की मछलियों आदि से अच्छे किस्म का प्रोटीन

प्राप्त होती है। जल-खेती में लागत बहुत कम होती है और वह उपभोक्ता के निकट ही उपलब्ध जलाशयों में की जा सकती है।

जल-खेती के संबंध में अमरीका में अनेक वर्षों से अनुसंधान किया जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि विकासशील देशों के लिए जल-खेती अत्यंत लाभकारी है। कारण, इन देशों की खाद्य-आवश्यकताओं को काफी बड़ी सीमा तक पूरा करने में वह सक्षम है। ऐसा अनुमान किया गया है कि सन २००० तक एक अरब से भी अधिक आबादी पर्याप्त पौष्टिक पदार्थों के अभाव से रोग ग्रस्त होगी। जल-खेती इस अभाव की पूर्ति कर सकेगी।

शांति खिरवडकर, पुणे : राधास्वामी मत का परिचय दीजिए। क्या इसका कृष्ण की राधा से कोई संबंध है?

राधास्वामी मत की स्थापना सन १८६१ में हुई थी। यह मत उन्नीसवीं शती में 'धर्म की प्रचलित रूढ़िवादिता एवं निष्क्रिय कर्मकांडीय प्रवृत्तियों के विरोध में एक प्रतिक्रिया के रूप में' उभरा था। इसके संस्थापक द्वय थे—'परम-पुरुष' पूरन धनी स्वामीजी महाराज और 'परम-पुरुष' पूरन धनी हुजूर महाराज।

राधास्वामी मत के प्रथम गुरु परम-पुरुष पूरन धनीजी महाराज का वास्तविक नाम शिवदयाल सिंह था। उनका जन्म २५ अगस्त, १८१८ को पन्नी गली, आगरा के एक खत्री परिवार में हुआ था। द्वितीय गुरु राय सालिगराम बहादुर थे। उनका जन्म भी आगरा में ही १४ ... १८२९ को एक कायस्थ परिवार में ... था। इस मत के तृतीय गुरु थे—पं. ... शंकर मिश्र। उनका जन्म २८ ... १८६१ को वाराणसी में हुआ था।

राधास्वामी मत में राधा शब्द ... कृष्ण की राधा से कोई संबंध नहीं है। इस मत के संस्थापकों ने राधास्वामी ... की प्रतीकात्मक व्याख्या भी प्रस्तुत ... है। राधास्वामी मत में परम सत्य ... 'राधास्वामी' कहा जाता है। मत ... संस्थापकों ने 'सृष्टि के चरम एवं ... खंड की परिकल्पना की है, जहां ऐसे मालि... का लोक है, जो विराट आत्म-तत्त्व ... मन, माया से पूर्ण मुक्त है। इसे ... कुल मालिक का भी नाम दिया है।' ... के द्वितीय गुरु के अनुसार यह कुल मालि... एक समुद्र की भांति है और इस ... सागर की प्रथम लहर ही राधा है। ... मत के अनुसार, प्रेम में दो घटक ... हैं—प्रियतम तथा प्रेमी। समग्र प्रेम ... आत्मिक आकर्षण-शक्ति का मूल स्रोत ... प्रियतम ही है, अतः वह 'स्वामी' कहलाता ... है। इस प्रेम तथा शक्ति की जो धारा ... स्रोत से उठती है, और उसी की ओर ... रहती है, प्रेमी कहलाती है और 'राधा' ... नाम से प्रसिद्ध है।

चलते-चलते एक प्रश्न और...

तुलसी नीलकंठ, मुजफ्फरनगर : बहस करना बड़ा है या विचार करना?

विचार करते हुए बहस करना।

ज्योतिष
आपकी परेशानियों का निदान

नीचे दिये गये जन्म-चक्र को भरकर भेजिए। हमारे ज्योतिर्विद आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे। हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं। क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे। प्रविष्टि—१२ का उत्तर यदि उस अंक में न मिले, तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है। आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें। एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे। अगले अंक में प्रतीक्षा न करें।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान'-जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए। प्रविष्टि की अंतिम तिथि २० मार्च, '८३।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि पोस्टकार्ड पर ही चिपकाकर भेजिए। लिफाफे में भेजी गयी प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

. . . . यहां से काटिए . . . .

१२

नाम . . . .

जन्म-तिथि (अंग्रेजी तारीख में) . . . . महीना . . . . सन . . . . .

जन्म-स्थान . . . . जन्म-समय . . . . .

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा . . . .

पता . . . .

आपका एक प्रश्न . . . .

. . . .

. . . . यहां से काटिए . . . .

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—१२), 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

ज्योतिष समस्या और समाधान

१०

'कादम्बिनी' के लोकप्रिय स्तंभ—'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' का पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक दस के लिए हमें काफी संख्या में पाठकों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्न का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, सुपरिचित ज्योतिषाचार्य—पं. के. बी. परसाई।

कृष्णकुमार पोरवाल, उज्जैन

प्रश्न—गत तीन वर्षों से सभी कार्यों में घोर असफलता मिल रही है।

उत्तर—सन १९८४ से सफलता अवश्य मिलेगी।

संजीवकुमार रस्तोगी, शाहजहांपुर

प्रश्न—मेरा हाईस्कूल का परीक्षाफल रुका हुआ है, मैं पास होऊंगा या नहीं ?

उत्तर—पास हो जाएंगे, भविष्य में अनुचित तरीके अपनाना छोड़ दें। नहीं तो नुकसान उठाएंगे।

बालकृष्ण बहल, इलाहाबाद

प्रश्न—किस प्रदेश की लाटरी में प्रथम पुरस्कार मिलेगा ?

उत्तर—कुंडली अपूर्ण और गलत है आपकी।

नारायण प्रसाद, जबलपुर

प्रश्न—पुत्र भविष्य में इंजीनियर बनेगा या कोई अन्य कार्य करेगा ?

उत्तर—वकील, जज, लेखक, अध्यापक या चार्टर्ड एकाउंटेंट बन सकता है।

सुनीलकुमार बाबेल, सरदार शहर

प्रश्न—जातक ८ सितम्बर '८२ से लापता है। इस समय कहां और किस स्थिति में है तथा कब लौटेगा ?

उत्तर—जीवित है, पराधीन है, आना चाहता है, परंतु मार्ग अवरुद्ध है। अप्रैल और जुलाई के बीच भागकर आएगा, या खबर देगा।

सतीश मनमोहनदास गुजराती, इंदौर

प्रश्न—विवाह का योग कब और किस महीने में है ?

उत्तर—आपका विवाह इसी साल

मई से नवम्बर के बीच हो जाएगा।

महावीरनारायण शर्मा, आगरा

प्रश्न—डेढ़ वर्ष से मिरगी के दौरे पड़ रहे हैं, कब मुक्ति मिलेगी?

उत्तर—मिरगी के दौरों से मुक्ति आसानी से नहीं मिलेगी। शनि की आराधना से लाभ होगा।

ओमप्रकाश लाल, नेरुन

प्रश्न—नौकरी छूट गयी है। नयी नौकरी कब लगेगी?

उत्तर—नयी नौकरी मार्च और जून के बीच इसी साल मिलेगी।

गोपाल शर्मा, नीमच

प्रश्न—न तो पढ़ाई हो पा रही है और न व्यापार? कोई समाधान बताइए।

उत्तर—सन १९८४ से व्यापार करना शुरू कर दें। पढ़ाई का समय निकल चुका है।

सुदेशकुमार वर्मा, रांची

प्रश्न—इंजीनियरिंग प्रतियोगिता में बैठना चाहता हूं। सफल होऊंगा या नहीं?

उत्तर—इंजीनियरी पाठ्यक्रम में प्रवेश सन १९८३ में अवश्य मिल जाएगा। सन १९८४ में भी सुयोग हैं।

यामिनी विज, आगरा

प्रश्न—बेटी शिक्षा के किस क्षेत्र में सफल रहेगी? कुंडली में कोई विशेष बात हो तो बतायें।

उत्तर—कन्या दुगुनी मंगली है। ललित कला, लेखन तथा शिक्षा के क्षेत्र में सफल रहेगी।

राजकुमार श्रीकृष्ण दोंतुलवार, हैदराबाद

प्रश्न—दोस्त को रुपया उधार दिया था, वापस कब मिलेगा?

उत्तर—दोस्त से रुपया सन १९८[illegible] में मिलेगा। द्वादश में गुरु और छठे गुरु होने से कर्ज की वसूली आसान नहीं रहेगी। शत्रुता ऊपर से होगी।

उमा देवी, सिरसा

प्रश्न—शादी का योग कब है?

उत्तर—सन १९८४ में शादी अवश्य हो जाएगी। वर शिक्षा या कानून के क्षेत्र का होगा।

डॉ. सुमन पसारी, कानपुर

प्रश्न—उच्च शिक्षा या नौकरी हेतु विदेश जाने का योग है या नहीं?

उत्तर—हां, है, आप उच्च शिक्षा हेतु दिसम्बर '८५ से पूर्व विदेश चली जाएंगी।

सुनील भानावत, उदयपुर

प्रश्न—अमरीका से एम. बी. ए. करना चाहता हूं। संभव होगा या नहीं? कृपया बतायें।

उत्तर—सन १९८३ या सन १९८४ में विदेश में एम. बी. ए. में प्रवेश अवश्य मिल जाएगा।

रश्मि, नयी दिल्ली

प्रश्न—मैं जिस लड़के से प्यार करती हूं, उससे शादी होगी या नहीं? अगर होगी तो कब तक?

उत्तर—जिस लड़के से आप प्यार करती हैं, उससे विवाह सन १९८३ में ही हो जाएगा।

नवीनचंद्र, ढौडियाल, अल्मोड़ा

प्रश्न—पिता की इच्छा के विरुद्ध, मैं जिस अन्य जाति की लड़की से शादी करना चाहता हूं, उससे शादी होगी या नहीं?

उत्तर—इतर जाति की उस कन्या से विवाह हो जाएगा। इसी साल हो जाएगा।

अशोक श्रीवास्तव, देवास

प्रश्न—विवाह को चार साल हो गये, लेकिन तभी से हम अलग-अलग रह रहे हैं। क्या तलाक संभव है?

उत्तर—सन १९८५ के अंत तक पूर्ण विवाह-विच्छेद हो जाएगा। इस साल भी सामान्य योग है।

साधना श्रीवास्तव, राऊ

प्रश्न—वैवाहिक जीवन में व्यवधान कब समाप्त होगा?

उत्तर—विवाहित जीवन का व्यवधान आपके द्वारा परिस्थिति से समझौता करने से इस साल दूर हो सकता है। अन्यथा सन १९८४—८५ में स्थिति विच्छेद के कानूनी जंजाल में फंस जाएगी।

सुधा श्रीवास्तव, लखनऊ

प्रश्न—मेरा विवाह कब होगा? मैं कहीं विधवा तो नहीं हो जाऊंगी?

उत्तर—विवाह इसी वर्ष हो जाएगा। गंदुमी वर्ण का वर मिलेगा। वैधव्य योग नहीं है।

वीना पांडेय, आज़मगढ़

प्रश्न—क्या विदेश जाने का योग है। विदेश जाना ठीक रहेगा?

उत्तर—विदेश जाना सन १९८४ में संभव है, जो आपके पति के लिए अनुकूल रहेगा, आपके लिए प्रतिकूल।

रत्ना कुंटे, इंदौर

प्रश्न—मेरी बहन के सफेद दाग हैं, मंगली है, शादी कब होगी? वर डॉक्टर होगा या नहीं?

उत्तर—यह कुंडली तुम्हारी है या तुम्हारी बहन की? लंदन के समय को बंबई के समय में परिवर्तित करने से कुंडली एकदम गलत बनी है।

डॉ. श्रीप्रकाश अग्रवाल, टिहरी-गढ़वाल

प्रश्न—सत्रह साल से रोग-पीड़ित हूं। रोग क्या है और कब तक ठीक होगा? होगा भी या नहीं?

उत्तर—रोग रक्त-विकार है। तीन वर्ष और कष्ट भोगना पड़ेगा।

डी I/II ७३ पंडारा रोड, नयी दिल्ली—३

सफेद कपड़ा पहना जाना जहां शुचिता व शुभ्रता का प्रतीत है, वहीं जापान में सफेद कपड़ा पहना जाना अपशकुन माना जाता है।

★

पर्सिया के राजा फ्रेडरिक द्वितीय को अपने पुराने कोटों से बहुत ही लगाव रहता था। पुराने कोटों को छोड़ उसे नये कोट पहनना जरा भी पसंद नहीं आता था। फलतः उसने अपनी सारी जिंदगी में दो-तीन से अधिक कोट नहीं पहने।

इस बार हम पाठकों से परिचय करा रहे हैं सुलभ अग्निहोत्री का। इनकी पांचों कविताएं पढ़कर लगा कि समसामयिक विसंगतियां और व्यवस्था उन्हें अंदर ही अंदर गहराई तक कुरेदती है, जिसे वे एक मुखर अभिव्यक्ति देते हैं अपनी कविताओं के माध्यम से। प्रस्तुत हैं यहां उनकी तीन कविताएं।

—संपादक

यह बगावत क्यों ?

अभी कल तक ही यह शीशा
बिना कहे
सारी धूप सहज ही उलीच देता था कमरे में
कोई शिकायत नहीं थी इसे
कोई पूर्वाग्रह नहीं था
फिर आज ही अचानक यह बगावत क्यों ?

ढेर की ढेर धूप बिखरी है उस ओर क्यारी में
लेकिन इस ओर मेरे कमरे में
सिर्फ एक कतराभर घुसने दी है इसने
जो एक कोने में अकेली
सकपकाई-सी कभी मुझे
कभी बाहर
बाकी धूप को ताक रही है

और वह सूरज
वह भी इसी शीशे के पीछे छिपा
उचक-उचककर हंस रहा है
मेरी बौखलाहट पर मुंह चिढ़ा रहा है

अधूरा स्वप्न

रातभर जग गीत बांचा
भूल अपना-आप नाचा
पर न जी पाया अंधेरा
खोजता फिर से सवेरा

जहां तक जातीं निगाहें
स्याह सायों तले राहें
रोशनी का एक घेरा
भी न देता साथ मेरा,

आस थी कोई मिलेगा
हाथ थामेगा, कहेगा—
'क्या तुम्हीं ने मुझे टेरा?'
पर अधूरा स्वप्न मेरा

टूटा हुआ पत्ता

किसी ने बताया
वह एक पत्ता टूट गया
सुनकर ध्यान आया उस मकड़ी के जाले का
जो उसी पत्ते के सहारे पूरा हुआ था
वह शायद पत्ते को सम्हालने में
दूर तक लटक आया हो
और हो सकता है
दरक गया हो कई-कई जगह से

मुझे लगा, मुझे भी
कुछ अफसोस जाहिर करना चाहिए
अतः खोजा अपने शब्दों को
जो जाने कहां दुबक गये थे सहमकर
मिले ही नहीं
बौखलाकर ताबड़तोड़ कुछ नये शब्द गढ़े
पर जाने क्यों हाथ ही कांप गये
मन-माफिक तराश नहीं पाया उन्हें
बस किसी तरह, कैसे भी धकेलकर
वापस आ गया
वहां ठहर नहीं सका
न ही जा सका देखने कि
आखिर वह टूटा हुआ पत्ता
गिरा कहां
बस, हिम्मत ही नहीं पड़ी

—३ ए/१३२, आजाद नगर, कानपुर

आत्म-कथ्य

जन्म: ३ सितम्बर, १९६१; कन्नौज (उ. प्र.)

फिलहाल वी. एस. एस. डी. कालेज, कानपुर से एम. ए. भूगोल (उत्तरार्द्ध) की परीक्षा दे रहा हूं।

मैं क्यों लिखता हूं ? अनुभूति की तीव्रता लिखने को प्रेरित करती है।

कविता मेरे लिए खट्टी-मीठी अनुभूतियों का आरेखन भर है, और उसका यही रूप सार्थक भी है। जब वह समाज के प्रति उत्तरदायित्व की आड़ लेकर नपुंसक उपदेशक या मात्र निंदक के रूप में सामने आती है, तब अपने ही लिए वितृष्णा पैदा कर पाती है, व्यवस्था का कुछ नहीं बिगड़ता। . . . ठोस धरातल पर आह्वान और उपदेश दो बिलकुल अलग चीजें हैं। खैर: यह बहस की जगह नहीं है, उसके लिए अभी बहुत समय है।
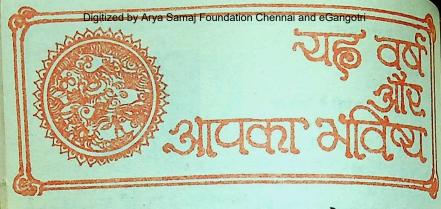
(गतांक से आगे)

● के. ए. दुबे 'पद्मेश'

तुला (र, रा, रू, रे, रो, त, ती, तू ते)

१४ मार्च से ७ अप्रैल के मध्य मांगलिक कार्य की दिशा में ससुराल पक्ष से सहयोग मिलेगा। आर्थिक मामले में भी सफलता मिलेगी।

धन, प्रतिष्ठा के क्षेत्र में प्रयास फलीभूत होंगे। ३ मई से ३१ मई के मध्य नौकरी व व्यापार की दिशा में उन्नति के प्रयासों में सफलता मिलेगी। अधिकारी, राजनेता का सहयोग मिलेगा। राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास भी सफल हो सकता है। ६ जुलाई से ३ नवम्बर के मध्य अधिकारी एवं पारिवारिक सदस्यों से सहयोग एवं लाभ मिल सकता है। ७ अप्रैल से ३ मई के मध्य स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता बरतें। प्रियजन-पीड़ा, संतान से कष्ट, सुख के साधनों में व्यवधान, व्यावसायिक उलझनों का भी सामना करना पड़ सकता है।

४ नवम्बर से ३० नवम्बर के मध्य पारिवारिक एवं व्यावसायिक उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। यात्रा में सामान एवं स्वास्थ्य के प्रति ध्यान रखें। प्रेमिका, अधिकारी, प्रियजन के कारण विवाद न उत्पन्न होने दें।

सामान्यतः वर्ष उपलब्धियों का होगा। धन, प्रतिष्ठा, परिवार की उन्नति के प्रयास सफल सिद्ध होंगे।

मार्च माह की ग्रह-स्थिति—गुरु वृश्चिक में, राहु मिथुन में, केतु धनु में, शनि तुला में वक्री, ३ से बुध कुंभ में, १४ से शुक्र मेष में, १४ से सूर्य मेष में, २० से बुध मीन में, २८ से मंगल मेष में तथा गुरु वक्री।

वृश्चिक (तो, न, नी, नू, ने, नो, य, या, य)

१४ मई से १५ जून के मध्य बनायी गयी योजना को साकार रूप देने में सफलता मिलेगी। शोधकार्य, शिक्षा, लेखन, साहित्य, व्यापार आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयोगों में सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्य सफल होंगे। सृजन का प्रयास सफल होगा।

सामान्यतः आपकी राशि पर शनि प्रभावशाली रहेगा। १४ अक्तूबर से १७ नवम्बर के मध्य शनि अस्त होगा। उसी अवधि में प्रोन्नति, धन-लाभ, व्यापार में उन्नति, परिवर्तन, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति, रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी।

२८ मई से २६ जुलाई के मध्य गुरु वक्री होने के कारण व्यवसाय व उद्यम में अनेक परेशानियां उत्पन्न करेगा। पारिवारिक उलझनों का भी सामना करना पड़ सकता है। २१ दिसम्बर से गुरु धनु राशि में प्रवेश करेगा, जो लाभप्रद रहेगा। वर्ष का अंत उत्तम सिद्ध होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति, सम्मान, कीर्ति के प्रयास सफल रहेंगे। संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी। राजनीतिक लाभ भी मिल सकता है।

१५ जुलाई से केतु राशि पर प्रवेश करेगा, जिससे परिवार व व्यवसाय में अशांति का सामना करना पड़ सकता है।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ़, भे)

२८ मई से २६ जुलाई के मध्य नौकरी, व्यापार में किये गये प्रयास सफल होंगे। स्थानांतरण, प्रोन्नति, नये रोजगार आदि की दिशा में भी सफलता मिलेगी। शिक्षा, प्रतियोगिता, पुरस्कार आदि के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। ४ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर के मध्य प्रतियोगिता, नयी नौकरी, प्रोन्नति आदि के क्षेत्र में सफलता के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। १५ जुलाई से केतु का प्रभाव क्षीण होगा, जबकि गुरु बारहवें भाव में होंगे। उसी के साथ केतु भी होगा, जिससे अपनों से ही नुकसान मिलेगा, लेकिन शत्रु पक्ष व बीमारी का भी नाश होगा। आर्थिक मामलों में अवश्य व्यय होगा, लेकिन खोया हुआ आत्मविश्वास पुनः प्राप्त होगा।

२८ मई तक गुरु के कारण व्यावसायिक, पारिवारिक उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। किसी प्रियजन या अधिकारी से विवाद की स्थिति न उत्पन्न होने दें। मांगलिक कार्य में व्यय करना पड़ सकता है। व्यर्थ की भाग-दौड़ करनी पड़ सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें।

१४ अप्रैल से १५ मई, १७ अगस्त से १८ सितम्बर के मध्य नौकरी, व्यापार में उन्नति, संतान के दायित्व की पूर्ति तथा पद व प्रतिष्ठा मिलेगी।

दौरान व्यवसाय के प्रति सचेत रहें। किसी भी तरह का जोखिम न लें। समझौते एवं संयम की नीति ही लाभ दे सकती है। अतः सजगता बरतें।

मकर (भो, ज, जी, जू, जे, जो, ख, खी, ग, गी)

इस वर्ष पदोन्नति, स्थानांतरण, नयी नौकरी, अर्थलाभ, व्यापार आदि के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयास फलीभूत होंगे। मांगलिक कार्य की दिशा में भी सफलता मिलेगी। संतान के दायित्व की पूर्ति में भी सफलता मिल सकती है।

१४ अक्तूबर से १७ नवम्बर के मध्य शासन या अधिकारी से विवाद, नौकरी या व्यापार में नुकसान की स्थिति आ सकती है।

शत्रु पक्ष के षड्यंत्र से बचने का प्रयास करें। मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है। २१ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर के मध्य भाई, मित्र, व्यावसायिक साथी के कारण परेशानी की स्थिति आ सकती है।

१४ फरवरी से २० सितम्बर तक का समय सामान्य रूप से सफलतादायक व उन्नतिकारी है।

पुनः १४ अक्तूबर से १७ नवम्बर तथा २१ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर के

कुंभ (गू, गे, गो, स, सी, सु, से, सो, द, दा)

१३ फरवरी तक पदोन्नति, कीर्ति, प्रतिष्ठा, पुरस्कार आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयास में सफलता मिलेगी। धन, संपत्ति, आर्थिक मामलों में भी लाभ मिलेगा। नवीन नौकरी, रोजगार की दिशा में चल रहे प्रयास फलीभूत होंगे। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी।

१७ नवम्बर से ३१ दिसम्बर के मध्य प्रतिष्ठा, स्थानांतरण, नवीन कार्य, धन, संपत्ति, परिवार, व्यवसाय आदि के क्षेत्र में किये जानेवाले प्रयास सफल होंगे।

१४ अक्तूबर से १६ नवम्बर के मध्य शासन या अधिकारी से अपमान, शोक, मानसिक पीड़ा, शारीरिक कष्ट आदि की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। हर संभव संयम एवं धैर्य से कार्य लेना हितकर होगा।

१४ फरवरी से १३ अक्तूबर के मध्य सामान्य गति से प्रगति होगी। अनेक लाभदायी एवं सुखद यात्राएं होंगी। स्थानांतरण का प्रयास भी सफल हो सकता

मार्च माह के पर्व व त्यौहार

२ मार्च–गणेश चतुर्थी व्रत, ६– कालाष्टमी, १०–पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत, १३–शनि प्रदोष, १४–सोमवती अमावस्या १८–गणेश चतुर्थी, २२–होलाष्टकारंभ, २५–रंगभरी एकादशी, २६–शनि प्रदोष, २८– पूर्णिमा, होली, ३०–संत तुकाराम जयंती

राशियां और प्रभाव

शनि वक्री रहेगा। शुक्र, सूर्य, मंगल मेष राशि रहेंगे, जिसके कारण इस माह में मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक राशियां विशेष प्रभावित होंगी। ऐसी स्थिति में इन राशियों के व्यक्तियों को आर्थिक मामलों में जोखिम नहीं लेनी चाहिए और न ही विवाद, झगड़े की स्थिति में पड़ना चाहिए। व्यय अधिक होगा। महंगाई की स्थिति भी रहेगी, जिससे आर्थिक संकट की स्थिति का सामना भी करना पड़ सकता है। राजनीतिक तूफान आने की भी प्रबल संभावना है। केंद्रीय सरकार के कुछ विभागों में परिवर्तन संभव है। गुजरात एवं उत्तर प्रदेश में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन की संभावना है।

है। विदेश-भ्रमण, भौतिक संपन्नता की दिशा में भी सफलता मिलेगी।

आपके लिए यह वर्ष अत्याधिक महत्वपूर्ण है। १४ अक्तूबर से १६ नवम्बर तक का समय निर्बल रहेगा।

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, च, ची)

२८ मई तक मांगलिक कार्य की दिशा में सफलता मिलेगी। स्थानांतरण पदोन्नति की दिशा में किये जा रहे प्रयास में सफलता मिलेगी। धन, पद-प्रतिष्ठा वृद्धि-के प्रयास फलीभूत होंगे। संतान के दायित्व की पूर्ति की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। संपत्ति-वृद्धि के प्रयास में व्यवधान के बावजूद सफलता मिलेगी।

२९ मई से २९ जुलाई के मध्य नौकरी, व्यापार, परिवार के प्रति सचेत रहें। परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

३० जुलाई से ३ दिसम्बर तक उन्नतिकारी समय प्रारंभ होगा। धन, परिवार, व्यापार, संपत्ति, कीर्ति, प्रतिष्ठा आदि की वृद्धि के प्रयासों में सफलता मिलेगी। पारिवारिक दायित्व, शिक्षा, नौकरी, विवाह आदि के संबंध में भी सफलता मिलेगी।

४ दिसम्बर से २० दिसम्बर के मध्य नौकरी, प्रियजन पीड़ा, धनहानि, स्वास्थ्य-हानि के प्रति सतर्क रहें। षड्यंत्र व दुर्घटना आदि से बचने का प्रयास करें। २१ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर के मध्य शासन व अधिकारी से आर्थिक लाभ मिल सकता है।

—१८ पद्मेश लेन, रतनलाल नगर,
कानपुर-२२

सुरंगा:

● गार्शिया मारक्वेज
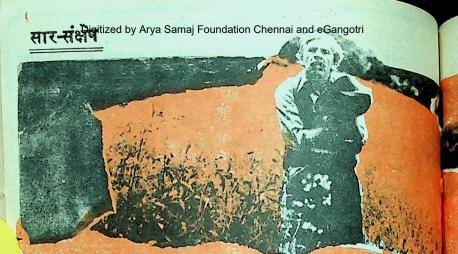
कर्नल ने कॉफी के डिब्बे का ढक्कन हटाकर देखा, मुश्किल से एक छोटा चम्मचभर कॉफी बची होगी। उसने आग पर रखी केतली उठाकर आधा पानी कच्चे फर्श पर उंड़ेल दिया, फिर चाकू से कॉफी का डिब्बा खुरचता रहा काफी देर तक।

अब वह अंगीठी के पास बैठा कॉफी के खौलने की प्रतीक्षा कर रहा था, उसके चेहरे पर आत्मविश्वास से भरी निरीह आशा की उत्सुकता थी। एकाएक उसे अपने पेट में कुछ बेचैनी महसूस हुई, जैसे जहरीले फूलों का गुच्छा हाथ-पैर मार रहा हो। यह थी अक्तूबर की सुबह। उस-जैसे आदमी के लिए भी बहुत कठिन, हालांकि, वह इस तरह के बहुत से सवेरों को पार कर चुका था साठ सालों में। जब से अंतिम गृह-युद्ध समाप्त हुआ था, कर्नल

पूरे शहर का है!

ने प्रतीक्षा करने के अलावा और किया ही क्या था!

कर्नल की पत्नी ने उसे कॉफी लेकर आते देखा तो मच्छरदानी को ऊपर उठा दिया। पिछली रात को उसे दमे का दौरा पड़ा था। वह उनींदी हो रही थी। उसने किसी तरह प्याला थाम लिया, पूछा, "और तुम!"

"मैं पी चुका! और डिब्बे में अब भी एक बड़ा चम्मचभर कॉफी बाकी है।" कर्नल ने झूठ बोला!

घंटियों की आवाज आने लगीं। कर्नल अंतिम-संस्कार के बारे में भूल ही गया था। पत्नी को कॉफी पीता छोड़, उसने झूलन-बिस्तर का हुक कील से निकाला और लपेटकर दूसरी तरफ लटका दिया, दरवाजे के पीछे। उसकी पत्नी मृत व्यक्ति के बारे में कह रही थी, "वह १९२२ में पैदा हुआ था। हमारे बेटे से ठीक एक महीने बाद—७ अप्रैल को।"
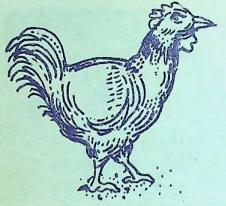
उसकी सांस खड़खड़ाती आ रही थी। वह अपनी मुट्ठीभर हड्डियों पर लिपटी सफेद त्वचा के अलावा कुछ नहीं रह गयी थी। कॉफी खत्म हो गयी, पर मृत व्यक्ति के बारे में बातें अब भी जारी थीं।

धीमी बारिश लेकिन लगातार टप-टप! और कोई समय होता तो कर्नल कंबल लपेटकर अपने झूलने में पड़ जाता, लेकिन ये घंटियां। वह पीछे हटकर पलंग की तरफ आया, तो उसे मुरगे की याद आयी। उसकी एक टांग पाये से बंधी थी। वह लड़ाकू मुर्ग था।

खाली कप रसोईघर में रखकर उसने बड़े कमरे में लकड़ी के केस में रखी घड़ी में चाबी भरी और मुरगे के सामने मकई के दाने बिखेर दिये। गली के कुछ छोकरे बाड़ के छेद से अंदर आ गये थे। उन्होंने मुरगे को घेर लिया था।

कर्नल ने उन्हें डांटकर भगाना चाहा, पर वे गये नहीं। उनमें से एक अपने हार्मो-निका पर एक लोकप्रिय धुन बजाने लगा।

"आज मत बजाओ। शहर में मौत हुई है।" कर्नल ने कहा तो लड़का रुक गया। इसके बाद वह अंतिम-संस्कार में शामिल होने के लिए कपड़े बदलने अंदर चला आया।

पत्नी को दौरा पड़ने के कारण उसका सफेद सूट 'प्रेस' नहीं हो सका था, इसलिए शादी का पुराना काला सूट पहनना मजबूरी थी। उसे कर्नल ने कुछ विशेष अवसरों पर ही पहना था। सूट को ढूंढ़ने में समय लगा। वह किसी ट्रंक की तली में अखबार में लिपटा रखा था।

"वह अगस्तिन से मिल चुका होगा अब तक। शायद, वह अगस्तिन से यह न कहे कि उसके मरने के बाद हमारी क्या हालत हो गयी है।"

"इस समय शायद वे मुरगे के बारे में बातें कर रहे होंगे", कर्नल ने कहा। ट्रंक में उसे एक बड़ी पुरानी छतरी भी मिल गयी थी। उसे पत्नी ने कर्नल की पार्टी के लिए चलायी गयी लाटरी में जीता था। उसी रात उन्होंने एक शानदार 'आउटडोर' पार्टी में भाग लिया था। वह, कर्नल तथा अगस्तिन, जो उस समय आठ वर्ष का था, उस छाते के नीचे बैठकर सब कुछ देखते रहे थे। अब अगस्तिन मर चुका था, छाते को कीड़ों ने खा डाला था।

"जरा देखो तो सही, कीड़ों ने क्या हालत कर डाली है!"

लेकिन पत्नी उस तरफ नहीं देख

साहित्य के लिए सन १९८२ के नोबेल पुरस्कार विजेता गार्शिया मारक्वेज का लातीनी अमरीका के लेखकों में अग्रगण्य स्थान है। वे एक प्रतिबद्ध लेखक हैं। उनकी प्रतिबद्धता समाज के दलित, पतित समुदाय के उत्थान के लिए जारी संघर्ष के प्रति है। गार्शिया मारक्वेज को मैक्सिको के सर्वोच्च पुरस्कार 'अजटेक ईगल एवार्ड' से भी पुरस्कृत किया जा चुका है। गार्शिया मारक्वेज ने पुरस्कारों से प्राप्त राशि को राजनीतिक बंदियों के हितार्थ देने का नियम-सा बना लिया है। यहां प्रस्तुत है उनकी एक बहुचर्चित कृति 'नो वन राइट्स् टू कर्नल' का सार। प्रस्तोता : देवेन्द्र कुमार।

रही थी, "हम जिंदा ही सड़-गल चुके हैं। ऐसा ही होता है।" और उसने आंखें बंद कर लीं। वह मृत व्यक्ति का चेहरा याद कर रही थी।

बहुत दिनों से घर में शीशा नहीं था। अतः कर्नल ने स्पर्श से दाढ़ी बना ली। फिर चुपचाप कपड़े पहनने लगा। पेटेंट लेदर शू पहनने से पहले उसने उन पर लगी मिट्टी खुरच डाली।

पत्नी ने कर्नल की ओर देखा। वह शादी के दिन की तरह सजा खड़ा था और एकाएक उसे महसूस हुआ कि कर्नल कितना दुर्बल और बूढ़ा हो गया था।

"तुम्हारे कपड़ों से लग रहा है, जैसे किसी विशेष आयोजन में जा रहे हो।"

"हां, यह एक विशेष आयोजन ही है। कितने साल बीत गये, जब कोई आदमी अपनी मौत मरा है।" वह बाहर निकलने लगा तो पत्नी ने कहा, "डॉक्टर मिले तो पूछना, क्या हमने उस पर खौलता पानी डाल दिया था, जो उसने आना बंद कर दिया।"

कर्नल-दंपति शहर के एक छोर पर ताड़ के पत्तों की छतवाले घर में रहते थे। उसकी दीवारों से सफेदी की परतें उतरने लगी थीं। बारिश थम गयी थी, लेकिन उमस बरकरार थी। कर्नल संकरी गलियों से होता हुआ मुख्य चौक में पहुंच गया। जहां तक नजर जाती थी, हर तरफ जैसे फूलों का गलीचा बिछा हुआ था। अपने-अपने घर के दरवाजे में बैठी महिलाओं ने काले कपड़े पहन रखे थे, उन्हें शवयात्रा के गुजरने की प्रतीक्षा थी।

गिरजाघर से अभी शवयात्रा चली

नहीं था । काली टाइयां लगाये लोग छातों के नीचे खड़े खुसफुसा रहे थे ! चारों ओर फूलों की गंध थी। कर्नल मृतक की मां को संवेदना जताने के लिए अंदर जाना चाहता था, लेकिन भीड़ बहुत थी । भीड़ के बीच किसी तरह रास्ता बनाकर वह अंदर पहुंचा, लेकिन फिर दबाव ने उसे जल्दी ही सड़क पर पहुंचा दिया। बूंदें अब भी गिर रही थीं।

"आओ मित्र, मैं कब से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।" यह साबास था, उसके मृत बेटे का संरक्षक और पार्टी का अकेला ऐसा नेता, जो राजनीतिक दंड से बच गया था और शहर में रह रहा था ।

शवयात्रा में चलते हुए एकाएक साबास ने पूछ लिया, "क्यों दोस्त, तुम्हारे मुरगे के क्या हाल हैं!"

"अभी अपनी जगह मौजूद है । भला-चंगा है ।" कर्नल ने कहा । तभी बैरकों की बालकनी पर मेयर एक विशिष्ट मुद्रा में दिखायी दिया । फादर एंजील बरसती बूंदों के बीच चिल्लाकर मेयर से बात कर रहे थे ।

नतीजा वहीं था, जो हर बार होता था। शवयात्रा को पुलिस बैरकों के सामने से गुजरने की अनुमति नहीं दी गयी थी ।

"अरे, मैं तो भूल ही गया था कि हम पर मार्शल लॉ लागू है ! यह तो मैं हमेशा ही भूल जाता हूं।" साबास ने कहा !

"लेकिन यह कोई विद्रोह नहीं, यह तो बेचारे गरीब संगीतज्ञ की शवयात्रा है।"

शवयात्रा की दिशा बदल दी गयी। ताबूत के गुजरने के बाद औरतें सड़क पर निकल आयीं ।

साबास ने कर्नल से अपने नये दुमंजिले मकान के बाहर विदा ली। कर्नल घर की तरफ चल दिया। बाजार से उसने कॉफी और मुरगे के लिए मकई ले ली। वह जल्दी से जल्दी घर पहुंचकर कपड़े उतारना चाहता था ।

कर्नल के कमरे में पहुंचते ही पत्नी ने सवाल दाग दिया, "वे क्या कह रहे थे?"

"उनमें से हरेक मुरगे पर शर्त के लिए रकम बचा रहा है। उनका कहना है, ऐसा शानदार मुरगा जिलेभर में दूसरा नहीं है। उसके पांच सौ पीसो जरूर मिल सकते हैं।" कर्नल ने कहा !

उसे उम्मीद थी, उसका यह तर्क मुरगे को घर में रखने का औचित्य सिद्ध कर देगा उसकी पत्नी की नजर में। मुरगा उसके बेटे अगस्तिन का था। नौ महीने पहले मुरगों की लड़ाई के खेल के दौरान वह विद्रोही साहित्य बांटते हुए गोली का शिकार हो गया था।

"दिवा:स्वप्न बस ! जब मक्का खत्म हो जाएगी, तो क्या हमें खाएगा तुम्हारा मुरगा ?"

कर्नल ने सोचने की मुद्रा में कहा, "बस, कुछ ही महीनों की तो बात है ! मुरगे जनवरी में लड़ाये जाएंगे, उस समय बेचने पर इसके काफी दाम मिल जाएंगे ।"

कर्नल को बाहर जाने की जल्दी में देख, पत्नी ने पूछा तो जवाब मिला, "आज डाक आएगी, चिट्ठियां । आज शुक्रवार है ।"

पत्नी उसे देखती रही । उसके जूते इस लायक नहीं रह गये थे कि पहनकर चला जा सके।

उसने दूसरे जूतों के लिए टोका तो कर्नल ने कहा, "मैं नहीं पहन सकता ! जब भी पहनकर चलता हूं, तब ऐसा लगता है, जैसे किसी अनाथ आश्रम से भागकर आ रहा हूं ।"

"हम अपने बेटे के बिना अनाथ ही तो हैं।" पत्नी कह रही थी ।

कर्नल बंदरगाह की तरफ चल दिया। उसने दूर से ही मोटर-लांचों को जेटी पर लगते देख लिया था। यात्री उतरने लगे थे। हर बार आनेवाले सेल्समैन और पिछले सप्ताह जाकर लौटनेवाले नगर-वासी हमेशा की तरह । आखिर में डाक लानेवाली बोट आकर लगी । डेक की छत पर ऊंची चिमनी से बंधा हुआ डाक का थैला, जिस पर पानी से बचाने के लिए 'आयल-क्लाथ' लिपटा था। पंद्रह वर्षों की प्रतीक्षा ने कर्नल की संवेदनाओं को धार-दार बना दिया था । पोस्ट-मास्टर डाक-बोट पर गया, फिर चिमनी के पास चढ़-कर उसने डाक के थैले की रस्सियां खोलीं और उसे कंधे पर लादकर लौट चला। इस पूरे दौरान कर्नल की निगाहें एक पल के लिए भी उससे अलग नहीं हुईं ! हर शुक्रवार को, पिछले पंद्रह वर्षों से लगातार . . . । अब पोस्ट-मास्टर बंदरगाह के पास-वाली गलियों के बीच से लुकता-छिपता इधर आ रहा था। कर्नल की उत्कंठा अब धीरे-धीरे आतंक का रूप लेती जा रही थी।

डॉक्टर हर सप्ताह डाक से आनेवाले अखबारों के बंडल की प्रतीक्षा कर रहा था। कर्नल ने उसे पत्नी की शिकायत बतायी, तो वह मुसकराता हुआ उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछने लगा ।

कर्नल ने पत्नी के बिगड़ते स्वास्थ्य के बारे में विस्तार से बताया, लेकिन उसकी नजर डाक छांटते पोस्ट-मास्टर पर लगी रही। कर्नल को अपने लिए भी हलकी-सी उम्मीद थी। डॉक्टर को अखबारों का बंडल मिल गया था, अब वह तेजी से खबरों पर आंखें दौड़ा रहा था। पोस्ट-मास्टर ने वहां खड़े अन्य लोगों में डाक बांटना शुरू कर दिया था । फिर सबसे निबटकर वह टेलीग्राफ यंत्र के सामने जा बैठा।

डॉक्टर ने कहा, "तो हम चलें।"

पोस्ट-मास्टर ने उनकी ओर देखे बिना शब्द उछाल दिये, "कर्नल के लिए कुछ नहीं है।"

कर्नल को उसके शब्द अपमानजनक लगे। उसने कह दिया, "वैसे भी मुझे किसी पत्र की प्रतीक्षा नहीं थी।" फिर डॉक्टर की ओर मुड़कर बचकाने अंदाज में कहा, "मुझे कोई खत नहीं लिखता।"

वे लौट चले। कर्नल इस तरह चल रहा था, जैसे कोई आदमी आगे नहीं, पीछे की तरफ चल रहा हो, अपना खोया हुआ सिक्का ढूंढ़ने की कोशिश करता हुआ।

चमकीली दोपहर! बड़े चौक में कायदे से खड़े बादाम वृक्ष अपनी अंतिम गली-सड़ी पत्तियों से पिंड छुड़ा रहे थे! जब वे डॉक्टर के घर के सामने पहुंचे तो अंधेरा छाने लगा था।

"क्या खबरें हैं?" कर्नल ने पूछ लिया।

"अखबारों से कुछ पता नहीं चलता। सेंसर जो कुछ छापने की अनुमति देता है, उससे..."

कर्नल ने पढ़ा, अंतर्राष्ट्रीय खबरें, मुखपृष्ठ पर पैसे देकर प्रकाशित कराये गये शोक-समाचारों की भरमार थी।

"चुनावों की कोई उम्मीद नहीं!"

"इतने भोले न बनो कर्नल! आखिर हम कब तक किसी मसीहा की प्रतीक्षा करते रहेंगे!" डॉक्टर ने कहा।

●●

सात बजे के बाद गिरजाघर के घंटे बजने लगे। घंटे बजाकर फादर एंजेल सांकेतिक रूप से बता रहे थे कि इस समय शहर में चल रही फिल्म नैतिक दृष्टि से किस स्तर की है! बारह घंटे गूंजे!

"यानी, फिल्म किसी के भी देखने लायक नहीं है, एकदम बेकार है", कर्नल की पत्नी ने कहा, "पिछले एक वर्ष से सारी फिल्में ऐसी ही दिखायी जा रही हैं।"

कर्नल ने कोई जवाब नहीं दिया! पहले मुरगे को पलंग के पाये से बांधा, फिर दरवाजे में ताला लगाया। कमरे में कीटनाशक दवा छिड़की, फिर लैंप को फर्श पर रख दिया और झूलन-बिस्तर पर लेटकर अखबार पढ़ने लगा। कर्नल ने एक-एक चीज पढ़ डाली। ग्यारह बजे कर्फ्यू का सायरन बोल उठा।

एकाएक पत्नी ने पूछा, "पुराने लोगों के बारे में कोई खबर है?"

"कुछ नहीं! शुरू-शुरू में कम से कम ये नयी पेंशनवालों के नाम छाप देते थे। लेकिन, अब तो पांच साल से यह भी बंद कर दिया गया है!"

आधी रात के बाद बारिश फिर शुरू हो गयी। छत से पानी टपकने लगा! कर्नल ने अंधेरे में टपकन ढूंढ़ने का प्रयास किया। उसे लगा, जैसे सिर तेजी से घूम रहा हो। रातभर वह बुखार में बड़बड़ाता रहा।

सुबह नित्यकर्म से लौटा तो पत्नी ने कहा, "तुम रातभर न जाने क्या बड़-बड़ाते रहे बुखार में !"

"नहीं, बुखार नहीं, मुझे कल रात फिर मकड़ी और उसके जालवाला सपना दिखायी दिया था !"

जैसा हर बार होता था, कर्नल की पत्नी दौरे से उबरने के बाद एकदम अति-सक्रिय हो गयी थी। उसने पूरे घर को उलट-पलट दिया था और हर चीज की जगह बदल दी थी !

थोड़ी देर बाद डॉक्टर उसकी पत्नी को देखने आया। पत्नी कमरे में थी तो उसने कर्नल को तीन कागज थमा दिये। बोला, "इसमें वे समाचार हैं, जिन्हें कल के अखबारों ने नहीं छापा था !"

कर्नल उन्हें जल्दी से पढ़ गया। पूरे देश की मुख्य घटनाओं का सार दिया गया था। ये परचे गुप्त रूप से बांटे जा रहे थे। इनमें देश के आंतरिक भागों में चलने-वाले सशस्त्र प्रतिरोध का विवरण था। कर्नल ने स्वयं को परास्त अनुभव किया। चलते समय डॉक्टर ने कह दिया, "इन परचों को दूसरों तक पहुंचा देना।"

वह डॉक्टर के साथ-साथ बाहर निकल आया। हवा खुश्क थी, सड़कों पर तारकोल पिघलने लगा था। डॉक्टर से विदा लेकर वह दरजी की दुकान पर पहुंचा। डॉक्टर के शब्द कानों में गूंज रहे थे, "जब तुम्हारा मुरगा जीत जाएगा, तब मैं बहुत मोटा बिल भेजूंगा तुम्हारे पास...।"

दरजी की दुकान में अगस्तिन के साथी मौजूद थे। जब से उसके साथी मार दिये गये थे या निर्वासित होकर चले गये थे, तब से यही एक जगह बची थी कर्नल के पास। उसके पास शुक्रवार की डाक की प्रतीक्षा के अलावा कोई काम नहीं था।

शाम को घर लौटकर उसे ध्यान आया कि मुरगे के लिए मक्का खत्म हो चुकी है। उसने पत्नी से कुछ देने को कहा। वह बोली, "सिर्फ पचास सेंट बचे हैं।" यह अगस्तिन की सिलाई मशीन बेचकर जो मिला था, उसका अंतिम टुकड़ा था। नौ महीनों के दौरान उस रकम को वे एक-एक पेनी करके खर्च रहे थे, कभी अपने लिए तो, कभी मुरगे के लिए।

"एक पौंड मकई, कॉफी और . . .", कर्नल की पत्नी कह रही थी, लेकिन कर्नल ने टोक दिया, "और दरवाजे में लटकाने के लिए सोने का हाथी भी लेता आऊं ! जानती हो, मक्का ही बयालीस सेंट की आएगी।"

दोनों कुछ सोच रहे थे। "मुरगे का क्या है ! वह इंतजार कर सकता है !" कर्नल की पत्नी ने कहा। लेकिन पति के चेहरे पर आये भावों ने उसे बीच में ही चुप कर दिया। वह पलंग की पाटी पर दोनों हथेलियों के बीच सिक्के खनखनाता बैठा था। उसने कहा,

"मैं उन लड़कों के बारे में सोच रहा हूं, जो मुरगे पर बाजी बदने के लिए एक-एक पेनी जमा कर रहे हैं ?"

पत्नी ने निर्णय सुना दिया, "तो मकई ले आओ। हम तो जैसे-तैसे कर ही लेंगे।"

●●

कर्नल सुबह-शाम जब भी खाने के लिए बैठता, तब हमेशा एक अचरज के भाव के साथ वह भोजन करता था, जैसे 'एक रोटी खाने के बाद दो बन जाएं।' दमे के दौरे से उबरकर पत्नी ने फटे कपड़ों की मरम्मत, रफूगीरी और सिलाई के काम करते हुए बिना पैसे के ही घर चलाने का जादू दिखाया था। इस बीच कर्नल मुरगे के बारे में सोच-सोचकर वह परेशान हो जाता था। बुधवार को मुरगे को तोला तो उसका वजन ठीक था। उसे थोड़ी तसल्ली हुई। उसी दोपहर को अगस्तिन के साथी मुरगे को घेरे रहे और हिसाब लगाते रहे कि मुरगे के जीतने पर उनमें से हरेक को कितनी-कितनी रकम मिलेगी।

शाम को कर्नल की पत्नी ने कर्नल के बाल काटे तो वह मुसकराकर बोला, "तुमने मेरी उम्र बीस साल कम कर दी है।"

"मेरा स्वास्थ्य ठीक हो तो मैं मुरदे में भी जान फूंक सकती हूं।" पत्नी ने आत्म-विश्वासभरे स्वर में कहा।

लेकिन, यह आत्मविश्वास अधिक देर तक नहीं चला। "अब घर में घड़ी और बड़ी तसवीर को छोड़कर ऐसा कुछ नहीं हैं, जिसे बेचा जा सके।" बृहस्पतिवार की रात को पत्नी अपनी आशंकित उत्कंठा का बोझ न सह सकी, तो उसने कर्नल से कह डाला!

कर्नल ने उसे आश्वस्त किया, "चिंता मत करो! कल डाक आएगी।"

डाक आयी जरूर! हर शुक्रवार की तरह कर्नल बंदरगाह पर पहुंच गया। उसने पोस्ट-मास्टर को एक पल के लिए भी अपनी नजर से ओझल नहीं होने दिया। सब कुछ उसी तरह हुआ, जैसे हर शुक्रवार को होता था, और यहां तक कि इस बार भी कर्नल के लिए कोई पत्र नहीं था।

अगला शुक्रवार भी आया और चला गया। सब कुछ उसी तरह घटा।

"हम पंद्रह वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे हैं। कितना समय बिताया जा सकता है इस तरह ?" उस रात पत्नी ने प्रश्न किया, फिर स्वयं ही शांत हो गयी। वह जानती थी कि कर्नल के पास जवाब नहीं है।

कर्नल ने कहा, "हमें अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हमारा नंबर १८२३ है।"

कर्नल डॉक्टर के दिये हुए अखबार पढ़ता रहा, लेकिन उसका मन बार-बार पीछे भटक रहा था। उन्नीस साल पहले संसद ने पुराने सैनिकों को पेंशन देने का विधेयक पारित किया था। आठ वर्ष तो उसे अपने दावे की वैधता सिद्ध करने में

लग गये। उसके बाद छह वर्ष लगे पेंशन पाने के योग्य व्यक्तियों की सूची में नाम लिखवाने में। पेंशन के बारे में अंतिम पत्र यही मिला था कर्नल को।

"हमें नया वकील करना चाहिए", कर्नल की पत्नी ने कहा। कर्फ्यू का सायरन बजने के बाद कर्नल ने रोशनी बुझा दी थी। लेकिन वह अब भी जाग रही थी।

"वकील बदलने में रकम खर्च होती है और . . .", कर्नल ने तर्क देना चाहा !

"नहीं, वकील से यह कहा जा सकता है कि जब पेंशन मिल जाए, तब वह अपनी फीस ले ले ।"

शनिवार को कर्नल वकील से मिलने गया। वकील ने कहा, "मैंने तो पहले ही कहा था कि मामला कुछ दिनों का नहीं, वर्षों चलनेवाला है। धैर्य मत छोड़ो!"

"मेरे सब साथी डाक की प्रतीक्षा करते हुए मर चुके हैं। हम खैरात नहीं मांगते। हमने देश को बचाने में अपनी आहुतियां दी हैं !"

"मानवीय अकृतज्ञता असीम होती है।" वकील ने फतवा दिया।

कर्नल को सब याद था ! नीरलैंदिया-संधि के दिन से ही यह सब कहा जाने लगा था। सरकार ने यात्रा-भत्ते और दूसरी बहुत-सी सुविधाएं देने का वायदा किया था। लेकिन, आठ साल बाद भी कर्नल प्रतीक्षा ही कर रहा था।

उसने दूसरा वकील करने की बात कही, तो वकील ने बहुत खोजकर ढूंढ़ के बाद 'पावर ऑव अटार्नीवाला' कागज उसे थमा दिया, लेकिन पेंशन के दावे का प्रमाण नहीं मिल सका।

कर्नल को याद था। वह अपने जिले में क्रांतिकारी परिषद का कोषाध्यक्ष था। दो बक्सों में काफी रकम लेकर एक खच्चर के साथ उसने दुर्गम पहाड़ी रास्तों-पगडंडियों की असाध्य यात्रा पूरी की थी।

सेनापति कर्नल बुएंदिया ने अपने हाथों से रकम सुरक्षित प्राप्त करने की रसीद दी थी।

पेंशन के दावों में वही रसीद नत्थी थी, अगर वह खो गयी तो . . . ?

"वह दस्तावेज बहुमूल्य है। और, उन महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों की अनदेखी करने की हिम्मत किसी में नहीं हो सकती।" कर्नल को अब भी भरोसा था।

"लेकिन अधिकारी न जाने कितनी बार बदले गये हैं। देखो न, पिछले सालों में सात राष्ट्रपति बने हैं। हर राष्ट्रपति ने कम से कम दस बार अपना मंत्रिमंडल बदला और हर मंत्री ने कम से कम सौ बार अपना स्टाफ बदला है।"

"लेकिन, कोई घर नहीं ले जा सकता उन कागजों को।" कर्नल ने कहा और लौट आया।

बारिश लगातार हो रही थी। और पत्नी उसके मना करने के बावजूद फूल

लेकर अगस्तिन की कब्र पर गयी थी। लौटी तो दूसरा दौरा पड़ गया। दिन-रात की बारिश, यहां-वहां टपकती छत और पत्नी की सीटी बजाती सांस के साथ कर्नल अपने से जूझता रहा। 'बस, एक ही सप्ताह की बात है।' यह बात न जाने कितनी बार पड़ोसियों के सामने दोहरा-कर उसने उधार मांगा था। कर्नल को पूरी आशा थी कि जैसे ही खत आएगा, सब कुछ बदल जाएगा।

उस दिन वह मुरगे के बारे में सोच रहा था, तभी पत्नी ने कहा, "मुरगे से छुटकारा दिलाओ मुझे।"

कर्नल को इसी क्षण की प्रतीक्षा थी। जिस दिन बेटे को गोली लगी थी, उसी दिन से वह इन शब्दों को सुनने की आशंका में जी रहा था! "अभी बेचना ठीक नहीं होगा। दो महीने बाद ही तो मुरगे की लड़ाई की प्रतियोगिता होगी। उसके बाद इसके अच्छे दाम लग जाएंगे। मैं सिर्फ अगस्तिन के बारे में सोचता हूं। याद है, जब वह मुरगे के जीतने की खबर लेकर आया था, तब कितना खुश दिखायी दे रहा था।"

"याद है! अच्छी तरह याद है। अगर उस दिन मुरगों को लड़ाने नहीं जाता, तो वह सब न हुआ होता। जब वह मुरगे को बगल में दबाये बाहर निकल रहा था, तब मैंने उसे कितना मना किया था। लेकिन कमबख्त ने मुझे चुप कर दिया और यह कहता हुआ चला गया कि शाम को घर पर सोना बरसेगा सोना! और . . ." पत्नी का गला रुंध गया था। वह हांफती हुई लेट गयी थी! कर्नल ने हौले से उसका माथा सहला दिया। पत्नी ने कर्नल की आंखों में झांका—"यह पाप है कि हम भूखे मरकर मुरगे का पेट भरें।"

"तीन महीने में कोई नहीं मरता। अगर भूख से ही मरना होता, तो हमें कभी का मर जाना चाहिए था।" और वह बाहर निकल आया। दोपहर की गरमी में सब आराम कर रहे थे और वह अनाम, अनजान गलियों में भटक रहा था। थककर लौटा तो पत्नी ने घड़ी की याद दिलायी, "ऐसा करो, घड़ी बेच दो!" उसने घड़ी को कागज में लपेटकर कर्नल को थमा दिया।

अब जाना पड़ा। दरजी की दुकान में अगस्तिन के साथी मौजूद थे। उन्होंने उसे विद्रोही साहित्य के परचे दे दिये। फिर उसकी बगल में दबे बंडल के बारे में पूछने लगे। कर्नल सच न कह सका, "मैं मरम्मत कराने ले जा रहा हूं घड़ी," उसने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

हरमन नामक युवक ने कहा, "मुझे दो, मैं देखता हूं!" कर्नल ने मना करना चाहा, पर उसे हार माननी पड़ी! हरमन ने देखभाल कर कहा, "थोड़ी खराबी थी, वह ठीक कर दी है।" कर्नल को पूछना पड़ा, "क्या दूं इस काम के लिए?"

"जनवरी में। मुरगे के जीतने के बाद।"

कर्नल को अपनी बात कहने का अवसर मिल गया। "ऐसा है कि मैं मुरगा तुम्हें, तुम सबको दे देता हूं। मैं इसकी देखभाल नहीं कर पाता हूं। कहीं मर न जाए।"

"उसे कुछ नहीं होगा। वह अगस्तिन का मुरगा है।"

"मैं सब जानता हूं . . . ," कर्नल ने दांत भींचे, "मुश्किल यही है कि अभी पूरे दो महीने बाकी हैं।"

लड़के समझ गये थे। उन्होंने मुरगे का पेट भरने की जिम्मेदारी ले ली थी।

अगले दिन वह सावास से मिला, तो उसने भी मुरगे के बारे में पूछा, फिर कहा, "कर्नल, मुझे पता चला है, तुम कुछ परेशान हो। चिंता छोड़ो, दोस्त! तुम चाहो तो मुरगे के बदले तुम्हें नौ सौ पीसो मिल सकते हैं।"

'नौ सौ!' क्रांतिकारी परिषद की धरोहर लौटाने के बाद यह सबसे बड़ी राशि सुनी थी कर्नल ने पिछले आठ वर्षों में। उसे पेट के अंदर अजीब-सी ऐंठन महसूस हुई! यह न बीमारी की वजह से थी और मौसम के कारण, इसका कारण कुछ और ही था। कर्नल सीधा पोस्ट-मास्टर के पास पहुंचा। लेकिन पोस्ट-मास्टर [illegible] की मुद्रा में सिर हिला दिया।

"आज तो निश्चित रूप से आना चाहिए था पत्र," कर्नल ने गुस्से से कहा।

"कर्नल, यहां निश्चित केवल एक चीज है, और वह है—मृत्यु।"

कर्नल को शाम के खाने में मकई का दलिया मिला। उसे ताज्जुब हुआ, क्योंकि सुबह घर में कुछ नहीं था। पत्नी ने बताया, "असल में यह मुरगे का हिस्सा है। दिन में लड़के ढेर सारी मक्का ले आये थे। मुरगे ने फैसला किया कि वह हमें भी अपने साथ खिला सकता है। शायद, इसी को जिंदगी कहते हैं।"

शाम को कर्नल की पत्नी मृतक की पत्नी से मिलने गयी। और, अंधेरा गहरा हो जाने के बाद भी नहीं लौटी। कर्नल चिंतित हो उठा। कर्फ्यू शुरू होने में थोड़ा ही समय रह गया था। वह बेचैनी से अंदर-बाहर चक्कर लगाता रहा। आखिर वह आ पहुंची। कर्नल ने पूछा, "कहां गयी थीं?"

वह टालती रही, फिर बहुत पूछने पर बताया, "पादरी के पास गयी थी, अपनी शादी की अंगूठियां गिरवी रखने के लिए, लेकिन . . . लेकिन उसने टाल दिया। कहा कि पवित्र वस्तुओं को इस उपयोग में नहीं लाना चाहिए।"

वह कहे जा रही थी, "दो दिन पहले मैंने घड़ी बेचने की कोशिश की थी, लेकिन कोई खरीदार नहीं मिला। आजकल बाजार में चमकदार डायलवाली आधुनिक घड़ियां सस्ते दामों पर आम बिक रही हैं। हमारी

बाबा आदम के जमाने की घड़ी कौन खरीदेगा भला!"

कर्नल को लगा, चालीस वर्षों की साझा जिंदगी, साझी भूख, सम्मिलित दुःख के बावजूद वह अपनी पत्नी को अभी तक नहीं समझ पाया है। शायद, उनका प्यार कुछ पुराना और बूढ़ा हो गया है।

"और तसवीर के साथ भी यही हुआ। वैसी ही तसवीरें हरेक के पास हैं। मैं कई दुकानों पर गयी थी।" वह अपनी रौ में कहती जा रही थी।

"यानी, पूरा शहर जान गया कि हम भूखों मरने लगे हैं!"

"तुम पुरुष क्या जानो, गृहस्थी के दुःख-दर्द! कितनी बार ऐसा हुआ है कि मैंने पतीली में पत्थर डालकर उबलने रखे हैं, ताकि पड़ोसी समझें कि कुछ न कुछ जरूर पक रहा है!" कर्नल ने अपने को अपमानित महसूस किया।

"मैं इस घर में अभी तक मौजूद स्नेह और झूठी उम्मीद के भुलावों को हमेशा के लिए छोड़ने को तैयार हूं।"

पत्नी की आवाज गुस्से से कांप रही थी, "मैं इस असहाय आत्मसम्मान से भरपाई!"

कर्नल स्तब्ध था।

"बीस सालों से तुम चंद टुकड़ों की प्रतीक्षा कर रहे हो, जिन्हें हर चुनाव के दौरान भेजने का वायदा किया जाता है। हमें जो कुछ मिला, वह यह था कि हमारा बेटा भी हमसे छीन लिया गया।"

"लेकिन हमने अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निबाहा था।"

"और वे हर वर्ष संसद में एक हजार पीसो प्रतिमास पेंशन का वायदा करके अपना कर्तव्य पूरा करते आ रहे हैं, पिछले बीस वर्षों से . . .।"

"अब बहुत हुआ! मैं कल अपने दोस्त के हाथ नौ सौ पीसो में मुरगे को बेच दूंगा। तुम सो जाओ।"

●●

साबास को फुरसत नहीं थी! वह कर्नल को देखकर भी अनदेखा कर गया था, लेकिन आज अंतिम फैसला करके आया था, इसलिए बैठा रहा। लेकिन जब आखिरी बार उसने साबास को कुछ लोगों के साथ घर से बाहर जाते देखा, तब वह रह न सका, "मुरगा..." उसने कहा, "मैंने उसे बेचने का फैसला कर लिया है।"

साबास ने दिलचस्पी से कर्नल की ओर देखा, "बहुत बढ़िया! मेरे पास एक ग्राहक है, जो उसके चार सौ पीसो तक दे सकता है।"

"लेकिन तुमने तो कहा था.. कहा था कि नौ सौ पीसो मिल सकते हैं!" कर्नल ने कहा!

"समय-समय की बात है, कर्नल!" बात करते हुए साबास ने ... में ... तिजोरी खोली और जेबों में नोट भरने लगा, फिर उसने कुछ नोट कर्नल की तरफ बढ़ा दिये! "ये साठ पीसो रख लो! बाकी हिसाब बाद में हो जाएगा।"

हिसाब हो गया था।

साबास को इंजेक्शन देने के बाद डॉक्टर भी कर्नल के साथ बाहर निकल आया। कर्नल ने जैसे माफी मांगने के स्वर में कहा, "मैं मजबूर था! मुरगा हमारे ही प्राण लेने पर उतारू है। वह हमें खा जाएगा।"

डॉक्टर ने घूरकर कर्नल की ओर देखा, "मनुष्यभक्षी पशु केवल एक ही है, और उसका नाम है साबास! वह तुमसे चार सौ पीसो में खरीदा मुरगा नौ सौ पीसो में बेच देगा।"

कर्नल भरोसा करने को तैयार नहीं था कि उसे इस तरह ठगा गया है।

"उसने दूसरे पुराने क्रांतिकारी साथियों का सामान भी इसी तरह कौड़ियों के मोल खरीदा है कई बार। उसके और मेयर के बीच जैसे एक अलिखित समझौता हो चुका है। मेयर किसी आदमी को शहर से निर्वासित करता है और साबास...।"

●●

उस शाम कर्नल की पत्नी बाजार गयी, न जाने कितने समय बाद। उसने कहा, "लड़कों को बता दो कि हमने मुरगा बेच दिया है।

कर्नल बोला, "साबास कुछ दिनों के लिए बाहर गया है। उसके लौटने तक यह सब न कहने पर भी चलेगा।"

[illegible] र लौट गयी और उसे अगस्तिन के साथी एक जगह खेल में अपनी किस्मत आजमाते मिले। अगस्तिन के साथी आल्वारो ने उसे चुपचाप एक कागज थमा दिया।

एकाएक हाल में सन्नाटा छा गया! सब लोगों ने सिर से ऊपर हाथ उठा लिये और भयभीत मुद्रा में खड़े हो गये।

कर्नल ने अपने ठीक पीछे राइफल का घोड़ा चढ़ने की आवाज सुनी। वह समझ गया कि आज उसे प्रतिबंधित राजद्रोही क्रांतिकारी हैंडबिल के साथ पकड़ लिया गया है। उसने बिना हाथ ऊपर उठाये घूमकर देखा, ठीक सामने राइफल ताने वही आदमी खड़ा था, जिसने अगस्तिन को गोली मारी थी! कर्नल ने दांत भींचे फिर हाथ से राइफल की नली को परे हटाता हुआ बोला, "ज़रा एक तरफ..."

चमगादड़-सी आंखोंवाला वह सैनिक कर्नल को घूरता रहा, कर्नल को लगा, जैसे वे आंखें उसे निगल रही हैं, दबा रही हैं, पचा रही हैं और फिर उसने खुद को बाहर उगला जाता महसूस किया!

"कर्नल, आप जा सकते हैं।"

●●

शुक्रवार! दिसम्बर आ चुका था। हवा में ताजगी थी। पेड़ों पर हरियाली और फूलों में खुशबू! कर्नल शीशे में देखता हुआ भी अनदेखे चेहरा छू-छूकर दाढ़ी बना रहा था। यह पिछले अनेक वर्षों की गहरी आदत थी और शीशा कुल दो-तीन दिन पहले ही खरीदा गया था। लड़के मुरगे को घेरे बैठे थे। अब

ट्रेनिंग के दिन आ गये थे। वे मुरगे के बारे में ही बातें कर रहे थे। "मैं इस मुसीबत से कब छुटकारा पाऊंगी," पत्नी ने कहा। उसने अंगीठी के पास खड़ी पत्नी को देखा ! वह जैसे दहक रही थी !

तैयार होने के बाद कर्नल कुछ देर तक नये जूतों के साथ लड़ता रहा, लेकिन वे पैरों में आ ही नहीं रहे थे। आखिर उसने कोशिश छोड़ दी और पुराने ही ही पहन लिये। वह बंदरगाह की तरफ चल दिया। वह पीछे छूट गये अपने पचहत्तर वर्षों के बारे में सोच रहा था।

मोटर-बोट आयी। पोस्ट-मास्टर ऊपर गया और चिमनी के साथ बंधा हुआ डाक-थैला लेकर नीचे उतर आया। पूछताछ की सारी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद कर्नल थके कदमों से लौट चला। एकाएक मुरगों की आवाज सुनकर वह चौंका। एक तरफ भीड़ जमा थी। वह तेजी से भीड़ में धंस गया ! वहां उसका मुरगा मौजूद था। उसे दूसरे से लड़ाने का अभ्यास कराया जा रहा था।

अभ्यास के बाद उसने मुरगा एक लड़के के हाथ से छीन लिया और घर की तरफ चल दिया। बंदरगाह के किनारे बहुत भीड़ थी। शहर में सरकस आया था। पशुओं के बक्से उतारे जा रहे थे। औरतें, बूढ़े, बच्चे—सब मग्न थे ! अनेक वर्षों बाद सरकस शहर में आया था !

दरवाजे पर मौजूद बच्चों को डांटता-ठेलता वह अंदर चला गया। पत्नी बैठी कांप रही थी, "वे मुरगे को जबरदस्ती ले गये। मैंने उन्हें मना किया, कहा कि यह बिक चुका है, लेकिन उन्होंने कहा वे इसे लेकर ही जाएंगे, चाहे लाशें क्यों न बिछ जाएं। मुरगा पूरे शहर का है।"

●●

सुबह आयी और सूरज काफी ऊपर उठ गया, पर वे दोनों नहीं बोले। उसने देखा कि पत्नी बार-बार होंठ दबा रही है, उसकी आंखें तेजी से झपक रही थीं। "तुम्हें दूसरों की भावनाओं का जरा भी ख्याल नहीं है, तुम्हारे लिए मेरा नंबर मुरगे के बाद ही आता है।"

"अगर डॉक्टर इस बात की गारंटी दे कि मुरगे को बेचने से तुम्हारा दमा ठीक हो जाएगा, तो मैं उसे तुरंत बेच दूंगा। अगर नहीं, तो नहीं।" वह मुरगे को अभ्यास कराने ले गया। लौटा तो पत्नी बेचैन घूम रही थी। उसके फेफड़ों से सीटी की आवाज निकल रही थी—दौरे के लक्षण थे।

शाम बीती और अब रात पीछे खिसक रही थी। कर्नल लैंप बुझाने लगा तो उसने मना कर दिया, "मैं अंधेरे में नहीं मरना चाहती।"

कर्नल ने खुद को थका हुआ महसूस किया। वह चाहता था कि सो जाये और पूरे चौवालीस दिन तक [illegible] और जनवरी को जागे और ठीक वहां, जहां मुरगों की लड़ाई हो रही हो !

लेकिन वह सो नहीं पाया क्योंकि पत्नी जाग रही थी। "हमेशा ऐसा ही होता है !

हम इसलिए भूखे रहे ताकि और लोग खा सकें। पिछले चालीस वर्षों से . . ."

कर्नल चुप रहा । उसे बोलना नहीं था । वह कहती जा रही थी, "मुरगे पर बाजी लगानेवाला हर आदमी जीतेगा, लेकिन हम . . . हम हार जाएंगे ।"

"क्योंकि हमारे पास लगाने के लिए एक सेंट भी नहीं है।"

"तुमने इतना किया, तुम्हें क्या मिला ! गृह-युद्ध में प्राण हथेली पर लिये लड़ते रहे और इतने सालों से पेंशन की प्रतीक्षा कर रहे हो। हर आदमी का भविष्य है, लेकिन तुम अकेले भूख से मर रहे हो ।"

"मैं अकेला नहीं हूं ।" कर्नल ने और भी कुछ कहना चाहा, पर नींद उस पर हावी होती जा रही थी ।

वह बात करती चली गयी । लेकिन जब कर्नल की नींद का पता चला, तो झटके से मच्छरदानी खिसकाकर बाहर आ गयी। कमरे में इधर से उधर टहलती रही । पीछे रखे मद्धिम लैंप की रोशनी में वह अशरीरी लग रही थी ।

कर्नल जाग गया। उसने कहा, "हम एक काम करेंगे ।"

"हम सिर्फ एक काम कर सकते हैं और वह है मुरगे को बेचना ।"

"हम घड़ी बेच सकते हैं।"

"कोइ नहीं खरीदेगा ।"

"मैं कल आवारो के पास जाऊंगा, शायद, वह मुझे चालीस पीसो दे दे ।"

"वह नहीं देगा ।"

"तब हम तसवीर बेच देंगे।"

"वह भी नहीं बिकेगी।"

"खैर, देखा जाएगा। अब तुम सो जाओ ! अगर हम कुछ नहीं बेच सकेंगे तो फिर सोचेंगे।" उसे नींद आ रही थी ! एकाएक वह झटके से जाग गया। पत्नी उसे झिझोड़ रही थी, "मुझे जवाब दो ।"

पौ फट रही थी ! कर्नल की आंखें जल रही थीं ।

"अगर हम कुछ नहीं बेच सके, तो क्या करेंगे । बोलो न ! जवाब क्यों नहीं देते ?"

"तब तक २० जनवरी आ ही जाएगी ! मुरगा जीत गया, तो उसके मालिक होने के नाते हमें जीत की रकम का बीस प्रतिशत तुरंत मिल जाएगा ।"

"अगर वह हार गया तो ! उसके हारने की बात तुमने सोची ही नहीं ।"

"वह मुरगा कभी नहीं हार सकता।"

"लेकिन मानं लो, अगर वह हार जाये ।"

"उस बारे में सोचने के लिए अभी पूरे चौवालीस दिन हैं !"

"और तब तक हम क्या खाएंगे ? बोलो ।" उसने चिल्लाकर कर्नल का गिरेबान पकड़ लिया ।

कर्नल को यहां तक पहुंचने में अपनी पचहत्तर वर्षों की उम्र का एक-एक पल लगा था। उसने पत्नी को देखा और अजेय पौरुष से भरे स्वर में चिल्लाया —

"खामोश !" ●

फार्म-IV

(नियम ८ देखिये)

कादम्बिनी

१. प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
२. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३. मुद्रक का नाम	:	गौरी शंकर राजहंस
क्या भारत का नागरिक हैं ?	:	हां
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	:	× × ×
पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि. नई दिल्ली-११०००१।
४. प्रकाशक का नाम	:	गौरी शंकर राजहंस
क्या भारत का नागरिक हैं ?	:	हां
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	:	× × ×
पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि. नई दिल्ली-११०००१।
५. सम्पादक का नाम	:	राजेन्द्र अवस्थी
क्या भारत का नागरिक हैं ?	:	हां
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	:	× × ×
पता	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि. नई दिल्ली-११०००१।
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि. नई दिल्ली-११०००१।

मैं, गौरीशंकर राजहंस, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

गौरीशंकर राजहंस
प्रकाशक।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

स्या-पूर्ति—४७

अंतहीन

र प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति
र। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है। गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी।
रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर
जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

पुरस्कार—२५ रुपये
य पुरस्कार—१५ रुपये
म तिथि—२० मार्च, १९८३

: आर. के.

अगर आप के मसूड़े कमज़ोर हैं तो स्वस्थ दाँत [illegible]ने लगते है

फोरहॅन्स का बंधनकारी ऐस्ट्रिंजेंट मसूड़ों को संकुचित करता है

जिससे आपके दाँतों को लम्बी ज़िन्दगी मिलती है

मासिक प्रकाशन
कादम्बिनी
भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
अप्रैल ८३
विशेषांक:
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

विश्व की 24 भाषाओं में
दुनिया का सबसे अधिक बिकने वाला
विश्व विख्यात संदर्भग्रन्थ
GUINNESS BOOK OF WORLD RECORDS
गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स
अब हिन्दी में भी उपलब्ध !
चार अलग-अलग भागों तथा सम्पूर्ण एक जिल्द में प्रकाश्य
प्रथम दो भाग प्रकाशित :
अंतिम दो भाग तथा सम्पूर्ण प्रेस में :
गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स
GUINNESS BOOK OF WORLD RECORDS
किस भाग में किस विषय से संबंधित रिकार्ड्स हैं
भाग I
• मानव जीवन
• मानव उपलब्धियां
• मानव संसार
भाग II
• जीव-जगत
• प्राकृतिक जगत
• ब्रह्मांड एवं अंतरिक्ष
• विज्ञान जगत
भाग III
• कला एवं मनोरंजन
• भवन एवं संरचनाएं
• मशीनों की दुनिया
• व्यापार जगत
भाग IV
• खेल जगत
(दुनिया भर के सभी खिलाड़ियों व खेल संबंधी रिकार्ड)
मूल्य प्रत्येक भाग : 20/-
सभी में बड़े साइज़ के लगभग 150 पृष्ठ
तिमानों की अनूठी दुनिया - - - हजारों-हजार ज्ञानवर्धक व मनोरंजक प्रामाणिक
भंडार ! जैसे :–
के लंबे बौने, मोटे तथा पतले पुरुष, स्त्री या जुड़वा कहां, कब व कौन थे तथा अब हैं □ सबसे
भयंकर भूकम्प, ज्वालामुखी, तूफान या झंझावात कब, कहां आये □ सबसे बड़े किले, इमारतें, बांध,
पुल, सिनेमाघर, नाइट क्लब आदि कौन से तथा कहां हैं □ हाकी, क्रिकेट, फुटबाल, टेनिस आदि
सैकड़ों खेलों में कौन-कौन, क्या-क्या रिकार्ड-होल्डर हैं। - - - ऐसे ही दुनिया के सभी क्षेत्रों की
महत्त्वपूर्ण घटनाओं, स्थानों, व्यक्तियों, वस्तुओं से संबंधित हजारों रिकार्डों का अपूर्व भण्डार
निकट के बुक स्टाल एवं ए. एच.
के रेलवे बुक स्टालों पर मांग
वी. पी. पी. द्वारा मंगाने के लिए लिखें
पुस्तक महल खारी बावली, दिल्ली
नई दिल्ली-110002
PM/H 45

SELF REALIZATION through RAJ YOG + HATH YOG

Now possible by studying and following various paths set down by great Yogiraj Brahmrishi 108 Swami **Yogeshwaranand Saraswati** ji Maharaj (now 96 years and in good health)

Books contain original and unique divine knowledge perceived during Samadhis-in 75 years of Tapasya-with the blessings of his Great and Sacred Gurus-in the seclusion of Himalayas

Original Hindi	English version
बहिरंग योग : Rs. 35/-	**First steps to Higher Yoga Rs. 35 -**

An Exposition of the First Five Constituents of Yoga—the World Renowned Hindu Philosophy, of Patanjali, Contains over' 340 photographs of Physical Postures (Asanas) Breathing Excercise (Pranayamas) and Kiryas.

आत्म विज्ञान : Rs. 30/- — **Science of Soul Rs. 35/-**

A Practical Exposition of Realization of Soul-Containing 30 Multi-coloured Pictures.

ब्रह्म विज्ञान : Rs. 60/- — **Science of Divinity ... 3[illegible]/-**

A Unique Presentation of God-Realization by Practical Methods. Includes ...apters on the Creation of the Universe-with 18 Multi-coloured Illustrations.

दिव्य ज्योति विज्ञान : Rs. 30/- — **Science of Divine Lights** (Under Print)

Light-the most important and Popular medium of Self-and God Realization-has been described for the first time in such great detail-with six multi-coloured pictures.

प्राण विज्ञान : Rs. 20/- — **Science of Vital Force Rs. 30 -**

A New Research on Self and God-Realization by the medium of Vital Force (Prana).

दिव्य शब्द-विज्ञान : Rs. 30/- — Yet to be translated in English

This volume describes how to realise Self & God with the medium of Sound (Shabad) Mantras.

निर्गुण ब्रह्म : Rs. 20/- — **The Essential Colourlessness of the Absolute Rs. 30/-**

A Unique Disquisition on Ultimate Reality. An Outcome of a Rare Combination of Scholarship and Yogic insight

व्याख्यान माला :खड : १-२-३ — Yet to be translated in English

Each part contains collection of 54 Sermons of Swami Yogeshwaranand Saraswati ji Maharaj delivered on various occasions mainly on the paths to realization of self and God.

हिमालय का योगी : प्रथम व द्वितीय खंड : — **Himalaya Ka Yogi Part I & II**

A Biography of Brahmarishi Shri 108 Swami Yogeshwaranand Saraswati ji Mahraj. Material collected edited and published by Yog Niketan Trust.

A treasure for every
Library, Yog Centre, Arya Samaj, Sanatan Dharm Sabha
and all aspirants who have a real desire to follow the path of higher yoga to self-realization.

Enquiries solicited from
★Publishers★Book Sellers★Salesmen (on commission basis) in the line only
(Books sold on no profit no loss basis)

YOG NIKETAN TRUST

(a Public Charitable Trust)
For Publications : 30A/78 Punjabi Bagh, New Delhi-110026 (INDIA)
Main Ashram : Muni-Ki-Reti P.O. Shivanand Nagar, Rishikesh (U.P.)
(Also at Gangotri Uttar Kashi and Pahalgam)

Courtesy : Trading Engineers (International) Pvt. Ltd., New Delhi (INDIA)

सिरफिरेपन का संबंध बौद्धिकता से है!

'कादम्बिनी' के पाठक पूछ सकते हैं कि होली के अवसर पर इस वर्ष हमने 'सिरफिरों के कारनामे' शीर्षक से ही विशेषांक क्यों प्रकाशित किया है? उत्तर स्पष्ट है—एक तो हमारी परंपरा ही लीक से हटकर चलने की है, और, जितने विशेषांक हमने अब तक प्रकाशित किये हैं, उनकी अपनी विशेषताएं रही हैं। यह विशेषांक भी उन्हीं विशेषताओं की कड़ी का एक अंग है।

सनक! सनकी कौन नहीं होता? हर आदमी में कोई न कोई सनक होती है। घोड़े के मुंह से यदि लगाम हट जाए तो वह कोई भी दुर्घटना कर सकता है। यदि सनक अपनी सीमाओं को पार कर जाए तो वह पागलपन की सीमा में जा पहुंचती है। ऐसे व्यक्ति 'सनकी' या 'पागल' कहे जाते हैं। यहां हम बेलगाम लोगों की चर्चा नहीं कर रहे हैं। लगामदार व्यक्तियों और घटनाओं की जो हमने तलाश की तो लगा कि एक खासा महाभारत लिखा जा सकता है। एक साधारण से व्यक्ति ने कितना बड़ा दुस्साहसिक काम किया कि दूसरा महायुद्ध हुआ। उसमें खब्त सवार हो गयी थी नर-संहार की और उसने मनसूबे बनाये थे दुनिया को जीतने के। अब देखिए, हिटलर से बड़ा सिरफिरा आदमी और कौन मिलेगा?

बौद्धिक क्षमतावान व्यक्ति कभी सामान्य आदमी की तरह नहीं होता। उसका असामान्य होना ही उसकी विशेषता है। वेदव्यास और कालिदास से लेकर शेक्सपियर तक, और फिर आधुनिक चिंतक सार्त्र से लेकर नये से नये प्रतिभावान लेखक में कोई न कोई सनक जरूर होती है, कोई अड़ियल होता है, कोई दंभी होता है, कोई अत्यधिक विनम्र, और अधिकांश लेखक अपने लेखन के द्वारा सामाजिक परिवेश से जुड़े रहकर भी उससे टूटे हुए, नितांत अकेले होते हैं। हर लेखक के लिखने का अपना तरीका होता है और यही सब सिरफिरापन है। जिस आदमी में सनक नहीं होगी, वह कभी बौद्धिक व्यक्ति हो ही नहीं सकता!

लेखकों के साथ-साथ चोर और

डाकुओं के गिरोह भी हैं, जो युद्ध और नर-संहारक हैं तो दयावान और मददगार भी। कुछ लोग ऐसी भी हैं, जिन्हें एक के बाद एक, लगातार कई शादियां करने का शौक है, ठीक उसी तरह, जिस तरह कुछ लोगों को डाक-टिकटें एकत्र करने का शौक होता है।

कुछ सिरफिरों की मिसालें और देखिए—एक आदमी है, जो कीमती और खूबसूरत झाड़फानूस लगाता है लेकिन लगाते ही उसे तोड़ भी देता है। एक शिकारी महोदय की दास्तान और भी निराली है, वे शेर को गोली मारकर केवल घायल करते थे, उसके बाद किसी पहलवान की तरह उससे हाथापाई करने में उन्हें मजा आता था।

दुनियाभर में हजारों पुस्तकें प्रति-वर्ष छपती हैं। इनमें कई प्रसिद्ध लेखकों की प्रसिद्ध कृतियां हैं। इनमें कई पात्र ऐसे मिलेंगे, जिनके सिरफिरेपन की मिसाल नहीं। मसलन मार्क ट्वेन के उपन्यास ! डेविड कॉपर फील्ड का ओरियाहीप। विख्यात लेखक सरवांते का नायक डॉन क्विक जोट। जरमनी के विख्यात लेखक का पात्र मुंचासेन ! हमारे देश का साहित्य भी अछूता नहीं है। दक्षिण में तेनाली-राम हुए तो उत्तर में विष्णु शर्मा। 'पंच-तंत्र' और 'हितोपदेश' के बहाने विष्णु शर्मा ने कितनी सीधी चोटें की हैं। यदि वे सामान्य लेखक होते तो आज उनका साहित्य असामान्य न बनता। महाकवि तुलसीदास ने स्वयं अपने ऊपर कटाक्ष किया है और कोई उन पर लांछन न लगाये—इसलिए वे कहते हैं, पार्वती के मन में कुछ शंकाएं थीं, उन्होंने वे शंकाएं शिव के सामने रखीं। बस, रामचरित मानस की रचना हो गयी।

फिर नारद-जैसे चरित्र की सृष्टि कर अपनी महान कृति को बेहद गंभीर होने से बचा लिया। अहल्या-उद्धार का प्रकरण संत तुलसीदास के लिए रामवाण बना। और वे लिख गये—

व्हे हैं सब शिला चंद्रमुखी
परसे पद मंजुल कंज तिह[illegible]

उन्होंने तपस्वियों पर [illegible] कटाक्ष करने में कमी नही की। फिर क्या तुलसीदास में कम सनक थी, जो घर-बार छोड़कर, अकेले गंगा के किनारे धूनी रमा ली और लगातार राम-काव्य की अनंत कथा लिखते गये। यही सनक कबीर में थी और आज के हर अच्छे लेखक में भी वैसी ही सनक देखने को मिलती है। इसलिए सनकी होना या सिरफिरा होना अवगुण नहीं है। हमने इस अंक में सिरफिरों के ऐसे कई किस्से एक साथ एकत्र कर दिये हैं कि हमें विश्वास है कि हमारे पाठक दूसरे विशेषांकों की तरह, इस विशेषांक का भी एक-एक शब्द पढ़े बिना नहीं रहेंगे। इसे आप हमारा 'सिरफिरापन' सोच सकते हैं कि होली-जैसे हंसी-खुशी के अवसर पर हमने अपना दिमाग भी गिरवी रख दिया है और सनकी होने का खिताब स्वीकार कर लिया है।

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्द्रु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **स्निग्ध**—क. संदेहजनक, ख. चिकना, ग. स्नेहपूर्ण, घ. खुशामदी।

२. **प्रायेण**—क. हित के लिए, ख. अधिकतर, ग. निरंतर, घ. प्राणों के लिए।

३. **आलम्ब**—क. शीघ्र, ख. सीधा, ग. सहारा, घ. लट्टू।

४. **अप्रतिहत**—क. तुरंत, ख. बल्कि ग. निराश, घ. बेरोकटोक।

५. **कालरात्रि**—क. निराशा की घड़ी, ख. अराजकता, ग. प्रलय की रात्रि, घ. अमावस।

६. **कथावशेष**—क. अधूरी कहानी, ख. कथा का अंत, ग. प्लाट, घ. मृत।

७. **पुरस्सर**—क. आगे चलनेवाला, ख. पीछा करनेवाला, ग. मार्ग से हटने-वाला, घ. अंधभक्त।

८. **आपूरित**—क. जो पूरा न हो, ख. भरा हुआ, ग. लगा हुआ, घ. अति सुंदर।

९. **प्रतीति**—क. साक्षात्कार, ख. विश्वास, ग. भाव, घ. अनुभव।

१०. **अंतरवेक्षी**—क. भावुक, ख. संकीर्ण, ग. आत्मपरीक्षक, घ. अकेला।

११. **शास्त्रोक्त**—क. शास्त्रों से लिया, ख. प्रामाणिक, ग. जैसा शास्त्रों में कहा गया हो, घ. धार्मिक।

१२. **भग्नावशेष** — क. टूटी-फूटी मूर्तियां, ख. हीनता, ग. खंडहर, घ. अपूर्ण कार्य।

उत्तर

१. ख. चिकना, तैलयुक्त। स्निग्ध पदार्थों का अधिक सेवन हानिकारक है। ग. स्नेहपूर्ण, प्रिय। **स्निग्ध** वाणी (व्यवहार आदि) सदैव हितकारी होता है। (संज्ञा—**स्निग्धता**)

२. ख. अधिकतर, सामान्यतया। भर्तृहरि का समय **प्रायेण** ६५० ई. के लगभग माना जाता है।

३. ग. सहारा, टेक, आश्रय। निर्बल को सबल का **आलम्ब** लेना पड़ता है। (विलोम—**निरालम्ब**)

४. घ. बेरोकटोक, निर्बाध। आक्रमणकारी **अप्रतिहत** गति से बढ़ता चला गया।

५. ग. प्रलय की रात्रि, विनाशलीला। यह तो **कालरात्रि**-जैसा दृश्य है!

६. घ. मृत, जिसका केवल वृत्तांत शेष रह गया हो। वह अल्पावस्था में ही **कथावशेष** हो गया। **(कथा+अवशेष)**

७. आगे चलनेवाला (समासांत में 'के साथ' के अर्थ में प्रयुक्त)। ज्ञान-**पुरस्सर** कर्म से इष्ट की सिद्धि होती है।

८. ख. भरा हुआ। उसने अश्रुओं से **आपूरित** नेत्रों से विदाई दी।

९. ख. विश्वास, धारण, ज्ञान। सत्य की **प्रतीति** होने पर मनुष्य सदाचारी बनता है।

१०. ग. आत्मपरीक्षक, अपने हृदय टटोलनेवाला। **आत्मवेक्षी** व्यक्ति आपत्ति में अधीर नहीं होता।

११. ग. जैसा शास्त्रों में कहा गया हो, शास्त्रविहित। **शास्त्रोक्त** विधि से सब संस्कार होने चाहिए।

१२. ग. खंडहर। महल के **भग्नावशेष** उसके पूर्व-वैभव की कहानी बताते हैं। **(भग्न+अवशेष)**

पारिभाषिक-शब्द

ऐडवांस = अग्रिम / पेशगी
एरियर्स = बकाया
पेमेंट = भुगतान / अदायगी
पेई = आदाता / पानेवाला
पेरेंट आफिस = मूल कार्यालय
इन पर्टीकुलर = विशेषकर
पर्टेनिंग टु = के बारे में
ऐनुअल रिटर्न = वार्षिक विवरण
रिस्पेक्टिवली = क्रमशः

समस्या पूर्ति—४६

बहार है

प्रथम पुरस्कार

पियराई सरसों में पिय प्यासे अंग
फागुनी बहार है, हवाओं के संग
बौराई तन-मन की, अमराई झूले
पर अंग-अंग आसन, बनाये अनंग

—कुंवरलाल श्रीवास्तव
सहायक भूमि संरक्षण निरीक्षक
गीत गली, पुरानी नजाई जालौन

द्वितीय पुरस्कार

न समझो हकीकत, यह है एक सपना
न रंगीन इतना जीवन है अपना बहार
है, लेकिन है चिंता भी मन में
मुसकराएंगे कब तक अकेले चयन में

—रतन फरीदपुरी
रम्पुरारतन, फरीदपुर, बरेली

आस्था के आयाम

गीता एक राष्ट्रीय ग्रंथ

सन १९२० की घटना है। तब डॉक्टर सैयद महमूद एक विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे थे। एक दिन उनके एक जरमन प्राध्यापक प्रोफेसर स्मिथ ने उनसे गीता के संबंध में जानकारी चाही।

डॉ. सैयद महमूद कुछ परेशानी में पड़ गये। बड़ी कठिनाई से उन्होंने उत्तर दिया, "क्षमा करें, मैं इस्लाम धर्म का अनुयायी हूं। मैंने गीता नहीं पढ़ी।"

"तुम मुसलमान हो तो क्या ? इससे क्या फर्क पड़ता है ?" प्रोफेसर स्मिथ ने कहा, "तुम भारतवासी हो और गीता तो भारत का अनमोल खजाना है। तुम कहते हो, तुमने उसे पढ़ा नहीं। तुम्हें गीता पढ़नी चाहिए। गीता तो राष्ट्रीय संपत्ति है, किसी एक संप्रदाय की संपत्ति नहीं है।"

डॉ. सैयद महमूद के लिए यह एक नया अनुभव था। इसके पूर्व उन्हें किसी ने ऐसी सलाह नहीं दी थी। उन्होंने उसी क्षण गीता पढ़ने का संकल्प कर लिया।

मां की देन

बेटा स्कूल से शिक्षक का एक पत्र लाया था। शिक्षक ने लिखा था, 'आपका बेटा मंदबुद्धि है। इसे पढ़ाना बेकार है। बेहतर है, आप इसे स्कूल से हटा लें।'

मां ने यह पत्र पढ़ा। उसकी आंखों में आंसू छलक आये। मन भारी हो गया। क्षणभर के लिए वह कुछ सोच नहीं पायी। फिर उसने स्वयं को संभाला।

उसने बेटे को वक्ष से चिपका लिया। प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "बेटे, तुम मंदबुद्धि नहीं हो सकते। भले ही स्कूलवाले तुम्हें न पढ़ायें, मैं, स्वयं तुम्हें पढ़ाऊंगी।" और उस मां ने तथाकथित मंदबुद्धि बेटे को पढ़ाना शुरू किया। मां की मेहनत निरर्थक नहीं गयी। उसका बेटा बड़ा होकर एक मूर्द्धन्य वैज्ञानिक बना। यह वैज्ञानिक था—टामस अल्वा एडीसन, जिसने बल्व का आविष्कार किया था।

स्वावलंबन की शिक्षा

खलीफा हारुन अल रशीद की दयालुता और न्याय-प्रियता की अनेक कहानियां प्रचलित हैं। लेकिन उनके राज्य में और भी ऐसे अनेक लोग थे, जो त्याग, विनम्रता और स्वावलंबी जीवन जी रहे थे। इनमें से एक थे मदरसा अब्बासिय के उस्ताद।

एक बार की बात है। खलीफा हारुन अल रशीद अपने वजीर के साथ जनता की तकलीफें सुनने के लिए निकले। जब वे मदरसा अब्बासिय के सामने से निकले तो सहसा उन्हें याद आया कि उनके शहजादे भी तो इसी पाठशाला में पढ़ते हैं।

वे वजीर के साथ मदरसे के भीतर गये। देखा, बेटों के गुरु अपने हाथ से पानी लेकर मुंह धो रहे हैं और दोनों शहजादे उनके पास खड़े हैं। खलीफा को थोड़ा बुरा लगा, यह क्या? शहजादों को पानी लेकर खड़ा होना चाहिए था।

उन्होंने उस्ताद से कहा, "मैं शहर के मुआयने पर निकला था। इधर से निकला तो सोचा, देखूं, शहजादों की तालीम कैसी हो रही है?' पर यहां आकर मुझे लगा कि उनकी तालीम अभी पूरी नहीं हुई है।"

"कैसे?" वृद्ध उस्ताद ने पूछा।

"देखिए न, आप-जैसे बुजुर्ग खुद पानी लेकर हाथ-मुंह धो रहे हैं और आपके शागिर्द पास में खड़े हैं। पानी तो उन्हें देना चाहिए था।"

वृद्ध उस्ताद मुसकराये। फिर कहा, "गुस्ताखी माफ करें। आप-हम सभी चाहते हैं कि बच्चे स्वावलंबी बनें। दूसरों पर निर्भर न रहें। जब हम बड़े लोग स्वावलंबी नहीं बनेंगे, तब बच्चों से कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वे स्वावलंबी बनें। हमें अपने आचरण से बच्चों को स्वावलंबन की शिक्षा देनी चाहिए। मैं स्वयं पानी लेकर शहजादों को स्वालंबन की शिक्षा दे रहा था।"

ज्ञान - गंगा

गुणाधिकान्मुदं लिप्सेदनुक्रोशं गुणाधमात्।
मैत्रीं समानादन्विच्छेन्न तापैरभिभूयते॥

अपने से अधिक गुणवालों से आनंद प्राप्त करे, कम गुणवालों के प्रति दयाभाव रखे और समान गुणवालों से मित्रता रखे—ऐसा पुरुष संतापों से व्यथित नहीं होता।

सुलभाः पुरुषाः राजन् संततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

हे राजन! सदैव प्रियवादी पुरुष तो सुलभ है, अप्रिय किंतु सत्पथ बताने-वाली बातों के कहने और सुननेवाले दुर्लभ हैं।

यः समुत्पतितं क्रोधं क्षमयैव निरस्यति।
यथोरगस्त्वचं जीर्णां स वै पुरुषउच्यते॥

वही पुरुष पुरुष कहलाता है, जो उत्पन्न हुए क्रोध को क्षमा के द्वारा वैसे ही दूर कर लेता है जैसे सांप पुरानी केंचुली को।

नास्ति खलस्य मित्रम्।

धूर्त का कोई मित्र नहीं होता।

स्वयमेवावस्कन्नं कार्यं निरीक्षेत्।

स्वयं बिगड़े या दूसरों के बिगाड़े काम को अपनी आंखों से देखे और सुधारे।

तृष्णाया मतिश्छाद्यते

लोभ मनुष्य की बुद्धि को ढक देता है।

यशः शरीरं न विनश्यति

मनुष्य का भौतिक देह ही मरता है, उसका यशः शरीर तो अमर रहता है।

कमिवेहते रमयितुं न गुणाः

गुण किसे प्रसन्न करने में समर्थ नहीं होते? अर्थात सभी को वश में रख लेते हैं।

प्रस्तोता : महर्षि कुमार पाण्डेय

रोचक-ज्ञानवर्धक मार्च अंक

मार्च अंक अभी-अभी पढ़कर समाप्त किया है। बेहद रोचक और ज्ञानवर्धक। यही कहा जा सकता है। 'कादम्बिनी' की एक सबसे बड़ी खूबी, जो मुझे बहुत अच्छी लगती है, वह यह कि यह पत्रिका हर रुचि के पाठक की जरूरतों का ख्याल रखती है। **—डॉ. मीरा सिन्हा, बंबई**

'कादम्बिनी' के मार्च अंक में 'सार-संक्षेप' में गैबरियल गार्शिया मारक्वेज की पुस्तक 'नो वन राइटस् टू कर्नल' का सार पढ़कर बेहद प्रसन्नता हुई। मैंने अंगरेजी में यह उपन्यास पढ़ा है। उसकी हिंदी प्रस्तुति भी मुझे उतनी ही मार्मिक लगी, जितनी कि अंगरेजी अनुवाद में थी।

मुझे लगा कि इस उपन्यास के नायक कर्नल की तरह हम भी कहीं न कहीं उपेक्षित और तिरस्कृत हैं। यह उपन्यास सत्ताधारियों के छल-फरेबों को बड़ी निर्ममता से उजागर करता है।

—श्यामल सेन, कानपुर

मार्च अंक में 'कृष्ण वंदे जगद्गुरुम्' की विवेचना पढ़कर मूल कृति पढ़ने की इच्छा बलवती हो उठी है। श्री घनश्याम दासजी बिड़ला ने श्रीकृष्ण के संबंध में यह सही ही लिखा है कि 'श्रीकृष्ण शब्द आत्मा का पर्यायवाची है। . . . देवकीनंदन के जन्म के पहले भी श्रीकृष्ण था, अर्थात आत्मा और परमात्मा था। वह महाभारत-काल में भी था, आज भी है, भविष्य में भी रहेगा क्योंकि वह अजर है, अमर है, अनादि है, सर्वत्र है।'

—पं. विजयशंकर त्रिवेदी, नागपुर

दोहरा लाभ

फरवरी अंक में डॉ. ओदोलेन स्मेकल की कविताएं पढ़कर बड़ा सुख मिला। मेरे विचार से प्रायः हर अंक में किसी-न-किसी विदेशी विद्वान की ऐसी रचना छापिए, जो मूल रूप से हिंदी में रची गयी हो। इससे दोहरा लाभ होगा—एक तो विदेशी लेखकों-कवियों को परायापन नहीं लगेगा और दूसरे—भारत के हिंदी विरोधियों को कुछ सीख मिलेगी। कम से कम विदेशों के हिंदी-प्रेमियों का परिचय तो हिंदी के सामान्य पाठक को कराया ही जा सकता है।

—मुरारीलाल शर्मा, विशाखापत्तनम्

'कादम्बिनी' के मार्च '८३ के अंक में 'घटिया फिल्में : अव्यवस्था के दायरे' लेख एक कटु सत्य से परिचय कराता है। वाकई, सभी फिल्मों की समीक्षा एक [illegible] सकता है, इससे न तो

पाठक संतुष्ट हो सकते हैं ग्रौर न समीक्षक। अच्छी व बुरी फिल्मों का पता तब ही चल सकता है, जब अव्यवस्था से निपटा जाए।

—डॉ. दिनेशचंद्र, वाराणसी

'अभी तो नाच जारी है' लेख से नटराज की मूर्ति ग्रौर नृत्य की अच्छी जानकारी मिलती है। लेखक ने भारतीय सृष्टि-विज्ञान के अनुसार शिव की महत्ता को भली-भांति स्पष्ट किया है। लेखक का आधुनिक संदर्भों में वैज्ञानिक विश्लेषण अच्छा लगा।

—पं. देवेन्द्र उपाध्याय, कलकत्ता

पर्यावरण-प्रदूषण

फरवरी ग्रंक में 'आस्था के आयाम' के ग्रंतर्गत सरला बहन का संक्षिप्त जीवन परिचय पढ़कर प्रसन्नता हुई।

पर्यावरण के प्रदूषण के प्रति सरला बहन काफी चिंतित थीं ग्रौर चाहती थीं कि इस ग्रोर सजग होकर ईमानदारी से प्रयत्न किये जाएं, इसीलिए उन्होंने जमनालाल बजाज पुरस्कार में प्राप्त धनराशि को पर्यावरण संबंधी साहित्य के प्रकाशन में लगा देने का निश्चय किया ग्रौर अस्सी वर्ष की अवस्था में भी कांपते हुए हाथों से उन्होंने पर्यावरण तथा सीधे-सादे सरल जीवन की उपयोगिता पर दो पुस्तकें लिखीं—प्रथम, हिंदी में 'संरक्षण या विनाश' ग्रौर दूसरी, ग्रंगरेजी में 'रिवाइव अवर डाइंग प्लैनेट', जो ज्ञानोदय प्रकाशन, हलद्वानी, नैनीताल द्वारा प्रकाशित की गयी हैं। सरला बहन की ग्रंतिम इच्छा थी कि उनकी कृतियों का प्रसार हो ग्रौर उनकी पुस्तकों के विक्रय से प्राप्त धनराशि को उनके कौसानी स्थित आश्रम के विकास हेतु उपयोग में लाया जाए। सरला बहन ने आचार्य विनोबाजी के निम्नलिखित गुरु मंत्र को पूर्णतः अपना लिया था।

विज्ञान + राजनीति = विनाश

विज्ञान + अध्यात्म = सर्वोदय

—हरिदास पंत, नैनीताल

पुरस्कार

'कादम्बिनी' के सुपरिचित लेखक श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के राजस्थानी परिवेश व हरिजन-समस्या पर लिखित बहु चर्चित, बहु प्रशंसित उपन्यास 'हजार घोड़ों का सवार' को एक साथ दो वरिष्ठ पुरस्कार—राजस्थान साहित्य अकादमी का 'मीरा' पुरस्कार एवं 'फणीश्वरनाथ रेणु' पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

'काल-चिंतन'

गत तीन वर्षों से 'कादम्बिनी' की नियमित पाठिका हूं। इसका प्रत्येक ग्रंक विशेषांक ही होता है। 'काल-चिंतन' का तो अनेक बार अध्ययन करती हूं ग्रौर प्रत्येक बार कुछ न कुछ नया ही मिलता है।

—उषा रानी, बरेली

'एशियाड' में पाकिस्तान को कुश्ती में कोई स्वर्ण-पदक नहीं

'कादम्बिनी' के फरवरी अंक में प्रकाशित लेख 'हमारे देश में खिलाड़ियों का सम्मान नहीं है' में दी गयी यह जानकारी कि पाकिस्तान को कुश्ती में दो स्वर्ण-पदक मिले हैं, गलत है। पाकिस्तान को कुश्ती में कोई स्वर्ण-पदक नहीं मिला।

—संपादक

फरवरी अंक पढ़ा। 'काल-चिंतन' एकदम नयी जानकारी देनेवाला सिद्ध हुआ। इसी अंक में प्रकाशित एक रचना 'अमरीका में युवा रचनाकार कठिनाइयों के बीच' पढ़कर आश्चर्य हुआ। मैं तो पहले यही समझता था कि केवल हमारा ही देश ऐसा है, जहां युवा रचनाकार लिख-लिखकर थक जाते हैं, परंतु उनका एक पत्र भी कोई प्रतिष्ठित पत्रिका नहीं छापती, रचनाओं का प्रकाशन तो दूर!

—अजयकुमार जैन, नजीबाबाद

फरवरी अंक में 'किस्सा अंधियारपुर का, उजियारपुर का' में छत्तीसगढ़ी नाटक 'सोनहा विहान' को डॉ. महेन्द्र-देव वर्मा एवं रायबहादुर हीरालाल की रचनाओं पर आधारित बतलाया गया है। वास्तविकता यह है कि 'सोनहा विहान' स्व. डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा लिखित छत्तीस-गढ़ी उपन्यास 'सुबह की तलाश' पर आधारित है।

—उमाकांत शर्मा, पंचाली तालाब (चांपा)

जनवरी अंक में 'समय के हस्ताक्षर'—'दिल्ली अब खेलतीर्थ बन गयी है' शीर्षक के अंतर्गत निम्नलिखित जानकारी प्रकाशित हुई है.

" जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के अलावा केंद्रीय लोक निर्माण विभाग ने निर्माण तथा आवास मंत्रालय के सार्वजनिक क्षेत्र के एक निगम, नेशनल बिल्डिंग कारपोरेशन, के माध्यम से प्रगति मैदान में एक 'हाल ऑव स्टेट्स' एवं चार उपरि पुल (फ्लाय ओवर) बनाये हैं—ये हैं, मूलचंद चौराहे पर, इंद्रप्रस्थ स्टेट चौराहे पर, ओबेराय इंटर कांटिनेंटल चौराहे और लोदी होटल चौराहे पर।"

वस्तु स्थिति इस प्रकार है: "जवाहर-लाल नेहरू स्टेडियम के अलावा केंद्रीय लोक निर्माण विभाग ने एक सार्वजनिक उपक्रम, राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम, के माध्यम से प्रगति मैदान में 'हॉल ऑव स्टेट्स' का निर्माण किया है। इसके अलावा दिल्ली प्रशासन के लोक निर्माण विभाग ने चार उपरि पुल (फ्लाय ओवर) बनाये हैं, जो कि मूलचंद अस्पताल, इंद्रप्रस्थ स्टेट, ओबराय इंटर कांटीनेंटल और लोदी होटल के चौराहों पर बने हैं।"

—सी. एस. राव, उप सचिव, भारत सरकार, नयी दिल्ली

(उपरोक्त जानकारी हमें तत्कालीन केंद्रीय निर्माण और आवास मंत्री से प्राप्त हुई थी। —संपादक)

'कादम्बिनी' चतुर्थ कहानी प्रतियोगिता

विदेशी पृष्ठभूमि : भारतीय दृष्टिकोण

पंद्रह सौ रुपयों के पुरस्कार

इस बार कहानी-प्रतियोगिता में हमने कहानी का विषय चुना है : विदेशों में रहनेवाले, विदेश में घूमे हुए अथवा विदेशी स्थितियों से परिचित भारतीय व्यक्ति अब तक अपनी सांस्कृतिक विरासत और भारतीयता को क्यों नहीं भूल पाये ?

नियम

(१) इस 'कहानी-प्रतियोगिता' में भारत के लेखक और भारत के बाहर बसे हुए लेखक भाग ले सकेंगे। हिंदुस्तान टाइम्स के कर्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेंगे।
(२) एक लेखक एक ही कहानी भेज सकता है। कहानी कागज के एक ओर टाइप की हुई होनी चाहिए उसकी मूल प्रति ही भेजी जाए। कारबन प्रति स्वीकार नहीं की जाएगी। विदेशों में रहनेवाले लेखक हाथ से कागज के एक ओर लिखकर भी कहानी भेज सकते हैं।
(३) कोई भी कहानी ढाई हजार शब्दों से बड़ी न हो। यदि कहानी इससे बड़ी हुई तो उसे प्रतियोगिता में शामिल होने से रोका जा सकता है।
(४) प्रतियोगिता के लिए भेजी जानेवाली कहानी वापस चाहिए तो उसके साथ पता लिखा, टिकट लगा लिफाफा होना ज़रूरी है, अन्यथा कहानी वापस नहीं की जाएगी।
(५) एक निर्णायक मंडल कहानियों का चुनाव करेगा, और उसका निर्णय अंतिम होगा। इस प्रतियोगिता में तीन पुरस्कार दिये जाएंगे –

प्रथम पुरस्कार : सात सौ रुपये
द्वितीय पुरस्कार : पांच सौ रुपये
तृतीय पुरस्कार : तीन सौ रुपये

यदि स्तरीय रचनाएं नहीं आयीं तो ये सभी पुरस्कार देना बाध्य नहीं हैं।

कहानी भेजने की अंतिम तिथि : ३० जून १९८३

कृपया लिफाफे पर इसे अवश्य चिपकायें
'कादम्बिनी' कहानी-प्रतियोगिता
द्वारा संपादक–'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि.–१८–२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली -१

वर्ष २३ : अंक ६
अप्रैल, १९८३

कादम्बिनी

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

इस अंक में

स्थायी स्तंभ

मुख-पृष्ठ–ज्ञान दीक्षित ।

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

कविताएं

सार-संक्षेप

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी, प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ४४ रुपये

काल-चिंतन

—जिराफ के बच्चे को गोदी में उठाना आसान है, लेकिन गोद में उठाने के बाद उसकी जीभ से बचना मुश्किल है। वह आपका मुंह चाटे बिना नहीं रहेगा। उसकी खुरदरी जीभ आपके चेहरे पर हलके घाव भी बना सकती है।

●

—तो ?

—जिराफ को गोद में लेने के पहले यह क्यों नहीं सोचा कि आदमी या जानवर की पूरी लंबाई कहां से नापी जाती है।

—गरदन को छोड़कर किसी की लंबाई या ऊंचाई नापने का उपक्रम करेंगे तो परिणाम यही होगा।

—गरदन काट देने के बाद शेष शून्य रह जाएगा, एक निर्जीव शरीर।

—गरदन ही तो वास्तव में गौरव का ताज मुकुट है, इसलिए ऊंचाई जानने के लिए गरदन और फिर उसके भी ऊपर कानों तक पहुंचना चाहिए।

—आदमी ही क्यों वृक्ष की ऊंचाई उसकी फुनगी की आखिरी कोपल तक होती है, क्योंकि कोपल मृत-पात्र नहीं है, वह आगे की ऊंचाई की इकाई है।

—हम बहुत बार इस सत्य को भूल जाते हैं और जिराफ की गरदन को नहीं पहचानते।

—पहचान की उपेक्षा हमारा अहंकार है। अहंकार सार्वभौमिक है और व्यर्थ का अहंकार गिद्धों का भोजन है।

—मानव शरीर मूल चेतना में अहंकार-शून्य होता है। एक नादान शिशु के रूप में अवतरित होना उसकी प्रक्रिया है। इसलिए शरीर अहंकार का पात्र नहीं है।

—समय और क्रियाओं के क्रम में सत्य टूटता है और क्रमशः सृष्टि का यह सौंदर्य-स्वरूप बाहरी दबावों का आकर्षण-केंद्र बनता जाता है।

—सत्य को अपनी रक्षा के लिए रक्षकों की जरूरत नहीं होती, इसलिए वह नितांत अकेला होता है।

—इसी अकेलेपन को आ घेरते हैं मकड़ी के जाले-सा झूठ, अहं की हवाई दीवारें, गरदन से नीचे देखनेवाली दृष्टियां, और अपराधों के महानगर।

—एक बार क्रम शुरू हुआ तो अंत नहीं।

—अहंकार का परदा आत्म-सम्मान को पानी की तरह पीता जाता है।

—आत्म-सम्मान अहंकार नहीं है, वह सत्य का सम्मान है, सही मानवता की पहचान है और मानव-चरित्र का स्वर्ण-मंडित सत्य-स्वरूप है!

—सत्य की रक्षा करना कठिन है, क्योंकि वह रक्षा-कवचों को पास नहीं फटकने देता।

—रक्षा-कवच स्वयं असत्य का ताबूत है और इसके घेरे में जो आ गया, फिर अपने से दूर की दुनिया को नहीं देख सकता। इसलिए आत्म-सम्मान का संबंध न तो अहंकार से है और न झूठ से।

—ध्यान से देखें, पता चलेगा कल्पना कर्मशीलता से पहले चलती है। कल्पित भावार्थ में इसीलिए कहा गया है कि 'मेरे दाहिने हाथ में पुरुषार्थ है, बायें हाथ में सफलता।'

—सफलता के सूत्र पुरुषार्थ से जुड़े हैं।

—अहंकार पुरुषार्थ को भी नपुंसक बनाने में कमी नहीं करता। यानी वह ऐसा महावृक्ष हुआ कि जमीन का सारा पानी भी सोख सकता है।

—यह महावृक्ष महाबोधि नहीं है कि जिसके नीचे ईमानदारी के बीज पनप सकें और सचाई के अंकुरों को देखा जा सके।

—इसकी छाया में ज्ञान नहीं, मात्र अज्ञान पनपता है, इतना गहरा अज्ञान कि घास भी नहीं उग सकती।

●

—जरूरत है अपनी पहचान की। समय-शरीर के भक्षकों को तभी दूर रखा जा सकता है।

—भेद की दीवारें बनायी नहीं जातीं वे चींटी की बामियों की तरह अपने आप बनती जाती हैं।

—बनने के पहले ही यदि सतर्क-सफाई शुरू कर दी जाए तो फिर बामियां नहीं बन सकतीं।

—गरमी शुरू होते ही बर्र अपने छतने बनाना शुरू कर देती है। तब ? गरमी को रोका नहीं जा सकता, रोकना भी नहीं चाहिए, बर्र का पहला चरण दिखते ही उसे ध्वस्त करना श्रेयस्कर है।

—एक होड़ है यह, चींटियां बामियां बनाती जाएंगी, बर्र छतने की नींव रखते जाएंगे, हमें सतर्क-श्रम को सम्यक् दृष्टि देनी होगी।

—विनाशकारी और विघटनकारी प्राणी को नष्ट करना पाप नहीं है। मिथ्या पाप का भ्रम पालेंगे तो वह शक्ति पाकर हमला करेगा और मानवता की मूल चेतनाओं और श्रेणियों को दीमक की तरह खाने लगेगा।

●

—तो, लीजिए एक मंत्र मिल गया हमें : सत्य की सतत रक्षा करने से अहंकार अपने आप भूतों की तरह भागता फिरेगा। ऊंचाई की नाप को सार्थक दृष्टि से देखने लगें तो जिराफ के बच्चे को गोद में लेने के पहले ज्ञान बना रहेगा कि उसकी जीभ हमारी जीभ के पास तक तो नहीं पहुंचेगी ?

—आभा का घेरा मुख-मंडल है और आदमी की तेजस्विता की पहचान आभा-मंडल से ही होती है।

—हमें अपने आभा-मंडल की रक्षा हर कीमत पर करनी चाहिए।● ● ●

राजेन्द्र अवस्थी

भक्ति-भागीरथी

• विमल ठकार

मुझे पता नहीं है, संत ज्ञानेश्वर के जीवन से कितने लोग परिचित होंगे। महाराष्ट्र में ये वैष्णवों के मुकुटमणि, साहित्यिकों के सम्राट, योगियों के चक्रवर्ती और ज्ञानी होते हुए भी परमभक्त के रूप में ख्यात हैं। उन्होंने ही 'ज्ञानेश्वरी' लिखी है। 'ज्ञानेश्वरी' श्रीमद्भगवद्गीता की टीका है, भाष्य है। इसको उन्होंने नम्रता से 'भावार्थ-दीपिका' कहा है। श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों पर यह जो भाष्य है, यह नौ हजार ओवियों में लिखा है। ओवी छंद मराठी भाषा का अपना छंद है। साढ़े तीन चरण का यह छंद महाराज का बनाया हुआ है। संत ज्ञानेश्वर से पहले मराठी भाषा में संत अमृतराय और मुकुंदराय नाम के दो साहित्यिक भक्त हो गये, लेकिन संत ज्ञानेश्वर ने मराठी भाषा का जो स्वरूप बनाया, जो उसमें क्रांति की, वह अद्भुत है। उन्होंने कहा है, 'यदि संस्कृत भाषा देवभाषा है, तो प्राकृत मराठी भाषा क्या

'ज्ञानेश्वरी' को लोकभाषाओं में गीता का अप्रतिम भाष्य कहा जाता है। 'ज्ञानेश्वरी' में गीता के सात सौ श्लोकों पर अठारह सौ दस ओवियां रची गयीं। इन्हें इनके रचनाकार संत योगी ज्ञानेश्वर ने 'गीता भावार्थ-दीपिका' नाम दिया किंतु आज यह अनुपम ग्रंथ 'ज्ञानेश्वरी' के नाम से ही जाना जाता है।

कलकत्ता में सुश्री विमल ठकार ने 'ज्ञानेश्वरी' के बारहवें अध्याय के 'भक्ति-योग' पर रचित दो सौ सत्ताईस ओवियों पर बारह प्रवचन दिये थे, जिन्हें बिरला अकादमी ऑव आर्ट एंड कलचर, १०८-१०९ सदर्न एवेन्यू, कलकत्ता-१९, ने 'भक्ति-भागीरथी' शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित किया है। 'कादम्बिनी' के पाठकों के लिए हम इसी पुस्तक के कुछ अंश प्रस्तुत कर रहे हैं। —संपादक

चोरों की बनायी है ? इसमें भी मैं अमृत को भी जीत सकें, ऐसे रसात्मक अक्षर उतारूंगा।' यह उनकी प्रतिज्ञा है।

'शब्द नोहेति, चिद्रत्न कलिका' ये शब्द नहीं हैं, यह तो चिद्रत्न-कलिका है। भुवनमोहिनी, वाग्विलासिनी शारदा का भंडार है।

ग्रंथ-निर्माण के समय संत ज्ञानेश्वर की आयु केवल बारह वर्ष की थी। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने यह ग्रंथ लिखा। मेवासे नामक छोटा-सा गांव है। उसमें एक विट्ठल मंदिर है। उसके एक स्तंभ के पास बैठकर वे, दिन में लिखते, रात को लिखते और रात में ही निरूपण करते। इस कार्य में महाराज को ढाई वर्ष लगे। उनके गुरु, उनके बड़े भाई, निवृत्तिनाथ ने आदेश दिया कि यह तो श्रीमद्भगवद्गीता की टीका लिख दी, अब अपना अनुभव लिखो। इसलिए पंद्रह वर्ष की आयु में ज्ञानेश्वरीजी ने 'अमृतानुभव' नाम का एक ग्रंथ लिखा, जो अद्वैत वाङ्मय में आज भी कौस्तुभमणि-जैसा झलकता है।

भाई से दीक्षा

ज्ञानेश्वर आठ वर्ष के थे और उनके बड़े भाई ग्यारह वर्ष के थे। इसी समय ज्ञानेश्वर ने निवृत्तिनाथ से दीक्षा ली—त्र्यम्बकेश्वर की गुफा में। निवृत्तिनाथ के गुरु गहनीनाथ, गहनीनाथ के गुरु गैबीनाथ और गैबीनाथ की परंपरा चौरंगीनाथ से होती हुई गोरक्षनाथ तक जाती है। नाथ संप्रदाय में दीक्षित, हठयोग के अनुभवी, वेदांत के प्रखर पंडित और यह सब होते हुए भी परम-भक्त!

अद्वैत के शताकानुशतकों से जिस अधिष्ठान पर आज महाराष्ट्र का वैष्णव धर्म खड़ा है, उसका निर्माण संत ज्ञानेश्वर ने किया। अद्वैताधिष्ठित भक्ति के इस ग्रंथ में महाराज कहते हैं, "यह विश्व नहीं, रे माया! यह विश्व प्रभु की काया।" यह विश्व माया नहीं है, यह पावन है। यह काया है—प्रभु की! इन्होंने अपने ग्रंथ को 'मधुराद्वैत' का प्रथम ग्रंथ कहा है और भक्ति को इन्होंने पंचम पुरुषार्थ, पूर्ण पुरुषार्थ कहा है। उनका कहना है, धर्म, अर्थ, काम मोक्ष—इन चार पुरुषार्थों की सिद्धि करने के बाद ही, मुक्ति के बाद ही, भक्ति संभव है। पुष्टिमार्ग में महाप्रभु वल्लभाचार्यजी का निवेदन है कि भक्ति साधन नहीं, साध्य है। संत ज्ञानेश्वर भी भक्ति को पंचम पुरुषार्थ कहते हैं—

चारि पुरुषार्था चा सिद्धि।
थेऊन निघाला भक्ति पंथी।

चार पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—इनकी सिद्धि अंजलि में लेकर जो भक्ति करने निकला है, प्रभु का ऐसा भक्त कोई भाग्यवान ही होता है।

साहित्यिक दृष्टि से संत विनोबा का, जो संसार की पच्चीस भाषाओं के ज्ञाता थे, कहना है कि 'किसी भाषा में ऐसा ग्रंथ नहीं है।' मराठी मेरी मातृभाषा है। मैं

कह सकती हूं कि आज तक मराठी भाषा में ऐसे दूसरे ग्रंथ का निर्माण नहीं हुआ है, साहित्यिक दृष्टि से और काव्य की दृष्टि से।

'वाचेसि बरवे कवित्व' में महाराज की वाणी में ही उनकी बात रख रही हूं कि वाणी का सौंदर्य है—कवित्व। **'वाचेसि बरवे कवित्व, कवित्वी रसिकत्व'** : कवित्व हो लेकिन उसमें रसिकता हो। **'रसिकत्वीं परतत्व स्पर्श पाहोनि बरवा'** : रसिकता हो, लेकिन वह केवल विषयों का ही रस देखने के लिए नहीं, परतत्व स्पर्श, जिसकी रसिकता को हुआ है, ऐसा यदि कोई क्रांतिदर्शी, कवि हो तो वेदांत का निरूपण कर सकता है। यह इस बालयोगेश्वर का, बाल संत का कहना है।

आलंदी में समाधि

अद्वैताधिष्ठित भक्ति, जिसमें द्वैत का निषेध नहीं, द्वैत की उपासना या पूजा नहीं; द्वैत का मुक्त स्वीकार है क्योंकि अद्वैत का अनुसंधान है। भक्ति है, लेकिन निष्क्रिय नहीं। ज्ञान है, भक्ति है, वह निष्क्रिय नहीं है—ऐसी भक्ति है, जो कर्म में प्रकट होती है। कर्म में भक्ति का रस हो, भक्ति रस से भीगी-भीगा कर्म हो; और भक्ति केवल भावना का, कल्पना का विलास, श्रृंगार न हो। उसके पीछे और नीचे आत्म बोध का अधिष्ठान हो, ऐसी एक त्रिवेणी ज्ञानेश्वर के जीवन में दिखायी देती है। पंद्रह वर्ष में 'अमृतानुभव' लिखने के बाद सोलह वर्ष की आयु में संत नामदेव को लेकर इन्होंने अखिल भारत का परिभ्रमण किया। इक्कीसवें वर्ष वापस आये और बाईस वर्ष की आयु में सदेह समाधि ली। आलंदी, पूना के पास क्षेत्र है, वहां महाराज ने सदेह समाधि ली कि 'मेरा अवतार कार्य यहां समाप्त होता है। जो देना था, मैं दे चुका।'

क्रांतिकारी संत

महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर महाराज के समय तक श्रीमद्भगवद्गीता का ब्रह्मसूत्रों का या उपनिषदों का भाष्य अन्य भाषा में, देशी भाषा में लिखने की मनाहीं है। ये पहले क्रांतिकारी हैं। आपको आश्चर्य होगा कि आज भी चातुर्मास्य में मंदिरों में महाराष्ट्र में यह ग्रंथ नहीं पढ़ा जाता, क्योंकि ज्ञानेश्वर संन्यासी की संतान हैं। इनके पिता ने संन्यास लिया और फिर गुरु को जब मालूम हुआ कि ये गृहस्थाश्रमी थे, तो गुरु ने वापस भेजा था। इसके बाद निवृत्ति, ज्ञानदेव, सोपान, मुक्ता—तीन भाई, एक कन्या का जन्म हुआ। इसलिए संन्यासी की संतान होने के कारण उनके कोई संस्कार नही हुए। गांव के बाहर किसी पर्णकुटी में रहना, भिक्षा मांगना और जीवन गुजारना, यह है उनकी जीवन कथा। ●

जिसकी अपनी कोई राय नहीं; अपितु दूसरों की राय और रुचि पर निर्भर रहता है, दास है।

—क्लॉपस्टॉक

खुशमिजाज लोगों की सेहत अच्छी रहती है

● गोपालकृष्ण कौल

> **जॉर्ज बर्नार्ड शॉ कहा करते थे, 'जहां लोग सच बोलने से डरते हों, वहां मजाक में सिर्फ सच बोल दीजिए, तो वह अपने आप में व्यंग्य-विनोद बन जाता है।' यहां पढ़िए, व्यंग्य-विनोद के कुछ मधुर संस्मरण।**

अनेक मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि हंसने से आदमी की उम्र बढ़ती है और जो लोग गुमसुम रहते हैं, जिनके होठों पर मुसकराहट नहीं नाचती, जो खिलखिलाकर खिलते नहीं और अट्टहास कर अपने को उद्घाटित नहीं करते हैं, उनकी उम्र घट जाती है, बीमारियां उन्हें घेर लेती हैं। यह सिर्फ मनोवैज्ञानिक की मान्यता ही नहीं, बल्कि अनुभव की बात है कि खुशमिजाज लोगों की सेहत प्रायः अच्छी रहती है। शायद, इसीलिए प्राणियों के विकासक्रम में जानवरों की उम्र कम होती गयी और इनसानों की उम्र की दर बढ़ती गयी है, क्योंकि जानवरों को प्रकृति ने हंसना नहीं सिखाया।

आज के तनावपूर्ण समाज में मानसिक विरेचन की बड़ी जरूरत है। जॉर्ज बर्नार्ड शॉ मानते थे, 'उस भद्र समाज में जहां लोग सच बोलने से डरते हैं, वहां मजाक में सिर्फ सच बोल दीजिए, तो वह अपने आप में एक व्यंग-विनोद बन जाता है और लोग बुरा भी नहीं मानते। सचाई भी बयान हो जाती है और सत्य को छुपाने का तनाव भी नहीं झेलना पड़ता है।' गंभीर और महत्त्वपूर्ण कार्यों का दायित्व संभालनेवाले व्यस्त व्यक्तियों में भी व्यंग्य-विनोद की यह सहजता कभी-कभी देखने को मिल जाती है, जो उनके व्यक्तित्व के एक नये आयाम का प्रतीक होती है। ऐसे बड़े लोगों के व्यंग्य-विनोद की यादें हमेशा गुदगुदा जाती हैं।

नेहरूजी का एक विनोद याद आता है। गणतंत्र दिवस पर लालकिले का कवि-सम्मेलन पहले दिल्ली का प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन आयोजित करता था। उन दिनों मैं इस सम्मेलन का साहित्य मंत्री था। पहली बार कविवर दिनकरजी के प्रयत्न से नेहरूजी ने इस कवि सम्मेलन के उद्घाटन करने की स्वीकृति दी। वह सिर्फ तीस मिनट के लिए

आने को राजी हुए। लोगों में बड़ा उत्साह था। लगभग हिंदी के सभी वरिष्ठ कवि आये थे। इन दिनों जैसा हाल नहीं था। दिनकरजी कवि सम्मेलन के अध्यक्ष थे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, बच्चनजी, नरेंद्र शर्मा आदि सभी थे।

नेहरूजी को शुरू में उद्घाटन-भाषण करना था। नेहरूजी आये। मंच पर मसनद के सहारे दिनकरजी के साथ बैठ गये। दिनकरजी ने मुझे अपने पास ही मसनद के पीछे बैठा रखा था। नेहरूजी के आने पर पं. मौलिचन्द्र शर्मा नेहरूजी के स्वागत में भाषण करने लगे। इसी बीच नेहरूजी पीछे मुड़े और दिनकरजी और मेरी ओर देखकर बोले, "यह क्या चीज है?" हम चौंके और घबराये भी, आखिर क्या हो गया। देखते हैं, नेहरूजी अपने हाथ में एक सूजा (मोटी सुई) पकड़े हुए हैं? मैंने अनुमान से उत्तर दिया, "पंडितजी, कुछ कार्यकर्ता मंच सजा रहे थे, माला बना रहे थे। उसी के लिए यहां इसको लाये थे। गलती से पड़ा रह गया है। माफ करें।"

हम डर रहे थे कि नेहरूजी कहीं नाराज न हो जाएं। लेकिन उन्होंने मुसकराते हुए कहा, "कोई बात नहीं। अब इसका एक इस्तेमाल किया जा सकता है। जब किसी कवि को लोग न सुनना चाहें और वह फिर भी सुनाने से बाज न आये, तब यह सूजा चुभोकर उसको रोका जा सकता है।"

नेहरू

राय कृष्णदास

उदयशंकर भट्ट

विनोद में दिया गया यह सुझाव बड़ा उपयोगी था। मैंने कहा यह अंकुश लगाने का काम इस कवि सम्मेलन के अध्यक्ष दिनकरजी ही कर सकते हैं। नेहरूजी हंसने लगे—"हां यह ठीक है।"

शोध-प्रबंधों में चमत्कार

हिंदी के शोध-प्रबंधों में कैसे-कैसे चमत्कार होते हैं, इसका शिकार साहित्यकार उदयशंकर भट्ट हो गये। वह कहते

थे कि इन शोधकर्ताओं ने मेरे सिर पर चन्द्रगुप्त मौर्य का भूत चढ़ा दिया है, जिसे प्रयत्न करने पर भी उतारना कठिन हो गया है। हुआ यह कि राजस्थान के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. सोमनाथ गुप्त का शोध-प्रबंध हिंदी नाटक के इतिहास पर था, जिसको मैंने पढ़ा था कि उदयशंकर भट्ट ने 'चंद्रगुप्त मौर्य' नाटक लिखा है। मैंने यह सूचना भट्टजी को दी, तो चकित रह गये। वह बोले, "शोध-प्रबंध में गलती हो गयी होगी।" मैंने इस गलती की ओर डॉ. गुप्त का ध्यान भी पहली बार दिलाया था। वर्षों बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के एक वरिष्ठ प्राध्यापक का प्रबंध हिंदी नाटक के विकास पर प्रकाशित हुआ। मैंने उत्सुकतावश उसको देखा, तो उसमें यह गलत सूचना यानी उदयशंकर भट्ट के 'चंद्रगुप्त मौर्य' पर ऐतिहासिक नाटक के रूप में टिप्पणी भी थी। चलिए, शोध-प्रबंधों की यह परंपरा छोड़िए। कुछ वर्षों बाद नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से हिंदी ग्रंथों और ग्रंथकारों का एक बृहद सूचीग्रंथ छपा। उसके संपादक भी माने हुए विद्वान थे। उसमें 'चंद्रगुप्त मौर्य' नाटक के लेखक उदयशंकर भट्ट के साथ प्रकाशक का नाम भी खोज लिया गया था। अब मैंने भट्टजी से कहा, "बोलिए, अब क्या करेंगे ?"

भट्टजी बड़े जोर से हंसे, बोले, "यह मुफ्त का श्रेय मुझे देने पर लोग क्यों तुले हैं ? क्या करूं मैं ?"

मैंने कहा, "भट्टजी, एक ही रास्ता है या तो आप इस भूत को सिर से उतारने के लिए 'चंद्रगुप्त मौर्य' नाटक लिखें या वक्तव्य दें कि आपने यह नाटक नहीं लिखा है।"

भट्टजी ने वक्तव्य दिया, लेकिन शायद ही किसी ने छापा, क्योंकि इस भूत को भट्टजी के सिर पर चढ़ाने का श्रेय कई विद्वान ले चुके थे और वे नहीं चाहते थे कि इस पर रोशनी पड़े। इसलिए अंत तक भट्टजी इस भूत को अपने सिर से न उतार पाये।

औरतों की राय

छायावादी आचार्य, आलोचकों ने छायावाद को स्थूल के खिलाफ सूक्ष्म का विद्रोह बताया। यह परिभाषा छायावादी काव्य पर चाहे पूरी तरह सटीक न बैठती हो, लेकिन एक छायावादी आलोचक थे, जो इस परिभाषा के मूर्तिमान स्वरूप थे। यह थे श्री शांतिप्रिय द्विवेदी। एक बार प्रकाशन-समाचारों की पत्रिका में उनके बनारसी मित्रों ने विज्ञापन छपवा दिया, जिसका सार था—उन-जैसे व्यक्तित्व के लिए एक जीवन-संगिनी चाहिए, जो सिर्फ लेखनी की तरह उनका साथ दे सके। उन्हीं दिनों द्विवेदीजी दिल्ली आये। मेरे पास आकर शाम को आग्रह किया, "चलो, दद्दा के यहां चलें।" दद्दा यानी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, जो उन दिनों राज्यसभा के सदस्य थे। हम दद्दा के यहां गये। उन दिनों दद्दा के

यहां लेखकों की बैठक जमती थी। उस दिन राय कृष्णदासजी भी मौजूद थे। थोड़ी देर में बातचीत के क्रम में राय कृष्णदासजी ने द्विवेदीजी से पूछा, "विज्ञापन का कोई जवाब आया? कोई मिली कि नहीं?"

द्विवेदीजी बोले, "आप लोग तो सदा विनोद करते हैं। गंभीर होते तो मेरा प्रबंध हो जाता।"

राय कृष्णदासजी ने तब हंसते हुए कहा, "मिले भी तो कैसे! आपके व्यक्तित्व के बारे में औरतों की राय बड़ी विचित्र रहती है। अब देखिए, कुछ दिनों पहले आलोचक शिवदानसिंह चौहान अपनी पत्नी विजय चौहान के साथ बनारस गये। उन्होंने सोचा, शांतिप्रिय से भी मिला जाए। वे इनके महल्ले लोलार्क कुंड, मदैनी में इनका पता लगा रहे थे कि सार्वजनिक नल के नीचे किसी को स्नान करते हुए देखकर विजय चौहान ने कहा, 'वह देखो, नल के नीचे एक दुबली-पतली बुढ़िया नहा रही है। चलो, उससे द्विवेदीजी का पता पूछ लें।' दोनों नल के पास गये और उस बुढ़िया से द्विवेदीजी का पता पूछा, तो वह बुढ़िया बोली, 'मैं ही शांतिप्रिय द्विवेदी हूं।'"

यह घटना सुनाकर राय कृष्णदासजी हंस रहे थे। लेकिन शांतिप्रिय द्विवेदी ने बड़े करुण स्वर में कहा, "यह सूक्ष्म के खिलाफ स्थूल का विद्रोह है।"

—३७३, कल्पना नगर, शिब्बनपुरा,
गाजियाबाद

चुनाव-संदर्भ

वक्त आखिरी, अंतिम इच्छा
पूछ रहा है, यम काला
नेता बोला, "मूंजी फांसे
चलो साथ पीने हाला
स्वर्ग, नर्क की मुझे न चिंता
तुम्हें 'प्रमोशन' दूंगा मैं
मुझे ले चलो वहां जहां, पर
बस चुनाव होनेवाला!"

घिरा हुआ है जैसे नभ पर
बादल बिन पानीवाला
भूख, गरीबी, महंगाई का
खड़ा सामने यम काला
चीख-पुकारें सुन जनता की
टोपीवाला कहता है—
"पांच साल में एक बार
खुलती वादों की मधुशाला!"

जब तक थी सत्ता, जयकारें
रोज गले पड़ती माला
नेताजी हारे चुनाव में
लगा प्रशंसा पर ताला
भीड़ पिलानेवालों की, काफूर
हुई मधुशाला से
नामा खर्चें न्योता भेजें
कोई साथ न दे माला!

——गोपाल चतुर्वेदी
डी १/२१ विनय मार्ग नयी दिल्ली

मुझे प्रेम करना है, तो मेरे पालतू जानवरों से भी प्रेम करो!

● सेवकराम ओखाड़
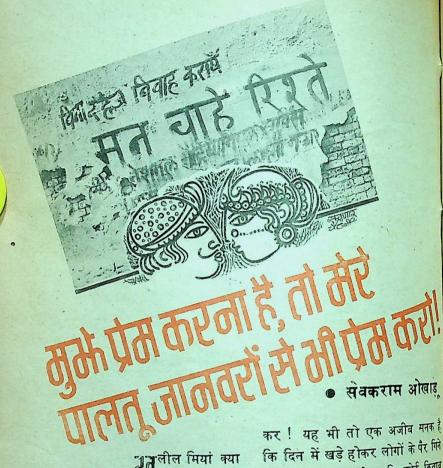
खलील मियां क्या फाख्ता उड़ाएंगे!

यह आदत तो कोई हमसे सीखे। दिमाग कभी बड़ी चौड़ी सड़क पर चलता है, तो कभी पगडंडी में फंस जाता है। दिमाग न हुआ, मछली का कांटा हो गया, जरा-सा कांटा भी श्वास नली में फंसा, तो जान गयी, दिन तो किसी तरह काट ही लेते हैं, कभी काम करके, और कभी नाम कमाने के बेहिसाब कारनामों में उलझ-कर! यह भी तो एक अजीब सनक है कि दिन में खड़े होकर लोगों के पैर गिने जाएं, और रात को यदि कोई किताब हाथ लग गयी, तो नींद की कोई परवाह न की जाए! पढ़ना हमारी मजबूरी है, जो कुछ भी मिल जाए, मन उलझ जाता है। कोई धार्मिक किताब हो या किसी हत्याकांड की दास्तान अथवा दो प्रेमियों के घर से भागने की सनसनीखेज खबर हो। हमारी आंखें सब कुछ पढ़ना जानती हैं ऐसे ही आदमी को 'दीमक-चाट' कहा

जाता है। यह भी सुना है कि आदमी के दिमाग के भीतर एक कीड़ा होता है। वह कीड़ा चैन नहीं लेने देता। यह तो हमारी सनक की दास्तान हुई, लेकिन ख्याल आ रहा है, हमें हॉलीवुड की भूरी आंखोंवाली उस लड़की का, जिसे कल ही परदे पर देखा था—नाम है कुमारी शीरले। किसी को प्रेम करना है, तो शीरले से सीखे। वह बेहिचक कहती है, "प्रेम करना मुझे अच्छा लगता है इसलिए आदमियों को दोस्त बनाने का मैं हमेशा प्रयत्न करती हूं।" शीरले प्रेम करती है, यह तो एक बात हुई, लेकिन प्रेम करने की शर्तें कमाल की हैं। उसने तीन कुत्ते, दो बिल्लियां, एक तोता, एक बत्तख—एक घोड़ा, मछलियां, जंगली मोर और कुछ मुरगियां पाल रखी हैं। वह कहती हैं, "मुझे ऐसा आदमी चाहिए, जो मजाकिया किस्म का हो और मुझे ही नहीं मेरे इन सब जानवरों को भी प्रेम करे।" उसका नारा है, "मुझसे प्रेम करना है, तो मेरे पालतू जानवरों से भी प्रेम करो।"

लॉस एंजेल्स की इस लड़की के बारे में, जिसने सब कुछ बताया, वह है लिंडा वाक्सलर। काले बालोंवाली इस लड़की ने जानवरों के लिए हृदय-रोग का अस्पताल खोला है, वह चाहती है कि दुनियाभर में ऐसे अस्पताल खोले जाएं। लिंडा ने शीरले की बातें तो बता दीं, वह यह भूल गयी कि उसकी सनकों का इतिहास भी लिखा जाएगा। वह सिर्फ १२ पौंड लेती है और किसी भी छुट्टी के दिन कहीं भी बाहर जा सकती है। बशर्ते कि उसके साथ उसके तीन प्यारे कुत्तों और तीन बिल्लियों को भी ले जाया जाए। लिंडा की उमर होगी कोई ३४ बरस, उसका कहना है कि यदि किसी को उससे प्यार करना है, तो उसे उसके दोस्तों का भी ख्याल रखना पड़ेगा। दोस्तों का मतलब हुआ, तीन कुत्ते और तीन बिल्लियां। लिंडा ने आठ महीने पहले जानवरों को पालना शुरू किया था। एक दिन किसी प्रेमी ने उससे कह दिया कि मुझे तुम्हारे कुत्ते पसंद नहीं हैं, तो उसने चिढ़कर मुंह बनाया और कहा, "वे कुत्ते तुमसे बेहतर हैं, तुम मुझे

पसंद नहीं हो।" और उसने बड़ी बेरहमी से अपने दोस्त को बाहर कर दिया।

अजीब बात देखिए कि अखबारों में भी लिंडा का नाम छपने लगा है। और, लिंडा ने भी अपना शौक इस तरह बढ़ा लिया है कि अब वह और जानवर पालने लगी है। इसलिए भी कि वह कुत्तों की नस्लें सुधारना चाहती है और कुत्ते भी बेचना चाहती है। उसने खूंख्वार भेड़ियों की तरह जंगली कुत्तों को लेकर नाम कमाया है और खिलौने-जैसे कुत्ते भी पाल रखे हैं। अब देखिए, यदि जानवर पालेंगे, तो कभी बीमार भी होंगे। बीमार होंगे, तो अस्पताल की भी जरूरत पड़ेगी, इसके लिए उसने डॉक्टर से प्रेम करना शुरू किया। छह फुट ऊंचे इस डॉक्टर का नाम है वुलगैन। वुलगैन साहब भी अपनी तरह के हैं। उन्होंने मधु-मक्खियों के ढेर से छत्ते पाल रखे हैं। उनके घर में रखवाली करने के लिए एक ऊंचा बुलडॉग कुत्ता है। इसके सिवाय खेलने के लिए पांच बिल्लियां हैं, और एक कछुवा है। डॉक्टर वुलगैन का नाम अब तो सामाजिक क्षेत्र में भी प्रसिद्ध हो गया है। उनके शौक भी बढ़ते गये और वे अक्सर लिंडा के साथ समुद्री जहाजों में दूर-दूर तक जाते हैं और व्हेल मछली ताका करते हैं। उन्होंने फोटोग्राफी भी सीख ली है और तेज लैंस-वाले कैमरों से कई व्हेल मछलियों के चित्र लिये हैं। देखिए न कितने बड़े दुस्साहस का काम है, यदि व्हेल मछली खूंख्वार हो गयी, तो अपनी पूंछ से ही वह छोटे-से समुद्री जहाज को डुबा सकती है।

वह शाम बहुत सुहावनी थी, क्योंकि क्रिसमस का दिन था और लॉस एंजेल्स के ऊंचे मकान के तिमंजिले फ्लैट में अचानक एक दिन लिंडा शीरले और डॉक्टर वुलगैन इकट्ठे हुए थे। दावत दी थी, शीरले ने। वहां का माजरा देखिए, दो औरतें थीं, एक आदमी, लेकिन ढेर से कुत्ते, बिल्लियां, दूसरे जानवर। दावत में जब केक काटा गया, तो पहली छुरी केक के ऊपर एक कुत्ते ने ही चलायी थी, जब तालियां बजायी गयीं, तो तालियों के साथ-साथ इन सभी पालतू जानवरों के हाव-भाव भी देखने लायक थे। इस बीच लिंडा को गुस्सा तब आया, जब एक बिल्ली ने झपट-कर केक का एक टुकड़ा जबरन अपने मुंह में ठूंस लिया। जाहिर है, इससे कोई भी आदमी नाराज होता, लेकिन डॉक्टर वुलगैन अजीब-सी आवाज से चिल्लाये "प्यार इसी को कहते हैं।" उस रात पार्टी बहुत देर तक चलती रही। और एक मॅनीफैस्टो तैयार किया गया। जरा इस मॅनीफैस्टो का भी मजा लीजिए, 'यदि कोई प्रेमी व्यक्ति मिल जाए, तो जिंदगी शैंपेन की तरह छलक उठती है। उस व्यक्ति के साथ यदि जानवर भी मिल जाएं और सब एक-दूसरे से प्यार करते हों, तो वह लमहा स्कॉच व्हिस्की बन जाता है। स्कॉच व्हिस्की और शैंपेन के नशे में जमीन-आसमान का अंतर है। शैंपेन हुई

ककड़ी और स्कॉच व्हिस्की हुई खीरा—दोनों के स्वाद में कितना अंतर है। ककड़ी अंगुलियों की तरह नरम है, तो खीरा के ऊपरी भाग को काटकर के उस पर नमक लगाना पड़ता है, फिर रगड़कर फेन निकालना पड़ता है। उसी के बाद खीरे को खाया जा सकता है। लेकिन जनाब, जो स्वाद उस खीरे में है, वह अंगुलीदार ककड़ियों में नहीं। हमारे देश में न तो खीरे की कमी है और न ककड़ी की। कमी तो जानवरों की भी नहीं है लेकिन जानवरों को पालने की सनक कहां से सवार हो, जब अपना ही पेट भूखा हो। घर में लड़कियां हो जाएं, तो मुसीबत! यह कैलिफोर्निया तो है नहीं कि लड़के हों या लड़कियां दोनों का नख्रो-लोआब अलग होता है। दोनों में ठसक होती है, शान होती है और वे अपनी-अपनी सनकों के साथ बड़े प्यार से जी सकते हैं। यहां तो लड़की गले का फंदा है, दहेज न दे सकें, तो रिश्ते कहां से मिलेंगे? इसका फायदा कुछ आदमियों ने जरूर उठाया और दुकानें लगा ली हैं। इस देश की राजधानी दिल्ली से रेल पर बैठकर चाहे जिस ओर चले जाइए, दीवारें रंगी पड़ी हैं—'रिश्ते ही रिश्ते', 'मनचाहे रिश्ते', 'बिना दहेज विवाह करायें'... मिल तो लें', आदि-आदि। इन दुकानदारों की चपेट में एक बार कहीं धोखे से पहुंच गये, तो शादी से पहले ही दहेज वसूल कर लिया जाता है। जो भी हो, जिसके दिमाग में शादी कराने के इस व्यापार ने सबसे पहले जनम लिया, उसे कोई बड़ा इनाम जरूर मिलना चाहिए।

दुनिया में ऐसी खब्तों और सनकों के कारण बड़े-बड़े इतिहास लिखे जाते हैं। सच पूछा जाए, तो वह आदमी ही क्या, जिसमें कोई न कोई सनक न हो। जरा अपने भीतर झांककर देखिए, कोई न कोई सनक आपके भीतर भी होगी और अपने पोतों को देखिए, उनकी आदतों में भी कुछ न कुछ अजूबापन जरूर मिलेगा। इन्हीं सनकों के कारण जिंदगी बीत रही है, कठिनाइयां चाहे कितनी भी क्यों न हों।

—द्वारा 'कादम्बिनी'

पहली अप्रैल है!

डच 'अप्रैल फूल' कैसे बनाते हैं, इसके कुछ नमूने :

- एक वर्ष एक डच समाचार-पत्र ने पहली अप्रैल को यह सूचना प्रमुखता से छापी कि वे छपाई के लिए ट्यूलिप की गंधवाली स्याही का प्रयोग कर रहे हैं। फिर क्या था, हर डच-नागरिक ने सबसे पहला काम अखबार को सूंघने का किया। जब उन्हें वही चिर-परिचित गंध मिली, तब जाकर उन्हें ध्यान आया आज 'पहली अप्रैल' है।
- इसी तरह एक वर्ष एक डच अखबार ने बड़ी-बड़ी सुरखियों के साथ यह समाचार छाप दिया कि इटालियन फिल्मों की नायिका जीना लोला बिग्रेडा आज ट्रेन से शहर में आ रही हैं। ट्रेन के समय स्टेशन पर भारी भीड़ एकत्र हो गयी। जब वह नहीं आयीं, तब लोगों को याद आया, 'अरे, आज तो पहली अप्रैल है।' —डॉ. हीरालाल बाछोतिया

यात्रा-संस्मरण

सोवियत संघ में आठ दिन

डॉ. जगन्नाथ मिश्र

उन्नीस दिसम्बर की दोपहर। चारों ओर हरियाली ही हरियाली। हमारा, एयर-इंडिया का विमान एक विशालकाय विमानतल पर उतर रहा है।

यह मस्कवा (सोवियत संघ में मास्को को 'मस्कवा' ही कहा जाता है) का विमान-तल है। मेरे मन में सहसा एक खयाल आता है, विमान से मास्को नगर तो दिखा ही नहीं। बाद में पता चला कि यह विमान-तल मास्को शहर से चालीस मील दूर है। किसी भी विमान को नगर पर से उड़ने की अनुमति नहीं है; इसीलिए कि नगर को शोर के प्रदूषण से बचाया जा सके।

विमानतल पर उतरते वक्त मुझे सहसा पंडित नेहरू की एक पंक्ति याद आ गयी—'भारत की खोज! मैं भारत को कितना खोज पाया? मैं भारत की खोज कर सकता हूं, यह सोचना भी मेरी धृष्टता होगी।'

विमानतल पर उतरते ही सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्ष श्री ए० पी० शितिकोव ने हम सबका स्वागत किया और फिर दूसरे दिन से शुरू हुई हमारी यात्रा, जिसमें हम सबने बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ सीखा।

सामूहिक कृषि फार्म में

मैं अर्थशास्त्र का छात्र रहा हूं। विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र पढ़ाता भी रहा हूं। अतः सोवियत अर्थ-व्यवस्था, सोवियत संघ की सामूहिक कृषि-व्यवस्था आदि के बारे में

डॉ. जगन्नाथ मिश्र हाल ही में सोवियत संघ की यात्रा पर गये थे। यहां प्रस्तुत है, 'कादम्बिनी' के लिए विशेष रूप से लिखे गये उनकी इसी यात्रा के कुछ संस्मरण।

मेरी दिलचस्पी स्वाभाविक ही थी।

अतः किरोव सामूहिक कृषि फार्म को देखना, सचमुच एक रोमांचकारी अनुभव रहा मेरे लिए।

यह कृषि फार्म एक छोटे-से जिले में है। जिले का नाम है—वालाशिखस्किी। इसमें तीन छोटे-छोटे नगर हैं, पांच 'सेटलमेंट' और पांच ग्राम-समुदाय।

हमें मेयर ने बतलाया कि जिले की विकास-योजनाओं के क्रियान्वयन का भार एक नगर-परिषद पर ही है। तीन सौ पचास सदस्योंवाली इस नगर-परिषद में पैंसठ प्रतिशत सदस्य श्रमिक ही हैं। इस नगर-परिषद की पंद्रह सदस्योंवाली एक कार्यकारी समिति है। हाल ही में इस समिति ने एक नया नियम शुरू किया है। जनता, समिति के नाम खुले पत्र लिखती है, जिन पर बैठकों में विचार किया जाता है। इससे दो लाभ हैं। एक तो जनता में प्रशासन में साझी-दार बनने की भावना जागृत होती है, दूसरे, जनता की आवश्यकताओं पर भी विचार हो जाता है।

इस फार्म के चेयरमैन श्री स्तोरोजेव ने हमें बताया कि सन १९३० में इस फार्म की स्थापना की गयी थी। उस समय ग्यारह गरीब किसानों ने अपने पास की सारी जमा-पूंजी एकत्र कर इस फार्म का काम शुरू किया था।

यह पूछने पर कि क्या इन किसानों के वंशज आज भी इस फार्म में रहते हैं?, श्री स्तोरोजेव ने बताया, "हां, वे आज भी यहीं रहते हैं। आज इस फार्म में छह सौ तीस परिवार बसते हैं।"

मैंने फार्म के नये-पुराने सदस्यों के हिस्सों, पारिश्रमिकों एवं हैसियत के बारे में प्रश्न किया तो श्री स्तोरोजेव ने बताया कि इस समय फार्म की आय एक करोड़

स्कूल नं. १९ में हिंदी का अध्ययन
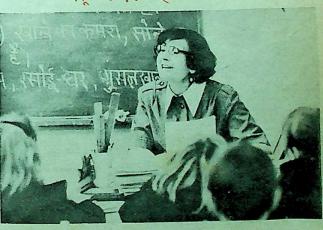
पचास लाख से एक करोड़ साठ लाख रूबल के बीच है। इसमें तीस लाख रूबल शुद्ध लाभ होता है। इसका सत्तर प्रतिशत पूंजी-विनियोजन के काम आता है। शेष तीस प्रतिशत वेतन, बोनस आदि बांटने के काम आता है।

इस कृषि फार्म में वेतन और उत्पादकता का घनिष्ठ संबंध है। वेतन एक निर्धारित उत्पादन के आधार पर तय होते हैं। यदि कोई कृषि-कर्मी निर्धारित सीमा से अधिक उत्पादन करता है तो उसका वेतन तदनुसार तय किया जाता है।

भू स्वामित्व का प्रश्न

मेरे मन में एक प्रश्न काफी देर से घुमड़ रहा था—सामूहिक कृषि फार्म में भू-स्वामित्व की क्या व्यवस्था होगी? मैंने श्री स्तोरोजेव से यह प्रश्न पूछ ही लिया।

उन्होंने बताया कि सोवियत संघ में सारी भूमि पर सरकार का स्वामित्व है। फिर भी एक शासकीय आदेश द्वारा सामूहिक कृषि फार्मों को लीज पर भूमि दी जाती है।

फार्मों की आय और कीमतों के बारे में प्रश्न करने पर उन्होंने बताया कि हर फार्म के लिए सरकार को नियत दर पर अपना उत्पादन देने के लिए एक कोटा निर्धारित कर दिया जाता है। इस लक्ष्य से अधिक उत्पादन होने पर उसे खुले बाजार में, जो 'रीनक' कहलाते हैं, बेचने की छूट होती है। इससे उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है। उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए एक और योजना है। इसमें किसानों को 'किचन-प्लाट' दिये जाते हैं। इसमें किसान जो भी उगाता है, उसका या तो वह स्वयं उपभोग कर सकता है या उसे खुले बाजार में बेच सकता है।

श्री स्तोरोजेव ने एक बात और बतलायी—संपूर्ण सोवियत संघ में सामूहिक कृषि फार्मों का उत्पादन, राजकीय कृषि फार्मों की बनिस्बत बेहतर है।

सामूहिक कृषि फार्मों और राजकीय कृषि फार्मों में क्या अंतर है? मेरा यह सहज प्रश्न था। उत्तर मिला :

"एक ओर जहां सामूहिक कृषि फार्म, भूमि, कृषि-उपकरणों आदि का स्वयं स्वामी होता है और उसकी कार्यकारी समिति ही सरकार द्वारा निर्धारित नीतियों के अंतर्गत सारे निर्णय करती है, वहां राजकीय कृषि फार्म की सारी संपत्ति सरकार की होती है और उसके कार्यों के बारे में निर्णय भी सरकार ही करती है।"

स्कूल नं० उन्नीस में

मैं मूलतः शिक्षाविद् हूं। यह कहूं कि शिक्षा मेरे रक्त में है, तो गलत नहीं होगा। किरोव सामूहिक कृषि फार्म देखने के बाद मैं मास्को के स्कूल नं० उन्नीस को देखने गया। यहां भी जो देखा, सुना, वह अविस्मरणीय है।

स्कूल नं० उन्नीस में उसके निदेशक (प्राचार्य) डॉ० एनातोले निकेलोविच दावीदोव और स्कूल के हिंदी विभाग की अध्यक्षा श्रीमती स्वातलावा विक्तोरवाना त्रुबिनोकोवा ने हमारा स्वागत किया।

पता चला, सन १९५९ में इस विशिष्ट स्कूल की स्थापना की गयी थी। इस स्कूल में पहली से दसवीं कक्षा तक की पढ़ाई की व्यवस्था है।

हिंदी-उर्दू की शिक्षा

सन १९५५ में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सोवियत संघ की यात्रा की थी। उनकी इस ऐतिहासिक यात्रा के बाद इस स्कूल में हिंदी और उर्दू के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था शुरू की गयी। आज वे दोनों विषय इस स्कूल के पाठ्यक्रम के महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

प्रेमचंद क्लब में

इस स्कूल में मुझे एक बात और बहुत अच्छी लगी। यहां एक क्लब है, जिसका नाम मुंशी प्रेमचंद के नाम पर रखा गया है। इस क्लब का नयी दिल्ली के गोर्की क्लब और तालस्ताय क्लब तथा भोपाल के गागारिन क्लब से सीधा संबंध है। इस स्कूल में बच्चों को न केवल हिंदी और उर्दू पढ़ायी जाती है वरन भारत के भूगोल, इतिहास और संस्कृति के बारे में भी विशद जानकारी दी जाती है। इसके अतिरिक्त पं० जवाहरलाल नेहरू एवं अन्य भारतीय महापुरुषों के बारे में भी पढ़ाया जाता है। इस स्कूल के बच्चे भारतीय नृत्य भी जानते हैं और मास्को में यदा-कदा उनके कार्यक्रम हुआ करते हैं।

इस स्कूल में हिंदी-उर्दू का ज्ञान प्राप्त करनेवाले बच्चे आगे चलकर उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन जारी रखते हैं।

सोवियत संघ में परीक्षा-प्रणाली

सोवियत संघ में परीक्षा-प्रणाली भारत की परीक्षा-प्रणाली से कई अर्थों में भिन्न है। यहां छात्रों द्वारा कक्षाओं में और घर पर किये गये कार्यों पर विशेष जोर दिया जाता है। शैक्षणिक वर्ष में चार सेमेस्टर होते हैं। सेमेस्टर के अंत में लिखित एवं मुखाग्र परीक्षाएं होती हैं।

मैं इस स्कूल की कई कक्षाओं में गया। मैंने उनके आवास-गृह भी देखे। मैंने देखा, इस स्कूल में छात्रों के लिए तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं। वहां छापाखाना भी था।

मास्को विश्वविद्यालय में

नव वर्ष के उपलक्ष्य में उन दिनों मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी बंद थी, फिर भी सुप्रीम सोवियत के अधिकारियों ने मुझे विश्वविद्यालय दिखाने की व्यवस्था की थी। वहां अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग के डॉ० डी० पी० इवानोव ने मुझे विश्वविद्यालय दिखाया और महत्त्वपूर्ण जानकारी भी दी।

इस विश्वविद्यालय में लगभग तीस हजार छात्र हैं। इस विश्वविद्यालय का स्तर बहुत ऊंचा है और पंद्रह-बीस प्रार्थियों में से केवल एक को ही प्रवेश मिलता है।

डॉ० इवानोव ने यह भी बताया कि मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी में भारत सहित एक सौ चौदह देशों के लगभग ढाई हजार विदेशी छात्र अध्ययन करते हैं। विश्वविद्यालय के लिए इन छात्रों का विशेष महत्त्व है। इनसे न केवल विदेशी छात्रों को लाभ मिलता है, वरन उनके संपर्क से सोवि-

नृत्य-संगीत में मग्न सोवियत नागरिक : मास्को विश्वविद्यालय

यत छात्रों का भी ज्ञान-विस्तार होता है।

इस विश्वविद्यालय में मैंने अनेक आकर्षक प्रयोगशालाएं देखीं। इन प्रयोगशालाओं में तरह-तरह की चट्टानों और खनिजों का अद्भुत संग्रह है। मैंने विश्वविद्यालय का मुख्य सभागार भी देखा। इसी सभागार में विदेशी अतिथियों को मानद उपाधियां दी जाती हैं। सभागार देखते हुए मुझे स्मरण हो आया, इसी स्थान पर प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी दिवंगत राष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसैन तथा क्यूबा के राष्ट्रपति फीडेल कास्त्रो को मानद उपाधियां प्रदान की गयी थीं।

प्रेरणास्पद प्रतिमाएं

सोवियत यूनिवर्सिटी में मैंने एक बात और देखी। वहां बड़े-बड़े वैज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों, भूगर्भशास्त्रियों की मूर्तियां रखी गयी हैं। प्रत्येक विभाग में एक संग्रहालय है। इनमें बताया गया है कि किस-किस विद्वान ने कौन-कौन-सी खोज की।

मैंने देखा कि रूस में एकेडिमिशियनों का बेहद सम्मान किया जाता है। वहां कोई एकेडिमिशियन सेवा-निवृत्त नहीं किया जाता। मैंने इस संबंध में एक प्रश्न भी किया था। उत्तर मिला, "हमारे एकेडिमिशियनों की सेवा-निवृत्ति की कोई आयु नहीं है। उच्च एकेडिमिशियनों की हमारे यहां वही प्रतिष्ठा है, जो प्रिसीडियम के सदस्यों की है।"

साहित्यकारों-वैज्ञानिकों का सम्मान

मैंने यह भी देखा कि सोवियत संघ में लेखकों, कवियों, वैज्ञानिकों आदि का बेहद सम्मान किया जाता है।

एक राजकीय समारोह में मुझे सोवियत सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखने का भी अवसर मिला। इस समारोह में सोवियत राष्ट्रपति एंद्रोपोव भी उपस्थित थे। मैंने अनुभव किया, सोवियत संघ में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं होता। वे देश की अखंडता की भावना

सुप्रीम सोवियत संघ के अध्यक्ष श्री शितिकोव के साथ बायें से डॉ. जगन्नाथ मिश्र एवं लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़

भरनेवाले होते हैं। शिक्षाप्रद होते हैं।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

अपनी इस यात्रा में मैं सोवियत संघ में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में भी जानने के लिए बेहद उत्सुक था। सोवियत संघ में भारत की भांति ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। इसकी व्यवस्था संविधान द्वारा की गयी है। पर एक बात है। वहां अखबारों को स्वतंत्रता तो है लेकिन उन्हें अनाप-शनाप लिखने की छूट नहीं है।

सोवियत संघ ने एक और क्षेत्र में मुझे बेहद प्रभावित किया।

हमारे देश में एक प्रदेश के लोग दूसरे प्रदेश के बारे में विशेष जानकारी नहीं रखते। जैसे बिहार के लोग ही दक्षिण के बारे में कितनी जानकारी रखते हैं? हां, जो लोग दक्षिण की यात्राएं करते रहते हैं, उन्हें अवश्य वहां के बारे में जानकारी होगी। आमतौर पर नहीं। इसी तरह यदि सामान्य लोग जानना चाहें कि गुजरात की वेशभूषा, गुजरात की भाषा, गुजरात की सांस्कृतिक परंपराएं क्या हैं तब उन्हें शायद कोई- जानकारी नहीं मिले। लेकिन सोवियत संघ में ऐसी व्यवस्था है कि वहां के पंद्रहों के पंद्रहों रिपब्लिक एक दूसरे से संबंधित रह सकें। उनके बारे में जान सकें।

सोवियत संघ में मुझे एक सुखद अनुभव हुआ। मैंने देखा, वहां के लोग महात्मा गांधी और पं. नेहरू को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। हमारी प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी तो वहां विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। मैंने देखा, सोवियत नागरिक प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की नेतृत्व-क्षमता से बेहद प्रभावित हैं। उनका ख्याल है कि श्रीमती गांधी एक एक दृढ़ निश्चयी, उदार और दूरदर्शी महिला हैं। उनके नेतृत्व में भारत निश्चयतः प्रगति कर रहा है।

—मुख्यमंत्री-निवास, पटना

किस्से कुछ सनकियों के

• राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह

मैं नार्मल दिमाग का आदमी समझा जाता रहा हूं। पर यह लेख आज लिखने बैठा हूं, सनकी लोगों पर; तो क्या यह भी सनक नहीं है? किसी डूंकड़ू काम के करने का नाम ही तो सनक है। हमारे समाज में भगवद-कृपा से ऐसे लोगों की कमी कभी नहीं रही है, जिसके भीष्म पितामह के समान ज्ञानी और पंडित, जो महीनों तक शर-शय्या पर पड़े रहे, ज्वलंत उदाहरण हैं; पर इनकी उन दिनों एक सीमित संख्या थी। किंतु आज तो इस 'स्पैसी' के मानव बड़ी संख्या में नजर आने लगे हैं। आज से मेरा मतलब पिछले सौ साल से है।

सनक नहाने की

मानव समाज में सनकियों का होना भी उतना ही आवश्यक है, जितना नंबर दो के रुपयोंवालों के बीच [illegible] आवे का। अतः इस दृष्टि से 'कादम्बिनी'-संपादक का पत्रिका का सनक-अंक निकालना सराहनीय प्रयास है। इसके भावी प्रकाशन की चर्चा मात्र ने मुझे कई जबरदस्त सनकियों की याद दिला दी, जिनमें सबसे पहली याद एक रानी साहिबा की, जो एक बड़ी रियासत की मालकिनी थीं और मेरी पिताजी की बुआ, आयी। वह काफी होशियार महिला थीं, पर परले दरजे की सनकी।

उन्हें सनक थी नहाने की। पैसों की कमी

थी नहीं, उन्होंने स्वयं अपने काम के लिए पचासों बांदियां रख छोड़ी थीं। एक-से-एक बलिष्ठ और सुंदर नौजवान। उनका मुख्य काम था, रानी साहिबा के स्नानार्थ कुएं से पानी भर-भरकर लाना (उन दिनों 'कल' की प्रथा नहीं चल पायी थी)। सारी रात उनकी पीतल अथवा तांबे के कलशों में पानी भरने में बीतती थी। रानी साहिबा के समस्त अंगों पर सौ-सौ घड़े पानी के उड़ेले जाते थे और फिर बांदियां कई प्रकार के कपड़े मल-मलकर उनकी सफाई करती थीं। केवल हाथ, दो-तीन सौ घड़ों से धोये जाते थे और स्नान की इस प्रक्रिया में कुल मिलाकर हजारों घड़े जल के खर्च हो जाते थे। और समय? सोलह घंटों से कम नहीं। रात को ही वह खातीं थी। खाने का समय ही कहां मिलता था? उनके भोजन के लिए ५६ प्रकार की चीजें बनती थीं। चांदी के थालों में वह सजाकर रखी रहती थीं, इस प्रतीक्षा में कि रानी साहिबा का स्नान समाप्त हो और वे उनके भोजनार्थ प्रस्तुत की जाएं। सप्ताह में शायद दो-तीन दिन ही सुबह होने के पहले, रात रहते, उनका नहाना समाप्त होता और वह उनमें से दो-चार चीजें लेकर खातीं। यदि सुबह हो गयी, तब मुख-प्रक्षालन, स्नान आदि के काम पुनः शुरू हो गये और . . .।

बनाकर मिटाना:मिटाकर बनाना

रानी साहिबा की रियासत उत्तर बिहार में पड़ती थी। उसी क्षेत्र में एक दूसरी जमीदारी स्टेट भी थी, जो उनके दरजे की तो नहीं, पर उनसे थोड़ी ही छोटी थी।

वह बड़े कुशल शिकारी थे। जिंदगी में सैकड़ों शेर मारे थे, पर उनकी सनक की पूर्ति शेर के गोली खाकर मरने से नहीं होती थी; वरन उसके साथ हाथापाई करके उसे जीवित पकड़ लाने से, उसे जंजीर में बांधने से, होती थी। अतः शेर पर गोली दागने पर वह तुरत कूद पड़ते और कोशिश करते कि वह शेर को जीवित पकड़ लें।

इसके मालिक भी परले दरजे के सनकी थे। उन्हें मकान सजाने और उसकी सजावट मिटाने की सनक थी। स्टेट का सारा काम मैनेजर देखता था। वह अपना सारा समय सनकें पूरी करने में लगाते थे। मसलन, अपने बैठक के कमरे को वह तरह-तरह के विलायती कीमती 'शैंडेलियर्स' यानी झाड़-फानूस से सजा डालते थे। इनके व्यापारी माल लेकर काशी से हर समय उनके पास आते ही रहते थे।

फिर एक दिन उनकी ख्वाहिश होती यह देखने की कि ये टूटते समय कैसे चमकते हैं ! बस, हुक्म देते अपने लट्ठधर सिपाहियों को कि इन्हें तोड़ो और उनका टूटना शुरू हो जाता। वह बहुत प्रसन्न होते यह देखकर कि उनके चमकते हुए टुकड़े छत से लगे 'शैंडेलियर्स' उसी प्रकार से गिरते हैं, जैसे आकाश से तारों के छोटे-छोटे टुकड़े 'मिटियर'। थोड़ी देर में छत बिलकुल सूनी पड़ जाती, तब इसके व्यापारियों को, जो वहां मौजूद ही रहते थे, आदेश होता कि वे इसे पुनः झाड़-फानूस आदि से भर दें और इन सबकी सजावट में और भी इजाफा करें। वे वैसा ही करते और एक की जगह दो रुपये के हिसाब से कीमत लेकर बनारस की राह पकड़ते। फिर कुछ महीनों बाद नये सैट लेकर हाजिर हो जाते। साल में दो बार तो जरूर ही इस ड्रामे की पुनरावृत्ति होती।

सनक शेरों से हाथापाई की

मुकसूदपुर, गया जिले की बड़ी और मशहूर रियासत थी। वहां के एक राजा रामेश्वरप्रसाद सिंह की सनक एक खास प्रकार की थी। वह बड़े कुशल शिकारी थे। जिंदगी में सैकड़ों शेर मारे थे, पर उनकी सनक की पूर्ति शेर के गोली खाकर मरने से नहीं होती थी; वरन उसके साथ हाथापाई करके उसे जीवित पकड़ लाने से, उसे जंजीर में बांधने से, होती थी। अतः शेर पर गोली दागने पर वह तुरत कूद पड़ते और कोशिश करते कि वह शेर को पकड़ लें। अकसर उन्हें इसमें सफलता भी मिलती। घायल शेर के साथ उनकी खूब हाथापाई होती। अकसर वह स्वयं भी घायल हो जाते, पर यह उनकी सनक-सूत्री का एक अंग था। इससे उनकी सनक में कोई फर्क नहीं पड़ता था।

एक बार का किस्सा है कि रांची के पास ढेर-सारे शेर मनुष्यभक्षी बन गये। आदिवासी औरों से ज्यादा निडर होते हैं तथापि उस क्षेत्र में इन नरभक्षी शेरों का ऐसा आतंक फैला कि उनके गांव के गांव खाली हो गये। बाशिंदे गांव छोड़-छोड़कर भाग खड़े हुए। बात गवर्नर लॉर्ड कर्जन तक पहुंची। बड़े लाट तब दिल्ली नहीं कलकत्ते में रहते थे। उन्होंने वहां से फौज के एक अफसर को पलटन के कुछ सिपाहियों के साथ उस क्षेत्र में भेजा कि वे उन नरभक्षी शेरों का सफाया कर दें। उन्होंने कैंप लगाया, पर वे एक भी शेर नहीं मार सके। लॉर्ड कर्जन ने फिर उनसे भी बड़े एक अफसर और सिपाहियों की टोली को भेजा, पर वे भी असफल रहे। तब गया के कलक्टर ने बंगाल सरकार को लिखा कि राजा रामेश्वरसिंह बड़े कुशल शिकारी हैं। उनसे अनुरोध किया जाए कि वे वहां जाकर कैंप लगायें और नरभक्षी शेरों को मारने की कोशिश करें। लॉर्ड कर्जन को यह सुझाव पसंद आया और उन्होंने स्वयं एक खत राजा साहब के पास भेजा कि वे इस काम को अपने

ऊपर लें। राजा रामेश्वरसिंह तब गवर्नर जनरल के अनुरोध पर कैंप लेकर उस क्षेत्र में गये। कई हफ्ते वहां ठहरे और नरभक्षी शेरों को मारना आरंभ किया। वह इस काम में सफल हुए। कुल तेरह नरभक्षी शेर मारे और सात पकड़कर अपने साथ-साथ मुकसूदपुर जिले में लेते आये और उन्हें लोहे की जंजीरों में बांधकर रखा। कइयों से उनकी हाथापाई भी हुई। उनकी सनक की पूर्ति पूरी तरह हुई। उस क्षेत्र में अब एक भी नरभक्षी शेर बचा न रहा। गांवों के लोग ढोल बजाते हुए अपने गांवों को लौटे। उस रात सबने खूब शराब पी तथा मर्द-औरतें घंटों नाचते रहे। कभी अलग और कभी साथ मिलकर।

हम बांधेगा : हम छोड़ेगा

सन १९२३ में हमारे सब डिवीजन समस्तीपुर में एक अंगरेज एस. डी. ओ. आया। वह परम सनकी था और उसकी यह आदत थी कि जब कभी कोई फौजदारी मुकदमा उसके कोर्ट में पेश होता, तब सुनवाई के बीच में ही वह गाना शुरू कर देता था, 'हम तो इसको बांधेगा' (यदि उसका इरादा मुजरिम को बांधने का हुआ) या 'हम तो इसको छोड़ेगा' (यदि इरादा छोड़ने का हुआ)। फिर तो वकील या मुखतियार के बहस करने या गवाहों की पेशी का कोई मूल्य नहीं रह जाता था। लाख बहस कीजिए, वह अपने इरादे से टलने का नहीं।

तभी एक मुकदमा उसके कोर्ट में आने को हुआ। मुजरिम एक खेतिहर था, जिसके पांच बच्चे थे। गांव की एक मारपीट में हिस्सा लेने का उस पर इल्जाम था। पुलिस केस था। उसकी पत्नी ने रोते हुए जाकर समस्तीपुर के एक मशहूर मुखतियार मौलवी महीबुलहक को अपना मुखतियार रखा और उनसे अपनी बेबसी की कहानी सुनायी, फीस में कुछ रियायत करने की प्रार्थना की। महीबुलहक बड़े दयालु स्वभाव के आदमी थे, कर्त्तव्यनिष्ठ और कानून के परम ज्ञाता। उन्हें उस औरत पर दया आ गयी, उन्होंने आधे फीस पर मुकदमा लड़ना कबूल कर लिया। वह एस. डी. ओ. के सनकी स्वभाव से पूरी तरह

वाकिफ थे, अतः उन्होंने अपने दिल में उसका किस प्रकार सामना करेंगे, इसकी पहले से बंदिश बांध ली, पर इसे खोला नही। केवल मुजरिम की औरत से कहा कि मुकदमे की जिस दिन सुनवाई होगी, उस दिन वह अपने सभी बच्चों को साथ लेती आये। उसने ऐसा ही किया, जिस दिन केस की सुनवाई थी उस, दिन सुबह ही सुबह, वह सभी बच्चों को साथ लेकर मुखतियार साहब के घर जा पहुंची। ग्यारह बजे केस खुला, पर अभी बीस मिनट भी नहीं बीते होंगे कि एस. डी. ओ. ने गाना शुरू किया, "हम तो इसको बांधेगा।" महीबुलहक ने तुरत अपनी बहस बंद कर दी और एस. डी. ओ. से कहा, "हुजूर, मुजरिम ही घर में एक ऐसा आदमी है, जो कमाता है और उसी की कमाई से सारे परिवार की रोटी चलती है। देखिए न हुजूर, इसके पांच बच्चे हैं, एक औरत है, ये भूखों मर जाएंगे, अगर मुजरिम जेल चला गया। इन पर मेहरबानी कीजिए, इन बच्चों की जान बचाइए, हुजूर!"

फिर उसकी औरत को उन्होंने इशारा किया कि वह बच्चों के साथ साहब के पांव पकड़ ले। सिखायी हुई तो वह थी ही, तुरत वह और उसके बच्चे एस. डी.ओ. के पांवों पर जा गिरे। इधर मौलवी महीबुलहक कहते गये, "हुजूर, मेहरबानी कीजिए, मुजरिम को माफी दीजिए, वरना ये सभी मौत के घाट उतर जाएंगे, मर जाएंगे हुजूर, दाने-दाने को मोहताज होकर। मेहरबानी कीजिए इस गरीब औरत पर, इसके मासूम बच्चों पर। इस घर को बरबाद होने से बचाइए।"

काफी देर तक यह ड्रामा चलता रहा। अंत में एस. डी. ओ. ने स्वर बदला और गाना आरंभ किया, "हम तो इसको छोड़ेगा।"

महीबुलहक ने अब कहा, "खुदा हाफिज! वह हुजूर का जरूर भला करेगा। इनकी जान हुजूर ने बचा ली। अरी, सलाम कर साहब को। जा, तेरी और तेरे बच्चों की जान बच गयी।" मुजरिम की औरत ने वैसा ही किया।

एस. डी. ओ. ने मुजरिम को रिहा किया। और, सनकी हाकिम की सनक पर मौलवी महीबुलहक ने विजय प्राप्त की।

—२ बी, महारानी बाग,
नयी दिल्ली-१

मंगलौर के एक युवक एस. महादेवन ने केवल ३ घंटे ३९ मिनट में ३१,८११ संख्याएं याद कर फिर उन्हें ज्यों का त्यों सुनाकर एक नया विश्व-रेकॉर्ड कायम किया है। इससे पहले का विश्व-रेकॉर्ड ९ घंटे, १४ मिनट में २८,०१३ संख्याओं को याद करके सुनाने का है।

सनक महानता की माता है!

• रतन लाल जोशी

"अक्ल और इश्क बिस्तर पर लेटे इनसान की दो करवटें हैं, कब कौन-सी करवट बदल जाए, बेचारा सोनेवाला क्या जाने ? और, सुलानेवाले से भी कोई कहां पूछने जाए ! अहसान यही क्या कम है कि नींद मिल गयी, लेकिन जो सो नहीं पाते, उनसे भी दुनिया अक्सर उऋण नहीं हो पाती ।"

ऊपर जिब्रान ने अक्ल और इश्क के बीच जैसा रिश्ता कायम किया है, ड्राइडेन ने भी लगभग वैसा ही नाता प्रतिभा और पागलपन के बीच जोड़ा है, "हमारी दो घोड़ों की सवारी है, कौन घोड़ा बाजी मार ले जाए ?"

सनक इन दोनों के बीच की कड़ी है। मार्क ट्वेन कहता है, "सनक को साष्टांग करो, वह महानता की माता है। उसके एक स्तन में ईश्वर और दूसरे में शैतान निवास करता है ।"

धूप आने दो

बहुत पुराने समय की बात है, एक दिन दो सनकी एथेंस में मिले। एक था सिकंदर, जिसे दुनिया को जीतने की महत्त्वाकांक्षा ने पागल बना रखा था और दूसरा था हठयोगी डायजेनीज, जिसके फक्कड़पन की कोई जोड़ नहीं थी । 'सिनिक'-संप्रदाय के प्रवर्तकों में डायोजेनीज का भी नाम लिया जाता है । वह एक टब में रहता था, जिसमें उसने एक छतरी लगा रखी थी । बरसात आती, तब वह छतरी खोल देता था और धूप निकलती, तब वह उसे बंद कर देता था। दिग्विजय से लौटने के बाद सिकंदर डायोजेनीज से मिलने गया। उस समय वह हठयोगी टब में बैठा धूप ले रहा था। अहंकार और दर्प में उन्मत्त सिकंदर उसके टब के पास खड़ा हो गया। धूप का अवरोध हो गया। सिकंदर ने बड़े विनीत भाव से डायोजेनीज से पूछा,

"महाशय, बतलाइए, मैं आपकी क्या सेवा करूं ?" डायोजेनीज ने ऊपर सिर उठाकर देखा तो सिकंदर खड़ा था। डायोजेनीज भौहें चढ़ाकर बोला, "तुम बस इतना करो कि एक तरफ हट जाओ, मुझे धूप आने दो।"

सम्राटों-बादशाहों की सनकों से इतिहास भरा पड़ा है। 'जग बौराइ राजपद पाये' के अनुसार तो उनकी सनकें ऐसी विचित्र होनी चाहिएं कि लोग दांतों-तले अंगुली दबा लें।

संसार का प्रथम और अंतिम सम्राट

संसार के आठ महान आश्चर्यों में परिगणित 'चीन की बड़ी दीवार' के निर्माता सम्राट चिग शी-वान-ती (ई. पू. सन २४६-२१०) का पारिवारिक जीवन भी 'दीवार' से कम आश्चर्यजनक नहीं था। उसके महल में पंद्रह हजार कमरे थे और उसने नियम बना रखा था कि एक कमरे में एक पत्नी के साथ दो बार नहीं सोये। जब वह मरने लगा, उसने आदेश दिया, "मेरी बनवायी दीवार की नींव में मेरी तमाम रानियों और दास-दासियों के साथ मुझे दफन करना और मेरी कब्र पर इस

आशय का शिलालेख गाड़ देना कि यहां संसार का प्रथम और अंतिम सबसे बड़ा सम्राट सोया हुआ है।"

सम्राट शी-वान-ती की आज्ञा का पालन किया गया और १५,००० रानियां, २०,००० दास-दासियां और ६,००० बेटे-बेटियां सम्राट के शव के साथ दफना दिये गये। इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि अब तक इस शिलालेख को चीन के हर शासक ने सुरक्षित रखा है, क्योंकि कहते हैं, अपार स्वर्ण-राशि के लोभ में जब-जब सम्राट की कब्र खोदने
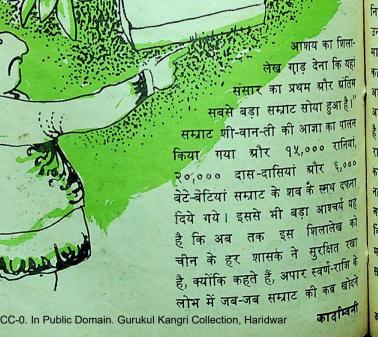
का किसी राजा ने प्रयास किया, वह राजगद्दी पर नहीं रहा !

दिन का सूरज, रात का चंद्रमा अपनी यात्रा में क्षणभर रुक जाते हैं थूकने को निर्ममता के इस राक्षस की कब्र पर

ये पंक्तियां हैं, इस प्रसंग पर चीन के महाकवि ली-पो की प्रसिद्ध कविता की।

सूरज नहीं निकलेगा

सप्तद्वीप-नवखंड की राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरिया की सनकों से कौन परिचित नहीं है ! कुछ दिनों तक उन्हें भ्रम रहा था कि सवेरे अगर वह जल्दी नहीं उठीं, तो सूरज नहीं निकलेगा। इसलिए वे मुंह अंधेरे पूर्व दिशा की तरफ उन्मुख होकर महल की खिड़की में खड़ी हो जाती थीं और जब तक सूरज नहीं निकलता, तब तक खड़ी ही रहती थीं। उनके प्रधानमंत्री डिजरायली को जब यह मालूम हुआ, तब उन्होंने महारानी से कहा, "सम्राज्ञी, एक बार सूरज को आदेश दे दिया गया है, वह पालन करेगा। आपकी आज्ञा का उल्लंघन कौन कर सकता है ?" डिजरायली के आश्वासन से महारानी संतुष्ट हो गयीं और सूरज ने फिर कभी विक्टोरिया की आज्ञा का इंतजार नहीं किया।

नक्शे पर कालिख

किंतु इससे बढ़कर एक और प्रसंग है महारानी विक्टोरिया के 'राजमद' की सनक का।

बात यों हुई कि बोलिविया-स्थित ब्रिटिश राजदूत को एक बार वहां के डिक्टेटर द्वारा निमंत्रित एक प्रीतिभोज में सम्मिलित होना पड़ा। भोज-समारोह में उक्त डिक्टेटर की नवागता 'उप-पत्नी' भी आयी हुई थी। डिक्टेटर ने प्रत्येक अतिथि को उनके सामने झुककर सम्मान-प्रदर्शन करने को कहा। शेष सब राजदूतों ने तो इस आदेश को मान लिया, किंतु 'विश्व की सर्वाधिक पराक्रमशालिनी महारानी' विक्टोरिया के राजदूत ने इस आदेश को मानने से एकदम इनकार कर दिया। इस पर क्रुद्ध होकर डिक्टेटर महोदय ने ब्रिटिश राजदूत को नंगा करके, गधे पर उल्टा बैठा, सारे शहर में ढोल पीटते हुए घुमाने का आदेश दिया।

महारानी विक्टोरिया ने जब अपने राजदूत के अपमान का यह समाचार सुना, तब वह आगबबूला हो गयीं और उन्होंने अपनी जल-सेना को बोलिविया के विरुद्ध तत्काल चढ़ाई करने का आदेश दिया। किंतु मंत्रियों ने बताया, "महारानीजी, बोलिविया के पास तो समुद्र-तट है ही नहीं, उस पर जल-सेना चढ़ाई

कैसे करे ?"' महारानी ने अपने प्रधानमंत्री को उसी क्षण आदेश दिया, "संसार के नक्शे से बोलिविया को उड़ा दो।" और, मंत्री द्वारा आज्ञा-पालन की प्रतीक्षा किये बिना उन्होंने स्वयं अपने हाथ में कैंची लेकर बोलिविया को नक्शे से काट दिया। उसके बाद बहुत वर्षों तक इंगलैंड के स्कूलों में पढ़ाये जानेवाले भूगोल या नक्शे में बोलिविया का कोई अस्तित्व नहीं रहा! 'हाउस ऑव कामन्स' में टंगे नक्शे में भी बोलिविया की जगह कालिख पुती थी।

पागल की तरह मरने में मजा है

कविकुल गुरु कालिदास का 'गुण-सन्निपात' सनक का ही पर्याय कहा जा सकता है। कभी यह 'सन्निपात' संसार को काव्य और कला की निधियों से मालामाल कर देता है, तो कभी दुनिया पर कहर ढा देता है। इसीलिए फेल्डन ने कहा है कि घर में बंदर पाला है, तो मनोरंजन के साथ शीशे तोड़ने की क्षति को भी भोगने के लिए तैयार रहो।

पाल गोगां के चित्र पाकर आज यूरोप का बड़े-से-बड़ा संग्रहालय अपने आपको धन्य मानता है। किंतु जिस पेरिस को आज उस पर गर्व है, उसी के बौद्धिकों ने उसे पागल करार देकर देश से बाहर भागने को विवश कर दिया था; महज उसकी एक सनक के कारण। वह आदम-हव्वा की कथा के प्रकृत चित्र दीवारों पर बनाता फिरता था, जो तत्कालीन सभ्य समाज को बहुत अखरते थे। मित्रों ने बहुत समझाया, मगर पाल गोगां सभ्यता का चोगा नहीं पहन सका। दक्षिण समुद्र के द्वीपों में वह मारा-मारा फिरता रहा, जहां आदिवासियों ने उसे शरण दी। यहां आदिवासियों के जीवन-सौंदर्य ने उसे मुग्ध किया और आदम-हव्वा की कथाओं को उसकी तूलिका से सृजन के नये प्रतीक मिले। गुप्त नाम से जब वे कलाकृतियां पेरिस पहुंचीं, तब तहलका मच गया। उसने अपनी आत्मकथा लिखी है, जो उसके अनुभवों से प्रसूत सूक्तियों से भरी पड़ी है। एक सूक्ति है, जो उसके एक चित्र की स्वामिनी श्रीमती जान डी. राकफेलर के चित्रकक्ष में गोगां के चित्र 'रिवर-साइड' (सरिता के किनारे) के नीचे अंकित है, "अपने को लुटाओ, लुटाते रहो। दौड़ो, जब तक तुम्हारा दम नहीं टूट जाए। अरे, पागल की तरह मरने में भी मजा है!"

तालाब को पाटना है

सनक की हिलोर से कोई तालाब वंचित

है ? जिंदगी भी तो सनकों की एक गठरी है, खोलिए तो बाजार में कीमत लग जाएगी और अगर गठरी बंद ही रही, तब धोबी के गधे की तरह सदैव बोझ ही ढोते रहेंगे। इमर्सन कहता है, "सनक चाहे पागल घोड़ा हो, उछलकर बैठ जाओ, तुम्हारा वजन तो वह ढो लेगा।"

इमर्सन और थोरो—गुरु और शिष्य, अपने युग के विख्यात सनकी थे। बोस्टन में इमर्सन का निवास अभी तक वैसा-का-वैसा ही कायम है। मैं जब वहां गया, तब भाग्य से उनका ६५ वर्षीय पोता मुझे मिल गया। अपने नाना की सनकों का जिक्र करते हुए उसने मुझे बताया, "सवेरे वह मुझे लेकर घर से निकल जाया करते थे और तालाब के किनारे बैठकर मुझसे कहते, 'यह झोली लो और कंकड़ बीनकर लाओ।' मैं कंकड़ों से झोली भरकर लाता जाता और वह एक-एक कंकड़ तालाब में फेंकते जाते। एक-डेढ़ घंटे तक यही सिलसिला जारी रहता। एक दिन मैंने पूछा, 'ऐसा आप क्यों करते हैं?' वह बोले, 'इस तालाब को पाटना है—इतना चौड़ा करना है कि इसका पानी अपने घर तक पहुंच जाए।' और, बरसों तक हम दोनों यही दैनिक व्यायाम करते रहे!"

सबसे बड़ा सनकी

सृष्टि का सबसे बड़ा सनकी तो लोगों की नजर में विधाता है, जिसकी सनकों का कोई हिसाब नहीं। किसी सनकी ने उसकी सनकों पर व्यंग्य कसते हुए लिखा है—

का नाम बुद्धिहीनस्य विधेस्तस्य विदग्धता;
कूष्मांडेषु न यश्चक्र तैलपूर्णा च दन्तिषु।

इस सनकी विधाता की अक्ल तो देखिए कि सृष्टि रचते समय उसने न तो कुम्हड़े में तेल रचा और न हाथी पर ऊन उगायी।

अकबर इलाहाबादी कहते हैं कि मियां तंदुरुस्ती से तो जिंदगी चलेगी नहीं, कोई रोग पैदा करो, जिंदगी के वास्ते। और, सचमुच यह 'रोग' ही मन का परमेश्वर है, जो जिंदगी को प्रणम्य बना देता है। अगर ऐसे 'रोगी' नहीं हों, तब संसार तीन कौड़ी का भी नहीं है। 'मीर' कहता है कि हमारी खफ्तों ने ही इस संसार के आईने को मुंह देखने के काबिल बनाया है। हम नहीं होते तो इसकी काया में रक्खा क्या था?

आदमे खाकी से आलम को जिला है वर्ना
आईना था तो मगर काबिले-दीदार न था।

—१२, फिरोज गांधी मार्ग, लाजपतनगर,
नयी दिल्ली-११००२४

रीमा ने नये नौकर से कहा, "देखो तुम्हें नन्हें बच्चे का ध्यान रखना होगा। सुबह पांच बजे उठकर दूध लाना होगा, फिर मेरा नाश्ता बनाकर मेज पर लगाना होगा, मेरी हर बात माननी होगी...।"

यह सुनते ही नौकर बोला, "आपको नौकर नहीं, पति चाहिए!" और वहां से भाग खड़ा हुआ।

क्लब खर्राटेबाजों का

• हरि देव

हमारे एक मित्र हैं। उस दिन हम मिलने गये, तब देखा कि पति-पत्नी में जोरदार बहस छिड़ी हुई है। दोनों एक-दूसरे पर यह दोष लगा रहे थे कि उनके खर्राटों के कारण रात को नींद हराम हो जाती है। पति महोदय कह रहे थे कि वह खर्राटे लेते ही नहीं। जब पत्नी ने यही दलील दी, तब पति महोदय चट से अपना टेप-रेकॉर्डर उठा लाये और पत्नी के टेप किये हुए खर्राटे सुनाने लगे। मैंने सोचा कि मामला सचमुच गंभीर है। तभी तो टेप-रेकॉर्डर पर प्रमाण तक मौजूद है। यों तो उन पति-पत्नी के इस सिरफिरेपन पर मुझे हंसी भी आ रही थी, क्योंकि यह बेबुनियाद झगड़ा था। लेकिन चूंकि मैं बंबई के एक ऐसे दंपति को जानता हूं, जो खर्राटों के कारण तलाक ले चुके थे, इसलिए सोचा कि यदि इस सिरफिरी बहस का कोई हल निकाल सकूं, तब अच्छा है। इसलिए मैं बीच में पड़ा। काफी समझाया-बुझाया और अंत में उनका फैसला यही हुआ कि वे दोनों अलग-अलग कमरे में सोएंगे। आप सोचेंगे, 'कमाल है भाई! खर्राटों ने पति-पत्नी को अलग-अलग कमरों में सोने के लिए मजबूर कर दिया', और, मैं यही कहूंगा कि 'साहब! खर्राटों से सावधान रहिए! क्योंकि इनकी वजह से यदि सनक सवार हुई, तब खैर नहीं है।'

सब लेते हैं खर्राटे

खर्राटों की वजह से कहीं आप पर भी सनक सवार न हो जाए और कोई सिरफिरा कारनामा न कर बैठें, इसलिए जरूरी है कि यह जान लें कि खर्राटे क्यों आते हैं। खर्राटे लेना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। यह एक प्राकृतिक क्रिया है। मनश्चिकित्सकों ने अनुसंधान से यह सिद्ध कर दिया है कि सोते समय हर व्यक्ति खर्राटे लेता है। यह अलग बात

खर्राटों के कारण वे समाज द्वारा सताये जा रहे थे, फलतः उन्होंने खर्राटेबाजों का एक 'नाइट क्लब' ही खोल लिया। वे सब एक बड़े हॉल में सोया करते, लेकिन एक रात एक खर्राटेबाज के तेज खर्राटों से उनकी भी 'नींद' हवा हो गयी। उन्होंने उसे 'खर्राटा किंग' की उपाधि से विभूषित किया और . . .! एक बेहद रोचक लेख।

है कि कुछ लोगों का स्वर तीव्र होता है ग्रौर कुछ लोगों का कमजोर। खर्राटों से मुसीबत तभी होती है, जब वे तेज स्वर में लिये जाते हैं। ट्रेन में, छत पर या किसी बड़े कमरे में यदि कुछ लोग सो रहे हों ग्रौर उनमें से दो-चार तगड़े खर्राटेबाज हों. तब समझिए, सबकी नींद हराम हो गयी।

खर्राटे क्यों

खर्राटे क्यों लिये जाते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर भी यही है कि यह एक स्वाभाविक क्रिया है। अमरीकी मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि प्रति आठ लोगों में से एक व्यक्ति 'मुखर-खर्राटे' या 'सस्वर खर्राटे' भरता है। यों तो अनुसंधानकर्ताग्रों ने खर्राटों को रेकॉर्ड कर ध्वनि मापक यंत्रों से यह भी जानने का प्रयत्न किया है कि इस तरह होनेवाला शोर मानव-मस्तिष्क (यानी खर्राटे सुननेवाले) पर कितना दुष्प्रभाव डाल सकता है। खर्राटे के स्वरों की गहनता ग्रौर

तीव्रता पर ही इनके दुष्प्रभाव की गहनता निर्भर करती है। आमतौर से होता यह है कि सांस जब आती-जाती है, गले की कोमल झिल्लियों में होनेवाले कंपन से खर्राटों की ध्वनि उत्पन्न होती है। इस क्रिया के दौरान जिन लोगों में सोते समय जीभ और तालु कुछ अंदर की ओर होते हैं, खर्राटों की ध्वनि तेज हो जाती है। किंतु कुछ लोगों में ये खर्राटे नाक और गले में तकलीफ भी पैदा कर देते हैं,खासकर उन लोगों में जो मुंह से सांस लेते हैं। ऐसे लोगों में नाक की झिल्ली और तालु दोनों ही बढ़ जाते हैं।

चार प्रकार के खर्राटे

खर्राटे तभी उत्पन्न होते हैं, जब मनुष्य अचेतनावस्था में होता है। ज्यों ही वह जागता है या उसकी नींद की गहराई कम होती है—खर्राटे बंद हो जाते हैं। यदि आप कुछ खर्राटेबाजों का ध्यान से अध्ययन करें, तब आप देखेंगे कि आमतौर से लोग चार किस्म के खर्राटे लेते हैं। पहली किस्म के खर्राटों में सांस अंदर की ओर तो सामान्य ढंग से जाती है, किंतु लौटते समय सीटी बजाती हुई आती है। दूसरी किस्म के खर्राटों में सांस जाते समय खर्राती है और लौटते हुए सीटी बजाती है। कुछ लोगों में यह स्थिति उल्टी भी होती है—यानी पहले सीटी और फिर खर्राहट। तीसरी किस्म के खर्राटों में सांस आते और जाते हुए—दोनों बार बुलंदी से खर्राती है। लेकिन चौथी किस्म में जाने-वाली सांस खर्राती है और लौटते समय मुंह में 'फुद' का हलका-सा स्वर निकालती हैं, जैसे कुछ भी तो नहीं हुआ।

अब कुछ वे दिलचस्प किस्से सुनिए, जिनमें खर्राटों के कारण कुछ सिरफिरों ने बड़े-बड़े कारनामे कर डाले। इंगलैंड में एक दंपति में खर्राटों के कारण बहुत झगड़ा होने लगा। पत्नी की शिकायत थी कि उसका पति बहुत भयानक खर्राटे लेता है, जिससे वह रातभर डरती रहती है। जब उसका पति किसी तरह न सुधरा, तब पत्नी रात को एक डंडा रखने लगी। ज्योंही पति खर्राटे लेता, पत्नी उसे जोर से डंडा मारती। पति भी कब तक डंडे खाता? आखिर वह अदालत गया और न्यायाधीश को अपने शरीर पर पड़ी डंडे की मार दिखाकर तलाक ले लिया।

खर्राटों के लिए जुरमाना

खर्राटों को कानून द्वारा बंद करने का प्रयत्न भी किया जा चुका है, हालांकि यह अलग बात है कि इस स्वाभाविक शारीरिक प्रक्रिया पर कोई कानून नहीं लागू हो सकता। सन १९२१ में ओक्लाहोमा की विधान सभा में, एक विधेयक इस आशय का पेश किया गया था कि यदि किसी व्यक्ति के खर्राटे उसके घर-वालों या सार्वजनिक स्थान पर अन्य व्यक्तियों की नींद में बाधा डालते हैं, तब उसे बीस डॉलर का जुरमाना किया जाए। उसकी आदत में फिर भी सुधार न होने पर जुरमाने की राशि बढ़ाकर दो सौ डॉलर

कर दी जाए। किंतु यह एक अत्यंत अव्यावहारिक विधेयक था, इसलिए इसे नामंजूर कर दिया गया।

खर्राटों के कारण तलाक

खर्राटों के कारण पति-पत्नी में होनेवाले अलगाव और बात बढ़ जाने पर तलाक तक की नौबत आने के अनेक उदाहरण हैं। कुछ लोग इस झगड़े को आपस में ही तय करके कमरे बदल लेते हैं और कुछ लोग इसे झगड़े का कारण बनाकर समस्या को गंभीर रूप दे देते हैं। साउथैम्टन में एक पत्नी ने इसलिए पति से तलाक लिया, क्योंकि उसके खर्राटे बाहर सड़क तक सुनायी देते थे। उसने इस सत्य की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए कुछ पड़ोसियों को गवाह के रूप में भी पेश किया। इसी तरह अमरीका में एक पति को उसकी पत्नी और बच्चे इसलिए छोड़कर चले गये कि वे उसके खर्राटों से तंग आ चुके थे। जब वह पति अकेला हो गया, तब महल्लेवालों ने उसे टोकना शुरू कर दिया, क्योंकि वह ज्यादा मुक्त होकर खर्राटे लेता था और उनकी आवाज सड़क व आसपास के घरों तक सुनायी पड़ती थी।

अमरीका में कुछ खर्राटेबाजों ने अपनी सुविधाओं को प्राप्त करने तथा अधिकारों की मांगें मनवाने के लिए 'खर्राटेबाजों का नाइट-क्लब' खोला था। इसके सदस्य वे ही लोग थे, जो घर या समाज में अपने खर्राटों के लिए सताये जा रहे थे। इस क्लब में सभी खर्राटेबाज एक बड़े हॉल में सोया करते थे। उन्हें एक दूसरे के खर्राटों से न कोई परहेज था और न शिकायत। किंतु तभी एक ऐसा खर्राटेबाज सदस्य बना, जिसे बाद में उन्होंने 'खर्राटा-किंग' की उपाधि दे दी। बात यह थी कि यह नया सदस्य जब खर्राटा लेता, तब लगता, जैसे तोपें चल रहीं हैं। उसकी गोलंदाजी के सामने 'खर्राटा नाइट-क्लब' के बड़े से बड़े खर्राटेबाजों ने घुटने टेक दिये। उन तोपची-खर्राटों से उन सबकी नींद हराम हो गयी थी। इसलिए उसे अपना सरताज मानकर सबने यह कहा कि 'भाई, तुम सबके सो जाने के बाद सोया करो।'

खर्राटों के कारण यदि जीवन में इतनी विषम स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तब जाहिर है कि इनके इलाज की भी कुछ न कुछ व्यवस्था होनी चाहिए। इसी उद्देश्य से चिकित्सकों ने इनके कारणों का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि यदि नाक या तालु की झिल्ली बढ़ गयी है और यदि टांसिल बढ़ गये हैं, तब शल्य-चिकित्सा द्वारा उन्हें ठीक कराकर खर्राटों से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा जिन यौगिक क्रियाओं से गले, सांस तथा नाक की तकलीफें दूर हो सकती हैं, उन्हें करने से भी खर्राटों में कमी आ जाती है। वैसे इस विषय में अधिक परेशान होने की कोई बात नहीं है। अगर आपको नींद अच्छी आती है, तब क्या मजाल है कि कोई खर्राटेबाज आपको सता सके। ●

अपने परिवार के साथ ओगवेला

रेकॉर्ड: १२५ शादियां: ८५ तलाकों का
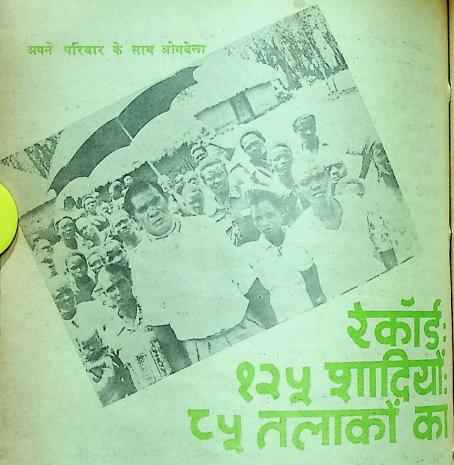
● डॉ. भगवतीशरण मिश्र

आज के युग में जब एक शादी ही जान का जंजाल बन जाती है और एक ही बीवी नाकों चने चबवाने के लिए काफी होती है, कोई यदि एक सौ पच्चीस शादियां करे और चालीस-चालीस जीवित बीवियों से घिरा रहे, तब उसे आप 'सिरफिरा' नहीं, तब और क्या कहेंगे? जी नहीं, यह ख्याली पुलाव नहीं है और न है यह कल्पना की बे-सिर-पैर की उड़ान! यह है एक हकीकत, बावन तोले पाव रत्ती सच।

इस अजीबो-गरीब दास्तान के नायक हैं, श्रीमान असेन्तस आकुकु ओगवेला। श्री ओगवेला केनिया के नागरिक हैं और अभी तक जीवित ही नहीं, पूरी तरह स्वस्थ हैं।

श्री ओगवेला ने अब तक एक सौ शादियां की हैं। इनमें से पचासी बीवियों

को उन्होंने तलाक दे दिया । जैसा कि बताया गया, इस समय इनकी चालीस बीवियां हैं ।

श्री ओगवेला के लड़के-लड़कियों की कुल संख्या १२६ है । इनमें ६५ लड़के और ६४ लड़कियां हैं । पर वास्तविक बच्चों की संख्या इससे कहीं अधिक है । पश्चिमी केनिया के इस भाग में शिशु-मृत्यु की दर काफी ऊंची है । अतः इनके बहुत-से बच्चे काल-कवलित भी हो गये । यदि प्रकृति की इन पर यह महती अनुकंपा नहीं हुई होती, तब पता नहीं इतने बच्चे-बच्चियों के रख-रखाव का भी क्या होता ?

एक सौ उनतीस बाल-बच्चों के अलावा श्री ओगवेला के एक सौ साठ पोते-पोतियां हैं ।

इनकी सबसे बड़ी औरत की उम्र ५८ वर्ष और सबसे छोटी की बीस साल है ।

चार महलों का हरम

असंदिग्ध है कि अपनी बीवियों की इस भारी फौज के लिए, श्री ओगवेला को हमारे मुगल-शासकों की तरह ही, किसी बड़े हरम की व्यवस्था करनी पड़ी होगी ! हां, बात यही है । श्री ओगवेला का हरम केनिया के दक्षिणी न्यान्गा जिले में एक बड़े भू-भाग पर फैला है । इसमें चार बड़े-बड़े महल हैं, जो एक दूसरे से काफी दूरी पर हैं । ऐसा इन बीवियों के मध्य यदा-कदा छिड़ जानेवाले 'महाभारत' को रोकने के ख्याल से ही किया गया है । वैसे, श्री ओगवेला अपने को शादी के क्षेत्र के एक चतुर खिलाड़ी मानते हैं और बीवियों को इस तरह मिला-जुलाकर रखते हैं कि झगड़े और वाद-विवाद के अवसर भी कम ही उठते हैं । पर जब कभी उनके इस विशाल परिवार में जिनमें बच्चे-बच्चियां और पोते-पोतियां भी शामिल हैं, विवाद उठता है, तब सबसे घिरकर, एक जज की तरह वह बैठते हैं और सभी पक्षों की बातों को सुनकर ऐसा निर्णय देते हैं कि किसी को शिकायत का अवसर नहीं रहता ।

उपर्युक्त विवरण से कोई यह न

ओगवेला एक पत्नी के साथ

समझे कि ओगवेला की, शादी के क्षेत्र की यह उपलब्धि कोई सौ-डेढ़ सौ साल की है और रूस के पहाड़ी इलाके के कुछ लोगों की तरह इनकी अपनी उम्र भी दो, पौने दो सौ साल तक पहुंचती होगी । जी नहीं, श्री ओगवेला ने अभी मात्र साठ वसंत देखे हैं । वसंत इसलिए कि, साठ की इस उम्र में भी इनकी शादी की लालसा और संतानोत्पति की शक्ति में कोई कमी नहीं आयी है । श्री ओगवेला का कहना है कि वे अभी कम-से-कम ७५ शादियां करना चाहते हैं, जिससे वे दो सौ शादियों का एक ऐसा प्रतिमान स्थापित कर दें, जो किसी के तोड़े नहीं टूटे ।

श्री ओगवेला को प्रथम संतान १९ वर्ष की अवस्था में हुई थी, जो अब ४१ वर्ष की है । इनकी सबसे छोटी संतान सात महीने की है । जी नहीं, इसका अंत यहीं पर नहीं है । दांतों-तले अंगुली दबाइए, श्री ओगवेला की पांच पत्नियां शीघ्र ही प्रसूता भी होनेवाली हैं ।

सफलता का रहस्य

श्री ओगवेला बीवियों को लगातार व्यस्त रखते हैं । उन्होंने इनके कार्य और दायित्व बांट रखे हैं । कुछ बीवियां मकानों की सफाई और 'झाड़ू-बुहारी' करती हैं, कुछ खेतों पर काम करती हैं और कुछ बच्चों की देखभाल करती हैं । पर कामों का अंत यहीं पर नहीं है । श्री ओगवेला पूरी तरह हमारे मुगल-शासकों से मिलते हैं । पुराने जमाने में जब हमारे नवाब और नवाब चलते थे, तब एक आदमी उनके पीछे-पीछे छत्र लिये चलता था । श्री ओगवेला के साथ ऐसा तो नहीं होता, पर जब वह चलते हैं, तब उनकी एक बीवी को उनके पीछे धूप का छाता लेकर चलना होता है । अगर मुगलों का समय होता तो आप समझ सकते हैं, इस बीवी का नाम क्या होता 'छाता बी' ।

इतनी बीवियों को बटोरने से कहीं आप यह न समझ लें कि श्री ओगवेला एक निहायत ही ढीले-ढाले किस्म के आदमी हैं । जी नहीं, ये एक बड़े ही सख्त पति और अनुशासनप्रिय व्यक्ति हैं । अगर कोई पत्नी गुस्ताखी करती है, तब उसे वे कोड़े की सहायता से रास्ते पर लाते हैं । एक बार की गलती तो खैर कोड़े की मार से ही माफ की जाती है, पर दूसरी गुस्ताखी माफ नहीं होती और बीवी को तलाक दे दिया जाता है ।

यह नहीं समझिए कि केनिया में बीवियां इतनी सस्ती आती हैं अथवा यह कि हम लोगों की तरह हर शादी में तिलक और दहेज के रूप में श्री ओगवेला को अच्छा खासा लाभ हो जाता है । जी नहीं, स्थिति एकदम विपरीत है । श्री असेन्तुस आकुकु ओगवेला केनिया की लुओं जनजाति के हैं और स्थानीय जन-जातीय कानून के अंतर्गत एक बीवी के लिए सामान्यतः बीस मवेशी देने पड़ते हैं । एक मवेशी का दाम कोई एक सौ डॉलर पड़ता है । इस तरह एक बीवी का दाम

कुछ नहीं, तो दो हजार डॉलर पड़ा अर्थात आज के डॉलर-रुपया अनुपात के आधार पर बीस हजार रुपये ! तब एक-एक बीवी पर श्रीमान ओगवेला ने बीस-बीस हजार रुपये खर्च किये हैं । इस प्रकार आप १२५ बीवियों पर खर्च का अंदाज लगा सकते हैं । २५ लाख रुपये । बोलिए है, किसी की हिम्मत २५ लाख की शादियां रचाने की ?

तलाक के कारण

पर एक बात है, लुओं जनजातीय कानून के अंतर्गत अगर आप अपनी पत्नी से नाखुश हैं, तब आप उसे सहर्ष उसके माता-पिता को वापस कर सकते हैं और बदले में कीमत वापस ले सकते हैं । अर्थात पत्नी को मैके पहुंचा आइए और अपने मवेशी हांक लाइए । किंतु अगर पत्नी ने बच्चे पैदा कर दिये हैं, तब बच्चे आपके होंगे और मवेशी ससुरालवालों के ।

श्री ओगवेला द्वारा ८५ पत्नियों के तलाक के कई कारण हैं, जिनमें प्रमुख हैं—

१. अवज्ञा, २. बांझपन, ३. बक-झक और ४. चरित्रहीनता ।

श्री ओगवेला का विचार है कि पत्नी को पतिव्रता और आज्ञाकारिणी होना चाहिए । जो कुछ हो, वह सब-कुछ बर्दाश्त कर लेंगे लेकिन एक कुलटा और शिकवा-शिकायतभरी, जिसे अंगरेजी में 'नैगिंग वाइफ' कहते हैं, पत्नी को वे बर्दाश्त नहीं कर सकते ।

हर दिन होता है, राहु-काल

दक्षिण भारत में यह विश्वास प्रचलित है कि दिन में सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य एक ऐसा काल होता है, जिसमें न तो कोई कार्य आरंभ करना चाहिए और न विवाहादि संबंधी कोई निर्णय ही लेना चाहिए । ऐसा काल राहु-काल कहलाता है ।

पुराने मैसूर राज्य में एक चीफ इंजीनियर महोदय थे, जो राहु-काल की अवधि में अपना कार्यालय बंद कर देते थे, न किसी से मिलते थे और न किसी फाइल पर हस्ताक्षर करते थे । कोई निर्णय करना तो दूर, वे टेलीफोन तक न करते थे और न किसी को टेलीफोन करते थे ।

पाठकों की जानकारी के लिए यहां प्रतिदिन आनेवाले राहु-काल का समय दिया जा रहा है :

सोमवार : प्रातः ७.३० से ९ बजे तक
मंगलवार : दोपहर : ३ से ४.३० बजे तक
बुधवार : दोपहर : १२ से १.३० बजे तक
गुरुवार : दोपहर : १.३० से ३ बजे तक
शुक्रवार : प्रातः १०.३० से १२ बजे तक
शनिवार : प्रातः ९ बजे से १०.३० बजे तक
रविवार : दोपहर : ४.३० से ७ बजे संध्या तक ।

—कोमला वरधन
सी-१/८, तिलक लेन,
नयी दिल्ली-११०००२

उनकी पत्नियों और लड़के-लड़कियों को श्री ओगवेला से बहुत शिकायत नहीं है। पत्नी नं० १२५ श्रीमती स्प्रीना आबिच का कहना है कि वह अपने पति को बहुत प्यार करती हैं और पति भी उन्हें बहुत चाहते हैं। उनका कहना है कि हमारी शादी को अभी केवल सोलह माह हुए हैं और मैं तीन महीनों में मां भी बननेवाली हूं। इससे अधिक प्रसन्नता की बात क्या होगी?

उनके बच्चे श्री ओगवेला को देवता की तरह मानते हैं। उनका कहना है कि उनके पिता की शिक्षा-दीक्षा में भारी आस्था है। परिवार में एक डॉक्टर, एक पुलिस-अधिकारी, एक प्रयोगशाला तकनीशियन, दो कृषि विशेषज्ञ और दो अन्य अधिकारी पैदा हो चुके हैं।

उनका एक लड़का जॉन आकुकु, जो बत्तीस वर्ष का है, एक स्कूल में शिक्षक है। वह कहता है कि पिता के रूप में श्री ओगवेला बड़े ही प्यारे हैं और वह उनकी पूजा करता है। जॉन की शादी हो चुकी है और चार बच्चे हैं।

यह पूछने पर कि क्या वह भी अपने पिता की तरह कई बीवियां लाएगा, जॉन कहता है कि उसकी बीवी उसे इसकी इजाजत नहीं देगी।

अच्छा लगता है कई मांओं का साया

एक दूसरे लड़के जूलियस ओतीनो आकुकु का कहना है कि बचपन में कई मांओं के प्यार के बीच पलना बड़ा अच्छा लगा। जूलियस बीस वर्ष का है।

अफरीकन पद्धति के अनुसार जब पति मर जाता है, तब पत्नियां दूसरे लोगों को अतिरिक्त पत्नियों के रूप में दे दी जाती हैं। इसके लिए कुछ मिलता भी नहीं। जूलियस का कहना है कि अपने पिता की मृत्यु के बाद वह अपनी मांओं को इस तरह घर से बाहर नहीं जाने देगा।

श्री ओगवेला से यह पूछने पर कि उन्होंने इतनी शादियां कैसे कर लीं? वह कहते हैं कि उनकी ऐसी कोई योजना नहीं थी। शादियां होती गयीं और वह करते गये।

"इतनी पत्नियों को सम्हाल रखना तो बड़ी बुद्धिमानी का काम होगा?"

"हां, बुद्धिमानी से अधिक कूटनीति का काम पड़ता है यहां," ओगवेला लोगों को बताते हैं, "आप करें या न करें, सभी पत्नियों पर यही प्रकट करना पड़ता है कि आप उसे सबसे ज्यादा प्यार करते हैं। और हां," श्री ओगवेला कुछ रुककर कहते हैं, "दुनिया के लोग पत्नियों की समस्या से इतने परेशान क्यों हैं? एक पत्नी को ही नहीं सम्हाल पाते बेचारे! वे मेरे पास क्यों नहीं आते? मैं उनको वशीकरण मंत्र दूंगा, फिर एक क्या वे कई पत्नियां सम्हाल लेंगे।"

श्री ओगवेला को क्या मालूम कि सब उन्हीं की तरह खुशकिस्मत कहां हैं? उनका कानून उन्हें सैंकड़ों बीवियां रखने की इजाजत भले दे दे, यहां तो ऐसे भी देश हैं, जहां एक से अधिक शादी करो तो हवालात की हवा खाओ।

—संयुक्त निदेशक (राजभाषा),
रेल मंत्रालय, नयी दिल्ली-१

घर छूटता है तो छूटने दे

अपने मन की तू बात न कर
दिल टूटता है तो टूटने दे
परदेस में जब जाना ही है
घर छूटता है तो छूटने दे

रस्ते ने दुआएं दीं न कभी
मंजिल ने कभी न प्यार किया
खुशियों से कोई नाता न बना
संघर्षों ने सत्कार किया
रातों से मुहब्बत है तो है
दिन लूटता है तो लूटने दे
परदेस में जब जाना ही है
घर छूटता है तो छूटने दे

बचपन तो कभी का बीत गया
यौवन भी सगा न हुआ अपना
यह जीवन हमको ऐसे लगा
अंधे का कोई जैसे सपना
बस रूह की खातिर जिंदा हैं
तन रूठता है तो रूठने दे
परदेस में जब जाना ही है
घर छूटता है तो छूटने दे

सागर की मरजी रखने को
नदिया बांहों में झूल गयी
ऊंचा पर्वत भी प्यासा था
धरती पर आकर भूल गयी
तू केवल मेरा पानी रख
घर फूटता है तो फूटने दे
परदेस में जब जाना ही है
घर छूटता है तो छूटने दे

जितना भी जिये हम खूब जिये
मरकर भी नहीं जिद छोड़ेंगे
जन्नत में खुदा के बतलाये
हर-एक नियम को तोड़ेंगे
जो पाप किया भरपूर किया
यम कूटता है तो कूटने दे
परदेस में जब जाना ही है
घर छूटता है तो छूटने दे

—संतोष आनन्द

—सी-११, मिंटो रोड कॉम्प्लैक्स,
नयी दिल्ली-११०००२

"लोग तुम्हारी बहुत तारीफ करते हैं। कहते हैं, तुम दब्बू हो, जोरू के गुलाम बनकर हर समय उसका हुक्म बजा लाते हो। क्या यह सच है ?"

मित्र ने पांव पटकते हुए कहा, "अगर मेरी बीवी इस समय यहां होती तो...तो तुम्हारी हिम्मत न पड़ती यह सब कहने की, हां !"

★

"अगर मैं शादी कर लूं, तो न जाने कितने लोग सिर पीटेंगे, कितने बरबाद हो जाएंगे, कितने दुःखी होंगे, कितने आत्महत्या कर लेंगे...और कितने पागल हो जाएंगे ?"

"हाय राम, तुम कितने लोगों से शादी करने की सोच रही हो !" तपाक से दूसरी सहेली ने कहा।

★

वह अपने प्रेमी के साथ तेरहवीं मंजिल के अपने कमरे में थी कि तभी किसी ने कमरे की घंटी बजायी, वह जान गयी कि उसका पति आया है। वह घबराकर प्रेमी से बोली, "तुम जल्दी से पीछे की खिड़की से कूद जाओ।"

प्रेमी जब बगलें झांकने लगा, तब वह बोली, "प्लीज, जल्दी करो न !"

"अरे, तुम समझती क्यों नहीं, हम तेरहवीं मंजिल पर हैं।"

वह उसे खिड़की की ओर धकेलते हुए बोली, "ओहो, फिर वही तेरह का वहम ! मेरी जान पर बनी हुई है और तुम्हें तेरह की पड़ी है !"

★

साइकिल की दुकान का मालिक अपनी पत्नी को दुकान पर बिठा गया और कह गया, "जो भी ग्राहक आये, उससे ठीक तरह से पेश आना। मैं एक घंटे में ही लौट आऊंगा।"

बाद में एक व्यक्ति, जिसकी बांह से खून बह रहा था और दांत टूटा हुआ था, आया और टूटी साइकिल पटकते हुए बोला, "कहां है साइकिलवाला?

मांग

पंडित ने विवाह के समय
दूल्हे से कहा--
"वत्स,
यह जब भी सिर उठाएगी
तुमको हमेशा मांग नजर आएगी"

सम्मान

उन्हें सम्मान में चादर ओढ़ाना
चाहते थे सभी
वे चिल्ला रहे थे--
"जिंदा हूं मैं तो अभी"

मुझसे कहा था, दो साल की गारंटी है, मुफ्त मरम्मत होगी... यह साइकिल है और अस्पताल का बिल भी।"

साइकिल को एक ओर रखते हुए वह बोली, "तुम्हारी मरम्मत भी कर देते, भाई। काहे को बाहर से हाथ-पांव तुड़वा-कर आये हो... हमें मौका दिया होता।"

—स. प्री

☆

"डॉक्टर साहब, मेरे दोनों कानों में झनझनाहट-सी होती रहती है चौबीसों घंटे।"

"तो मैं क्या करूं? मैं चिकित्सा-विज्ञान का डॉक्टर तो हूं नहीं, मैंने संगीत विषय में डॉक्टरेट ली है।"

"इसीलिए तो आपके पास आयी हूं। जो डॉक्टर मेरा इलाज कर रहे हैं, वह रोज मुझसे पूछते हैं कि यह झनझनाहट किस प्रकार की है? अब यह तो आप ही बता सकते हैं कि यह झनझनाहट किस राग की है।"

★

एक मरीज अपने बुजुर्ग डॉक्टर के बिलों से तंग आ चुका था। एक दिन वह डॉक्टर के पास पहुंचा, तो उसने देखा कि वह आध्यात्मिक चर्चा के मूड में है। बातों-बातों में उन्होंने मरीज से कहा, "जानते हो, स्वर्ग पाने के लिए मनुष्य को क्या-क्या करना चाहिए!"

"पहले तो आपसे इलाज करवाना चाहिए और फिर, बिलों का भुगतान तो उसे स्वर्ग पहुंचा ही देगा।"

★

श्रीमानजी एक हौजरी की दुकान पर पहुंचे और वहां खड़ी सेल्स-गर्ल को देख-कर कुछ चकरा-से गये। बहुत ही सकुचाते हुए बोले, "हमें कुछ बनियानें व पत्नी के लिए भी ... दिखलाइएगा।"

उनके साइज के अनुसार बनियानें दिखाते हुए सेल्स-गर्ल ने पूछा, "पत्नी के लिए किस नंबर की? कृपया, साइज बताइए।"

इस पर तो श्रीमानजी बहुत ही शरमा गये और बोले, "साइज तो मुझे नहीं मालूम। हां, ... आप ही की जैसी हैं।"

यह सुनना था कि अब शरमाने की बारी सेल्स-गर्ल की थी।

—रामस्वरूप पाठक

हंसिकाएं

भविष्य-दृष्टा

बच्चे देश का भविष्य होते हैं
इसीलिए वे आरंभ से रोते हैं

पर्याय

नेताओं के लिए
देश की सेवा का बीड़ा भी
पान का बीड़ा हो जाता है
इसीलिए हर कोई उन्हें चूना लगाता है

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

सी १११ न्यू राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली

गुजराती हास्य-व्यंग्य

हमारे एक दोस्त हैं—नटुभाई। वे हमेशा किसी न किसी बीमारी से जुड़े रहते हैं। शहर में जब भी किसी नयी बीमारी का आगमन होता है, तब उसका सर्वप्रथम उत्साहपूर्ण स्वागत हमारे यह दोस्त ही करते हैं। कोई खास बीमारी न हो, तब भी जुकाम, खांसी, सिर-दर्द आदि बीमारियां तो उनसे लिपटी ही रहती हैं। थॉमस हार्डी ने अपने एक उपन्यास में लिखा है कि, 'दुःख ही जिंदगी का स्थायी हिस्सा है, सुख तो केवल आकस्मिक घटना है।' उसी तरह बीमारी ही हमारे दोस्त की जिंदगी का स्थायी हिस्सा है, आरोग्य तो उनके जीवन की आकस्मिक घटना-सा ही होता है।

नटुभाई के ऐसे कमजोर स्वास्थ्य की वजह से सबको उन पर दया आती है, 'बेचारे नटुभाई; देह से कोई लेन-देन ही नहीं है,' यह कहकर उनके स्वजन उनके प्रति गहरी हमदर्दी प्रकट करते हैं।

● रतिलाल बोरीसागर

केवल मुझे उनसे ईर्ष्या होती है। सदैव बीमार रहनेवाले हमारे यह परम दोस्त जो सुख-सुविधा और ऐशो-आराम भोगते हैं, यह देखते हुए वे सहानुभूति के नहीं, बल्कि ईर्ष्या के पात्र हैं। मैं उनसे अक्सर कहता रहता हूं, 'मेरे अच्छे स्वास्थ्य के बदले में यदि आपकी बीमारी मिल जाए, तब मैं पलभर का भी विलंब किये बिना यह बीमारी अपना लूं।'

परापूर्व से चले आनेवाले कुछ विचार हमारे चित्त पर इतने दृढ़ांकित हो गये रहते हैं कि उन विचारों के सत्यासत्य पर हम कभी विचार ही नहीं करते। 'बीमारी अच्छी चीज नहीं है,' 'ग्रह-दशा खराब हो, तभी बीमारी आती है'—ऐसे विचार हमारे चित्त पर दृढ़ हो गये हैं। वस्तुतः यदि बीमारी अत्यंत कष्टपूर्ण और जीवन को जोखिम में डालनेवाली न हो, तब फिर वह स्वर्ग का सुख देनेवाली है, इसमें जरा भी संदेह नहीं। यह बात गलत है कि ग्रह-दशा अच्छी न हो तभी बीमारी आती है।

'जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ', यह पंक्ति भक्ति के लिए कितनी सही है, यह तो भक्तजन ही जानें; किंतु बीमारी के लिए वह बिलकुल सही है। बीमारी का सुख, केवल बिछौने में पड़े रहनेवाले बीमार लोग ही जानते हैं।

दरअसल जिसके नसीब में राजयोग हो, वही बीमार होता है। हमारा रोजाना का जीवन कितनी तकलीफों से भरा होता है। सुबह उठे नहीं कि काली मजदूरी हमारे सिर पर लिख दी जाती है। किंतु बीमार हुए नहीं कि सारी परिस्थिति पलट जाती है। किसी संत-महात्मा की तरह बिछौने में लेटे-लेटे स्वर्गीय सुख भोगने का अवसर आपके लिए आ पहुंचता है।

बीमारी में आप एकदम 'वी. आई. पी.' हो जाते हैं। रोजमर्रा के जीवन में आपके अस्तित्व की कोई सुध भी नहीं लेता, लेकिन आप बीमार हैं, यह समाचार चलते हुए भी बीमारी दीर्घायु लेकर आती है। ऐसी खबर मिल गयी कि तुरत ही, 'सभी रास्ते रोम की ओर ही जाते थे,' —की तरह सभी रास्ते आपके घर की ओर जाने लगते हैं। एक के बाद एक आप्तजन आपकी खबर पूछने के लिए आते हैं। हमारा कोई अस्तित्व है इस संसार में, ऐसा एहसास होने लगता है, आपको।

हमारे एक स्नेही एक दफा बीमार पड़ गये, तब उनके एक दोस्त ने, 'जरूरत हो तो आधी रात को भी उठा देना,' कहकर सांत्वना दी और हमारे स्नेही ने उस भावार्थ का शब्दार्थ में अमल भी कर दिया। एक दिन रात के डेढ़ बजे अपने बेटे को भेजकर कहलवाया कि इसी वक्त आ जाइए। वह बेचारे आंखें मलते हुए खड़े हो गये। कुछ गंभीर मामला होगा, यह सोचकर उन्होंने बड़ी मुश्किल से पूछा, "रमण भाई को ..." इतना बोलते हुए उनका गला भर आया। रुग्ण पिता के पुत्र ने कहा, "नहीं, नहीं, कोई चिंता की बात नहीं। यह तो पिताजी को नींद नहीं आ रही इसलिए वह आपको

बातें करने के लिए बुलाते हैं। मुझसे बोले कि, 'महीपत भाई ने कहा है कि, आधी रात को भी उठा देना', सो मैं चला आया।"

महीपत भाई तो बेचारे हैरान होकर रह गये। "सुबह आ जाऊं तो ? मुझे भी आज कुछ बेचैनी सी महसूस रही है।" असत्य का सहारा लेकर भी उन्होंने इस आपत्ति से छूटने की जी-जान से कोशिश की। लेकिन बेटा बेहद आज्ञाकारी था। महीपतराय को ले जाने के लिए कृत-संकल्प था, वह। 'मैं मना करूंगा, तब भी यह पहलवान-सा छोकरा मुझे उठाकर ले जाएगा,' यह सोचकर महीपत भाई चलने को तैयार हुए और पत्नी से भी प्यारी नींद के वियोग का खेद प्रकट करते हुए, उसके साथ चल दिये। फिर उन्होंने किसी बीमार को 'आधी रात को भी बुलवा लेने' का आश्वासन नहीं दिया।

यह बात सही है कि बीमारी स्वर्ग का सुख देनेवाली है, लेकिन फिर भी यह सुख पात्रता के अनुसार मिलता है। हर बीमार आदमी को यह सुख एक-सा नहीं मिलता। बीमारी जीवन को चैन से भोगने का स्वर्ण अवसर है तथापि बीमार पड़नेवाले की पात्रता न हो, तब वह बीमारी का सुख नहीं भोग सकता। गीता में मनुष्य-प्रकृति के सत्व, रजस और तमस, ये तीन गुण बतलाये गये हैं। रुग्णजन भी इसी तरह सत्व, रजस और तमस, इन तीन गुणोंवाले होते हैं। जिस रुग्णजन में जिस गुण का प्राधान्य है, तदनुसार उसे बीमारी का सुख मिलता है।

सत्वगुणी रुग्णजन साधु पुरुष-जैसे होते हैं। सूर्य जिस प्रकार उदय और अस्त, दोनों समय लाल रंग का होता है, उसी तरह ये सत्वगुणी रुग्णजन चंगे हों या बीमार, दोनों स्थिति में समत्ववाले होते हैं। बीमारी की पीड़ा गत जन्मों के कर्मों का परिणाम है, ऐसी दृढ प्रतीति होती है, उन्हें। इस वजह, बिना किसी शिकायत के वे चुपचाप पीड़ा सहन किये जाते हैं। संक्षेप में, बीमारी मिले किंतु बीमारी का सुख न भोग सकें, ऐसे 'दुर्भागी' जीव इस श्रेणी में आते हैं।

बीमारी को सही मायने में भोगते हैं—रजोगुणी रुग्णजन। बीमारी के समय का उनका ठाट-बाट कुछ और ही होता है। मयूरासन पर बैठा हुआ शाहजहां कैसा लगता होगा, यह तो पता नहीं, लेकिन बीमारी की शय्या पर लेटा हुआ रुग्णजन जिस तरह शोभा देता है, उससे बढ़कर शोभा निस्संदेह शाहजहां की नहीं हो सकती। भिन्न-भिन्न प्रदेशों में होकर बहती हुई गंगा का वर्णन करते समय काका कालेलकर ने कहा है, 'गंगा के हर एक स्वरूप का सौंदर्य अलग है, हर एक का माहात्म्य मिजाज अलग है, हर एक का अलग है।' ठीक इसी प्रकार रजोगुणी रुग्णजन बिछौने में लेटे हों, सिरहाने टेक कर बैठे हुए खीर पी रहे हों, फल

रहे हों, आराम कुरसी में लेटे-लेटे आराम फरमा रहे हों, पत्नी, पुत्र या पौत्र के कंधे पर हाथ रखकर धीमे कदमों से चल रहे हों—उनके ये सारे स्वरूप, हैं अलग-अलग। हर एक का सौंदर्य अलग, हर एक का मिजाज अलग, हर एक का माहात्म्य अलग। ऐसे रुग्णजन के लिए बीमारी उनकी प्रियतमा-सी प्यारी होती है। उससे छूटने का उनका दिल ही नहीं होता। प्रियतमा के सौंदर्य का, स्वभाव का वर्णन करते हुए आदमी थकता नहीं। उसी तरह ऐसे रजोगुणी रुग्णजन, जो कोई उनका हाल पूछने के लिए आता है, उनके पास; अपनी बीमारी का अत्यंत सूक्ष्मता से वर्णन करते हैं, "शुरू-शुरू में तो पता ही नहीं था। सामान्य सुस्ती, थकान बस! अपने को क्या पता कि यकायक इतना बढ़ जाएगा? यह तो अच्छा हुआ कि चक्कर आ गये, तब सुरेशभाई साथ थे, वरना ...।" इस तरह उनका बीमारी-वर्णन चलता है। हाल पूछने के लिए आया हुआ आदमी मजबूत दिल का न हो, तब उनके श्रीमुख से बीमारी का ऐसा लंबा वर्णन सुनकर आधा बीमार होकर ही घर लौटे।

तमोगुणी रुग्णजन बीमारी के आते ही अकुला उठते हैं। बीमारी के समय हुक्म तो रजोगुणी रुग्णजन भी चलाते हैं, परंतु उनकी हुक्म करने की अदा में राजसी गौरव होता है, जबकि तमोगुणी रुग्णजन की वाणी कालाग्नि-सी दुस्सह होती है, जैसे—"अरे, सब कहां मर गये? तुम्हारा बाप यहां मरने को पड़ा है ग्रौर बहू-बेटा घूमने के लिए रवाना हो गये? अभी शादी हुई है, तब क्या हुआ? उन्हें पता है कि यह बूढ़ा जिंदा रह गया, तभी इस साल तुम्हारी शादी हो सकी, वरना बात अगले साल तक ठहर जाती। मेरी दवाई को तो कोई पूछो, मैं यहां मर रहा हूं ग्रौर तुम सब लोग चैन की बंसी बजा रहे हो!"

इस तरह उनकी प्रतापी वाणी का प्रवाह अनवरत रूप से बहता रहता है। उनके सगे-संबंधी बेचारे आकुल-व्याकुल होकर उनकी सेवा-सुश्रूषा करते हैं, तथापि ऐसे रुग्णजन कुछ विवेचकों की तरह दुराराध्य होते हैं। उनका प्रकोप कब भड़क उठेगा, कोई नहीं जानता ग्रौर फिर उन्हें प्रसन्न करना दुष्कर ही नहीं, करीब अशक्य-सा होता है।

'जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ' यह पंक्ति भक्ति के लिए कितनी सही है, यह तो भक्तजन ही जानें; किंतु बीमारी के लिए वह बिलकुल सही है। बीमारी का सुख, केवल बिछौने में पड़े रहनेवाले बीमार लोग ही जानते हैं। ईश्वर आपको अपनी उम्र के दौरान परम सुख प्रदान करनेवाली एकाध बीमारी दे, यही है मेरी शुभेच्छा!

—अनु. : सुशीला जोशी

भविष्य के लिए सबसे अच्छा प्रबंध, वर्तमान का यथाशक्य सदुपयोग है।

—ह्वाइटिंग

तनाव से मुक्ति

स्कूल फोबिया

• डॉ. सतीश मलिक

मुरारीलाल शर्मा, विशाखापट्टनम : तीन वर्ष का मेरा एक ही पुत्र है। अच्छी शिक्षा देना चाहते हैं। स्कूल जाने के लिए पहले वह जितना उत्सुक था, नियमित दो-तीन दिन जाने के बाद, उतना ही निराश हो गया है। एक सप्ताह बाद ही वह सुबह उठते रट लगाने लगता है, "मुझे स्कूल मत भेजो। स्कूल कदापि नहीं जाना चाहता।" डॉक्टर साहब ! कुछ उपाय सुझायें। क्या उससे जबरदस्ती करें या फिर उसका कोई मनोवैज्ञानिक हल है ?

आपके पुत्र की समस्या को 'स्कूल फोबिया' (School Phobia) कहते हैं। इसके कारण स्कूल और घर दोनों में हो सकते हैं। मां का पुत्र से अत्यधिक लगाव, स्कूल में अत्यधिक अनुशासन-जैसे कारण भी हो सकते हैं। स्कूल में जाकर कक्षा की अध्यापिका से मिलें। देखें, किस प्रकार का वातावरण है। कई बार पढ़ाई का भारी बोझ एकदम डाल दिया जाता है। प्रारंभ में केवल खेल-कूद व थोड़े समय के लिए ही स्कूल भेजें। मां भी आसपास रहे। फिर धीरे-धीरे स्कूल में रहने का समय बढ़ायें व मां का साथ जाना बंद करें। इस प्रकार आप उसके 'स्कूल फोबिया' का मनोवैज्ञानिक हल कर सकेंगे।

स्मरण-शक्ति क्षीण

मोईनुद्दीन जिलानी, रोहतास (बिहार) : मेरा दस साल का छोटा भाई डेढ़ वर्ष की उम्र से ही दौरों का शिकार है। डेढ़ वर्ष की उम्र में दस्त व बुखार होने के बाद वह दुबला-पतला हो गया, फिर एक दिन दौरे के साथ दाहिना हाथ व पैर भी संवेदनहीन हो गया। अब महीने में एक बार दौरा पड़ जाता है। स्मरण-शक्ति क्षीण हो गयी है। दौरे से पूर्व सिर में दर्द होता है। बाद में सोने की कोशिश करता है। हाथ-पैर ऐंठ जाते हैं व आंखें तन जाती हैं। डॉक्टर साहब ! कोई जीवनदायी उपाय सुझायें।

डेढ़ वर्ष की उम्र में दस्तों से शरीर में पानी व पौष्टिक आहार की कमी हो गयी। यह उन दस्तों व बुखार का सही इलाज न करने के कारण हुआ। इसका बुरा असर दिमाग पर पड़ा व मिरगी के दौरे शुरू हो गये।

घबराइए नहीं—मिरगी के दौरों पर सही इलाज द्वारा काबू पाया जा सकता है। जैसे ही दौरे सही होंगे, स्मरण-शक्ति भी बढ़ेगी।

धूल पचाने का साधन

कंवर्लसिंह राठौर, बिलासपुर (म.प्र.): मैं सीमेंट फैक्ट्री में वैल्डर के पद पर कार्यरत हूं। यहां के कामगार साथियों का कहना है कि यहां की धूल पचाने के लिए शराब का सेवन आवश्यक है। क्या यह सच है या कोई और उपाय है?

आपके कामगार साथी एक और शराबी साथी चाहते हैं। शराब का सेवन पाचन-शक्ति, जिगर आदि सबके लिए हानिकारक है, कामगार व्यक्ति को मनोरंजन के व आराम के सीधे-सादे साधन ढूंढ़ने चाहिए।

वही पागलपन

क. ख. ग., फैजाबाद: ३२ वर्ष की विवाहित महिला हूं। १० वर्ष से 'हार्ट फेल' का डर था। किसी ने कहा, वहम करोगी तो पागल हो जाओगी। बस, पहला डर चला गया, दूसरा डर आ गया, पागलपन का। समय से वह डर भूली, तब एक माह पूर्व किसी ने कहा कि वह अपने परिवार को उससे दूर रखते थे, ताकि पागलपन में कहीं कुछ कर न बैठूं। अब फिर वही पागलपन का विचार व पागलखाने का चित्र दिमाग में घूमता रहता है। डॉक्टर साहब, कृपया शीघ्र कोई उपचार सुझायें।

आपको न तो 'हार्ट फेल' का पता है, न पागलपन का। वास्तव में 'हार्ट फेल' यूं नहीं होता। दिल की किसी बीमारी के बाद जब दिल कमजोर हो जाता है, तब ही हृदय काम करना बंद कर देता है। आपको दिल की कोई बीमारी ही नहीं है। न ही अपने मन में सोचने से कोई पागल हो सकता है। पागलपन के भी कई कारण होते हैं, कुछ बचपन के भी हो सकते हैं। केवल किसी के कहने से या उसके भय से कोई पागल नहीं हो सकता। आजकल मनोचिकित्सा द्वारा जनरल अस्पताल में ही इलाज हो जाता है।

असल में आपकी बीमारी है—डर, व दूसरों के बहकावे में अपने ऊपर उदासीनता ग्रहण कर लेना। जब भी कोई मिले या आपसे बीमारी की बात करे, उससे आप पलटकर उसी का स्वास्थ्य पूछें, दबें नहीं। अपना साथ भी स्वस्थ व हंसमुख (Pleasant) लोगों से रखें। जिंदगी के सकारात्मक पक्ष को उभारें। आप मनोबल बढ़ानेवली पुस्तकें पढ़ें, जैसे नॉरमन विनसेंट पीले की पुस्तक 'पावर ऑव पॉजिटिव थिंकिंग एंड पॉजिटिव मेंटल एटिट्यूड'।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। —संपादक

डरावने सपने

अ. व., औरंगाबाद : मेरा बड़ा भाई विदेश से लौटा तो उसे शराब की लत पड़ गयी। उसकी पत्नी ने आखिर तंग आकर आत्महत्या कर ली। भाई झूठ भी बोलता है और कहीं पर भी ठहरकर काम नहीं करता। मेरा भतीजा अब मेरे ही पास सोता है। मैं उसे बहुत प्यार करता हूं। स्वयं पिताजी से भी मेरे विचार नहीं मिलते। मैं एक आदर्शवादी व्यक्ति हूं, धर्म, जाति और देश के लिए जीवन अर्पित कर दूं, ऐसे मेरे विचार हैं। परंतु आजकल रात को डरावने सपने आते हैं और दिन में ऊल-जलूल विचार। सोच में सूखता जा रहा हूं। सुझाव दें।

निस्संदेह आप तनावपूर्ण मानसिक स्थिति में हैं। आपका तनाव एक ओर कर्त्तव्य व आदर्श तथा दूसरी ओर अपने जीवन के सुख को लेकर हुआ है। शराब छुड़ाने के आजकल आधुनिक ढंग—दवाई इत्यादि भी हैं। 'डि एडिक्शन यूनिट' (De-addiction unit) में ऐसा संभव है। शराब छोड़ेगा तो झूठ बोलना भी छोड़ देगा, भतीजे का तो आपको ही तब तक ध्यान करना पड़ेगा। अपने सुख के लिए शादी करना बुरा नहीं है। जीवन केवल आदर्शों द्वारा ही नहीं जिया जा सकता ! व्यावहारिकता भी आवश्यक है। हां, अपनी समस्याओं से लड़कीवालों को पहले से ही परिचित करा दें। ●

घरेलू उपचार

कोष्ठ-बद्धता (कब्जियत)

कब्जियत का असली कारण भोजन का पाचन न होना है। वैसे विभिन्न रोगों में भी कब्ज का उपद्रव बन जाता है, किंतु जो लोग आहार-विहार का ध्यान नहीं रखते, शारीरिक परिश्रम नहीं करते, चिंता, भय, शोक, चाय और कॉफी का अधिक सेवन करते हैं, उनको प्राय: कब्ज की शिकायत बनी रहती है। निम्न उपाय करने से कब्ज दूर होती है :

(१)—एक चम्मच पिसी सौंफ रात सोते समय गरम पानी के साथ लें।

(२)—एक प्याला दूध, एक प्याला पानी, दो छुआरों के साथ उबालें, दूध शेष रहने पर रात में सोते समय लें।

(३)—एक बड़ा चम्मच इसबगोल की भूसी रात सोते समय गरम दूध के साथ सेवन करें।

(४)— ५ मुनक्के एक प्याला दूध में उबालकर लें।

(५)— एक प्याला दूध, आधा प्याला पानी, दो चम्मच सनाय की पत्ती डालकर उबालें, दूध शेष रहने पर छानकर यथारुचि चीनी डालकर रात को सोते समय लें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा,
बी-९/७, [illegible]नगर, दिल्ली-११००५१

गीदड़ों की रजाइयां: लखनऊ के नवाब

● उषा

खनऊ---अवध सल्तनत का मचलता हुआ दिल . . .

ह कमसिन हैं तो जिदें भी हैं
सिनी उनकी/अब इस बात पे मचले हैं
दर्दे जिगर देखेंगे'

र सभी अपने दिल को थामे हुए फिरते।

उनके नवाब-बादशाह एवं बेगमें भी ीब सरमस्त थीं। सनक सवार होते उन्हें पूरी करने की जिद बढ़ती जाती।

थिन दुलहन बनी

ाब वजीर आसफुद्दौला ने जानवरों का ायबघर बनवा रखा था। उन्हें वैसे ानवरों से लगाव भी था; अकसर वे अपने ी 'दलबदल' पर बैठकर घूमने निकला रते थे। सहसा उन्हें खयाल आया कि नका हाथी क्या कुंआरा ही रह जाएगा?

उसी दिन से हाथी के लिए किसी योग्य हथिनी की तलाश शुरू कर दी गयी और महावतों ने हाथ जोड़कर कहा, "माई बाप, 'दलबदल' के साथ तो बेगम साहिब की हथिनी 'बड़कनी' ही फबेगी।" आसफुद्दौला ने फौरन रिश्ते की बात छेड़ दी और देखते ही देखते शादी की तारीख भी मुकर्रिर हो गयी। 'बड़कनी' को उबटन लगाया गया, गुलाब जल मिले पानी से गुस्ल करवाया गया, इत्र मले गये और आंखों में सौ रुपये तोले का ममीरा लगवाया गया। फिर जो 'बड़कनी' का सोलह सिंगार किया गया, तो सब अश-अश कर उठे। 'बड़कनी' की

इतिहास गवाह है कि जब एक बार आसफुद्दौला तंगदस्त हुए थे और फौज की तनख्वाह बंटनी बंद हो गयी थी, तब बहू-बेगम ने गुड़िया के दहेज से रकम निकाली थी। आसफुद्दौला की पूरी फौज को दो बरस तक तनख्वाह उसी दहेज से दी गयी थी।

बारौठी में आसफुद्दौला १,२०० हाथी-बराती लेकर आये थे।

लखनऊ में एक अजीब हंगामा मच गया। बारह सौ डील-डौलवाले 'बरातियों' की कतार देखने सारा लखनऊ उमड़ पड़ा। उधर 'लड़की'-वालों ने भी मूंग की दाल नहीं खा रखी थी। डटकर सत्कार किया गया। पूरी 'बारात' को गन्ने और रोट खिलाये गये और 'बड़कनी' की विदा के समय दहेज भी दिया गया !

गुड़िया के दहेज से फौज पली

बहू बेगम भी बड़े ठस्से की बेगम थीं। आखिर नवाब शुजाउद्दौला की पटरानी थीं, कोई मजाक तो था नहीं। उनके दस्तरख्वान (खाने-पीने का सामान जिस पर परसा जाता है) के रोज का खर्च ४०० रुपये था। सन १७४५ में एक बार उन्हें अल्हड़ जवानी के दिनों में एक कमसिन जिद सूझी। बचपन में जिन गुड़ियों से वे खेला करती थीं, उन्हें उन्होंने संजोकर रखा था। फिर एक दिन उन्हें ना जाने कैसे याद आ गया, 'अरे हां, गुलाबो गुड़िया तो अभी तक कुंआरी ही है ?' फिर क्या था, किसी सजे-सजाये गुड्डे की तलाश हुई और जल्द ही शादी तय कर दी गयी। शादी के वक्त बाकायदा दहेज दिया गया और गुड्डे को बहू बेगम ने 'घर जवांई' बना डाला। इतिहास गवाह है कि जब एक बार आसफुद्दौला तंगदस्त हुए थे और फौज की तनख्वाह बटनी बंद हो गयी थी, तब बहू बेगम ने गुड़ियों के दहेज से रकम निकाली थी, आसफुद्दौला की पूरी फौज को दो बरस तक तनख्वाह उसी दहेज से दी गयी थी !

गीदड़ों को रजाइयां

बादशाह गाजीउद्दीन हैदर के भोलेपन का फायदा उनके मुंह लगे मुसाहिब उठाया करते थे। एक बार जब वे दौरे पर निकले तब उनके साथ चलता-फिरता एक छोटा-सा लखनऊ चल दिया था। किसी देहात के पास शाही शामियाने ताने गये और रात को वहीं जश्न मनाया गया। जब आस-पास के खेतों के गीदड़ रात को 'हुआं-हुआं' करके चिल्लाये, तब गाजीउद्दीन हैदर बोले, "भई, ये शोर कैसा ?"

उनके एक चापलूस मुसाहिब बोले, "हुजूरेवाली, सरदी के दिन हैं। ये बेचारे गीदड़ आपसे दरख्वास्त कर रहे हैं कि इन पर भी कुछ आपकी नजरेइनायत हो जाए, तो जाड़ा कट जाए।"

मुसाहिबों ने फिर तीन सौ रजाइयों की कीमत गाजीउद्दीन हैदर से वसूल की थी। रजाइयां गीदड़ों में तो खैर नहीं बंटीं पर यार लोगों के घर जरूर पहुंचीं। जब दूसरी रात भी गीदड़ चिल्लाये, तब गाजीउद्दीन हैदर बोले, "रजाइयां मिलने पर भी अब ये क्यों चिल्ला रहे हैं?" एक हजरत बोले, "आज ये आपका शुक्रिया अदा कर रहे हैं, हुजूर!" और दूसरे ही दिन उनका लश्कर डेरे-डंडे उखाड़कर आगे बढ़ लिया।

३० सेर घी रोज

गाजीउद्दीन हैदर को पराठे खाने का

बहुत शौक था। उनका बावर्ची हर रोज छह परांठे सेंकता, फी परांठा पांच सेर घी के हिसाब से ३० सेर घी रोज लेता था। यह देखकर वजीरे आला मौतमुद्दौला आगा मीर ने टांग अड़ायी थी और पांच सेर फी परांठे की जगह उसे सिर्फ एक सेर फी परांठा घी दिया गया।

बावर्ची ने वैसा ही परांठा बना दिया। जब गाजीउद्दीन ने परांठों में फर्क पाया, तब बावर्ची को तलब किया

नवाब आसफुद्दौला

गया। उसने हाथ जोड़कर सब बात बतला दी। बादशाह ने फौरन ही अपने प्रधानमंत्री को बुलवाया और उनके दस-बीस थप्पड़ और घूंसे जड़ दिये। कहा, "तुम तो सारी सल्तनत को लूटते हो और जो भी कुछ थोड़ा बहुत घी मेरे लिए यह बावर्ची लेता है, वह भी तुम्हें गवारा नहीं?"

खयाली बच्चे का जन्म

उनके बाद उनके बेटे बादशाह नसीरुद्दीन हैदर भी कम 'सिरफिरे' नहीं निकले। जनाब के हरम में १,२०० रखैलें थीं, जिन्हें 'जलसे वालियां' कहा जाता था। जब उन्हें सुबह जगाया जाता, तब वे बड़े नखरे के बाद उठते थे। उनकी खास खवास धनियां मेहरी के अलावा उन्हें कोई जगाने की जुरअत नहीं कर सकता था। धनिया कुछ खूबसूरत कनीजों को लेकर उनकी ख्वाबगाह में जाती। बांदियों के हाथ में महकते फूलों के गजरे, सोने की गुलाब-

नवाब वाजिदअली शाह

पाश, चंवर, इत्रदान और मिली तरह के साज होते। इन सबसे नसीरुद्दीन हैदर की नींद उचाटी जाती और वे सौ नखरों के बाद उठते। उठते वक्त वे एक ताजा कटी फूल की टहनी से धनिया मेहरी को मारते। धनिया मेहरी के सुझाव पर ही उन्होंने बाद में टहनी की जगह मोती-जड़ी छड़ी से मारना शुरू कर दिया और रोज उस मोती-जड़ी छड़ी को लेकर धनिया मेहरी अपने घर वापस आ जाती।

नसीरुद्दीन हैदर में औरतों के साथ रहते-रहते इस हद तक जनानापन आ गया था कि औरतों-जैसा ही लिबास पहनने लगे और वैसे ही मटक-मटककर बातें करते। यहां तक कि इमामों के जन्म से संबंधित समारोहों में वे खुद गर्भवती स्त्री बनकर जच्चाखाने में बैठते और हाव-भाव से प्रसव-पीड़ा प्रकट करते, और फिर एक खयाली बच्चे को जन्म देते।

अलबेली तमोलिन के भाग्य

बाद में जब अमजद अलीशाह गद्दी पर आये, तब उन्होंने भी कमसिन जिदों के नमूने पेश किये। फरवरी, १८४६ के एक शुभ दिन जब एक कुंजड़ी सब्जी लेकर महल में घुसी, तब जनाब ने उसी दम उससे शादी कर ली और उसका नाम सुलतान महल रख दिया। कुछ दिन बाद १६ अगस्त, १८४६ को आपकी नजर एक अलबेली तमोलिन पर पड़ गयी और उसे भी इम्तयाजुन्निसा बेगम बनाकर महलों में ला बैठाया।

वैसे उनसे पहले बादशाह मुहम्मद अली शाह के मुंहलगे नाई अजीमुल्ला खां ने भी एक करिश्मा बादशाह को बहका कर किया था। मुहम्मदअली शाह लकवे के मारे थे और उनके फरमाबरदार हज्जाम अजीमुल्ला खां ही उनकी तीमारदारी करते थे। एक दिन उन्होंने एक पुण्य कार्य बादशाह को बतलाया और कर भी दिखाया। २७ मार्च, १८३९ को, अजीमुल्ला खां साहब ने जामनियां बाग में स्थित इमामबाड़े के हौज को साफ करके सैकड़ों भिश्तियों द्वारा पानी से भरवाया और फिर उसमें सैकड़ों बोरे बताशे डाले गये। जब हौज शरबते-कंद से तैयार हो गया, तब मुनादी करवा दी कि जिसमें जितना बूता हो शरबत भरकर अपने घर ले जाए। पूरा लखनऊ ही बालटियां-लोटे लेकर उस हौज पर टूट पड़ा, और देखते ही देखते वह खाली कर दिया गया।

निराला शाह

वाजिद अली शाह की तो बात ही निराली थीं। जो बात की, खुदा की कसम, लाजवाब की। उनके तो किस्सों की फहरिस्त बनायी जाए तो शाम हो जाए। कौन-सा शौक था, जिसमें वे दखल नहीं रखते थे। जब कबूतरों का शौक उभरा, तब उनके यहां सवा लाख कबूतर हुआ करते थे। एक रेशम-परे कबूतर का जोड़ा उन्होंने २४ हजार रुपयों में खरीदा था। जब वे कलकत्ता पहुंचे थे, तब वहां ऐसा उम्दा 'ज़ू' बनवाया कि कोई जानवर नहीं छोड़ा। यहां तक कि सिर्फ इस खयाल से कि कोई जानवर छूट नहीं जाए, उन्होंने दो गधे भी चारागाह में लाकर छुड़वा दिये थे!

वैसे जब वाजिदअली शाह को गुस्सा आता था, तब भी वे काम अनूठे ही किया करते थे। जब जहांनी नौकरानी की बेटी गुलबदन पर उनकी निगाह अटकी, तब उन्होंने उसे अपने हरकारे मुहम्मदअली खां ख्वाजासरा द्वारा अपने परीखाने के आंगन में ला बुलाया, उसका नाम माशूक परी

नवाब गाजीउद्दीन हैदर

नवाब नसीरुद्दीन हैदर

रखा गया और उसे गानें बजाने की तालीम भी दिलवायी गयी। इसी दौरान वाजिद अली शाह ने उससे रिश्ता कर लिया और जब वह मां बनने लगी, तब उसे महलों में ले जाकर नवाब माशूक महल साहिबा बना दिया। उसके चांद-जैसे बेटे का नाम रखा गया मिर्जा, फरीदूंकद्र बहादुर।

फिर वाजिदअली शाह ने अपना सिरफिरा सवाल किया कि तुम हमें अपने नाखून काटकर बतौर यादगार के भिजवा दो। इस बात का जवाब माशूक महल ने यह दिया था, ' नाखून भी कोई मांगने की चीज है? आपने ये हज्जाम का काम कब से सीखा?' इस बात से वाजिदअली शाह चिढ़ गये। इसका जिक्र उन्होंने अपनी किताब 'हुज्ने अख्तर' में यूं किया है:

दिया मल्का-ए-मुल्क ने ये पयाम
कि मेरा है दुनिया में माशूक नाम
मंगा उनके नाखूं जो करती हों प्यार
वो भेजें जो हों आपकी राजदार
जो मांगें हैं नाखून, नहीं हैं वो अब
ये हज्जाम का काम सीखा है कब?

वाजिदअली शाह ने मां-बेटी की तनख्वाहें काटना शुरू कर दिया। मिर्जा फरीदूंकद्र ने अपनी मां के कहने में आकर दिल्ली जाकर अंगरेजों से अपने वालिद वाजिदअली शाह की शिकायत की। यह सुनकर वाजिदअली शाह चरागपा (गुस्सा) हो गये और उन्होंने माशूक महल से रिश्ता ही तोड़ डाला। यही नहीं. यहां तक कि माशूक महल के लिए जो कभी आलीशान कोठी बनवायी थी, उसे मटिया-मेट करके उसी जगह एक नयी कोठी बन-वायी—'फतह मंजिल'।'

वाजिदअली शाह को फिर एक बात और भी सूझी। उन्होंने अपने वजीर को हुक्म दिया "आखिर थी तो वह नौकरानी ही। मियां! ऐसा करो कि 'फतह मंजिल' पर एक जोड़ी तबला और एक सारंगी और रखवा दो, जिससे जाहिर रहे कि यहां एक नौकरानी कभी रहा करती थी।'

—एफ-४८, ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-११००१६

फ्रांस में यदि एक न्यायाधीश ने मृत अभियुक्त के शव को ही फांसी पर लटकाये जाने का आदेश दिया, तो जरमनी में एक न्यायाधीश ने फांसी पर चढ़ाये गये निर्दोष व्यक्ति का कंकाल अपनी कुरसी के पास टंगवा लिया, ताकि दोबारा गलती न हो—अदालतों के कुछ अजीब फैसले

सिरफिरी अदालतें और उनके मुकदमे

• डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

दुनिया की हर अदालत एक ऐसी जगह समझी जाती है, जो निष्पक्ष है और पवित्र है। इन अदालतों में बैठनेवाले न्यायाधीश को परमेश्वर के समान माना जाता है, जो तराजू के पलड़ों की तरह सच और झूठ का न्याय करता है। किंतु, आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि दुनिया में ऐसी कुछ अदालतें और दंडविधान भी रहे हैं, जिनके किस्से पढ़कर हंसी आती है और उनके न्याय पर आश्चर्य होता है। फिर भी, ये सच्चे किस्से विदेशी अदालतों, न्यायाधीशों और न्याय मांगनेवालों के 'सनकीपन' का नमूना तो हैं ही।

मृत व्यक्ति पर मुकदमा

अदालतों में अभियुक्त को पेश करके उस पर मुकदमा चलाना, उसे सजा सुनाना और फिर जेल में बंद करना या फांसी देना एक सहज प्रक्रिया है। किंतु सनकीपन की मिसाल तो तब कायम हुई, जब अदालत में मृत व्यक्ति पर मुकदमा चला। फ्रांस के दसवें लुई सम्राट का वित्त मंत्री ईमानदार माना जाता था। किंतु, जब सम्राट को पता चला कि उसने राज्य के कोषागार का बहुत-सा धन हड़प लिया है, तो उस पर मुकदमा चलाया गया। इसी बीच सहज बीमारी के कारण वित्त मंत्री की मृत्यु हो गयी। किंतु, न्यायाधीश ने कहा कि मुकदमा नहीं रुक सकता। अदालत अपना काम पूरा करेगी। चुनांचे मुकदमा बिना अभियुक्त की उपस्थिति के ही चलता रहा। अंत में न्यायाधीश ने फैसला सुनाया कि अभियुक्त को फांसी की सजा दी जा रही है। बचाव पक्ष के वकील ने बताया कि अभियुक्त तो मर चुका है। लेकिन न्यायाधीश ने उसकी एक न सुनी।

वह अपने फैसले को पूरा कराने की जिद पर अड़ गया। आखिर वित्त मंत्री के शव को कब्र से निकाला गया। उसे फांसी के तख्ते पर ले जा कर जल्लाद ने बाकायदा फांसी लगा दी।

निर्दोष व्यक्ति को फांसी

यह उदाहरण जरमनी का है। वहां की अदालत में ग्रोसवाल्ड नामक एक व्यक्ति पर मुकदमा चल रहा था। उसका अपराध यह था कि उसने अपने मित्र की हत्या की थी। आखिर उसे मौत की सजा सुनायी गयी और फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। एक साल बाद पता चला कि हत्यारा ग्रोसवाल्ड नहीं, बल्कि एक अन्य व्यक्ति था।

अस्तु, न्यायाधीश ने हुक्म दिया कि ग्रोसवाल्ड को निर्दोष घोषित करने के लिए अदालत में पेश किया जाए। लेकिन, ग्रोसवाल्ड तो था नहीं। आखिर उसकी कब्र खोदी गयी और उसकी हड्डियों को जोड़कर उसका कंकाल बनाकर अदालत में पेश किया गया। न्यायाधीश ने उसे न सिर्फ निर्दोष घोषित किया बल्कि उस कंकाल को अपनी कुरसी के पास लटकवा दिया, ताकि भविष्य के न्यायाधीश यह याद रखें कि बिना सोचे-समझे फैसला करने का क्या फल होता है?

हड्डियां पिसवा दीं

लेकिन, एक न्यायाधीश ने तो सिरफिरेपन की हद ही कर दी। उसकी अदालत में सर रॉबर्ट लोगन का मुकदमा चल रहा

था। रॉबर्ट लोगन पर जेम्स छठवें का अपहरण करने का अभियोग था। इस बीच राबर्ट लोगन की मृत्यु हो गयी। मुकदमा छह वर्ष तक चलता रहा। अंत में न्यायाधीश ने उसे फांसी की सजा सुनायी। उसकी सजा को कार्यान्वित करने के लिए कब्र को खुदवाया गया। कब्र से जो हड्डियां निकलीं, उन्हें अदालत में प्रस्तुत किया गया। न्यायाधीश ने देखा कि उन हड्डियों से रॉबर्ट लोगन का अस्थिपंजर नहीं बन सकता। इसलिए उसने आदेश दिया कि इनको पीसकर चूरन बनाया जाए और चारों तरफ धूल में बिखरा दिया जाए।

सूअर को फांसी

बात न्यायाधीशों की सनक तक ही सीमित नहीं है। ऐसे लोग भी हुए हैं, जिन्होंने जानवरों पर मुकदमे चलाये और अदालतों ने उन जानवरों से अभियुक्त की तरह व्यवहार किया। इस तरह के मुकदमे की सबसे पुरानी मिसाल सन १२६६ की है। ब्रिटेन में एक सूअर के खिलाफ मुकदमा चला था। अदालत में उस सूअर को नेकर और कमीज पहनाकर पेश किया जाता था। उसे कटघरे में खड़ा करके मुकदमा चलाया जाता था। अंत में उसे जेल की सजा दी गयी थी। इसी तरह एक अन्य सूअर को फांसी पर लटकाया गया था।

सूअर पर मुकदमा चलाने की सनक का एक उदाहरण इटली का भी है। वहां एक सूअर ने सोते हुए नवजात शिशु को खा लिया था। इसलिए उस पर हत्या का अभियोग लगा और अदालत में मुकदमा चला। गवाहों के बयानों के आधार पर सूअर पर जुर्म सिद्ध हो गया और उसे मौत की सजा दी गयी। फांसी देने की क्रिया भी नियमानुसार ही पूरी करायी गयी, यानी सूअर के सिर पर जल्लाद ने कपड़ा लपेटा और फिर फंदा खींचा गया।

बंदर हर्जाना दें

वेनेजुएला में एक सिरफिरी महिला ने विचित्र मुकदमा दायर किया। हुआ यह कि एक दिन वह महिला सरकस देख रही थी। वह आगे की पंक्ति में बैठी थी। एक बंदर अपना खेल दिखा रहा था। कुछ देर बाद उस बंदर ने एक मोटर साइकिल पर तीन बंदर और बिठाये। अब वह उन्हें घुमाने लगा। अचानक मोटर साइकिल का संतुलन बिगड़ा और वे बंदर लुढ़ककर उस महिला के ऊपर आ गिरे। हालांकि इसमें बेचारे बंदरों का भला क्या दोष था और फिर महिला को मामूली खरोंच तक न लगी थी। किंतु उसने उन बंदरों पर मानहानि का मुकदमा दायर कर दिया। बेचारे सरकस के मालिक को वे चारों बंदर अदालत में पेश करने पड़े। महिला ने मानहानि के बदले हरजाने की राशि मांगी। सरकस के मालिक ने कह दिया कि मुकदमा बंदरों पर चला है, इसलिए धन-राशि उनसे ही वसूल की जाए। न्यायाधीश ने फैसला सुना दिया कि वह महिला बंदरों से हरजाना वसूल कर ले। किंतु बंदर आखिर सरकस के बंदर थे। उन्होंने उस महिला को दांत दिखाये और भागकर सरकस में आ गये।

फैसले अदालतों के

सन १४६२ में इंगलैंड में एक विचित्र मुकदमा चला। वह मुकदमा बिल्ली पर चलाया गया था। अभियोग यह था कि उस बिल्ली ने एक बच्चे का गला दबाकर उसे मार डाला था। लोगों ने बिल्ली पर मुकदमा चलवाया। उसे मौत की सजा दी गयी, तो फिर फांसी पर भी लटकवाया गया।

चूहे कानून के जाल से दूर

बिल्ली तो सिरफिरों के काबू में

आ गयी थी, लेकिन चूहों ने ऐसे सिरफिरों की कोई परवाह नहीं की। सन १५१६ में एक गांव में चूहों का आतंक छा गया। खेतों की फसल उन चूहों ने सफाचट कर डाली। गांव के किसान परेशान हो उठे। उन्हें कुछ न सूझा तो एक सनकी के बहकावे में आकर उन्होंने अदालत में चूहों पर मुकदमा दायर कर दिया गया। अदालत में चूहे तो न आये, किंतु नियमानुसार बचाव पक्ष का एक वकील नियुक्त किया गया। आखिर दोनों पक्षों में खूब जमकर बहस हुई। अंत में चूहे मुकदमा हार गये और अदालत ने उन्हें गांव छोड़कर जाने का आदेश दे दिया। अदालत का यह आदेश एक तख्ती पर लिखकर खेतों के बीच लगा दिया। अगले दिन पता लगा कि चूहे उस तख्ती को भी खा गये थे।

बकरी आदेश चबा गयी

अदालत के आदेश जानवरों के लिए भला क्या महत्त्व रखते हैं? किंतु जब सिरफिरे लोग जानवरों के पीछे पड़ जाएं तो जानवर उनसे अधिक चालाक सिद्ध होते हैं। फ्रांस में एक बकरी के खिलाफ मुकदमा चला। बकरी दोषी पायी गयी। न्यायाधीश ने बकरी को फांसी की सजा सुना दी। आखिर सिपाही मृत्युदंड का आदेश लेकर जल्लाद के पास पहुंचे। जल्लाद फांसी तैयार करने में व्यस्त हो गया। इस बीच बकरी ने मौका देखा और सिपाही के हाथ से मृत्युदंड का आदेश लेकर चबा गयी। सब लोग मुंह देखते रह गये। बकरी का वकील उसे चट से मुक्त करके ले आया।

रूस में एक बार एक मेमने पर मुकदमा चला था। वह मेमना बिगड़ैल था। तमाम लोगों को वह अपने सींगों से घायल कर चुका था। आखिर कुछ सिरफिरों ने अदालत का द्वार खटखटाया। अदालत ने मेमने को दोषी पाया और उसे साइबेरिया भेजने का हुक्म दिया गया।

बुलबुल क्यों गाती है?

सिरफिरे लोगों की कृपा से जानवरों के अलावा पक्षी भी अदालत के निर्णयों से मुक्त नहीं रह पाये। आस्ट्रिया में ग्रॉसकर हेंजेल नामक एक व्यक्ति के पास बहुत सुंदर बुलबुल थी। वह बुलबुल दिनभर पिंजरे में रहती थी। किंतु रात में वह घर के अंदर आजाद होकर घूमा करती थी। उस समय वह खूब चहकती और गाती। जाहिर है, उसके गाने से पड़ोसियों की नींद में विघ्न पड़ता था। आखिर एक पड़ोसी ने परेशान होकर उस बुलबुल के विरुद्ध अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। पहले निचली अदालत ने मुकदमा रद्द कर दिया। किंतु पड़ोसी की सनक जारी रही। उसने बीच की अदालत में अपील की। वहां भी उसकी हार हो गयी। तब उसने उच्च अदालत में अपील की। हालांकि उस समय तक वह बुलबुल परलोक सिधार गयी थी, फिर भी उस पड़ोसी को उच्च अदालत के निर्णय की प्रतीक्षा बनी रही। अंत में उच्च अदालत ने भी मुकदमा रद्द कर दिया।

—[illegible] ३०, टैगोर गार्डन, नयी दिल्ली

किस्से तरह-तरह के हुक्कों के

हुकवा न पियो सैंयां गरमी करत हैं

● योगेश प्रवीन

नीचे जल की गागरी
ऊपर सर के आग
गली बीच कोहराम है
निकला काला नाग

इस पहेली को बूझ लेनेवाले के मुंह से बेसाख्ता 'हुक्का' शब्द ही निकलेगा। हुक्का एक जमाने तक राजा-रईसों के मुंह लगा रहा और अमीर-उमरावों के घर की जीनत बना रहा। उसे तंबाकू पीने का एक बेहतरीन तरीका समझा जाता था।

हकीमी नुस्खा

कहावत है कि हुक्के की ईजाद हकीम लुकमान ने की थी। इसलिए हो सकता है, हुक्के के साथ हिकमत के कुछ नुस्खे बंधे हुए हों। वैसे आज भी हुक्के के हिमायती इसे मेदे के मर्ज में अक्सीर मानते हैं। पुराने समय में तो हुक्के की फर्शी का पानी आंख दुखने पर, फोड़े-फुंसी पर या फिर पसीजनेवाले हाथ-पांव धोने में बहुत इस्तेमाल होता था। हुक्के की गुल का मंजन तो आजकल भी कस्बों में देहातों में प्रयोग किया जाता है।

लखनऊ की जनता में हुक्के की लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि पुराने मेलों और बाजारों में साकिनें ताजे हुक्के साथ लिये घूमती थीं, जिनके सिरे पर रूमाल रखकर पीनेवाले चार छह कश खींच लेते थे। और मुनासिब दाम दे जाते थे, जिसमें कई सटकें होती थीं और जिन्हें लोग ऐसे ही पीते थे, जैसे आजकल 'टी-स्टाल' पर चाय पी जाती है।

तैयारी हुक्के की

तंबाकू पीने का साधन नारियल की गुड़-गुड़ी या मिट्टी की चिलम भले ही कभी रहा हो, अब तो सिगरेट, बीड़ी, चुरुट, सिगार ही उसका प्रचलित माध्यम है। हुक्का इन दोनों स्थितियों के बीच में कहीं अपना अस्तित्व रखता है। वैसे हुक्के द्वारा पी गयी तंबाकू में जहर छन जाने का पूरा प्रबंध रहता है, जो और किसी तरीके में नहीं है। हुक्के में मुंहनाल, नेचा, कुफ्ली, गट्टा, पेंदा, तवा गटख और चिलम की दरकार होती है। यही इसके आवश्यक अंग हैं।

हुक्के शहर-शहर के

दिल्ली में हुक्का, मुगलों के वक्त में ही बहुत लोकप्रिय हो चुका था। ये हुक्के शाही भिंडीखाने में तैयार किये जाते थे। मजबूती और तैयारी के बावजूद ये हुक्के नफीस नहीं थे। नफासत इन्होंने लखनऊ से ही पायी। अवध में हर अंग से हुक्के को सजाया गया, संवारा गया। हुक्के की फर्शी तांबे-पीतल के अलावा फूल, मीने-दार, बीदरी कांच और मिट्टी की बनायी जाने लगीं। चिलमों का अनुपात सुधारा गया। उनमें गुलबूटे बनाये गये और रोगनी पर्त चढ़ायी गयी। नवाबी में ऐसी कांच की चिलमों का भी इस्तेमाल होता था, जो आंच से चिटकती नहीं थीं। तंबाकू के तवे, जो मिट्टी से बनते थे, भी सादे नहीं रह गये। उन पर भी फूल-बूटे खिलाये जाने लगे। हुक्के के साथ पीतल के थाल रखे जाते थे, जिसमें अंगारों को पकड़ने के लिए एक छोटा
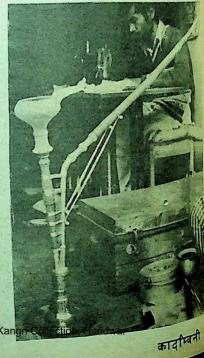
फर्शी पीते हुए अकबर

दस्तपनाह रखा रहता था।

पुराने हुक्के टेढ़े नेचे के हुआ करते थे। उसके बाद डेढ़ खमा हुक्का अजी-मुल्लाशाही तैयार किया गया। इन हुक्कों के सटक नेपाली बांस से बनाये जाते थे, जिनके साथ तांबे की कुल्फी (कुपली) इस्तेमाल की जाती थी। फिर जलेबीदार कुल्फी का चलन हुआ, जो सुंदरता की दृष्टि से बेहतर समझी जाती है। शाही हुक्कों में लंबी पेचवानों का प्रयोग किया जाता था। पेचवानों की 'स्प्रिंग' पर भोजपत्र लपेटा जाता है, जिसकी एक खूबी यह होती है कि वह जितना पानी में भीगता जाएगा, उतना ही मजबूत होता जाएगा। गहरे रंगों के रेशम और कलाबत्तू की मढ़ाई से पेचवानें खिल जाती थीं। उस पर भी रईसी की झलक दिखाने के लिए अकसर चांदी की जंजीरें भी लगा दी जाती थीं। इन पेचवानों की लंबाई जरूरत के मुताबिक रखी जाती थी। पीनेवाले से फर्शी का सात हाथ दूर होना तो मामूली बात थी। कभी-कभी तो दीवानखाने में हुक्का झाड़ के नीचे बीचोंबीच रखा जाता और सटक का सिरा चारों तरफ महफिल में गर्दिश करता रहता।

हुक्के के दूसरे साजोसामान में चंबल सरपोश और मुंहनालें होती हैं। अंगारों को घेरनेवाले सरपोश भी जालीदार और खूबसूरत डिजाइनों में बनते थे, जो कोयले की राख इधर-उधर फैलाने से रोकते थे। अलग-अलग लोगों के लिए और खासकर कौम के भेद के लिए, चांदी हाथीदांत या चंदन की मुहनालों का इस्तेमाल किया जाता था। सटक के मुंह पर लगायी जानेवाली यह नलकी सजावटी अंदाज की होती थी और पीने-वाले अकसर इसे अपने साथ ही अपनी जेब में रखते थे।

नवाबी का नाज

अवध के नवाब सआदत अलीखां तो हुक्के के इश्क में ऐसे गिरफ्तार थे कि उसके बिना उन्हें एक पल भी चैन नहीं था। उनके शासनकाल में लखनऊ में ही कतील नाम के एक प्रसिद्ध शायर रहते थे, जिनकी लिखी हुई किताब 'हल्फे

तमाशा' मशहूर है। कतील एकांतप्रिय इंसान थे और कहीं भी ज्यादा आते-जाते न थे। फिर दरबार की 'जी हुजूरी' तो उन्हें बेहद नापसंद थी। नवाब ने कई बार अपने महल की महफिलों में उनकी कमी महसूस की। आखिर एक बार नवाब ने नवेद भेजकर कतील साहब को इज्जत के साथ बुलवाना चाहा, जिसके जवाब में कतील ने नवाब के साथ लगी रहनेवाली तीन मुसीबतों का जिक्र किया, जो उन्हें महल में आने से रोकती हैं। हुक्का उनमें से एक था। लिखा—

"हुजूर आपका हुक्म सर आंखों पर और मुझे आने से कुछ इनकार नहीं, मगर मुश्किल यह है कि आपके साथ तंबाकू का ज्वालामुखी जरूर होगा और ये मुआ हुक्का मेरे बरदाश्त के बाहर की चीज है।"

इसी तरह अवध के द्वितीय बादशाह नसीरुद्दीन हैदर भी बड़े शौकीन तबियत हाकिम थे। जाहिर है, उनकी जिंदगी में भी हुक्के की शिरकत लाजिम रही होगी। भरे दरबार में एक बार साहबे आलम को हुक्का समेत पाकर, शेख इमाम बख्श नासिख ने कसीदा फरमाया था—

हुक्का जो है हुजूरे
मुअल्ला के हाथ में
गोया कि कहकशां है
शरया के हाथ में
नासिख ये सब्त बजा है
लेकिन सू अर्ज कर

बेजान बोलता है मसीहा के हाथ में

सआदत अली खां ने हुक्के की सटक अपनी बड़ी अम्मां बहू-बेगम के हाथों में देखी थी। वही सटक हाथों-हाथ अगले हाकिमों तक पहुंचती गयी। यहां तक कि बेगम हजरत महल के सबसे लोकप्रिय चित्र में भी मोतियों जड़ी मुंहनाल उनके मुंह से लगी हुई मिलती है। नवाब वाजिद अली शाह का एक हुक्का पूरा का पूरा गुलाबी कांच का बना हुआ था और जिस पर चीनी अजगर लिपटे हुए थे। यह हुक्का नवाबी की नफासत का एक नमूना था, जो अब देश में नहीं है।

लखनऊ में छतर मंजिल से लेकर दिलकुशा तक और कैंसरबाग से सिकंदरबाग तक इमली के तमाम दरख्त आज भी मिलते हैं। ये पेड़ नवाबों ने लगवाये थे क्योंकि हुक्के का शौक शहर में आम हो गया था। हुक्के की खातिर इमली का कोयला ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है और इसीलिए इन हरी खानों की दरकार थी।

तब और अब

उस जमाने में हुक्के की तंबाकू के साथ कुछ कम रियाज न होता था। कड़वाहट कम करने के लिए शीरा मिलाकर तंबाकू की खूब कुटाई की जाती थी। ये खमीरा रुचि के अनुसार अन्ननास, सेब, अंगूर, बेर, लौंग या जाफरान का होता था। खुशबू के लिए संदल का बुरादा, गुलाब या केवड़े के इत्र भी डाले जाते थे। ऊंचे

दरजे के शौकीन लोग बड़ी इलायची, जायफल जावित्री—जैसे मसालों को भी मिलाना पसंद करते थे ।

मेलों में हुक्के

लखनऊ की जनता में हुक्के की लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि पुराने मेलों और बाजारों में यहां साकिनें ताजे हुक्के साथ लिये घूमती थीं, जिसके सिरे पर रूमाल रखकर पीनेवाले चार-छह कश खींच लेते थे और मुनासिब दाम दे जाते थे। लखनऊ में पसंदबाग की साकिनें हुक्का पिलाने में जो तरकीबें इस्तेमाल करती थीं, बड़ी दिलचस्प होती थीं । यहां तक कि न पीनेवाले भी वहीं से शुरू कर देते थे । ब्रिटिश हुकूमत के दौर तक यहां गोलदरवाजे चौक में शाम के वक्त ठेले पर एक बड़ा हुक्का चलता था, जिसमें कई सटकें होती थीं और जिसे लोग ऐसे ही पीते थे, जैसे आजकल 'टी-स्टाल' पर चाय पी जाती है । आजादी के बाद तक लखनऊ में दशहरे के जुलूस में बड़े-बड़े नुमाइशी हुक्के तख्त पर चलते थे । ईद के रोज इरशाद हुसैन, उर्फ बाबू मियां की दूकान पर एक जंगी हुक्का दुल्हन-जैसा हारफूलों से सजाकर एक थाल में रखा जाता था, जिस पर लिखा होता था—

रईसों बादशाहों का
बहुत दिलख्वाह है हुक्का
ये दुनिया भर के सब
हुक्कों का किब्लेगाह है हुक्का

हुक्के की सामाजिक मान्यता का ये आलम रहा है कि हुक्का-पानी बंद होना बिरादरी से बाहर किये जाने का मुहावरा बन गया था । फिर हुक्के में दुबारा शामिल किये जाने के लिए कुछ वर्गों में अच्छी 'पेनाल्टी' देनी होती थी ।

वैसे अवध में एक सावन गाया जाता है, जिसका एक अंतरा है—

भरत चिलमिया, जरी मोरी अंगुरी
जरी जाए चिनगिन सेज रे
हुकवा न पियो सैयां गरमी करत है
जरि जइहै कंवल करेज रे

बहरहाल हुक्के का प्रचलन धीरे-धीरे इतना उठ चला है कि कोई आश्चर्य नहीं हुक्का सिर्फ संग्रहालय का सामान बनकर रह जाए। हां, अब शायद कागजी जामे में ही तंबाकू पीना फैशन की बात है।

—पंचवटी, ८९-गौसनगर,
लखनऊ-२२६०१८

लकीरों का रहस्य

"...दोस्तों ! यहां बदायूं की कवि ...लन की घटना तो न दोहराए, ...माफी मांगता हूं,"

"अभी ये शास्त्रीय संगीत सुनाएंगे! उसमें जान पैदा करने के लिए बीच-बीच में तुम--'वाह', क्या खूब' व 'अति सुंदर' कहते रहोगे . समझे?"

"साहब, अपने आदमी शहरभर में गंदगी ... रहे हैं, ताकि शाम को आप सफाई अभियान पर भाषण ...दें।"

"क्या उल्टा जमाना है। बाहर बदचलनी के कारण जेल के अंदर कर दिया जाता है और जेल में नेकचलनी के कारण बाहर कर दिया जाता है।"

"तुम्हारे यहां चोरी हो गयी-- यह मैं समझ गया ! किन-किन वस्तुओं को चोर नहीं ले जा सके, उनका नाम जल्दी बताओ ! वरना वरना...!!"

"भला मानुष, यह कोई वेतनवृद्धि मांगने का उचित वक्त है ?"

"चले आते हैं
बे-सम[illegible] मांगने समय

सोना लूटा : फांसी पर भी चढ़ाया

● प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

लुटेरों का बेताज बादशाह पिजारो नीली आंखों में स्वर्ण का नशा लिये पेरू की तरफ बढ़ा जा रहा था । ६२ घुड़सवार, १०६ पैदल अनुचर व कुछ अस्त्र-शस्त्र, यही था उसका तमाम लाव-लश्कर । धूप, जैसे सोना बनकर पिघल रही थी, पेरू की नीली-धूसर पहाड़ियों पर । पक्षियों के पंखों से सुसज्जित थे वहां के विचित्र मानव । पूरा शरीर लदा था उनका सोने से । स्वर्ण-लोलुप पिजारो और उसके साथियों की दृष्टि नहीं हटना चाहती थी, उनके शरीर पर से ।

किस तरह इंका सम्राट अताहूया-लपा को वश में किया जा सकता है, इसी उधेड़बुन में था पिजारो। उसके जहन में स्पेनी लुटेरे कोर्टिस का खयाल उभर आया। किस तरह अपनी बुद्धि-चातुर्य से उसने मैक्सिको पर कब्जा कर लिया था। अपने आदमियों के खून की एक भी बूंद नहीं बहानी पड़ी थी उसे। आंखों में चमक उभर आयी पिजारो के। कोर्टिस-वाला रास्ता ही अख्तियार करना होगा। चरम उत्साह से भर कर पिजारो ने अपने साथियों को जल्दी आगे बढ़ जाने का निर्देश दिया।

पिजारो

हाल ही में मृत्यु हुई थी इंका सम्राट हुआकपाक की। इक्वाडोर से चिली तक फैला था उसका शासन। सम्राट की मृत्यु की खबर राजधानी कुसको पहुंचते ही सूर्य मंदिर के पुरोहित ने उसके पुत्र हुआस-कार और उसकी पत्नी का राज्याभि-षेक कर दिया। जब यह खबर पहुंची सम्राट के बड़े पुत्र अताहूयालपा के पास, जो कूइटो पर शासन करता था, तो वह आगबबूला हो गया। अपने भाई के विरुद्ध उसने गृह-युद्ध की घोषणा कर दी। उसे सबक सिखाने के लिए उसने तुरंत अपनी सेना राजधानी की तरफ

रवाना कर दी।

घमासान युद्ध

हुआसकार की सेना ने अताहूयालपा की सैन्य शक्ति से डटकर मुकाबला किया। घमासान युद्ध हुआ। लेकिन अंत में हार हुआसकार की हुई। उसे बंदी बनाकर राजसी पोशाक उतारकर औरतों की पोशाक पहना दी गयी। पशुओं के मल और पक्षियों की विष्टा को खाने के लिए मजबूर किया गया। उसकी आंखों के सामने ही नृशंसता से उसकी स्त्री, पुत्र और कन्याओं की हत्या कर दी गयी।

युद्ध में जीत होने की खबर मिलते ही अताहूयालपा तुरंत अपनी सेनाओं के साथ राजधानी कुसको के लिए रवाना

हुआसकार की सेना ने अताहूयालपा को सैन्य शक्ति से डटकर मुकाबला किया। घमासान युद्ध हुआ। लेकिन अंत में हार हुआसकार की हुई। उसे बंदी बनाकर राजसी पोशाक उतारकर औरतों की पोशाक पहना दी गयी। उसे विष्टा खाने के लिए मजबूर किया गया।

हो गया। रास्ते में कजामारका में पड़ाव डाला।

●●

पहाड़ के ऊपर से पिजारो ने नीचे घाटी में झांककर देखा। चारो तरफ तंबू ही तंबू छाये थे। पिजारो ने अपने विश्वस्त साथियों से गुप्त मंत्रणा की। अपने एक विश्वस्त साथी हरनेंडो डि-सोटो को एक दुभाषिये के साथ उसने सम्राट अताहूयालपा के पास अपना निमंत्रण लेकर भेजा। डि-सोटो ने सम्राट के आगे झुककर कोर्निश की। फिर पिजारो का संदेश दिया। अताहूयालपा को इसमें किसी छल-कपट की बू नहीं आयी। उसने सहर्ष पिजारो का निमंत्रण स्वीकार कर उसके तंबू में जाना मंजूर कर लिया।

अपने तंबू के चारों तरफ कुशलता से पिजारो ने अपने अश्वारोही और अनुचरों का जाल बिछा दिया। अस्त्र-

शस्त्रों से लैस उसके आदमी पूरी तरह तैयार थे, मौका पाते ही अताहूयालपा और उसके साथियों पर चील की तरह झपट पड़े।

यह घटना १६ नवंबर, १५३२ को घटित हुई। अताहूयालपा को ज्योतिषियों पर बहुत विश्वास था। उन्होंने भविष्य-वाणी की थी कि सम्राट अजेय है। कोई भी उसका बाल-बांका नहीं कर सकता है। ज्योतिषियों की बात पर अंधाधुंध विश्वास करके बिना खास सुरक्षा-प्रबंध के ही अताहूयालपा संध्या समय पिजारो से मिलने के लिए रवाना हुआ। पालकी के आगे-आगे पथ बुहारते हुए चल रहे थे, सम्राट के एक हजार सफाई-सेवक। साथ में थे, पांच-छह हजार सम्राट के अनुचर और कुछ विश्वस्त सैनिक।

पिजारो के तंबू से स्वागत जताने के लिए केवल एक ही आदमी बाहर आया। संन्यासियों की तरह उसके सिर और दाढ़ी के बाल बढ़े थे। उसके हाथ में बाइबिल खुली थी, जिसे ऊंचे स्वर में पढ़ते हुए वह सम्राट की तरफ आगे बढ़ने लगा। सम्राट ने बाइबिल हाथ में ली। उसे उलटा-पुलटा, लेकिन एक भी हरफ समझ नहीं आया। खीझ-कर उसने बाइबिल जमीन पर फेंक दी।

अचानक बिगुल बज उठा। तोप के गरजने की विकट आवाज हुई। हाथ में बल्लम और जहर-बुझे भाले लेकर आड़ में से निकल आये पिजारो के आदमी सम्राट के आदमियों पर भेड़-बकरियों की तरह पिल पड़े।

इतना अचानक यह सब हुआ था कि पिजारो के आदमी हक्के-बक्के रह गये थे। हमले से घबराकर वे जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। इसी मौके की ताक में था पिजारो। उसने अताहूयालपा को पालकी से खींचकर उतारा। उसे बंदी कर लिया।

आठ महीने अताहूयालपा ने पिजारो की कैद में बिता दिये। एक दिन पिजारो ने अताहूयालपा के सामने उसको छोड़ने का प्रस्ताव रखा। शर्त यह रखी कि अताहूयालपा उसके लिए मनमांगा सोने का इंतजाम करके देगा।

"कितना सोना चाहिए?" अताहूयालपा ने जब यह जानना चाहा, तो बिल्लौरी आंखों को धूर्तता से नचाते हुए पिजारो ने कहा, "कोई ज्यादा नहीं। २२ फुट लंबे और १२ फुट चौड़े इस कमरे के फर्श को सोने से ढकभर देना होगा।"

शर्त मान ली अताहूयालपा ने। राजधानी से विपुल परिणाम में सोना जाने लगा। लेकिन शर्त के मुताबिक अताहूयालपा को रिहा नहीं किया पिजारो ने। बंदी हालत में ही एक दिन धोखे से उसके गले में फांसी का फंदा डालकर उसे दम घोटकर मार डाला। कोई सौ किलो सोना पिजारो के हाथ लगा। घोड़ों पर इसे लदवाकर वह तब कजामारका को छोड़कर, किसी दूसरे इंका शहर की तरफ बढ़ गया।

—जे-१८८२, चित्तरंजन पार्क,
कालकाजी, नयी दिल्ली-११००१९

बोतलों में संदेश भी एक सनक है

• गंधर्व सेन

कबूतर से लेकर आधुनिक हवाई-डाक तक के संदेशवाहकों की कहानी तो सबने पढ़ी होगी, लेकिन सिरफिरों की डाक कैसे जाती है, इसे कम ही लोग जानते हैं। यों बात सिरफिरों की है तो संभव है कि उनके संदेश भेजने के और भी बहुत से तरीके हों, लेकिन हम जिस माध्यम की चर्चा कर रहे हैं, वह एक विश्वविख्यात माध्यम है और आज भी कुछ सिरफिरे उसका प्रयोग करते पाये जाते हैं।

संदेश भेजने का यह अनोखा तरीका कब और किस सिरफिरे ने शुरू किया, यह तो कहना मुश्किल है, किंतु इतना अवश्य है कि जिसे यह सनक सवार हो जाती है, वह बड़ी मुश्किल से ही इसे छोड़ता है। सिरफिरों की यह डाक बोतलें ले जाती हैं। खाली बोतल का मुंह अगर अच्छी तरह बंद कर दिया जाए तो वह पानी में तैरती रहती है। बस, इसी का लाभ उठाया कुछ सिरफिरों ने। बोतल के अंदर अपना पत्र लिखकर डाल दिया और समुद्र में उसे फेंक दिया।

अब पढ़िए ऐसी ही बोतलों के कुछ रोचक किस्से। सन १९३९ में एक जरमन वैज्ञानिक ने दक्षिणी हिंद महासागर में एक बोतल छोड़ी। बोतल के अंदर एक

संदेश इस तरह लिखा गया था कि उसे बाहर से ही पढ़ा जा सकता था। संदेश में लिखा था, 'इस बोतल को पानेवाले से अनुरोध है कि वह कृपया मुझे यह सूचित करे कि यह बोतल किस दिन, तारीख और समय पर कहां प्राप्त हुई। साथ ही यह भी कि कृपया इसे बिना खोले ही फिर से समुद्र में डाल दीजिए।' उस जरमन वैज्ञानिक को इस बोतल के बदले जो पत्र प्राप्त हुए, उनसे बोतल की यात्रा का पता चलता है। पहली बार वह बोतल दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी सिरे कोपेनहार्न के पास पायी गयी। कोपेनहार्न से चलकर वह अटलांटिक महासागर में आयी। फिर वह वापस हिंद महासागर में आ गयी। इस बीच जिन-जिन लोगों ने उसे प्राप्त किया, सबने इस सिरफिरे अभियान में भाग लिया। हिंद महासागर में घूमती-फिरती वह बोतल सन १९३५ में आस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट पर पहुंची थी।

बोतलों के जरिये धर्मप्रचार

अमरीका के एक पादरी ने बोतलों के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार करने का निश्चय किया था। यह एक आसान और अच्छा तरीका सिद्ध हुआ। उस

बोतल के संदेश सिरफिरेपन का नमूना भले ही हों, कभी-कभी ये कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं की सही जानकारी प्राप्त करने में भी मददगार होते हैं।
—यहां पढ़िए ऐसी ही बोतलों के कुछ रोचक किस्से।

पादरी ने पंद्रह हजार बोतलों में संदेश रखकर समुद्र में डलवाया। पादरी ने पंद्रह हजार बोतलों में संदेश रखकर समुद्र में डलवाया। उसे कुल चौदह सौ बोतलों के उत्तर प्राप्त हुए थे। ये उत्तर दुनियाभर के समुद्र तटीय नगरों से आये थे।

खजाने की खोज

बोतल के संदेश सिरफिरेपन का नमूना भले ही हों, कभी-कभी ये कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं की सही जानकारी प्राप्त करने में भी मददगार होते हैं। सन १७८४ में प्रसिद्ध जापानी गोताखोर मात्स्याना अपने चवालीस जहाजियों के साथ समुद्र यात्रा पर निकला था। उसका उद्देश्य था—समुद्र में खजाना खोजना।

किंतु कई वर्षों तक जब वह न लौटा तब लोगों ने मान लिया कि उसका जहाज कहीं समुद्र में ही डूब गया होगा। लेकिन सन १९३५ में मिली एक बोतल ने मात्स्याना की सारी कहानी बता दी। यह बोतल मात्स्याना ने ही छोड़ी थी। उसका जहाज प्रशांत महासागर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। वे लोग एक मूंगे की चट्टान पर भूखे-प्यासे तड़प-तड़पकर मर गये थे। मरने से पहले मात्स्याना ने लकड़ी के एक टुकड़े पर अपनी यह दुखभरी कहानी लिखी थी और उसे बोतल में बंद करके बहा दिया था। संयोग देखिए कि डेढ़-सौ वर्ष बाद वह बोतल जापान के समुद्रतट पर आयी और वह भी मात्स्याना के उस गांव के तट पर, जहां वह पैदा हुआ था।

सुंदरी के नाम संदेश

आपने अंधे के हाथ बटेर लगने की बात तो सुनी होगी, लेकिन किसी सिरफिरे बोतलबाज के हाथ सुंदरी लगते नहीं देखा होगा। स्वीडन का एक नाविक ऐसा ही खुशकिस्मत था, जिसको एक सुंदरी मिल गयी। घटना सन १९५६ की है। वह नाविक एके वाइकिंग एक दिन समुद्र किनारे बैठा था। अचानक उसने सोचा कि क्यों न किसी अज्ञात सुंदरी के नाम एक पत्र लिखकर भेजे उसने तुरंत पत्र लिखकर एक बोतल में रखा और उसे समुद्र में बहा दिया। दो वर्ष बाद वह बोतल इटली के दक्षिणी किनारे पर एक मछुए को मिली। मछुआ उसे घर ले आया। उसकी बेटी पाओलीना ने बोतल का वह अनोखा संदेश पढ़ा, तो बहुत प्रभावित हुई। उसने तुरंत वाइकिंग को पत्र लिखा, फिर तो उन दोनों के बीच प्रेम-पत्रों का ऐसा सिलसिला चला कि सन १९५८ में ही दोनों का विवाह हो गया। कहिए, बोतल-बाज के हाथ सुंदरी लगी कि नहीं? ●

लार्ड बेंटिक का जमाना था। बरमा से कुछ राजनीतिक प्रतिनिधि भारत आये। उनके स्वागत में मेटकॉफ साहब ने दावत की व्यवस्था की। चूंकि मामला राजनीतिक प्रतिनिधियों का था, इसलिए मेटकॉफ साहब ने दावत का इंतजाम बहुत ही ऊंचे दरजे का किया। पानी की तरह पैसा बहाया गया ताकि दावत में कोई कमी न रहे। लेकिन दावत से एक घंटे पहले उन बरमी राजनीतिक प्रतिनिधियों ने दावत में शामिल होने से इनकार कर दिया। कारण यह था कि उन बरमियों को अपना पीकदान लेकर आने के लिए मनाकर दिया गया था। बरमा में प्रथा यह है कि यदि कोई अपने से छोटी हैसियतवाले के यहां जाता है तो पीकदान साथ ले जाता है। अगर बड़ी हैसियत-वाले के यहां जाता है, तो पीकदान नहीं ले जाता। बस, बरमी राजनीतिक प्रतिनिधि और मेटकॉफ के बीच इस पीकदान के मामले में जो सनक सवार हुई तो लाखों की दावत मिट्टी में मिल गयी।

अजब कवि तेरे उपनाम

● श्रीनिवास 'वत्स'

बहुधा मानव धर्मसंकट में पड़ जाता है। क्योंकि उसे दोनों पक्षों को जीवित तो रखना ही होता है—जैसे सागर-मंथन के समय भगवान विष्णु धर्मसंकट में पड़ गये थे।

कवि और श्रोता भी ऐसे ही पक्ष हैं। जहां अध्यक्ष को अपनी लुटिया डूबती दिखायी दे, तो उसे खंखारकर या कोई रसीली बात सुनाकर श्रोताओं को 'ग्लुकोज' देना ही होता है। खासकर तब, जब सभी कवि अपनी काव्य-भुसंडिका श्रोताओं पर तान दें और दनादन गोलियां बरसनी प्रारंभ हो जाएं। कोई श्रोता कान में अंगुली दे, कोई कानाफूसी करे और कोई बच्चे के रुदन से ढाल का काम ले, पर चूंकि सांप के मुंह में छछूंदरवाली बात है, यह काव्य-रस जिसके मुंह लग जाए, चाहे श्रोता हो या रचयिता, बस शतरंज के खिलाड़ी बन जाते हैं। श्रीमतीजी का बेलन चले या श्रोताओं की हूटिंग काव्यमयी गाड़ी अगले स्टेशन पर ही रुकती है।

भक्षक ही भक्षक

आफत तब और बढ़ जाती है, जब एक ही जंगल में कई शेर निवास करें। चूंकि मृगया हेतु जानवर थोड़े होते हैं और भक्षक ज्यादा, तब तो भक्षक ही भक्षक से टकराएगा।

यही स्थिति हमारे महल्ले की है। पचास घर होंगे और प्रत्येक घर में एक राशनकार्ड एक कवि के नाम है। समझ ही गये होंगे कि कहीं-कहीं तो जाली राशनकार्ड भी चलते हैं, अर्थात एक-आध घर में दो-दो कवि भी विराजमान हैं। अब श्रोता कौन बने, यही समस्या महल्ले के इन काव्य-पुरुषों की है। अब चूंकि एक म्यान में दो तलवार तो समा नहीं सकतीं और फिर जहां पति-पत्नी दोनों ही इस कमान को संभाल लें तो उस घर के पड़ोसियों की तुलना आप अफगानिस्तान या फिलिस्तीनी शरणार्थियों से कर सकते हैं।

कवि जब कवितापाठ करे, तब कव-

यित्रियां अपनी अंगुली स्वेटर बुनने की मलाइयों पर, अपनी पावन जिह्वा या कान पड़ोसी औरत की साड़ी की चर्चा पर टिका सकती हैं। परंतु कवि के लिए वही धर्म-संकट आ जाता है। जब-जब उसकी श्रीमती कवितापाठ करे और अपनी अद्भुत काव्यधारा के मधुर और शीतल जल से श्रोताओं को मुग्ध कर रही हो, तब-तब बेचारे कवि महोदय कैसे चुप रहें ? अगर उसकी सराहना करते हैं तो अन्य कवि उन पर शंका की दृष्टि डालते हैं और उन्हें कूप-मंडूक की संज्ञा देते हैं पाणिनी की अष्टाध्यायी में इत-संज्ञावाले का लोप हो जाता है, पर उस कवि के उपनाम का लोप भी संभव नहीं। अगर वह श्रीमती कवयित्रीजी की रचना में त्रुटियां निकालता है, तो वहीं भूखों मरने की नौबत !

यशोदाजी जब भी बोलती हैं, तब जनाब के कान खड़े हो जाते हैं और अगर मैं टूटी-फूटी आपकी ही गढ़ी दो पंक्तियां कह दूं, तो त्यौरियां चढ़ जाती हैं।

फिर **जाके पांव न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई !** जिन्होंने ऐसे कवि-सम्मेलनों की अध्यक्षता की है, वे ही इस दर्द को [illegible] सकते हैं कि [illegible]

दायित्व क्या भिखारियों के राजा बनने से कम है ? अस्तु, राजा तो राजा ही होता है, चाहे नरक का ही क्यों न हो !

बंजर भूमि का बैल

'होली का हुड़दंग, देखकर रह जाओगे दंग' इश्तेहार पास-पड़ोस की दीवारों पर चिपक गये। इस हुड़दंग में उनचास कवि ऑबलिक पचास कवयित्रियां भाग ले रही थीं। पचासवें कवि को अध्यक्ष बनाया गया था। और इस बार यह मुकुट श्रीमती-जी ने कई उम्मीदवारों से सीधी टक्कर लेकर मुझे दिलवाया था। अब क्योंकि उनके अहम् का प्रश्न था और हमारी प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी, इसलिए हमने

इस जूवे में जुतना ही ठीक समझा। तेली के बैल होते तो तेल की सुगंध आती, कोल्हू के बैल बन जाते, तो कोई वैयाकरण मुहावरा ही रच देता, पर मैं तो बंजर भूमि का बैल बन गया था।

इस अदभुत कवि-सम्मेलन में अध्यक्ष सहित सौ श्रोताओं उर्फ कवियों ने भाग लिया। अब किससे कवि-सम्मेलन का श्रीगणेश करवाऊं और किससे इति। यहां पुनः धर्मसंकट। क्योंकि शमशेर सिंह 'प्रसंगी' ने इसी प्रयोजन से अपना उपनाम

'प्रारंभी' रखा था । प्रारंभी बैट्समैन या 'ओपनर' पर ही पूरे खेल का दायित्व होता है और उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। 'प्रारंभीजी' हमारे कवि संघ के सेक्रेटरी थे और हमारे पड़ोसी भी । अतः इस कार्य के लिए उनसे उपयुक्त कवि और कौन मिल सकता था ? वैसे अन्य कई दावे दार, जैसे अरुण सक्सेना 'गणेश', विद्याधर 'वृत्ताकार', सोहनसिंह 'कांटा', जयप्रकाश 'जख्मी', सुरेन्द्र 'घायल' आदि इसीलिए अपने एतदर्थ उपनामों से सुसज्जित थे।

'प्रारंभीजी'ने अपनी कविता प्रारंभ की—

दर्जनभर महीनों के बाद
दर्श दिखाती है होली
क्यों ना ऐसा जतन करें हम
हर सप्ताह आ जाए होली

यूं तो कविता बहुत बड़ी थी, पर चूल्हे पर चढ़ी पतीली से एक चावल निकालकर भोजन के पकने का अनुमान लगा सकते हैं।

अब 'वृत्ताकार' चूंकि असिस्टेंट सेक्रेटरी थे, अतः उठे और कहा, " 'प्रारंभीजी' ने तो हर हफ्ते होली की कामना की है, पर क्या भाभीजी इन्हें हर सप्ताह ब्रज की गलियों में घूमने की अनुमति दे देंगी ? और वह भी अपनी अनुपस्थिति में। अतः पहले घर में ही 'हां' करवाओ, तभी होली को हफ्तों या महीनों में लाना ।"

'प्रारंभीजी' कुछ सकुचाये, पर उनकी बात रख दी प्रेमपाल 'बेदखल' ने । कहा, "होली ही क्यों, हर त्यौहार ही हर हफ्ते

आना चाहिए। त्यौहार हमारी संस्कृति के द्योतक हैं, हमारे वर्चस्व हैं ।"

चटनी ही रगड़ते रहे

अब आलू-जैसे मोटे तगड़े 'वृत्ताकारजी' बैठ गये और मैंने अपनी ड्यूटी निभायी, "अब आपके सामने 'सिलवट्टाजी' अपनी रचना सुनाएंगे ।"

जैसे ही 'सिलवट्टाजी' उठे, सभी श्रोता चकित रह गये, "अरे ! ये तो अपने वेद शर्माजी हैं । 'सिलवट्टा' उपनाम इन्होंने कब रखा ?"

'सिलवट्टा' साहिब उनकी मनोकामना भांप गये और कहने लगे, "श्रोताओ ! (यद्यपि दूसरे कवियों ने इसे महसूस किया) मैंने अपना यह उपनाम इसलिए रखा है कि हमारे घर में हमारी श्रीमतीजी ने हमारी उपमा सिलवट्टे से की थी कि आप भी सिलवट्टे-जैसे मस्तिष्कवाले पुरुष हो, जो पुराने कवियों की घिसी-पिटी रचनाओं की ही चटनी रगड़ते रहते हो। अब चूंकि हमारे पूर्वज कालिदासजी भी इसी तरह विद्योतमा से प्रेरित होकर महाकवि बन गये, उसी प्रकार अब हमारी श्रीमतीजी स्वयं महसूस करेंगी कि उन्होंने हमें एक उपनाम दिया है । मैं उनका

साप्ताहिक हिन्दुस्तान की परम्परा में दो नए कीर्तिमान

होली विशेषांक : २७ मार्च, १९८३

नामों की भारी भीड़ के साथ—

सुरेन्द्र तिवारी ० डा. महीप सिंह ० कन्हैयालाल नन्दन ० रमानाथ अवस्थी ० आत्मप्रकाश शुक्ल ० सुरेश उपाध्याय ० शैल चतुर्वेदी ० अल्हड़ बीकानेरी ० मधुप पाण्डेय ० सरोज कुमार ० माणिक वर्मा ० सुरेन्द्र शर्मा ० काका हाथरसी ० प्रभा ठाकुर ० ओम प्रकाश आदित्य ० जैमिनी हरियाणवी ० हुल्लड़ मुरादाबादी ० प्रदीप गुप्ता ० सुदर्शन अग्रवाल ० गोपाल कृष्ण कौल आदि ।

व्यंग्य-विनोद विशेषांक : ३ अप्रैल १९८३

भारतीय भाषाओं के चुने हुए लेखकों की
चुनी हुई व्यंग्य-विनोदपूर्ण रचनाएं ।

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवालें ।

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

धन्यवाद करता हूं और आपके सामने अपनी कविता पढ़ता हूं।"

बीच में ही अन्य कवियों ने तालियां बजायीं और मुझसे कहा, "प्रधानजी! आज सिर्फ उपनाम व्याख्या ही हो जाने दो।"

सर्वसम्मति से यह बिल पास हो गया।

अगले वक्ता थे—सुरेन्द्र 'आंसू'। आंसू नाम की व्याख्या में उन्होंने कहा, "एक बार कवि सम्मेलन में मैंने अपनी कविता पढ़नी प्रारंभ ही की थी कि देखा मंच के पास बैठे वृद्धजनों के होंठों पर दर्द का भाव था। औरतों की आंखों में आंसू थे। बच्चे रोने लगे . . .।"

"क्या आप करुण रस की कोई मार्मिक कविता पढ़ रहे थे?" मैंने पूछा।

"नहीं पीछे से आ-आकर गले-सड़े फल सब्जियां एवं चप्पलें मेरे साथ-साथ उन्हें भी लग रही थीं, जिससे मेरे साथ उनकी आंखों में भी आंसू आ गये। श्रोताओं का पहला प्यार मैंने उन आंसुओं को मान अपना उपनाम 'आंसू' रख लिया।"

एक का कार्य दूसरा करे

अब उपनाम व्याख्याकार पोहकर मलजी 'छब्बीसी' की बारी थी। वे उठे और बोले, "एक बार एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा, 'पोहकर मलजी आपकी उम्र क्या है?'

"मैंने कहा, 'छब्बीस वर्ष।' उस व्यक्ति ने फिर कहा, 'लेकिन आप लगते तो चालीस के करीब हैं।'

"मैंने उन्हें समझाया, 'भाई! छब्बीस वर्ष की उम्र में मेरी शादी हो गयी थी और इसके बाद की उम्र को मैं अपनी उम्र में शामिल नहीं करना चाहता। बस उसी दिन से हमने अपना उपनाम 'छब्बीसी' रख लिया।"

अब श्रीमती 'छब्बीसी' उठीं और गरजती हुई बोलीं, "अच्छा तो यह बात थी, जो मुझसे छुपाये रखी। अब मैं भी अपना उपनाम 'तेईसी' रख लेती हूं।"

मैंने 'तेईसीजी' से प्रार्थना की अब नये व्यक्ति को बोलने दो। उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली और अगली कवयित्री थीं—सरोज 'व्यतिहारी'।

अचानक दरवाजे पर कोई आहट हुई। एक व्यक्ति ने उठकर देखा, बाहर होली खेलनेवालों की भीड़ थी। अतः बहुत से व्याख्याकार अपने व्याख्या-वर्णन से वंचित रह गये।

'वृत्ताकारजी' उठे, "अध्यक्ष वत्सजी! आप भी अपने उपनाम का वर्णन तो करते जाइए।"

मैंने कहा, "यह नाम हमारी श्रीमती को बहुत प्रिय है। वह हमें प्यार से 'वत्स' कहती हैं। अब आप ही बताइए, ऐसे मधुर शब्द को मैं कैसे उपनाम ना बनाऊं?"

भीड़ दरवाजा खोल चुकी थी, अतः —इति श्री कविसम्मेलनम्।

—शास्त्री सदन, ३९२-बी, इंदिरा कॉलोनी, रोहतक-१२४००१

चेहरे कैसे बिगड़ते हैं!

सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद

दो चेहरे लगाकर हर आदमी जीता है
उत्सवों के समय तो विशेष रूप से आ
प्रवृत्ति की झलक देखी जा सकती है।
आदमी, बनते हैं शेर !
छाया : दिलीप

शेर ट्रैफिक पुलिस का काम करते थे

लखनऊ के भांड भी अपना अलग ही दरजा रखते थे। 'करेला' भांड की मंडली में एक भांड था--बुंदू। वह भंडई के दौरान शेर बनकर महफिल में उतरता था। अपने पूरे बदन पर बाकायदा शेर की धारियां रंगता और शेर के कागज का मुखड़ा पहनकर उछल-कूद करता। एक दिन जब वह अपना करिश्मा करके लोगों का मनोरंजन कर रहा था तो उसकी गुस्सैल बीवी उसे ढूंढ़ती हुई वहां आ पहुंची। बुंदू ने दरअसल में जल्दी में बीवी के पाजामे का नाड़ा निकालकर अपने पाजामें में डाल लिया था और उधर बीवीजान ने जब अपना पाजामा बगैर इजारबंद के देखा तो भड़क उठी। वह फिर तहमद लपेटे ही वहां आ पहुंची और अपने गुर्राते हुए शेर (शौहर) पर बेलन लेकर पिल पड़ी। महफिल ठहाकों से गूंज उठी। एक मनचला बोला, "यार यह राज तो हमें आज पता लगा कि शेर भी औरतों के हाथों पिटता है।"

तभी तपाक से पिटता हुआ वह शेर बोला, "आखिर शेर है तो लखनऊ ही का।"

नाचते-थिरकते शेर

वैसे शेर बनकर उत्सवों में नाचने की प्रथा हमारे देश में बहुत पुरानी है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि में जुलूस के आगे शरीर पर धारियां बनाके बहुरुपिये नाचते-गुर्राते चला करते थे। गणेश चतुर्थी पर तो शेर बाकायदा ढोलक की थाप पर अजीब ही 'सिंह-नृत्य' पेश करता था। बुंदेलखंड में दीपावली के अवसरों पर बहुरुपिये शेर का स्वांग भरकर घर-घर जाते थे। वे कभी नाचते, कभी गुर्राते और कभी उछलकूद करके अपने जजमानों से दीपावली का इनाम बटोरते थे। नागपुर क्षेत्र के ये बनावटी शेर तो बाकायदा वहां की प्रचलित 'गोंडी' ताल पर अच्छा-खासा नृत्य दिखाते थे। ढोलक, झांझ, मजीरों के शोर में उनका नृत्य जमता भी खूब था। कई मुस्लिम त्यौहारों पर भी शेर बनकर आगे-आगे चलने का रिवाज था। ये शेर देखा जाए तो जलूस को आगे बढ़ाने में 'ट्रैफिक पुलिस' का काम करते थे। एक ही जगह जमी हुई भीड़ को वे गुर्राकर, उनपर झपटकर और कभी-कभी धौल जमाकर हटाते थे।

—पंकज

ये विचित्र वसीयतें

• हरि
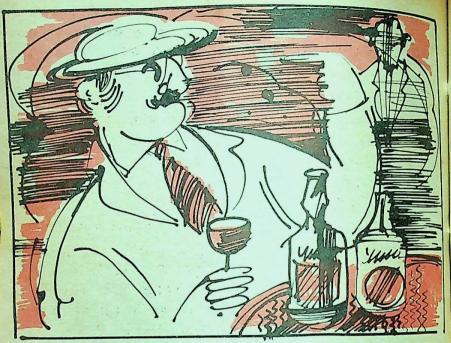
'यह वसीयत मैं अपने पूरे होशोहवास में लिख रहा हूं। मैं इस समय पूर्ण रूप से स्वस्थ हूं और इसे किसी के दबाव में या डर के कारण नहीं लिख रहा हूं' यह बयान वसीयत का अनिवार्य अंग होता है। लेकिन, इसके बावजूद यदि वसीयत में लिखी हुई बातें सामान्य न हों तो उसके लिखनेवाले को आप क्या कहेंगे ? दुनिया में ऐसी वसीयतों के अनेक उदाहरण मौजूद हैं, जिनके लेखक सिरफिरे या सनकी ही थे। यदि ऐसा न होता तो वे भला क्यों ऐसी वसीयत लिखते, जिसका अर्थ सामान्य जीवन या व्यक्ति से नहीं हो। अब फिनलैंड के एक बूढ़े की वसीयत को ही लीजिए। उसके मरने पर जब वह वसीयतनामा खोला गया तो लोग परेशानी में पड़ गये। उसमें लिखा था कि मेरी सारी संपत्ति का मालिक 'शैतान' होगा। लोग बड़े चक्कर में पड़ गये कि 'शैतान' कहां से आये ? आखिर जब उस संपत्ति का दावेदार कोई नहीं मिला

तो सरकार ने ही उसे ले लिया ।

सम्मानपूर्वक शराब पिलायें

लंदन के एक धनी व्यक्ति मि० प्रांकिस को शराब पीने का बहुत शौक था । शराब उनके जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी थी । लेकिन, उनका वसीयतनामा उनके सिरफिरेपन का एक सुंदर नमूना बन गया है । उन्होंने लिखा कि हर वर्ष जब उनकी पुण्यतिथि मनायी जाए तो घर के सब दरवाजे खोल दिये जाएं । उन

दरवाजों पर कुछ नौकर शराब लेकर बैठें और वहां से गुजरनेवाले हर व्यक्ति को सम्मानपूर्वक शराब पिलायी जाए ।

वसीयत अंतरिक्ष यात्री के नाम

वसीयतनामे में यदि किसी ऐसे व्यक्ति को संपत्ति का मालिक बनाया जाए जो इस दुनिया में ही न हो, तो वसीयत-लेखक के बारे में आप क्या धारणा बनाएंगे ? सनकीपन का एक ऐसा ही नमूना पेश किया फ्रांस की मदाम ए. क्लारा गुजमैन ने । उन्होंने लिखा कि मंगल ग्रह या अंतरिक्ष से आये प्रथम मानव को मेरी संपत्ति दे दी जाए। मदाम गुजमैन की यह वसीयत और उनकी संपत्ति आज भी अपने दावेदार की प्रतीक्षा कर रही है।

जिंदा ही न दफना दें

एक धनी व्यक्ति को भय बना रहता था कि उसकी संपत्ति हड़पने के चक्कर में लोग उसे जिंदा ही न दफना दें । उसकी यह सनक इस कदर बढ़ी कि आखिर उसने अपनी वसीयत में भी इस भय को लिख डाला । उसने लिखा कि जब वह मर जाए तो उसकी लाश को चार दिन तक सुरक्षित रखा जाए। पांचवें दिन दाह-संस्कार से पूर्व दो प्रसिद्ध सर्जन बुलाये जाएं । उन्हें मुंहमांगी फीस दी जाए। 'उन सर्जनों से मेरे शव का इस तरह ऑपरेशन कराया जाए कि अगर उसमें कहीं भी प्राण हों तो वे निकल जाएं । इसके बाद जब वे सर्जन यह प्रमाणित कर दें मैं पूर्णतया मृत हो चुका हूं तो मेरा अंतिम संस्कार किया जाए ।'

अंधेरे में प्राण का भय

डर के कारण उपजे सिरफिरेपन का एक और उदाहरण उस व्यक्ति का है, जिसे अंधेरे में अपनी जान का खतरा बना रहता था । वह अंधेरे से बहुत घबराता था । इसलिए उसने अपनी वसीयत में लिखा था, 'मेरे मरने के बाद मुझे जिस ताबूत में रखा जाए, उसमें उजाला होना चाहिए ।' उसकी इस इच्छा को पूरा करने के लिए लोगों ने ताबूत में न सिर्फ छोटी-छोटी जालियां बनवायी थीं, बल्कि जलती हुई मोमबत्ती भी रख दी थी ।

मैं उतना बेवकूफ न था!

वसीयतनामों में अपनी पत्नी के प्रति

नफरत व्यक्त करने के कुछ सनकी-नमूने भी मिलते हैं। एक महाशय ने वसीयतनामे में अपनी पत्नी के नाम केवल एक रुपया छोड़ा और यह इच्छा प्रकट की इस धन-राशि को उसे बिना टिकट लगे बैरंग लिफाफे में भेजा जाए। इसी प्रकार न्यूयार्क के एक धनी ने अपने परिवार के लिए लिखी वसीयत में न सिर्फ अपने सिरफिरेपन का परिचय दिया बल्कि उन सबकी भी पोल खोल दी।

उसने वसीयत में लिखा था--'मेरी पत्नी मुझे उम्रभर बेवकूफ समझती थी, किंतु मैं उतना बेवकूफ न था। इसलिए अपनी पत्नी के नाम सिर्फ एक डॉलर छोड़कर जा रहा हूं। मैं अपने बेटे के नाम सिर्फ मौज-मस्ती ही छोड़ रहा हूं। वह हरदम यही सोचता रहा है कि धन कमाना पिता का काम है, मौज मनाना पुत्र का। इसलिए उसे सिर्फ मौज-मस्ती दे रहा हूं। अपनी पुत्री के नाम एक लाख डॉलर छोड़ रहा हूं। पुत्री को इस धन-राशि की जरूरत पड़ेगी, क्योंकि उसका पति एकदम निकम्मा आदमी है, जिसने मेरी बेटी से विवाह करने के अलावा आज तक समझदारी का कोई काम नहीं किया। मैं अपने नौकरों को अपने सारे कपड़े दे रहा हूं क्योंकि वे उन्हें चुराकर पहना करते थे। अपने ड्राइवरों को वे मोटरें दे रहा हूं, जिन्हें उन्होंने तोड़कर खटारा बना दिया है और अब वे महसूस करेंगे कि खटारा मोटरों का मालिक होना कितना दुःखदायी होता है।

अंत में उसने अपनी नौकरानी के लिए लिखा, 'मैं अपनी सारी शेष संपत्ति उसे दे रहा हूं क्योंकि वह मेरी प्रेमिका होकर भी सदा नौकरानी ही रही, कभी पत्नी बनने का साहस न कर सकी।'

सबसे सुंदर नाक को पुरस्कार

यदि किसी में सनकीपन के बावजूद सौंदर्यबोध बना रहे तो उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। किंतु इन दो सौंदर्यप्रेमियों के प्रति आप क्या कहेंगे, जिनकी वसीयतें काफी दिनों तक चर्चा का विषय रही हैं। फ्रांस के एक डॉक्टर के मरने पर उसकी वसीयत पढ़ी गयी तो लोग परेशान हो उठे। उस डॉक्टर ने लिखा था कि उसकी संपत्ति से हर साल उस स्त्री या पुरुष को पुरस्कृत किया जाए, जिसकी नाक सबसे सुंदर हो। इसी प्रकार एक आजीवन अविवाहित रहनेवाले व्यक्ति की वसीयत में लिखा था, 'मेरे इस सुंदर आलीशान घर में केवल वे बूढ़ी महिलाएं रखी जाएं, जो अपने जीवन में विवाह के लिए निराश हो चुकी हों।'

कैलिफोर्निया के एक धनी व्यक्ति को यह सनक सवार हुई कि उसकी

कब्र पर सदैव हरी घास उगी रहनी चाहिए । इसलिए उसने अपनी वसीयत में, सारी संपत्ति का मालिक एक ट्रस्ट को बनाया । फिर यह भी लिखा कि मेरी कब्र पर सदैव हरी घास उगाये रखने की जिम्मेदारी इस ट्रस्ट की होगी । जिस दिन वहां उगी हुई घास पीली दिखायी दे, उसी दिन इस ट्रस्ट को भंग समझा जाए ।

कुरसी, टेबल, दरवाजे पर वसीयतें

वसीयतनामों में लिखी बातें तो सिरफिरेपन का नमूना हैं ही, जिन चीजों पर ये वसीयतनामें लिखे जाते हैं, उनसे संबंधित कई किस्से भी सनकीपन का परिचय देते हैं । कुरसी, टेबल, चमड़ा, घोंघे आदि का इस्तेमाल वसीयतें लिखने में हुआ है । एक महाशय ने अपने घर के दरवाजे पर लाल रंग से वसीयत लिखी थी ग्रौर उसके गवाहों के भी दस्तखत करवाये थे । उसके मरने के बाद जब संपत्ति के बटवारे का मामला अदालत में पेश हुआ तो प्रमाण के रूप में वह दरवाजा उखाड़कर अदालत में ले जाया गया । इसी प्रकार ब्रिटेन का एक धनी व्यक्ति स्केटिंग का शौकिन था । एक बार वह फिसलकर गिरा ग्रौर घायल हो गया । अपना ग्रंत निकट समझकर उसने बरफ पर ही वसीयतनामा लिख डाला था । इससे भी विचित्र काम किया था उस व्यक्ति ने जो आटे का व्यापारी था ग्रौर आटे की ही एक बोरी पर उसने अपना वसीयतनामा लिख रखा था । संसार के सबसे छोटे वसीयतनामे वे हैं, जो सिगरेट लाइटर, हाथ की घड़ी ग्रौर डाक टिकट पर लिखे गये हैं । जरा सोचिए इनके लिखनेवालों के सनकीपन के बारे में ।

●

वचनवीथी

अपने लक्ष्य को न भूलो, अन्यथा जो कुछ मिलेगा उसी में संतोष मानने लगोगे ।
—बर्नार्ड शा

सच्चरित्रता का महान नियम, परमेश्वर के बाद, समय का सम्मान करना है ।
—लेवेटर

जिसके साथ सत्य है वह अकेला होता हुआ भी बहुमत में है ।
—डगलस

मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है; क्योंकि यह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है ।
—चर्चिल

विश्व में सबसे स्वाभाविक सुंदरता ईमानदारी और नैतिक सचाई है ।
—शैफ्ट्सबरी

सफलता की कुंजी केवल यह है कि वह करो, जो तुम अच्छी तरह कर सकते हो और अपने हर कार्य को भली-भांति करते समय यश का विचार तक न आने दो ।
—लांगफैलो

सन १८३५ का काला प्रेस-कानून

● ल० अशोक
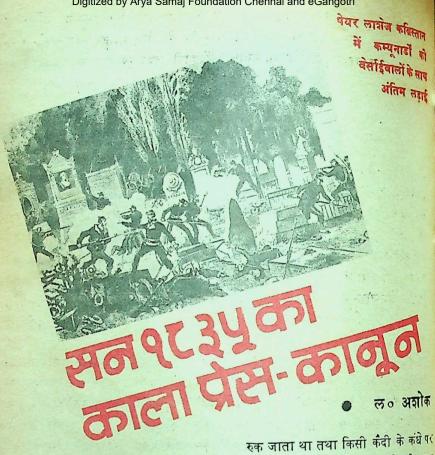
स्थान—पेरिस की एक गली। मई, १८७१ के आखिरी दिन। गृहयुद्ध में कैदी बनाये गये हजारों पेरिसवासी जंजीरों में जकड़े, सड़क के किनारे कतारों में खड़े थे। वेर्साई का ४१ वर्षीय क्रूर जनरल गैलीफें एवं उसके सैन्य अधिकारी घोड़े से उतरे और बायीं ओर से पंक्तियों का निरीक्षण करने लगे।

धीरे-धीरे चलते हुए और पंक्तियों पर निगाह दौड़ाते हुए जनरल कहीं-कहीं रुक जाता था तथा किसी कैदी के कंधे पर हलकी-सी थाप लगाकर उसे पंक्ति से बाहर आ जाने को कहता था। इस क्रम में वे एक महिला-कैदी के निकट पहुंचे। वह कतार से निकलकर जनरल के पैरों पर गिर पड़ी और अश्रुपूरित आवाज में कहने लगी, "मुझ निर्दोष को छोड़ दीजिए!!"

वह अभूतपूर्व रक्तपात

"मैं पेरिस के सभी थियेटर देख चुका हूं, मदाम! आपके इस अभिनय से मैं नहीं पिघलनेवाला!!" जनरल ने कहा।

नाटे कद का अदॉल्फ थियेर राजनीति में पूर्णतः एक अविश्वसनीय व्यक्ति था। सत्ता-लोलुपता, विलासप्रियता तथा असाधारण दंभ के लिए मशहूर, वह अपने-आपको एक कुशल पत्रकार, चालाक वक्ता, महान क्रांतिकारी तथा एक ईमानदार इतिहासकार मानता था। यद्यपि वह इनमें से कुछ भी न था—तब भी राजनीतिक धूर्तता में उसे जरमनी के नियंता अदॉल्फ हिटलर का गुरु माना जा सकता है।

उसका इशारा पाकर वेर्साई-सैनिकों ने उन चुने हुए सैंकड़ों कैदियों पर लगभग बीस मिनट तक गोलियां चलायीं। यह सब संदेह में पकड़े गये इन अभागों को मृत्युदंड था।

उन्हें जीवित ही दफनाया गया

उनमें से कई कैदी घायलभर हुए थे। पर उन्हें भी 'सेंट-जाक-ला वूशियेर' के निकटस्थ मैदान में दफना दिया गया। सैनिकों द्वारा जल्दीबाजी में की गयी यह कार्रवाई दफनाने की मात्र खानापूरी थी। अधूरे दफनाये उन घायलों की कराहें, रात की निस्तब्धता को चीरकर इर्द-गिर्द के घरों में पहुंचने लगी। वहां सवेरे पहुंचे निवासियों ने कब्रों से बाहर निकली कई बंधी मुट्ठियां देखीं।

उत्थान और पतन 'पेरिस-कम्यून' का

फ्रांस का यह अभूतपूर्व नरसंहार 'पेरिस-कम्यून' के विरुद्ध था, जिसे फ्रांसीसी जनता ने २८ मार्च, १८७१ को शांति, समाजवाद तथा विश्वबंधुता की स्थापना के लिए अस्तित्व में लाया था। अपने इन्हीं आदर्शों के लिए उन लोगों ने ६ मई, १८७१ को कुख्यात खूनी गिलोटिन को जलाया। नेपोलियन द्वारा सन् १८०६ में निर्मित साम्राज्यवादी प्रतीक—'प्लास वांदोम विजय स्तंभ' को भी इन क्रांतिकारियों ने १६ मई को ध्वस्त किया।

दुर्भाग्यवश, यह क्रांतिकारी चेतना अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकी। प्रतिक्रांतिकारी कार्रवाईयों तथा आपसी झगड़ों से ग्रस्त 'पेरिस-कम्यून' अपने जन्म के ७२ दिनों के बाद ही बिखर गया। फ्रांस पुनः अराजकता व खूनी राजनीति के भंवर में फंस गया।

हत्याएं उनका मनोरंजन था

क्रांति की इस उलटी धारा ने हजारों निर्दोष फ्रांसीसियों को वेर्साई व सातोरी की जेलों में बंद कर दिया. जहां वे मुकदमों के बिना कीड़े-मकोड़े की तरह मर-खप गये। पेरिस की गलियों में थियेर के सैनिकों ने तीस हजार व्यक्तियों का खून किया। गिलोटिन के नहीं रहने से हत्याओं की यह गति धीमी नहीं पड़ी थी। प्रतिक्रांति के जनक, फ्रांस के अमीर इस रक्तपात को वेर्साई, रुए, सेंट-देनी तथा सेंट जर्मे-आन-लै-जैसे सुरक्षित स्थानों से दूरबीनों द्वारा देखकर आनंदित हो रहे थे।

निस्संदेह, यह हिंसा प्रशा के साम्राज्यवादी शासक बिस्मार्क तथा फ्रांस के

स्वार्थी राजनीतिबाज थियेर के लिए अपरिहार्य थी। सन १७६७ में जन्मे नाटे कद का अदॉल्फ थियेर राजनीति में पूर्णतः एक अविश्वसनीय व्यक्ति था। सत्ता-लोलुपता, विलासप्रियता तथा असाधारण दंभ के लिए मशहूर वह अपने-आपको एक कुशल पत्रकार, चालाक वक्ता, महान क्रांतिकारी तेथा एक ईमानदार इतिहास-कार मानता था। यद्यपि वह इनमें से कुछ भी न था, तब भी राजनीतिक धूर्तता में उसे जरमनी के नियंता अदॉल्फ हिटलर का गुरु माना जा सकता है। फ्रांस में थियेर मजदूर वर्ग को हमेशा भद्दी-भद्दी गालियां देता रहा, जैसा कि लगभग एक शताब्दी के बाद हिटलर ने जरमनी में किया।

राजनीति में थियेर का उत्थान

फ्रांस की राजनीति में निर्धन थियेर के उत्थान की भी बड़ी दिलचस्प कहानी है। सन १८३० के पूर्व जब वह 'इतिहासकार' हुआ करता था, तब उसकी जनतंत्रवादियों से अच्छी जमती थी। मगर इनके साथ विश्वासघात कर उसने १५ फरवरी, १८३१ को पादरियों के खिलाफ दंगे करवाकर मुख्य पादरी केलेन का महल व चर्च लुटवा दिया। इस अपराध में फ्रांसीसी गद्दी के बूर्बो राजवंशीय उत्तराधिकारी, बेरी की विधवा, डचेस (जागीरदारिन) को जेल में डाल दिया गया। इन घटनाओं से बूर्बों राजवंश का कट्टर विरोधी, फ्रांस के आर्लिया वंश का शासक लुई फिलिप काफी प्रभावित हुआ। फलस्वरूप सन १८३२ में थियेर उसकी सरकार में गृहमंत्री बन गया।

दो वर्ष बाद, वह फ्रांस का प्रधानमंत्री भी बनाया गया।

सन १८३५ का काला प्रेस कानून

मंत्री बनते ही वह कई आर्थिक घोटालों में बदनाम भी हो गया। इस बदनामी को रोकने व प्रेस को चुप कराने के लिए थियेर ने अपने समर्थकों द्वारा पेरिस में मुद्रित समस्त अखबारों को जलाकर नष्ट करवा दिया। पेरिस आने-जानेवाली डाक पर सेंसरशिप भी लागू कर दी गयी।

इन अंकुशों को अपर्याप्त मानते हुए उसने सन १८३५ में फ्रांस की जनता पर 'सितंबर के काले कानूनों' को थोप दिया। इन अलोकतांत्रिक कानूनों में निहित एक धारा के अनुसार सरकार-विरोधी अखबारों को सरलता से बंद किया जा सकता था। सरकार की आलोचना करनेवाले पत्रकारों को दंडित किया जा सकता था तथा उन पर भारी जुरमाने लादे जा सकते थे।

थियेर की इन काली करतूतों की कीमत लुई फिलिप को सन १८४८ के गृह-युद्धों में अपनी गद्दी देकर चुकानी पड़ी। इसके साथ ही, फ्रांस में जुलाई, १८३० में स्थापित आर्लिया राजवंश का अंत भी हो गया। सत्ता सिमटकर नेपोलियन तृतीय के हाथों आ गयी। सन १८७० तक वही फ्रांस का भाग्य-विधाता बना रहा।

स्वयं को फ्रांस का अब्राहम लिंकन कहनेवाला थियेर सन १८४८ के पश्चात,

फ्रांस में सर्वत्र कुख्यात रहा।

लगभग २३ वर्षों तक सत्ता से दूर, प्रतिक्रियावादी कारगुजारियों में संलग्न थियेर, प्रतिक्रांतिकारियों का नेतृत्व कर सन १८७१ में पुनः फ्रांस का सर्वेसर्वा बन गया।

भ्रष्टाचार की वे बुलंदियां

बात सन१८४० की है। थियेर फ्रांस का प्रधानमंत्री था। जब उसकी सरकार ने उस पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया तब इन आरोपों का स्पष्टीकरण थियेर नहीं दे सका। संसद में वह रोता रहा।

उसके सहयोगी भी कोई दूध के धुले न थे। उनके बारे में प्रचलित था कि विदेशमंत्री जूल फाव्र व्यभिचारी था तथा विभिन्न जालसाजियों द्वारा उसने काफी संपत्ति इकट्ठी कर ली थी। गृह-मंत्री अर्नेस्ट पीकार 'बैंक ऑव फ्रांस' से तीन लाख फ्रैंक चुराने के आरोप में पहले ही दंडित हो चुका था। पेरिस का मेयर बनने के पूर्व जूल फेरी एक निर्धन बैरिस्टर था। जनरल गैलीफैं अपनी महत्त्वा-कांक्षाएं पत्नी के यौवन के सहारे पूरा करता था।

इसी तरह, लेंकोत, पूये कार्त्येय, काथेलिनो, क्लेमा थोमा व जोजेफ विनुआ भी कोई पाक साफ व्यक्ति न थे।

सन १८७१ में पुनः सत्तारूढ़ होते ही थियेर बेल-एपीन, वांदोम, वांदेय तथा पिक-कांड-जैसे कई कांडों में फंस गया। प्रशा द्वारा फ्रांस को मिले दो अरब फ्रैंक

के ऋण में से थियेर तथा अन्य मंत्रियों ने तीस करोड़ फ्रैंक हड़प लिये थे। थियेर सरकार के लिए यह नयी बात नहीं थी।

वह निराली सेना

थियेर की सेना भी विश्व में अपने तरह की अनूठी ही थी। वह सेना क्या थी—वालां-तीन के म्युनिसिपल गार्ड, पियेत्री के भूतपूर्व नगर पुलिस जन, पोप के जूआव, शारेत के शुआं, बोनापार्टवादी तथा काथेलीनों के वांदेय प्रांत के बचे-खुचे सैनिकों के बे-मेल की भीड़ थी। इस सेना के बारे में थियेर सगर्व कहा करता था—"इतनी श्रेष्ठ सेना फ्रांस ने कभी नहीं देखी।"

सन १८७७ में हुई थियेर की मृत्यु से फ्रांसीसियों ने राहत की सांस ली। क्या विश्व के वर्तमान शासक, इतिहास के उस उपेक्षित हिस्से से कोई सबक नहीं ले सकते?

—बी-१३६२, सेक्टर २,
पत्रालय धुर्वा, रांची-८३४००४

• राजेन्द्र मेहता

"साव, लगता है, गाड़ी का पहिया पंचर हो गया है।" ड्राइवर की आवाज से उसकी तंद्रा टूटी।

"तो..तो फिर व्हील चेंज कर लो।" अभियंता ने सुझाव दिया।

ड्राइवर अब तक पहिये का निरीक्षण कर चुका था। उसने चारों ओर नजर दौड़ायी और कहा, "दो-एक किलोमीटर पर ही बस स्टैंड है। वहां पंचर निकलवा लेते हैं। वहां तक तो गाड़ी चली ही जाएगी।"

"ठीक है, ऐसा ही करो। कुछ देर सुस्ता भी लेंगे।" अभियंता ने सहमति जतलायी। वह विभाग में नया-नया ही नियुक्त हुआ था और आज पहली बार ही दौरे पर निकला था।

कुछ ही देर में जीप बस स्टैंड के पास पंचर की दुकान पर रुकी और आनन-फानन में पहिये का पंचर बनने लगा। तब तक ड्राइवर ने एक तरफ जाकर बीड़ी के कश खींचे और फिर लपककर बगल की पान की दुकान से 'लिमका' ले आया। एक बोतल अभियंता की ओर बढ़ाते हुए उसने कहा, "लो साव, 'लिमका' पीओ।"

"अरे भई, यह लाने को मैंने तुम्हें कब कहा था?" अभियंता ने आश्चर्य प्रकट किया।

"इसमें कहने की क्या बात है, साव! इतनी गरमी में इससे कितनी तृप्ति मिलेगी!" ड्राइवर मुसकराया। उसके सफेद बाल बता रहे थे कि वह कई बरसों से नौकरी कर रहा था।

"मगर भले अदमी, ये चार रुपये देगा कौन? मैं कोई इतना अमीर तो नहीं हूं कि बात-बात पर पांच-सात रुपये खर्च कर दूं।" अभियंता के स्वर में विवशता थी।

"अरे साव, पेमेंट करने को आपको कह कौन रहा है?" ड्राइवर ने अब तक अपनी बोतल खाली कर दी थी।

"तो फिर, इसका भुगतान क्या तुम करोगे?" अभियंता ने व्यंग्यपूर्वक पूछा।

"मैं चार सौ रुपल्ली पानेवाला आदमी, क्या खाकर चार रुपये का ठंडा पिऊंगा साव।" ड्राइवर खिसियानी-सी हंसी हंसा।

"खैर कोई बात नहीं।" अभियंता ने अपना पर्स निकालते हुए कहा, "आज तो पैसे ले जाओ मगर आइंदा से मुझसे पूछ-कर ही कोई चीज लाना।"

"नहीं साव, पैसे देने की जरूरत नहीं है।" ड्राइवर समझाते हुए बोला।

"क्यों ?" अभियंता ठिठका।

"आप भी बड़े भोले हैं, साब। अब इस पहिये में जो एक पंचर हुआ है, उसका बिल क्या आप जेब से भुगतेंगे ?" ड्राइवर ने प्रति प्रश्न किया।

"नहीं तो। इसके लिए तो मेरे पास 'इंप्रेस्ट' है। मैं 'वाउचर' सत्यापित कर दूंगा।"

"बस तो फिर मान लीजिए कि पहिये में एक नहीं, दो पंचर हुए हैं। मैं अभी दस रुपये का 'वाउचर' बनवा देता हूं।" ड्राइवर ने खुलासा किया।

"मगर पंचर तो एक ही हुआ है ना...?" अभियंता को बात कुछ-कुछ समझ में आने लगी थी।

"आपने तो साब, लगता है सिर्फ किताबी पढ़ाई ही की है। तभी इतनी आसान-सी बात भी आपको समझ में नहीं आती। पंचरवाले को तो दूंगा पांच ही मगर अंगूठा दस पर लगवा देता हूं। उसे क्या फरक पड़ता है?" ड्राइवर ने गहरी सांस लेते हुए कहा और फिर कुछ सोचते हुए अचानक पलटकर पूछा, "और हां, साब, आप पान कैसा खाएंगे...?"

अभियंता अवाक-सा देख रहा था।

—६३, मेड़तिया सिलावटों का वास
जोधपुर—३४२००१

स्वास्थ्य परिश्रम में है और श्रम के अतिरिक्त वहां तक पहुंचने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। —वेंडेल फिलिप्स

सीपिकाएं

सागर में
एक नौका बन
तैरा जाता है
कहीं
फागुन ...
कहीं
डुबा जाता है
चुपचाप ।

●

उतरी हुई
प्रत्यंचा की
चुनौती में
आदमी—
इंद्रधनुष बन जाता है ।

●

हवा हुआ था
अबीर
गुलाल
मन हुआ था
सुबह
बिखरी थी देहरी पर
दुपहर—
रंग झूठ हुआ था।

—उषाकांता शर्मा
—२६१, सरोजनी नगर, नयी दिल्ली

औरंगजेब

वे औरतों के लिबास पहनने लगे थे

● अंशु

अबुल जफर मुईउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब आलमगीर गाजी! वह हमेशा दो तरह की शराब पीता रहा—प्रभुता-मद की और कुटिलता की भट्टी से खिंची दो आतिशा। वैसे शिया मुसलमान तो उसके विरोधी थे ही, पर जब कुंवर रामसिंह की सहायता से शिवाजी भाग निकले, तब उसका हिंदू सेनापतियों पर से भी विश्वास उठ गया। फिर वह सुन्नी मुसलमानों को खुश करने का ढोंग भी करने लगा।

विचित्र ही था औरंगजेब भी। राजनीति में भी उसका एक पांव दूध में रहा तो एक दही में। वह शेख मुईउद्दीन याहिया मदनी चिश्ती का भी भक्त रहा तो नक्शबंदिया सूफी ख्वाजा मुहम्मद मासूम का प्रशंसक भी। तभी उसके दिमाग में एक फितूर ने जन्म लिया और उसने शाही हुक्म जारी कर दिया, 'कोई भी चार इंच से लंबी दाढ़ी नहीं रखेगा।' फिर क्या था! मुहतसिब ने अपने अफसरों को इंच-माप और नाइयों के दल के साथ बिखरा दिया। जो भी लंबी दाढ़ीवाला नजर आता, उसे पकड़ लिया जाता और दाढ़ी नापने के बाद कैंची चला दी जाती।

जुकाम चलता ही गया

फिर उसके खानदान में ही बहुत साल

बाद एक और भी सिरफिरा बादशाह हुआ—मुहम्मद शाह रंगीले । जब उसकी चहेती दाश्ता ने लाल किले से तेरह मील दूर खड़ी कुतुब मीनार को देखने की हसीन जिद की, तब मुहम्मद शाह ने मौसम देखते हुए वैसा ही इंतजाम कर डाला । तेरह मील तक छिड़काव किया गया, दोनों तरफ खसखस की टट्टी की कनातें लगायी गयीं, जिन्हें तर करने के लिए सैकड़ों भिश्ती लगाये गये, मखमल की पट्टी बिछवायी गयी और गुलाब और केवड़ा छिड़कवाया गया ।
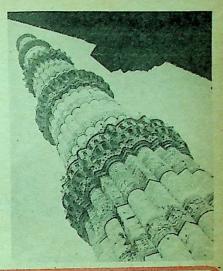
दांतों में मिस्सी, आंखों में काजल, हाथ-पांव में मेंहदी और कलाबत्तू एवं कीमखाब के लहंगे या फिर मुसलमानी जनाना लिबास । और नाज नखरे किसी कमसिन युवती जैसे ! ये थे—अमीर खां ! जिनकी सनकों का बयान विलियम इरविन ने 'दि बंगश नवाब्स ऑव फर्रुखाबाद' में किया है ।

मुहम्मद शाह रंगीले

फिर मुगल बादशाहों के अमीर उमराव को भी यह जुकाम लग गया । चांदनी चौक में स्थित राजा जुगल किशोर की हवेली आज भी खड़ी है । इन्हीं राजा साहब ने अपने बेटे कुंवर नंद किशोर की शादी पर सन १७५० में चालीस लाख रुपये खर्च किये थे और जन सामान्य से लेकर बादशाह तक, पूरी दिल्ली को ज्यौनार खिलायी थी । उन दिनों दिल्ली की आबादी ७० हजार थी !

जनाना लिबास आदत बन गयी

दिल्ली के रईसों ने भी अपने-अपने हथ-

मुगलों का चांदनी चौक
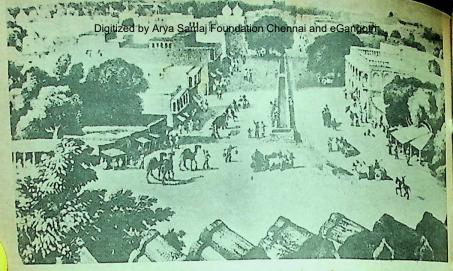
कंडे दिखलाये। 'मुरक्का-ए-दिल्ली' में दरगाह कुली खां लिखते हैं कि उन दिनों दिल्ली के रईसों में खूबसूरत लड़के रखने की होड़ लग गयी थी। और खानजहां बहादुर आलमगीरी के भतीजे फिदवी खां के सपूत आजम खां इसमें अपना जवाब नहीं रखते थे। सुर, ताल के वह इतने मंजे हुए पारखी थे कि अखाड़िया तवाइफें भी उनके आगे गाते समय बार-बार अपने रूमाल से पेशानी पर उभरे पसीने की शबनम पोंछा करतीं। और, खूबसूरत लड़कों का तो एक काफिला ही उनके साथ-साथ चलता था। लड़कों के लिए बेशकीमती रेशमी लिबास, जवाहरात की अंगूठियां, मोतियों की दोलड़ी मालाएं, आंखों में ममीरा सुरमा और माकूल सवारी का इंतजाम उनका फर्ज बन गया था। उनके समकालीन एक और भी थे—अमीर खां। वे तवाइफों के नाज-नखरों में इतना घुल गये थे कि खुद भी अपने को जनाना तसव्वुर करने लगे।

'दि बंगश नवाब्स ऑव फर्रुखाबाद' में विलियम इरविन लिखता है कि अमीर खां खुद भी औरतों का ही लिबास पहनने लगे थे और नाज-नखरे भी वैसे ही किया करते थे। दांतों में मिस्सी, आंखों में काजल, हाथ पांव में मेहंदी और कलाबत्तू एवं कीमखाब के लहंगे या फिर मुसलमानी जनाना लिबास उनकी आदत बन गयी थी।

मुगलों के वैभव की हो रही शाम में ही यूरेशियन (अंगरेज पिता एवं भारतीय माता की संतान) रईसों को भी यह हवा लगी। सर डेविड ऑक्टरलॉनी की तेरह रखैलें, तेरह हाथियों पर अलग-अलग बैठकर शाम को हवाखोरी को निकलती थीं। उधर कर्नल जेम्स स्किनर की चौदह रखैलें पांच-पांच बार दिन में

पोशाक बदलती थीं। हैदर हर्सी ने अपने पेट पर पचेसी की बिसात ही गुदवा ली थी और जब वह सो जाता, तब उसकी रखैलें उसके पेट पर खुदी पचेसी पर गोटियां रखकर खेला करतीं!

बंगाल के सूबेदार सरफराज खां को यह खब्त सवार हो गया था कि उसे अपने बेटे के लिए चांद-सी बहू की तलाश थी। और, जब उसके मुसाहिब राज्य में जगह-जगह चलते-फिरते 'चांद' देखते, तब उसे खबर करते। सरफराज खां उसी दम उस औरत को महल में बुलवाता और उसकी शक्ल गौर से देखता, फिर कहता, "हां ऽऽ। पर——जैसी बहू का मैंने तसव्वुर किया है, वैसी नहीं है।" फिर उसे वापस भिजवा देता। जब शरारती मुखबिरों ने खबर दी कि नगर सेठ फतह चंद के बड़े बेटे की बहू तो यकीनन ही चांद का टुकड़ा है, तब सरफराज ने उसे महल में बुलवा भेजा। आखिर नगर सेठ फतह चंद भी नत्थू खैरा नहीं था, पर सूबेदार के नक्कारे के सामने नगर सेठ की तूती भला क्या

सर डेविड ऑक्टरलोनी

सुनायी देती। उसके खानदान की बहू को आकर अपना चांद-सा मुखड़ा दिखाना ही पड़ा। गनीमत यह हुई कि सरफराज ने उसे 'कबूल सूरत' करार नहीं किया। सेठ फतह चंद उसी दिन से उसका जानी दुश्मन बन गया और आगे चलकर उसने अलीवर्दी खां से मिलकर ऐसा षड्यंत्र रचा कि सरफराज को सूबेदारी और जान दोनों से ही हाथ धोने पड़े।

४८, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली-१६

फ्लोरिडा (अमरीका) के मेन्स गेन्सविले शहर में अभी हाल ही में एक आश्चर्यजनक घटना घटी। वहां के ग्रेट अमरीकन बैंक की एक शाखा में जेम्स विलकॉक्स नामक व्यक्ति पहुंचा और उसने कैश-काउंटर पर बैठी एक क्लर्क से कुछ डॉलर देने के लिए कहा। वह युवती उसकी इस तरह की मांग देखकर भयभीत हो उठी, जबकि जेम्स के पास किसी भी प्रकार का कोई हथियार नहीं था। उसने तुरंत कुछ डॉलर उसके सामने रख दिये। डॉलर प्राप्त कर जेम्स ने स्वयं पुलिस-स्टेशन फोन किया और पुलिस को बुलाकर अपने-आपको उसके हवाले कर दिया। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि जेम्स विलकॉक्स एक अच्छा और योग्यताप्राप्त व्यावसायिक व्यक्ति है, पर इधर काफी समय से बेरोजगार है और मधुमेह का पुराना रोगी है। उसने यह सब इसलिए किया ताकि उसे जेल में खाना और रोग का इलाज दोनों आसानी से प्राप्त हो सकें। मधुमेह रोग के कारण ही उसे अनावश्यक समझकर नौकरी से हटा दिया गया था।

जब लखनऊ की गद्दी पर गाजीउद्दीन हैदर आये, तब उन्हें अपने कुत्ते के लगातार भौंकने पर बड़ी फिक्र हुई। जब दरबार के मुसाहिबों से इसका सबब पूछा, तब एक कामिल उस्ताद बोले, "हुजूर, अगर इस कुत्ते को एक सेर गुलकंद और एक बोतल गुलाब जल रोज मिले तो यह यकीनन संजीदा हो जाएगा।"
नवाब साहब ने उसी दिन से कुत्ते के लिए यह गिजा बांध दी।

दुनिया की सबसे महंगी कार ने कचरा ढोया

• बाला दुबे

नजाकत और लताफत का चुलबुला शहर लखनऊ। और वहां के नवाब—एक से बढ़कर एक। कुछ ऐसे फितरती कि तबियत हैरान हो जाती। नवाब आसफुद्दौला की यह जिद भी कितनी हसीन थी कि जिस दिन वह जैसी भी पोशाक पहने, उस दिन कोई भी लखनऊ-भर में वह पोशाक नहीं पहन सकेगा। एक दिन वे एक छींट का कुरता पहने शहर घूमने निकले तो देखते क्या हैं कि एक जवां मर्द हू-ब-हू वही छींट पहने किसी चंचल तमोलिन से बतरा रहा है। आसफुद्दौला वापस लौट पड़े और अपने सदर-छीपी को बुलवाया। सदर-छीपी शहर के इज्जतदार सौदागर थे, दो बड़े कारखाने थे, दर्जनों नौकर चाकर थे। नवाब आसफुद्दौला ने सदर-छीपी साहब को उसी दम एक गधे पर बिठवाकर पूरे लखनऊ की सैर करवा दी!

हकीकत से दूर

जब लखनऊ की गद्दी पर गाजीउद्दीन हैदर आये, तब उन्हें अपने कुत्ते के लगातार भौंकने पर बड़ी फिक्र हुई। जब दरबार के मुसाहिबों से इसका सबब पूछा तब एक कामिल उस्ताद बोले, "हुजूर, अगर इस कुत्ते को एक सेर गुलकंद और एक बोतल गुलाब जल रोज मिले तो यह यकीनन संजीदा हो जाएगा।"

नवाब साहब ने उसी दिन से कुत्ते के लिए यह गिजा बांध दी। कुत्ता तो खैर दो साल बाद सन १८१६ में परम गति को प्राप्त हो गया, पर एक सेर गुलकंद ग्रौर एक बोतल गुलाब जल यार लोग सन १८५० तक वसूल करते रहे। ऐसे ही नवाब गाजीउद्दीन की तोपों को खींचने-वाले १७३० बैलों का राशन अवध के खजाने से काफी वर्षों तक मिलता रहा, जबकि हकीकत यह थी कि तोपखाने के अस्तबल में सिर्फ बीस बैल ही थे!

चिड़ियाघर का भूत

लखनऊ के नवाबों की इस खूबसूरत लड़ी में एक नायाब मोती ग्रौर भी हुआ है —नवाब वाजिद अली शाह। सन १८५६ में जब ग्रंगरेजों ने इनसे घर-घूरा छीनकर

अफजलउद्दौला

इन्हें कलकत्ते बसा दिया, तब भी ये हुस्नो-इश्क के दंगल लड़ते रहे। पहले तो जाते ही आपने एक काली कलूटी मिश्तन अब्बसान से मुता (अस्थायी विवाह) कर डाला ग्रौर फिर थोड़े दिन बाद एक हरिजन से भी शादी कर ली, जिसका नाम रखा गया मुस्तफा बेगम। एक बार जब उन्हें चिड़ियाघर बनाने का भूत सवार हुआ, तब दूर-दूर से लफ्फाजी बहेलिये अपना-अपना नायाब माल लेकर उनके पास आये। एक खलीफा ने उन्हें मोरों की जोड़ी तीस हजार रुपयों में बेच दी, तो दूसरे ने पिंजड़े सहित पंछियों के पचास हजार ऐंठ लिये। पर शाबाशी का हकदार तो वह बहेलिया निकला, जिसने मुरदाघाट के पास से पकड़कर एक खालिस हिंदुस्तानी गिद्धों का जोड़ा उन्हें सिर्फ पचास हजार रुपयों में दे डाला।

तराशी रियासतों के हाल

बादशाह-नवाबों के दौर के बाद फिर नयी-नयी तराशी रियासतों पर भी निगाह अटककर रह जाती है। वहां भी एक से

महबूब अली पाशा

बढ़कर एक मर्दे मोमिन हुए हैं। इंदौर राज्य के महाराजा जसवंत राव होल्कर को जब ग्रंगरेजी शराब 'चैरी ब्रांडी' का चस्का लगा, तब उन्होंने बंबई की विला-यती शराबों की दुकानों से सारी पेटियां खरीद डालीं। मैल्कम लिखता है कि
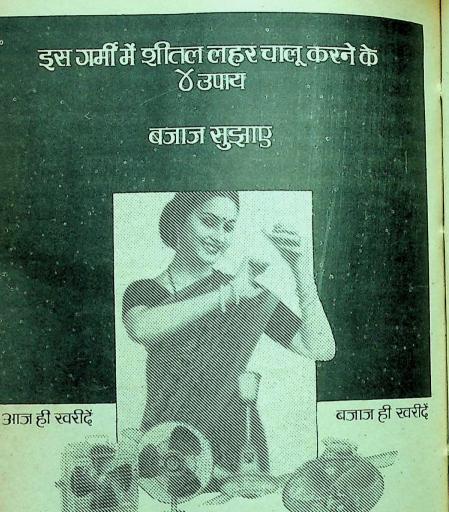
'... बंबई में महाराजा होल्कर ने एक बूंद तक चैरी ब्रांडी की नहीं छोड़ी।'

पांव लटकवा ही दिये

वैसे अंगरेजों की अक्ल ठिकाने लगानेवाले महाराजाओं-नवाबों की कमी इस देश में नहीं थी। निजाम हैदराबाद अफजुल उद्दौला के दरबार में सब उनके सिंहासन के आगे फर्श पर बिछी कालीन पर बैठा करते थे। अंगरेज रेजीडेंट को यह अखरा और उसने कुरसी की मांग की, पर निजाम साहब ने एक नहीं सुनी। फिर रेजीडेंट ने दलील पेश की कि चुस्त पतलून पहनने के कारण वह आलती-पालती मारकर बैठ नहीं सकता है। लिहाजा पांवों को लटकाकर बैठना बहुत जरूरी है। निजाम अफजलुद्दौला ने दूसरे ही दिन अपने सामने फर्श का एक हिस्सा खुदवा दिया और इस तरह से रेजीडेंट साहब को पांव लटका-कर बैठने की सुविधा दे ही डाली !

तलवार को माला पहनवायी

उनके बेटे निजाम महबूब अली पाशा ने अपना कुछ और ही जलवा दिखाया, अंगरेज वाइसराय लार्ड कर्जन को। उन दिनों लार्ड कर्जन ने हैदराबाद के बरार का इलाका हथिया लिया था और निजाम को उसके एवज में दिया था खिताब— जी. सी. बी. यानी 'नाइट ग्रैंड क्रॉस ऑव बाथ', पर निजाम महबूब अली पाशा जी. सी. बी. का अर्थ सबको बतलाते फिरते 'गेव कर्जन बरार'। जब अगले साल सन १९०३ में बादशाह एडवर्ड सप्तम के राज-गद्दी पर बैठने की खुशी में दिल्ली दरबार किया गया, तब लार्ड कर्जन ने स्वयं अपने हाथों से महाराजाओं के गले में मालाएं पहनाने का निश्चय किया था। माला पहननेवाले राजाओं की कतार में सबसे आगे खड़े थे निजाम हैदराबाद महबूब अली पाशा। जैसे ही कर्जन माला थामे स्वयंवर-सुंदरी के अंदाज में आगे बढ़ा तो बजाय गरदन झुकाने के निजाम ने अपनी म्यान से तलवार निकाल ली और खड़े रहे। लार्ड कर्जन सन्नाटे में आ गया और फिर एक कदम पीछे हट गया। "यह क्या ?" उसने आश्चर्य से पूछा।

महबूब अली पाशा बरार के इलाके को भूले नहीं थे। सधे हुए स्वर में उन्होंने कहा, "गरदन की क्या बिसात? आज रही, ना रही। कल यह जा भी सकती है, पर यह खानदानी तलवार मुस्तकिल वफा की निशानी है। आप इस तलवार को माला पहनायें।"

मन मारकर लार्ड कर्जन को निजाम की नंगी तलवार को ही माला पह-नानी पड़ी। ऐसे ही उदयपुर के महाराजा फतह सिंह ने भी अंगरेजों को मखमल में लपेटकर जूता मारा था। उदयपुर राणाओं ने कसम खा रही थी कि जब तक देश स्वतंत्र नहीं हो जाएगा, तब तक उनके वंश से कोई भी दिल्ली नहीं जाएगा।

इतिहास गवाह है कि सन १९४७ में, पहली बार कई सौ वर्ष बाद उदयपुर के महाराजा दिल्ली आये थे।

धेले की भी परवाह नहीं की !

महाराजा फतह सिंह के काल में जब बादशाह जार्ज पंचम भारत आये, तब महाराजाओं को वाइसरॉय ने दिल्ली बुलवाया। उदयपुर के महाराणा ने साफ मना कर दिया। फिर वाइसरॉय ने बड़ी मिन्नतों के बाद, उन्हें दिल्ली आने के लिए राजी किया। महाराणा फतह सिंह दिल्ली जाने को रेलगाड़ी में बैठे ही थे कि उदयपुर के एक चारण ने उनके पास, पुरानी कसम को याद कर गाना शुरू कर दिया। महाराणा का स्वाभिमान फिर जाग उठा और वे गाड़ी से उतर पड़े। बाद में यह तय हुआ कि दिल्ली की हद से पहले उन्हें एक विशेष प्लेटफार्म पर बादशाह जार्ज पंचम से मिलवाया जाएगा। इस झमेले से महाराणा फतह सिंह भी तंग आ चुके थे। उन्होंने वायसरॉय का मश्विरा मान लिया। दिल्ली से दूर एक प्लेटफार्म पर बड़ी सजावट हुई, वहां बादशाह जार्ज पंचम ने महाराणा फतहसिंह से हाथ मिलाया। बादशाह से हाथ मिलाने और भी रियासतों के राजा लोग खड़े थे। महाराणाजी बादशाह जार्ज से हाथ मिलाते ही पीछे मुड़े जहां उनके तीन नौकर झपटकर आगे आ गये। एक के हाथ में चांदी की चिलमची थी, दूसरे के हाथ में गंगाजल से भरा सोने-चांदी का गंगा-जमुनी 'जग' और तीसरे के हाथ में तौलिया। महाराणा ने उसी वक्त हाथ धोये और फिर पोंछकर राजाओं की उस कतार में खड़े हो गये। जार्ज पंचम और वायसरॉय यह देखकर सकते में आ गये, पर महाराणा फतह सिंह ने धेले की भी परवाह नहीं की। भरतपुर के महाराजा राम सिंह ने तो अंगरेजों को छठी का दूध याद दिलवा दिया था। जब वे इंगलैंड गये, तब प्रसिद्ध मोटर रोल्स रायस कंपनी के शो रूम में घुस गये। उस समय कंपनी का मैनेजर किसी अंगरेज रईस को 'रोल्स रायस' लेने के लिए फंसा रहा था। उसने महाराजा को सर हिलाकर औपचारिक अभिवादन तो किया, पर उस समय उनसे बात नहीं की। महाराजा ने यह देखकर अपने प्राइवेट सेक्रेटरी से कहा, "जा सुसरे से जे पूछौ कि जा बखत कितेक मोटर गाड़ी जा के पास हतैं।"

जब प्राइवेट सेक्रेटरी ने बीच में ही, "पार्डन मी" कहकर उस मैनेजर से पूछा तो वह ठंडे शिष्टाचार से बोला, "इस वक्त हमारे शो रूम में तीन गाड़ियां हैं और कदाचित आपको रोल्स की कीमत तो मालूम होगी ही। इस मॉडल की गाड़ी का दाम है करीब एक लाख रुपये।"

प्रतिष्ठा-चिह्न मलवा ढो रहा था

जब महाराजा ने तीनों रोल्स खड़े-खड़े खरीद डालीं, तब वे दोनों अंगरेज सकपका गये थे। कोई महीनेभर के अंदर तीनों 'रोल्स' भरतपुर स्टेट पहुंची। तब महाराजा रामसिंह ने इत्मीनान से हुक्म दिया, "इन सुसरिन की पीछे कूड़े के ट्रेलर लगवा दो।"

औरतें भी सिरफिरे शगल में शिरकत करती रहीं हैं। अय्याश मिजाज बेगम समरू ने अपनी एक हसीन बांदी को केवल इस शक पर कि वह उसके चहेते पर डोरे डालने की कोशिश कर रही है, उसे अपने सामने ही जमीन खुदवाकर जिंदा गड़वा दिया। फिर वह चौरस की हुई उसकी कब्र पर बैठकर इत्मीनान से हुक्का गुड़गुड़ाती रही!

बेगम समरू

रोल्स रायस, संसार का सवश्रेष्ठ कार—इंगलैंड का प्रतिष्ठा-चिह्न—भरतपुर राज्य में चुंगी के कूड़े ढोने का काम करने लगीं। और जब कंपनीवालों को पता चला, तब उन्होंने फौरन ही सेक्रेटरी ऑव स्टेट के माध्यम से वाइसरॉय से शिकायत की। बड़ी मिन्नतें करने के बाद महाराजा माने थे। फिर उन्होंने कहा, "अब हम इन कूड़े ढोनेवाली गाड़ी में तो नाय बैठेंगे। मेरे खयाल से इन्हें बेच-बाच डालौ।" और तीनों रोल्स रॉयस औने-पौने दामों में बिक गयीं। बहुत से लोगों का कहना है कि एक गाड़ी का इंजिन निकालकर मोटर बोट में 'फिट' कर दिया गया था, जो काफी समय तक डीग की छोटी झील में पड़ी रही थी।
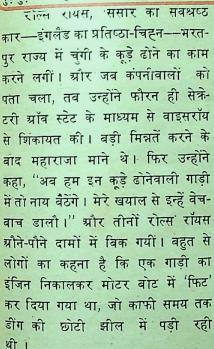
इसी प्रकार इसी स्टेट के एक महाराजा जब अपनी 'इंग्लिश गाड़ी' में बैठकर दिल्ली जा रहे थे, तब रास्ते में गाड़ी खराब हो गयी। महाराजा ने उसी जगह उस गाड़ी को कौड़ियों के मोल बेच डाला और फिर एक टैक्सी में बैठकर दिल्ली पहुंचे!

कोई साठ साल पहले की बात बतलाते हैं कि मध्यप्रदेश के सागर शहर के पास स्थित धाना में एक तिवारीजी रहते थे, जो बड़े ठस्से के रईस थे। उन्हें लोग धाना के तिवारी कहा करते थे। जब उनकी बेटी की शादी हुई, तब लड़केवाले ने बारौठी के समय सब बरातियों के गले में सोने की जंजीरें पहनवा दी थीं। लड़के के बाप के यह तेवर देखकर धाना के तिवारीजी मुसकराये। उन दिनों शाम के वक्त जनवासे में बरातियों के लिए दूध की व्यवस्था की जाती थी। तिवारीजी ने उसी शाम को तीस भैंसें और तीस ही घोसी जनवासे पहुंचवाये। भैंसों और घोसियों के गले में भारी सोने की जंजीरें पड़ी हुई थीं!

—एफ-४८ ग्रीनपार्क,
नयी दिल्ली—११००१६

आई रितु बसंत बहारन

• सुधारानी श्रीवास्तव

एक बार कहीं मैं यात्रा कर रही थी। अचानक गाड़ी रुक गयी। किसी ने चेन खींच दी थी। थोड़ी देर में एक देहाती दौड़ता दिखा। चूंकि वही गाड़ी से उतरकर भागा था, अतः गार्ड ने उसे पकड़ा और पूछा, "तुमने चेन खींची थी ?"

"हां हजूर, हमनेई चेन खैंची रई।"

"क्यों ?"

"हमाई टुपिया गिर गयी रई।"

"लाओ पचास रुपया जुरमाना।"

"काये हजूर ?"

"क्यों, क्या, तुम्हारी टोपी की कीमत पचास रुपये से ज्यादा है !"

"हजूर ! टुपिया हमारी इज्जत है, औ का हमाई इज्जत पचास सौ रुपिया नइयां!" गार्ड निरुत्तर हो गया।

चौकड़िया फाग

ठीक इसी प्रकार बुंदेली साहित्य की 'पाग', आन-बान और शान ईसुरी की फागें हैं। 'ईसुरी' जिनका पूरा नाम ईश्वरीप्रसाद था। जब उनका मन पढ़ाई-लिखाई में नहीं लगा, तब उन्हें खेत की रखवाली का काम सौंपा गया। फागुन मास में चना आता है और हरे चने भूनकर गांवों में लोग 'होरा' खाते हैं। ईसुरी भी होरा खाते-खाते

छंद रचते। उनके छंद 'फाग' को बुंदेलखंड में चौकड़िया फाग कहा जाता है। नाम के अनुरूप यह चार कड़ियों का होता है। १६,१२ मात्राओं पर यति होकर यह २८ मात्रा का छंद है।

सरल, अपढ़ 'ईसुरी' के लिए कहते हैं कि उन्हें शारदा सिद्ध थीं। पद्माकर और ईसुरी के छंदों की समानता देखिए—

पद्माकर—

कूलन में केलिन में कछारन में कुंजन में
क्यारिन में कालिन कलिन में किलकंत है
कहे पद्माकर परागन में पानहु में
पानन में पिकन में पलाशन पगंत है
द्वार में दिशान में दुनी में देश देशन में
देखो दीप दीपन में दीपत दिगंत है
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में
बनन में बागन में बगरी बसंत है।

ईसुरी—

अब रितु आई बसंत बहारन
पान फूल फल डारन
बागन बनन बंगलन बेलिन
बीथि नगर बजारन
हारन हद्द पहारन पारन
धवल धाम जल धारन
तपसी कुटी कंदरन माही
गयो बैराग बिगारन
'ईसुर' अंत कंत ही जिनके
तिनें देत दुःख दारन।

पद्माकर तो केवल बाह्य सौंदर्य के वर्णन तक ही सीमित रहे, किंतु भाषा के अलंकार के साथ ईसुरी का ऋतुराज कंदराओं में घुमकर तापसियों का 'वैराग' 'बिगारने' लगा है। इतना ही नही विरहणियों को तो दारुण दुःख देता है।

जन कवि : ईसुरी

ईसुरी सच्चे अर्थों में जन कवि थे। उनको इतनी अधिक ख्याति मिल चुकी थी कि समस्या चाहे घरेलू हो, राजनीतिक हो अथवा सामाजिक, उसे सुलझाने के लिए ईसुरी को ही याद किया जाता था। एक वार उनको भौनिया (हरपालपुर) की रानी का निमंत्रण मिला। ईसुरी के पहुंचने पर रानी ने उनकी बड़ी आवभगत की किंतु ईसुरी ताड़ गये कि रानी बड़ी अनमनी है तथा अप्रसन्न दिख रही है। उन्होंने

ईसुरी की कुछ फागें

अंखिया पिस्तौलें सी भरकें
मारन चहत समर में
गोली लाज दरद की दारू
गज की लेन नजर के
देत लगाय सेन कौं सूजन
पलकों टोपी धरकें
ईसुर फेर होत फुर्ती में
कोउ कहां लौ बरके

मानस होने के ना होने
रजउ बोल लो नौने
जियत जियत लौ सबके नाते
परें घरी भर रौने
कौन कौन ने प्राण छोर दये
को कै संगे कौने
ईसुर हात लगे ना हंडिया
आवै सीन टटौने।

कारण पूछा, तो मालूम हुआ कि रानी के पति ने एक अन्य ठकुराइन से प्रेम-संबंध स्थापित कर लिये हैं। जब भोजन का समय आया, तब रानी ने अलोना (बिना नमक का) भोजन परोसा। ईसुरी संकेत समझ गये, और उन्होंने प्रेम के साथ अलोना भोजन किया तथा एक फाग बनाकर राजा को सुनायी--

भौंरा जात पराये बागै
तनक लाज नई लागै
घर की कली कौन कम फूली
काय न लेत परागै
कैसे जाय लगाउत हुइये
और आंग सो आंगे
जूंठी जाठी पातर 'ईसुर'
भावै कूकर कागै।

ईसुरी ने जब निर्भीकता के साथ इस फाग को राजा साहब को सुनाया, तब राजा साहब का माथा लज्जा से झुक गया और उन्होंने तत्काल उस ठकुराइन को छोड़ दिया। इस प्रकार के अनेक प्रसंग ईसुरी की फागों से जुड़े हैं।

स्यामबाई फागों में छलकी

ईसुरी का जन्म संवत १८८१ के लगभग मउरानी पुर (झांसी) के निकट मेढ़की ग्राम में हुआ था। ये जुझौतिया ब्राह्मण कुल के थे। इनके पिता का नाम भगवती प्रसाद एवं माता का नाम गंगाबाई था। अपने तीन भाइयों में ईसुरी सबसे छोटे थे। चूंकि इनका मन न तो काम में लगता था और न पढ़ाई-लिखाई में, अत: जैसा कि गांवों में बाल-विवाह का रिवाज है, इनका ब्याह बचपन में नहीं हो सका। किंतु जब इनकी फागों की धूम मची, तब इनकी सगाई की बातें आने लगीं और रामप्रसाद पुरोहित की कन्या स्यामबाई से इनकी विवाह हो गया। इस समय ईसुरी की आयु लगभग २५ वर्ष की थी। स्यामबाई बहुत सुंदर थीं, अत: इनके हृदय में शृंगारी भावों का प्रस्फुटन हो गया, जो उनकी फागों में

छलक गया--

स्यामबाई दौज को चंदा
डार प्रेम को फंदा
टातई दिन ऐसे राउतीं
ज्यों गरे माय गलगंदा।

ईसुरी की फागें लहुर गांव में इतनी प्रसिद्ध हुईं कि धौरा गांव के धीरे पंडा आकर ईसुरी के शिष्य बन गये। धीरे पंडा के गले में मां शारदा विराजती थीं।

ईसुरी की पत्नी ज्यादा दिन जीवित नहीं रहीं। इससे इन्हें सदमा पहुंचा। इनके मात्र एक पुत्री हुई, जिसका नाम गुरन बाई था।

ईसुरी राधा-रानी के अनन्य भक्त थे। राधारानी के प्रति उनके फागों में 'रजऊ' संबोधन पाया जाता है। अपने अंत समय में, जब उन्हें यह भान हो गया कि यह शरीर अब नहीं रहेगा, तब उनके फागों में यह आभास स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ--

बिधना करी देह ना मेरी
रजऊ के घर की देरी
आवत जात चरन की धूरा
लगती तन हर बेरी
लागौ आन कान के ऐंगर
बाज़न लगी बजनेरी
बाट बहुत दिन हेरी।

अंत काल के समय उनकी पुत्री गुरन बाई उन्हें अपने गांव धवार ले आयी थीं। ईसुरी की चेतना-शक्ति अंत तक सबल रही। इसका प्रमाण उनकी यह अंतिम फाग है--

मेरी राम राम सब खैया
राखैं लाज गुसैयां
कुटुम कबीला घेरे बैठे
भर-भर देत तलैयां
एकें हांत मूड़ पे फेरे
एकें पकरे बैयां
'ईसुर' को धरती धर दैयो
करो संकलप गैया।

ईसुरी की मृत्यु संवत १९६६ मार्ग-शीर्ष शुक्ल सप्तमी, शनिवार को हुई। आज भी धवार ग्राम में उनकी समाधि चबूतरे के रूप में है, जहां पर बुंदेलखंड के समस्त साहित्य-प्रेमी बसंत और होली के उत्सव पर बड़ी श्रद्धा के साथ उनकी समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित करते हैं। ईसुरी की फाग सच्चे अर्थों में बुंदेली की 'फाग' है।

--२०८/२, गढ़ा फाटक,
जबलपुर, म. प्र.

पत्नी-पीड़ित संघ की याचना-
पत्नीम् शरणम् गच्छामि!

• सुरेश नीरव

समय के साथ-साथ हमारी सभ्यता, संस्कृति सब कुछ बदलती जाती है और समय के इस प्रवाह के साथ-साथ हमारे आसपास बिखरे जीवन के मूल्य और मुहावरे तक बदल जाते हैं। छठवें दशक में हिंदी साहित्य का 'एंग्री यंग मैन' 'बिगड़ैल बैल' होता है, जो आठवें दशक के हाशिये पर आकर इतना रेडियो-धर्मी हो जाता है कि छूते ही करेंट मारने लगता है। और, जब आदमी बदलेगा तो समाज बदलेगा और जनाब, जब समाज बदलेगा तो 'समाज का दर्पण' साहित्य भला बिना बदले कैसे रह सकता है? साहित्य का बदलाव, मुहावरों का भी 'ले आउट' बदल देता है। अब सोचिए न कि साहित्य के आठवें दशक में जहां सृजन-यात्रा अपनी अभिव्यक्ति 'पति-मंच' बनाकर करने को बलात् विवश हो, वहां यह उक्ति कि-

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी

कितनी 'आउट डेटेड' लगती है? डिस्को के युग में लंगुरिया गीत (लोकगीत) की तरह! श्रद्धेय गुप्तजी, यदि आज आप होते तो अबलाओं के रासायनिक परिवर्तन को देख बड़े विस्मित होते। अबला अब 'किंग साइज' सबला बन चुकी है और जिस आंचल और दृगों का ऐतिहासिक वर्णन आपने अपने कवित्त में अभिव्यक्त किया था, उन दृगों और आंचलों का भूगोल अब आमूल-चूल बदल गया है--बंगलादेश के बनजाने के बाद पाकिस्तान के नक्शे की तरह। कृषि-प्रधान भारत देश, अब नारी-प्रधान देश हो गया है। यत्र-तत्र-सर्वत्र, किसिम-किसिम की डिजायनोंवाली नारियां, नयनाभिराम मुद्राओं में फल-फूल
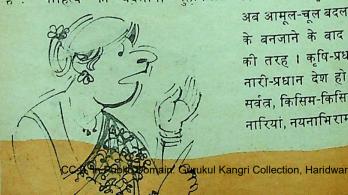
अब समय बदल चुका है। पराक्रम के तमगे अब वीरांगना पत्नियों के सीनों पर सुशोभित हो रहे हैं। मादा जाति के इतिहास का स्वर्णकाल जाज्वल्यमान है। निस्सहाय पति बेनागे पिट रहे हैं। कहीं-कहीं यह सांस्कृतिक कार्यक्रम इतनी निष्ठापूर्वक संपन्न हो रहा है कि 'ओवर टाइम' दिये-लिये जा रहे हैं।

रही हैं और बेचारा सर्वहारा, असहाय, निस्सहाय पति, म्यूजियम की वयोवृद्ध तलवारों की तरह, अपने पराक्रममयी अतीत को याद करके जार-जार रो रहा है और जिसकी संवेदनाएं अब कानपुर में बने 'पति-मंच' तथा ऐसी ही अनेक असहाय पुरुष-सहायतार्थ बनी संस्थाओं के हाथ में है। नारी अत्याचार चरम पर पहुंच गये हैं। पुरुष-प्रधान समाज हाहाकार कर उठा है। घर से बाहर तक सरकार इनकी है और पराधीन पुरुष बंधुआ मजदूर-सा इनकी हुकूमत मानने को विवश।

वे दिन हवा हुए . . .

वे दिन हवा हो चुके हैं, जब पुरुष, **'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी'** कवि तुलसीदास के मंत्र का जाप करता हुआ, अपनी पत्नी को पीट लेता था, और महल्ले में ऐसी शान से निकलता था, मानो प्लासी का तृतीय युद्ध जीत कर सीधा चला आ रहा हो।

अब समय बदल चुका है। पराक्रम के तमगे अब वीरांगना पत्नियों के सीनों पर सुशोभित हो रहे हैं। मादा जाति के इतिहास का स्वर्णकाल जाज्वल्यमान है। निस्सहाय पति बेनागे पिट रहे हैं। कहीं-कहीं यह सांस्कृतिक कार्यक्रम इतनी निष्ठापूर्वक संपन्न हो रहा है कि 'ओवर टाइम' दिये-लिये जा रहे हैं। 'पति-मंच'

इस बात का साक्षी है कि संस्था के स्थापना दिवस के चंद दिनों में ही एक सौ छयालीस दुखियारे पतियों की व्यथा-पाती संस्था की चौखट पर दस्तक दे रही थीं और डॉक्टर, वकील और पत्रकार **'घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय'** के प्रावधान के अंतर्गत सांप्रदायिक सद्भाव को बरकरार रखते हुए निरपेक्ष भाव से इन त्रस्त-संत्रस्त पतियों को सामाजिक-आर्थिक 'फर्स्ट एड' देने में जुटे हुए हैं।

मर्द का पंजा मरोड़ सकती है

आजादी के बाद अबलाएं असाधारण रूप से ताकत के मामले में आत्मनिर्भर हुई हैं। पुतली बाई और फूलन देवी से लेकर फिल्मी धन्नो जीवन के हर संदर्भगत 'सिनेमा स्कोप' परदे पर 'हीमैन' को पीट रही है और वह बाकायदा 'विनम्रता-सप्ताह' मनाता हुआ ससम्मान पिट रहा है। औरत का पंजा है यह... इसकी पकड़ से निकलना कठिन ही नहीं असंभव है। एक सत्य घटना इस मार्मिक तथ्य को कुछ इस तरह उजागर कर रही है--

घटना, इसी दशक की है, छायावादी युग की नहीं। पत्नी ने पति से ड्रांइग रूम का सोफा उठाकर दूसरी जगह रखने को कहा। दुर्बल पति सोफे को टस से मस नहीं कर सका। पत्नी का स्त्रैण पराक्रम 'क्वथनांक बिंदु' पर पहुंच गया। उसने सोफा बड़ी आसानी से उठाकर मनचाही जगह पर ऐसे रख दिया, जैसे नेता अपने चमचे को किसी समिति में रख देता है। पति के मन में यह ग्रंथि पनप गयी कि वह अपनी पत्नी से कमजोर है और पत्नी ने शक्ति-परीक्षण में उसके पराक्रम की जमानत जब्त कर दी है। अब पत्नी द्वारा पति को पीटा जाना, उसका नियमित 'व्यायाम' बन गया है। यह खेल 'एशियाड' में शामिल नहीं हो सका क्योंकि इसकी अभी रिहर्सल ही चल रही है।

पत्नी-पीड़ित बुद्धिजीवी

दुनिया का साहित्य जगत इस बात का साक्षी है कि साहित्य और दर्शन के अनेक चमकीले हस्ताक्षर पत्नी-प्रताड़ित या और पत्नी-पीड़ित रहे हैं। अमर दार्शनिक सुकरात पत्नी द्वारा बाकायदा आजन्म डांटे जाते रहे। क्रोध में कभी-कभी उनकी पतिव्रता पत्नी उन पर बालटीभर पानी भी उड़ेल देती थीं। गुनगुनी हरारत की तपिश लिये हुए गरम पानी सुकरात को सृजन में और सक्रिय करता था। शायद इसीलिए जहर पीने के लिए जब सत्ता ने बाध्य किया तो उसने हंसते-हंसते उसे पी लिया। टॉलस्टाय समझदार था। वह पत्नी के क्रोध के समक्ष बलि का बकरा ज्यादा समय तक नहीं बना और घर ही छोड़कर चला गया।

भारतीय साहित्य वांगमय में भी ऐसे अनेक पराक्रमी पतियों की शौर्य-गाथाएं टंकित हैं, जो आनेवाली सदियों तक संत्रस्त पतियों के लिए प्रेरणा-स्रोत

नी रहेगीं । महाकवि कालिदास और लोक मंगलकारी कवि तुलसीदास यदि पत्नियों की प्रताड़ना से आहत नहीं होते तो क्या वे इतने बड़े साहित्य-मर्मज्ञ बन सकते थे ? बुद्धिजीवी पतियो दुःखी न हो, पत्नियों के अत्याचार सृजनात्मक-क्षमताओं को परिमार्जित करते हैं । जो लेखक-कवि चुक गये हैं या साहित्य में स्थापित नहीं हो पा रहे हैं, उनकी असफल-ताओं के कारण पारदर्शी ढंग से स्पष्ट हैं । थोड़ा-बहुत साहित्य के खातिर जोखिम उठाना चाहिए । बहादुरीपूर्वक पिटने को तैयार रहिए ।

जालिम ने टुकड़े कर दिये

उर्दू के शायरों के पत्नी-पराक्रम के मामले में भिन्न-भिन्न मत हैं। कुछ शायरों ने अपनी महबूबाओं को मिलिटरी की चलती-फिरती 'आरटिलरी' माना है । कमर कातिल, नजर तीर, कलाई कटार; सांसें प्रक्षेपास्त्र और न जाने क्या-क्या ? वहीं दूसरी ओर शायर महबूबाओं और पत्नियों को इतना नाजुक मानते रहे हैं कि चांदनी रात में ककड़ी को तोड़ते हुए उनकी कलाई में फ्रेक्चर हो जाने का शायरों को डर बना रहता था। अगर बेगम रसगुल्ले के टुकड़े दांत से कर देतीं तो उनका दिल बल्लियों उछल जाता और वे कह उठते, 'किस तरह जालिम ने रसगुल्ले के टुकड़े कर दिये।' मैं इन मुगलिया शायरों को संत तुकाराम की पत्नी की याद दिलाना आव-श्यक समझूंगा कि किस तरह उन्होंने अपने पति की पीठ पर गन्ने मार उसके टुकड़े आसानी से कर दिये थे। संत तुका-राम को पत्नी से अध्यादेश प्राप्त हुआ था, गन्ने खरीदकर लाने का। रास्ते में बाल-वृंदों ने घेर लिया। गन्ने बंट गये। इकलौता गन्ना लिये जब वे घर पहुंचे तो पत्नी ने उनकी उसी से पिटाई कर दी और गन्ने के दो टुकड़े हो गये। मराठा पत्नी थी, संत तुकाराम की . . .। कैसी जीवटवाली पत्नी थीं ?

पत्नी-पीड़ित राष्ट्रपति

पति चाहे स्थानीय स्तर का हो, चाहे अखिल भारतीय या फिर अंतर्राष्ट्रीय, पत्नी से वह हमेशा पीड़ित रहा है और रहता आएगा। 'फर्स्ट एड बॉक्स' का आविष्कार भी एक पति ने ही किया था। 'फर्स्ट एड बॉक्स' 'केवल पुरुषों के लिए'—

वाले अंदाज में हर शरीफ आदमी के घर सुरक्षित मिलता है। समझदार स्त्रियां इस अमूल्य तोहफे को दहेज में भी ले आती हैं, पता नहीं, कब जरूरत पड़ जाए।

अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन बड़े ही सहिष्णु किस्म के नर थे। उनकी पत्नी गुस्से में गरम कॉफी उनके मुंह पर फेंक देती थीं और पड़ोसी 'फर्स्ट एड' करते थे, उनकी। इस रस्म को पत्नी ने अंतिम सांस तक निभाया, लिंकन तो उसके बाद भी जीवित रहे।

देश में अनेक ऐसे सिरफिरे हैं, जो सौजन्यवश ऐसे पराक्रमी संस्मरण अपने 'अपनों' को भी नहीं बताते हैं। उन्हें नहीं मालूम कि उनके संकोच से साहित्य-संस्कृति का कितना नुकसान हो रहा है। पत्नी-पीड़ित पति घर-घर में हैं। जहां नहीं हैं, वे घर गुलजार नहीं हैं, उजड़ चुके हैं। पति-पत्नियों के सद्भाव के बीच 'तलाक' शब्द बैठ गया है। संपादकजी, गुप्तजी की 'अबला', अब 'अबला' नहीं रही है, इसकी सूचना भारतीय मानस-भवन में आप पहुंचा दें, एक सिरफिरे की यही ईमानदार कामना है। पत्नि शरणं गच्छामि।

१६१९।३६, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

यह घटना उस समय की है जब वारसा (पोलैंड) में 'मदाम क्यूरी रेडियोलाजी प्रतिष्ठान' का उद्घाटन हो रहा था। समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे तत्कालीन राष्ट्रपति पेडेरेव्स्की। राष्ट्रपति ने अपने भाषण में मदाम क्यूरी की प्रशंसा में बोलना शुरू किया तो अनेक खट्टे-मीठे प्रसंग बता डाले और वह यहां तक कह गये कि 'मदाम क्यूरी बड़ी ही मददगार महिला हैं। एक बार जब मैं रेल में सफर कर रहा था तो वह मेरे पास थीं। उन्होंने मुझे अपना तकिया दिया था, जिसके कारण मैं सुख की नींद सोया था। भला मैं उनकी यह उदारता कैसे भूल सकता हूं।'

तभी मदाम क्यूरी बोल पड़ीं, 'और, भला मैं यह कैसे भूल सकती हूं कि आपने तकिया आज तक मुझे नहीं लौटाया।'

●

लंदन का एक पुस्तक-विक्रेता विलियम फाइल संसार की बेहतरीन और दुर्लभ पुस्तकों को 'सप्लाई करने के लिए मशहूर रहा है। उसके पास संसारभर के लोग अपनी मनपसंद पुस्तकों के ऑर्डर भेजते रहे हैं। लेकिन एक बार उसे विचित्र ऑर्डर मिला। वह ऑर्डर एक सिरफिरे ने भेजा था। लिखा था—'मुझे एक ऐसी पुस्तक चाहिए जिसकी जिल्द मानव-शरीर की खाल से बनी हो।'

विलियम भी कम सनकी न था। वह अगले दिन से ऐसी पुस्तक खोजने को गया। आखिर उसे एक फ्रांसीसी लेखक यूजिनन्स्यू की पुस्तक मिल ही गयी। पुस्तक का नाम था—'विग्नेट्स देस-माई स्टंस दे-पेरिस।' वह लेखक भी कुछ कम सनकी न था। उसने अपनी इस पुस्तक की जिल्द अपनी पत्नी के शरीर की खाल से बनवायी क्योंकि उसकी पत्नी ने अपनी वसीयत में यही इच्छा लिखी थी।

मेरे सहायकों, पेंसिल और नोटबुक रखा करो!

• रामकिशोर सहाय

यदि किसी की नव-विवाहिता विवाह के प्रारंभिक दिनों के कोमल क्षणों में अपने साहसी और हवाई जहाज-निर्माता पति से मीठी कसमों के बीच हवाई-जहाज उड़ने-उड़ाने के कार्य से तौबा कराने की सोच ले तो कोई भी पति बेचारा क्या करे? मिट्टी खोदने और खेत जोतने के कार्य में लग जाए? कोई और ऐसा भले ही न करे, पर हैरी जॉर्ज फर्गुसन के साथ कुछ ऐसा ही हुआ था।

हैरी जॉर्ज फर्गुसन ने, १६ वर्ष की अल्प अवस्था में सन १९०० में, न केवल मोटर-कारों तथा मोटर-साइकिलों की सर्विसिंग, मरम्मत और उन्हें बेचने में ही महारत हासिल कर ली थी, उसके तीन वर्ष के उपरांत उसने अपनी पहली मोटर साइकिल भी बनायी और आयरलैंड में मोटर-साइकिलों की दौड़ में भाग लेता रहा। उसने कई पुरस्कार भी जीते। सन १९०९ में उसने अपने लिए नये नमूने के हवाई जहाज का डिजाइन तैयार कर निर्माण किया। उसे उसने स्वयं आयरलैंड के ऊपर उड़ाया। इसके उपरांत एक उड़ान में हवाई दुर्घटना में घायल होने पर, उसकी नयी नवेली पत्नी ने उसे हवाई जहाज से परहेज करने की जो कसम-पट्टी पढ़ायी वह जीवन पर्यंत चली।

हरित क्रांति का जनक

प्रथम विश्वयुद्ध के समय आयरलैंड में उसे खेती के पुराने और घिसे-पिटे औजारों को देखने का अवसर मिला। उस समय उपलब्ध खेती के औजार बहुत ही निम्न कोटि के और भद्दे हुआ करते थे।

फर्गुसन के मस्तिष्क में एक ऐसे विश्वसनीय और प्रभावी ट्रैक्टर के निर्माण की योजना कौंधी, जो काफी सस्ता होने के साथ-साथ हलका भी हो, ताकि मिट्टी ट्रैक्टर के भार से दब न जाए और हल तथा खेती के अन्य औजार ट्रैक्टर के साथ इकाई के रूप में कार्य कर सकें। प्रारंभ में उसने ट्रैक्टर के लिए जो हल बनाये, वे ट्रैक्टर के पीछे जोड़े जा सकते थे और आवश्यक गहराई तक जोतते थे। सन १९३० में उसने इस प्रकार का ट्रैक्टर बना लिया, जिसमें ड्राइवर की सीट से ही बैठे-बैठे खेती के औजार नियंत्रित किये जा सकते थे और हल व अन्य औजार सहित संपूर्ण

ट्रैक्टर एक मशीन के रूप में कार्य कर सकता था। सन १९३८ में फोर्ड कार के विश्वप्रसिद्ध निर्माता अरबपति हेनरी फोर्ड ने संयुक्त राज्य अमरीका में फर्गुसन के सुझाव पर फर्गुसन ट्रैक्टर का निर्माण करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सन १९३९ से सन १९४७ तक फोर्ड ने फर्गुसन के लिए तीन लाख से अधिक ट्रैक्टर और बीस लाख से भी अधिक औजार बनाये।

घृणा का पात्र कैसे

४ नवम्बर, १८८४ में ड्रोमोर, काउंटी डाउन, उत्तरी आयरलैंड में जन्मा हैरी जॉर्ज फर्गुसन प्रारंभ से ही विलक्षण बुद्धि, धुन का पक्का और सनकी था।

फर्गुसन बड़े धैर्य से लोगों की बातें सुनता था, पर कोई डबल ब्रेस्ट सूट पहनकर उससे भेंट करना चाहे, तो मिलना अस्वीकार कर देता था। कंपनी का कोई व्यक्ति यदि डबल ब्रेस्ट सूट के साथ पीला वेस्ट कोट पहनकर आये तो फर्गुसन अप्रसन्न हो जाता था। किसी ने ऐसे सूट पर थोड़ी गंदी या मुड़ी-तुड़ी टाई पहन रखी हो और कमीज का कॉलर व्यवस्थित ढंग से स्थान पर न हो तो फर्गुसन के आग-बबूला हो जाने में विलंब नहीं होता था। यदि कोई फर्गुसन से झगड़ा मोल लेने पर उतारू हो और घृणा का पात्र बनना चाहे तो कच्चे चमड़े के जूते भी पहन ले।

वह प्रत्येक ऐसी वस्तु से घृणा करता था, जो व्यवस्थित ढंग से न हो। डबल ब्रेस्टवाला सूट उसे बोरी दिखता था और कच्चे चमड़े का जूता गवारूपन का प्रतीक। फर्गुसन का कहना था कि व्यवस्थित ढंग से रहनेवाले ही व्यापार ठीक ढंग से कर सकते हैं। फर्गुसन की सनक इतनी ही नहीं थी। वह अपनी कंपनी के प्रत्येक कर्मचारी चाहे वह उसकी स्टेनोग्राफर हो अथवा कारखाने का मिस्त्री, प्रत्येक को इस बात पर जोर देता था कि बायीं ओर की बाहरी जेब पर नोटबुक अवश्य रखी जाए और बायीं ओर की भीतरी जेब में एक छोटी-सी नुकीली पेंसिल। जैसे ही कर्मचारी के मस्तिष्क में कोई विशेष बात आये तो उसे नोटबुक पर तत्काल लिख लिया जाए। लिखने की विधि भी फर्गुसन के अनुसार। एक वाक्य के लिए एक पंक्ति। दो पंक्तियों से उसे बेहद चिढ़ थी।

कृषि-क्रांति की ओर

फर्गुसन धूम्रपान या मद्यपान का शौकीन नहीं था, पर एक व्यसन उसे अवश्य था। कितने ही आवश्यक कार्य से उसे कार्यालय समय पर पहुंचना हो और रास्ते में कोई किसान फर्गुसन ट्रैक्टर के साथ परे

शानी में दिख जाए तो अपनी मोटर-कार से ट्रैक्टर के औजार निकालकर स्वयं ट्रैक्टर को ठीक-ठाक करने में जुट जाता या मरम्मत करते हुए किसान या मिस्त्री को ट्रैक्टर के रखरखाव पर एक लंबा भाषण पिलाता। फर्गुसन अपनी इस सनक का कारण बताता था—"सिर्फ फर्गुसन ट्रैक्टरों को बेचता नहीं, केवल उन्हें देता है, वे सब उसके ही हैं।"

डैनियल मैसी का कंबाइन हालवेस्टर जब प्रतिद्वंदी बनकर बाजार में आया, तब फर्गुसन ने समय को पहचाना और अपनी इस प्रतिद्वंद्वी कंपनी मैसी-हैरिस के अध्यक्ष श्री जेम्स डंकेन को कोवेंट्री आकर स्वयं से मिलने का निमंत्रण भेजा। पहले ही साक्षात्कार में दोनों की फर्मों के विश्व-विलय का उसने प्रस्ताव रखा। एक ही दिन की सूचना पर दोनों फर्मों के विलय के कागजात पर हस्ताक्षर हो गये। इस प्रकार सन १९५३ में दोनों कंपनियां मिलकर एक हो गयीं, जिसका नाम रखा गया—मैसी-हैरिस-फर्गुसन—आज की विश्व प्रसिद्ध ट्रैक्टर फर्म।

जब पं. नेहरू इंगलैंड भ्रमण को गये, तब फर्गुसन भारत में कृषि-क्रांति को प्रारंभ करने के लिए उन्हें प्रभावित करने में सफल रहा। जब तक पंडित नेहरू स्वदेश लौटते, तब तक फर्गुसन एक सेल्समैन के रूप में उन्हें ३० ट्रैक्टर बेच चुका था।

इस फुरतीले, विलक्षण, सनकी, वैज्ञानिक और उद्योगपति की मृत्यु २५ अक्तूबर, १९६० को स्टो-ऑन-द-वल्ड, ग्लॉस्टरशायर में हुई। **—सूचना अधिकारी, सी. एस. आई. आर., रफी मार्ग, नयी दिल्ली**

चार्ल्स का दुर्भाग्य !

प्रेम-संबंधों के कारण प्रायः हत्याएं होती ही रहती हैं। लेकिन, इंगलैंड में जिस तरह सत्तर वर्षीय चार्ल्स गोल्डसबर्ग ने अपनी इकहत्तर वर्षीय पत्नी एगनीज की हत्या की, वह अपने आप में विचित्र है। चार्ल्स को लगा कि उसे कैंसर हो गया है, और वह बचेगा नहीं। क्योंकि वह अपनी पत्नी को और पत्नी उसे बेहद ही प्यार करती थी, अतः उसे लगा कि वह बेचारी बाद में बहुत दुःखी होगी। वह नहीं चाहता कि उसे दुःख देखने पड़ें, इसलिए उसने उसकी हत्या कर दी और बाद में खुद भी आत्महत्या करने के लिए एक बस के नीचे आ गया, लेकिन मरा नहीं। उस पर मुकदमा चला। अदालत को भी मानना पड़ा कि उससे यह अपराध पत्नी के प्रति बेहद लगाव की वजह से हुआ है। इसलिए अदालत ने चार्ल्स को जेल की बजाय अस्पताल में नजरबंद रखने का आदेश दिया। इससे भी मजेदार बात यह हुई कि डॉक्टरी परीक्षणों में यह पता चला कि उसे कैंसर नहीं है बल्कि श्वास रोग है।

सम्मोहन के नये प्रयोग

सम्मोहन का प्रयोग इंगलैंड के ड्यूक स्ट्रीट अस्पताल में विशेष रूप से किया जा रहा है। सेक्स और काम के संबंध में कई गलत धारणाएं टूटी हैं। इनके पीछे ठोस वैज्ञानिक आधार हैं। इसकी सत्यापना यूरोप के अग्रणी चिकित्सक डॉ. प्रेम मिश्रा ने अपने निरंतर प्रयोगों के आधार पर सिद्ध कर दी हैं। डॉ. प्रेम मिश्रा ग्लासगो में ड्यूक एडनबरा अस्पताल में कार्यरत हैं और इन दिनों 'सम्मोहन और काम' के सफल प्रयोगों के कारण काफी चर्चित हैं।

वे मूलतः भारतीय हैं। कई वर्षों से वे ग्लासगो में काम कर रहे हैं।

आभार सम्मोहन का

अनेक वैवाहिक दंपतियों के हृदय सम्मोहन के आभार से भर गये हैं। वे कई वर्षों से असफल वैवाहिक जीवन जी रहे थे। इन अभिशप्त परिवारों के लिए सहवास के समय आपस में पूरी तरह न खुल पाना, स्त्रियों का लज्जालु होना, उनके जीवन के लिए श्राप बना हुआ था। पुरुषों में काम के प्रति उदासीनता और नपुंसकता

दांतों के कारण जोड़ों में दर्द

वह जोड़ों के दर्द से पीड़ित थीं। डॉक्टर ने मुआयना करने के बाद कहा, "यह जोड़ों का दर्द आपके दांतों के कारण है।"

"यह कैसे हो सकता है? मुझे दांतों में कभी कोई तकलीफ नहीं हुई बल्कि टूथपेस्ट कंपनीवालों ने विज्ञापन के लिए मुझे चुना था।"

डॉक्टर ने कहा, "आपके दांत जितना खाना चबा जाते हैं, उससे आपके शरीर में मोटापे की परतें जमा होती जा रही हैं। आपका बढ़ता हुआ वजन आपके लिए और बीमारियों को भी निमंत्रण दे रहा हैं। अभी जोड़ों में दर्द है, फिर दिल में होगा।"

वह महिला मुसकरा उठी। उसके होठों से तैरती मुसकराहट में डॉक्टर को लगा, उसके अपने दिल की धड़कन बढ़ रही है। वे फिर बोले, "देखिए, आपके दांत और आपकी मुसकराहट, दोनों ही, बीमारियों की जड़ हैं। दांतों से आप बीमार होंगी। मुसकराहट से और लोग . . .।"

की भावना उन्हें अपुरुष सिद्ध करने का एक अवांछित कारण बनती गयी।

सम्मोहन के अनेक प्रयोगों ने इन अवांछित भावनाओं को समाप्त कर कई परिवारों को पुनः एक सुखद जीवन जीने का अवसर प्रदान किया है। डॉ. मिश्रा ऐसे अनेक रोगियों को सम्मोहित अवस्था में लाकर स्वास्थ्य-दान कर चुके हैं। अनेक स्त्रियां, जो कभी ऐसे उपचार के लिए मानसिक रूप से तैयार होती नहीं देखी गयी थीं, उन्होंने सम्मोहन की अवस्था में आवश्यक उपचारात्मक कार्यवाही में डॉक्टर को पूर्ण सहयोग भी दिया। अनेक शरमीली नवविवाहिता युवतियों का व्यापक स्तर पर डॉ. मिश्रा द्वारा उपचार किया जा चुका है।

डॉक्टर मिश्रा के सम्मोहन प्रयोगों के दौरान एक रोचक प्रकरण ऐसा भी था कि एक युवती, जिसकी शादी हुए बारह वर्ष से भी अधिक हो गये थे, फिर भी वह कुंआरी थी। शरम के कारण वह अपने पति से कभी भी सामान्य संबंध नहीं बना सकी। सम्मोहन-उपचार के बाद अब वह सफल पारिवारिक जीवन बिता रही है।

सम्मोहन के प्रयोगों के दौरान उपचार पति-पत्नी दोनों को एक साथ सम्मोहित करके भी किया जाता है और अलग-अलग भी। सम्मोहन की दो या तीन उपचार-बैठकों के बाद ही रोगी में आशातीत परिवर्तन होने लगते हैं।

—'संडे मेल' से

आपकी दाढ़ी : कुछ नयी जानकारी

एक ब्रिटिश पत्रिका में लिखा था—

आप यदि सचमुच पुरुष हैं तो आपको हमारे इलेक्ट्रिकल शेवर की तो पूरी जानकारी होगी ही, पर शायद आपको अपने 'चौखटे' की यह पूरी जानकारी न हो—

देखिए, आपकी दाढ़ी हर चौबीस घंटे में बढ़ती है और एक इंच का पचासवां हिस्सा बाल मुंह से ऊपर 'मुंह' उठाये आपको देखने लगते हैं। आपके मुंह पर औसत पचीस हजार बाल हैं। यह बाल आपके मुंह के चालीस वर्ग इंच स्थान पर ही होते हैं।

'औसत ब्रिटिश व्यक्ति पचास वर्ष में दो वर्गमील (मुंह की लंबाई) और ढाई सौ मील (सिर के बालों की लंबाई) हमारे 'शेवर' से ही तय करता है।

'हम संसार के सबसे अधिक सिर और मुंह मुंडानेवाले लोगों में से हैं और इसीलिए सिर मूंडने या मुंडाने के लिए हम 'शेवर' का भी प्रयोग करते हैं और बुद्धि का भी।'

Swearing on the Bible is the basic oath in an English court as portrayed by these actors

तरीके अदालतों में शपथ लेने के

● जॉर्ज टॉड
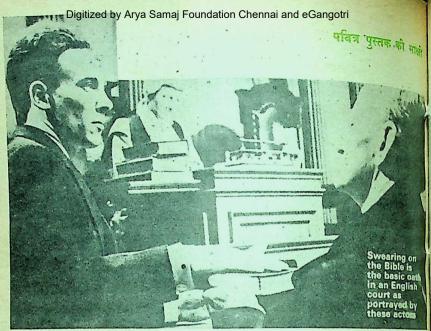
अनेक देशों, अनेक जातियों और अनेक धर्मों के लोगों के आ बसने के कारण ब्रिटेन में अनेक समस्याएं तो उत्पन्न हुई ही हैं, पर विविध जातियों और विविध धर्मों को माननेवाले लोगों के कारण ब्रिटेन की अदालतों को भी तरह-तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

उदाहरण के लिए लंदन के मातबोरो स्ट्रीट के एक न्यायालय में न्यायाधीश रोबियास स्प्रिगर को एक गवाह को इसलिए झिड़कना पड़ा, क्योंकि उसने बायां हाथ उठाकर शपथ ली थी।

उन्होंने कठोरतापूर्वक उससे कहा, "तुमने दूरदर्शन पर ऐसा देखा होगा, लेकिन मेरी अदालत में यह नहीं चल सकता।"

स्प्रिगर महोदय का कहना ठीक था, किंतु गवाह स्कॉटलैंड का पुलिसमैन था और स्कॉटलैंड में शपथ लेने के लिए बायां हाथ ही उठाया जाता है।

तकनीकी दृष्टि से, सन १९६२ के शपथ-कानून के अनुसार प्रत्येक अदालत में दो गायों की पूंछों, बाइबिल के यथा-संभव सभी संस्करणों, प्रत्येक धर्म की पवित्र पुस्तकों और यहां तक कि तश्त-रियों और मोमबत्तियों का भी रहना अनिवार्य है।

तश्तरियों, मोमबत्तियों और गायों की पूंछों की बात चौंकानेवाली हो सकती है, परंतु अदालत में इन सबकी आवश्य-कता होती है, यह एक मनोरंजक तथ्य है।

अदालत में तश्तरी

तश्तरी की आवश्यकता तब पड़ती है, जब शपथ लेनेवाला व्यक्ति कोई चीनी हो। गवाह को प्रायः पुलिस की कैंटीन से एक तश्तरी लाकर दी जाती है और तब वह शपथ लेता है, "मैं सच कहूंगा और पूरा सच कहूंगा, अन्यथा मेरी आत्मा भी इस तश्तरी की भांति टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी।"

इसके बाद वह व्यक्ति उस तश्तरी को अदालत के कटघरे की कोर से टकरा-कर तोड़ देता है या फिर तश्तरी को एक कपड़े के नीचे ढककर उस पर हथौड़ा मारता है।

मोमबत्ती लेकर शपथ

यदि गवाह मोमबत्ती से शपथ लेता है, तब वह कहता है, "यदि मैं सच न बोलूं, तब मेरी आत्मा भी इसी प्रकार विलुप्त हो जाएगी, जिस प्रकार मैं इस ज्योति को बुझाता हूं।" और यह कहकर मोमबती को बुझा डालता है।

ब्रिटेन में रहनेवाले पारसी शपथ लेने के मामले में अदालत के सामने कोई समस्या उत्पन्न नहीं करते। यदि उनकी पवित्र-पुस्तक 'जेंद अवेस्ता', उपलब्ध न हो, तब वे अपनी छाती पर एक डोरी का टुकड़ा बांध लेते हैं। यह डोरी उनके लिए 'पवित्र डोरी' बन जाती है और शपथ लेने के लिए प्रतीक चिह्न का उद्देश्य पूरा कर देती है।

ब्रिटेन की कानून-परिषद, अदालत में ली जानेवाली शपथों के उन्मूलन के पक्ष में है और उसके स्थान पर गवाह द्वारा सच बोलने का वचन दिये जाने को मान्यता दिये जाने के पक्ष में है। क्योंकि अदालत में काम करते हुए जीवन बिता चुका कोई भी व्यक्ति बता सकता है कि अदालतों में ली जानेवाली शपथों में और एक खाली माचिस पर हाथ रखकर ली गयी किसी अन्य शपथ में कोई अंतर नहीं होता। दोनों एक-जैसी ही होती हैं। ●

अपने पति को एक खूबसूरत लड़की के साथ देखा, तो वह तुरंत सी. बी. आई. में उनके एक मित्र से जाकर बोली, "मैं चाहती हूं कि इस मामले की पूरी जांच की जाए और मुझे बताया जाए कि मेरे पति में इस लड़की को ऐसा क्या नजर आया, जो वह रोज उनके आगे-पीछे रहने लगी है। ऐसा निकम्मा और आलसी व्यक्ति उसे क्या दे सकता है... और इनसे अब तक उसे क्या मिला ?"

हरेक का जवाब लाजवाब

● योगराज थानी

क्रिकेट को देखते, लिखते, पढ़ते मुद्दत हो गयी, लेकिन अभी जहां का तहां हूं, न अपने को अनजान कह सकता हूं, न जानकार ! हारने पर आता हूं, तब उनसे हार जाता हूं, जिन्होंने आज तक क्रिकेट का कायदा नहीं पढ़ा और अपने को पंडित मानते हैं। हिंदी के एक कवि हैं क्रिकेट का क, ख, ग उन्हें नहीं आता और अपने को क्रिकेट का महापंडित मानते हैं, पर उन्हें जानने से पूर्व उनकी स्थिति, परिस्थिति, वस्तुस्थिति और मन:स्थिति तो जान लीजिए। कहते हैं कि नयी पीढ़ी से बात करना चाहते हैं, तो आपको क्रिकेट का कुछ न कुछ ज्ञान तो होना ही चाहिए। मैं और तो किसी क्षेत्र में, अपने बच्चों से नहीं हारा, हां, क्रिकेट के मामले में जरूर उनसे हार जाता हूं। मैं उन्हें हिंदी, हिसाब, भूगोल और इतिहास-जैसे विषय तो पढ़ा सकता हूं, लेकिन जितना मैं उन्हें पढ़ाता हूं, उससे चार गुना अधिक वे मुझे क्रिकेट पढ़ा देते हैं। लगता है कि उनको दिया कम है और उनसे लिया ज्यादा है।

कहीं सुना या पढ़ा था कि शब्द ब्रह्म का रूप है, उसका दुरुपयोग न कीजिए। यदि कोई आज मुझसे यह पूछे कि कौन-सा ऐसा खेल है, जिसमें सबसे अधिक शब्दों का दुरुपयोग किया जाता है, तब मैं कहूंगा—'क्रिकेट'। रेडियो व दूरदर्शन पर बैठे उद्घोषक या खेल-समीक्षक अपनी कही या लिखी बात को न जाने कितनी बार दोहराते हैं, और हर बार यही सोचते हैं कि नया कुछ कह रहे हैं या नया कुछ लिख रहे हैं, उन्हें सुननेवाले पढ़ते-पढ़ते थकें, उनकी बला से। 'रेडियो' या 'दूरदर्शन' पर आंखों-देखा हाल सुनानेवाले और ट्रांजिस्टर लेकर स्टेडियम में बैठे लोग अपनी-अपनी पीठ थपथपाते नहीं थकते। हरेक का जवाब लाजवाब है। दर्शकों का कहना है कि हम अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए नहीं, कमेंटेटरों का ज्ञान परखने के लिए ट्रांजिस्टर लेकर जाते हैं, ताकि जब ये लोग गलत बयानी करें, तब हम स्टेडियम में ही 'हाय-हाय' कर सकें। क्रिकेट के समाचार जब आध घंटे में ही पूरे देश में फैल जाते हैं, तब सवाल उठता है कि लोग दूसरे दिन अखबारों में या 'दूरदर्शन'-सैटों पर किसलिए बैठते हैं ? जवाब इसका भी लाजवाब है, 'जी, उस समय दर्शक यह जानता है कि किस गेंदबाज के कौन-से

ग्रोवर की कौन-सी गेंद पर कौन-सा खिलाड़ी आउट हो जाएगा।'

अब रही भविष्यवाणी की बात! यह भी परस्पर विरोधी होती है। दुनिया बार-बार यही कहती है, 'भाई, भविष्य-वाणी न करो।' पर कौन बाज आता है? न नमक, तेल, साबुन बेचनेवाला लाला, न क्रिकेट का लाला, 'यह मैच भारत जीत भी सकता है, हार भी, अगर इंद्र देवता की कृपा हो जाए, तो बराबर भी हो सकता है।' कहते चलिए, कुछ भी कहते चलिए; जरा सोचिए—हम कहां जा रहे हैं या क्रिकेट हमें कहां ले जा रही है?

नायक मंच पर सोया हुआ है, कानों में तरह-तरह की आवाजें आ रही हैं। वह एक बार आंख खोलता है ग्रौर जानना चाहता है कि शोर कहां हो रहा है? पाता है कि सारी आवाजें नेपथ्य से आ रही हैं। वह एक बार अपने आप से कहता है कि कहीं कुछ नहीं, क्रिकेट है ग्रौर फिर मंच पर सो जाता है। आवाजें जारी रहती हैं:

'पकड़ो, जाने न पाये'

'गावस्कर बेचारा, अब क्या करेगा, क्या सचमुच किसी खेल-पत्रिका का संपादक हो जाएगा?'

'वह पैसे के लिए खेलता है।'

'जो आया है, उसे जाना है।'

'स्कोर प्लीज, नहीं, क्रिकेट प्लीज!'

'वेस्ट इंडीज में गेंद जीती या बल्ला?'

'इतिहास किसी को क्षमा नहीं करता।'

'जान नहीं, यहां जान-पहचान चलती है।'

'गुंडप्पा विश्वनाथ अब फिल्म में काम करेंगे।'

'लिटिल मास्टर फिल्म में काम कर चुके हैं।'

दो मकानों के बीच का एक गलि-यारा, सात-आठ साल की उम्र के बच्चे क्रिकेट खेलने में व्यस्त ग्रौर मस्त हैं। एक ताबड़तोड़ रन बना रहा है, दूसरा ताबड़तोड़ गेंद फेंक रहा है। ग्रंपायर ने एक को एल. बी. डब्लू. आउट कर दिया है, फिर वही विवाद, फिर वही हाथापाई, 'तुम बड़े अजीब आदमी हो। मैं गालियां दिये जा रहा हूं ग्रौर तुम चुपचाप सुनते जा रहे हो।'

'जी, आदत-सी पड़ गयी है। ग्रंपायर जो हूं।'

फिर एक शवयात्रा, दफ्तरों में बहुतों ने छुट्टी ले ली, किसी ने चाचा का बहाना लगाया, किसी ने दूर के रिश्तेदार का। छोटे-से बड़े कर्मचारी अंतिम-यात्रा में शरीक हुए आवेदन-पत्र भरनेवाले भी और उस पर हस्ताक्षर करनेवाले भी।

'क्या करूं घर में कपड़े धोने का साबुन तो है, पर सोडा नहीं। बार-बार यही सुनने को मिलता है कि 'काश, तुम क्रिकेट के खिलाड़ी होते, घर में कम से कम बल्ला तो होता, उसी से काम चला लेती।'

बहुत-सी औरतें अपना जूड़ा सजाने के लिए आलू-टमाटर रखती हैं। काश, क्रिकेट की गेंद रख सकतीं। इसी बीच एक गेंद रसोईघर में गिर पड़ती है। नीचे जरूर कोई खेल रहा होगा, घर का मालिक गेंद लौटाने के लिए जाता है। समझ में नहीं आता कि वह किसे लौटाये, वहां तो गिनती हो रही है: दो सौ तीन, दो सौ चार, दो सौ पांच, दौड़ना जारी रहा और गिनती चलती रही, आखिर उससे रहा नहीं गया और पूछ बैठा कि 'क्या तुम थकते नहीं हो?'

जवाब मिलता है, 'मैं हरदम यही सोचता रहता हूं कि मेरी पत्नी मेरे पीछे भाग रही है।'

सुनील गावस्कर कार चला रहे थे। एक लड़का कार के आगे आने ही वाला था कि गावस्कर ने उसे डांटते हुए कहा, 'मियां, सड़क पर केवल जोश से नहीं, होश से चला करो वरना किसी भी दिन 'रन-आउट' हो जाओगे।'

इसी बीच शृंखला समाप्त हो जाती है, यानी बारी समाप्त और पारी शुरू।

यह सब कुछ नायक ने नींद में देखा, नींद में जो देखा, उसे अपना समझकर भूल जाइए। पल में तोला, पल में माशा, जी हां, यही है क्रिकेट-खेल का तमाशा। इसका सत्य, तथ्य और कथ्य कब बदल जाए, कुछ पता नहीं। इसीलिए कहते हैं कि क्रिकेट की पुस्तक जब छपने के लिए प्रेस जाती है, तब सही होती है और जब छपकर तैयार हो जाती है, तब पुरानी पड़ जाती है। यदि इस लेख में भी आपको कुछ अधूरापन लगे तो उसे हमारी मजबूरी ही मानिए।

—द्वारा-'खेल भारती',
टाइम्स ऑव इंडिया, नयी दिल्ली-२

लंदन के एक बीस वर्षीय युवक बिल नील को खब्त सवार हुआ कि वह इंगलिश चैनल को पार करेगा, वह भी नौका की बजाय बाथ टब से। और उसने अगस्त, १९८१ में यह कर दिखाया। बाथ टब को नाव की तरह इस्तेमाल कर उसे पतवार से खेता हुआ वह डोवर (इंगलैंड) से चलकर तेरह घंटे में चैनल के दूसरे छोर फ्रांस के बंदरगाह कैम ग्रिस नेज पर जा पहुंचा। वह दुनिया का पहला आदमी है, जिसने इंगलिश चैनल को इस तरह पार किया है।

सब सारे बरसाने वारे!

फाल्गुन कृष्णा एकादशी को मथुरा-मांट मार्ग पर स्थित मानसरोवर गांव के राधारानी मेले के साथ ही ब्रज में होली के मेलों का शुभारंभ हो जाता है। फाल्गुन शुक्ला नवमी को राधारानी के गांव—बरसाने की लठामार होली के साथ तो ब्रज में ऐसा रस बरसता है, जो त्रैलोक्य में भी दुर्लभ है। लठामार होली की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है।

बरसाना में होली के दिन नंदगांव के गुसाईं श्रीकृष्ण के प्रतीक रूप में आते हैं और बरसाने के गुसाईं 'पीली पोखर', स्थान पर उनकी उसी प्रकार 'मिलनी' करते हैं, जिस प्रकार विवाह में कन्या पक्ष द्वारा की जाती है। बरसाना में ब्रह्मेश्वर गिरि की ऊंची पहाड़ी पर राधा-रानी का विशाल मंदिर बना हुआ है। इसी मंदिर के प्रांगण में बैठकर नंदगांव तथा बरसाने के गुसाईं होली

• मोहन स्वरूप भाटिया

के पद, रसिया आदि का गायन करते हैं। इसे 'संगीत-समाज' कहा जाता है। इसमें बरसाना के गुसाईं नंदगांव के गुसाइयों को गालियां सुनाते हैं। अब से लगभग १२५ वर्ष पूर्व अंगरेज विद्वान और मथुरा के तत्कालीन जिलाधीश एफ. एस. ग्राउस ने भी यह 'संगीत-समाज' सुनी थी। उन्होंने अपने ग्रंथ 'मथुरा मैमोयर' में इसकी इस गाली का उल्लेख किया है—

सब सारे बरसाने वारे, रावल वारे सारे जगन्नाथ के नाती सारे, वे बरसाने वारे डोंम ढड़ेरे सब ही सारे, और पत्तरा वारे बाग-बगीचा सब ही सारे, सारे सींचन वारे बिरकत और गुदरिया सारे, लंबे सुतना बारे बाबाजी मानों खरि सारे, प्रेम सरोवर वारे खाट-खटोला सब ही सारे, चौका-चूल्हे सारे अहलायत महलायत सारे, गैल गिरारे सारे

अबीर-गुलाल की वर्षा

जहां संगीत-समाज में संगीत का रस बरसता रहता है, वहां मंदिर में पिचकारियों से टेसू के रंग और अबीर-गुलाल की वर्षा होती रहती है। संगीत-समाज के पश्चात नंदगांव के गुसाई बरसाने की एक संकरी गली में, जिसे 'रंगीली गली' कहा जाता है, आते हैं। यहां रंगबिरंगे लंहगा-फरिया में सजी-धजी बरसाने की गोपियां हाथों में लाठियां लिये उनके स्वागत को तत्पर रहती हैं और कुछ ही क्षणों में यह स्वागत नंदगांव के गुसाइयों पर लाठी-प्रहार के रूप में साकार हो उठता है। बरसाने की बलिष्ठ वदना किंतु घूंघट काढ़े लाज-लजीली गोपियां उछल-उछलकर नंदगांव के हुरिहारों पर लाठियां बरसाती हैं और वे उन्हें ढालों पर रोकते हैं। दर्शकगण 'बोल लाड़िली (राधा जी) लाल (कृष्ण) की जय' का तुमुल उद्घोष करते हैं। दूसरे दिन नंदगांव में भी इसी प्रकार की होली होती है, अंतर बस यही होता है कि हुरिहार होते हैं बरसाने के गुसाई और लाठियां बरसाती हैं नंदगांव की गोपिकाएं।

अगले दिन आती है रंगभरनी (रंग से परिपूर्ण) एकादशी। इस दिन से ब्रज के मंदिरों में गुलाल के साथ रंग का प्रयोग भी प्रारंभ हो जाता है। भक्तगण अपने भगवान के साथ और भगवान अपने भक्तों के साथ होली खेलते हैं।

अनूठी होली

मथुरा से ५३ किलोमीटर दूर कोसी के निकट स्थित फालेन की होली संपूर्ण भारत में अपने रंग-ढंग की अनूठी ही होती है। यहां भक्त प्रहलाद का एक प्राचीन मंदिर है और प्रहलाद कुंड भी है। एक पंडा मंदिर में पूजा-अर्चना के पश्चात प्रहलाद कुंड में स्नान कर जलती हुई होली के बीच से निकलता है। होली के बीच से निकलनेवाले एक पंडा श्री इंदरजीत ने हमें बताया कि होली से आठ दिन पूर्व वह अन्न छोड़ देते हैं और केवल दूध, बताशा तथा जल ग्रहण करते हैं।

मंत्र-जाप करने के संबंध में उन्होंने उत्तर दिया कि वह पढ़े-लिखे ही नहीं हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पंडा प्रहलादजी की प्रेरणा से होली में निकलने की 'हां' या 'न' करता है—स्वयं की इच्छा से नहीं। प्रहलाद कुंड में स्नान करने के बाद हमारी बहन एक करुए में से जलती होली में पानी की 'धार' देती है और उससे होली के दो भाग से हो जाते हैं। तब ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कोई छोटा बालक हमारे आगे चल रहा हो और सुनायी तथा दिखायी देना बंद हो जाता है। बिजली की तरह वही खींच लेता है और जलती लपटों में से हम पार हो जाते हैं।

गरमाहट अनुभव होने के प्रश्न में उन्होंने बताया कि प्रहलादजी ही जब शरीर में बैठ जाते हैं, तब फिर गरमाहट का प्रश्न ही कहां? इसके प्रमाण में उन्होंने हाथ-पैर दिखाते हुए कहा, "देख लो,
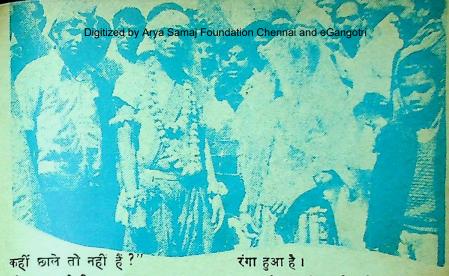
कहीं छाले तो नहीं हैं ?"

कोड़ामार होली

फालेन गांव गीतों और विशेषतः अति श्रृंगारिक गीतों की भूमि है। आस-पास के गांवों से लोक-गायकों के टोल के टोल हाथों में लंबे-लंबे बांसों पर झंडी और पंखे लेकर यहां आते हैं और होली-गीत गाते हैं, जिन पर विमुग्ध होकर व्रजबालाएं नृत्य कर उठती हैं

अगले ही दिन से गांव-गांव में हुरंगे और फूलडौल के आयोजन होते हैं। मथुरा से तीस किलोमीटर दूर स्थित बलदेव में होता है दाऊजी का सुप्रसिद्ध हुरंगा, जिसमें महिलाएं पुरुषों के बदन से कपड़े फाड़ती हैं, और उनका कोड़ा बनाकर पुरुषों के शरीर पर मारती हैं। पुरुष उन पर बालटी में भर-भरकर रंग डालते हैं या पिचकारी चलाते हैं।

होली के इस गीत-संगीत और नृत्य-रस में ग्वारिया-गंवारों का मन ही नहीं रंगा है, अपितु विदेशी भक्तों का मन भी रंगा हुआ है।

श्री स्वामी भक्ति वेदांतजी महाराज द्वारा वृंदावन में स्थापित श्रीकृष्ण बलराम मंदिर ('अंगरेजों के मंदिर' या 'इस्कान' के नाम से विख्यात) में हमारी भेंट हुई एक गौरवपूर्ण युवती से। बारह वर्ष पूर्व इन्होंने श्रीकृष्ण-भक्ति की दीक्षा ली थी। इनका मूल नाम है इलेन। जन्म अमरीका में हुआ और पिछले सात वर्षों से वृंदावन में हैं। सुश्री इलेन ने बताया कि होली राधा-कृष्ण की सर्वोत्कृष्ट लीला है। अमरीकावासी कृष्ण-भक्त जेम्स वाकर विच का कहना है कि वह व्रजवासियों को सबसे भाग्यवान मानता है। होली में वह नित्य-सुख की अनुभूति करता है।

एक अन्य अमरीकी विद्वान, जिनका भारतीय नाम है—श्री असीम कृष्णदास, के शब्दों में, "अंदर से कुछ होता है, वर्णन करने को हिंदी में शब्द नहीं है. अंगरेजी में भी शब्द नहीं हैं, वर्णनातीत आनंद है होली का !" **—ज्ञानदीप, मथुरा**

अठारह शादियां करनेवाला ट्राम-ड्राइवर

● जैक प्लेजेट

'मैं रोमियो तो नहीं हूं, लेकिन इतना मुझे मालूम है कि किसी भी औरत को यह कहकर खूब प्रभावित किया जा सकता है कि 'तुम दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत हो और मुझसे अधिक तुम्हें कोई और प्यार करनेवाला नहीं मिलेगा।'

यह कहना है, अमरीका के ट्राम-ड्राइवर वान वी का!

छोटे कद और गंजे सिरवाले वान वी ने अपने जीवन में अठारह बार शादियां कीं, और हर बार पहली पत्नी को बिना बताये और बिना तलाक दिये। यही नहीं, कानून की नजर से बचकर भी!

है न हैरत की बात! पर जनाब इस अजीब से व्यक्तित्ववाले साधारण, बल्कि बेढंगे व्यक्ति को अपने विवाह की धुन इस कदर सवार रहती थी कि जहां मौका लगता था, एक नयी शादी रचा लेता था।

सनक शादी की

चंद्रमा-जैसे टेढ़े आकार के चेहरेवाले वान वी का जन्म मैडीसन विकनसिन नामक अमरीका के एक शहर में हुआ और अभी वह छोटा-सा लड़का ही था कि सरकस में रिंग-मास्टर बनने की धुन लिये घर से भाग खड़ा हुआ, लेकिन तब तक उसे शादियां करने का कोई जुनून सवार नहीं हुआ था। हां! उसके बाद जब वह थोड़ा बड़ा हुआ और ट्राम-ड्राइवर की नौकरी करने लगा, तब, न जाने क्यों, उसे विभिन्न प्रकार की लड़कियों से संपर्क करने की सनक सवार हो गयी। अब तो विभिन्न प्रकार की लड़कियों को आये दिन उलझाना, उसके बायें हाथ का खेल बन चुका था।

बड़ी संख्या में शादी करना तो कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन अपराध के इतिहास में उसका नाम इसलिए लिया जाता है कि उसने बिना पहली पत्नी को तलाक दिये और बिना उसे बताये; धड़ाधड़ शादियां कीं। पुलिस के लिए वह सिरदर्द बना हुआ था, क्योंकि सरकारी जेल का भय भी उसे भयभीत होकर दोबारा शादी न करने में असमर्थ रहता था। जैसे ही वह जेल से बाहर आता था, वह फिर एक

शादी कर लेता था। और, अगर कोई उससे पूछता कि तुम ऐसा क्यों करते हो, तो उसका उत्तर होता था कि "मैं क्या करूं? महिलाएं मेरी ओर आकर्षित होती हैं, क्योंकि इस संसार में कोई भी महिला यही चाहती है कि कोई भी पुरुष उससे यह कहे—'मैं तुमसे बेहद प्यार करता हूं।' और मैं वाकई महिलाओं को यह महसूस करवा देता हूं कि मैं उनसे बेहद प्यार करता हूं। "

विवाह-यात्रा का आरंभ

सन १९४४ तक, जब कि वह सत्तावन वर्ष का था, चार अलग-प्रकार की लड़कियों को अपने चक्कर में डाल चुका था। उसकी इस विवाह-यात्रा का आरंभ उन्नीस वर्ष की आयु में ही शुरू हो चुका था। उसने सबसे पहले एक मार्गरेट विंडसर नामकी लड़की से शादी की। उसका कहना था, इस शादी के समय वह बहुत ही युवा था और उसे पहला चुनाव ठीक नहीं लगा, अतः दोबारा शादी करने की बलवती इच्छा को वह रोक नहीं पाया। और, इस दूसरी शादी के बाद तो जैसे उसे नयी-नयी शादियों के अनुभव प्राप्त करने का, चस्का ही लग गया था।

उसकी पहली शादी को बारह महीने ही बीते थे कि उसकी जिंदगी में दूसरी लड़की सैली मौरगन आयी, उसने यह झूठ बोलकर कि वह तलाकशुदा आदमी है, उससे शादी कर ली। और उसकी पहली पत्नी की शिकायत पर एक से अधिक पत्नियां रखने के जुर्म में पहली बार उसे तीन महीने की जेल हुई।

इसी दौर में इससे पहले कि वह जेल से बाहर आकर, तीसरी शादी करता, ट्राम और कार की टक्कर में उसे चोट आ गयी और वह कई महीने अस्पताल में पड़ा रहा। लेकिन यहां भी चोट तो उसके शरीर को आयी, लेकिन दिल उसका बिलकुल साबुत था। यहां उसका दिल एक लाल बालोंवाली नर्स जेन सुआलिवन पर मचल उठा! और वह नर्स उसके चक्कर में ऐसे आयी कि स्वस्थ हो जाने पर वह उस बदसूरत किस्म के आदमी से तुरंत शादी के लिए तैयार हो गयी। दोनों विवाह-सूत्र में बंध गये।

यह विवाह—बंधन किसी प्रकार सत्रह वर्ष तक चला था कि जेन सुआलिवन उस बूढ़े आदमी को छोड़कर किसी नवयुवक के साथ भाग गयी और जिंदगी में पहली बार वान वी के अहम् को

जबरदस्त धक्का लगा !

लेकिन इसकी उसने बिलकुल चिंता नहीं की और इस गम को भूलने के लिए उसने थोड़े ही समय में एक और लड़की अन्ना बैले वाल को पटा डाला, और कोर्ट में जाकर तुरंत उससे कानूनी तौर से शादी कर ली ।

शादी हुए एक वर्ष भी पूरा न हो पाया था कि उससे उसे ऊब होने लगी और उसने अपनी ऊब को मिटाने के लिए और जिंदगी में 'चेंज' लाने के लिए एक हंगेरियन लड़की इवाफैंडरोवा सैकरे-मैंटो से शादी कर डाली ।

यह बात सन १६४२ की है । लेकिन उसकी शादियों का सिलसिला यहीं नहीं रुका । इस शादी के एक वर्ष बाद, उसने दो और लड़कियों से भी शादियां कीं ।

समय बीत रहा था और वान वी अपनी ट्राम-ड्राइवरी और अनेक पत्नियों के साथ चैन के दिन काट रहा था । इस तरह की शादियों से उसे एक फायदा अवश्य हो रहा था कि उसकी ट्राम जहां कहीं भी खराब होती, वहीं उसके निकट उसकी किसी न किसी पत्नी का घर अवश्य होता !

तलाक देने की फुरसत नहीं

एक बार जब पुलिस बहुसंख्या में शादी करने के जुर्म में उसे पकड़ने आयी, तो उसने अपने स्पष्टीकरण में जो कहा, वह भी कम मजेदार नहीं है । उसका कहना था, "तलाक में मैं विश्वास अवश्य करता हूं, लेकिन कई पत्नियां होने की वजह से मैं बहुत व्यस्त रहता हूं और जो लड़की मुझे पसंद आती है, उसके बिना मैं एक पल रह भी नहीं सकता । इसी शीघ्रातिशीघ्र शादी करने के चक्कर में मुझे कोर्ट में अरजी देने का समय नहीं मिल पाता ।"

अब तक उसने सत्रह शादियां कर ली थीं और वह अमरीका में बेहद चर्चित हो चुका था । समाचार-पत्रों में उसका नाम छपता । लोग उसके समाचार चटखारे ले-लेकर पढ़ते ।

केवल प्रचार के लिए शादी

उसके चर्चित व्यक्तित्व ने स्त्रियों को इतना प्रभावित किया कि लड़कियां उसके साथ अपना नाम जोड़कर ख्याति चाहने लगीं और चीन की एक लड़की ने तो कोर्ट में जाकर उसकी पत्नी होने का दावा भी किया । जब वान वी से इस संबंध में बात की गयी तो उसने कहा, "वह केवल मेरे साथ अपना नाम जोड़कर प्रचार चाहती है, वह मेरी पत्नी कभी नहीं रही"

पुलिस अधिकारी अकसर उसे लेकर आपस में मजाक किया करते कि यदि वे भूल से किसी महिला-पुलिस को उसे कैद करने के लिए भेजें, तो घर से पुलिस स्टेशन आने तक वह रास्ते में, निश्चित ही उससे शादी कर लेगा ।

अब तक वह इतना चर्चित हो चुका था कि जब उसे कोर्ट में ले जाया गया,

तो कोर्ट में उपस्थित जनता में १०० के लगभग, केवल महिलाएं ही थीं।

उसने जूरी के सामने एक बार अपना स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि उसका अपराध शायद केवल यही है कि उसने स्त्रियों को बेइतंहा प्यार किया है और बड़े अच्छे ढंग से किया है। कोर्ट में उसकी तमाम पत्नियों में से दो पत्नियां उसे बचाने के लिए भी आयीं। उनका कहना था कि उसका व्यवहार उनके प्रति बहुत ही अच्छा है। वह एक नरम-दिल और प्यार करनेवाला इनसान है। लेकिन दूसरी ओर कुछ पत्नियों ने कोर्ट में उसके खिलाफ उसके अत्याचार के साक्ष्य भी प्रस्तुत किये।

कैद और मुक्ति

इन सारे स्पष्टीकरणों और उसकी पत्नियों के बयानों को सुनकर जूरी को उसे अपराधी बताते हुए ग्लानि हो रही थी, लेकिन फिर भी उसके जीवनभर के विवाह के अपराधों को मिलाकर उसे अंतिम बार सैन क्वैनहीन जेल में दस वर्ष तक की सजा दी गयी।

कुछ समय के बाद जेल में उसके व्यवहार को देखते हुए उसकी सजा घटा दी गयी और थोड़े से वर्षों के बाद उसे जेल से मुक्ति मिल गयी। जेल से मुक्ति मिल जाने पर मनोरंजन के कार्यक्रम प्रस्तुत करनेवाली एक कंपनी ने उसे मंच पर अपनी अठारह शादियों के अनुभव सुनाने के लिए प्रस्ताव रखा। उसने मंच पर लोगों को बताया कि वह स्त्री में क्या देखता है।

उसकी नजर में एक स्त्री :

(क) कद में छोटी होनी चाहिए

(ख) उसे बढ़िया खाना बनाना आना चाहिए।

(ग) उसे व्यवहार-कुशल होना चाहिए।

उसने यह भी बताया कि उनके प्रेम करने के लिए वह उनसे पार्कों में, चर्च में और ट्राम में मिलता रहा।

वृद्धा पर फिदा

कुछ वर्षों तक, जनता ने अखबारों में उसके विषय में बहुत कम समाचार पढ़े, लेकिन सन १९५९ में अखबार में एक बार फिर पढ़ने को मिला कि उसका दिल एक बार फिर, और अब की बार अंतिम बार, एक इक्यासी वर्षीया वृद्धा पर मचल गया और कैलिफोर्निया की निवासी फे लैसर से वह शादी करने से बाज नहीं आया।

खबर पुलिस तक पहुंची। पुलिस ने पूछताछ के बाद पाया कि वाकई में वह उसकी अठारहवीं पत्नी थी। इस बार फिर उसे चार महीने की सजा हुई।

कुछ समय के बाद समाचार-पत्रों में फिर समाचार छपा कि वान वी को फिर कोर्ट में बुलाया गया है, लेकिन अगले ही दिन उस समाचार का खंडन करते हुए समाचार-पत्र ने लिखा था कि 'कोर्ट में वह देखा अवश्य गया था, लेकिन इसलिए नहीं कि उसने उन्नीसवीं शादी की, बल्कि इसलिए कि उसकी कोई पेंशन की समस्या थी।'

अनुवाद : प्रभा भारद्वाज

यह महीना और आपका भविष्य

● के. ए. दुबे 'पद्मेश'

ग्रह स्थिति : गुरु वृश्चिक में, शनि तुला में, राहु मिथुन में, केतु धनु में, मंगल मेष में, ४ से बुध मेष में, ८ से शुक्र वृष में, १४ से सूर्य मेष में, २५ से बुध वृष में।

मेष (चु, चे, चो, ल, ली, ले, लो, अ)

१४ से २५ के मध्य मांगलिक कार्य, नौकरी, व्यापार, शिक्षा, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति की दिशा में सफलता मिलेगी। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी। प्रेम-प्रसंग, दांपत्य सुख में वृद्धि, भौतिक सुख के साधनों में वृद्धि के योग बनते हैं। राजनीतिक मित्र से राजनीतिक लाभ उठाने के प्रयास में भी सफलता मिलेगी। नयी नौकरी या व्यापार की दिशा में लाभ मिलेगा। स्थानांतरण, यात्रा भी सुखद एवं लाभदायी होगी। प्रमोशन की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। क्रोध पर नियंत्रण रखना हितकर होगा क्योंकि क्रोध के कारण मिलता हुआ लाभ भी रुक सकता है। भावुकता पर महिलाओं को विशेष रूप से नियंत्रण रखना हितकर सिद्ध होगा। ८ से १४ तक के समय में विवाद, झगड़ा, आर्थिक मामलों में सावधानी रखनी चाहिए।

वृष, (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू, बो)

८ से १४ के मध्य का समय सफलता देनेवाला होगा। सारे व्यवधान समाप्त होंगे। नौकरी, व्यापार, स्थानांतरण, मांगलिक कार्य, प्रतिष्ठा आदि की दिशा में लाभ मिलेगा। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी। आर्थिक मामलों में आशातीत सफलता मिलेगी। भौतिक सुख, प्रेम-प्रसंग सफल होंगे। ससुराल से सहयोग मिलेगा। यात्रा की स्थिति आ सकती है। १४ से २८ के मध्य स्थानांतरण तथा मानसिक क्लेश की स्थितिसे गुजरना पड़

सकता है। व्यवसाय तथा पारिवारिक मामलों में सावधानी रखें। दुर्घटना, अर्थहानि एवं अपयश की स्थिति से बचें।

मिथुन (क, की, कू, को, घ, घ, ह)

१ से ८ तथा १५ से २१ के मध्य शोध-कार्य, रचनात्मक, सृजनात्मक लेखन, संगीत, आदि में रुचि रखनेवालों को सफलता मिलेगी। उच्च अधिकारी, राजनेता एवं संबंधित नेता व अधिकारी से संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी। सहयोग व लाभ मिल सकता है। राजनीतिक लाभ भी मिल सकता है। संतान के विवाह, नौकरी, शिक्षा आदि की दिशा में भी सफलता मिलेगी। यात्रा, स्थानांतरण, मांगलिक कार्य आदि की दिशा में भी सफलता मिलेगी। ६ से १४ के मध्य विवाद अपयश, व्यावसायिक उलझनों से बचने का प्रयास करें। २२ से ३० के मध्य यात्रा की स्थिति में आर्थिक हानि या दुर्घटना से बचने का प्रयास करें। अधिकारी, पिता से विवाद या झगड़े की स्थिति उत्पन्न न होने दें, मानसिक क्लेश की स्थिति आ सकती है।

कर्क (ही, हू, हो, हे, उ, डी, डू, डे, डो)

१ से ८ के मध्य महिला अधिकारी से लाभ तथा सहयोग मिल सकता है।

पर्व एवं त्योहार

१ अप्रैल—गणेश चतुर्थी, २—रंग पंचमी, ५—शीतलाष्टमी, ९—पापमोचनी एकादशी, १०—प्रदोष, १३—अमावस्या, १४—वसंत-नवरात्रारंभ, १६—गणगौरी व्रत, १८—श्रीपंचमी, २०—दुर्गाष्टमी, २१—रामनवमी व्रत, २३—कामदा एकादशी, २४—प्रदोष, २५—महावीर जयंती एवं अनंग त्रयोदशी, २७—पूर्णिमा ३०—गणेश चतुर्थी।

राशियां और प्रभाव—मेष राशि पर मंगल, सूर्य, बुध, शुक्र ग्रहों आदि का प्रभाव रहेगा, जिससे इस माह सर्वाधिक मेष राशि प्रभावित होगी। पारिवारिक, शारीरिक, व्यावसायिक लाभ-हानि की घटनाएं घट सकती हैं। शनि एवं गुरु से भी धनु, वृश्चिक, तुला राशि के व्यक्ति भी विशेष प्रभावित होंगे। मंगल का प्रभाव रहेगा, जिससे दुर्घटनाएं (वायुयान, रेल) या अन्य ढंग से कोई विशेष जन-धन की हानि की संभावना बनती है। अग्नि-भय, चोरी, दुर्घटना आदि से बचने के लिए प्रयास करें।

शांति कैसे करें?—

ओम् क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः सः क्रौं क्रीं क्रां ओम्।

प्रातःकाल मंगल यंत्र या हनुमानजी के चित्र के सम्मुख सरसों के तेल का दीपक जलाकर इस मंत्र का १०८ बार या उससे अधिक बार २७ दिन तक जाप करें। संकट में फंसे, व्यवसाय या परिवार, मुकदमा, संपत्ति आदि की स्थितियों से ग्रसित व्यक्तियों के लिए यह लाभदायक मंत्र सिद्ध होगा।

राजनीतिक लाभ भी मिल सकता है। प्रतिष्ठा, धन, संपत्ति की दिशा में भी सफलता मिलेगी। ८ से १४ के मध्य संतान के कारण सुख, प्रतिष्ठा, दायित्व की पूर्ति की दिशा में सफलता मिलेगी। १४ से २६ के मध्य नौकरी में उन्नति। मुकदमा, शासन व अधिकारी से भी लाभ मिल सकता है। व्यावसायिक प्रगति होगी। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी।

सिंह (म, मी, यू, मे, मो, ट, टी, टू, टे)

१५ से ३० के मध्य बनायी गयी योजना को साकार रूप देने में सफलता मिलेगी। नौकरी में प्रमोशन, स्थानांतरण, विभागीय परिवर्तन, नयी नौकरी आदि की दिशा में भी लाभ मिल सकता है। व्यापार एवं आर्थिक दिशा में भी लाभ मिलेगा। अधिकारी व शासन से लाभ मिल सकता है। संतान के दायित्व की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। राज-नीतिक लाभ भी मिल सकता है। नारी मित्र या अधिकारी से भी लाभ मिलने की संभावना बनती है। १४ तक का समय स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता का समय है। पारिवारिक तनाव या संतान के कारण क्लेश की स्थिति आ सकती है।

कन्या (टो, प, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे, पो)

८ से १४ के मध्य मांगलिक कार्य की दिशा में सफलता मिलेगी। पत्नी के संबंध में सुखद समाचार प्राप्त होगा। रोजी-रोटी के साधनों में प्रगति होगी। प्रतिष्ठा, पद, एवं धन-वृद्धि के प्रयास सफल होंगे। मित्र, संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा तथा उनसे सहयोग भी मिलेगा। १५ से २८ के मध्य नौकरी, व्यापार के प्रति सचेत रहें ताकि व्यव-धान की स्थिति का सामना न करना पड़े। पारिवारिक मामलों में संयम एवं विवेक से कार्य लें।

तुला (र, रा, रु, रे, रो, त, ती, तू, ते)

१५ से ३० के मध्य का समय बेरोज-गार व्यक्तियों के लिए उत्तम होगा, यदि रोजगार प्राप्त की दिशा में पूरी शक्ति से प्रयास किये जाएं तो सफलता मिलेगी। धन, प्रतिष्ठा, नौकरी, रोजी-रोटी के अन्य साधनों में भी प्रगति के प्रयास सफल होंगे। आर्थिक योजना को साकार रूप देने में सफलता मिलेगी। मांगलिक कार्य हेतु चल रहे प्रयास सफल होंगे। १ से ८ के मध्य मांगलिक कार्य की दिशा में विशेष प्रयास करें, खासतौर से कन्या के विवाह के संबंध में सफलता मिल सकती है। १ से १४ के मध्य आर्थिक हानि की संभावना है।

वृश्चिक (तो, न, नी, नू, ने, नो, य, यी, चे,)

८ से १४ के मध्य संतान के दायित्व शिक्षा, विवाह, व्यवसाय की दिशा में सफलता मिलेगी। शोधकार्य, रचनात्मक शिक्षा, प्रतियोगी, विभागीय परीक्षा की दिशा में सफलता मिलेगी। मांगलिक कार्य में भी सफलता मिलेगी। रोजी-रोटी के साधनों में वृद्धि होगी। स्थानां-तरण, प्रमोशन की दिशा में भी लाभ

मिल सकता है। १५ से २८ के मध्य संतान के कारण परेशानी उठानी पड़ सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में अधिक श्रम करें, तभी आशातीत सफलता मिलेगी। यात्रा की स्थिति से बचें।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

१ से ८ के मध्य शिक्षा, प्रतियोगी या विभागीय परीक्षा की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। कला, साहित्य, संगीत, शोधकार्य में रुचि रखनेवालों को सफलता मिलेगी। संतान के दायित्व शिक्षा, नौकरी विवाह आदि की पूर्त्ति की दिशा में सफलता मिलेगी। ८ से १४ के मध्य संतान के कारण मानसिक पीड़ा मिल सकती है। शिक्षा के प्रति सचेत रहें ताकि व्यवधान की स्थिति न आ सके। आर्थिक रूप से भी परेशानी की स्थिति का सामना पड़ सकता है। १५ से २६ के मध्य आर्थिक मामलों में बनायी गयी योजना को साकार रूप देने में सफलता मिलेगी। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी।

मकर (भो, ज, जी, जू, जे, जो, ख, खी, ग, गी)

८ से २५ तक का समय कला, संगीत, साहित्य, ज्योतिष, सामाजिक कार्य आदि में रुचि रखनेवालों को सफलता देनेवाला होगा। संतान के विवाह के संबंध में चल रहे प्रयास में भी सफलता मिलेगी। शिक्षा, नौकरी, व्यावसायिक परीक्षा की दिशा में भी आशातीत सफलता मिलेगी। आर्थिक मामले में बनायी गयी योजना को साकार रूप देने में सफलता संभावित। १५ से २८ के मध्य किसी मित्र या साझेदार या भाई के कारण सहयोग तथा रुके हुए कार्य में लाभ मिलेगा। राजनीतिक लाभ के प्रयास सफल होंगे। भौतिक सुख के संबंध में पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

कुंभ (गू, गे, गो, स, सी, सु, से, सो, श्र, द,)

१ से ८ के मध्य आर्थिक मामलों में लाभ मिलेगा। योजना को साकार रूप देने में सफलता मिलेगी। भौतिक सुख, वाहन, प्रेम-प्रसंग, दांपत्य सुख के लिए ८ के बाद का समय सहायक सिद्ध होगा। विभागीय अधिकारी व नेता से सहयोग, लाभ मिल सकता है। आर्थिक मामले में किये जा रहे प्रयास लाभदायी होंगे। संतान के संबंध में सुखद समाचार प्राप्त होंगे। १५ से २६ के मध्य मित्र, साथी, सहयोगी या साझेदार से संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी तथा लाभ भी मिल सकता है।

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, च, ची)

१ से ८ के मध्य आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी। मांगलिक कार्य व रोजी-रोटी के साधनों की दिशा में सफलता मिलेगी। भौतिक सुख के साधनों में भी वृद्धि होगी। ८ से १६ के मध्य नारी मित्र, अधिकारी से लाभ मिल सकता है। यात्रा, स्थानांतरण की स्थिति आ सकती है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। राजनीतिक लाभ लेने का प्रयास सफल होंगे। १८ से २४ के मध्य स्वास्थ्य, दुर्घटना, अर्थहानि, व्यावसायिक उलझनों के प्रति सचेत रहें।

—१८, पद्मेश लेन, रतनलाल नगर,
कानपुर-२२

किस्से कुछ अजीब अफसरों के

● शशांक

अफसर कैसा भी हो, अफसर ही होता है। फिर यदि वह सिरफिरा हुआ तो समझिए कि करेला और वह भी नीम चढ़ा। लेकिन लोग भी क्या करें ? ऐसे अफसरों को भी बरदाश्त करते रहे हैं। पुराने जमाने से लेकर आज तक सिरफिरे अफसरों के किस्सों की कमी नहीं है।

अंगरेजों के जमाने की बात है। एक मजिस्ट्रेट को बढ़ी हुई दाढ़ी-मूंछ से सख्त चिढ़ थी। उसके सिरफिरेपन ने एक दिन अदालत में विचित्र दृश्य उपस्थित कर दिया। हुआ यह कि तीन-चार वकील उस दिन दाढ़ी बनाकर नहीं आये थे। उस मजिस्ट्रेट ने तुरंत नाई बुलवाये और अदालत में ही अपने सामने उन वकीलों की हजामत बनवा दी।

चेक ले जानेवाली चिड़िया

एक अन्य सिरफिरे मजिस्ट्रेट का किस्सा इससे भी मजेदार है। वह लखनऊ में थे। एक दिन उनके पास किसी दूसरे शहर के बैंक का एक चेक आया। चेक की राशि बीस रुपये थी। मजिस्ट्रेट साहब ने अपना चपरासी स्टेशन भेजकर उस शहर का किराया पुछवाया। मालूम हुआ कि आने-जाने में कोई चालीस रुपए खर्च हो जाएंगे। उन्होंने कहा, "तब ऐसे चेक को रखने से क्या फायदा ?" उसे वह फाड़कर फेंकना ही चाहते थे कि पेशकार ने रोककर कहा, "हुजूर ! जरा अपने बैंक के मैनेजर को बुलवाकर तो पूछ लीजिए।" आखिर बैंक-मैनेजर आये। उन्होंने मजिस्ट्रेट साहब की बात सुनी तो बोले, "यह लीजिए साढ़े उन्नीस रुपये, चेक मेरा हो गया।"

"लेकिन आप मेरे खातिर चालीस रुपये क्यों खर्च करेंगे ?"

"मेरा कुछ भी खर्च न होगा। दर-असल मेरे पास एक चिड़िया है, जो उसे ले आएगी।"

"अरे वाह ! तब तो आप उस चिड़िया को मेरी तरफ से दो रुपये की मिठाई खिलाइएगा!" और उन्होंने दो रुपये बढ़ा दिये। इसके बाद वह जब भी बैंक-मैनेजर से मिलते, तब यही पूछते, "वह चिड़िया अच्छी तो है ?"

नाबालिग पेशकार

अब सुनिए एक अंगरेज कलक्टर के सिरफिरेपन का मजेदार किस्सा। घटना मिरजापुर की है। लखनऊ के नवाबी खानदान की एक बेगम अपनी धन-दौलत

बटोरकर चुपचाप भाग निकलीं और मिरजापुर में आ छिपीं। उनके साथ छोटा बेटा भी था। एक दिन उस बेगम ने अपने बेटे के हाथ अपना एक कंगन बाजार में बेचने के लिए भेजा। जौहरी ने कंगन देखा और लड़के से पूछताछ की। उसे डर था कि दाल में कुछ काला न हो। इसलिए चुपके से कलक्टर को खबर कर दी। कलक्टर ने जब पता लगाया, तब बेगम की बात खुल गयी।

औपचारिकतावश कलक्टर अपनी बीवी के साथ बेगम से मिलने आया। बेगम भी कुछ कम सनकी न थी। आव देखा न ताव, तपाक से एक जोड़ी कंगन कलक्टर की बीवी को पहना दिये। उधर कलक्टर पानी-पानी हो गया। अब उसे सनक सवार हुई। वह बेगम के लड़के की तारीफ करने लगा। उसे अपना पेशकार बना लिया। अगले दिन उस नाबालिग लड़के की नियुक्ति हो गयी। वह सज-धजकर कलक्टर साहब की अदालत में बैठने लगा और कलक्टर साहब भी उसे बिलकुल समझदार पेशकार की तरह इज्जत देते रहे।

गवर्नर और शेरवानी

सिरफिरापन यदि घर तक सीमित रहता है तो छिप जाता है लेकिन अगर वह भरी सभा में उजागर हो जाए तो बड़ी मुश्किल होती है। घटना सन १६०६ की है। पुरानी हैदराबाद रियासत के कृष्णा जिले में एक कलक्टर थे—मि. स्कॉट। वे पहले कुरनूल में डिप्टी कलक्टर थे। उनके कलक्टर थे—एक मुसलमान, जो अपनी वरीयता के कारण उस पद पर पहुंचे थे। एक दिन उस जिले में गर्वनर आनेवाले थे। लोग उनके स्वागत के लिए खड़े थे। मुसलमान कलक्टर साहब बहुत बढ़िया किस्म की शेरवानी पहनकर आये थे। डिप्टी कलक्टर मि. स्कॉट के सिर पर सनक सवार हुई। उन्होंने सोचा कि गवर्नर के सामने एक कलक्टर इतना लंबा कोट पहनकर खड़ा होगा यह नामुमकिन है। बस, उसने एक कैंची मंगायी और इतनी फुरती से शेरवानी काटकर छोटी कर दी कि कलक्टर साहब देखते ही रह गये।

मध्यप्रदेश की नागौद रियासत में एक दीवान थे। दफ्तर की पचास-साठ फाइलें रोज घर पर ही दस्तखत करते थे, लेकिन वह अपनी एक सनक के लिए मशहूर थे। जिस फाइल पर जो जी में आता टिप्पणी लिख देते और जिस विभाग को चाहते भेज देते। उदाहरण के लिए वित्त विभाग की फाइल में तनख्वाहों की स्वीकृति मांगी जाती तो वह उस पर लिख देते, यह इमारत कब तक बन जाएगी? ठेकेदार को पेश करो। इसके बाद वह फाइल राशन विभाग को भेज देते। नतीजा यह होता कि हर विभाग के अफसर एक दूसरे की फाइलें पहुंचाते-पहुंचाते परेशान हो जाते और उन मामलों पर फैसला कब और कैसे होता था, यह कहा नहीं जा सकता। ●

सनकों में जीते हैं कलाकार

● राबिन कोरी

"वहम की क्या दवा, यह कोई लुकमान क्या जाने।"

जी हां, आपको हमेशा कोई न कोई वहम लगा रहता है या आप कुछ अंधविश्वासों से अपने आपको मुक्ति नहीं दिला सकते, तो घबराइए नहीं। देश-विदेश यानी यत्र-तत्र सर्वत्र ये वहम छाये हुए हैं। बड़े से बड़ा गायक, नाटककार, सबने कुछ ऐसे वहम पाले कि उन्हें हर समय लगता रहा कि यदि अमुक वस्तु साथ न हुई, अमुक अंक, व रंग न हुआ तो कुछ अशुभ होने की संभावना है।

● सुप्रसिद्ध गायिका मार्टी वेब तेरह नंबर को हमेशा शुभ नंबर कहती रही। इसका कारण ? एक तो उनकी जन्मतिथि भी तेरह थी और दूसरा उनका नाम भी अंगरेजी वर्णमाला के तेरहवें वर्ण 'एम' से आरंभ हुआ।

● लियानार्ड रोस्सिटर का कथन है कि वे मोजे पहनते समय कभी भी बायें पांव में मोजा पहले नहीं पहनते क्योंकि बायें पांव में पहले मोजा पहनना हमेशा भयंकर रूप से अशुभ सिद्ध हुआ।

● सुप्रसिद्ध हास्यविद जिम डेविडसन अपने साथ छह फुट लंबा स्काटलैंड का झंडा ड्रेसिंग रूम में रखते। इस झंडे को उन्होंने वेम्बले से अपने एक सहयोगी से लिया था। जब भी वे इस झंडे को कहीं भूल आये, तब उनके 'शो' प्रायः नाकामयाब ही रहे।

● प्रत्येक विदेशी स्टार-सुपरस्टार के

हैरी सेकोम्बे लियानार्ड रोस्सिटर मार्टी वेब

लिए निम्नलिखित तीन स्वर्णिम नियम हैं—

—शेक्सपियर का नाम न लीजिए, न ही हर बात में मैकबेथ से उद्धरण-उदाहरण दीजिए। ड्रेसिंग रूम में सीटियां न बजाइए। यदि आप ड्रेसिंग रूम से बाहर जाएं, तो वापस आने के लिए पहले पीछे मुड़िए फिर वहां तीन चक्कर काटिए। शपथ

खाइए और फिर ड्रेसिंग रूम के दरवाजे को खटकाइए और फिर ! चुपके से अंदर चले जाइए ।

● न तो हरा रंग पहनिए, न हरे रंग की कार खरीदिए और न ही हरे रंग का कुछ और अपने पास रखिए बस, आपका मन हरा रहेगा ।

● लंदन टी. वी. के 'लंदन नाइट' कार्यक्रम देनेवाले सिद्ध हास्य अभिनेता टॉम ओ कोनर का कहना है कि जिस पोशाक के पहनने से उनका कार्यक्रम अधिक सफल होता है, वे उसी पोशाक को यथासंभव पहनने की कोशिश करते हैं, यानी उन्हें विश्वास है कि लोग उन पर नहीं, उनकी पोशाक पर ही हंसते हैं ।

● हैरी सेकोम्बे का कहना है कि एक बार उनकी दस वर्षीया बेटी जेनी उनके

वहम की दवा तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं थी । शायद यही कारण है कि वहम की बीमारी आज तक लाइलाज है ।

ड्रेसिंग रूम में आकर सीटियां बजाने लगी । उन्होंने उसे मना किया । लेकिन वह नहीं मानी । नतीजा यह हुआ कि जब 'शो' चल रहा था, तब हैरी सेकोम्बे के दोनों कांटेक्ट लैंस गिर गये । उस दिन से वे गुडलक यानी सौभाग्य-सूचक एक ब्रेसलेट, जिस पर हैरी खुदा हुआ है, हमेशा अपने साथ रखते हैं । जब कभी बच्चे आकर उनके ड्रेसिंग रूम में कोई ऐसी-वैसी हरकत करते हैं, उन्हें वहम हो जाता है, तब उनका सौभाग्य-चिह्न ब्रेसलेट से ही उनका ढाढस बंधता है ।

● मार्टी केनी का कथन है, 'मैं कभी भी कोई आभूषण नहीं पहनती । क्योंकि दो बार जब भी मैंने गलती से कुछ गहने पहन लिये, तब दोनों बार रास्ते में कार खराब हो गयी और सारे कार्यक्रम पर पानी फिर गया ।'

● रोगर डि कुरेसी का कहना है, 'मैं बहुत वहमी हूं । एक तो मैं कभी दोपहर के बाद नाखून नहीं काटती । दूसरे, हमेशा दायां जूता ही पहले पांव में पहनती हूं । हरा रंग तो हम थियेटरवालों का दुश्मन है । एक बार बर्मिंघम में एक कार्यक्रम में हम सबको रंगबिरंगे माइक दिये गये सभी के माइक एक प्लास्टिक के कवर में थे । कार्यक्रम के दौरान मेरा माइक दो बार खराब हुआ । फलतः कार्यक्रम गड़बड़ा गया । पहले प्रोग्राम में ही ऐसा गड़बड़ घोटाला होगा ज्ञात न था । खैर जब माइक से प्लास्टिक का कवर हटाया गया. तब गड़बड़ी के मूल कारण पता चला । मेरे माइक का रंग हरा था । मैंने तुरंत दूसरे रंग का माइक मांगा और अगले 'शो' में ऐसा रंग जमा कि चारों तरफ तालियों की गड़गड़ाहट से हाल गूंज उठा ।' ●

गोष्ठी

श्याम सुंदर भारद्वाज, वाराणसी : नर्व गैसें क्या हैं ? इनका क्या उपयोग है ?

नर्व गैसें ऐसी विषैली गैसें हैं, जिनका उपयोग युद्धों में होता है। नर्व गैसों की श्रेणी में सर्वप्रथम यौगिक का पता जरमनी की एक रसायनशाला में, सन १९३५ में, डॉ. श्रेडर ने लगाया था। उन्होंने एक विषैली दवा तैयार की थी और उसका नाम 'टेबुन' रखा था। लगातार प्रयोग के पश्चात 'सेरिन' और 'सोमन' नामक दो और घातक यौगिकों की खोज की गयी। अमरीका में नर्व गैसों को 'वी एजेंट' कहा जाता है। इनमें से कम वाष्प-शील यौगिकों को 'वी-एजेंट' कहते हैं। टेबुन के लिए 'जी. ए.', सेरिन के लिए 'जी. बी.' और सोमन के लिए 'जी. डी'. सांकेतिक नाम हैं।

द्वितीय महायुद्ध के बाद नर्व गैसों के संबंध में निरंतर अनुसंधान होता रहा है। कारण, इन देशों की विषाक्तता ही है।

टेबुन की अपेक्षा सेरिन अधिक विषाक्त है, पर उसके और भी उपयोग हैं। अमरींका में सेरिन तैयार करने के लिए रॉकी माउंटेन आर्समेल डेनवर में एक प्लांट लगया गया है। सेरिन रंगहीन द्रव है। उसकी वाष्प भी रंगहीन होती है। विशुद्ध अवस्था में यह गंधहीन भी होता है। युद्ध के मैदान में श्वास द्वारा इसकी घातक मात्रा से अधिक के परिमाण में ही पहुंचने पर, इसके अस्तित्व का पता चलता है। यह शीघ्र प्रभाव पैदा करती है। वायुमंडल में इसकी इतनी मात्रा फैलायी जा सकती है कि दो तीन श्वास लेने के बाद ही व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है।

रामनरेश सोनी, शाहजहांपुर : क्रिकेट के खेल में 'फालो ऑन' से क्या तात्पर्य है ? 'फालो ऑन' कब होता है ?

क्रिकेट के नियमों में 'फालो ऑन' का सर्वप्रथम उल्लेख सन १८३५ में मिलता है। उन दिनों जब कोई टीम सौ रनों से पिछड़ जाती थी, तब उसे दोबारा बल्लेबाजी के लिए मैदान में उतरना पड़ता था। सन १८५४ में एक दिवसीय मैचों के लिए यह संख्या साठ कर दी गयी। लंबे समय के मैचों में ८० रन का अंतर होने पर टीम को दुबारा बल्लेबाजी करनी पड़ती थी। लगभग चालीस वर्षों बाद इस नियम में परिवर्तन किया गया और तीन दिनों वाले मैचों में 'फालो ऑन' के लिए रन-संख्या एक सौ बीस कर दी गयी। सन १९०० में इन नियमों में पुन: संशोधन हुआ और फालोआन करवाने या न करवाने का निर्णय विपक्षी टीम के कप्तान पर छोड़ दिया गया।

सन १९६१-६२ में, परीक्षण के तौर पर फालो ऑन नियम को स्थगित कर दिया

गया था, परंतु सन १९६३ में इस नियम को पुनः लागू किया गया। सन १९७१ में टैस्ट मैचों और पांच दिवसीय मैचों में फालो ऑन के लिए रनों के अंतर की संख्या दो सौ कर दी गयी।

क्रिकेट की दुनिया में 'फालो ऑन' अच्छा नहीं समझा जाता। 'फालो ऑन' के कारण दोबारा खेलने के लिए मजबूर टीम अपमानित-सा अनुभव करती है और मनोवैज्ञानिक दबाव में खेलती है।

शंभूप्रसाद, गोंदिया : सान चक्की में लगने-वाला पत्थर साधारण पत्थर होता है, या किसी खास किस्म का? या, सान चक्की किसी और वस्तु से बनायी जाती है?

सान चक्की पत्थर से नहीं, बल्कि कार्बोरंडम और ऐलंडम के चूर्ण से बनती हैं। ये पदार्थ क्रमशः सिलिकन कारबाइड और एलुमिनियम आक्साइड हैं। रेत की अपेक्षा ये दोगुने कठोर होते हैं। इनसे अधिक कठोर केवल हीरा ही होता है।

सान चक्की बनाने के लिए पहले इन दोनों पदार्थों का बारीक चूर्ण बना लिया जाता है। फिर इसे गोंद, वल्केनाइट, ऐसफाल्ट, सेलूलाइड, चपड़ा, संश्लिष्ट रेजिन या भांडमृत्तिका मिलाकर, आवश्यकता के अनुसार सांचे में दबाकर और पकाकर सान चक्की बना ली जाती है।

शीतलप्रसाद आर्य, नागपुर, : स्पेक्ट्रमिकी क्या भौतिकी का ही विभाग है? इसमें किन बातों का अध्ययन किया जाता है?

जी हां, 'स्पेट्रमिकी' भौतिकी का ही एक विभाग है। इसमें पदार्थों द्वारा उत्सर्जित या अवशोषित विद्युत् चुंबकीय विकिरणों के स्पेक्ट्रमों का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन की सहायता से पदार्थों की आंतरिक रचना का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। चूंकि इस विभाग में मुख्य रूप से स्पेक्ट्रम का ही अध्ययन किया जाता है, इसे 'स्पेक्ट्रमिकी' या स्पेक्ट्रम-विज्ञान (स्पेक्ट्रोस्कोमी) कहते हैं।

गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत के जनक सर आइजक न्यूटन ने ही सन १६६६ में इस अध्ययन की नींव डाली थी। उन्होंने एक बंद कमरे में खिड़की के छिद्र से आते हुए सौर-किरण पुंज को एक 'प्रिज्म' से होकर परदे पर जाने दिया, फलतः परदे पर सात रंगों की एक पट्टी बन गयी। ये सात रंग इस क्रम से थे—लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और बैंगनी न्यूटन ने इस पट्टी को 'स्पेक्ट्रम' कहा। इस प्रयोग द्वारा ही उन्होंने सिद्ध किया कि सूर्य का प्रकाश सात रंगों का मिश्रण है।

न्यूटन ने सूर्य की किरणों से जो 'स्पेक्ट्रम' प्राप्त किया था, वह शुद्ध नहीं था, अर्थात सातों रंग पूर्णतः पृथक नहीं थे, वरन आपस में मिले हुए थे। इन रंगों को बिलकुल पृथक देखा, डब्लू एच. वोलास्टन ने। सन १८०२ में उन्होंने छिद्र की बजाय एक संकरी झिरी का प्रयोग कर शुद्ध 'स्पेक्ट्रम' प्राप्त किया। बाद में जोसफ फाउन हॉफर ने प्रिज्म की सहायता से शुद्ध 'स्पेक्ट्रम' प्राप्त करने की विधि

खोज निकाली।

आजकल 'स्पेक्ट्रम' का अर्थ बहुत व्यापक हो गया है। अब विभिन्न वर्णों की रश्मियों का विभाजन रंग के आधार पर नहीं, वरन तरंग-दैर्घ्य के आधार पर होता है। तरंग-दैर्घ्य के अनुसार रश्मियों की सुव्यवस्था को 'स्पेक्ट्रम' कहा जाता है। 'स्पेक्ट्रमिकी' का संबंध प्रायः सभी प्रकार की विद्युत चुंबकीय तरंगों से है। उसके अंतर्गत अवरक्त, दृश्य, तथा पराबैंगनी किरणों के स्पेक्ट्रम का अध्ययन किया जाता है।

सरला शर्मा, रोहतक : हेपाटाइटिस रोग क्या है? यह क्यों होता है? इसके लक्षण क्या हैं?

हेपाटाइटिस का संबंध यकृत से है इसे यकृत-प्रदाह भी कहा जाता है। 'होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा' के अनुसार पुराने मलेरिया बुखार, पारा या कुनैन का अपव्यवहार करने या अधिक शराब पीने से, अथवा गरम जगह में रहने आदि कारणों से यकृत में खून जमा हो जाता है और उससे ही प्रदाह होता है। जब यह प्रदाह पुराना पड़ जाता है, तब यकृत बढ़ जाता है और सख्त भी हो जाता है। धीरे-धीरे वह पेट के दायीं ओर फैलने लगता है। शुरुआत में रोगी को पहले जाड़ा और कंपकंपी के साथ बुखार आता है। इसके बाद यकृत के ऊपर दर्द, सिर में दर्द, मुंह का स्वाद बिगड़ा-बिगड़ा प्रतीत होता है। जीभ मैली-सी हो जाती है। भूख नहीं लगती। दायें कंधे में दर्द होता है।

सुनील रस्तोगी, भोपाल : मैंने हाल ही में बाम स्ट्रोकर का उपन्यास 'ड्रेकुला' पढ़ा। क्या ऐसा कोई व्यक्ति हुआ है?

बाम स्टोकर के उपन्यास 'ड्रेकुला' का नायक लेखक की कल्पना की ही उपज है, लेकिन एक असली 'ड्रेकुला' भी हुआ है। सन १४३१-७६ में हुए इस 'ड्रेकुला' का वास्तविक नाम 'ब्लाड' था। लेकिन उसने अपने पिता 'ड्रेकुल' के नाम पर अपना नाम 'ड्रेकुला' रख लिया था। वह एक और नाम से जाना जाता था—'ब्लाड द इंपेलर'। ड्रेकुला एक अत्यंत क्रूर हृदय-वाला शासक था। उसे रक्तपात में बेहद आनंद आता था। कहते हैं, एक बार उसने राजधानी के भिखारियों को भोज के लिए आमंत्रित किया। जब वे सब उसके महल में एकत्र हो गये, तब उसने महल के द्वार बंद कर आग लगा दी। (विस्तृत विवरण के लिए देखिए—'कादम्बिनी' जून, १९७६ का अंक)।

चलते-चलते एक प्रश्न और...

राजकिशोर गोस्वामी, दतिया : कवियों को अधिकांशत: पागल क्यों कहते हैं?

सनक के कारण...।

'मेरे राज्य का प्रत्येक वृद्ध मेरे लिए शहंशाह सुलतान गयासुद्दीन तुगलक (पिता) के स्थान पर है, प्रत्येक युवक बहराम खां (भाई) के स्थान पर और प्रत्येक बालक मेरे पुत्र के स्थान पर है।' कहनेवाला सुलतान मुहम्मद इब्ने तुगलक शाह यानी मुहम्मद तुगलक, जिसे इतिहास 'पागल बादशाह' के नाम से जानता है, इतना निर्मम और क्रूर हो गया था कि उसके समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी का कहना था कि 'कोई दिन या सप्ताह ऐसा नहीं जाता था, जबकि उसके महल के दरवाजे पर खून की नदी न बहती हो।'

इतिहास एक पागल बादशाह का

• डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

मुहम्मद तुगलक दो बातों के लिए दूर-दूर तक मशहूर था—एक तो, ऐसा कोई दिन नहीं जाता था, जब कि वह किसी न किसी दरिद्र को खुले हाथ दान देकर अमीर न बना देता हो, और दूसरे, किसी न किसी को मौत की सजा न देकर हत्या न करा देता हो।'

तुगलक के दरबार में आनेवाले इतिहासकार यात्री इब्ने बत्तूता का कहना है, 'एक दिन मैं घोड़े से दरबार आ रहा था कि महल के दरवाजे पर मेरा घोड़ा भड़क गया। मैंने देखा कि महल के दरवाजे पर एक आदमी की लाश के तीन टुकड़े पड़े हुए हैं। लोगों ने मुझे बताया और बाद में मैंने खुद देखा कि तुगलक, जिसे मौत की सजा सुनाता था, उसे अपने महल के दरवाजे पर कत्ल करा देता था और

उसकी लाश को तीन दिन तक वैसे ही पड़े रहने देता था, जिससे लोग देखें और सबक लें।'

यातनाओं से मौत भली

मौत की सजा से भी अधिक कष्टदायी होती थी उसकी यातनाएं। वह ऐसी दारुण यातनाएं देता था कि देखनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाते थे। इसलिए लोग इन यातनाओं को सहने के बजाय मर जाना बेहतर समझते थे। वह जिस पर भी,

> **'मैं इस बादशाह के गुणों के विषय में यह कहूं कि वह बड़ा ही नम्र तथा दीन स्वभाव रखता था या यह लिखूं कि वह स्वयं ईश्वर बनना चाहता था?'**
>
> **—जियाउद्दीन बरनी**
> **'तारीखे फीरोजशाही'**

जो भी आरोप लगाता, उसे उससे यातनाओं द्वारा कबूलवा लेता और फिर मौत की सजा दे देता। इसलिए लोग अपने ऊपर तुगलक द्वारा लगाये गये झूठे आरोपों को भी सहज ही स्वीकार कर लेते।

सौतेले भाई की हत्या

एक बार उसे संदेह हो गया कि उसका सौतेला भाई मसऊद खां उसके विरुद्ध विद्रोह करना चाहता है, जबकि ऐसी कोई बात नहीं थी। उसने मसऊद खां से इस विषय में पूछताछ की। वह उसके द्वारा दी जानेवाली यातनाओं को जानता ही था, अतः उसने दारुण यातनाएं भोगने की अपेक्षा यही उचित समझा कि वह अपने ऊपर लगाये गये निराधार और झूठे आरोप को स्वीकार कर ले और उसने यही किया।

तुगलक ने उसे बीच बाजार में खड़ा कराकर सिर कटवा डाला। नियमानुसार उसकी लाश भी तीन दिन तक वहां वैसी ही पड़ी रही। इसी तरह दो साल पहले व्यभिचार का आरोप लगाकर तुगलक ने मसऊद खां की मां की, जो सुलतान अलाउद्दीन खिलजी की बेटी थी, इसी जगह पर पत्थर मार-मारकर हत्या करायी थी।

उसकी इस क्रूरता का कारण उसकी महत्त्वाकांक्षी योजनाएं थीं। जहां वह एक ओर दुनिया का सबसे बड़ा शहंशाह बनना चाहता था, वहीं सबसे बड़ा दानी और न्यायप्रिय भी। इसी महत्त्वाकांक्षा के वशीभूत हो, वह नये से नये आदेश निकाला करता था। कभी-कभी तो वह एक-एक दिन में सौ-सौ, दो-दो सौ एक साथ फरमान जारी करा दिया करता था।

दंड देने में मुहम्मद तुगलक किसी का भी लिहाज नहीं करता था, चाहे वह बड़ा से बड़ा अधिकारी हो, मुल्ला, मौलवी या पहुंचा हुआ सिद्ध-प्रसिद्ध साधु-संत या फकीर, हिंदू हो या मुसलमान। शेख शिहाबुद्दीन एक बहुत ही बड़े शेख और प्रतिष्ठित संत थे, जिनके पास पिछले दोनों सुलतान, कुतुबुद्दीन और गयासुद्दीन, आशीर्वाद लेने जाया करते थे। एक बार

मुहम्मद तुगलक ने चाहा कि शेख शिहाबुद्दीन उसके दरबारी अधिकारी बन जाएं, लेकिन शेख ठहरे फकीर आदमी, उन्होंने इस दुनियादारी के झमेले में पड़ने से इनकार कर दिया। इस पर तुगलक को इतना गुस्सा आया कि उसने एक दूसरे प्रतिष्ठित संत शेख जियाउद्दीन सिमनानी को आदेश दिया कि वह उनकी दाढ़ी नोच लें। जियाउद्दीन इतने बड़े संत का इस तरह अपमान कैसे कर सकते थे। अतः उन्होंने कह दिया, "मैं यह नहीं कर सकता।"

इस पर उसने और क्रुद्ध होकर दरबारियों को आदेश दिया कि 'इन दोनों की दाढ़ियां नोच ली जाएं।' भयभीत दरबारियों ने दोनों की दाढ़ियां नोचकर अपनी जान बचायी।

विद्रोहियों की तो उसने समूह के समूहों को पकड़वाकर हजारों-हजार की संख्या में हत्याएं कीं। इसके साथ ही एक बार तो उसने अपनी सेना के ३५० सैनिकों की एक साथ हत्या करा दी। हुआ यह कि एक बार उसने अपने एक मलिक यूसुफ बुगरा के अधीन दिल्ली से एक सेना भेजे जाने का आदेश दिया। युसुफ काफी बड़ी सेना लेकर चला गया, लेकिन कुछ सैनिक तत्काल नहीं जा सके। तुगलुक ने आदेश देकर लड़ाई पर न जा सकनेवाले सैनिकों को पकड़वाया। इनमें से ३५० सैनिक ही पकड़ में आ सके, जिन्हें तुगलक ने महल के सामने एक साथ कत्ल करा दिया। ●

न्याय की एक मिसाल

मुहम्मद तुगलक एक ओर क्रूर था, तो दूसरी ओर न्यायप्रिय भी। उसके समकालीन इब्ने बत्तूता ने इसकी एक मिसाल देते हुए लिखा है कि एक बार किसी मलिक (अधिकारी) के बालक ने दिल्ली के काजी (मुख्य न्यायाधीश) से शिकायत की कि सुलतान मुहम्मद तुगलक ने उसे अकारण पीटा है। तुगलक एक मुजरिम की तरह काजी के दरबार में हाजिर हुआ। उसने काजी से पहले ही कहलवा दिया था कि जब वह उसके सामने हाजिर हो, तब वह उसके सम्मान में उठकर खड़ा न हो। काजी ने फैसला दिया कि 'सुलतान अपने अपराध के एवज में धन देकर बालक को संतुष्ट करे और यदि ऐसा न करे, तो बालक सुलतान को वैसे ही पीटे। जैसे कि उसने उसे पीटा है।'

सुलतान ने काजी के निर्णय के अनुसार उस बालक के हाथ में छड़ी देकर कहा, "मैं तुझे अपने सिर की कसम देता हूं कि तू मुझे उसी तरह पीट, जिस तरह मैंने तुझे पीटा था।"

बालक पहले तो हिचकिचाया फिर उसने सुलतान के छड़ियां मारीं। वह भी एक-दो नहीं, बल्कि पूरी इक्कीस। यहां तक कि एक बार तो छड़ी सुलतान के सिर पर लगी, जिससे उसके सिर से कुलाह (टोपी) जमीन पर गिर पड़ी। —योगेश

१३

ज्योतिष
आपकी परेशानियों का निदान

नीचे दिये खाली जन्म-चक्र को भरकर भेजिए। हमारे ज्योतिर्विद् आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे। हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं। क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे। प्रविष्टि—१३ का उत्तर यदि उस अंक में न मिले, तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है। आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें। एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे। अगले अंक में प्रतीक्षा न करें।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान'-जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए। प्रविष्टि की अंतिम तिथि २० अप्रैल, '८३।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि पोस्टकार्ड पर ही चिपकाकर भेजिए। लिफाफे में भेजी गयी प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

. . . . यहां से काटिए . . . .

१३

नाम . . . .

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख में) . . . . महीना . . . . सन . . . . .

जन्म-स्थान . . . . जन्म-समय . . . . .

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा . . . .

पता . . . .

आपका एक प्रश्न . . . .

. . . .

. . . . यहां से काटिए . . . .

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—१३), 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

चुनिये
5 माडलों
में से

ज्योतिष समस्या और समाधान

११

'कादम्बिनी' के लोकप्रिय स्तंभ--'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान'--का पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक ग्यारह हेतु हमें काफी पाठकों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं, अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, सुपरिचित ज्योतिषाचार्य डॉ. आचार्य कुसुम।

आनंदकुमार शर्मा, पटना

प्रश्न--पांच वर्ष से मेरे माता-पिता अलग-अलग हैं। क्या कभी मेल होगा?

उत्तर--यह तो माता-पिता के ग्रहों पर निर्भर है। आपकी कुंडली के अनुसार मातृगृह का केतु और पितृगृह का राहु अशुभ है। अतः एक का दुःख तो रहेगा ही। सन १९८६ में ठीक होने का योग है।

ओमप्रकाश नागर, सहसार

प्रश्न--व्यापार में सफलता कब मिलेगी?

उत्तर--पिछले दो-तीन वर्ष आपके अच्छे नही रहे किंतु मार्च, १९८३ से आपका समय उत्तम है और २ अप्रैल, १९८५ तक अच्छा ही रहेगा। इसी अवधि में आपको जायदाद तथा अन्य व्यवसाय में लाभ रहेगा।

रवीन्द्रकुमार, हस्तिनापुर

प्रश्न--घर कब लौटूंगा?

उत्तर--ग्रहों के विचार से शनि-राहु एवं केतु नेष्ठ हैं। सन १९८४ तक लौटेंगे किंतु घरवालों से मतभेद रहेंगे।

श्यामसुंदर अग्रवाल, ग्वालियर

प्रश्न--आर्थिक एवं शारीरिक कष्ट कब दूर होंगे?

उत्तर--कुंडली के विचार से शनि, राहु, शुक्र एवं मंगल अच्छे नहीं हैं। सन १९८४ के अंत तक अभी कष्ट बना रहेगा। सन १९८४ में विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

डॉ० ईश्वरचंद्र नागपाल, भरतपुर

प्रश्न--अपना चिकित्सा कार्य ठीक रहेगा या कोई अन्य?

उत्तर--आपकी कुंडली के अनुसार पिछले पांच वर्ष से आपका समय अच्छा नहीं चल रहा है। शनि, मंगल, राहु एवं केतु नेष्ठ हैं। ग्रहयोग के अनुसार चिकित्सा का व्यवसाय ही उत्तम रहेगा। वैसे मेडीकल स्टोर या सौंदर्य-प्रसाधन का व्यवसाय

ही ठीक रहेगा। सफलता २ अप्रैल, १९८५ के बाद ही मिलेगी।

मंजुला, दिल्ली

प्रश्न--विवाह कब होगा ?

उत्तर--आपके ग्रहयोग के अनुसार सूर्य, बुध, शनि एवं शुक्र अच्छे नहीं हैं। इसमें ये सभी अवरोधक हैं। किंतु विवाह, सन १९८५ तक निश्चित रूप से हो जाएगा। चंद्र सप्तम भाव में यानी पति के घर में बैठा है, अतः पति सुंदर, सौम्य तथा मेधावी होगा।

रामेश्वरदयाल, मेरठ

प्रश्न--दूसरी शादी कब ?

उत्तर--आपके ग्रहयोग के अनुसार आपको शनि, सूर्य, राहु एवं केतु नेष्ठ हैं। इसलिए आपको द्विभार्यायोग है और दूसरी भार्या का योग सन १९८४ के अंत तक है।

ओमदत्त शर्मा, मुरादाबाद

प्रश्न--लंबे समय से परेशान हूं आगे क्या होगा ?

उत्तर--अभी आपको शनि, राहु, सूर्य एवं मंगल अच्छे नहीं हैं किंतु जून, १९८५ से समय अनुकूल आएगा, परेशानी दूर होंगी।

अनिलकुमार जोशी, हल्द्वानी

प्रश्न--अच्छी नौकरी कब मिलेगी ?

उत्तर--ग्रहयोग के विचार से आपको अच्छी नौकरी का योग सन १९८६ में है। प्रत्येक दृष्टि से आमूल परिवर्तन का भी योग है।

प्रताप सिंह, कानपुर

प्रश्न--घाटा ही होता है, कृपया उपाय बतायें।

उत्तर--ग्रहयोग के अनुसार आपको शुक्र एवं मंगल व्यय भाव में पड़े हैं। राहु भी शुभ नहीं है। सन १९८४ के अंत तक ऐसा ही रहेगा। उसके बाद सुधार होगा। मूंगा, गोमेद धारण करें। शंकर की उपासना कीजिए।

नीतू, नयी दिल्ली

प्रश्न--बीमारी कब तक ठीक होगी ?

उत्तर--आपकी कुंडली में ग्रहणयोग है। बारह वर्ष की आयु तक का समय स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। शल्य चिकित्सा एवं चोट का भी योग है। उसके बाद समय ठीक है।

केदारनाथ श्रीवास्तव, सतना

प्रश्न--स्वास्थ्य एवं आर्थिक दृष्टि से समय कब से ठीक रहेगा ?

उत्तर--आपकी जन्मकुंडली के अनुसार आपको शनि, राहु, सूर्य एवं केतु एकदम प्रतिकूल हैं। गुरु कर्क का होते हुए भी अच्छा नहीं है, क्योंकि वह द्वादश हो गया है। ५० वर्ष की आयु तक स्वास्थ्य सामान्य एवं अर्थ का संकट रहेगा।

प्रियंवदा शर्मा, लश्कर, ग्वालियर

प्रश्न--पति कब अनुकूल होंगे ?

उत्तर--ग्रहयोग के अनुसार आपकी कुंडली मांगलिक है। राहु पंचम है। अष्टम में चंद्र एवं गुरु हैं। इसलिए आप स्वयं भी शंकालु हैं। इस पर नियंत्रण रखें। फिर

मी मई, सन १९८४ के बाद सुधार होगा।

चंद्रकांता, जसलपुर, धार

प्रश्न—गर्भाशय का ऑपरेशन कराऊं या नहीं? भाग्योदय कब?

उत्तर—वर्तमान ग्रहस्थिति के अनुसार आपका समय जून, १९८४ तक ठीक नहीं है, विशेषतः स्वास्थ्य के लिए। उसके बाद समय अनुकूल है। डॉक्टर की सलाह लें। भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु से है।

मोहनलाल अग्रवाल, रानीगंज, गया

प्रश्न—आर्थिक समस्या कब तक दूर होगी?

उत्तर—आपकी जन्मकुंडली के अनुसार आपको राहु, केतु, बुध, गुरु एवं शनि प्रतिकूल हैं। गोचर के अनुसार अभी ग्रह प्रतिकूल हैं। सन १९८५ के पूर्वार्द्ध तक समय ठीक नहीं है। उसके बाद आपकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

उषाकांत, जयपुर

प्रश्न—जातक घर लौटेगा या नहीं?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार शनि, सूर्य, राहु एवं केतु अच्छे नहीं हैं। पिछले सात वर्षों से साढ़ेसाती चल रही है। जातक जीवित है। ग्रहयोग के अनुसार वह विशेष अच्छे हाल में नहीं है। सन १९८४ के बाद घर लौट सकता है। स्थायी रूप से घर रहने का योग नहीं है, क्योंकि बुध, शुक्र अभी प्रतिकूल हैं।

रमेशकुमार दुबे, कानपुर

प्रश्न—पत्नी से तलाक लेना चाहता हूं?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार लग्न पर मंगल की दृष्टि, राहु प्रतिकूल एवं ग्रहणयोग है। ग्रहस्थिति मध्यम है अतः संभलकर निर्णय लें। यदि निर्णय लेने की विवशता हो तो सन १९८५ के बाद ही लें।

प्रदीपकुमार जोशी, हरिद्वार

प्रश्न—भविष्य में व्यवसाय-परिवर्तन होगा?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार आपके लिए नौकरी ही अच्छी रहेगी। व्यवसाय नहीं, क्योंकि धनाभाव में मंगल और पंचम केतु आप में मानसिक अस्थिरता रखेंगे, जिससे लाभ नहीं होगा।

वेदप्रकाश अरोड़ा, गोरखपुर

प्रश्न—विवाह एवं स्वास्थ्य-लाभ कब होगा?

उत्तर—ग्रहयोग के अनुसार आपको शनि, सूर्य और बुध अच्छे नहीं हैं। स्वास्थ्य यथावत रहेगा। विवाह की संभावना सन १९८७ के बाद है।

डॉ॰ कुमारी प्रेमलता शुक्ल, जबलपुर

प्रश्न—विवाह कब? पदोन्नति कब?

उत्तर—कुंडली में ग्रहयोग है। सूर्य एवं केतु भी नेष्ठ हैं। गोचर में शनि विवाह में अवरोधक हैं। सन १९८४ के अंत तक विवाह का योग है। अगले वर्ष पदोन्नति होगी। माणिक एवं मोती धारण करें।

हरिकृष्ण केडिया, टाटानगर

प्रश्न—शरीर अस्वस्थ कब तक रहेगा?

प्रश्न—ग्रहयोग के अनुसार आपकी कुंडली में ग्रहणयोग है क्योंकि पंचम भाव में सूर्य एवं राहु साथ-साथ हैं। चंद्र एवं मंगल भी नेष्ठ हैं। इसलिए स्वास्थ्य में सुधार सन १९८५ के बाद ही है।

—३१४३, सेक्टर-३६ डी॰, चंडीगढ़

संपत्ति पर हक

रा. कुमार, सुजानगढ़ : मेरे परदादा दो भाई थे। मेरे परदादाजी के दो पुत्र थे, मगर उनके भाई के कोई लड़का नहीं था। अतः उन्होंने मेरे पिताजी को दो वर्ष की आयु में गोद ले लिया। इस प्रकार इन दोनों भाइयों की संपत्ति पर क्रमशः मेरे दादाजी और मेरे पिताजी का बराबर-बराबर हिस्सा हो गया।

मेरे पिताजी के अलावा मेरे दादाजी के तीन लड़के और हैं, जिनको दादाजी ने अपना आधा हिस्सा दे रखा है। मगर मेरे दादाजी बंटवारा नहीं कर रहे हैं। वे मेरे पिताजी से कह रहे हैं कि मैंने तुम्हें पाला, शादी की, जिसमें खर्चा लगा। अतः पूरी संपत्ति के चार समान हिस्से करके बंटवारा करो। अतः आप यह बताइए कि ऐसी स्थिति में मेरे पिताजी का क्या हक है तथा उन्हें क्या कार्यवाही करनी चाहिए। क्या मेरे पिताजी का आधी संपत्ति पर हक है?

आपके पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि वह संपत्ति, जिसका आप बंटवारा करवाना चाहते हैं, आपके परदादा उनके भाई की संपत्ति है। आपके परदादा (जन्म के अनुसार) के भाई अब तो आपके दादा ही हो गये। गोद हो जाने से गोद जानेवाले व्यक्ति का अधिकार अपने जन्म देनेवाले माता-पिता से समाप्त हो जाता है और गोद लेनेवाले माता-पिता से स्थापित हो जाता है। चार समान हिस्सों का कोई औचित्य नहीं है। कानूनी रूप में आपके पिताजी अपने गोद लेनेवाले पिता की पूरी संपत्ति के स्वामी बन जाते हैं और वह न्यायालय की शरण लेकर भी अपने अधिकार की प्राप्ति कर सकते हैं। गोद देने के बाद यदि कोई खरचा आपके पिताजी के लिए हुआ हो और वह समय-सीमा में आता हो, तो वह रकम आपके पिताजी से उनके प्राकृतिक पिता, मांग सकते हैं।

पत्नी का अधिकार

रामानन्द चौधरी, हपौली (बिहार): बारह वर्ष से मेरे ससुर का एक अन्य स्त्री से भी संबंध है। उनके तीन लड़कियां हैं। दूसरी पत्नी से भी दो कन्याएं हैं।

मेरे ससुर हमारी सास को खाने-पहनने के लिए भी धन नहीं देते। मेरी सास आर्थिक तंगी में हैं। हम लोगों ने विरोध किया तो ससुर नाराज हो गये। हम तीनों दामाद चाहते हैं कि संपत्ति का बंटवारा हो जाए ताकि हमारी सास की बाकी जिंदगी सुख से कटे। क्या हमारे कानून में कोई ऐसा विधान नहीं है कि दूसरी पत्नी को संपत्ति का अधिकार नहीं मिले और पहली पत्नी तथा उसकी संतान को ही संपत्ति का अधिकार प्राप्त हो?

आपके ससुर के जीवित रहते हुए आपकी सास उनकी संपत्ति के बटवारे की मांग नहीं कर सकती। जीवित रहते हुए व्यक्ति स्वयं ही अपनी संपत्ति का मालिक रहता है, इसलिए आपकी सास या आपकी पत्नी या सालियां संपत्ति के बंटवारे का अधिकार नहीं रखतीं।

यह ठीक है कि आपकी सास तथा उनकी अविवाहित लड़कियों को अपने पति या पिता से भरण-पोषण पाने का अधिकार है। इसके लिए वे चाहें तो न्यायालय में आवेदन देकर भरण-पोषण की राशि निर्धारित करवाने तथा वह राशि प्राप्त करने की कार्यवाही कर सकती हैं।

निर्वाह-धन

क. ख. ग., बिहार) : मैं एक बहुत ही दुःखी नारी हूं। मेरे पति के एक अन्य स्त्री से संबंध हैं। उन्होंने अपनी फैक्ट्री में मुझे मृत घोषित कर दिया है और फंड के रुपये भी अपने भाई के नाम से कटवाते हैं। मैं अपना हक मांगने फैक्ट्री मैनेजर के पास गयी थी। उन्होंने मुझसे मेरे पत्नी होने का प्रमाण-पत्र मांगा ! यह प्रमाण-पत्र गांव के मुखिया या वहां के बी. डी. ओ. का होना चाहिये। चूंकि मुखिया और बी. डी. ओ. भी ससुराल-पक्ष के प्रभाव में हैं, वे मुझे प्रमाण-पत्र नहीं देते। मैं उनसे निर्वाह-धन कैसे ले सकती हूं ?

गांव के मुखिया या बी. डी. ओ. के पास आपको लिखित आवेदन करके प्रमाण-पत्र मांगना चाहिए। मैं समझता हूं कि आप चाहें तो न्यायालय में आवेदन देकर भी यह घोषित करवा सकती हैं कि आप उक्त व्यक्ति की पत्नी हैं। इन प्रमाण-पत्रों का उपयोग आप अपने पति की फैक्ट्री में कर सकती हैं। फैक्ट्री-मालिकों को भी यह पता चल जाएगा कि आपके पति ने गलत तरीके से आपको मृत घोषित किया है।

अपने पति से आप जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक साधन भी प्राप्त कर सकती हैं। इसके लिए आप अपने क्षेत्र के न्यायी दंडाधिकारी के समक्ष फौजदारी

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त
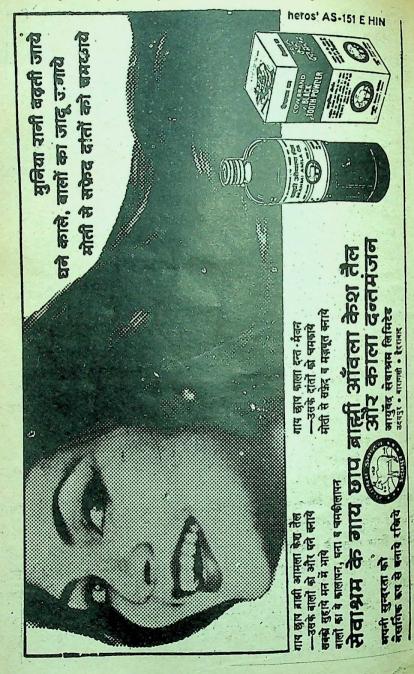
प्रक्रिया संहिता की धारा १२५ के अंतर्गत आवेदन दे सकती हैं। आप चाहें तो विवाहित अधिकार की पुनर्स्थापना के लिए हिंदू विवाह अधिनियम की धारा ९ के अंतर्गत भी कार्यवाही कर सकती हैं।

पिता के स्थान पर नौकरी

भोपालसिंह, तोमर : मेरठ मेरे पिता रोडवेज में सेवा काम करते थे। उन्होंने १२ वर्ष तक रोडवेज में सेवा की। कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गयी। उस समय मैं तेरह वर्ष का था। अब मैंने दसवीं की परीक्षा पास कर ली है और उनके स्थान पर काम करने के योग्य हो गया हूं। इसके लिये मैंने प्रार्थना-पत्र भी भेजा है ! क्या मुझे पिता के स्थान पर सर्विस मिल सकती है ?

पिता के स्थान पर पुत्र को सेवा में रखने का प्रावधान कुछ विभागों ने किया है। आपको संबंधित रोडवेज के नियम आदि देखकर यह जानकारी लेनी चाहिए कि क्या इस प्रकार का प्रावधान उक्त रोडवेज के नियमों में है या नहीं।

साधारणतया: इस प्रकार से सेवा में आने का अधिकार पिता के सेवा निवृत्त होने या मृत्यु के बाद एक निश्चित अवधि में ही मिल पाता है। आपके पिताजी का कब स्वर्गवास हुआ यह आपने नहीं लिखा। कार्यवाही से पहले यह भी देख लें कि आपकी मांग उस अवधि में आती है या नहीं। संबंधित अधिकारियों से मिलकर अपने अधिकार के बारे में निर्णय करने का आग्रह करना ही आपके लिए उचित रहेगा।

संतान पर अधिकार

डी. आर. आर्य, द्वारा हाट : मैं उ. प्र. सरकार का कर्मचारी हूं। मेरी पत्नी मेरी पुत्री, जो अब पांच वर्ष की है, को लेकर मायके चली गयी है। डेढ़ वर्ष से वह वापस नहीं आयी है। मैं अपनी लड़की के भविष्य के बारे में चिंतित हूं। क्या मेरी लड़की भविष्य में मुझे मिलेगी ?

बच्ची के भविष्य के बारे में आपकी चिंता उचित ही है। यदि आप यह समझते हैं कि आपकी लड़की का भविष्य आपकी पत्नी के पास सुरक्षित नहीं है तो आप जिला न्यायालय में आवेदन देकर स्वयं को बच्ची का संरक्षक नियुक्त करवाने तथा बच्ची आपको सौंपे जाने के लिए आवेदन दे सकते हैं। न्यायालय तथ्यों तथा परिस्थितियों के आधार पर यह निर्णय करेगा कि किसके साथ रहने में बच्चे का हित है और यदि वह निर्णय आपके पक्ष में हुआ तो बच्चा आपके संरक्षण में दिया जा सकता है।

क्या आपने कभी यह सोचने का प्रयास किया कि पत्नी आपके साथ क्यों नहीं आना चाहती। उचित तो यह रहेगा कि आप इस प्रश्न पर विचार करके समस्या का समाधान खोजें और अपनी गृहस्थी को मुकदमों में फंसाने के स्थान पर शांतिमय वातावरण देने का प्रयास करें। ●

प्रवेश

इस अंक में हम पाठकों को परिचित करा रहे हैं, अभिराम जयशील से । मौलिक बिंब संयोजना के माध्यम से आज के आदमी के मानसिक संसार का प्राकट्य इनकी रचनाओं का केंद्रक है। यहां प्रस्तुत हैं, इनकी पांच चुनी हुई कविताएं-- —संपादक

युग-पुरुष

आज रात को कब्र छोड़कर
आएंगे उठ मुरदे
हाथों को थामने
सामने / ठीक सामने . . .
की क्षितिज से
उनकी आवाजें
मिल जाएंगी वापस उनको
जहां सहेज गये थे / उन्हें
वे बरसों पहले
फिर हमें सो जाना होगा
जगह पे उनकी ।

अनचाही सीलन

अनचीती परिणयिता की
व्यामोही आकुलताएं
रिसते दुःख कांवर दबे
आंचलभर पीड़ा के अक्षत
दूर्वादल सुधियों के
चंदन की द्विविधाएं
आलेपन ऊहापोह
भले ही अमावसी लग्नोदय में
फूंके न फूंके शंख
अनचाही सीलन से
मांग भरे देते हैं
डूब गयी भीड़ कहीं
भास्वर बन दुःख बाजे
संयम संयोगी का इकतारा
टूट गया सुर डूबे
इतनी देर रात गये
महके फिर महके फिर
आहाते-आहाते अश्रु-फूल ।

वास्तविकता

संधि पसीने से ही होती
त्रासदियों के चरित्र की
चिथड़ों से ही
लिपटी होती
लाशें
युग की लंबी राहों की
सीने पर ही तो बनती हैं
कब्रें
उजालों की छलनाओं के
मुखौटे अब तो
टंगे दिखते हैं
आसपास के हर चेहरे पर

बोध

हर दिन पर लटका
टंगा हुआ है
मानव-लहू का प्रीतिभोज
लपलपाती जिव्हाओं से
दमभर चाटे जाते हैं
आखिरी बूंद के आखिरी अस्तित्व
नुकीली दंताग्रों की
तीक्ष्णता में हैं चुभी
हमारी जिजीविषाएं
सन्नाटा उबाल पर है
और हम हैं / प्रतीक्षारत
यह जानकर भी कि
चिथड़ों के गर्भाशय से
न जन्म लेती कल्पना
जन्म लेते हमेशा
शीशाई हाथ।

मृत्यु के समानांतर

मैं मृत्यु से सहमत हूं
सूरज दिखता नहीं
नीले आसमान में
लटके मटमैले खंड हैं
घास की जो टुकड़ियां
फैली हैं इर्द-गिर्द
उनके भी चेहरे सर्द हैं,
दिशाएं / संकेतों से आवेशित हैं
गीत भी चट्टानों से
परत-दर-परत गर्द समेटे
लेप किये हैं विस्फोटों के
छू जाती हुई बू
हवाएं बनी मूर्त हैं
मैं मृत्यु के समानांतर चल पड़ा हूं।

—अभिराम जयशील
के-२ / १३९ आई. टी. सी. कॉलोनी
वारीडीह, जमशेदपुर

आत्म-कथ्य

अनुभूतियों की छड़ी से टोहता-टोहता मैं चल पड़ा हूं अभिव्यक्ति की राह पर। संभवतः इस तरह मैं एक अन्वेषी हूं, जो अन्वेषण के क्रम में तरल आग से मुहब्बत तो करता ही है, उसे जब तब हलकी डांट भी पिलाता चलता है।

नयी कृतियां

हास्य-व्यंग्य के पांच रंग

कविता-नियोजन :

कवि : सुरेन्द्रमोहन मिश्र; प्रकाशक : प्रज्ञा प्रकाशन मंदिर, चंदौसी; मूल्य : बीस रुपये।

कवि स्वयं अपने कवि-कर्म को व्यंग्य का विषय बनाये तो वह पठनीय ही नहीं, विचारणीय भी हो जाता है। आज जिस तेजी से भारत में जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, उससे कहीं बड़े अनुपात में कवियों और कविताओं की बढ़ोत्तरी हो रही है। जनसंख्या पर परिवार-नियोजन द्वारा अंकुश लगाने का प्रयास संभव है, पर कविता-नियोजन कैसे किया जाए? बरसाती मेढकों की तरह से जो एक नगर में कवि बढ़ गये तो लोग नगर छोड़-छोड़कर जाने लगे। कवियों की संख्या ज्यादा और श्रोताओं की कम, अतः हर श्रोता को कविता सुनने का पारिश्रमिक दिया जाता। कविता-नियोजन के लिए सरकार की ओर से 'कविता-संहार वटी' का मुफ्त वितरण किया जाने लगा। गली-गली में 'कविता-नियोजन' के नारे लगाये गये और पोस्टर चिपकाये गये—'दो या तीन कविताएं बस' कवियों पर कविता-कर लगाया गया। और श्रोताओं को बहुविधान से कविता के भय से मुक्त किया गया। संकलन की छब्बीस व्यंग्य-कविताओं में अलग-अलग रंग-ढंग से कविता और कवि पर खासी छींटाकशी की गयी है। कविता और कवि के मौजूदा हालात का जो खाका इन कविताओं में खींचा गया है, वह मात्र हास्य-विनोद का विषय नहीं वरन उसके अधःपतन को विचारणीय बनाता है।

हास्यान्जलि :

कवि : दान बहादुर सिंह 'सूंड़'; प्रकाशक : ज्वालाप्रसाद विद्यासागर, इलाहाबाद; मूल्य : तीस रुपये।

'सूंड़' फैजाबादी की एक सौ छह हास्य-व्यंग्यपरक कविताएं यहां संकलित हुई हैं। हाथी के समान हास्य की ये भारी-भरकम कविताएं कहीं मात्र मनोरंजन का मसाला हैं तो कहीं व्यंग्य की मुद्रा में तल्ख असर भी करती हैं। हाथी के हाथ की तरह 'सूंड़' ने हास्य-काव्य के मैदान में तरह-तरह से हाथ दिखाये हैं। कई जगह कविता को हथियार की तरह इस्तेमाल कर के प्रहार करने में भी 'सूंड़' चूके नहीं हैं। नेताओं, राजनीतिक प्रपंचों, पत्नी, मित्र कोई भी उनके प्रहार-फटकार से बच नहीं पाया है। सामान्य-सी स्थिति में हास्य ला देना 'सूंड़' समान सिद्धहस्त हास्य कवि के बस की ही बात है। चांद पर अभियान के प्रसंग का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

मानव पहुंचा चांद पर लेकर नयी मशीन
पोल खुल गयी हुस्न की लज्जित हुए हसीन
ढके रहो दिन-रात खोपड़ी कभी न खोलो
क्या होगा भगवान उतर पड़ा यदि अपोलो।

'सूंड़' की ये हास्य-व्यंग्य की कविताएं सरल-मुहावरेदार भाषा में लिखी होने के कारण लोकप्रिय होने का दम-खम तो रखती हैं पर कहीं-कहीं सड़क चलती भाषा का भदेसपन् भी आ जाने से प्रबुद्ध पाठकों के लिए परहेज भी हो सकती हैं।

त्रासदियां :

लेखक : नरेन्द्र कोहली; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, दिल्ली-६; मूल्य : बीस रुपये।

नरेन्द्र कोहली की हास्य-व्यंग्य की उन्नीस रचनाओं का संकलन **'त्रासदियां'** आसपास फैली हुई विसंगतियों और विरूपताओं का और उसमें जी रहे आम आदमी की त्रासद अनुभूतियों का चित्रांकन करता है। लेखक ने शिक्षा, समाज, साहित्य और सरकारी क्षेत्र में व्याप्त धांधलियों का व्यंग्य के माध्यम से कहीं मधुर और कहीं बहुत तीखे ढंग से पर्दाफाश किया है। कहीं तो उनकी मार प्यार-पुचकारवाली है तो कहीं निर्मम और तेज-तर्रार है। अपने पारिवारिक परिवेश को लेकर पत्नी, प्रेयसी, धोबन आदि के प्रसंगों को लेकर लेखक ने खुद को भी नहीं बख्शा है।

शिक्षा की शीर्ष उपाधि पी-एच. डी. की थीसिस जमा करनेवाला अभ्यार्थी भी डी. एस. पी. की नजर में चरस-गांजा जमा करनेवाले के समान ही अपराधी माना जाता है—मौजूदा व्यवस्था की ऐसी अनेक विद्रूप स्थितियों का सशक्त अंकन लेखक की कलम से हुआ है।

कलियुगी सुदामा

लेखक : बाला दुबे; प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-६; मूल्य : तीस रुपये।

बाला दुबे ने कई पौराणिक प्रसंगों और प्रसिद्ध पात्रों को आज के संदर्भों से संबद्ध करके सफल हास्य-व्यंग्य की रचनाएं प्रस्तुत की हैं। 'महाभारत में प्रेस रिपोर्टर' में धृतराष्ट्र को कमेंट्री सुनानेवाले संजय के संग आज के प्रेस रिपोर्टरों पर खासे कमेंट्स किये गये हैं। आज की आपा-धापीवाली अव्यवस्था भर्तृहरि और पिंगला के प्रसंग द्वारा उजागर किया गया है। 'गुरुकुल में बाबा द्रोणाचार्य' में शिक्षा क्षेत्र की धांधली का पर्दाफाश हुआ है। 'कलियुगी सुदामा' के 'सुदामा पंडत' बड़े आस-विश्वास के साथ अपने बचपन के लंगोटिया यार मंत्री बने श्रीकृष्ण के पास पहुंचे तो 'सिरीकिशन' अपने यार को भूल चुके थे। कलियुगी सुदामा अब सिड़ी नहीं था, को विरोधी ग्रुप के नेता से मिलकर अपनी पौ बारह कर ही लेता है। इतिहास प्रसिद्ध हुएन-सांग को लेकर आज की भारत की अवस्था का जायजा लिया गया है। 'मिट्टी' और 'छुट्टी' में आदमी के मरने पर भी अन्य लोग कैसे शवयात्रा में जाने से कतराते हैं और कैसे मंत्री महो-

दय की मौत का शोक ताश-बीयर के शौक से 'सेलिब्रेट' किया जाता है—इसका खासा खाका खींचा गया है। 'संस्कार', 'मेडल', 'फोटो', आदि में आज की असंगतियों पर अलग-अलग रंग-ढंग से व्यंग्य किया गया है। 'यात्रा भारतीय रेल में' रचना के द्वारा ट्रेन की यात्रा की त्रासदियों को प्रभावी ढंग से पेश किया गया है। 'शौक उनका: परेशानी अपनी' द्वारा महल्लेवालों के कुत्ता पालने की होड़ाहोड़ी से हुई परेशानी का मनोरंजक चित्रण हुआ है। इस प्रकार कुल सत्रह बड़ी व्यंग्य रचनाओं और नौ लघुकथाओं के द्वारा लेखक ने अपने को सफल हास्य-व्यंग्यकार के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है।

बाला दुबे की भाषा चुलबुली और फड़कती हुई है और उनका व्यंग्य तेज धार के हथियार-जैसा पैना और प्रहारक है। कहीं उनका हास्य-विनोद मन को गुदगुदाता है तो कहीं उनका व्यंग्य अपनी तीक्ष्ण मार से भीतर तक तिलमिला देता है।

मुसीबत है

लेखक : डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, दिल्ली-६; मूल्य : पंद्रह रुपये।

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी की पचीस हास्य-व्यंग्य रचनाओं का संकलन **'मुसीबत है'**, मनोरंजक तो है ही कहीं-कहीं मनन-चिंतन के लिए भी मजबूर कर देनेवाला है पत्नियों, नेताओं, बॉस, पड़ोसी से लेकर आजकल की शिक्षा-प्रणाली, अफसरशाही, मिनिस्टरी आदि अनेक प्रसंगों पर लेखक ने जी भर के छींटा-कशी और प्रहार किये हैं। जब नेतागीरी पाठ्यक्रम में शामिल की गयी और 'बारह मासा विश्वविद्यालयों का' में उच्चस्तरीय शिक्षा के आडंबर की पोल को खोला गया है। 'बाबूलीला' में क्लर्क की करामाती महानता का वर्णन करते हुए बताया गया है—

अफसर करे न अफसरी डिप्टी करे न वर्क
दास मलूका कह गये सब कुछ करता क्लर्क

इधर क्लर्क तो उधर मिनिस्टर--मंझधार में ही देश की नौका को डुबोने की तैयारी में प्राण-प्रण से लगे हुए हैं। मिनिस्टर महोदय मेडिकल कॉलेज का मुआयना करने गये तो किसी मरीज की हालत खराब देखकर उसकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट दिखाने को कहने लगे। इसी प्रकार वहां रेडियोलोजी विभाग को देखकर वे अपना रेडियो ठीक कराने की बात विचारने लगे। **—विश्वम्भर अरुण**

"सुना है, तुम्हारे बॉस रेस में बहुत दिलचस्पी लेते हैं! बेनागा रेसकोर्स जाना भी नहीं भूलते...।"

"हां, उन्हें घोड़ों की भी खूब परख है। रेस शुरू होने से पहले ही बता देते हैं कि कौन-सा घोड़ा जीतेगा।"

"अच्छा!"

"हां, और रेस पूरी होने के तुरंत बाद वह यह भी बता देते हैं कि उनका बताया घोड़ा जीता क्यों नहीं, समझे!"—ब.रा. हांडा
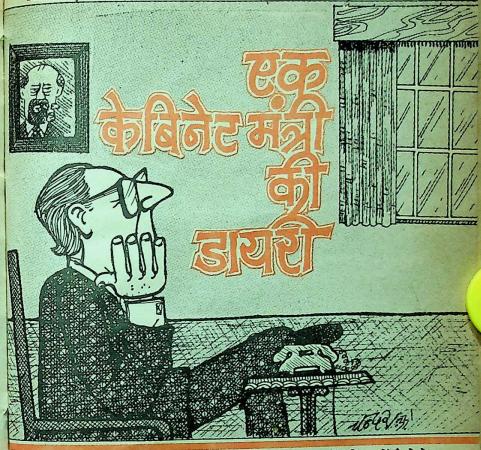
जेम्स हैकर ! एक काल्पनिक ब्रिटिश मंत्रिमंडल का सदस्य । वर्षों प्रतिपक्ष में बैठने के बाद जब जेम्स हेकर के दल की सरकार बनी तो उसे भी मंत्री बनाया गया । मंत्री बनने के बाद छवि बनाने और कुरसी बचाने के लिए जेम्स हेकर ने कौन-कौन-सी मुसीबतें नहीं झेलीं! हाल ही में बी. बी. सी. लंदन द्वारा प्रकाशित 'यस मिनिस्टर : द् डायरीज ऑव ए केबिनेट मिनिस्टर बॉय द् राइट हानरबुल जेम्स हेकर एम. पी.' शीर्षक पुस्तक में इन्हीं सब बातों का लेखा-जोखा है । यह पुस्तक बी. बी. सी. द्वारा प्रस्तुत एक 'कॉमेडी' पर आधारित है । प्रस्तुत है, इसी पुस्तक के कुछ अंशों का सार ।

मैं बहुत अधिक उत्तेजित था। बरमिंघम ईस्ट के चुनाव-क्षेत्र से चुनाव जीतकर मैं संसद में अभी-अभी वापस आया था। वर्षों तक विपक्ष में रहने के बाद हमारी पार्टी अंततः जीत गयी और हम लोग सत्ता में वापस लौट आये थे।

चुनाव-परिणाम घोषित होने के बाद मैं एल्डरमैन स्पॉट्सवुड के घर एक समारोह में पहुंचा और वहां रॉबर्ट मैकेंजी को यह कहते सुना—"जेम्स हेकर को अपने निर्वाचन क्षेत्र में पहले से अधिक मत मिले हैं और वह संसद में वापस आ गये हैं। वर्षों तक विरोधी पक्ष के 'छाया-मंत्रि-मंडल' (शैडो केबिनेट) में मंत्री बने रहने के बाद अब उनका सरकार में केबिनेट मंत्री बनना निश्चित लगता है।"

●●

नाश्ते के बाद से ही मैं टेलीफोन के पास बैठा हुआ था। नये प्रधानमंत्री की नियुक्ति के बाद के चौबीस घंटे तक कोई भी संभावित प्रभावशाली केबिनेट मंत्री अपने टेलीफोन से बीस फुट से अधिक दूर नहीं हिल-डुल सकता था क्योंकि चौबीस घंटे के भीतर ही अगर आपने कोई टेलीफोन नहीं सुना, तो आपके केबिनेट में शामिल होने की कोई संभावना नहीं है।

एनी मुझे सुबह से ही लगातार कॉफी के प्याले देती रही थी जब लंच के बाद मैं पुनः टेलीफोन से सटी कुरसी पर बैठा तो वह बोली, "अगर कोई और काम नहीं कर रहे हो, तो ब्रुसेल्स के डिनर की तैयारी में, मेरी मदद ही कर दो।"

मैंने अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए कहा, "मैं टेलीफोन आने का इंतजार कर रहा हूं।"

"किसके टेलीफोन का ?" एनी ने पूछा। कभी-कभी एनी कुछ ज्यादा ही झल्ला उठती है।

टेलीफोन की घंटी टनटनायी। मैं फौरन उस पर झपटा। फोन मेरे विशेष राजनीतिक सलाहकार फ्रेंक वैसल का था। उसने बताया कि वह शीघ्र पहुंच रहा है। मैंने एनी को बताया, मगर वह खुश नहीं हुई।

"वह अभी तक पहुंच ही क्यों नहीं गया ?" उसने चिड़चिड़ाते हुए कहा।

कभी-कभी एनी की बातें मेरी समझ में नहीं आतीं। मैंने उसे समझाया कि राजनीतिक सलाहकार होने के नाते मैं फ्रेंक पर बहुत ज्यादा निर्भर रहता हूं।

"तो उससे शादी क्यों नहीं कर लेते ?" वह झल्लायी, "अब तुम्हारे लिए राजनीतिक सलाहकार ही सब कुछ हो गया। जो राजनीति में आ गया, उसे अपनी पत्नी को भी मुक्त छोड़ देना चाहिए।"

सारे दिन फोन आते रहे लेकिन सब बेकार। कोई काम का टेलीफोन नहीं आया। मैं झुंझलाता रहा।

एनी ने कहा, "जिम, उठकर मुझे दवा दे दो।"

मैंने उसे समझाया कि मैं फोन छोड़कर नहीं जा सकता। अपनी हस्बे-

मामूल नासमझी दिखाते हुए बोली, " देखो, अगर प्रधानमंत्री तुम्हें अपनी नामुराद केबिनेट में लेना ही चाहते हैं, तो तुम्हारे न मिलने पर वह तुम्हें दुबारा भी टेलीफोन कर सकते हैं या तुम्हीं उन्हें फोन कर सकते हो ।"

एनी राजनीति नहीं समझ सकती।

●●

अंततः मैं केबिनेट मंत्री बन गया। सारी रात जागकर बिताने के बाद अगली सुबह ९ बजे के लगभग १०, डाउनिंग स्ट्रीट से मेरे पास फोन आया । और फौरन ही फ्रेंक वैसल और मैंने लंदन के लिए गाड़ी पकड़ी । टैक्सी पकड़कर हम १०, डाउनिंग स्ट्रीट पहुंचे, जहां प्रधान मंत्री ने मुझे प्रशासकीय मामलों के विभाग का कार्यभार संभालने को कहा।

यह एक महत्त्वपूर्ण पद था—केबिनेट की वरीयता के हिसाब से आठवें या नवें नंबर का । दूसरी ओर मार्टिन ने इसे 'राजनीतिक कब्रगाह' की संज्ञा देते हुए मुझसे कहा था कि प्रधान मंत्री ने बदले की भावना से ही यह काम मुझे सौंपा है । मैं प्रशासकीय मामलों के विभाग पर पूरा काबू पाने के लिए कटिबद्ध था और प्रधान मंत्री को दिखा देना चाहता था कि मुझे हटाना इतना आसान नहीं है ।

१०, डाउनिंग स्ट्रीट से निकलते ही एक सरकारी कार मुझे मेरे विभाग में पहुंचाने गयी । सबसे पहले मेरी मुलाकात हुई बर्नार्ड ली से, जिसे मेरा निजी सचिव बनना था। मेरा कार्यालय बहुत बड़ा था, जिसमें एक बड़ी डेस्क, बहुत सारी कुरसियों से घिरी एक कांफ्रेंस टेबिल तथा कुछ और कुरसियां थीं।

"कुछ पिएंगे, मंत्रीजी ?" बर्नार्ड ने पूछा।

"जिम !" मैंने उसे सुधारा, क्योंकि मैं अपने नाम के पूर्वार्ध से ही पुकारा जाना पसंद करता हूं ।

"जिन ?" उसने मेरी बात गलत ढंग से सुनते हुए पूछा ।

"नहीं," मैंने कहा, " जिम ! मुझे जिम कहकर पुकारो ।"

"अगर आपको कोई एतराज न हो, तो मैं आपको मंत्रीजी कहूंगा, मंत्रीजी !" उसने कहा ।

" तो फिर मैं तुम्हें निजी सचिव कहूं, निजी सचिव ?" मैंने पूछा।

एक पल बाद सर हम्फ्री एप्लेबी आये। वह प्रशासकीय मामलों के विभाग (डी. ए. ए.) के स्थायी सचिव थे। यानी सिविल सेवा के विभागाध्यक्ष ।

" मैं समझता हूं, आप दोनों पहले मिल चुके हैं ।" बर्नार्ड बोला ।

सर हम्फ्री बोले, "हां, पिछले वर्ष लोक लेखा समिति में मेरी और मंत्रीजी की मुठभेड़ हुई थी । उन्होंने ऐसे सवाल

पूछे, जिन्हें मेरे लिहाज से, कोई नहीं पूछ सकता ।"

मुझे लगा, सर हम्फ्री मेरी प्रशंसा कर रहे हैं । मैंने टालने के लिए कहा, "छोड़िए, विपक्षी पार्टी के लोग ऐसे बेतुके सवाल पूछते ही हैं ।"

"हां," सर हम्फ्री बोले, "और सरकार ऐसे सवालों के जवाब नहीं दिया करती ।"

मैं हतप्रभ ! मैंने कहा, "लेकिन आपने तो मेरे सारे सवालों के जवाब दिये थे ।"

"मुझे खुशी है कि आपने ऐसा ही समझा, मंत्रीजी !" सर हम्फ्री ने कहा । उनकी बात तुरंत मेरी समझ में नहीं आयी ।

"आपके अलावा इस विभाग में और कौन-कौन हैं ?" मैं मतलब की बात पर आया ।

"मैं राज्य का स्थायी अवर सचिव हूं, मुझे स्थायी सचिव कहा जाता है । बूली आपका मुख्य निजी सचिव है । एक मुख्य निजी सचिव मेरा भी है और वह स्थायी सचिव का मुख्य निजी सचिव है । मुख्य निजी सचिवों के नीचे साधारण निजी सचिव हैं । प्रधान मंत्री दो संसदीय अवर सचिवों की नियुक्ति करेंगे और आप संसदीय निजी सचिव की नियुक्ति करेंगे ।"

"क्या सभी वे टाइप कर सकते हैं ?" मैंने मजाक किया ।

"नहीं", सर हम्फ्री ने कहा, "टाइप के लिए आपकी सचिव श्रीमती मैके हैं ।"

मैं नहीं कह सकता कि सर हम्फ्री मजाक कर रहे थे या नहीं । मैंने तुरंत पदभार संभाल लिया और कहा, "हमें इस लंबी-चौड़ी अफसरशाही में कटौती करनी होगी । नये सिरे से सफाई की जरूरत है । हमें अपनी सारी खिड़कियां खोलनी हैं ताकि ताजी हवा आ सके । हम लालफीताशाही और अफसरशाही को उखाड़ फेंकने जा रहे हैं । हम स्वच्छ प्रशासन चाहते हैं । ऐसे कई फालतू लोग हैं, जो डेस्कों के पीछे बेकार बैठे रहते हैं ।"

तभी मुझे होश आया कि मैं खुद डेस्क के पीछे बैठा था । लेकिन मुझे यकीन है कि उन्हें यह नहीं महसूस हुआ कि मैं अपने लिए यह बात कह रहा हूं ।

इसके बाद सर हम्फ्री ने मेरी नीति के क्रियान्वयन के लिए एक सफेद कागज पर मसौदा प्रस्ताव तैयार किया । सिविल सेवा की कार्यकुशलता से मैं आश्चर्यचकित था । सर हम्फ्री ने बताया कि वे सफेद कागज को 'खुली सरकार' कहा करेंगे ।

सारे मसौदे प्रस्ताव थोड़ी ही देर में मेरे पास आ गये । मुझे विस्मय हुआ । मैंने हम्फ्री से पूछा, "यह सब किसने किया ?"

"उसी पुराने नौकरशाही तंत्र ने !"

सर हम्फ्री ने उत्तर दिया।

"मैंने सोचा था, मुझे तुमसे निरंतर लड़ना पड़ा करेगा।" मैंने कहा।

सर हम्फ्री ने कहा कि सिविल सेवा के बारे में लोगों की गलत धारणाएं हैं।

शनिवार की बजाय मैं सोमवार से काम शुरू करना चाहता था लेकिन उन्होंने मुझे छह लाल फाइलें थमा ही दीं ताकि मैं छुट्टी में भी काम कर सकूं। बर्नार्ड ने बताया था कि पिछला मंत्री काम में ढील कर रहा था—विशेषकर चुनाव-अभियान के दिनों में। मैंने तय किया कि मैं ऐसा नहीं होने दूंगा और हर कागज को पढ़ूंगा।

छुट्टीवाले दिन मैंने नौ घंटे लगाकर सारी फाइलें पढ़ीं। मुझे लगा कि सिविल सेवा टरकाऊ हथकंडों में निपुण होती है।

●●

सोमवार का दिन डायरी से शुरू हुआ। यह जानकर मुझे आश्चर्य हुआ कि उसमें पहले से ही कई मुलाकातें निश्चित थीं। मैंने पूछा कि ऐसा कैसे हो सकता है, क्योंकि लोगों को तो यह भी पता नहीं था कि चुनाव कौन जीतेगा ?

बर्नार्ड बोला, "हमें पता था कि कोई न कोई मंत्री बनेगा !"

सर हम्फ्री ने कहा, "महारानी चाहती हैं कि सरकार का काम चलता रहे, भले ही कोई राजनेता हो या नहीं।"

"क्या यह मुश्किल बात नहीं है ?"

"हां...और नहीं !" सर हम्फ्री ने कहा। मैंने बर्नार्ड से कहा कि मुझे कई और काम भी निबटाने हैं।

"मसलन", उसने पूछा।

"मैं पार्टी की चार नीति-निर्धारक समितियों में हूं।"

"मुझे यकीन है कि आप देश के सामने पार्टी को वरीयता नहीं देंगे।" सर हम्फ्री ने कहा।

वे मुझे चलते समय कुछ और फाइलें थमा रहे थे। मैंने उनकी ओर देखा, तो वह बोले, "बहुत-से निर्णय लिये जाने हैं और कुछ घोषणाओं को स्वीकृत भी करना है।... लेकिन हम काम को बहुत कम कर देंगे और आपको केवल महत्त्वपूर्ण नीति संबंधी निर्णय लेने पड़ेंगे।"

लेकिन मैंने आग्रह किया कि सारे निर्णय मैं स्वयं लूंगा और सारे महत्त्वपूर्ण कागजात मैं खुद पढ़ूंगा। उन्होंने मुझे रात के लिए पांच फाइलें पकड़ा दीं।

पदभार ग्रहण करने से लेकर अब तक मैं फ्रेंक वैसल से नहीं मिल सका था। मैंने निजी सचिव से कहा कि मेरे सलाहकार के नाते फ्रेंक वैसल को विभाग में ही एक आफिस दिया जाए।

हम्फ्री ने टालने की गरज से कहा, "सलाह के लिए तो आपके पास पूरा विभाग ही है", लेकिन मैं अपनी बात पर

अड़ा रहा।

अंततः सर हम्फी को मेरी बात माननी ही पड़ी।

●●

एक दिन अचानक फ्रेंक मेरे ऑफिस में दहाड़ता हुआ घुसा और एक दस्तावेज को हवा में लहराते हुए बोला, "क्या तुमने इसे देखा है? ...देखो, मैंने उन्हें पकड़ लिया।"

मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

उसे कोई ऐसा साधारण-सा बीजक मिल गया था, जो जबर्दस्त रूप से राजनीतिक महत्त्व का था। प्रशासकीय मामलों के विभाग ने एक हजार कंप्यूटर विडियो डिस्प्ले टर्मिनल खरीदे थे, प्रत्येक का मूल्य दस हजार पौंड था। ...यानी एक करोड़ पौंड का खर्च! और ये पिट्सबर्ग में बनते हैं! ...मैं विस्मित था।

'हम्फी ने इसके बारे में मुझे कुछ बताया ही नहीं! ये चीजें तो मेरे ही निर्वाचन क्षेत्र—बरमिंघम ईस्ट में बनती है! हमारे यहां इतनी बेकारी भी है। और सिविल सेवा के लोग ब्रिटेन में बनी चीज नहीं खरीद रहे!'

मैंने सर हम्फी को बुलाकर कहा।

"मशीनें तो ब्रिटेन में ही बनती हैं!"

"लेकिन वे वैसी ही 'क्वालिटी' की नहीं होती हैं, जैसी अमरीका की।" सर हम्फी बोले।

यह बात सच थी, लेकिन मैं उसे स्वीकार नहीं कर सकता था।

"हमारे यहां की बेहतर 'क्वालिटी' की होती हैं। ये मेरे ही निर्वाचन-क्षेत्र में बनती हैं।" मैंने कहा और सर हम्फी से ठेका रद्द करने को कहा।

"यह मेरे अधिकार से बाहर है।" उसने असमर्थता व्यक्त की। मेरे सामने संकट उपस्थित हो गया था। "यदि ठेका रद्द नहीं हुआ, तो मैं अपने निर्वाचन क्षेत्र में क्या मुंह दिखाऊंगा?" मैंने कहा।

"उन्हें पता ही क्यों चलेगा? हम प्रयत्न करेंगे कि यह मामला खुले ही नहीं!" सर हम्फी ने सुझाव दिया।

लेकिन बात छिपाना हमारी नीति के विरुद्ध था। फ्रेंक ने कहा, "एक ही विकल्प है। अगर ठेका रद्द नहीं हो सकता तो हम इसे प्रकाशित कर दें।"

सर हम्फी ने इस सुझाव में काफी रुचि दिखायी। उनके सुझाव पर हम तीनों ने तय किया कि सरकारी कर्मचारियों की यूनियन के सामने मैं भाषण दूं और इस षड्यंत्रकारी ठेके का भंडाफोड़ करूं। और इस भाषण की प्रति अग्रिम रूप से अखबारों के लिए जारी कर दी जाए।

"पिट्सबर्ग में किसकी सरकार है?" फ्रेंक ने पूछा।

सर हम्फी चिंता में पड़ गये। फिर बोले, "अमरीकियों को नाराज करना ठीक नहीं होगा।"

"यही वह सही वक्त है कि हम अमरीकियों की व्यावसायिकता को झटका

दें। हमें संपन्न अमरीकियों के बारे में नहीं, गरीब ब्रिटिशों के बारे में सोचना है।" मैंने कहा।

"यदि आपकी यही इच्छा है, तो एक प्रति स्वीकृति के लिए भेज दूंगा !" बर्नार्ड ने कहा।

मुझे यह अजीब लगा। यह हमारे विभाग का मामला है, इसमें दूसरे विभाग की दखलंदाजी क्यों हो ?

लेकिन जब सर हम्फ्री ने जोर दिया कि एक प्रति सूचनार्थ भेज दी जाए, तो मैंने सोचा कि खुली सरकार का भी यही तकाजा है कि हम सरकार के अपने साथियों को सूचित तो कर दें।

"खैर, एक प्रति सूचनार्थ भेज दो, लेकिन मेरा भाषण प्रेस में सीधा जाना चाहिए।" मैंने आगाह किया।

मेरा भाषण इस तरह था—

'हमने लोगों से खुली सरकार का वायदा किया था। इस तरफ यह हमारी यह शुरूआत है। मुझे पता चला कि पिछले ही वर्ष पिछली सरकार ने एक करोड़ पौंड के सरकारी उपकरणों के आयात के लिए एक करार किया है। ऐसे ही, बल्कि इससे बेहतर उपकरण हमारे देश में, ब्रिटिश फैक्ट्रियों में, ब्रिटिश मजदूरों द्वारा बनाये जाते हैं। इस तरह हमें पिट्सबर्ग के व्यापारियों के दोयम दरजे के उपकरण लेने पड़ रहे हैं जब कि ब्रिटिश फैक्ट्रियां ठप्प हो रही हैं। अगर अमरीकी हम पर हावी होने जा रहे हैं, तो देशवासियों को इस बारे में जानकारी हासिल करने का अधिकार है। और हम इसके लिए संघर्ष करते रहेंगे..!'

इस घटना के विस्मयकारी परिणाम सामने आये। भाषण के बाद मैं अपनी प्रेस रिलीज पढ़ रहा था कि बर्नार्ड प्रधान मंत्री के कार्यालय की टिप्पणी लेकर मेरे आफिस में दाखिल हुआ। टिप्पणी में कहा गया था कि हमें अमरीकियों के प्रति नरम रवैया अपनाना है क्योंकि उनके साथ हम रक्षा-समझौते कर रहे हैं। मुझे अपनी भूल का अहसास हुआ। मुझे दुर्दैव ने घेर लिया था।

तभी सर हम्फ्री घबराये हुए आये और बोले, "प्रधान मंत्री निवास में गड़बड़ हो गयी है। शायद उन्होंने आपका वक्तव्य देखा है। वे पूछ रहे हैं कि इसकी स्वीकृति क्यों नहीं ली गयी ?"

"तो तुमने क्या कहा ?" मैंने पूछा।

"मैंने कहा कि हम खुली सरकार में विश्वास करते हैं। लेकिन लगता है, इससे हालत बिगड़ गयी है। प्रधान मंत्री आपको बुला रहे हैं फौरन !" हम्फ्री घबराये स्वर में बोले।

मैंने महसूस किया कि अब मंत्री के रूप में मेरा अंत आ गया है। मैंने सर हम्फ्री से पूछा, "अब क्या होगा ?"

"प्रधान मंत्री देता है, तो प्रधान मंत्री ले भी लेता है !" वह बोला।

प्रधान मंत्री के पास जाते हुए मुझे लगा कि मैं बीमार हूं। हम दोनों सीधे

प्रधान मंत्री निवास गये।

संसद में प्रधानमंत्री कक्ष के बाहर हम प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी हमारी पार्टी के मुख्य सचेतक विक गोल्ड मेरे पास आकर बोले, " तुम्हारे क्या दर्द हो रहा था, जो ऐसा भाषण दे दिया ? प्रधान मंत्री परेशान हो रहे हैं। तुम ऐसे भाषण नहीं दे सकते।"

" हमारी सरकार खुली है।" फ्रैंक बोला।

"शट अप ! तुमसे किसने पूछा है ?" मुख्य सचेतक घुड़कर बोला।

मैंने फ्रेंक का पक्ष लेते हुए कहा, "फ्रेंक ठीक कह रहे हैं। यह हमारे घोषणा-पत्र में है। प्रधानमंत्री खुली सरकार में विश्वास रखते हैं।

" तुम कितने अरसे से मंत्री हो ?" विक गोल्ड ने मुझसे बेहूदा सवाल किया। वह अच्छी तरह जानता था, फिर भी रौब जमाने के लिए पूछ रहा था।

" डेढ़ हफ्ते से !" मैंने कहा।

" मेरे ख्याल से तुमने इतनी ख्याति पा ली है कि तुम्हारा नाम 'गिनीज बुक ऑव रिकार्ड्स' में आना चाहिए।" विक ने बौखलाकर कहा, "मुझे अखबारों की सुरखियां दिखायी दे रही हैं—'अमरीकी व्यापार के मामले में केबिनेट विभाजित ! फ्रैंक का प्रधान मंत्री से विद्रोह !' ठीक है न !" कहकर वह चला गया।

तभी प्रधान मंत्री कक्ष से केबिनेट सचिव सर अर्नाल्ड राबिसन्सन बाहर निकले। सर हम्फ्री ने उससे भीतर का समाचार पूछा।

" भाषण के कारण प्रधान मंत्री परेशान हैं; क्या उसे प्रेस के लिए भेज दिया गया ?" अर्नाल्ड ने पूछा।

मैंने बताया कि मैंने तुरंत प्रेस भेजने के आदेश दे दिये हैं।

अर्नाल्ड, सर हम्फ्री पर बिगड़ उठे, " तुमने अपने मंत्री को रोका क्यों नहीं ? बिना उचित माध्यम के उसे प्रेस में क्यों जाने दिया गया ?"

सर हम्फ्री बोले, "मैं और मंत्रीजी खुली सरकार में विश्वास करते हैं। हम सारी खिड़कियां खोल देना चाहते हैं, ताकि ताजा हवा आ-जा सके ! ठीक है न, मंत्रीजी !"

मुझे कहना पड़ा, " हां, हम खुली सरकार के लिए वचनबद्ध हैं !"

" तो समझ लीजिए कि खुली सरकार का बिस्तर बंधनेवाला है।" सर अर्नाल्ड ने व्यंग्य से कहा।

तभी सर हम्फ्री मेरे कान में फुसफुसाये, " क्या आप इस्तीफा देने के बारे में सोच सकते हैं—अगर ऐसी नौबत आ ही जाए, तो !"

मैं जानता था कि वे मेरी मदद करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन संकट के समय वह मुझे नैतिक सहारा नहीं दे रहे थे।

तभी बर्नार्ड ने आकर बताया कि विभागीय कर्मचारियों को पुराने कायदे का

ही ध्यान रहा और गलती से भाषण को अंतर विभागीय स्वीकृति के लिए भेज दिया गया और वह प्रेस में नहीं जा पाया।

जान बची लाखों पाये। उस गलती ने मेरी रक्षा कर ली। भाषण की प्रति प्रधानमंत्री के कार्यालय में स्वीकृति के लिए चली गयी थी और वहीं रोक ली गयी।

"यह गलती मेरी थी, मंत्रीजी ! मैंने अन्य कर्मचारियों को यह हिदायत नहीं दी थी कि भाषण को स्वीकृति के लिए न भेजा जाए। मैं शरमिंदा हूं इस गलती पर ! सर हम्फ्री ने सिर झुकाकर कहा। मैंने क्षमादान वाले अंदाज में कहा, "कोई बात नहीं, सर हम्फ्री ! गलती हम सभी से हो जाती है।"

"जी; मंत्रीजी !"

मैंने चैन की सांस ली।

एक दिन मैंने सर हम्फ्री से कहा, "हम्फ्री, हमें सिविल सेवा के कर्मचारियों की संख्या में कटौती करनी है। इस विभाग में कितने लोग काम करते हैं ?"

"बहुत कम !" सर हम्फ्री ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"कितने कम ?" मैंने फिर पूछा।

"यही, लगभग तेईस हजार !"

तेईस हजार ! प्रशासकीय मामलों के विभाग में ! तेईस हजार प्रशासक अन्य बहुत-से प्रशासकों पर शासन करेंगे ! मैं हैरत में रह गया।

"देखो कि इनमें से कितने आदमी कम हो सकते हैं !" मैंने कहा, "हमें 'वर्क स्टडी' करनी होगी।"

"पिछले साल भी 'वर्क स्टडी' हुई थी," सर हम्फ्री तुर्शी में बोले, "और उसके मुताबिक हमें पांच हजार आदमी और चाहिए। फिर भी, अगर कटौती करनी ही है, तो हम आपके अफसरशाही पर निगरानी रखनेवाले विभाग को बंद कर सकते हैं।"

सर हम्फ्री का यह प्रस्ताव मुझे जंचा नहीं। पहली बात तो यह कि मतदाताओं में यह कदम बहुत लोकप्रिय था और दूसरी यह कि मंत्री बनने के बाद यह मेरी एकमात्र उपलब्धि थी कि मैंने इस विभाग का गठन किया। मैंने प्रतिवाद किया, "यही तो एक ऐसा विभाग है, जिसके द्वारा आम जनता सरकारी धन की फिजूलखर्ची रोक सकती है।"

सर हम्फ्री ने मेरा प्रतिवाद किया, "जनता नहीं जानती कि उसके धन का क्या दुरुपयोग होता है ! विशेषज्ञ हम हैं। निगरानी करनेवाला विभाग परेशानी ही पैदा करता है।"

"लेकिन यह विभाग बना रहेगा।" मैंने गुस्से में कहा।

"खैर, मैं अभी एकदम से नहीं बता सकता कि कटौती कहां की जाए," सर हम्फ्री कंधे उचकाते हुए बोले, "मेरे खयाल में चाय बनानेवाली लड़कियों में से एक-दो को हटाया जा सकता है।"

मैंने उससे कहा कि मजाक करने के

बजाय मुझे सही उत्तर दो।

काफी बहस मुबाहिसे के बाद सर हम्फी को मेरी बातों से सहमत होना पड़ा।

वह बोले, "मंत्रीजी, कटौती के लिए वाकई गुंजाइश है। कभी-कभी मुझे लगता है कि हम हर काम में फिजूलखर्ची करते हैं। मसलन कार, फरनीचर, प्राइवेट स्टाफ, मेहमानवाजी ... सभी में।"

मैं उत्साह से उछल पड़ा।

"फिर भी, एक दिक्कत है ...।"

वह कहने लगा, "अगर उच्च स्तर के लोग वही आराम और सुविधाएं भोगते रहें, जो उन्होंने छोटे लोगों के लिए बंद कर दी हैं, तो छोटे कर्मचारियों में असंतोष पैदा होता है और दुष्प्रचार को भी बढ़ावा मिलता है।"

स्पष्ट था कि सर हम्फी की योजना यह थी कि मैं और सर हम्फी व्यक्तिगत रूप से उदाहरण प्रस्तुत करें। कटौती घर से शुरू होती है। हम दूसरों से उस काम की अपेक्षा नहीं कर सकते, जिसे हम खुद नहीं करते।

"लेकिन क्या इससे ज्यादा बचत हो पाएगी।" मैंने पूछा।

'प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं!" हम्फी बोले, "लेकिन जनसेवा के क्षेत्र में यह एक उदाहरण तो प्रस्तुत करेगा!'

फ्रेंक ने सर हम्फी की योजना का समर्थन करते हुए दलील दी—"इससे तुम्हें बहुत प्रचार मिलेगा। अखबारों में सुरखियां होंगी—'मंत्री ने राह दिखायी', या 'कटौतीवाली सरकार' या 'हैकर ने उदाहरण पेश किया', इसके अलावा 'जिम की बचत योजना'-जैसी सुरखियां भी हो सकती हैं।"

मैंने सर हम्फी से कहा कि योजना यथाशीघ्र लागू की जाए।

●●

इस बचत योजना से मेरे ऊपर अतिरिक्त काम का भार बढ़ गया। एक दिन मैं आधी रात को घर पहुंचा। मेरी पत्नी सो चुकी थीं। उसने जो खाना बनाकर रखा था, वह खराब हो गया। बचत-योजना की वजह से सरकारी कार मैंने छोड़ ही दी थी। तूफान के कारण टैक्सी नहीं मिली। मेरी गाड़ी छूट गयी। तीन बोझिल फाइलों से लदा जब आधी रात को मैं घर पहुंचा, तो थका हुआ था।

पत्नी को जगाकर जब मैंने अपनी व्यथा-कथा सुनायी, तो उसने पूछा, "सरकारी कार का क्या हुआ?"

मैंने गर्व से बताया, "मैंने उससे छुटकारा पा लिया है। ड्राइवर की भी छुट्टी कर दी है। फरनीचर, मंत्री-स्तर का चाय-पान भी समाप्त कर दिया है और अपने स्टाफ को आधा कर दिया है।"

"क्या तुम्हारी मंत्रिपद से छुट्टी हो गयी?" पत्नी ने पूछा। मैंने समझाया कि उदाहरण पेश करने के लिए मैंने यह बचत-योजना लागू की है।

"तुम पागल हो गये हो!" वह गुस्से में फट पड़ी, "बीस साल तक। बैंकबेंचर

बने हुए तुम शिकायत करते रहे कि मुझे सुविधाएं नहीं दी गयीं। और जब सुविधाएं मिलीं तो तुम उन पर लात मार रहे हो!"

पत्नी मेरी कोई बात सुनने को तैयार नहीं थी। वह भला-बुरा कहती ही रही। वह राजनीति के दांव-पेच नहीं जान सकती।

आफिस में भी बचत योजना में प्रगति आयी। कम लोगों की वजह से काम का बोझ बढ़ा। मैं और बर्नार्ड देर तक काम करते। लेकिन यकीनन मैं नहीं चाहता था कि इतने सारे लोग मेरी चिट्ठियां पढ़ें, उनका जवाब दें, फोन सुनें और मुझे पूरी दुनिया से काट दें। 'मुझे उनकी जरूरत नहीं',—मैंने फैसला किया। 'अपना काम मैं खुद करूंगा!' हालांकि मुझे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा, पर मैं अपने इरादे पर अटल रहा।

मुझे इससे प्रचार भी बहुत मिला लेकिन इसी बीच एक गड़बड़ हो गयी।

मैं अपने आफिस में बैठा, उत्तर-पूर्व प्रांत के जन-शक्ति योजना के निदेशक मि० ब्रो की प्रतीक्षा कर रहा था। अचानक एक व्यक्ति मेरे आफिस में दाखिल हुआ। मैंने मि० ब्रो को पहले कभी नहीं देखा था, इसलिए मैंने अंदाज लगाया कि वह मि० ब्रो ही हैं।

"क्या आप मि० ब्रो हैं?" मैंने पूछा।

"नहीं, मेरा नाम रॉन वॉटसन है," वह बोला, "मि० ब्रो को अपनी यात्रा रद्द करनी पड़ी।"

स्वाभाविक रूप से, मैंने अनुमान लगाया कि मि० ब्रो ने ही वॉटसन को भेजा होगा। मैंने उसके आने का धन्यवाद दिया और बैठने को कहा।

मैंने कहना शुरू किया, "मि० वॉटसन, मैं जोर देकर कहूंगा कि इस योजना का किसी को पता न चले। अगर यूनियनवालों को पता चला, तो वे हंगामा मचाएंगे। छंटनी होगी ही। इतनी बड़ी अफसरशाही में तब तक कटौती नहीं हो सकती, जब तक बाकी लोगों से छुटकारा न मिले। अंततः बहुत सारे लोगों को निकालना होगा।"

उसने पूछा, "क्या आप पहले यूनियनों से विचार-विमर्श नहीं करेंगे?" मैं अपनी कब्र खोदता रहा, "हम पहले उनसे सलाह-मशविरा करेंगे। पर तुम तो जानते ही हो कि ये यूनियन-नेता कितने जाहिल और बेवकूफ होते हैं।"

"क्या सारे ही ऐसे होते हैं?" उसने नम्रतापूर्वक पूछा।

मुझे अचरज हुआ। फिर भी मैंने कहा, "निस्संदेह, वे एक-दूसरे को धकियाने के अलावा कुछ नहीं करते। वे अपने खुले मुंह को कभी बंद नहीं कर सकते।"

इसके बाद उसने ड्राइवरों और परिवहन सेवा के कर्मचारियों के बारे में विशेष रूप से जानना चाहा।

"वे सबसे पहले जाएंगे।" मैंने कहा "हम अपना उज्ज्वल भविष्य कारों और ड्राइवरों पर बरबाद कर रहे हैं।"

इसी समय वॉटसन ने बताया कि वह मि० ब्रे का कोई सहायक नहीं, बल्कि सिविल सेवा के परिवहन तथा अन्य सरकारी कर्मचारियों की यूनियन का महासचिव है और यह तहकीकात करने आया था कि उसके सहयोगियों की छंटनी के बारे में फैली अफवाहें कितनी सच हैं।

मैंने अपना सिर पीट लिया। जो मुझे उसे नहीं बताना चाहिए था, मैं वह सब कह बैठा था।

●

अगले दिन।

क्रिसमस की खुशियां नीरस हो गयीं। ड्राइवरों ने हड़ताल कर दी थी। अखबारों में वॉटसन ने मेरा हवाला देते हुए कहा था कि छंटनी होगी।

मैंने बर्नार्ड से जानना चाहा कि उसने ऐसी गलती कैसे होने दी?

"मैं हर जगह मौजूद नहीं रह सकता!" उसने कहा। आखिरकार हम दोनों को ही पता था कि यह दुर्घटना कैसे हुई?

सारे दिन मैं प्रेसवालों से आंखमिचौनी करता रहा। मैं इस स्थिति पर सर हम्फ्री से बात करना चाहता था, मगर वह सारे दिन नदारद रहे।

●

फ्रांसीसी दूतावास की क्रिसमस पार्टी में रात आठ बजे मुझे और पत्नी को निमंत्रित किया गया था। मैंने बर्नार्ड से कार मंगाने को कहा और तभी मुझे याद आया कि ड्राइवर तो हड़ताल पर हैं। तब मैंने बर्नार्ड से कहा कि पत्नी को फोन करके कहे कि वह कार से मुझे लेने आ जाए।

बर्नार्ड ने यह बात पहले ही सोच ली थी। लेकिन कार में पूरे दिन गड़बड़ी रही और पत्नी उसे गैरेज में बंद करना चाह रही थी। मैंने एनी से कहा कि वह कार को इसी हालत में ले आये।

एनी आयी। हम दोनों पार्टी के लिए रवाना हो गये।

मैं फिर गलती कर बैठा था। और वह नामुराद कार रास्ते में केनसिंटन ब्रिज पर ही खराब हो गयी। भीड़भाड़ का समय था और बारिश हो रही थी। मैं उसे ठीक करने लगा। मैंने एनी से छाता मांगा, मगर उसने कहा, "छाता तुम्हारे ही पास है।" मुझे मालूम था कि छाता उसी के पास था। हम दोनों एक-दूसरे से चीख-चीखकर बोलते रहे। वह कार से उतरकर चली गयी और मैं अकेला उस भीड़ भरे ट्रैफिक के बीच कार ठीक करता रहा। गाड़ियां मुझे हॉर्न देती रहीं और लोग गालियां।

फ्रांसीसी दूतावास में डेढ़ घंटा देर से पहुंचा—भीतर तक पानी से तरबतर पहुंचते ही मैंने तीन-चार गिलास शम्पेन के पिये। ऐसी हालत में भला कौन नहीं पीता?

जब मैं वहां से चला, तब नशे में बिलकुल नहीं था, लेकिन मेरी चाभियां कार के पीछे एक गटर में गिर गयीं। उन्हें निका-

लने के लिए मुझे लेटना पड़ा और कहीं से एक कमबख्त प्रेसवाला आ टपका।

अगली सुबह के अखबारों में मेरे कथित नशे की खबर छाप दी गयी। मुझे बड़ा बुरा लगा, लेकिन क्या हो सकता था ?

'डेली टेलीग्राफ' में एक अजीब और भयावह खबर छपी कि मैं प्रशासकीय मामलों के विभाग में अतिरिक्त स्टॉफ की नियुक्ति कर रहा हूं। मैंने तुरंत सर हम्फ्री से स्पष्टीकरण मांगा, जो उनके पास तैयार था।

वह बोले, "मंत्रीजी, आपने ही कार्य-समीक्षा करने की मांग की थी। आपको पूरे तथ्य, सारे आंकड़े और संपूर्ण सर्वेक्षण चाहिए था। यह काम बिना लोगों के नहीं हो सकता। साधारण-सी बात है कि अगर आप काम बढ़ाएंगे, तो आपको उसमें आदमी भी लगाने होंगे।"

अभी मैं उसकी इस टिप्पणी से उबर भी नहीं पाया था कि वह फिर बोले, "और अगर आप अफ़सरशाही पर निगरानी का भी आग्रह करेंगे, तो उसके लिए चार सौ नयी नियुक्तियां करनी होंगी।"

मेरा सिर चकरा गया। मेरा कैरियर धूल में मिलने जा रहा था। प्रेसवाले मेरी टांग खींच रहे थे और मंत्री बनने के बाद मेरी जो एकमात्र योजना थी वह भी ठप्प होने जा रही थी। सारे कर्मचारी हर संभव तरीके से मेरी मदद करने का बेहतरीन प्रयास कर रहे थे। 'तो क्या वे सब अयोग्य हैं? या मैं ही अयोग्य हूं'—मैंने सोचा, 'क्या वे मेरी मदद करने का बहाना करके छुपे तौर पर मेरे हर कदम में बाधा उपस्थित कर रहे हैं?' मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

मेरी समझ में यह भी नहीं आया कि बचत योजना 'के सर्वेक्षण के लिए चार सौ आदमी, और निगरानी के लिए चार सौ और आदमियों की नियुक्ति करने के बारे में हम क्या करने जा रहे हैं... मैं चुप बैठ गया, इस आशा में कि कब मेरा सिर चकराना बंद हो और कब कोई मुझे नया विचार सुझाये।

तभी सर हम्फ्री ने मुझे उपकृत करते हुए कहा, "मंत्रीजी, अगर हम बचत योजना को समाप्त कर दें और निगरानी कार्यालय को बंद कर दें, तो हम तुरंत अखबारों को बयान दे सकते हैं कि आपने आठ सौ नियुक्तियां रद्द कर दीं।" उन्होंने यह सब पहले ही सोच रखा होगा, तभी तो उन्होंने एक कागज मेरे सामने फैलाते हुए कहा, "आप इस मसौदे को स्वीकृत करेंगे क्या?"

मैं उनके सुझाव को समझ नहीं पाया। आठ सौ नियुक्तियां रद्द कर दीं? लेकिन इन पदों पर कोई भी काम नहीं कर रहा था!

मैंने पूछा, "लेकिन अभी तो कोई नियुक्त भी नहीं किया गया।"

"यह तो और भी ज्यादा बचत हुई। हमने आठ सौ लोगों की छंटनी का मुआ-

वजा बचा लिया।" सर हम्फ्री ने तुरत उत्तर दिया।

"लेकिन यह तो बेईमानी है!" मैंने कहा, "लोगों की आंखों पर पट्टी चढ़ाना और आंकड़ों की बाजीगरी!"

"यह वास्तव में एक प्रेस रिलीज है!" सर हम्फ्री ने कहा। मैं अपने समय में बहुत-से सनकी राजनीतिज्ञों से मिला हूं, लेकिन एक स्थायी सचिव की यह टिप्पणी वास्तव में आंखें खोलनेवाली थी।

मेरा सिर घूम गया। स्पष्ट था कि अगर मुझे बचत योजना के लिए चार सौ आदमियों की नियुक्ति से बचना था तो मुझे निगरानी विभाग के लिए चार सौ आदमियों की नियुक्ति के अपने महत्त्वाकांक्षी विचार को भी छोड़ देना था।

फिर भी, वह मुख्य प्रश्न, जो इस सारे टंटे की जड़ था, अभी पूरी तरह अनुत्तरित रह गया था।

"लेकिन हम्फ्री, हम सिविल सेवा में कटौती कैसे करेंगे?" मैंने पूछा।

कुछ देर रुककर वह बोला, "मेरे विचार से, हम एक-दो महिलाओं को निकाल सकते हैं।"

सिरफिरों की दास्तान

'प्रेस' करने का रेकॉर्ड

सत्रह वर्षीय एरिक को लड़कियों की पोशाक 'प्रेस' करना इतना भाता था कि उसने प्रेस करने का एक रेकॉर्ड कायम कर दिया। लगातार साढ़े तैंतीस घंटे वह अपने कॉलेज की छात्राओं की पोशाक 'प्रेस' करता रहा।

आप में से किसी ने यह रेकॉर्ड तोड़ने का प्रयास करने की ठानी है तो हमें लिखें। हम आपका नाम सिरफिरों की सूची में सर्वोपरि देना चाहेंगे। यों विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि महिलाओं के कपड़े प्रेस करनेवालों में पहले से होड़ लगी हुई है!

एक नसीहत

ग्रीस के आंद्रे पेप ने अठारह वर्ष की उम्र में एक ऐसा उपन्यास लिख दिया, जिससे उपन्यास-क्षेत्र में तहलका मच गया, पर आंद्रे के मां-बाप ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। कारण, उनके परिचितों ने शिकायत की थी कि वह उपन्यास बेहद अश्लील है। आंद्रे के लिए यह अभिशाप वरदान बन गया। उसके प्रकाशकों से उसका दुःख देखा न गया। वे और उपन्यास लिखने के लिए उससे अनुबंध करने लगे। उधर आंद्रे की बेहिसाब रॉयल्टी व नाम और प्रसिद्धि देखकर उसके मां-बाप ने उसे वापस बुलवा लिया।

आपको भी कभी कोई यों ही बाहर निकाल देने की धमकी दे तो सावधान! इतने मशहूर होने के काम मत कीजिए कि मां-बाप हो, प्रकाशक हो या फिर जेलर, हर कोई आपको 'अंदर' लाने की कोशिश करने लगे।

जिद सांप से शादी करने की

● **प्रणय पंडित**

हरेक ऐसा आदमी, जो कुछ नये से नया और अजूबा कर गुजरने की अदम्य आकांक्षा मन में पाल बैठता है, वह अपनी धुन का धनी, आत्म-विश्वासी और विकट साहसी होता है। मनोविज्ञान की नजर में उसका यह विकट साहस उसे दुस्साहसी की श्रेणी में जा बिठाता है, तो अन्य लोगों की नजर में सनकी, सिरफिरे और पागल की श्रेणी में। ऐसे सिरफिरे क्या कुछ नहीं कर गुजरते और क्या नहीं कर गुजरेंगे, कुछ कहा नहीं जा सकता। बड़े ही अजीबो-गरीब होते हैं ये सिरफिरे।

सबसे अधिक सिरफिरा बनाती है तरह-तरह के रेकॉर्ड कायम करने की और नाम कमाने की आकांक्षा। दाढ़ी-मूंछ बढ़ाने, नाखून बढ़ाने आदि के रेकॉर्ड कायम करने की बात तो कुछ समझ में आती है, लेकिन कील, ब्लेड, कांच-जैसी चीजें खाने से भी आगे जाकर तेजाब पीने और साइनाइड-जैसे तीव्र मारक जहर खाने के रेकॉर्ड बनाने की बात समझ में नहीं आती, लेकिन इसके भी रेकॉर्ड बनाये गये हैं।

बगदाद से गल्फ न्यूज एजेंसी की एक खबर के अनुसार वहां के एक नौजवान को कीलें, ब्लेड, कांच और चम्मच खाने का शौक चर्राया। नतीजा जो होना था, वही हुआ। पिछले साल जून महीने में डॉक्टरों को उसका पेट फाड़ना पड़ा। जब उसके पेट में से कीलें, ब्लेड, कांच और चम्मच निकलीं, वह भी थोड़ी-बहुत नहीं पूरी एक किलो तीन सौ ग्राम, तब डॉक्टर भी हैरत में पड़ गये, उस नौजवान के सिरफिरेपन को देखकर।

नसवार और छींक

खाने-पीने, नाचने-गाने, दौड़ने-भागने के रेकॉर्डों की बात तो अलग रही, लोगों ने धाराप्रवाह भाषण देने, नसवार ले-लेकर छींकने और धूम्रपान करने तक के रेकॉर्ड कायम किये हैं। जरमनी में जुलाई, १९७७ में नसवार लेकर छींकने की प्रतियोगिता हुई थी, जिसमें वहां के हेरमन श्नाट्ज नामक महोदय ने दो सेकंड से पिछला रेकॉर्ड तोड़ा था। उन्होंने ५३ सेकंड में एक औंस नसवार का एक बटा छह भाग सूंघ लिया और फिर इतनी जोर से छींका कि आंखों में लगे कांटेक्ट लैंस निकलकर निर्णायकों की मेज पर जा गिरे। अब, खुद ही अंदाजा लगा लीजिए कि छींक

कितनी ज़ोरदार [illegible] होगी । पिछली प्रतियोगिता में छींकते समय चार प्रतियोगियों के तो जबड़े ही उतर गये थे और एक की नस फट गयी थी । है न, जीवट का काम !

इसी प्रकार इटली के वीरिस वेच्छी नामक युवक ने पाइप पीने में विश्व-रेकॉर्ड कायम किया । उसने लगातार दो घंटे, ५१ मिनट और २२ सेकंड तक पाइप पीकर रोम में आयोजित इस प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले बीस देशों के अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराया था ।

रेकॉर्ड भाषण देने का

भाषण देने का भी एक विश्व-रेकॉर्ड है ३१ घंटे का, जिसे अगस्त, १९७७ में हेरिसबर्ग (पेनसल्वानिया) में कायम किया था डगलस वेंत्ज ने । डगलस साहब के इस राजनीतिक भाषण का विषय था—'पेनसल्वानिया की भ्रष्ट सरकार : आप इसकी [illegible] क्यों नहीं करते ?' डगलस साहब इस प[illegible] धारावाही रूप से ३१ घंटे तो बोल चुके [illegible] फिर भी रुके नहीं थे, बोलते ही जा रहे थे । भला हो उनकी माताजी का, जिन्होंने उनका बोलना बंद करवाया, नहीं तो वह पता नहीं, कितनी देर और बोलते । उन्होंने मिनिअपोलिस के मार्विन ए. एकमैन द्वारा सन १९७६ में कायम किये गये विश्व-रेकॉर्ड को एक घंटे में तोड़ा था ।

अंबार डिग्रियों का

बचपन में डॉक्टर के परचे पर उसकी लंबी-लंबी डिग्रियां देखकर प्रायः मन में आता है कि हम भी बड़े होकर ढेर सारी डिग्रियां बटोरेंगे, लेकिन बी. ए., एम. ए. करने के साथ ही लगने लगता है कि वही डिग्रियां बहुत हैं । लेकिन एक हमारे बनारस के चौबेजी थे—डॉ. रामकुमार । उन्हें ८६ वर्ष की वृद्धावस्था यानी मृत्यु-पर्यंत नहीं लगा कि अब उन्हें और अधिक डिग्रियों की आवश्यकता नहीं है, जबकि ८६ डिग्रियां प्राप्त करके वह एक रेकॉर्ड कायम कर चुके थे । २२ विषयों में [illegible] उन्होंने एम. ए. की डिग्री ली थी । [illegible] छोड़, विदेश—हॉलैंड विश्वविद्यालय से भी एल. डी. की डिग्री प्राप्त की थी ।

शादी सांपों से

एक ऐसी भी सिरफिरी है कि उससे जब भी कहा गया कि वह शादी कर ले, तो उसका हमेशा जवाब यही रहा कि 'मैं तो सांपों से ही शादी करूंगी ।' भला बताइए, यह भी कौन-सी तुक की बात हुई कि एक

लडकी सांप से शादी करे। यह है आस्ट्रेलिया की मिस शैनी। इसे सांप पालने का बेहद शौक है। यह तो ठीक है और बात समझ में भी आती है, लेकिन यह क्या बात हुई कि वह हर समय गले में जहरीले सांपों को हार की तरह डाले रहे, कमर में पेटी की तरह बांधे रहे और इतना ही नहीं, बल्कि रात को सोते समय भी सांपों को अपने विस्तर पर सुलाये और अजगर से तकिये का काम ले।

सांपों को लेकर मिस शैनी ही दीवानी हो, ऐसा नहीं है। पिछले दो-तीन साल में बहुत से ऐसे युवक सामने आये हैं, जिनमें होड़ लगी हुई है कि देखें, कौन कितने अधिक समय तक विषैले से विषैले सांपों के बीच रहकर विश्व-रेकॉर्ड स्थापित करता है। इस दौड़ में विदेशों के ही नहीं, बल्कि हमारे देश के भी कई नौजवान शामिल हैं।

शादी-दर-शादी

कुछ सिरफिरे ऐसे भी हैं, जिन्होंने शादियां करने या फिर बच्चे पैदा करने के क्षेत्र में कमाल दिखाये हैं। अभी [illegible] में फ़ोयनी (एरीजोना) में एक [illegible] सज्जन ५[illegible] गियावान्नी विगलियोटो कानून के शिकंजे में फंस गये हैं, जिन्होंने ३३ साल में १०५ महिलाओं से शादियां कीं और उनके पैसों से मौज उड़ाते रहे।

वह पकड़े इसलिए नहीं गये कि उन्होंने इतनी अधिक शादियां क्यों की, बल्कि इसलिए पकड़े गये कि उन्होंने पिछली दो बीवियों से तलाक लिये बिना ही तीसरी बीवी और कर ली। शायद, १०५ शादियों का यह अपने आप में विश्व-रेकॉर्ड है। वैसे, सन १९७७ का विश्व-रेकॉर्ड २३ शादियों का था, जिसे कायम करनेवाले थे ब्लिथ (केलीफोर्निया, अमरीका) के सत्तर वर्षीय ग्लिन 'स्कोटी' वुल्फ। वुल्फ साहब ने सबसे पहली शादी सन १९३७ में की थी और २३वीं शादी सन १९७७ में। यानी, ४० साल के [illegible] उन्होंने [illegible] बीवियां बनायीं और छोड़ीं। इन पत्नियों में उनका सबसे लंबा वैवाहिक जीवन पांच साल [illegible] और सबसे छोटा ३८ दिन का [illegible] पत्नियों से उनके ९३ बच्चे हैं। ७० वर्षीय [illegible] साहब की २३वीं पत्नी २० वर्षीय गुडेलुप रज [illegible] जो पिछली बीवी की भांति शादी [illegible] समय गर्भवती थी।

—ए-१/२४२ ए, लारेंस रोड,
नयी दिल्ली-११००३५

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

[सम]स्या-पूर्ति–४८

[इस]में प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए [औ]र उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखो [पंक्ति] पढ़िए। इसे लेकर आपको एक [कवि]ता लिखनी है। गीत, गजल या छंदहीन [कवि]ता भी। आपकी रचना मौलिक तथा [अ]धिकतम छह पंक्तियों की ही हो। [कृपया] विशिष्ट पोस्ट कार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ [र]चना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

गिनते [illegible]

[प्र]थम पुरस्का[र]—२५ रुपये
[द्वि]तीय पुरस्[का]र—१५ रुपये
अंतिम ति[थि]—२० अप्रैल, १९८३

[छ]ाया : सवि अरनेजा